### पुस्तक मिलने का पता

## ं योगनिकेतन द्रस्ट

डाकघर—स्वर्गाश्रम, रेलवे स्टेशन—ऋपिकेश जिला देहरादून, भारत ।

## सर्वाधिकार सुरक्षित है।

पुस्तक से कोई भी उद्धरण लेने या श्रनुताद करने के लिए प्रकायक की स्वीकृति श्रनिवार्य है।

> प्रथम सस्करण १६६६ मूल्य ⊏) स्राट रुपये

<sup>मुद्रक</sup> रायसीना प्रिटरी ४, चमेलियन रोड, दिल्ली-६

## REFERENCE





राजयोगाचार्य ततानिष्ट योगीयवर श्री १०८ व्रतार्षि स्वामी योगेण्वरानन्द सरस्यतीनी महाराज



## ईववर-वन्दना

ग्रा तहान् वाह्मणो तहावर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इवंत्योऽतिव्याघी महारथो जायतां दोग्त्री चेनुर्वोढानड्वानाग्रुः सिन्तः पुरन्थियोँ जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे न पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ग्रोयधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पतान् ॥ (यजु॰ २२। ११२)

प्रथम ईश्वर को नमस्कार करके, सर्वशिवनान् द्यामय भगवान् की सेवा में प्रार्थना है कि हे हर प्रकार की विद्या के दाता! सबसे वड़े परमेश्वर! ग्राप हम पर कृपा करें कि हमारे राज्य में ब्रह्मविद्या से प्रकाश को प्राप्त, वेद ग्रीर ईश्वर को ग्रन्छा जानने वाले, ग्रात्मदर्शी ब्राह्मण उत्पन्त होते रहें; ग्रस्त जो दूर ग्रात दूर तक मार करने वाले हों उनके चलाने में उत्तम गुणवान्, शत्रुग्नों को ग्रतीव ताड़ना देने का स्वभाव रखने वाले महारधी, ग्रत्यन्त वली ग्रीर वीर, निर्भय राजपुत्र शासक, वाणी द्वारा उपद्रवियों का दनन करने वाले नीतिनिपुण विद्वान्, दूध से पूर्ण करने वाली गौ, भार ले जाने में नमर्थ वड़े वलवान वैल, शीश्र चलने हारे योड़े, जो वहुन व्यवहारों को धारण करती हैं वे स्वियां, हर प्रकार के रथ वा यान बनाने वा स्थिरता से चलाने वाले विशेपज्ञ वा शत्रुग्नों को जीतने वाले, सभा में उत्तम सभ्य, जवान पुष्प, जो यह विद्वानों का सत्कार करता है वा सुखों की संगति करता है वा मुखों को देता है ऐसे राजा के राज्य में विशेप ज्ञानवान्, शत्रुग्नों को हटानेवाल पुष्प उत्पन्त हों; हम लोगों के निश्चययुवत काम में ग्रयीत् जित्त-जिस काम के लिए प्रयत्न करें उस-उस काम में नेध वर्षे; ग्रीपिधयां वहुत उत्तम फलवाली हमारे लिए पक्षें; हमारा ग्रप्राप्त वस्तु की प्राप्ति लखाने वाले योग की रक्षा ग्रर्थात् हमारे निर्वाह के योग्य पदार्थों की प्राप्ति समर्थ हो; वैगा विद्यान करो ग्रर्थात् वैसे व्यवहार को प्रकट कराइए।

## शुम-कामना ऋौर धन्यवाद

श्रीमती प्रेमदेवी (विहार में धनवाद निवासी स्वर्गीय दीवानवहादुर श्री वली-राम तनेजा की धर्मपत्नी) ने पूज्यपाद श्री गुरुदेव स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वतीजी महाराज के श्रीचरणों में बैठकर ग्रध्यात्म साधना की है। ग्राप विदुपी, कवियित्री, धर्मात्मा, भगवद्परायणा ग्रौर साध्वी महिला है। ग्राप दयानु तथा दानशीला है।

श्रापके पतिदेव भी धर्मात्मा, परोपकारी, उदार तथा दानी थे। समाज-कल्याण के कार्यों में वडी उदारता से दान दिया करते थे। इनके सुपुत्र श्री विजय-प्रताप श्रौर नन्दकुमारजी भी श्रपने माता-पिता के समान धर्म, दान श्रौर परोपकार परायण है।

श्रीमती प्रेमदेवी तनेजा योगिनकेतन की तन, मन तथा घन से सेवा कर रही है। इस 'हिमालय का योगी' ग्रथ के प्रकाशन का सव व्यय इन्होने देने की कृपा की है। इसके लिए हम ग्रापके ग्रत्यन्त ग्राभारी हैं ग्रीर भक्तवत्सल भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि ग्राप तथा ग्रापके सुपुत्र सदैव दान, धर्म ग्रीर परोपकार के कार्य करते हुए ग्रारोग्य, सुख-समृद्धि तथा ऐश्वर्य को प्राप्त करे ग्रीर बढे, फूले तथा फर्लें।

व्यवस्थापक योगनिकेतन ट्रस्ट

# REFERENCE



श्रीमती प्रेमद्वी (धर्मपत्नी म्वर्गीय दीवानवहादुर श्री वलीरामजी तनेजा तथा माता श्री विजयप्रतापजी श्रीर श्री नन्दिकशोरजी) धनवाद (विहार)

## विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
भूमिक	•
पूर्वाद्धं	
्रवम प्रत्याय यैराग्य का उदय	
	१४5
योग ना पुनम्दार	8
ज्ञन विचारशीयम	२
	ર્
रमनी रामानराजी में नवर्त	२
मस्तारवदा को प्रेरणा	3
स्यामीली से परण्याध्ययन	₹
भोत जीवत्वस्थि या प्रभाव	₹
म्बामीजी गा प्रभाव सर्वे स्थान के के की की	Υ.
गृह-याग तथा योग के प्रति रचि	<b>x</b>
स्यामीजी से महायता की प्रार्थना माना का उपरेश	ų, v
	ų -
क्षीरापुर परियार	5
एक युद्धा माता द्वारा श्वातिष्य हरिद्वार में सम्बनाध्ययन तथा योगमाधना	3
मीहनाश्रम में निवास	१०
मानावन न नवाव मीनी नेवनाथ में सपके	<b>१०</b> १०
मोहनाश्रम के विद्यालय में प्रवेश	20
वाग विधा	१०
एक योगी ने समागम	22
क्षां प्राप्त से योगाभ्यास का निश्चय	, ` १२
मस्यदेवती मा सपदेश	<b>१</b> ३
मनान पर निपास	१४
कजनी यन से पुन मोहनाश्रम	१५
रवामी हितानस्य में भेंट	१५
स्यामी रामानन्द का पत्र	१५
य्यामदेवजी के पिता का हरिद्वार श्राममन	<b>१</b> ६
ध्यामध्यजी का घर पर पुनरागमन	१५
स्वामी रामानन्य में श्राश्रम में सम्कृताध्ययन की व्यवस्था	१८
माना को उपदेश	१८
करिकारिक रिक्षके का वर्षवर्थ बागाय	২০

विषय	पृष्ठ
ग्रागन्तुक देवियो को उपदेश	20
व्यासदेवजी का पुन गृह-त्याग	73
सासारिक पाशों में न फसना	२१
स्वामी रामानन्द से परामर्श	२२
व्यासदेवजी का पुन हरिद्वार के लिए प्रस्थान	२३
व्यासदेवजी की खोज	२३
कठिन तपश्चर्या का प्रारम्भ	२४
नीलकण्ठ महादेव गमन	२४
पुन कजली वन गमन	হ্ ৮
हायी से सामना	হ ু
योगी स्वरूपानन्द से भेंट	<b>२</b> ६
पुन ःसप्तमरोवर गमन	হ (૭
उत्तराखण्ड के चारो धामो की यात्रा	२७
जमनोत्री-यात्रा	२७
उत्तरकाशी मे १५ दिन तक निवास	२८
गगोत्री-यात्रा	२्
गोमुख-यात्रा	35
केदारनाथ की यात्रा	₹ ?
चोरभालु से रक्षा	
दिशा-भ्रम	3 3
त्रियुगीनारायण गमन	38
वद्रीनारायण की यात्रा	3 %
श्रोखी मठ में निवास	έX
शतपथ फ्रीर स्वर्गारोहण की यात्रा	३६
वसुघारा गमन	; · ·
वर्फ की दरार में फनना	₹७
श्रलखनन्दा के किनारे गुफा मे ग्रम्यास	३६
पुन सप्तसरोवर आगमन	38
पुन उत्तरकाशी गमन	35
पुन हरिद्वार गमन	80
दिल्ली मे विद्याध्ययन	४१
दिल्ली मे निवासादि की व्यवस्था	४१
च्यासदेवजी द्वारा पीडितो की सहायता	४१
पारिवारिक सदस्यो का ग्रागमन	४२
काइमीर प्रस्थान	४२
रुपयो की चोरी	·
घर्मशाला मे निवास	83

विषय	पृष्ठ
चीनीदार की मृशंता	<b>ሪ</b> ሪ
नागिंगह में परिचय	Уy
वानामार बाग में एक अग्रेज से मुठभेड	४६
मना ना प्रताकितह ने भेंद्र	৫৩
दिनीय अव्याप पार्याभक योग-साधना	65343
परम सिंहान् पोमी भी मोज	38
भरपूर परमाजन्यजी से भेट	38
योग वि स प्रत्य	Y.o.
भगवाती देवी की विजेश हुना	λs
गुगती बाग मे नियान	78
सारांनिह से पुन ामानम	yε
घनुगार में निवास	20
न्या शिवसरायम् । सम्बक्ष	५७
भी प्राप्त परमानवजी की पुत्र सोत	ys
समृतपरी प्रसात	3 4
र≟को का वरा उप	3 4
बेस्ट में नपर है किना सामना	٤٥
पुत धम्तगर मे निवास	६१
राता (शयगतापमत की बंठत में निवास	६१
सरत दुस्तिव तादा की वसीकी से सापना	42
सहित्यान स्वर्णानी चौर ने रक्षा की	ęş
प्यागदेवती न कोरो सी भोजन बनाकर सिनाया	६४
पुलिस ३ विपाहिसो से मुख्येट	٤٧
न्नारार मीन तया गापशी पुरब्यरण	६५
व्रहान्य व्रव भी परीक्षा	६६
मास्त्र मीत तथा तथा मरोत गामश्री पुरवनरण	६७
पुरस्वरण राज भ सोरी हारा भ्रषहरण	६८
लाइमीर यात्रा	६६
माहमी से परिच्यों से सपासम	৬০
यगरनाय की यात्रा	७०
अभरनाय में एक मारा तक निवास	७२
सीनमर्ग के तिए प्रस्थान	৩३
नातृ से मुकाजिला तथा "यासदेवजी का प्रत्युत्पन्नमतिस्व	४७
भृत गा भय	४७
जियारगार में भालुधों में कई बार तथा सूत्र में से दो पार मुकापिला	७६
प्रमतगर को निए प्रस्थान	७६

विषय	पृष्ठ
एक योगी से समागम	30
पुन काश्मीर प्रस्थान	<b>4</b>
तारसर, मारसर ग्रादि भीलो पर भ्रमण	58
होती मर्दान के नवाव को ग्राणीर्वाद	दर्
पुन ग्रमृतसर के लिए प्रम्थान	<b>5</b> 3
हिन्दु-मुसलमानो के दगे	= 3
सन्त रामदासजी का सत्मग	58
व्यासदेवजी की रसनेन्द्रिय मे ग्रामिक्त	5
सन्त भाष्ट्र से वार्तालाप	50
सन्त दासुरामजी का समागम	55
डलहोजी, चम्बा स्रोर पागी भ्रमण	58
नीलम की प्राप्ति	وع
ग्रज्ञात देवी के दर्शन	€3
पागी में कर्मदाम के घर पर निवास	દપ્ર
कर्मदास की माता का वेगमोहनी के माथ विवाह का आग्रह	<i>23</i>
कई-कई दिन की समाधि का विजेष ग्रम्यास	33
चित्र श्री राजयोगाचार्य व्र० व्यासदेवजी महाराज (युवावस्या)	१०१
कुल्लू मे चार मास तक निवास	१०१
ज्वालादेवी के दर्शन	१०१
कुल्लू मे निवास	१०२
विशिष्ठ कुण्ड ग्रीर व्याम कुण्ड की यात्रा	१०३
कुल्लू के मेले पर व्यभिचार रोकने के उपाय	१०३
मणीकरण-यात्रा वंग देश की यात्रा	१०४
	१०५
मन्तो का वाजार	१०६
गगासागर-यात्रा दार्जिलिंग श्रोर शीलाग भ्रमण	१०७
	१०५
टाइगर हिल पर सूर्योदय दर्गन शीलाग के लिए प्रस्थान	१०५
सन्यासिनी देवी से परिचय	308
उपनिपदो की कथा	308
	११०
गोहाटी मे प्रस्थान का विचार शीलाग के लिए प्रस्थान	११०
मार्ग मे दुर्घटना	222
शीलाग मे निवास	222
चिरापूजी गमन	११२
शीलाग के रीति-रिवाज	११२
१ आयन् (भाष	११३

विषय पृष्ठ पूज्य महाराजजी का जिप्यो श्रीर सत्मिगियो को उपदेश २०। चित्र श्री १०८ ब्रह्मिव स्वामी योगेक्यरानन्द सरम्बतीजी महाराज का मायान लेने के पक्कान् उत्तराष्ट्री	9 0 5 15 17 17
चित्र श्री १०८ ब्रह्मिष स्वामी योगेक्ष्यरानन्द सरम्बतीजी महाराज का मत्यान लेने के पक्ष्यात् २८	יי בי ב
	1
<b>उत्तरा</b> ई	= P = E
	= P = E
गनम प्रथमय प्रसाविया मा प्रचार २६३३६६	= P = E
'बहा-पिज्ञान' ग्रंथ की रचना ग्रीर काष्ठ मीन	द द्
श्री महाराज के प्रवृभुत क्वीवल के प्रभाव ने प्राक्ताकों का पीछे हटना २६	,
मनोद्यन में मध्यस्य तथा धर्मचारियों वो श्रनुकूल बनाना	-
योगवल मे तेठ जुगगतिकोर विरला की पीठ-पीडा श्रपहरण १६	0 3
पूर्व महाराजजी पर मस्तिष्क रोग का प्रकीप २६	
गगोत्री प्रस्यान २६	દ્રગ્
स्वर्गाश्रम प्रस्थान २६	83
म्बगायम न नाचना निविद २६	Ey
पूज्य गुरदेव का पता के विषय में उपदेश १६	ξų
योग या नार्वभीगियता २६	33
पम नियम २६	33
प्रायन तथा पापापान ३०	0 0
प्रस्यातार ३०	00
संस्था, "यान, संपादि ३०	00
दित्ती प्रस्थान ३०	οŞ
नन्त-गुटी-नियाम ३०	٠ ۶
दिल्ती में पूर्व्य पुरदेवजी ने उपध्य	οĘ
<b>9 1 - 1 1</b>	5 0
यातनान प्रशाना गुरणतमनानार्थ गुर गी श्रापत्यस्ता ३	43
	βg
रापन-सतुष्ट्य ३०	€ 0
77.4	० ३
दम ३०	०४
<b>चपरित</b> ३०	08
नि-धा	06
मन भाति ३०	06
प्रमृति का हतु—राग <sup>३६</sup>	. e, &
म्रियारी गुर तया जिल्य	05
	१०
श्रेय श्रीर प्रेय मार्ग	, 6

**:** { o . %8

विषय	पृष्ठ
श्रात्म-ज्ञान प्राप्ति का क्रम	3 ? ?
म्रात्मा के तीन दुर्ग	३११
सूक्ष्म शरीर मे प्रवेश	३ १ :
सूक्ष्म शरीर का निर्माण	३१:
योगी का सूक्ष्म शरीर मे प्रवेश	383
पच तन्मात्राग्रो का लोक	3 8 8
व्रह्मरध्न-प्रवेश	3 8 7
कर्म तथा ज्ञान इन्द्रियो, मन तथा वृद्धि के ज्ञान की ग्रावश्यकता	३१६
सूक्ष्म शरीर का निर्माण श्रौर उसका कार्य	३१६
कारण बरीर मे प्रवेश ग्रौर उसका ज्ञान	₹ १ ह
सेठ जुगलिकशोरजी बिरला का नित्य महाराजजी के पास समागम	इ२०
पजाब भ्रमण	३२२
लुवियाना गमन	३२२
जालधर प्रस्थान	३२३
होशियारपुर गमन	३२३
त्रमृतमर प्रस्थान 	३२३
डलहोजी प्रस्थान -	३२४
श्रीनगर निवास	३२४
गुलमर्ग प्रस्थान	३२६
पहलगाव प्रस्थान	३२७
महात्मा लक्ष्मणजी का समागम	३२८
श्रीनगर मे पुन कथा	375
जम्बू गमन	398
स्वर्गाश्रम मे साधना शिविर	378
योगनिकतन-भवन-निर्माण के लिए भूमि खरीदना	३३०
भ्रम्यासियो पर वल प्रयोग	<b>३३०</b>
मस्तिष्क-रोग	३३२
दिल्ली, बम्बई स्रादि नगरो का पर्यटन	३३२
जिज्ञासु भवतो का शकासमाधान	३३३
प्राणिमात्र के कर्मफल की व्यवस्था	३३३
कर्म का फल कर्म मे निहित	३३४
देश	३३४
काल निमित्त	३३४
	३३४
सामग्री	χεş
चेतन के ग्राश्रय से कर्म स्वय फलप्रदाता	<b>३३६</b>
न्नात्मा ग्रौर ईश्वर मे कर्म का ग्रभाव	336

विषय	र्वेद्ध
गगोत्री प्रस्थान	२२ ०
महारमा प्रानन्दस्यामीजी की श्री महाराजजी के प्रति भनित	. ` ` २२१
श्री भ्रानन्दस्यामीजी को भ्रात्म-साक्षात्कार	<b>२२४</b>
१६४१ में तपोवन में साधना शिविर	२२६
रायसाहव विश्वेश्वरनायदत्तजी को भारोग्य-दान	२२७
युद्धाचारी जगरनाथजी का स्नागमन	२२८
र्कष्टन जगन्ना रजी या भागमन	२२ <b>८</b>
ता पूर्व महात्मा प्रभुपाधितजी का यागमन	२२६
टापुरदत्तको वैद्य का नपत्नीक शिविरागमन	२३०
नेट भवानानजी गर्राफ गी मनन्य भिनन	२३०
ध्रनाय भवत	230
बास गुरमुपसिंह की सी भवित	230
शिविर समाप्ति	२३०
पृहद सञ	⊃ ह १
युट्युसना पा प्रायोजन	२३१
श्री गटाराजनी के मनीयत या प्रभाव	र् ३ र
सरलादेवी का शिविर में माना	ちょう
श्री महाराजजी के योगवल का चमत्कार	२३३
श्रीवती धर्मवतीकी को गोप-साताचार	२३४
श्रीमती नाम्बदातीजी को गोप दिसान	२३४
हरिद्वार में नियास	२३६
गगोत्री प्रस्थान	२३६
त्ठ रमणताल गेरावताल का गगाशी में आगमन	२३६
मेठ रमणतात की जीवन-दान	२३७
श्री द्वासरप्रयागीजी की गुरस्यित	२३७
माता मनमादेयीजी का भूमि गरीदने तया ष्ट्रिटिया निर्माणार्थ दान	२३८
तपोयन में पुन सापना दिविर	२३८
नारायणदास पपूर के विता को आरोग्यता प्रदान	२४०
पावा गुरमुपनिहर्जा यी शेगमुतित	२४०
विविर समाध्य का समारोह	२४०
स्वर्गाश्रम मे शिविर	२४२
ग्यः माहप्यंजनक घटना	२४३
गगोप्री-प्रस्थान	२ ४६
स्वर्गाश्रम साधना शिविर	२८६
हुन्द्रा की जोग-मुक्ति	२४७
म्मित्रा को वरदान	२४८
क्योंकी हो जिए प्रस्थान	२४६

विषय	वृष्ठ
स्वर्गाश्रम गमन	२५०
४ मई १६५५ मे उत्तरकाशी मे योगनिकेतन का उद्घाटन	२५१
गगोत्री प्रस्यान	ঽ৸ঽ
सेठ तुलसीराम को जीवनदान	२४२
सेठ हरवसलाल का समागम	ঽ৸৸
वम्बई से स्वर्गाश्रम के लिए प्रस्थान	<b>ラ</b> りも
स्वर्गाश्रम मे साधना शिविर	5 y E
श्री हरवसलाल का शिविर मे प्रवेश	२४७
श्री महाराजजी की उपदेशामृत वर्षा	হ্ ४ ও
शान्ति की विजय	マソニ
विचित्र घटना	२५६
हिमालय के योगी का चमत्कार	२६०
उत्तरकाशी गगोत्री प्रस्थान	२६१
ग्रन्य निर्माण करने का विचार	२६१
युवक श्रम्यासियो पर श्रविश्वास	562
स्वर्गाश्रम मे ४ मास के साधना शिविर की समाप्ति पर उपदेश	૦૬રૂ
श्री रणवीरजी को उपदेश	४३६
ब्रह्मचारी प्रेम का योगनिकेतन मे प्रवेश	ひもり
गगोत्री प्रस्थान	२६६
ब्रह्मचारी श्रीकठ का योगनिकतन मे प्रवेश	266
'श्रात्म-विज्ञान' प्रकाशन कार्य	३६७
गगोत्री प्रस्थान	२६७
'वहिरच्च योग' ग्रथ की योजना	७३७
स्वर्गाश्रम गमन	ಶಳಿದ
योगनिकतन ट्रस्ट	२६६
भक्त की कारावास से मुक्ति	330
सेठ जुगलिक्झोर विरला से सपर्क	<b>२</b> ७०
सेठ जुगलिकशोर विरला की वीमारी को ग्रपने ऊपर लेना	२७१
गगोत्री प्रस्थान	२७१
स्वर्गाश्रम मे साधना शिविर -	२्७३
्रमार्च १६६० मे 'वहिरङ्ग योग' का प्रकाशन	२७३
गगोत्री गमन	२्८३
साधना शिविर	२७४
सन्यास की तैयारी	२७४
सहारुद्र यज्ञ का प्रारम्भ	२७५
हर की पौडी पर वैशाख सकान्ति १३ अप्रैल १६६२ को सन्यास ग्रहण	२५४
१४ प्रप्रैल को महाराजजी ने निम्न उपदेश दिया था	२७६

विषय	पृष्ठ
मानगरोवर भील	१७३
कैलास परिक्रमा	१७४
नोरो का मुकाबना	१७६
यतमोरे में यात्रा की नगाप्ति	१७७
चतुर्थं अभ्याय योग-प्रशिदाण	१७६२50
मोहनाध्रम में नाघकों को ग्रभ्यास शिक्षण	१७६
प्रशिक्षण ना विज्ञान से प्रारम्भ	१७६
पर्या नो नोक देना	१८०
हुदय स्तम्भ ग्रीर नाठी-प्रवरोध का परीक्षण	१ <b>५</b> ०
र्वेद्य घमनन्द के पुत्र को योगतन से घारोग्यता प्रशन की	१≒१
श्रमृतगर पंधारना	१८२
नावता का गावंत्रम	१८२
सोग प्रतिक्षण	<b>१</b> =२
जनग्कामी (हिमालय) में नि <b>प्रा</b> स	१८३
नकर मठ में निवास	2 5 3
हरिद्वार में योग प्रशिक्षण	१८३
सेठ तुत्रसीराम श्रीर मनगादेती को तरदान	१८४
पृद्ध सन्त के उपदेश	१८४
उत्तरपात्री (हिमालय) मे पुन निवास	१८४
गोमुरा वी ७ दिन म यात्रा	१६६
जातपर नया होशियापुर गमन	१८६
काञ्मीर गमन	१८७
ग्रम्तसर मे नित्राम	१८७
श्रवपूर प्रदिशकाशजी का उत्थान श्रीर पतन	१८७
<b>उ</b> न्थान	१८७
पनन	१८८
गाःमीर प्रायान	१न६
देरी साहय में नियास घीर चमलकार	१८६
देगे माह्य में निभंग होकर निवास श्रीर गुटिया का जीर्णाखार	१६०
म्राध्वयं जनक प्रमाद की प्राप्ति	939
नम्बरदार मरतारिमह् को पुत्रोत्पत्ति का वरदान	१६२
श्रमृतसर गमन	१६२
श्रीनगर-निवाम	<b>F3</b> \$
प० गोवीनाथ जिस्वनाथ के गृह का त्याग	१६३
प० द्वारिकानाथजी को प्रसाद	१६४
पहलगाव में साधना गिविर	१६५

विषय	पृष्ठ
श्रीनगर मे गुरुसहायमल की कोठी पर कथा	38
ग्रमृतसर-गमन	28
लाला श्रीकृष्ण को टैनस से मुक्त करवाना	98!
हरिद्वार मे पातजलाश्रम मे काप्ठ मौन	238
गगोत्री निवास भ्रौर श्रन्नक्षेत्र का प्रारम्भ	? 8 ?
घराली मे महर्षि स्वामी दयानन्दजी की गुफा के दर्शन	\$ 62
सन्तो का न्यायालय	38
ग्रमृतसर मे योग प्रशिक्षण	? ? ?
हरिँद्वार मे निवास तथा मौन व्रत	१६१
गगोत्री गमन	१६६
गोमुख निवास	200
हरिद्वार मे पातजलाश्रम मे एक वर्ष का मौन व्रत	२०१
विधि का विधान	503
बद्रीनाथ मे ५ मास तक निवास	50%
पातजलाश्रम मे निवास	205
सेठ तुलमीराम को मत्र-दीक्षा	205
हरिद्वार मे योग-प्रशिक्षण	२०९
बद्रीनाथ-गमन	705
महाराजजी के भक्त भगवानदास की पुत्रवधू का देहान्त	२०व
गगोत्री निवास का निश्चय	२०व
वद्रीनाथ के मदिर की स्थिति	२०=
हरिद्वार प्रस्थान	206
ब्रह्मवादिनी धर्मवती से वेदान्त पर वादिववाद	२०६
बद्रीनाथ-गमन	<b>२</b> १३
हरिद्वार मे मोहनाश्रम निवास	282
मनसादेवी को जीवनदान	२१२
श्री महाराजजी की ५ दिन की समाधि	२१३
बद्रीनाथ-गमन	2 8 8
चित्र श्री १०८ राजयोगाचार्य वालब्रह्मचारी व्यासदेवजी महाराज	२१४
हरिद्वार के लिए प्रस्थान	<b>२१</b> ५
शरणािंथयों की सहायता	२१५
सन् १६४८ मे भक्तो के कष्ट का निवारण	२१६
प्रयागराज के कुभ पर दो मास का निवास	7 १ ७
कोट वावा दयाराम मे निवास	२१=
स्वर्गाश्रम निवास	399
सन् १९४८ मे गगोत्री मे योगनिकेतन की स्थापना	२२०
उत्तरकाशी के लिए प्रस्थान	२२०

त्रिपय	पृष्ठ
पुन क्लकता गमन	११३
बुरे स्थान का मन पर प्रसाव	११४
श्री ब्रह्मचारोजी के प्रनाव ने पमा को वैराम	११४
नगात् में नमापि	११८
ारी गाहिला की सेविका का निवेदन	११४
वसा में विश्वति	११७
पनिचा पचा के प्रिप्ताचार्य प्राप्ता	११८
पद्मा के पर पर १५ परंड की निविक्ति समापि	११=
समाधि ये पापत्र से पद्मा के जीवन से परित्रतन	११८
परिया मान्यि से प्रया ना प्रयाप	१२०
नेट प्रामीता को उनदेश	१२२
पद्मा ना नारीप में निराग	<b>१</b> २२
परा रे लिए की महाराजकी ता उपनेश	१२२
महाराजाी तथा दोनो नेठो पा प्रति मायकाल पद्मा से मिलना	१२४
पुत्रा पा प्राप्तम से जियास स्था कार्यक्रम	628
थी महा विती राज्याचा धागमन	१२६
नव प्रमोहन का पत्थाय देवा	१२७
श्री महाराजेजी का बनारा प्रस्थान	१२७
प० विपारीकी मी प्रेरणा	१२६
भी गतास्य की वा ठमें जाना	१२८
याग ही हाउन	३२६
मापानिया में दें	378
नीन मास तक हरिद्वार में निवास	१३०
मन नामरापति या ग्रामी के रूप में मिनाप	१३०
पाञ्चीर प्रत्यान	8 3 8
रद पाउँ पी <b>समा</b> नि	१३२
मुक्ती टाग में ३ मास का प्राप्त मीत	835
भाग मामनीतृ	१३२
मयुरा तया पृत्रावन पात्रा	\$ 53
दक्षिण के तीर्या की मात्रा	\$ 5 3 v = 0
धनराजजी म परिचय	१३५
रामेन्त्रर के तिए प्रस्थान	<i>१३७</i> ३ <i>६</i> १
तीन गाम का काळ गीन	3 : \$
ग्रमृतसर में निवास	१४०
भप्त रेबीटासजी	१४०
चम्या-पात्रा	१४१
गर्वज्ञात्वा, यागुरा तथा गुल्लु के निए प्रस्थान	101

विषय	पृष्ठ
पुन श्रमृतसर मे निवास	१४२
भारत के मुख्य-मुख्य वहत्तर तीर्थों की यात्रा	१४२
दरभगा गमन	१४३
पालतू ञेर से वालिका की रक्षा	६४१
दरभगा-नरेश से भेंट	१४६
नैपाल-यात्रा	१४८
शिवरात्रि-महोत्सव	१४४
पुन काइमीर-निवास	१४७
श्रर्धकुम्भो पर हरिद्वार-गमन	१४७
सन्त-समागम	१४=
श्रात्म-ज्ञानी गुरुदेव की खोज	१५०
गुरु दर्शन	१५१
तृतीय ग्रध्याय तत्वतान की प्राप्ति	१५४१७८
गुरुदेव मे वार्तालाप	१५४
त्रात्म-विज्ञान तथा ब्रह्म-विज्ञान का उपदेश	2 ሺ ሃ
सप्रज्ञात-समाघि तथा कारण-कार्यात्मक प्रकृति-पुरुष का विज्ञान	ર્પ્રદ
समाधि से व्युत्थान	१४७
गुरुदेव का व्यवितत्व	१५=
गुरुदेव से विदाई	१५८
श्रमृतसर के लिए प्रस्थान	848
काष्ठ मौन वृत	१५६
कठिन सापना का कार्यक्रम	१५६
वरदान प्रदान	348
काश्मीर गमन	१६०
कैलाश तथा मानसरोवर यात्रा	१६०
विछडे हुए राजपूतो का पुन धर्म-प्रवेश	१६१
तकलाकोट मे एक योगी से भेंट	१६५
मानसरोवर दर्शन	<b>१</b> ६=
डाकुम्रो की स्त्रियो की क्षमा-याचना	१ <b>६</b> ६
डाकुग्रो को क्षमा प्रदान	१७०
मानसरोवर पर चन्द्र ग्रीर सूर्य ग्रहण	१७०
डाकुग्रो से चोरी न करने की प्रतिज्ञा करवाना	
मानसरोवर परिक्रमा	१५१
श्री महाराजजी का दलदल मे फसना	<i>१७१</i>
मदिर तथा उनमे पूजा	१७२
रीति-रिवाज	१७२
	१७२

# पूर्वार्द्ध

नहीं की ग्रिपितु गम्पूर्ण जीवन की रक्षा की है। इन्होंने ग्रिपना सारा जीवन तपन्चर्या, नाधना ग्रांर योग के ग्रिपण कर दिया, इसीलिए वे युगपुरुप है। तप पूत तपस्वी है। महान् योगी तथा सिद्ध महात्मा है। राजयोगाचार्यजी ने योग द्वारा ब्रह्म साक्षान्कार प्राप्त किया है। जिम प्रकार ग्राधुनिक विज्ञानवेत्ता विज्ञान की प्रयोग-दाला में विविध लौकिक अनुमधान करता है, उसी प्रकार में महाराजधी ने श्रपनी देहम्पी भगवान् की पुरी को प्रयोगशाला बनाकर ग्रात्म-विज्ञान तथा ब्रह्म-विज्ञान का ग्रमुग्यान किया है ग्रीर पाचो कोपो के साक्षान् दर्शन करके ब्रह्म-दर्शन लाभ किया है। यह पूज्य महाराजजी की विध्व को एक महान् देन है। उनका यह उपकार वर्तमान तथा भाषी नन्नतियों के हत्पटल पर सदैव श्रिष्कृत रहेगा।

योगीराजजी अन्य वालको के समान ही एक साधारण वालक थे। अपने परम पुरुषायं, तप, त्यान, जाप, साधना तथा योगाभ्यास के द्वारा एक ही जन्म में विद्वान्, योगी, आत्मज्ञानी तथा ब्रह्मज्ञानी वन गए। उनका सारा जीवन आवालवृद्ध सभी के लिए एक महान् उपदेश है। उनके बताए मार्ग पर चलकर मानव अपना राज्याण कर सकता है।

"तिमानय ता योगी" पाच श्रध्यायो मे विभवत है। प्रथम श्रध्याय मे वैराग्योत्यनि, वात्यकान मे गृह-त्याग, सम्कृताध्ययन, कई योगियो के सान्तिध्य मे रहकर योगाभ्यास, वैराग्य भावना का दृढीकरण, विविध सवर्षो पर विजय तथा योगियो की योज मे उत्तरत्त श्रमणादि का विषद वर्णन है।

दूसरे अध्याय में योगी परमानन्दजी में साक्षात्कार, इनके श्रीचरणों में बैठ कर योग-साधना, उचित मार्ग दर्शन, १२ घण्टे तक की शून्य समाधि का अभ्यास, कर्ज वर्ष तक गीत बन धारण करके उसे दृष्टभूमि करना, उनके प्रशिक्षण के आधार पर कर्ज पण्टे तथा कई-कई दिन की शून्य समाधि का अभ्यास, दर्शनोपनिपदादि ग्रंथों का अध्ययन, अनेक सन्तों तथा महात्माओं के सत्सग के लाभादि का वर्णन किया ग्रा है।

नीसरे श्रध्याय में पूर्ण ब्रह्मजानी योगी की योज, ब्रह्मजानी श्रात्मानन्दजी महाराज का साक्षात्कार, उनके श्रीचरणों की कृषा से सप्रज्ञात समाधि द्वारा कारण मप प्रकृति श्रीर उनके समस्त कार्यों का साक्षात्कार, श्रीर श्रात्म-ज्ञान तथा ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति श्रीर साक्षात्कार, कई वर्षों का मीन, प्रनेक उपायों तथा ध्यान-समाधि द्वारा प्राप्त विज्ञान को दृद्भूमि करने का सविस्तार वर्णन है।

चौथे श्रध्याय में लगभग २५ वर्ष तक हिमालय में निवास, योग के विद्यार्थियों को योगविद्या का प्रशिक्षण, श्रष्टांग योग द्वारा ध्यान श्रौर समाधि से श्रात्म- साक्षात्कार करवाना, 'वहिरङ्ग-योग' तथा 'ग्रात्म-विज्ञान' ग्रथो की रचना, सन् १६६२ मे वैगाख की सकान्ति के दिन वृहद् यज्ञ करके सन्यास ग्राश्रम मे प्रवेश का वर्णन है।

पचम अध्याय में बद्रीनाथ में ४ मास का काष्ठ मौन तथा 'ब्रह्म-ज्ञान' की रचना, ब्रह्मसाक्षात्कार का अभ्यास कराना, सन् १६६४-६५ में भारत के बड़े-बड़े नगरों का परिभ्रमण, आत्मज्ञान तथा ब्रह्मज्ञान का प्रचार, अनेक व्याख्यानों, नगरों में लोगों में योग के प्रति अभिरुचि और योगाभ्यास के साधनों का प्रचार, पुन हिमालय-आगमनादि का वर्णन है।

इस ग्रथ के लेखक के रूप में किसी व्यक्ति विशेष का नाम न देने का कारण किसी व्यक्ति विशेष का लेखक न होना ही है। विभिन्न लेखो का सग्रह करके योगनिकेतन ट्रस्ट ने जनकल्याणार्थ पुस्तक रूप में प्रस्तुत किया है।

स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश जिला देहरादून १६-३-१६६६ वि० सवत् ६ चैत्र २०२३

व्यवस्थापक योगनिकेतन ट्रस्ट

विषय	पृष्ठ
६ वीर्य ग्रीर रज	३७०
१० मल	300
पृथिवी के ११ गुण	390
दश प्रकार का जलीय कीय	३७१ ३७१
जलीय कोप के दश गुण	२०१ ३७३
दश प्रकार का श्राग्नेय कोष	३७३
ग्राग्नेय कीप के द गुण	३७५ ३७५
वायवीय कोप	३७६
वायवीय कीप के इ गुण	३७५
श्राकाशीय कोप	350
श्राकाशीय कोप के ३ गुण	३८१
पूज्य महाराजजी का कर्म के विषय मे उपदेश	₹52
बह्म ग्रीर प्रकृति के साथ कर्म का सम्बन्व	342
कर्म कारण रूप से नित्य तथा कार्य रूप से अनित्य है	, ३८३
जीवात्मा के सम्बन्ध से कर्म का निरूपण	- ३ <b>५</b> ३
कर्म चित्त का वर्म है	३८३
कर्म मनुष्य के वच और मोक्ष का हेतु	३५४
तप पूत ब्रह्मनिष्ठ महाराजजी का ज्ञान पर उपदेश	३८४
ब्रह्म श्रीर प्रकृति से ज्ञान का सम्बन्ध	३८४
श्रात्म-तत्त्व के सान्तिध्य से चित्त मे ज्ञान श्रीर कर्म का प्रादुर्भाव	३८६
ज्ञान शरीर का धर्म नही	३८६
ज्ञान जीवात्मा का वर्म नही	३८७
ज्ञान युढि या चित्त का वर्म है	३८७
<b>उ</b> पमहार	३८6
योगाभ्यास मे ग्राने वाले साधको के लिए सक्षिप्त सूचना	38

380

## भूमिका

भारतवर्ष योग की परम्पराश्रो को भूल चुका था। महिप पतजिल के नाम से भी इने-गिने विद्वान् ही परिचित थे। जो सस्कृत के विद्वान् पड् दर्शन का श्रध्ययन करके पाण्डित्य प्राप्त करना चाहते थे वे ही इसे पढते थे। पातजिल योग भी एक महत्वपूर्ण दर्शन है। इसके विना दर्शन-ज्ञान श्रधूरा है। इस दर्शन को पाण्डित्य के लिए पढा जाता था, योगाभ्यास के लिए नही। श्राधुनिक युग मे योगियों का प्राय श्रभाव सा ही है। पूज्यपाद श्री १०८ ब्रह्मिप स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वतीजी महाराज ने योग की प्राचीन परम्पराश्रो तथा योग की प्राचीन परिपाटी को इस युग मे प्रारम करके इसका पुनरुद्धार किया है।

श्री योगीराज के सपर्क मे बहुत वर्ष तक रहने का पुण्य-लाभ किया है। इनके जीवन की श्रनेक घटनाए प्रत्यक्ष देखी तथा मुनी हैं। इनके ग्रद्भुत मनोवल, ग्राय्चरं-चिकत कर देने वाली सिद्धियो, ग्रनुभूतियो ग्रीर चमत्कारों को देख सहमा विश्वाम नहीं होता कि इस पतन के युग में भी ऐसे महान् योगी का जन्म हो सकता है। इनके जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाग्रों तथा यौगिक ग्रनुभूतियों को पढ़कर जनता की योग में ग्रास्था तथा श्रद्धा उत्पन्न होगी, इसके प्रति रुचि में वृद्धि होगी, तथा योगोन्मुख युवक योगियों को मार्ग-दर्जन लाभ होगा, इस उद्देश्य में "हिमालय का योगी" को लिखने का प्रयास किया गया है। इसमें महाराजश्री के जीवन की प्रमुख-प्रमुख घटनाग्रों तथा योगानुभूतियों का सग्रह किया गया है। ग्राचा है, यह ग्रथ पाठकों के नैतिक स्तर को उन्नत करने, उनके जीवन को धार्मिक बनाने, उच्चा-दर्जों को समभने, ब्यावहारिक जीवन को शुद्ध ग्रीर पिवत्र बनाने, ग्रतीत की ग्रीर ध्यान ग्राकिपत करने तथा योग के प्रति ग्रिभरिच उत्पन्न करने के लिए ग्रगसर होगा।

मानव मात्र के जीवन का तीन-चौथाई भाग सर्वसाधारण मानव के समान ही होता है। प्रत्येक प्राणी माता के गर्भ से उत्पन्न होता है। माता-पिता से लालित ग्रीर पालित होकर विकास ग्रीर वृद्धि को प्राप्त करता है। विद्यालयो तथा महा-विद्यालयो में ग्रध्ययन करके उपाधि ग्रहण करता है या यू ही साधारण व्यावहारिक ज्ञान का ग्रर्जन करता है। युवावस्था में ग्राजीविका की चिन्ता करता है। विवाह होता है। परिवार वन जाता है। उसका उत्तरदायित्व सभालता है। वार्धक्य को प्राप्त करता है, ग्रीर इसी प्रकार जीवन सघर्ष करता हुग्रा ग्रपनी जीवन-लीला समाप्त कर देता है। ग्रायु का एक-चौथाई मांग ही ऐसा है जो उसे देव ग्रथवा दानव वना देता है। महाराजश्री ने भ्रपने जीवन के केवल एक-चौथाई भाग की ही रक्षा

विपय	पृष्ठ
भगवान् मे नित्य गुणो का श्रभाव	७६ इ
समवाय सम्बन्ध	३३७
स्वरूप सम्प्रन्य	३३७
तादात्म्य-भाव सम्बन्ध	३३७
मयोग सम्बन्ध	३३५
ईंग्वर मे नित्य गुणो के श्रभाव की सिद्धि	३३८
विकार रहित होने से किया का श्रभाव	३३८
वंदिक-भिक्त-साधनाश्रम रोहतक को प्रस्यान	358
श्रमिनन्दन-पत्रम	३३६
ग्रहमदाचाद प्रस्थान	3 <b>%</b> 0
योग द्वारा श्रात्म-साक्षात्कार	३४१
प्रत्याहार	३४१
घारणा	३४१
कुण्डलिनी शनित	३४२
प्राणोत्थान गरित	३४२
कुण्टिनिनी शिवत का जागरण या उत्यान	३४३
कुण्डलिनी स्थल ग्रीर सूक्ष्म शरीरो को प्रकाशित करती है	३४४
इन ज्योति में प्रथम स्थल शरीर का विज्ञान प्राप्त करो	३४४
न्तमभरा वृद्धि	३४४
त्रानन्दमय कोप	३४४
पेटलाद गमन	३४६
सूरत प्रस्थान	३४६
बम्बई प्रस्थान	₹४७
नेठ नुत्रसीराम के पुत्रों में प्रेम सम्बन्ध की स्थापना	३४७
योगनियेतन ट्रस्ट की सभा	३४८
श्रोमप्रकाशजी की रोग-मुबित	388
नका-ममाधान	388
कलकत्ता प्रस्थान	३५०
म्रासनमोल प्रस्थान	३५१
धनवाद गमन	३५२
प्रह्मचारी श्रविलानन्द का समागम	३५२
श्रीमती प्रेमदेवी की श्रद्धा	३५३
प्रयाग के लिए प्रस्थान	<b>३</b> ५३
सगम स्नान	\$ <i>X</i> \$
दित्ली लीटना	३५३ ३५४
श्री महाराजजी का दिल्ली मे उपदेश	इपूर इपूर
क्षेत्र ग्रीर विलास का त्याग	२ % ०

विषय	वृष्ठ
ऋतभरा बुद्धि की प्राप्ति के सावन	\$ X €
भात्मा के तीन भ्रावरण	3 y E
चित्त मे श्रात्मा का श्रन्वेपण	3 7 8
स्वर्गाश्रम लौटना	ફ પ્રહ
पूज्य महाराजजी का उपदेश	₹ 7 5
शारीरिक, मानसिक तथा श्राध्यात्मिक उन्नति	₹ 7 5
नि शुल्क शिक्षा	3 X 5
देश तथा विदेश मे योग प्रचार	375
सव मतो और सप्रदायों में समानता	きょこ
योग की सार्वभौमिकता	3 X E
भवन की आघार-शिला	३५६
उत्तरकाशी गमन	3 X 5
गगोत्री मे तीन सायको को योगाम्यास वी शिक्षा	3 2 5
श्री शकरलालजी शर्मा	350
डा॰ कुमारी रामप्यारी शास्त्री	350
म्रानन्द धर्म किसका है	352
स्यूल शरीर मे श्रानन्द का ग्रभाव	\$ 6 2
प्राणमय कोप मे भी स्रभाव	३६२
मनोमय कोप मे भी श्रानन्द नही	₹ <b>5</b> ₹
विज्ञानमय कोप में भी स्रभाव	362
श्रानन्दमय कोप मे श्रानन्द प्राप्ति	363
सूक्स प्राण मे ग्रानन्द नही	3 5 3
श्रहकार मे भी नही	353
ब्रह्म स्रानन्द का स्रोत नही	3 € 3
धानन्द जीवात्मा का भी धर्म नही	386
प्रकृति मे भी श्रानन्द की प्राप्ति नहीं होती है	≅ € X
श्रानन्द चित्त का घर्म है	366
पच कोषो का पचकोषात्मक स्थूल शरीर	₹ <b>5</b> %
दश प्रकार का पायिव कोष	3 40
१ श्रस्थि श्रीर दान्त	= <del>,</del>
२ नख, केश, डाढी मूछ, रोम	२ <i>५७</i> २ <i>६७</i>
३ मासपेशिया	₹ <del>₹ 4</del>
४ नाडी, म्रातें म्रादि	3 <b>5 द</b>
५ ज्ञान ग्रीर गतिवाहक तन्तु	355
६ त्वचा श्रौर घाण—नासिका घाणेन्द्रिय	
७ रस और रुचिर मे सूक्ष्म पाणिव भाग	₹ <b>€</b>
म मेद, मज्जा	3 7 8
	375

## हिमालय का योगी

#### प्रथम श्रध्याय

## वैराग्य का उदय

महापुरुप गम्यता, सम्फृति श्रीर धर्म के स्नोत होते है। वास्तव मे ये किसी भी देश स्थवा राष्ट्र की स्रलोकिक निधि हैं। इनके द्वारा ही मानव श्रात्मा का रक्षण प्रीर पोपण होता है। विश्व-कल्याण के लिए वे सदैव चिन्तित रहते हैं। स्रज्ञान के पहन गर्न में उबे जीवो की दयनीय दशा को देगकर वे द्रवित होते हैं श्रीर श्रपनी प्रहेतुकी कृपा की वर्षा वे उन पथन्न दशा श्रीर किकर्त्त व्यविमूद प्राणियो पर शाश्वत न्पेण करते रहते हैं। जब मानव धर्म के प्रति उदासीन हो जाता है, स्वधम की प्रभिवृद्धि होने लगती है, पापाचरण का समर्थन होता है, भगवद्भवतो का उपहास श्रीर ग्रामान होने लगता है, तब ग्रानों की श्रानि हरण करने तथा दु खितो के दु खो को दूर करने श्रीर पिततो के परित्राण, धर्म के उद्धार, सभ्यता तथा सस्कृति के सुधार, पायन परम्पराग्रो की पुन रथापना श्रीर लोक कल्याण के लिए जगन्तियन्ता श्रपनी किमी न किमी विभूति को मगार में प्रेपिन किया करते है। महानात्मा ब्रह्मिप प्रात परप्णीय पूज्यपाद नैष्ठिक ब्रह्मचारी रवामी योगेश्वरानन्द सरस्वती जी उन दिव्य विभूतियों में ने एक हैं।

योग का पुनरुद्वार—प्रनेक विमल धारात्रों सहित भिनत की जान्हवी तो ितनी न किसी रूप में हमारे देश में गत कई शताब्दिों से प्रवाहित होती रही। समय-मिय पर एसका विभिन्न सहायक धारात्रों से परिपोपण श्रीर परिवर्धन होता रहा। कबीर, रिवरास, नानक, नामदेव, एकनाय, रामदासादि इसी भनत परस्परा के प्रतीक थे। किन्तु योग-परस्परा को हमारा राष्ट्र विल्कुल भूल गया था। भिनत-मार्ग की सरलता श्रीर सुगमता में ग्रावर्षण था। यह बजी मुबोध थी श्रीर श्रासानी से समभ में श्रा जाती थी। महजगम्य होने में यह लोकप्रिय थी। भिनत पापात्माश्रों को भी उल्टा-मृत्टा भगवन्नाम रमरणमात्र में ही परित्राण की श्रावा दिलाती थी। श्रत यह सर्वाधिक लोकप्रिय बनी रही। योग बटा कित मार्ग है। इसी के विषय में उपनिपद् ने कहा है "कुरस्य धारा निधिता दुरत्यया"। यह पथ बडा दुर्गम है। इसमें साधक को योगाग्नि में श्रपने को रवाहा करना होता है। किठनतम तपस्या करनी होती है, उसकी साधना की समाप्ति किसी एक या दो जन्म में नहीं होती। योग में सिद्धि प्राप्त करने के लिए जन्मजन्मान्तरों तक साधना करनी पटती है। इसीलिए यह मार्ग लोकप्रिय नहीं रह सका था। योग भारतवर्ष की श्रमूल्य निधि है। समस्त विद्याए योगाभ्यासजन्य ऋतम्भरा प्रजा के ही मधुर श्रीर मनोहर फल है। हमारे वास्त्रों में सभी धर्मों का मुन्य साधन योग माना गया है। वेद, उपनिपद्, गीतादि शार्त्रों में योग के महत्व की यश्र-तश्र बडी महत्ता दी गई है। महाभारत तथा पुराणो

मे भी योग का विपुल तथा विस्तृत वर्णन पाया जाता है। किन्तु वर्तमान युग में भारतीय ग्रपने महान योग को भूल गए थे। योग का नाम ही लोगो को भयभीत करता था। इसीलिए हमारा गारीरिक, मानसिक ग्रीर ग्राध्यात्मिक पतन हो रहा था। इसी पुरातन योग की परम्पराग्रो की रक्षा ग्रीर योग का पुनरुद्धार करने के लिए योगीराज योगेश्वरानन्दंजी महाराज का ग्राविभीव हुग्रा।

जन्म—योगीराज का पूर्व नाम व्यासदेवजी था। ग्रापने ग्रपने जन्म से एक उच्च कुल को गौरवान्वित किया था। इनके माता-पिता तथा विहन-भाईयो का इनसे ग्रत्यिक स्नेह था। ये माता-पिता के दुलारे तथा ग्रपने सहोदरो के प्यारे थे। वहें लाइ ग्रौर प्यार से ग्रापका लालन-पालन ग्रौर पोपण हुग्रा था। यह वालक प्रतिभा-सम्पन्न था। सहन-जीलता, सहानुभूति, ग्राज्ञापालनादि ग्रापके सहज गुण थे। ग्रपने गुणो तथा शिज्ञुस्वभाव सुलभ चाञ्चल्य तथा माधुर्य ग्रौर सौन्दर्य के कारण वे दिन प्रति दिन स्वृंप्रिय वनते गए। पास-पडौस के ग्रावाल वृद्ध नर-नारियो के ये बडे स्नेहभाजन वन गए। जहा कही भी ये जाते वही सव उनसे प्रेम करते तथा उनकी भोली ग्रौर मीठ्री-मीठी वातो से ग्रानन्द लाभ करते। उनकी वाल-लीलाए वालगोविन्द के वाल्य-काल का सहसा स्मरण दिला देती है। इस प्रकार वडे वात्सल्यपूर्ण वातावरण में वालक व्यासदेव चन्द्रकला की भाति विकास को प्राप्त करने लगा।

विचारशीलता--व्यासदेवजी स्वभाव से ही विचारशील तथा एकान्तप्रिय , ये। घर हो या वाहिर, वे किसी न किसी एकान्त स्थान मे वैठते थे। समुदाय मे रहना , उन्हे पसन्द न था। इसीलिये कभी-कभी उन्हे ग्रपने पारिवारिक जनो नथा सह-पाठियों का कोप-भाजन वनना पडता था। वे एकान्त मे ग्रपने घर के किसी कोने मे या उद्यान मे, पाठगाला के सुदूर किसी कीडाङ्गन मे ग्रथवा किसी एकान्त कमरे मे बैठे कुछ सोचा करते थे। सदैव विचारमग्न दृष्टिगोचर होते थे। यह किसी को -,पता नहीं था कि वे क्या सोचते है ग्रीर किन विचारो मे डूवे रहते है। ग्यारह या वारह साल के वालक से किसी प्रकार की विचारशीलता की आगा भी नहीं की जा सकती थी। वालक क्या सोचता है, किस विचार मे डूवा है, किस चिन्ता ने इसे घेरा है, इसे क्या पीड़ा है तथा क्या दुख है, इसे कोई समभ नही सका। यह वात - सवके लिए एक पहेलिका थी। माता-पिना वालक के इस प्रकार के रुख से दुखी थे ग्रार कुछ चितित से रहने लगे। वे इस वात की कभी कल्पना भी नही कर सकते थे कि उनका वारह वर्ष का वालक सृष्टि, उसका स्रष्टा तथा जीवो के पारस्परिक , मम्बन्य के विषय में तथा तत्सम्बन्धित अन्य विषयों के विचारों में डूवा रहता है। व्यासदेवजी के सामने यह एक जटिल समस्या थी। इसका समाघान उनके पास न था, ,, इसीलिए वे ग्रातुर तथा व्याकुल रहते थे। माता-पिता को क्या मालूम था कि उनका नन्हा वालक किन जटिल समस्याग्रों को सुलभाने मे व्यस्त है।

स्वामी रामानन्दजी से सपर्क—जब व्यासदेवजी को ब्रह्म, प्रकृति ग्रीर जीव तथा ससार, ग्रीर उसके दु खो के कारण समक्त मे न ग्राए तब वह किसी ऐसे महा-पुरुष की खोज करने लगे जो उन्हें जीव, ब्रह्म ग्रीर प्रकृति के पारस्परिक सम्बन्ध ग्रीर ससार के दु खो की निवृत्ति के विषय मे पूर्ण ज्ञान प्रदान कर सके ग्रीर ऐसा मार्ग वता सके जियपर चलकर ससार के दु खो को दूर किया जा सके। जब वे इस खोज मे घर-उधर भ्रमण कर रहे थे तब एक दिन उन्हें पता चला कि स्वामी रामानन्दजी गरि उनके नगर में आए हुए हैं। अपने एक मित्र के साथ वे उनके दर्शन करने के लए गए। स्वामीजी महाराज ने द्वादजवर्षीय वालक व्यामदेव के व्यक्तित्व को तुरत हिचान लिया। उन्होंने वालक की तिरोहित शक्तियों को जाना और यह समभ्र लिया कि यह वालक एक दिन महापुरुष होगा और पथभ्रष्ट लोगों का पथप्रदर्शक, बनेगा।

सस्कृताव्ययन की प्रेरणा—व्यासदेव की शिक्षा का प्रारम्भ उर्दू ग्रांर श्रग्नेजी ने हुग्रा था। जब वह न्वामी रामानन्दजी महाराज में मिले थे तब उनकी श्रायु केवल बारह वर्ष की थी ग्रांर छठी कक्षा में पढते थे। न्वामीजी महाराज के चरणा-रिवन्दों में प्रणाम करके पास बैठ गये। वालक की पढाई-लिखाई के विषय में वात-वित करने के पण्चान् महाराज को विदित हुग्रा कि वालक केवल ग्रग्नेजी ग्रीर उर्दू ही पटना है ग्रांर मस्कृत तथा ग्रायंभाषा में निनान्त ग्रनिभन्न है, ग्रन उमें ये दोनों भाषाए पटने की ग्राजा दी। व्यामदेव ने ग्रममर्थना प्रकट करते हुए निवेदन किया कि पाठनाला में ग्रव ये दोनों भाषाए पढना ग्रमभव है क्योंकि उन्होंने प्रारम्भ से इन दोनों भाषायों को पढा ही नहीं था। ग्रनेक प्रकार के प्रश्नोत्तरों से स्वामीजी महान्या ने यह समभ लिया था कि वालक कुशाग्रवृद्धि हैं, ग्रांर इसमें महानता के चिन्ह स्पष्ट परिलक्षित हो रहें हैं, ग्रन उसमें कहा कि ग्रने खाली समय में हमारे पास, ग्राया करों, हम तुम्हें ये दोनों भाषाए पढाया करेंगे। प्रत्येक ग्रायं के लिए इन दोनों भाषाग्रा का पढना ग्रनिवार्य है। सस्कृत देववाणी है। उसी में हमारी सभ्यता ग्रीर सम्कृति निहित हैं। यही हमारे धर्म का ग्रादिस्रोत हैं। सरकृत भाषा के ग्रन्ययन के विना जीव, त्रह्य ग्रीर प्रकृति के सम्यन्य तथा समार के दुत्रों में मुक्त होने के बारे में जान प्राप्त नहीं हो नकता। उसी भाषा में हमारे वेद, दर्शन, ग्रारण्यक, ग्राह्मण, उपनिवदादि ग्रथ लिवे गए हैं। उनके पढ़ विना निजधम को समक्षना ग्रमभव है।

स्वामीजी में मंस्कृताध्ययन—स्यायदेवजी पर ग्वामीजी के उपदेश का गहरा प्रभाव पटा। यह ग्वामीजी में पढ़ने के लिए नित्यप्रति प्राने लगे। ग्वामीजी ने सर्व-प्रथम यालक को ब्रह्मचर्य का महत्त्व बताया और ब्रह्मचर्य-व्रत पालन करने के लिए कहा। यालक ने उसी दिन आजन्म ब्रह्मचर्य पालन करने का व्रत धारण किया। न्यामीजी के व्यक्तित्व का व्यायदेवजी पर वटा प्रभाव पड़ा। पाठशाला से छुट्टी होते ही वे तुरन्त ग्वामीजी के पाय पढ़ने के लिए आ जाते। तीन-चार महीने में ही आर्यभाषा की चार-पाच पुस्तक पढ़ ली और लिखने का भी बहुत अच्छा अभ्यास होगया। व्यायदेव की उस प्रकार की अद्भुत प्रतिभा से रवामीजी वडे प्रभावित हुए और उनके अध्ययन में अधिकाधिक किन लेने। इसी काल में व्यासदेवजी की संस्कृत में भी अच्छी गति होगई।

तीन जीवन-चरितो का प्रभाव—स्वामीजी महाराज ने व्यासदेव को स्वामी शकराचार्य, भगवान् बुद्ध तथा स्वामी दयानन्दजी महाराज के जीवन-चरित पढाए। इन तीनो जीवन-चरितो का व्यामदेवजी पर वडा प्रभाव पडा। उन्होंने यह निश्चय किया कि वह भगवान् शकर के समान प्रकाण्ड पडिण्त, भगवान् बुद्ध के समान त्यागशील श्रीर ऋषि दयानन्द के समान नैण्ठिक ब्रह्मचारी श्रीर महान् योगी वनेगे।

बुद्ध ने देखा कि ससार में चारों ग्रोर दु ख ही दु ख है। इस दु खित तथा पीडित ससार के दु ख का क्या कारण है तथा इस दु ख से ससार को कैसे बचाया जा सकता है—इसका पता लगाने के लिए बुद्ध ने गृह-त्याग किया ग्रौर दु खार्णव में डूबे हुए ससार को इससे बचने का उपाय बताया। शकर ने बुद्ध के शून्यवाद तथा ग्रकमण्यतावाद के नाश करने का बीडा उठाया ग्रौर बुद्ध द्वारा प्रचारित ग्रनीश्वरवाद को नष्ट कर ब्रह्मवाद की स्थापना की। ऋषि दयानन्द ने तत्कालीन भारतवर्ण की सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक दयनीय दशा से द्रवित होकर ग्रज्ञान के गहन गर्त में गिरे हुए भारत के उद्धार के लिए गृह-त्याग किया ग्रौर नैष्ठिक ब्रह्मचर्य-व्रत को धारण करके भारत में नवचेतना का प्रसार किया। प्राचीन पावन परम्पराग्रो की स्थापना की, ग्रतीन का गौरव बताया, नवीन शिक्षा-प्रणाली प्रचित्त की, कुरीतियो रूपी विविध कुष्ठ से पीडित समाज को जीवन दान दिया, राष्ट्रीय भावना को जागृत किया ग्रौर वैदिक ज्ञान की ग्रौर भारत का ध्यान ग्राक्पित किया। ऋषि दयानन्द के समान नैष्ठिक ब्रह्मचारी ग्रौर महान् योगी बनकर पथभ्रष्ट समाज का पथ-प्रदर्शन करने के लिए हमारे चरितनायक व्यासदेवजी ने भी १५-१६ वर्ष की ग्रायु में गृह-त्याग किया।

स्वामीजी का प्रभाव—व्यासदेवजी ने स्वामी रामानन्दजी के पास रह कर आर्यभापा की अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली और सस्कृत का भी ज्ञान प्राप्त किया। सध्या और गायत्री के अतिरिक्त विविध सुभापित तथा क्लोक याद किए। रामानन्दजी का व्यासदेव के हृदय पर बहुत वडा प्रभाव पडा। बालक-हृदय वडा कोमल, सरल और भावुक होता है। फिर व्यासदेव के प्राक्तन सस्कार उत्तम थे, घर का वातावरण भी ठीक था। अन्त करण निर्मल था, अत स्वामीजी का उपदेश उनके हृदय-पटल पर सदेव के लिए अड्कित हो गया, स्वामीजी के आदेश से पिताजी ने व्यासदेव का यज्ञोपवीत सस्कार भी करा दिया था। व्यासदेवजी का चित्त अब स्कूल से उपराम होगया। अग्रेजी और उर्दू पढने मे अक्चि होगई। कई-कई दिन स्कूल नहीं जाते थे। स्वामीजी महाराज के सत्सग मे आनन्दानुभव करते थे और प्राय उन्हीं के आश्रम मे रहते थे। इस पर पिता बडे कुद्ध हुए और बालक व्यासदेवजी की ताडना की और धिक्कारा। उसको स्वामीजी के पास जाने से मना किया और नियमानुसार नित्यप्रति स्कूल जाने का कठोर आदेश दिया।

## गृह-त्याग तथा योग के प्रति रुचि

व्यासदेव ने जैसे-तैसे बडी किठनाई से छठी कक्षा पास की। ग्रव स्कूल से ग्रिक्च होगई। स्कूल जाना बिल्कुल छोड दिया। पिताजी स्वामीजी के पास जाने नहीं देते। सस्कृत सीखने का ग्रीर कोई साधन नहीं। स्वामीजी के सत्सग तथा उपदेश सुनने के लिए पिताजी ने उनके पास न जाने की कठोर ग्राज्ञा दे दी। पिता ने यह दृढ धारणा बना ली थी कि यदि व्यासदेव स्वामी रामानन्दजी के पास जाता रहेगा तो वह पक्का साघु हो जाएगा। व्यासदेवजी के लिए यह स्थिति ग्रसह्य हो उठी। वे बडे ग्रातुर ग्रीर व्याकुल रहने लगे। जो पुस्तकें स्वामीजी से पढी थी उनकी पुनरावृत्ति करने तथा गायत्री जाप मे समय व्यतीत करने लगे। स्वामीजी ने व्यासदेवजी को बताया था कि गायत्री जाप से शीघ्र कार्यसिद्धि प्राप्त होती है। घण्टो ही गायत्री जाप मे व्यतीत करते। खान-पान की चिन्ता भी उन्हे न रहती थी।

माता भोजन के लिए बुलानी तो भोजन करने चले जाते थे। यदि वह न बुलाती तो जाप चलता रहता था। व्यासदेव के पिता के लिए यह बात प्रसद्ध थी। बालक को उस मार्ग से हटाने के लिए तथा स्वामीजी का सत्मग छुटाने श्रीर उस बातावरण से दूर रयने के लिए व्यासदेवजी को उनकी वहिन के पास भेज दिया श्रीर उसे श्रादेश दिया कि वह ग्रवने जीजाजी की दुकान पर दुकान का काम सीये। गुरु नानकदेव के पिता ने भी उमे भिवत-मार्ग से हटाने ग्रीर गमार में ग्रामक्त करने के लिए तथा सन्त-समागम से दूर रायने के लिए उसे उसकी वहिन के पास व्यापारादि सीम्बने के लिए भेजा या फिन्तु उससे उनकी उपरामता में किचिन्माय भी श्रन्तर नहीं श्राया था। उसी प्रकार व्यागदेवजी को बहिन के घर पर भेजने पर भी उनकी चित्तवृति पूर्वयन् उपराम बनी रही। वहा से पिता ने व्यासदेव को पुन अपने पास बुला लिया। यह पूर्ववत् गायत्री जापे गर्ने नथा उदामीन वृत्ति मे रहने लगे । पारिवारिक सदरयो में दूरें घर के किसी एक कोने में बैठ कर या तो जाप करते या चुपचाप कुछ चिन्तन करते रहते। न तो किसी से अधिक बार्तालाप करते श्रीर न किसी के पास बैठते। भाई-वहिन सभी उनका उपहास करते। व्यासदेव ने श्रव यह दृढ निव्चय कर लिया था कि घर पर रह कर न तो सरकृत पढ़ने की कोई ब्यवस्था हो सकती है श्रीर न योग ही सीमा जा सकता है। अत घर में भाग जाने की योजनाए बनाने लगे। योग मीराने की प्रवल प्रभिलापा उन्हे गृह-परित्याग के लिए बार-बार प्रेरित करती थी। तेरह-चौदह वर्ष के वालक में योग की उतनी उत्कट ग्रंभिलापा उसके प्रावतन गरकारों के प्रयत्न प्रभाव के परिणामस्वरूप ही मालूम होती थी। उससे यह रपण्ट है कि व्यासदेव पूर्वजन्म के योगश्रष्ट थे। रवामी रामानन्दजी उससे प्राय कहा करने वे कि योग के विना श्रात्म-साक्षातकार श्रमभव है।

स्वामीजी से सहायता की प्रार्थना—व्यामदेवजी श्रभी तक अपना भावी कार्य-रम निव्चित न कर सके थे। घर में भाग जाने का निव्चय तो कर निया था किन्तु गन्तव्य रथान तथा याँग गीगने श्रीर सरकृत पढ़ने की व्यवस्थादि के बारे में कोई निर्धारित रपरंथा न बना गके थे। श्रत चिन्तित तथा व्याकुल रहना रवा-भाविक था। एक दिन अत्यन्त श्रानुरता तथा व्याकुनता के साथ रवामी रामानन्दजी के पास गए श्रीर उनके चरणों पर गिर कर अपनी सारी व्यथा उन्हें कह सुनाई। श्रभने गृह-परित्यास के विचार में भी उन्हें श्रवगत किया श्रीर सहायता के लिए प्रार्थना की। स्वामीजी ने दो चार दिन में विचार करके श्रपनी सनाह देने का वायदा किया।

माता का उपदेश—व्यामदेवजी की माना उनसे श्रत्यन्त स्नेह करती थी।
एक दिन पाम विठाकर वात्मत्य भाव ने उमसे पूछने लगी, "वेटा, तुम्हे क्या होगया है? तुमने रकूल जाना छोट दिया। रान-दिन न जाने किस चिन्ता में दूवे रहते हो। भोजन भी तुम किपूर्वक नहीं करते हो। रान-दिन किन्ही गहरे विचारों में लोए में रहते हो। न तुम श्रपने वहिन-भाईयो श्रीर मित्रों में कभी हमते-पोलते हो श्रीर न कभी उनमें गेनते हो हो। सारा दिन घर के किसी कोने या मन्दिर में बैठे माला किया जरते हो। यह तुम्हारी श्रवर्था माला फेरने की नहीं है श्रिषतु पढ़ने श्रीर भावी जीवन के लिए तैयारी करने की है जिगगे तुम सुलपूर्वक श्रपना जीवन व्यतीन कर गाने।" व्यामदेव ने कहा, "में पढ़ना तो माताजी श्रवस्य चाहता

हू किन्तु उर्दू ग्रौर ग्रग्नेजी पढने मे मेरी रुचि नही है। मै तो सस्कृत पढना चाहता हू। इसी मे तो हमारे धर्म की बाते लिखी है। इसी को पढकर वास्तव मे मनुष्य ग्रपने जीवन को उन्नत कर सकता है ग्रौर भविष्य को उज्ज्वल बना सकता है। इस-लिए ग्राप मुभे किसी संस्कृत विद्यालय में संस्कृत ग्रध्ययन करने के लिए भेज दो। यदि ग्राप ऐसा न करोगी तो मै स्वय ही किसी सस्कृत पाठगाला में पढने चला जाऊगा श्रीर ब्रह्मचर्य-व्रत को धारण करके संस्कृत पढ्गा श्रीर योग साधन के द्वारा श्रात्मविज्ञान प्राप्त करूगा।" माता ने स्नेहपूर्वक उसका श्रालिंगन करके कहा, "पुत्र । ब्रह्मचर्य-व्रत को आजीवन घारण करना ग्रत्यन्त कठिन है। कोई विरले ही लडके आजीवन ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन कर सकेंगे। इनकी गणना श्रगुलियो पर की जा सकती है। यह वत बड़ा किंठन है। तुम इसका पालन न कर सकोगे। तुम्हे सदा वनो मे रहना होगा। स्त्रियो के दर्शन मात्र से भी दूर रहना पड़ेगा। गद्देदार पलगों का परित्याग करके तुम्हे जमीन पर सोना होगा और मृगचर्म धारण करना होगा। भिक्षाचर्या करनी पड़ेगी और गुरुजी के पास रह कर वेदाध्ययन करना होगा। वेटे ब्रह्मचर्य-साधना बडी कठिन है। इसको घारण करना तो लोहे के चने चवाना है। तुम इस हठ को छोड दो। जिस प्रकार से तुम्हारे भाई हसते-वोलते ग्रीर पढते-लिखते हैं तथा बड़े सुख से घर मे रहते है तुम भी इसी प्रकार से रहो। इससे तुम्हारे पिताजी तुमसे प्रसन्न रहेगे श्रौर सारा परिवार भी इसी मे श्रपना सुख मानेगा। तुम इतने बंडे परिवार में उत्पन्न हुए हो। यहा पर सभी सुख तथा ऐरवर्य के साधन प्राप्त है। तुम क्यो इन सबका परित्याग करके कठिन ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करना चाहते हो ? तुम अग्रेजी और उर्दू पढना क्यो छोड रहे हो ? इनको पढकर ही तो तुम राज्य मे ऊचा पद प्राप्त कर सकोगे और अपने भावी जीवन को सुखी बना सकोगे। मेरे दुलारे बेटे । अपनी प्यारी माता की बात को मानो और अपने हठ को छोडो । यह अच्छा नही है। तुम्हारे पिताजी ये सब बाते सुनेंगे तो तुमसे बहुत नाराज होगे। तुम उनके स्वभाव को जानते ही हो। ऐसा काम मत करो जिससे घर मे अशान्ति उत्पन्न हो श्रौर तुमसे सब नाराज हो । किन्तु वालक व्यासदेव श्रपने विचारो पर हिमालय के समान अटल रहा। माता अपने प्रेमभरे वचनो से उसे अपने निञ्चित मार्ग से हटा न सकी। व्यासदेव ने ब्रह्मचर्य व्रत की धारण करके योग साधन करने का जो निश्चय किया था उससे वह उसे डिगा न सकी। उसने माता से निवेदन किया कि वे उसे इस वृत के पालनार्थ वन मे जाने की ग्राज्ञा प्रदान करे किन्तु माता ने कहा कि मैं ऐसी निर्दयी माता नहीं हू जो ग्रपने प्यारे बेटे को वन में भेजू। व्यास-देव ने मदालसा का उदाहरण देकर माता को समकाया और कहा कि "इस ब्रह्म-वादिनी तथा ब्रह्मवर्चस्विनी माता ने अपने पुत्रो को ग्रात्म-ज्ञान प्राप्त्यर्थ वन मे भेजा था। ग्राप भी उस देवी का अनुकरण करे और मुक्ते योग-साधना द्वारा ग्रात्म-ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेज दे। ग्रापके पास ग्रापके चार पुत्र तो रहेगे ही, केवल एक ही तो नहीं रहेगा। माताजी । ग्राप ग्रपने पाचवे पुत्र को भगवान् के चरणों में ग्रपण कर दो । इसी मे सबका कल्याण है।"

व्यासदेव की माता पढाई के प्रति पुत्र की उपरित, जीवन के प्रति उदासीनता ग्रीर उसकी चिन्तितावस्था को देखकर ग्रत्यन्त दु खी रहती थी। उसका मत्र-जाप

उसे वित्कुल पसन्द न था। वह श्रपने पुत्र को साधु या सन्यासी देखना नही चाहती थी। वह नो उसे लांकिक दृष्टि से बहुन ऊचे पद पर देखना चाहती थी। वह उसे निष्ठिक ब्रह्मचारी के रूप में देखकर सन्तुष्ट नही थी, वह तो उसे ऐक्वयंवान्, समृद्धिमान श्रीर पुत्रवान् देखना चाहती थी। उसे भला व्यासदेव के ऐसे रगढग किस प्रकार रिवकर हो सकते थे जब वह किसी प्रकार भी व्यासदेव को समभा-बुभाकर ठीक रास्ते पर न ला सकी तो उसने उसके पिता को सारी स्थित से श्रवगत कराया श्रीर कहा कि लडका स्कूल में जाना नहीं चाहना, सस्कृत पढना चाहता है श्रीर योग मीन्यना चाहना है। यदि उसकी व्यवस्था न हो सकी तो वह घर से भाग जाने की घमकी देना है। उस पर कडी निगरानी रखने की श्रावव्यकता है, कही मचमुच ही भाग न जाए। पिता को यह सब जानकर महान् दु ख हुआ। व्यासदेव को श्रपने पान बुलाया श्रीर स्कूल जाने की प्रेरणा दी। किन्तु वह स्कूल जाने के लिए तैयार न हुआ श्रीर निवेदन किया कि उसे सस्कृत पढने के लिए किसी गुरुकुल में भेज दिया जाए। किन्तु पिता को यह बान पसन्द नहीं श्राई श्रीर उसको बहुत टाटा फटकारा। व्यासदेवजी श्रपने पिता से बहुन उरने थे श्रत एक लम्बी चुप सावकर सामने खडे रहे, किन्तु श्रपने निव्चय में पिता उन्हें टिगा नहीं सके।

चार दिन पञ्चात् पुन स्वामी रामानन्दजी के पास गये श्रीर श्रपने घर छोटने के निञ्चय ने श्रवगत कराकर भविष्य में महायता करने श्रीर मार्ग दर्शन की प्रार्थना की । स्वामीजी ने उन्हें तीन-चार स्थानों के पते बता दिए श्रीर परिचय-पत्र नियकर उन्हें दे दिए।

दृष्टप्रतिज्ञ तथा व्रत्योल व्रह्मचारी व्यामदेवजी ने १५ या १६ साल की श्रायु में ग्रंपने घर से ७०० रु० ग्रीर एक कम्चल लेकर वैसाल मास की गुक्ल पक्ष की ग्राटमी को गृह त्याग किया। चन्द्रमा श्रम्त हो गया था। सारा परिवार निद्राग्रस्त था । बालक व्यासदेव ग्रकेला जागस्क था । माता का वात्सल्य, पिता का प्रेम तथा भाउ-बहुनो का स्नेह और सीहार्द उसे अपने प्रण से किचिन्मात्र भी टिगा न सका। समार के प्रलोभन, परिवार को प्रेम, घर का सुख ग्रीर श्राराम उसे पथभ्रष्ट न कर सरे। यह गगनचुम्बी हिमालय के समान भ्रचल, भ्रटिंग भ्रीर स्थिर रहा। वह ससार के सवर्षी, घानो तथा प्रतिपानो को सहकर भी अचल चट्टान की भाति स्थिर रहा स्रोर उसका चरित्र निखरता रहा । ऐसा मालूम होता था मानो बालक व्यासदेवजी न "घृष्ट घृष्ट पुनरिष पुन्य्चन्टन चारुगन्धम्" का जो पाठ स्वामी रामानन्दजी के पास पटा था उसे चरितायं कर रहे थे। चन्दन को जितना घिसा जाता है उतना ही वह सुगन्धित होता जाता है। जितना बारीक मेहदी को पीसा जाता है उतना ही वह प्रितिक रगयुनत हो जाती है। भट्टी में तप कर ही स्वर्ण कुन्दन बनता है। शोडप-वर्षीय वालक व्यामदेवजी ने प्रापने ग्रापको तपरया की भट्टी में तपा-तपाकर ग्रपने चरित को चमकाने और योग द्वारा अध्यात्म तत्त्व को प्राप्त करने का दृढ निश्चय कर लिया था। समार का कोई ऐसा प्रलोभन न था जो उसे ग्रपने गन्तव्य-पथ से विचलित कर सकता।

मारे परिवार को निद्राविभूत देखकर व्यासदेवजी ने इस अवसर से लाभ उठाया और एक कम्बल, एक लोटा तथा '३०० रूपये के पोण्ड लेकर घर से प्रस्थान किया। वालक कभी अकेला घर से वाहिर न निकला था। चारो ग्रोर रात्रि का ग्रन्थकार छाया हुआ था इसलिए उसे कभी-कभी भय भी लगता था। सामने विया-वान जगल था। हिंसक जीवो का भय था किन्तु व्रतशील, दृढिनिश्चयी तथा निज उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दृढप्रतिज्ञ व्यासदेवजी को यह भय पथभ्रष्ट नहीं कर सका। उनकी यह प्रतिज्ञा थी कि "कार्य वा साधयामि गरीर वा पातयामि।" सान्द्रान्थकाराच्छादित भयकर रात्रि मे दृढप्रतिज्ञ यह वालक घनघोर जगल की किंचिन्मात्र भी परवाह न करके निज लक्ष्य पूर्त्यथं ग्रग्रसर हो रहा था। भूमि ग्रसम थी। कहीं ऊची थी ग्रौर कहीं नीची। कहीं खड्डा था ग्रौर कहीं नाला। जैसे-तैसे गिरते-पडते व्यासदेवजी ने इस तिमिराच्छादित घने जगल को पार किया। गन्तव्य पथ का निर्णय करना कठिन था। किस पथ का अनुसरण करना चाहिए, किस दिशा का ग्रवलम्बन ठीक होगा, इत्यादि के विषय में वह कुछ निश्चय न कर सके।

शोकातुर परिवार—इधर प्रांत काल व्यासदेवजी के माता, पिता, भाई-वन्यु जव जगे तो व्यासदेव को अपने विस्तर पर न पाकर एकदम घवरा उठे। वालक की खोज मकान तथा वाग मे इधर-उधर सर्वत्र की गई किन्तु कही उसका पता न चला। पास-पडौस मे, हाट-वाजार मे, गली-कूचे मे सव स्थानो पर उसे ढूढा किन्तु वह वहा पर था ही नही, मिलता कैसे । वह तो प्रांत काल होने मे पूर्व ही नगर मे वहुत दूर चला गया था। जव उसका कही पता नहीं चला तो सारे परिवार में हाहाकार मच गया। माता अपने लाडले वच्चे के लिए करुण अन्दन कर रही थी जिसे मुनकर पत्थर भी रोते हुए से प्रतीत हो रहे थे। पिता यद्यपि इस महान आघातजिनत दु ख को प्रकट नहीं कर रहे थे किन्तु पुत्र वियोग की वेदना उनके चेहरे से स्पाट परिलिश्तित हो रही थी। बहिन-भाइयों की दयनीय दशा को देखकर पापाण-हृदय भी दु खित हो रहा था। इतना ही नहीं, आसपास के नर-नारी भी मधुर और सरल प्रकृति वाले भोले-भाले शीलवान सीध-साधे व्यासदेव के गृह-त्याग पर दु खी हो रहे थे। उसके समवयस्क वालक उसकी वातें याद करके आसू वहा रहे थे। वडा कारुणिक दृश्य था। पिता ने वालक का पता लगाने के लिए इधर-उधर पैदल और गाडी से लोगों को भेजा।

गन्तव्य पथ के विषय में किकर्तव्यविमूढ व्यासदेवजी ने एक नहर के किनारेकिनारे चलना प्रारम्भ किया। घोर ग्रन्थकार के कारण किनारे के भाड-भखाड भी
कभी-कभी भालू, शेर ग्रादि हिंस्र जीव-से मालूम होते थे ग्रीर प्रतिपल चोरो ग्रीर
डाकुग्रो का भी भय वना हुग्रा था। उनके पास ७००) के पोण्ड थे, उसकी रक्षा की
उन्हें बडी चिन्ता थी। वे भयभीत थे कि कही चोर या डाकू ग्राकर उनको मारकर
रुपया न छीन ले। भगवान् का स्मरण करते हुए वडी किठनाई से रात्रि व्यतीत की।
रात्रि के लगभग तीन बजे व्यासदेवजी रेल की पटडी पर पहुचे। जगल के किठन
रास्ते में दयानिधि जगदीश्वर ने ही वालक की रक्षा की। क्यों न करते, यह उनका
भक्त जो था। गृहत्याग उनके साक्षात्कार के उद्देश्य से ही तो किया था। भगवान्
सदैव भक्तो को ग्राश्रय देते हैं। वही निर्वलो के वल, निर्घनो के धन तथा निर्जनो
के जन, ग्रीर ग्रनाश्रितो के ग्राश्रय हैं। वे ग्रसहाय वालक व्यासदेवजी को कैसे भूल
सकते थे। ग्रन्थकाराच्छन्न वीहड वन में भक्तवत्सल भगवान् ने ही वालक-भक्त

च्यासदेवजी की रक्षा की श्रीर उसे इस कठिनाई में वल, शक्ति, साहस श्रीर उत्साह प्रदान किया।

एक वृद्धा माता द्वारा श्रातिथ्य-प्रात काल हुग्रा। देवी उपा ने ग्रपने प्रकाश मे वमुन्थरा को प्रकाशित किया। व्यासदेवजी घनघोर ग्रन्धकार मे चलते-चलते थक गये थे। जीवनदायिनी उपा का उन्होंने हार्दिक भावों से स्वागत किया। अब उन्हें मार्ग स्पष्ट दिखाई देने लगा। उन्होंने ग्रपनी गति तेज कर दी ग्रीर लम्बे-लम्बे इग भरने लगे। रेल की पटडी के साथ-साथ एक पगडण्डी-सी थी, उसी पर वे दूत-गति से चलने लगे। उन्हें यह भय था कि कहीं कोई जान-पहिचान का व्यक्ति न मिल जाए। कही यिताजी उन्हें वापिस लौटा लें जाने के लिए किसी को न भेज दे। इस प्रकार के विवार कभी-कभी उन्हें वेचैन-सा कर रहे थे, इसलिए जब स्टेशन ग्राने को होता तो वे पगटण्डी को छोडकर दूर चले जाते थे श्रीर स्टेशन निकल जाने के पञ्चात पुन पगडण्डी पर ग्रा जाते थे। इसी प्रकार से ग्रहारह मील का रास्ता तय करके वे ६ वजे एक गाव मे पहुचे। सुवह से कुछ खाया पीया नहीं था। थक भी रहे थे। इसलिए किसी ऐसी दुकान की खोज करने लगे जहां कुछ खाने के लिए मिल सके, किन्तु कहीं भी भोजन प्राप्त न हो सका। इतने में ही एक वृद्धा अपने सिर पर दूध का पात्र लेकर जाती हुई दिखाई दी। व्यासदेवजी ने उससे भोजन की दुकान पूछी। वृद्धा ने कहा बेटे, यहा तो कोई ऐसी दुकान है नहीं, तुम मेरे साथ मेरे घर पर चलो, में तुम्हें भोजन बनाकर खिलाऊगी। व्यासदेवजी ग्रत्यन्त क्षुधार्त ये ग्रत ये वचन मुनकर उनकी जान मे जान ग्राई ग्रीर वे उसके पीछे-पीछे चलने लगे। घर पहुच कर वृद्धा महिला ने व्यासदेवजी के लिए भोजन बनाया श्रीर मक्खन श्रीर शनकर के साथ कराया । भोजनोपरान्त जव व्यासदेवजी उसको धन्यवाद देकर चलने लगे तब वृद्धा ने पूछा कि "तुम पैदल क्यो चल रहे हो ? यदि तुम्हारे पास किराये के लिए रुपये नहीं है तो इसकी व्यवस्था में कर दूगी, तुम रेलगाडी से जाओ ।" वृद्धा के ऊपर वालक व्यासदेवजी का वडा प्रभाव पडा । वह उन्हें अपने पास ही रखना चाह्ती थी क्योंकि वह पुत्रहीना थी, पर व्यासदेवजी को कोई भी प्रलोभन ग्रपने पथ से विचलित न कर सकता था। उन्होने अपनी माता का त्याग इसलिए नही किया था कि वह किसी अन्य मातृतुल्या महिला को अपनी माता बनाकर उसके पास रहे। एक महान् ग्रादर्श की पूर्ति के लिए उन्होने गृह त्याग किया था ग्रीर जवतक वे उस ग्रादर्भ को प्राप्त नहीं कर लेते तवतक वे न तो कही शान्ति पा सकते थे न विश्राम । उस वृद्धा माता ने कई दिनो तक उन्हे ग्रपने पास रखा। नित्यप्रति स्वादिष्ट भोजन उन्हें खिलाती । उन्हें ग्रपने पास रखने के लिए ग्रनेक प्रलोभन देती । कभी धन का प्रलोभन, कभी खेती-वाडी का ग्रीर कभी जमीन ग्रीर जायदाद का, कभी विवाह का श्रीर कभी सुख श्रीर श्राराम का। व्यासदेव ने उसे समभाया श्रीर कहा, "माताजी। ये सभी मुख के साधन मेरे घर पर भी है, मेरे पिताजी भी वडे आदमी हैं और सम्पन्न हैं। मैंने एक उद्देश्य से अपना घर छोड़ा है। उस उद्देश्य की पूर्ति मेरे घर पर नहीं हो सकती थी इसीलिए उसका परित्याग करके हरिद्वार जा रहा हू, ग्रत ग्राप मुभे क्षमा करें। मैं यहा ग्रापके पास न रह सक्गा। ग्रापकी कृपा के लिए मैं ग्रापका ग्राभारी हूं।" यह वातचीत हो ही रही थी कि वृद्धा के पतिदेव भी वाहर से ग्रा गए। वृद्धा ने व्यासदेवजी की उनसे बडी प्रशास की श्रीर निवेदन किया कि इसे हिरद्धार का टिकट दिलवाकर गाडी में विठा दीजिए श्रीर व्यासदेवजी से कहा, "तुम पढ-लिखकर मेरे पास श्राना। तुम मुक्ते बहुत प्यारे लगते हो। जब कभी रुपये की श्रावश्यकता हो तो मुक्ते लिखना, मैं तुरन्त भेज दूगी। तुम किसी प्रकार का कष्ट मत पाना।" व्यासदेवजी ने कृतज्ञता प्रकट की श्रीर धन्यवाद देकर श्रीर प्रणाम करके वहा से विदा हुए।

## हरिद्वार मे सस्कृताध्ययन श्रीर योगसाधन

मोहन श्राश्रम मे निवास—जिस रेलगाडी से व्यासदेवजी यात्रा कर रहे थे उसी मे तीन चार साधु भी उनके डिव्वे मे बेठे थे ग्रीर हिरद्वार ही जा रहे थे। जब व्यासदेवजी से वार्तालाप करने के पञ्चात् उन्हें मालूम हुग्रा कि वे मस्कृत पढ़ने ग्रीर योगाभ्यास सीखने हिरद्वार जा रहे है तब वे बड प्रमन्न हुए ग्रीर उन्हें कवलदाम की कुटिया मे ग्रपने साथ ले गए ग्रीर तीन चार दिन तक उन्हें ग्रपने पास ही रखा। इन सन्तों ने व्यासदेवजी का परिचय स्वामी तेजनाथजी योगी मे करवाया। स्वामी तेजनाथ पातञ्जलाश्रम मे रहते थे। व्यासदेवजी के विचार ग्रीर भावनाए देवकर उन्हें वडी प्रसन्तता हुई ग्रीर उन्हें योग सिखाना सहर्प स्वीकार किया। इसके पञ्चात् ये ही सन्त व्यासदेवजी को मोहन ग्राश्रम मे स्वामी हितानन्दजी के पास ले गए। ये उनसे मिलकर इतने प्रसन्न हुए कि उनके सस्कृत पढ़ने की सब व्यवस्था कर दी। यहा पर एक सस्कृत विद्यालय था, जिसमे नानूरामजी बास्त्री सस्कृत पढ़ाते थे। स्वामी हितानन्दजी इस सस्कृत विद्यालय के ग्राधिप्ठाता थे। श्री सेठ वलदेविसह देहरादून वालो ने ग्रपने पुत्र मोहन के नाम पर इस मोहन ग्राश्रम का निर्माण किया था।

योगी तेजनाथ से सपर्क—व्यासदेवजी ने सर्वप्रथम योगी तेजनाथ से योग सीखना चाहा। परिचय हो जाने के पश्चात् दूसरे दिन सिमत्पाणी हो उनके पास पहुचे श्रीर योग सिखाने के लिए प्रार्थना की। स्वामी तेजनाथ व्यासदेवजी की लगन, निष्ठा श्रीर प्रखर बुद्धि श्रीर व्यवहार को देखकर बडे प्रमन्न हुए श्रीर सहर्प योग सिखाना स्वीकार किया, किन्तु एक शर्त ब्रह्मचारी व्यासदेवजी के सम्मुख रखी कि वे सर्वप्रथम उनके सप्रदाय की मत्र-दीक्षा ले, तभी उन्हें योग सिखाया जा सकता है। ब्रह्मवारीजी ने सप्रदाय की गतिविधि, रीति-ढग श्रीर व्यवस्थादि से परिचित होने के उपरान्त सप्रदाय की मत्र-दीक्षा लेने के लिए निवेदन किया। तेजनाथजी वडे विद्वान श्रीर योगी थे श्रीर व्यासदेव कभी-कभी उनके सत्सग मे जाया भी करते थे, किन्तु नाथ प्रथा के श्रनुसार कान फडवाकर मुद्रा पहिनना उन्हें पसन्द नहीं था, इसीलिए नाथ सप्रदाय की दीक्षा उन्होंने नहीं ली।

# मोहन ग्राश्रम के विद्यालय मे प्रवेश

स्वामी हिनानन्दजी की ग्राज्ञा से ब्रह्मचारी व्यासदेवजी विद्यालय मे प्रविष्ट हो गये ग्रौर पडित नानूरामजी से लघुकौमुदी पढना प्रारभ कर दिया। इस विद्यालय मे ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी ग्रौर सन्यासी विद्याध्ययन किया करते थे।

योग-ज्ञिक्षा—व्यासदेव की योग मे अत्यधिक रुचि देखकर स्वामी हितानन्द ने ब्रह्मचारी सत्यवृत को उन्हें योग सिखाने की ब्राज्ञा दी। वहुत ज्ञीघ्र ही ब्रह्मचारी मत्यव्रनजी को व्यासदेवजी से वडा म्नेह हो गया। वे नित्यप्रति गगाजी के किनारे पर नेजाकर उन्हें योग-साधना करवाने लगे। प्रात ग्रासन ग्रीर प्राणायाम सिखाते र्यार गायती मत्र का जाप करवाते । इस प्रकार व्यासदेवजी प्रात योगाभ्यास करते तथा दिन मे ५-६ घण्टे सम्कृताध्ययन करते। लघुकीमुदी, सम्कृत साहित्य तथा श्रनुवादादि सीयते । योग मीयने की इतनी उत्कट श्रीभनापा थी कि रात के दो वर्जे ही गगाजी के तट पर श्रभ्याम करने चले जाते थे। श्रभ्यास करते-करते कभी-कभी निद्रा आ दवानी थी, उस विघ्न को दूर करने के लिए व्यासदेवजी अपनी नम्बी चोटी को एक रम्सी से उस वक्ष की बासा से बाध देते थे जिसके नीचे बैठकर वे अभ्यास किया करते थे। ज्यो ही नीद श्राती श्रीर सिर नीचे को भुकता तो रस्सी के भटके मे नीद एक जाती थी श्रीर मेकदण्ड भी उससे सीधा रहता था। रात्रि के दो बजे ने ग्राठ बजे तक नित्यप्रति योगाभ्यास करते थे ग्रौर इसके पश्चात् स्नानादि में निवृत्त होरर ग्राध्यसवासी ब्रह्माचारियों के साथ मिलकर यत्र करते । यज्ञ के बाद न्वामी हिनानन्द यथवा ग्रन्य जो भी मन्त वहा उपस्थित होते उनके उपदेश का अवण करने और उनके उपरान्त पण्डिन नानूरामजी से सस्कृताध्ययन करते । च्यानदेवजी का यु तो धीरे-धीरे आश्रमवासी सभी ब्रह्मचारियो, वानप्रस्थियो श्रीर सन्यासियों से परिचय हो गया विन्तु उनका विद्याप परिचय स्वामी वेदानस्द, स्वामी विवानन्द भारती, त्यामी विज्ञान भिक्ष, त्यामी विज्ञानानन्द, स्वामी चिदानन्द, यहानारी मत्यवन, मनुदन, हामनन्दादि ने था। इस यभ्यासकाल मे सत्यवत ग्रीर च्यानदेव जी दोनी प्रह्में बारी एक ही समय भोजन करने थे। राति को ये भोजन नहीं करते में। अब नायकाल भी ६ बजे में १० बजे तक गंगाजी के किनारे योगाभ्याम प्रारम कर दिया था। ये दोनो ४० वर्जे के बाद गगाजी के किनारे मे मोहन प्राध्म में ग्रांते थे। फेबल चार पण्टे ही मोते थे। प्रात दो वर्जे ही उठकर योगाभ्यास के लिए चर्न जाते थे। गगाजी मोहेन ग्राश्रम से केवल तीन सी या चार मी पुट की दूरी पर ही बी प्रत बहुत दूर जाना नहीं पड़ना था। ब्यासदेवजी ने कई महीनो नक प्रवनी किया को अंग्याम के समय पेड की दहनी से नीद रोकने के तिए वा राया. अत अब उन्हें निद्रापर विजय प्राप्त हो गई थी। अब अभ्यास के नमग गभी निहा नहीं प्रानी थी। लगभग १० घण्टे योगाभ्यास करते थे ग्रीर ६ घण्टे सरमुत पटने थे। दो साल में सरमूत में न्यासदेवजी की बड़ी गति हो गई यो । लगुर्गामुटी सपूर्ण पट ली थी, साहित्य के भी कई ग्रथ समाप्त कर लिए ये ग्रीर सरगृत पदने, तिसने ग्रीर योलने का बहुत ग्रच्छा ग्रभ्यास हो गया था।

## एक योगी से समागम

ब्रह्मचारी व्यागदेवजी सदैव उत्कृष्ट योगियो की खोज मे रहा करते थे क्योंकि उस विषय में उनकी वड़ी किन थी। वे न्वयं भी श्राठ-दस घण्टे तक योगाभ्यास किया करने थे । एक दिन उनका ब्रह्मचारी सत्यदेव से साक्षात्कार हुआ । ये ब्रह्मचारीजी गगा पार कजली बन में रहकर योगाभ्याम किया करते थे। व्यामदेवजी का उनसे योग के विषय में गुगा के तट पर चिरकाल तक वार्तालाप हुआ। सत्यदेव के त्याग श्रीर वैराग्य, मायना तथा अहा, तिनिक्षा श्रीर एकान्तमेवन तथा निष्ठापूर्वक योगाभ्याम का ध्यामदेवजी के ऊपर बडा प्रभाव पदा।

कजली वन मे योगाभ्यास का निश्चय—सत्यदेवजी के साथ कजली वन मे रहकर योगाभ्यास का निश्चय किया। युवक योगी सत्यदेवजी ने जगल में एकान्तसेवन की अनेक किठनाइयो से व्यासदेवजी को अवगत किया और कहा कजली वन में रहकर किठन तपस्या का जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। वहा खाने को अन्न का मर्वथा अभाव है अत केवल बिलो को खाकर ही निर्वाह करना होगा। इस वन में वाघो, चीतो, शेरो तथा हाथी आदि हिस्र जीवो का वाहुल्य है। मचान वनाकर पेडो पर ही रहना पडता है। रात्रि को अयन भी इसी पर करना होगा। व्यासदेवजी इन बातो से तिनक भी भयभीत नही हुए और साहसपूर्वक निर्भय होकर कहा में विविप्त्रक यम-नियमो का पालन करता हू, अत मुक्ते किसी भी हिस्त्र जीव में भय नहीं है। अहिंसा में मेरी पूरी निष्ठा है। मेरा किसी से वैर-भाव नहीं है, में मनसा वाचा कर्मणा अहिंसा का पालन करता हू, फिर मुक्ते किसी से भय होना ही क्यो चाहिए। किर आप भी तो वहा रहते हैं। जब आपको वहा कुछ भय नहीं तो मुक्ते ही भय क्यो होगा। ऐसा मालूम होता है कि अभी आपकी अहिंसा में प्रित्टिंग नहीं हुई। यदि हो गई होती तो आप पेड पर मचान वनाकर निवास न करते। भूमि पर ही कुटिया वनाकर रहते। सत्यदेवजी ने उत्तर दिया कि अभी अहिंसा में मेरी पूर्णक्रपण प्रतिष्ठा नहीं हुई है। प्राणीमात्र के प्रति अभी सख्यभाव सम्पादित नहीं कर सका हू, इसीलिए थोडा भय शेव है। दिन में तो मैं नीचे ही रहना हू किन्तु रात्रि के समय सोने के लिए तथा योगाभ्यास के लिए मचान पर चला जाना हू।

सत्यदेवजी व्यासदेवजी की वातचीत और योगनिष्ठा मे तो बहुत प्रमन्त हुए किन्तु वन मे एकान्तसेवन की किठनाइयो पर विचार करके वे उन्हें अपने साथ ले जाना नहीं चाहते थे। व्यासदेवजी ने वडा आग्रह किया। इस पर वे माथ ले जाने के लिए तैयार हो गए। जब स्वामी हितानन्दजी को व्यासदेवजी के कजली वन मे जाने का विचार मालूम हुआ तो वे वडे दु खित हुए। वे व्यासदेवजी से वटे प्रसन्त थे और अपने विद्यालय का उन्हें अलकार समभते थे। इनके रहन-सहन, व्यवहार, आचरण, अध्ययन के प्रति रुचि और योगनिष्ठा का आश्रमवासी विद्याधियो पर वडा अच्छा प्रभाव पडता था। इसलिए वे नहीं चाहते थे कि यह वालयोगी कहीं अन्यत्र जाए पर उसके दृढ निश्चय को देखकर उसे कजली वन जाने की आजा दे दी। सत्यदेवजी के यह कहने पर कि तुम प्रथम वार वन मे जा रहे हो और तुम्हें अन्न खाने की आदत है इसलिए कुछ सत्तू अपने साथ ले चलो, व्यासदेव ने जो और गेहू भुनवा कर पिसवा लिए, कुछ गुड तथा नमक भी साथ रख लिया और उनके साथ चल दिए।

सत्यदेवजी तथा व्यासदेवजी दोनो ने मामूली-सा सामान साथ लिया श्रीर नील गगा को पार करके कजली वन पहुच गए। व्यासदेव के निवास के लिए सत्यदेव ने अपने मचान के समान ही एक वृक्ष पर मचान वना दी। मचान के पास ही एक जलाशय था जिसमे दोपहर को बाघ, चीते तथा हाथियो के भुण्ड पानी पीने श्राया करते थे। इसलिए सत्यदेवजी ने उसे समभाया कि किसी वन्य पशु से कभी छेड-छाड मत करना श्रोर उसके पास भी कभी मत जाना श्रीर यदि कोई जानवर स्वय ही पास श्रा जाए तो उसके प्रति उदासीन रहना, भयभीत भी मत होना, हिसा की भावना भी मन मे मत लाना, सरयभाव रखना। ऐसा करने पर कोई भी हिस्र जीव प्राक्रमण न करेगा। व्यामदेवजी तो पहिले से ही ग्रहिसा व्रत का पूरी तरह से पालन करते थे इमलिए निर्भीक वृत्ति से रहते थे।

व्यामदेवजी ने विल कभी-कभी खाए तो थे पर उन पर कभी निर्वाह नहीं किया था, अत विल खाकर ही धुधा की गान्ति करने की आदत डालने के लिए वह मत्तुओं के नाथ-साथ विल भी नित्यप्रति साने लगे। कुछ दिनों के वाद व्यासदेवजी ने सत्तू नाना विल्कुल छोड दिया और विलों से ही अपनी क्षुधापूर्ति करने लगे। विल अभी पूरी तौर पर पके नहीं थे अत वे कनस्तर में डालकर उन्हें उवाल लेते और गूदा निकाल कर ना लेते थे। उवाल लेने पर विलों का गूदा आसानी से निकाला जा सकना था।

व्यामदेवजी ग्रावव्यक कार्य के लिए ही मचान पर से उतरते थे। छ वजे से दस वजे नक ग्रपना नारा कार्य कर लिया करते थे क्यों कि उसके बाद हिस्र जीव जलागय में पानी पीने ग्राते थे। वन ने लकड़ी लाने के लिए वे सत्यदेव के साथ जाया करते थे। मार्ग में हाथियों के भुण्ड प्राय मिला करते किन्तु सत्यदेवजी कभी भयभीत नहीं हुए ग्रीं च्यासदेवजी को भी निर्भीक भाव में रहने का ग्रादेश दिया। कभी-कभी वाघ, हिरण, गूग्रर भी देखने में ग्राते थे।

सत्यदेवजी का उपदेश—मत्यदेवजी वहे विहान् थे। शास्त्री पास कर लेने के परचान् उन्हें पैराग्य हो गया था और घर छोउ कर योगाभ्यास के लिए कजली वन में रहते थे। ये बरे साहगी और पराक्रमशील थे। प्रमिद्ध विहानों में आपकी गणना थी। दर्शन-शास्त्र तथा बैदिक साहित्य के आप पण्टित थे। उच्च कोटि के बैराग्यवान् थे। ब्राह्मण बन में श्रापका जन्म हुआ था और जम्बू स्टेट के रहने वाले थे। शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने के परचात् ही ३२ वर्ष की आयु में श्रापको बेराग्य हो गया था। ब्रापना शरीर बटा मुगठित था। गौर वर्ण था। श्रापका व्यक्तित्व बटा प्रभावशाली था। नरहन भाषण करने का श्रापका ब्रत था। वे स्वय १६ घण्टे तक योगाम्यास करने थे। उन्होंने व्यासदेवजी को वैराग्यजनक विविध उपदेश देकर उनके बैराग्य को दृष्टनर कर दिया था। वे प्रेय तथा क्षेय मार्ग की व्यास्या करके प्राय व्यासदेवजी को मुनाया करते थे और कहा करते थे कि सासारिक लोग भोग-विनाम तथा उन्हियों की दासता का मृत्युधर्यन्त त्याग नहीं करते। वे वृद्ध हो जाते हैं किन्तु उनकी वृद्धा गरी दासता का मृत्युधर्यन्त त्याग नहीं करते। वे वृद्ध हो जाते हैं किन्तु उनकी वृद्धा गरी दिव्यायत्र त्याग देते हैं। के वे वृद्ध हो जाते के किन्तु योगीजन जीवन काल में ही साधिकार उन्हिय-मुग्य को विव्यायत्र त्याग देते हैं। ये वडे जितेन्द्रिय थे। रसनेन्द्रिय यदी दुर्जयी है। उस पर विजय पाने के लिए बडे-बडे साधकों को भी कठित तपस्या करनी पटनी है। इस उन्हिय के दमन करने के लिए ही खापने नमक श्रीर चीनी तथा गुजदि का परित्याग कर दिया था। केवल कन्द, मूल, श्रावले श्रीर विलादि साकर ही निर्वाह करने थे। उनके गुण्देव ने उन्हे उत्तराखण्ड में तपस्या करने के लिए भेजा हुआ था।

ये व्यागदेवजी के साथ पुत्रवत् व्यवहार करते थे। वडी तत्परता के साथ उन्हें योगाभ्याम करवाते थे। उन्होंने व्यागदेवजी के लिए १२ घण्टे योगाभ्यास के लिए नियत कर दिए थे। एक भी नमक तथा चीनी छुटवा दी गई थी। सत्यदेवजी के व्यक्तित्व का वालयोगी व्यासदेवजी पर वडा प्रभाव था। वे जैसे उन्हें करते देखते वैसे ही करने लगते थे। गीता, छ दर्शन तथा ११२ उपनिपदों का एक गुटका ही सत्यदेवजी का पुस्तकालय था। ये सभी ग्रथ मूलमात्र थे। छ दर्शन भी गुटके के हप में ही थे। दो कनस्तर, एक कमण्डल, एक छोटा-सा पतीला, दो कौपीन ग्रीर एक धोती ही उनकी लौकिक सम्पत्ति थी। व्यासदेवजी इनकी तपस्या से वडे प्रभावित थे। सत्यदेवजी इन्हें दर्शनो ग्रीर उपनिषदों को कथा के रूप में सुनाया करते थे। योग-दर्शन के सूत्र भी व्यासदेवजी को कण्ठस्थ करता दिए थे। कभी-कभी वे विनोदपूर्ण ढग में व्यासजी स पूछा करते थे कि क्या कभी स्वादिण्ट पदार्थों को खाने के लिए भी तुम्हारा मन करता है। उस समय व्यासजी वडा सुन्दर उत्तर दिया करते थे। वे कहा करते कि जब यहा वन में कुछ मिलता ही नहीं, यहा पर कन्द-मूल के ग्रतिरिक्त ग्रीर कोई भोज्य पदार्थ है ही नहीं तो भला चित्त करें भी क्या। चित्त की परीक्षा तो तव हो जब खाने के पदार्थ तो पास हो ग्रीर उनको खाने के लिए कभी मन न करे। नव तो मन की कुछ विशेपता भी है। उपभोग्य पदार्थों के सुलभ होने पर भी इन्द्रिया उघर ग्राकृष्ट न हो तभी जितेन्द्रियता मानी जा सकती है। ग्राजकल तो इनके ग्रभाव में ही मुभे योगी की सज्ञा मिल रही है। सत्यदेवजी व्यासदेवजी से प्राय कहा करते थे कि म्वाद ग्रीर काम पर विजय पाना ग्रत्यन्त कठिन है। योगी को मर्वप्रथम इन दोनो पर विजयलाभ करनी चाहिए। जो इन्द्रियों का दास हे वह कभी योगी नहीं वन मकता। जितेन्द्रियता योग का प्रथम पाठ है।

मचान पर निवास—सत्यदेवजी ने अपने वालयोगी के लिए एक वर्ड मोटे और ऊचे वृक्ष पर एक वडा-सा मचान निवासार्थ वना दिया था क्यों कि उम वन में हाथी, शेर, वाघ, चीता, नीलगायादि हिंस जीव वहुन रहते थे। मचान पर नर्म-नर्म पत्ते और वास विछा दी गई थी। इस मचान को वृक्षों के पत्तो और टहनियों में आच्छादित कर दिया गया था जिससे वर्षा के पानी से यित्कचित् वचाय हो सके। मचान के नीचे एक वडी धूनी लगी रहती थी जिससे वन्य पशु वृक्ष के समीप न अाने पाए। व्यासदेवजी इस धूनी में विलों को भून कर खाया करते थे। वन में हाथियों की जलकीडा देखना ही हमारे वालयोगी का एकमात्र विनोद था। प्राय हाथियों के भुण्ड इस वन में घूमा करते थे। एक भुण्ड का सरदार प्राय भूरे रंग का होता था। सारे हाथी उसका अनुगमन करते थे। ये प्राय व्यासदेवजी की मचान के पास वाले जलाशय में पानी पीने जाया करते थे। सरदार हाथी के पानी पी चुकने के पदचात् अन्य हाथी अपनी प्यास बुक्षाया करते थे। इस वन में कई छोटी-छोटी पहाडिया थी। जब कभी हाथी इनमें से किसी ढालू पहाडी पर से किमल कर नीचे आ गिरते तो इन्हें देखकर हमारे चरित्रनायक बडे प्रसन्न हुआ करते। रात के समय शेरो की गर्जना तथा हाथियों की चिंघाड से वन के सारे पशु-पक्षी भयभीत हो जाते थे किन्तु अहिंसा में प्रतिष्ठित हमारे वालयोगी वन में निर्भीक भाव से विचरण करते थे।

न्यासदेव कई मास तक योगी सत्यदेव के पास रहे। प्रतिदिन के ग्रभ्यास से इनका ग्रासन दृढ हो गया था। योगाभ्यास करते-करते जब श्रान्त हो जाते थे तव गायत्री तथा प्रणव जाप किया करते थे। भ्रूमध्य-ध्यान से एकाग्रता लाभ करते तथा सदैव ग्रपने मन को जान्त रखते थे। सत्यदेवजी ने एक वार दो-तीन दिन के लिए हरिद्वार मे भीमगोटे जाने का विचार व्यासदेवजी पर प्रकट किया क्यों विवार उनके गुरुदेव का कभी-कभी पत्र उनके नाम पर आदेश रूप में आया करता था। व्यासदेवजी को भी हरिद्वार में आए कई मान हो गए थे और वे स्वामी हितानन्दजी से कुछ दिनों के लिए ही आजा लेकर माए थे, प्रत उन्होंने भी हरिद्वार जाने की उच्छा प्रकट की। इमलिए सत्यदेवजी उन्हें भी अपने साथ भीमगोटे ने गए।

#### फजली वन से पुन मोहन श्राश्रम गमन

नन्यदेवजी तथा त्यासदेवजी कजली वन से ग्यारह मास में हरिहार पहुचे।
नन्यदेवजी ने भीमगोटे वाने हलवार्ट में अपने पूज्य गुरुदेव का पत्र प्राप्त किया जिस
में आदेश दिया गया था कि अब कठोर तपञ्चरण से इन्द्रियों और अन्त करण की
पित्रता साथ लेने के उपरान्त नुम मुभसे विज्ञान सीयने के अधिकारी वन गए हो,
अत नुम तुरन्त चते आओ, जिसमें तुम्हें आध्यात्मिक विज्ञान की शिक्षा प्राप्त हो सके।
यह पत्र सन्यदेवजी ने व्यासदेवजी को भी पहाया। उन्हें आत्म-विज्ञान सीयने की
उन्तर स्थितापा थी। उसी उद्देश्य से अपने पारिवारिक मुख, भोग और आराम को
तिलान्जिन दी थी। उन्होंने हाथ जोट कर गाथ चलने की आजा मागी किन्तु मत्यदेव ने याने गुरदेव से आजा प्राप्त किए विना ब्रह्मचारी जी को अपने साथ ले जाना
उनित नहीं सममा। उन्हें बडी निराशा हुई।

स्वामी हितानन्दजी मे भेंट—व्यायदेवजी निराण होकर अब मोहन आश्रम चले गए। कठोर नेपरया के कारण उनका शरीर बटा कुश हो गया था। गोल पिचक गए थे। आपो मे पाउँ पट गए थे। बाल बढ गए थे। उन्हें इस अबस्था में देसकर श्राश्रमवानियो को महानु ब्राय्चर्य हम्रा । ब्यासदेव ब्रध्ययन छोडकर योग सीखने चले गए वे अन अञ्ययनञील विद्यार्थियों ने उनका वटा उपहास किया किन्तु, योगानुरा-गियो ने उनके तप श्रीर योगाभ्यास की भूरि-भूरि प्रशसा की । व्यासदेव विद्यालय के स्रिप्रिटाता हिनानन्दजी के पास गए। सोंदर प्रणाम करके विद्यालय मे पुन प्रवेशार्थ प्रार्थना ती । वे उनसे बडे प्रसन्न थे । उनकी योग-निष्ठा, श्रध्ययन-शीलना, तपण्चर्या, वैराग्य-भायना नया गत्यारायणनादि गुणों से वटे प्रभावित थे। यत उन्हें विद्यालय म महर्ग प्रविष्ट कर लिया और नान्रामजी को उन्हें रिचपूर्वक पढाने का आदेश दिया। स्वामी हितानन्दजी ने व्यासदेवजी को ब्रह्मचारी सत्यव्रत के पास ठहरा दिया। ट्यानदेवजी ब्रह्मचारी जी में पहिले में ही परिचित थे। इनके साथ ही योगाभ्यासादि िया करने थे। अब फिर मोहन आश्रम मे आने के बाद उनके साथ गगा के किनारे जाकर पूर्ववत् कर्ट-कर्व घण्टे योग-साधना करने लगे । सत्यव्रत से लघुकीमुदी तथा पनतत्र विचारना प्रारम्भ कर दिया । नानूरामजी उस समय सिंहान्तकीमुँदी तथा गाहित्य में जो प्रय विद्यायियों को पढ़ा रहे थे वही व्यासदेवजी भी पढ़ने लगे।

स्वामी रामानन्दजी का पत्र—स्यामदेवजी ने सस्कृताव्ययन तथा योग सीखने के उद्देश्य ने जबने गृह-त्याग किया था तबने रवामी रामानन्द तथा अन्य किसी को अपना कोई समाचार नही दिया था। यह अपनी लक्ष्यपूर्ति पर उटे हुए थे। चट्टान के सदश अटल थे। उनके माता-पिता को यदि उनके निवास का पता लग जाता तो वे श्राकर इन्हे वापिस घर ले जाते । इसी भय से इन्होने ग्रपना परिचय किसी को नही दिया । यही कारण था कि इन्होने ग्रपने प्रारम्भिक गुरु स्वामी रामानन्दजी महाराज को कभी कोई पत्र नही लिखा । स्वामीजी महाराज वालक व्यासदेवजी की धर्मनिष्ठा, सस्कृत के प्रति रुचि, परिश्रमंगीलता, सहानुभूति, समवेदना, कर्त्तव्य-पालन ग्रीर जापादि से बडे प्रमन्न थे ग्रीर उससे बडा स्नेह करते थे । जबसे इन्होने गृह-परित्याग किया था तब से ही वे इनका पता लगाने के लिए वडे चिन्तित रहा करते थे । इन्होने इचर-उधर सर्वत्र उनकी खोज की । कई स्थानो पर पत्र लिखे । बहुत परिश्रम के पञ्चात् वे ग्रपने प्यारे शिष्य व्यासदेवजी का पता लगाने मे सफल हो गए । उन्होने मोहन ग्राश्रम के पते से इन्हे पत्र लिखा ग्रीर उनकी योग-निष्ठा, सस्कृताच्ययन, स्वास्थ्य ग्रीर निवासादि के विषय मे सब हाल पूछा ग्रीर ग्रावच्यकता पडने पर ग्रायिक महायता भेजने के लिए लिखा । ब्रह्मचारी व्यासदेवजी ने सस्कृत, व्याकरण ग्रीर साहित्य का पर्याप्त ग्रध्ययन कर लिया था । सस्कृत लिखने ग्रीर वोलने का ग्रभ्यास खूव हो गया था । ग्रत ग्रपने गुरुदेव के पत्र का उत्तर सस्कृत मे ही दिया । ग्रपना सारा वृत्तान्त लिखने के पञ्चात् निवेदन किया कि मुभे इस समय ग्रायिक सहायता की ग्रावच्यकता नही है । मेरी केवल एक ही प्रार्थना है कि ग्राप ऐसा उपाय करे जिससे मेरे माता-पिता, सम्वन्धियो तथा ग्रभिभावको को मेरे विषय मे कुछ भी जात न हो सके । यदि उन्हे मेरे हरिद्वार रहने का किसी तरह पता चल गया तो वे मुभे तग करेगे । मेरे ग्रव्ययन ग्रीर योगाभ्यास मे वाधा टालेंगे ग्रीर नभव है मुभे वापिस घर ही ले जाए ।

व्यासदेवजी के पिता का हरिद्वार भ्रागमन—भ्रमण करते हुए स्वामी रामा-नन्दजी एक दिन व्यासदेवजी के पिताजी के घर पहुच गए। माता ने स्वामीजी को प्रणाम किया और श्रातुर तथा व्याकुल होकर भ्रपने पुत्र के लिए करुण-ऋन्दन तथा विलाप करने लगी। श्रनेक उलाहने देकर उसने कहा —

'महाराज मैंने सदैव महात्माग्रो को दयालु ग्रीर सहानुभूतिपूर्ण पाया है किन्तु ग्रापका हृदय वडा कठोर है। ग्रापने मेरे दुलारे पुत्र को मुक्त छीना है। ग्रापने पुत्र को माता से विलग किया है। ग्राप इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि पुत्र के विछोह में माता को कितना दुख होता है। ग्राप मातृ-हृदय से परिचित नहीं। ग्रापसे प्रेरणा पाकर ही मेरे प्यारे पुत्र ने गृह-परित्याग किया है। ग्रापने मेरे वच्चे को मेरी गोद से छीना है। उसे दर-दर का भिखारी बनाया है। न जाने वह कहा है। क्या खाता है। कहा रहता है। शीतकाल में कुछ ग्रोडने-विछाने के लिए भी उसके पास कुछ नहीं है। हाय। किस प्रकार से सर्दी की राते मेरा वच्चा विताता होगा। जब से वह गया है मैंने कभी पेट भर कर भोजन नहीं किया ग्रीर ग्रव भी जब तक ग्राप उसे मुक्ते लाकर नहीं देंगे मैं ग्रन्न नहीं खाऊगी ग्रीर विलाप करके मर जाऊगी, पापाण-हृदय स्वामी जी। ग्राप जाग्रो ग्रीर मेरे वालक को मुक्ते लाकर दो।"

स्वामीजी माता का विलाप मुनकर द्रवीभूत हो गए ग्रीर उसे विश्वास दिलाया कि तुम्हारा पुत्र सकुशल ग्रीर सानन्द है ग्रीर सस्कृताध्ययन कर रहा है। तुम व्यथित ग्रीर व्याकुल मत हो।

माता की दयनीय दशा को देखकर स्वामीजी महाराज का हृदय दयाई हो गया श्रीर उसके बार-बार प्रार्थना करने पर व्यासदेवजी के पिता श्रीर दो ग्रन्य सज्जनी की साथ लेकर स्वामी रामानन्द हरिद्वार पहुचे। मोहन श्राश्रम मे जाकर स्वामी हिता-नन्द्रजी से ब्यासदेवजी के विषय मे पूछ-ताछ की। यह जानकर कि ब्रह्मचारी ब्यासदेवजी माधना के लिए गुगा के तट पर गए हुए है वे मब वहा पहुचे। गुगा के तट पर ब्रह्मचारी जी एक वृक्ष के नीचे नेत्र बन्द करके ध्यानावस्थित होकर बैठे हुए थे। स्वामी रामानन्द, ब्यामदेवजी के पिता श्रीर श्रन्य दो मज्जन ध्यानावस्थित ब्यामदेवजी को देखकर उनके पास हो गडे होकर वार्तालाप करने लगे किन्तु उस कोलाहलपूर्ण वार्तालाप से व्यास-देवजी की ननाबि नहीं दूटी। यह देखकर न्यामीजी ने व्यामदेवजी के पिता से कहा कि देखों फैंगी कड़ी समाधि है। कैंगे एकान्त स्थान में सावना करने आया है। भगवदाराधना में रैसा मग्त है। वातावरण का इस पर कुछ प्रभाव नहीं पट रहा। इस समय यह गयार के भोगों को हेव समक रहा है। प्रभू के प्रेम ग्रीर ग्रानन्द मे विभोर हो रहा है। यह श्रव लांकिए नय्वर भोग-विलास मै नही फम सकता। ग्राप उसे पर ले जाने की चेप्टा मन करो । आप उस पुत्र को भगवदर्गण कर दे । आपके अन्य कई पत्र है, त्राप उन्हीं ने सन्तोप करें। उसी अवसर पर श्रासपास से वटा जन-गोताहरू होने लगा। उससे बालब्रह्मचारी जी की समाधि तो टूट गई किन्तु समायि का समय पूरा नहीं हमा था। अभी माठ नहीं बजे थे, मत चापे बन्द करके नगाधिरा अवर रा ने बैठे रहे। जब स्वामीजी ने देखा कि वालक की समाधि भग नहीं हो। रशि है तो उनके पिता को ज्ञान और वैराग्य के सम्बन्ध में उपदेश देना प्रारम कर दिया। नुमापिन्य बालक भी उस उपदेश का श्रवण करता रहा। जब गाठ यज च हे तय त्यागदेवजी ग्रापन ग्रापन में उठ ग्रीर पाम पाडे हुए ग्रपने गुरुदेव तथा पिता हो प्रणाम रिया। गुरु तथा पिता दोनों ने उसको म्रालिंगन करके प्यार किया श्रीर प्रामीबोट दिया। पर्य मो देखकर पिता ने बटा विलाप किया। उसकी ग्रश्नारा यह निरानी । भिना और पुत्र के मिलाप ने एक अपूर्व दृश्य उपस्थित कर दिया । सारा नानावरण द्रवीभून हो गया । ऐसा मालूम होता था मानो सारी प्रकृति पिता के माथ मिलकर रदन कर रही है और उसके साथ समवेदना प्रकट कर रही है।

गगाजी के फिनारे ने पुत्र को लेकर सभी मोहन ग्रायम में स्वामी हितानन्द के पाग पहुँचे। रत्रामी रामानन्द जी ने उनने कहा कि व्यामदेव जी घर से भाग ग्रायं है उनके िता उन्हें तेने ग्राए है। हिनानन्द जी ने कहा, "यहा पर जो विषाणी ग्राने हैं उनके भोजन, यस्त्र श्रीर निवासादि की यहा पर पूरी व्यवस्था की जाती है। उन्हें विद्याभ्यास करवा कर विद्वान बनाने का प्रयत्न किया जाता है। उनके नैतिक बरानन को उन्नत किया जाता है। हम किसी को यहा पर घर से निरान कर नहीं ताने हैं ग्राप उसे ने जाना चाहते हैं तो ने जाकए। व्यासदेव जी जो पास ही गाउँ थे विनयपूर्वक बोले, "में घर जाना नहीं चाहता। बहा पर सम्मन्त पब्ने ग्रीर योगाभ्यास करने की कोई व्यवस्था नहीं है। यदि होती तो में घर से भागता ही नहीं।" स्वामी रामानन्द ग्रीर व्यासदेव जी के पिता ने विश्वास विलास कि ये एक सरमून पाठवाला योनेंग श्रीर सरमून पढ़ने की सब व्यवस्था कर विलास कि ये एक सरमून पाठवाला योनेंग श्रीर सरमून पढ़ने की सब व्यवस्था कर विलास कि ये एक सरमून पाठवाला योनेंग श्रीर सरमून पढ़ने की सब व्यवस्था कर विलास हो है। राम पर व्यासदेव जी उनके साथ चनने को तैयार हो गए। ग्राथम का एक

ग्रौर विद्यार्थी भी व्यासदेवजी के साथ हो लिया। हरिद्वार से धर्मदेव नामक एक सस्कृत के विद्वान् को ४०) मासिक पर सस्कृत पढाने के लिए वे साथ न गए।

## व्यासदेवजी का घर पर पुनरागमन

क्यासदेवजी ने विवश हो कर इस पुनरावर्तन को स्वीकार तो कर लिया था किन्तु सदेव मानसिक चिन्ता में डूवे रहते थे। उन्होंने अपने पिनाजी से हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि वह घर पर नहीं रहेगे। या तो वह स्वामी रामानन्दजी के पास रहेंगे या अपने उद्यान में। पिताजी ने इस वान को स्वीकार कर लिया और कहा, "तुम यहा से तो चलो, जैसी तुम्हारी इच्छा होगी वैसा ही सव प्रवन्ध कर दिया जाएगा। व्यासदेवजी और उनके पिताजी आदिक सवने स्वामी हितानन्दजी से जाने की आज्ञा प्राप्त की और उन्हें कुछ रुपये भेट रूप से प्रदान किए। स्वामीजी ने सम्मान-पूर्वक सवको विदा किया। हरिद्वार से चलकर सव तीन दिन में घर पहुचे। व्यासदेवजी की माता उन्हें देखकर फूट-फूटकर रोई, बडी आतुर और व्याकुल हुई। चिरकाल तक रुदन करती रही। वालक को गोद में लिया, उसका आलिंगन किया और वार-वार मुख चुम्बन किया। उसके साधना और तप के परिणामम्बरूप छुज जरीर को देयकर वडी दु खी हुई। पास-पडौस के लोगो को जब व्यासदेव के आगमन का नमाचार मिला तब सब अपना-अपना कार्य छोड़कर वहा एकत्रित हो गए। उनमें में किसी ने उसकी भर्त्सना की, किसी ने उसे डाटा फटकारा, किसी ने सहानुभूति का प्रदर्शन किया, किसी ने आलिंगन करके प्यार किया, किसी ने कहा कि अब जाने का नाम मत लेना और बहुतो ने उसका उपहास किया। इसके अतिरिवत किसी ने कहा, "अब यह वेदो का विद्वान वनकर आया है।" किसी ने कहा कि अब व्यासदेव यडा योगी वन गया है। व्यासदेवजी वडे लिजत हुए और मूकवत् सब वाते मुनते रहे। इन लोगो के बहुत समभाने-बुभाने पर माता ने कई दिनो वाद पुत्र के आने पर भोजन किया।

स्वामी रामानन्द के ग्राश्रम में ग्रध्ययन की व्यवस्था—व्यासदेवजी स्वामी रामानन्दजी के पास गए ग्रीर निवेदन किया कि घर पर मुक्ते लोग वहुत तग करते हैं ग्रत मेरा ग्रध्ययन वहा नहीं हो सकता। ग्रापसे प्रार्थना है कि ग्राप पण्डित धमदेवजी वास्त्री को ग्रपने पास बुला ले ग्रीर यही पर एक पाठगाला की व्यवस्था कर दें। स्वामी रामानन्दजी ने इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया ग्रीर ग्रपने ग्राश्रम पर ही एक पाठगाला की स्थापना कर दी। चार ग्रथवा पाच ग्रन्य विद्यार्थी भी वहा ग्राकर व्यासदेवजी के साथ ग्रध्ययन करने लगे। लगभग वीस दिन नक यह कार्यक्रम सुचारुरूपेण चलता रहा। एक दिन पण्डितजी ने स्वामीजी से १४ या ११ दिवस के लिए हरिद्वार जाकर ग्रपने परिवार की व्यवस्था करने के लिए जाने की इच्छा प्रकट की ग्रीर विश्वास दिलाया कि वे घर का पूर्ण प्रवय करके यहा ग्राकर स्थायी रूप से रहने लगेगे। पण्डितजी के चले जाने के पश्चात् से पठन-पाठन वन्द हो गया। व्यासदेवजी को वडी चिन्ता हुई पर कर क्या सकते थे। ग्रय उन्होंने ग्रपना सारा समय साधना, ग्रभ्यास, जाप ग्रीर ध्यान में लगाना प्रारम्भ कर दिया।

माता को उपदेश—व्यासदेवजी की माता स्वामी रामानन्दजी के ग्राश्रम मे प्रात नित्य ही उनसे मिलने ग्राया करती थी ग्रीर कहा करती थी, "वेटा, तुम्हारे

पढ़ने की व्यवस्था तुम्हारी इच्छा के अनुरूप कर दी गई है। अब तुम घर से भागकर कही अन्यत्र मत जाना। तुम तीन वर्ष के बाद घर आए हो। यह समय तुम्हारे वियोग में विलाप करके व्यतीत किया है। तुम बड़े पापाण-हृदय हो। तुम्हे अपनी माता, पिता तथा भाई-बहिनों के प्रेम का कभी स्मरण नहीं हुआ। मेरी आतुरता तथा व्याकुलता, मेरे रोने और चित्लाने और मेरे दु ख तथा दर्द का तुम्हें तिनक भी ध्यान नहीं याता। मेरे और भी सन्तान है किन्तु जितना मोह और ममता मेरी तुभमें है इतनी अन्य किसी में नहीं है। बेटा अब मुभे तुम छोड़कर कभी मत जाना।"

माना प्राय इसी प्रकार की वाते नित्य व्यासदेवजी को मुनाया करती। ब्यानदेवजी ने इन बानों से तग ग्राकर एक दिन माना में कहा, "ग्राप नित्यप्रति यहा न ग्राया करें। इससे मेरे कार्य में विक्षेप होता है ग्रीर पढने में भी बाबा उपस्थित होतों हैं। मेरी सम्क्रनाब्ययन तथा अब्बर-भिवत में बड़ी रुचि है। घर में रहकर ये दोनों ही कार्य ग्रसभव ये क्योंकि पिताजी को ये पसन्द न थे। यदि मेरे संस्कृताध्ययन की ठीक-ठीक व्यवस्था हो जाती, मुक्ते स्वामी रामानन्दजी के सत्सग से न रोका जाना, ग्रीर मुक्ते यथानियम जाप तथा ध्यान की ग्राज्ञा मिल जानी तो सभवत मै गृह-त्याग कर अन्यत्र न जाता। यह कोई निन्दनीय कार्य तो था नही। मै तो अपना ग्रंधिक समय पटने ग्रार जाप तथा ध्यान में ही व्यतीत करना था। इसमें तो परिवार की प्रतिष्ठा में वृद्धि ही होती। ग्रपने पुत्र को भगवदाराधन में तत्पर देखकर ग्रापको प्रसन्त होना चाहिए था और कुल को गौरवान्वित समभना चाहिए था। मै अपने कल्याण के लिए प्रयन्त्रशील हू। आपको भी इसमे अपना कल्याण समभना चाहिए। यह समार नाशवान है। इसके विषयोपभोग मनुष्य को पतन की ग्रोर ले जाने वाले हैं। ये नव ग्रनित्य है। याय्वत रहने वाल नहीं है। ग्रनित्य विपयों से श्रनुराग श्रेयस्कर नहीं है। इनका परित्याग करना ही उचित है। प्राय सभी महानात्माश्रों ने गृह-परित्यांग करके साधना तथा तपस्या और अपनी विद्वत्ता से ससार का कत्याण किया ग्रीर स्वयं ग्रमरत्व को लाभ किया है। महात्मा बुद्ध, महावीर, स्वामी शकराचार्य न्या महाप दयानन्दादि महापुरुषों ने घर तथा परिवार के ममत्व का परित्याग करके ही नसार का उद्वार किया हैं। नवीन चेतना का प्रमार किया है। धर्म, देश श्रीर जाति की रक्षा की है। ससार को नई विचारवारा ग्रीर नया सदेश दिया है। मनुष्य वह है जो किसी उच्च लक्ष्य की पूर्ति के लिए जीवित रहता है ग्रीर जो इसी जन्म में ग्रात्म-माजात्कार को प्राप्त करता है, ग्रन्थथा माताजी 'मृतो को वा न जायते।' सदैव श्रेय-मार्ग ही श्रेयस्कर है, प्रेय नहीं। ग्राप मुभे प्रेय-मार्ग पर घसीटकर ले जा रही हो। मुभे कत्याणकारी श्रेय-मार्ग पर चलने के लिए कटिवद्ध होने दो। ग्राप देवी मदाल्या को क्यो भूल गर्र जिसने अपने पुत्र को पालने मे अध्यात्म का पाठ पढ़ाया या ग्रीर जब वह ग्रपने वाल-स्वभाव के कारण रोया तो उसने कहा था, 'शुद्धोऽसि बुद्धोजिम निरजनोजिम समारमायापरिवर्जिनोजिम । माताजी, श्राज मे श्रापस इसी प्रकार के उपदेश की इच्छा करता हू। श्राप भी माता मदालसा की तरह मुक्ते श्रध्यात्म का उपदेश देकर इस पथ पर श्रयसर करे। मेने श्राजीवन ब्रह्मचर्य-व्रत को धारण करने की प्रतिका की है श्रीर श्रेय-पथ पर चलने का मेरा दृढ निश्चय है। इसी पथ का पथिक बनने में मेरा श्रीर श्रापका कल्याण साधन होगा। यदि श्रापका श्राकीर्वाद इस कार्य मे मुक्ते प्राप्त हुग्रा तो में ग्रपने को धन्य समक्रूगा। में जानता हू यह मार्ग किंठन है। इसी के लिए उपनिपद में कहा है, 'क्षुरम्य घारा निध्यता दुर्रयया दुर्गम पथस्तत् कवयो वदन्ति।' पर ग्रापका ग्रार्थीवाद सब किंठनाइयों को दूर कर देगा ग्रोर मेरा पथ प्रशस्त हो जाएगा"।

ग्रयने पुत्र के वार्तालाप से माता वड़ी प्रभावित हुई ग्रीर उसे ग्रालिगन करके ग्राशीर्वाद दिया ग्रीर उसके मार्ग में कटकरूप न वनने के लिए वचन दिया। किन्तु उससे कहा कि वह वही रहकर संस्कृत पढ़े ग्रीर ईंग्वर-भित्त करे। व्यासदेवजी ने दु खी माता को ढाढस बंघाया ग्रीर कहा कि जब तक कोई विशेष विव्न उपस्थित न होगा तब तक वह गृह-त्याग नहीं करेगा।

इसके वाद व्यासदेवजी ने माता को भगवदाराधना का उपदेश दिया ग्रीर निवेदन किया कि उनकी ग्रौर पिताजी की ग्रव वानप्रस्थाश्रम मे प्रविष्ट होने की ग्रायु है। इस ग्राश्रम मे प्रवेश पाकर ग्राप दोनों को ईब्वरभित में सलग्न रहना चाहिए। पुत्र की उपदेशप्रद वातों को सुनकर माता वड़ी प्रफुल्लित हुई ग्रीर घर लीट गई।

घर जाकर उसने अपने पुत्र-पुत्रियो तथा वन्युत्रो श्रीर पास-पडोस से व्यासदेव की भूरि-भूरि प्रशसा की श्रीर उन सबसे उससे मिलने जाने की प्रेरणा दी।

पारिवारिक स्त्रियो का दर्शनार्थ ग्रागमन—ब्रह्मचारी व्यासदेवजी रात्रि के दो वजे ही उठकर ध्यान मे बैठ जाया करते थे। लगभग ग्यारह घण्टे तक ध्यान, जाप तथा योगाभ्यास किया करते थे। इनके वागीचे मे एक वहुत वटा ग्राम का वृक्ष था। इसकी गाखाए ग्रीर प्रशाखाए भूमि तक फैली हुई थी। इनसे एक गुफा-सी वन गर्ड थी। धूप इसमे नही स्राती थी स्त्रीर वायु भी कम स्राती थी, जिससे व्यामदेवजी के ध्यान और अभ्यास मे किसी प्रकार की वाधा उपस्थित नहीं होती थी। वे प्राय सारा दिन इसी गुफा मे रहते थे, केवल स्वामी रामानन्दजी के सत्मग मे स्रीर पटने के लिए जाते थे और रात्रि को सोने के लिए भी मकान पर चले जाते थे। ये केंवल चार घण्टे ही शयन करते थे। यह बालयोगी जी अपने बाल्यकाल से ही एकान्तप्रिय थे। जन-सपर्क से ये वडे घवराते थे। सारा समय चितन आर ध्यान मे ही ब्यतीन करते थे। इसीलिए घर से दूर एक वागीची में रहते थे जिससे ग्रम्यास में किसी प्रकार की बाघा उपस्थित न हो। एक दिन सुवह के दस बजे इनके परिवार की कुछ महिलाए इनके दर्शन करने के लिए वागीची मे आई। उस समय ये ध्यानावस्थित थे। इन देवियो के कोलाहल से उनका ध्यान भग हो गया । यह इस ग्रचानक जोर से घवरा उठे किन्तु ध्यान की स्थिति मे ही वैठे रहे। इनकी सम्वन्धिनी महिलाग्रो ने इनका वडा उपहास किया और अनेक उलाहने दिए, किन्तु व्यासदेवजी पर इनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। वे निस्तव्ध भाव से वैठे रहे। कुछ समय के पश्चात् व्यासदेवजी ने हाथ जोडकर प्रार्थना के मत्र पढे ग्रीर भगवान् से प्रार्थना करके ग्रपना ग्रभ्यास समाप्त कर दिया। जो देविया वागीची मे ग्राई थी वे सव चुपचाप व्यासदेवजी की प्रार्थना सुनती रही ग्रीर वे वडी प्रभावित होकर वहा से गई।

आगन्तुक देवियो को उपदेश—इनमें से कई देवियो ने व्यासदेवजी से भिक्त, ईश्वर तथा गृहस्थ धर्म तथा ईश्वर के प्रति गृहस्थियों के कर्त्तव्योदि के सम्बन्ध मे

श्रनेक प्रश्न पूछे। सबके प्रश्न पूछ लेने के पश्चात् उन्होने सबके प्रश्नो का एक साथ उत्तर दिया । ईरवर सर्वव्यापक है । सभी स्थानो पर उसे प्राप्त किया जा सकता है । यदि तुमसे पूछा जाए कि दूध में मक्यन किस स्थान पर निहित है तो ग्राप में से कोई भी निश्चित रूप से यह नहीं कह सकती कि वह कहा पर है, किन्तु दूध में मक्खन है भ्रवय्य । यह दीसना नही क्योकि उसको पाने के लिए जिस साधन की ग्रावश्यकता है उसका प्रयोग नही किया गया है। मक्खन को प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम दूध को जमाया जाता है, फिर उसका मथन विया जाता है। तब मबखन की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार से सर्वव्यापक भगवान् को पाने के लिए वड़ी साधना, तप, तितिक्षा ग्रीर निष्ठा की ग्रावञ्यकता है । पहिले ध्यान ग्रीर समाधि करो, तभी उसे प्राप्त कर सकोगी । राजा भतृं हरिने राजसी ठाठवाठ, मुखसमृद्धि, भोगविलास और गगनचुम्बी प्रासादो का परि-त्यांग करके परमयोगी बनकर पारब्रह्म को प्राप्त किया था। भ्राचार्य शकर, महर्पि दयानन्द, गुरु नानकदेव, एकनाथ, नामदेवादि महापुरुषो ने अपना सर्वस्व त्यागकर, घर के सब गुंचों को निलाजिल देकर चितन श्रीर समाधि के द्वारा भगवद्प्राप्ति की । तुम्हे मीरा का नाम तो स्मरण होगा। वह उदयपुर की रानी थी। राज-महलो मे उसका पालन-पोषण हुन्ना था न्रीर राजमहलो मे ही रही थी, किन्तु उसने ईश्वर की प्राप्ति के लिए महलो के नभी सुखो का हसने-हसते परित्याग किया। राजसी सुख-समृद्धि श्रीर धनेश्ययं की किचिन्मात्र भी परवाह नहीं की। यह गगनचुम्बी श्रृष्टालिकाश्रो से बाहिर निकली और वृन्दावन के कुजो और गिलयो को राज-प्रासादों की अपेक्षा अधिक मान किया श्रीर श्रपने लक्ष्य को प्राप्त किया। घर मे तुम लोगो से सदा घिरे रहने के कार्ण सावना मे वाथा उपस्थित होती थी इसीलिए मैंने घर का त्याग किया था। एक महिला ने पूछा था कि गृहिरिथयों का कत्याण किस प्रकार से हो सकता है। उसका उत्तर देते हुए व्यासदेवजी ने कहा कि गृहस्थियों को ग्रुपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। उत्तरदायित्व को समभना चाहिए। सब सुखो के दाता जगदीश्वर को सदैव रमरण रयना चाहिए। सव युक्तोपभोग को उसका प्रसादरूप मानकर भोगो। यह मनार नागवान् है। उसके सब पदार्थ नव्वर है। यह गरीर ग्रनित्य है। जिसने उस नगार में जन्म लिया है उसका मरण भी अवश्यमभावी है। इसीलिए भगवान् गुरण ने "जन्ममृत्युजराव्याधिदु पदोपानुदर्शनम्" का उपदेश दिया है। तुम लोगे गसार मे अन्यधिक आसिक्त मेत रखो। साय-प्रात भगवद्भजन श्रीर साधना करो। पन महायज्ञो का यथावत् अनुष्ठान करो । पतिव्रत धर्म का सदा पालन करो । यह उपदेश मुनकर वे वडी प्रभावित हुई ग्रीर उन्होंने उनका जो उपहास ग्रीर भत्सना की थी उमर उन्हें बटा पश्चानाप हुम्रा। व्यासदेवजी के लिए जो भोजन वे लाई थी उमें देगर क्षमा-याचना करती हुई वहा से चली गुईं। व्यासदेवजी ने उन्हें म्रादेश दिया कि अब वे भविष्य मे वहा आने की कृपा न करे क्योंकि इससे उनकी साधना स्रीर श्रभ्याम मे वाधा उपस्थित होती थी।

## च्यासदेवजी का पुनः गृह-त्याग

सामारिक पाञ्चो मे न फसना—एकान्तप्रिय, योगनिष्ठ ग्रीर तपश्चर्यापरायण व्यामदेवजी का समारी लोगो मे निवास करना भ्रसभव था। माता-पिता उसे ससार के मायाजाल मे फसाना चाहते थे। लीकिकता के कड़े पाश मे वाधकर उसे एक

ससारी जीव वना देना चाहते थे। भाई-वधुत्रो तथा सगे सम्वन्धियो की ममता मे सितारा जाव वना देना चाहत या मार्चपुत्रा तमा तम तम्मान्य में प्रमाप्य ने प्रमाप्य के प्रवाह फसा देने की उनकी उत्कट ग्रिमलाषा थी। महात्मा बुद्ध के तीन्न वराग्य के प्रवाह में वाध लगाने के लिए महाराजा गुद्धोधन ने उन्हें विवाह के बधन में वाधना चाहा था किन्तु यह बधन उन्हें वाध न सका ग्रौर वे ग्रपनी पत्नी यशोधरा ग्रौर वालक राहुल को रात में सोता छोड़कर, ससार में दु ख क्यो है, इस दु ख का कारण क्या है, तथा इसका नाग करके प्राणी-मात्र को किस प्रकार से सुखी बनाया जा सकता है, इसके अन्वेषण के लिए चल पडे थे। महर्षि दयानन्द के पिता भी उन्हें इसी प्रकार के बधन मे वाधकर उनसे सासारिक जीवो की भाति जीवन व्यतीत करवाना चाहते थे, किन्तु वे उन्हें इस जटिल पाश मे फसाने में सफल न हो सके थे। श्राचार्य शकराचार्य, कुमारिलभट्ट तथा महावीर वर्धमान के ग्रभिभावक भी उन्हें ससार के कल्याण के मार्ग से च्युत नहीं कर सके थे। हमारे चरितनायक व्यासदेव, जो ग्रामे चलकर नवीन पावन परम्पराग्रो के प्रवर्तक, नूतन दार्शनिक विचारधाराग्रो के सस्थापक श्रीर धार्मिक क्षेत्र मे नवयुग के निर्माता वने, उन्हें मायाजाल मे फसाना असभव था। दु खितवृत्यर्थ ससार को योगनिष्ठ वनाना, योग-परम्पराम्रो की स्थापना करना, तथा किकर्त्तव्यविमूढ तथा पथभ्रष्ट ससार के कर्त्तव्य की रेखाम्रो को प्रकाशित करके उन्हें कर्त्तव्य-पथ पर ग्रारूढ करना जिन्होंने ग्रपना जीवन-लक्ष्य वना लिया हो, भला वे बालक किस प्रकार से सासारिक सुखो को महत्ता दे सकते थे ग्रीर माता-पितादि की ममता मे फस सकते थे। व्यासदेवजी के पिता उन्हें संस्कृताध्ययन तथा साधनादि का प्रलोभन देकर घर पर ले आए थे। सस्कृत पढाने के लिए एक शास्त्री ग्रध्यापक की व्यवस्था भी कर दी गई थी ग्रौर उनकी इच्छा के ग्रनुरूप ही उनके निवास का प्रवन्ध घर से दूर ग्रपने उद्यान मे कर दिया गया था। किन्तु धर्मदेव शास्त्री छुट्टी लेकर अपने घर की व्यवस्था करने गया। कितने ही दिन व्यतीत होगए, वह लौटा ही नही। सस्कृताध्ययन वन्द होगया। उद्यान मे भी कोई न कोई भाई-वहिन तथा परिचित लोग श्राकर साधना-जापादि मे वाधा पहुँचाते रहते थे। इससे वे घवरा उठे ग्रौर इस वधन से मुक्त होकर पुन गृह-त्याग की योजना वनाने लगे।

स्वामी रामानन्दजी से परामर्श—एक दिन भोजन करने के उपरान्त व्यासदेवजी स्वामी रामानन्दजी के पास गए और निवेदन किया कि ग्रापकी ग्राज्ञा से मैं घर ग्राग्या था। मुक्ते यह विश्वास दिलाया गया था कि मेरे सस्कृताध्ययन तथा साधना की व्यवस्था सन्तोषप्रद रूप से कर दी जाएगी किन्तु पिंडत धर्मदेवजी का यहा पर मन नहीं लगता। उन्हें ग्रपने पारिवारिक जनो की चिन्ता धरे रहती है। उनकी छुट्टी भी ग्रव समाप्त हो गई है किन्तु वे ग्रभी तक लौटे नहीं है। उनका लौटना कुछ ग्रमिश्चित सा ही मालूम होता है। मुक्ते ग्रव विश्वास नहीं है कि सस्कृत पढ़ने की कोई ग्रौर व्यवस्था हो सकेगी। प्रत्याहार, धारणा तथा ध्यानादि की साधना मे नित्य नई वाधाए उपस्थित हो रही है। सारा दिन कोई न कोई उद्यान मे मिलने के लिए ग्राता रहता है। कभी-कभी बहुत से लोग मिलकर भी ग्रा जाते है ग्रौर सारे उद्यान मे इतना कोलाहल मचाते है कि मेरी साधना भग हो जाती है। ये लोग घटो ही वहा पर वाते करते रहते हैं। जब मैं उनसे बातचीत नहीं करता तो वे परस्पर वाते करने लगते हैं ग्रौर जब मैं उनसे जाने के लिए निवेदन करता हू तो वे नाराज हो जाते है। इस

प्रकार मेरे अमून्य समय का एक बहुत बटा भाग प्रतिदिन व्यर्थ जाता है। इसलिए मेरा विचार श्रव पुन गृह-पित्याग का हो रहा है। मैं तो केवल आपकी श्राज्ञा का पालन करने के लिए श्रा गया था। मैं पहिले से ही इस बात को समझ गया था कि पिताजों केवल मुफ्ते वापिस घर ले जाने के लिए पढ़ाई और साधना की व्यवस्था करने की बात करने हैं किन्तु उनसे यह बन न मकेगा। स्वामीजी को व्यासदेवजी के विचार मुनकर प्रथम तो दु ख हुग्रा और कहने लो मैं तो मोहन श्राथम में तुम्हारे श्रध्ययन तथा साधना की व्यवस्था देखकर बड़ा सन्तुष्ट था किन्तु तुम्हारी माता ने बहुत दिनों में तुम्हारे वियोग में ग्रन्न छोड़ रखा था। ग्रहिन श्रुम्हारी चिन्ता करती थी, श्रातुर श्रीर व्याकुल रहनी थी, सदा विलाप करती रहती थी, वड़ी कुश हो गई थी। उसकी दयनीय दशा को देखकर मेरा दिल द्रवित हो गया और मैं तुम्हारे पिता के साथ तुम्हें लेने के लिए हरिद्वार चला गया। लोग तुम्हारे योगाभ्याम की साधना में बाबा उपस्थित करने हैं यह जानकर मुक्ते बड़ा दु ख हुग्रा है। मेरी यह श्रीभलापा है कि तुम एक महान् योगी बनकर दुनिया को दु स से मुक्त करो। में तुम्हें ग्राज्ञा देता हू और तुम्हारे श्रेय की प्रभु ने प्रार्थना करता हू। यदि सम्कृत पढ़ाने की कोई व्यवस्था दूसरी हो भी जाए तो भी यहा तुम्हें शान्ति नहीं मिल सकेगी। तुम्हारे माता-पिता को यह शक्त है कि कही तुम नाधु न बन जाग्रो, उमीलिए तुम्हारी साबना में विभिन्त वाधाए उगिन्यन की जा रही है श्रीर सभी तुम्हारे गृहस्थ में प्रवेश के लिए प्रयत्नशील है। तुम्हारी उन्ति तर के वातावरण से दूर रहकर ही हो सकती है।

स्वामी रामानन्दजी से आजा प्राप्त करके व्यासदेवजी ने उनसे निवेदन किया कि अब यह प्रान्मजान प्राप्ति के लिए कठिन साधना करेगे ग्रीरयोगाभ्यास मे मार्गदर्जन लाभ करने के लिए किसी महान् योगी की तलाश करेगे। उनके सहपाठी मनुदत्त ने भी वापन मोहन आश्रम जाने का विचार किया।

## व्यासदेवजी का पुनः हरिद्वार के लिए प्रस्थान

व्यानदेवजी ने अपने गृह-त्याग के विचार को किसी पर भी प्रकट नहीं किया।
केवल स्वामी रामानन्दजी तथा उनके सहपाठी मनुदत्त ही को इनके इरादे का पता
था। एक दिन रान को छिपकर रटेशन पर आए और हरिद्वार का टिकट लेकर वहा
पहुच गए। मनुदन तो पूर्ववन् मोहन आश्रम मे रहने लगा किन्तु व्यासदेवजी को अपने
पिनाजी के वहा उनकी तलाश में आ जाने का भय था। अत उन्होंने मोहन आश्रम में
रदना उचिन नहीं समका। व्यासदेवजी ने मनुदत्त को समका दिया था यदि उनके पिता
उन्हें दृदने आए तो वह उनका पना न बताए। व्यासदेवजी ने अब हरिद्वार से कुछ मील दूर
मप्तमरोवर जाकर विदिन नपर्या, साधना और योगास्यास करने का निश्चय किया।

च्यासदेव की खोज—व्यामदेव के चले थाने के वाद घर मे पूर्ववत् यातुरता थ्रीर व्यागुलना छा गई। मारा वातावरण शोक मे श्राच्छादित हो गया। घर थ्राया वेटा पुन हाथ मे निकल गया यह विचार मवको दु खित कर रहा था। माता-िता, भाई-व्यथु मभी परम्पर एक दूसरे को उलाहना दे-देकर छ्दन कर रहे थे। श्रव पिता ने पुन हरिद्वार तथा उसके थ्रामपास व्यामदेव को ढूढकर घर वापिस लाने का दृढ विचार किया। वालयोगी व्यामदेवजी इस वान को जानते थे इसीलिए इच्छा होने पर भी वे थ्रवकी वार मोहन थ्राथम नहीं ठहरे थ्रीर सप्तसरोवर चले गये थे। पिता

व्यासदेवजी के गृह-परित्याग से दूसरे या तीसरे दिन ही उन्हें ढूढने के लिए मोहन ग्राश्रम पहुंचे। वहा मनुदत्त से उनका पता लगाया पर व्यासदेवजी के ग्रादेश के ग्रनुसार उसने उनका कुछ भी पता नहीं बताया श्रीर निवेदन किया कि व्यासदेवजी तो किसी दिन वड़े भारी विख्यात योगी बनेगे। वह किसी प्रसिद्ध योगी से योग मीखने के लिए उसकी तलाश में कही गए है। ग्रव उनका पता लगाना वड़ा कठिन है। हिमालय में रहकर योगाभ्यास करने का उनका विचार है। ग्राप उनके विचारों ग्रीर उनकी स्थित से परिचित ही है। ग्रव ग्राप उनको छोड़ दीजिए। वह ग्रापके पास घर पर नहीं रहेगे। उन्होंने ससार के बचन काट दिए है। किसी प्रकार का ममत्व ग्रव उन्हें बाध नहीं सकता। वह सासारिक प्रलोभनों से बहुत ऊचे उठ चुके ई, ग्रत ग्राप नीट जाइए ग्रीर शान्तिपूर्वक ग्रपने गृहस्थ धर्म का पालन कीजिए। मनुदत्त ने पिता के ग्राने की सूचना व्यासदेवजी को मप्नसरोवर पहुंचा दी ग्रीर वे गनके ग्रीर मात्रधान होगए।

#### कठिन तपइचर्या का प्रारम्भ

ब्रह्मचारी व्यासदेवजी किसी बडे योग्य योगी की योज मे थे। सप्तसरोवर मे कुछ दिन वास करने के पञ्चात् वे इस खोज मे निकल पडे। सप्तसरोवर से ऋषिकेश की स्रोर गगा के किनारे-किनारे प्रस्थान किया । दस-पन्द्रह दिन तक हिन्हार स्रोर ऋषिकेश के बीच मे ही घूमते रहे। ग्रभी घर से निकले नीन-चार वर्ष ही हुए थे। इसलिए भिक्षाचर्या करने में मकोच होता या। उनके पास युष्ट रुपये थे जो वे अपने घर से ही साथ लाए थे। उन्हीं अपना निर्वाह करते थे। भोजन केवल एक ही समय करना प्रारम्भ कर दिया था। अभी गेरुए वस्त्र धारण नही किए थे। उनके पास केवल एक कटिवस्त्र, एक कम्वल तथा दो पात्र थे। हरिहार ग्रीर ऋपिकेश के वीच स्रमण करते हुए कई सन्तो तथा महात्माग्रो के दर्शन लाभ हुए। उनमें से कउयो से योग-सम्बन्धी विज्ञान के विषय मे वार्तालाप हुन्ना किन्तु इनमें से कोई भी व्यास-देवजी की परीक्षा की कसौटी पर पास नही हुग्रा । इनमें ने प्रत्येक उन्हे ग्रपना चेला बनाना चाहता था पर व्यासदेवजी चेला बनना रवीकार न करते थे। भेला ऐसे-वैमे साधारण से सन्तो का चेला वनना उन्हे कैसे पसन्द ग्रा सकता था। ग्रव व्यासजी ने वीरभद्र के मदिर के पास अपना ग्रासन जमा लिया ग्रीर गगा के किनारे योगाभ्याम करने मे तत्पर होगए। उन दिनो ऋषिकेश की ग्रावादी वहुत कम थी। इमलिए यत्र-तत्र हाथी, वाघादि वन्य जानवर फिरा करते थे। सन्त ग्रीर महात्मा लोग कोयल घाटी श्रौर भाडियो मे निवास करते थे। व्यासदेवजी इनके दर्शन करने के लिए कभी-कभी वहा जाया करते थे किन्तु इन्हें कोई ऐसा योगी नहीं मिला जो उनका पथप्रदर्शन कर सकता। ग्रव व्यासदेवजी ने वस्त्र पहिनना बहुत कम कर दिया। केवल कीपीन धारण किया करते थे। कभी ग्राटा, दालादि लेने यदि वस्ती मे जाना पडता तो कटि-वस्त्र धारण कर लेते थे। देहाध्यास को कम करने का प्रयत्न करते थे। बाल बहुत वढ गए थे। ग्रव उनकी ग्रवस्था एक ग्रवधूत के समान होगई थी। चित्त मे उदासी-नता और वैराग्य की भावना सदैव वनी रहती थी। सारा समय जाप और ध्यान मे ही लगे रहते थे। गगा के किनारे पर घास ग्रीर पत्तो की एक छोटी-सी कुटिया वना ली थी, उसी मे रहा करते थे। पढने-लिखने की यहा कोई विशेष व्यवस्था न

थी। केवल वेराग्यशतक ही पढा करते थे। ग्रव दाल-शाकादि वनाना भाररूप-सा मालूम होने लगा, ग्रत केवल दो रोटी वनाकर दोपहर के समय खा लेते थे। इन दिनो ग्रिधकतर मोन ही रहते थे ग्रीर ग्राध्यात्मिक मस्ती के ग्रानन्द मे विभोर रहते थे। इस प्रकार एक वर्ष व्यासदेवजी ने जाप ग्रीर ध्यान तथा योगाभ्यास मे व्यतीत किया।

नीलकठ गमन—उधर-उधर स्रमण करते हुए तीन-चार महात्मात्रो के साथ व्यागदेवजी नीलकण्ठ महादेव चले गए। यह स्थान स्वर्गाश्रम से छ या सात मील की दूरी पर है। यह स्थान वडा एकान्त था ग्रौर यहा का वातावरण भी बहुत शात था। यहा पहुचने का मार्ग वटा दुर्गम था। यहा पर हाथी, शेर, बाध, चीते श्रादि हिंस्र जीव बहुत रहते थे। ग्रकेले भ्रमण करना ग्रत्यन्त कठिन था। जो सन्त इनके साथ नीलकण्ठ महादेव गए थे वे वापिस लीट गए परन्तु व्यासदेवजी निर्भय होकर वही रहने लगे। यहा पर उन्होंने ग्राकार मीन धारण कर लिया था ग्रौर तीव्र तपस्या प्रारभ कर दी थी। उन दिनो बाल इतने बढ गए थे कि इनकी जटाए-सी वन गई थी। ग्रव वदन पर विभूति भी लगाने लग गए थे। यह ग्रावश्यक भी थी क्योंकि वरत्र धारण करना प्राय त्याग ही दिया था। शीतकाल में विभूति लगाने से शीत से रक्षा हो जाती थी। ग्रव इनका देहाध्यास बहुत कम हो गया था किन्तु वैराग्य ग्रभी पूर्णत्या दृद्भूमि नही हुग्रा था क्योंकि ग्रभी भी भिक्षाचर्या करने मे सकोच होता था ग्रीर इसी निए ग्रवने पाम भोजनार्थ कुछ एपये रसे हुए थे।

पुन. फजलो वन गमन—गजली वन मे प्रावादी बहुत कम थी इसिलए व्यासदेवजी ने उम स्थान को प्रत्याहार, घारणा, ध्यानादि के लिए उपयुक्त समक्ता ग्रीर यही
ग्रावर रहने लगे। स्वर्गाश्रम ग्रीर नीलकण्ठ में लेकर गुरुकुल कागडी तक का सारा
प्रदेश निर्जन-मा ही था। उस बीहड वन मे घूमते-फिरने व्यासदेव कभी-कभी भयभीत
हो जाया करते थे। फिन्तु यहा रहने का उन्होंने दृढ निष्चय कर लिया था। वे सोचा
करते थे कि मृत्यु तो एक न एक दिन ग्राएगी ही लेकिन वह ग्राएगी तव जब जीवन
की ग्रवधि ममाप्त हो जाएगी, उसमे पूर्व नही। यदि किसी हिम्न जीव के द्वारा मृत्यु ही
ग्रारच्य में है तो फिर उससे भयभीत होने से भी क्या लाभ । इसलिए इसी वन मे
रहकर नवद्वर्या का ग्रनुष्ठान क्यों न किया जाए । इन दिनो विल पकने प्रारम होगए
थे। कन्द-मूल नरउ भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो जाते थे ग्रीर कुछ थोडे से सत्त्र
भी उनके पास थे। यहा पर चण्डी मन्दिर ग्रीर चित्ला के बीच में एक जलस्रोत बहुता
था। उसमें थोडी-सी दूर एक पेड के नीचे व्यासदेवजी ने टहनियो ग्रीर पत्तो की एक
छोटी-मी कुटिया बना ली ग्रीर उसके पास में धूनी लगा दी। ग्रभी यहा निवास करते
कुछ ही दिन हुए थे, एक राधि को जिया मुनाई दी। उनकी ग्राख खुल गई। उन्होने धूनी
तेज कर दी ग्रीर सामने से ग्राते हुए हाथी को देखा। वह स्रोत से पानी पीकर ग्राया
ग्रीर व्यासदेवजी की श्रीर बढने लगा। धूनी से थोडी दूर पर ग्राकर खडा हो गया।

हाथी से सामना—यह हाथी वटा वलवान था। वह भ्रपनी सूड से पानी निकालकर घूनी की श्रोर फेंकने लगा। व्यासदेवजी भी उससे लोहा लेने के लिए नियार होगए श्रीर निर्भीक भाव से उसके विरुद्ध डटे रहे। इन्होंने तुरन्त घूनी में से एक

जलती हुई लकडी उठाकर वलपूर्वक हाथी की सूड पर मारी। इससे हाथी कुछ पीछे हट गया और वहा से पुन अपनी सूड से घूनी पर पानी फैंकने लगा। इस पर व्यास-देवजी ने धूनी पर से दो लकडी और उठांकर हाथी की ओर फैकी। वह वहां से भागकर पानी के स्रोत की ग्रोर गया। व्यामदेवजी ने सोचा कि ग्रव हाथी कही ग्रन्यत्र चला गया है किन्तु वह थोडी ही देर मे पुन वहा आया और पूर्ववत् धूनी पर पानी फैकने लगा। इस पर व्यासदेवजी एक लम्बी-सी जलती हुई लकडी लेकरे खेडे होगए ग्रीर दूसरे हाथ से कई पत्थर हाथी पर मारे। पर छोटे-छोटे पत्थरो का हाथी पर क्या ग्रसर होता । वह बरावर पानी फैकता ही रहा। ग्रव व्यासदेवजी की वूनी ग्राधी से भी ग्रविक बुभ चुकी थी। अब वह चिन्तित हुए और हाथी द्वारा अपनी मृत्यु निव्चित समभ ली। व्यासदैवजी विपत्ति मे धैर्य रखना जानते थे और वडे प्रत्युत्पन्नमित थे। जव हाथी की सूड का पानी समाप्न होगया और वह तीसरी वार पानी लेने गया तव मुग्रवसर देखकर व्यासदेव सब सामान नीचे छोडकर एक ऊचे वृक्ष पर चढ गये। हाथी सूड मे पानी भरकर लाया। सारी घूनी बुक्ता दी। जो सामान उमे नीचे दिग्वाई दिया सब तोड-फोड दिया। जिस कपडे में सन् वधे हुए थे उसे भी फाड दिया और सत्तू खागया। कम्वल ग्रीर घोती को फाडकर उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए किन्तु ग्रभी भी उसका कोध जान्त नही हुमा। जिस वृक्ष पर च्यासदेव ने माथय लिया या हायी उसकी टहनिया तोड-तोडकर उसे मारने लगा। ग्रव व्यासदेवजी पेड की चोटी पर चढ गये। जब पेड की सब गाखाए और प्रगाचाए समाप्त होगई तब वह कुछ होकर पेड को ही वडे वेग से वलपूर्वक हिलाने लगा। उसकी टक्करों से सारा वृक्ष कम्पाय-मान होगया पर व्यासदेवजी वडी दृढता से उसपर वैठे रहे। प्रात काल जब कुछ प्रकाश-सा हुन्ना तब वह हाथी उस वृध्य को छोड दूर जगल में चला गया। व्यासदेव प्रात छ वर्जे पेड से नीचे उत्तरे श्रीर सारा सामान टूटा-फूटा पाया। श्रव व्यासदेवजी वचे-खुचे सामान को लेकर पुन कुनाऊ की श्रोर चले गये श्रीर वही पर श्रावादी मे थोडी दूर निवास करके कई मास तक साधना की।

योगी स्वरूपानन्द से भेंट—वर्णा बीत चुकी थी। जीतकाल का समागम होने ही वाला था। कुनाऊ से व्यासदेवजी चण्डी पर्वत पर कुछ दिनो के लिए चले गए ग्रीर वहा से गुरुकुल कागडी को देखने गए। इसको स्थापित हुए ग्रभी थोडे ही वर्ष हुए थे। इस भ्रमण के पञ्चात् वह कनखल ग्राकर चेतनदेव की कुटिया मे रहने लगे। इस कुटिया के पास ही स्वामी स्वरूपानन्दजी रहा करते थे। व्यासदेवजी ने इनका सत्सग करना प्रारभ कर दिया। इन दिनो यह दिन मे तीन घण्टे तक ग्रासन ग्रीर प्राणायाम करते थे तथा रात्रि को व्यान योग का ग्रभ्यास करते थे। स्वरूपानन्दजी ने व्यासदेवजी को ३-४ घण्टे प्रतिदिन ग्रपने पास ग्राने की प्रेरणा दी ग्रीर कहा कि योग साधना के लिए युवावस्था सर्वोत्तम काल है। इसका सदुपयोग करो। व्यासदेवजी ३ घण्टे प्रतिदिन इनके पास जाकर ग्रासन, प्राणायाम, ग्रीर व्यानयोग का ग्रभ्यास किया करते। स्वरूपानन्दजी हठ-योग की वहुत-सी कियाए जानते थे। ये कियाए भी व्यासदेवजी ने इनसे सीखी ग्रीर ४ मास तक प्रतिदिन इनसे योगाभ्यास सीखते रहे। इसके वाद स्वामीजी कही ग्रन्यत्र कार्यार्थ चले गए ग्रीर व्यासदेव को लीटने पर योगाभ्यास करवाने का वचन दे गए।

पुन सप्तसरोवर गमन—यहा पर सन्त रामदासजी रहते थे। ये वडे पहुचे हुए साधु थे। उनका शरीर पजाव का था। व्यासदेवजी ने इनकी स्याति सुनी थी, त्रत उनके दर्शनाथं ये पुन सप्तसरोवर ग्राए थे। सन्त रामदासजी लगभग १२ साल ने एक पैर पर खडे होकर नपस्या कर रहे थे। ये कई स्थानो पर रहकर कठिन तपस्या कर चुके थे। ग्राजकल सप्तसरोवर मे ग्राकर तपव्चर्या प्रारंभ की थी। उन्होंने ग्रपना एक पैर रस्सी मे रखकर उसके दूसरे सिरे को ऊपर वृक्ष से वायकर लटका रखा था और दूसरे पैर के सहारे भूमि पर खडे थे। जिस पैर को वृक्ष से लटकाया हुग्रा था वह सूप्तकर एक पतली लकडी के समान हो गया था। ग्रीर दूसरा जिनके महारे मे वे खडे रहते थे मूज कर बहुत मोटा हो गया था। व्यासटेवजी पर उनकी कटी नपस्या का बहुन बटा प्रभाव पटा। इनके चित्त मे उनके प्रति ग्रत्यन्त श्रद्धा और भिन्त हो जाना स्वाभाविक ही था। उसलिए व्यासदेवजी ने इनके थोडी दूर ही जगल मे एक छोटी-सी कुटिया ग्रपने निवास के लिए वना ली ग्रार नित्यप्रति उनके दर्शन ग्रीर सत्सग के लिए ग्राना प्रारंभ कर दिया। सन्त रामदासजी विद्वान् तो न वे किन्तु उनका वैराग्य वटा नीव था ग्रीर ये वडे ग्रनुभवशील तपस्वी थे।

#### उत्तरालण्ड के चारो धाम की यात्रा

जमनोत्री-यात्रा—किसी योग्य योगी की खोज मे व्यासदेवजी ने हरिद्वार, सप्तनरावर, ऋषिकेश, रवर्गाक्षम तथा नीलकण्ठ महादेवादि भ्रनेक स्थानी का भ्रमण किया था किन्तु उसमें उन्हें सफलता लाभ न हो सकी। उनकी योग सीखने की प्रवृत्ति मे उत्तरीत्तर वृद्धि हो रही थी ग्रत इस उत्कट योग-पिपासा को प्रवान्त करने के लिए एक सच्चे गुरु की तलाश करने के लिए उत्तरायण्ड की यात्रा का निय्चय किया। भगवती प्रकृति तथा खण्टा की मृष्टि के सीन्दर्य की अनुभूति प्राप्त करने की भी उच्छा थी और नाथ ही चारो धामों की यात्रा से पुण्य-लाभ करने की ग्रिनितापा भी थी। उन भावनाग्रो के साथ व्यामदेवजी हरिहार में त्रहिपकेश पहुचे। यहा ने टिहरी लगभग ४० मील है। सर्वप्रथम यह वहीं गए ग्रीर वहा पर दो-तीन टियम ठहरे। उसके परचात् गगा के किनारे-किनारे धरासू गए। यहां से जमनोत्री लगभग ४० मील है। व्यायदेवजी ने सर्वप्रथम जमनोत्री जाने का निञ्चय किया। मार्ग मे शिमली, गगनाणी, यमुना, हनुमान ब्रादि चृट्टियो मे ठहरते हुए लगभग १५ दिन में जमनोत्री पहुँच । यहाँ पर एक छोटी-सी धर्मजाला के श्रतिरिक्त श्रीर कोई ठहरने के लिए रथाने न था। श्रत च्यासदेवजी उसी धर्मशाला मे ठहरे। यहा पर एक छोटा-मा मन्दिर है श्रीर तीन-चार गर्म जल के कुण्ड है। इनका जल इतना गर्म होता है कि यदि कपटे में वाधकर मालू उनके जल में लटका दिए जाए तो वे भी पक जाते है। यहा से दो मील की दूरी पर यमुनाजी का वास्तविक जुद्गम स्थान है। लगभग दो मील के फासले पर बहुत ऊचे-ऊचे पहाड़ है जो सदा वर्फ से ग्राच्छा-दिन रहते है। यही मे यमुना का उद्गम है। इन पहाड़ो के नीचे जहा पर गर्म कुण्ड है टरीरियान को जमनोत्री कहते हैं। जब कभी हिम-जल का प्रवाह ग्रत्यधिक वर जाता है तो ये गर्म जल के कुण्ड नण्ट-भ्रष्ट हो जाने है तथा धर्मणालादि भी गिरगर पानी मे वह जाते हैं। जब कभी ग्लेशियर का कोई भाग टूटकर यमुनाजी मे गिर जाता था और यमुना का प्रवाह रुकने से वाध टूट जाता था तो वाट ग्रा जाती थी ग्रौर मिन्दिर, धर्मशाला, गर्म जल के कुण्डो ग्रादि को नष्ट कर देती थी। व्यासदेवजी लगभग चार-पाच दिन तक जमनोत्री रहे। वहा ग्रन्य कोई सायु न रहता था, केवल चार-पाच यात्रार्थ ग्राए हुए साधु ही वहा ग्रस्थायी रूप से रहते थे। व्यास-देवजी ने ग्रव वहा से उत्तरकाशी जाने का विचार किया।

उत्तरकाशी मे १५ दिन तक निवास--उत्तरकाशी यमुनोत्री से लगभग ४३ मील है। इस यात्रा मे तीन-चार ग्रीर सन्त भी व्यासदेवजी के साथ थे। इसलिए यह यात्रा अधिक कष्टदायक नही थी। मार्ग मे फूलचट्टी, गगनाणी, सिंगोट नया नाकीरी चट्टियो पर ठहरते हुए व्यासदेवजी तथा उनके साथी उत्तरकाणी पहुचे । इस यात्रा मे एक बडी रोचक घटना हुई। व्यासदेवजी तथा उनके साथियों में से दो मन्त प्रात चार वजे से पूर्व ही चल दिए। मार्ग एक सघन वन में से जाना था। जब ये इस मार्ग से जा रहे थे तब एक भयानक व्याघ्र उनका मार्ग रोककर खडा हो गया। व्यासदेवजी घवराए तो नहीं किन्तु उन्हें इस घटना से कजली वन में उनका हाथी से जो सघर्ष हुग्रा था उसका स्मरण हो ग्राया ग्रीर वडे विनोदपूर्ण ढग मे उस लडाई का वृत्तान्त अपने साथी सन्तो को मुनाया। उन दोनो सन्तो को तो अपनी जान के लाले पड रहे थे अत उन्होने रुचिपूर्वक व्यासदेवजी की लटाई की कहानी को नहीं सुना। व्याघ्र वास्तव मे वडा खूलार था। उसने ग्रास-पास के कई ग्रादिमयों को मार डाला था। व्यासदेवजी ने जिस प्रकार से कजली वन मे हाथी में लडाई की थी उसी प्रकार से ग्रव इस वाघ के साथ भी पत्यरों में लडाई करने लगे। हाथी में धूनी की जलती लकडियों से लड़ाई की थी और इस बाघ के साथ पत्यरों में। व्यास-देवजी ने वाघ पर डट कर निर्भीक भाव से पत्थरो की वर्षा की। इसी बीच मे यह देखकर कि वेचारा युवक साधु अर्केला ही वाघ से भिड रहा है, कुछ यात्री लोग डण्डे हाथ मे लेकर भाग आए। उन्होंने जोर से हाहुल्लड और शोर मचाया जिससे भयभीत होकर वह वाघ भाग गया। चार दिन की यात्रा के पञ्चात् व्यासदेवजी तथा दोनो सन्त उत्तरकाशी पहुच गए। यहा ये सव विश्वनाथजी के मन्दिर मे ठहरे। यह मन्दिर पत्यरो का बना हुआ है और बहुत प्राचीन है। पूर्वकाशी (बनारस) के समान ही यह तीर्थस्थान भी विविध मन्दिरों से अलकृत है। उत्तर-काशी भी पूर्वकाशी के समान ही वडा तीर्थ माना जाता है। प्रतिवर्ष हजारों यात्री यहा पर यात्रा करने ग्राते हैं। उत्तरकाशी से लगभग दो मील पर गंगाजी श्रीर वरुणा नदी का अत्यन्त रमणीय सगमस्थान है। श्रीर यहा से तीन मील की दूरी पर ग्रस्सी ग्रीर गगा का सगम है। पूर्वकाशी में भी ग्रस्सी ग्रीर गगा का सगम है। पूर्वकाशी के समान ही यहा पर भी गगा पर किदार घाट, जड भरत तथा मणिकरणादि प्रसिद्ध घाट वने हूए है। यहा पर व्यासदेवजी को कई सन्तो का समागम तो प्राप्त हुआ किन्तु वडी खोज के वाद भी किसी महान् योगी के दर्शन-लाभ न हो सके।

गगोत्री-यात्रा—व्यासदेवजी ने ग्रव ग्रपने उहकी पूर्वियत के लिए गगोत्री के लिए प्रस्थान किया। यह स्थान बहुत उचाई पर है। उनका विचार था कि इस

स्थान पर ग्रनेक योगी योगाभ्यास करते होगे क्योंकि ध्यान ग्रौर समाधि के लिए गीतप्रधान प्रदेश ग्रधिक उपयुक्त होते है।

उत्तरकाकी से चलकर मनेरी होते हुए व्यासदेवजी भटवाडी पहुचे। यहा ग्राकर एक मन्दिर मे ठहरे। यहा से गगनाणी गए ग्रीर वहा एक ब्रह्मचारी के पास तीन दिन तक निवास किया। यहा पर तीन प्रसिद्ध तप्त कुण्ड है जिनका जल वडा उष्ण है। यह स्थान वडा रमणीक है ग्रत व्यासदेवजी जब तक यहा रहे नित्य इन कुण्डों में घण्टों ही स्नान करते थे। इसके पश्चात् सुक्खी ग्रीर भाला चट्टियों के पास से चलकर हिंसल पहुचे। यहा पर व्यासदेवजी के परिचित एक सज्जन रहते थे। ये त्रह्मचारी थे किन्तु हर्मिल ग्राकर इन्होने गृहस्थ मे प्रवेश कर लिया था। ये जम्बू के निवासी थे। इनका नाम राजाराम था। यहा पर व्यासदेवजी राजाराम के पास ठहरे। राजाराम ने इनसे हर्सिल मे ही स्थायी रूप से निवास करने का श्राग्रह किया किन्तु व्यासदेवजी ने वहा रहना पसन्द नही किया। उसके सहवास मे वे रहना ही नहीं चाहते थे। वे राजाराम के विवाह कर लेने से प्रसन्न नहीं थे। उसने ब्रह्मचर्य को ब्रन लेकर उसको भग कर दिया था। वे इसमे राजाराम का वडा पतन समभते थे, उसलिए स्थायी रूप से तो भला ठहरना ही क्या था, वहा से दो दिन में ही गगोत्री के लिए प्रम्थान कर दिया। यहां से चलकर व्यासदेवजी घराली ठहरे। यह स्थान हमिल मे केवल दो ही मील की दूरी पर था। यह एक वडा रम-णीक स्थान है। गगाजी के किनारे वसा हुग्रा है। ग्रच्छा सुन्दर गाव है। यहा पर गगोत्री मे त्राते-जाते मन्त ठहरा करते थे। यहा के निवासी सन्तो-महात्मात्रो के लिए भोजनादि की व्यवस्था करते थे ग्रीर उनका वडा सम्मान करते थे। यहा प्राचीन मन्दिर पत्थरों से बना हुग्रा शकरजी का है। ग्रीर भी पहले कई मन्दिर यहा थे। यहा पर मन्तो ग्रीर महात्माग्रो के रहने के लिए गुफाए भी बनी हुई थी। सन्त गुदामिह जब कभी गगोत्री श्रीर गोमुख से श्राते तो यही ठहरा करते थे। यहां में चलकर व्यासदेवजी गगोत्री पहुंच गए। यहां श्राकर वह एक धर्मशाला में रहने लगे। यहां एक छोटा-सा गगाजी का मन्दिर था। व्यासजी के गगोत्री श्राने के कई वर्ष पञ्चात् जयपुरनरेश ने दो-तीन लाख रुपया व्यय करके इस मन्दिर को एक विञाल रुप दे दिया था। उस समय यहा पर न कोई ग्राश्रम या ग्रीर न कोई कुटिया। सभी मन्त और महात्मा गुफाओं में रहा करते थे। व्यासदेवजी ने यहां पर गगाजी के मन्दिर के दर्शन किए। गगा-स्नान किया और भगीरथ शिला, गौरी कुण्ड तथा पटागना देखने के लिए गए। उन्हे किसी योगी का दर्शन या सत्सग प्राप्त न हो सका। किसी श्रन्य साथी के न मिलने के कारण श्रभी गोमुख की यात्रा भी न कर सके। कुछ दिन यही ठहरना पड़ा। जब व्यासदेवजी को गोमुख यात्रा के लिए तीन साथी मिल गए तब उन्होंने इस यात्रा के लिए प्रस्थान किया। एक पण्डा भी उनके साथ हो लिया।

गोमुख-यात्रा—ज्यासदेवजी तथा इनके तीनो साथी प्रात ६ वजे गोमुख के लिए चल दिए। गोमुख का मार्ग वडा विकट था। सडक तो क्या कोई पगडण्डी भी वहा न थी। ऊबड-खावड इधर-उधर पडे हुए पत्थरो पर चलना पडा। सायकाल चीडवासा में पहुच गए। प्रत्यिधक बीत था ग्रत धूनी लगाकर उसके पास बैठकर

जीत को थोडा शान्त किया। दूसरे दिन लगभग १२ वर्ज गोमुख पहुचे श्रीर गगाजी के उदूगम स्थान पर स्नान किया। वर्फ गल-गलकर वर्फ के पहाँड के नीचे से वह रहा था। जल का वेग म्रति तीव्र था। इस तीव्र वेग मे हाथी भी वह सकता था। पण्डा से विदित हुम्रा कि जिस 'ग्लेशियर' से गगाजी निकली है वह प्रतिवर्ष कम होना जा रहा है। गगाजी के उद्गम के स्थान पर एक वर्फ का ग्लेशियर है जो लगभग सी फुट ऊचा ग्रीर ग्राधा मील चौडा था। इसकी लम्वाई का ग्रनुमान लगाना कठिन था क्योंकि यहां से ऊपर हिमाच्छादित वडे-वडे विशाल पूर्वन पाडे थे। ये विशालकाय पर्वत एक ग्रोर वद्रीनाथ से जा मिले थे ग्रीर दूसरी ग्रोर केदार-नाथ से । यहा से बद्रीनाथ १५ मील है ग्रीर केदारनाथ केवल १२ या १५ मील है। बद्रीनाथ तो यहा से जाया जा सकता था किन्तु केदारनाय का मार्ग मिलना ग्रत्यन्त कठिन था क्योंकि सामने मार्ग रोककर हिमालप खडा है। व्यास-देवजी के साथी यात्रियों को प्राकृतिक दृश्य देखने की वडी उत्मुकता थी। उन्होंने पण्डे को कुछ रुपये दिए ग्रौर उसे साथ चलने को कहा। यहा में तपोवन ग्रोर नन्दन-वन जाने की ग्रव तैयारी की। भोजनोपरान्त चलने का विचार किया। मार्ग के लिए कुछ पाथेय साथ ले लिया ग्रीर तपोवन के लिए प्रस्थान किया। यहा ने तपोवन केवल तीन-चार मील था। रात्रि तपोवन मे व्यतीत करने का सकरप किया क्योंकि दूसरे दिन प्रात नन्दनवन जाने का निब्चय था। दोपहर के दो वर्ज तपोवन पहुचे। यंहा पर वृक्ष नाममात्र को भी न थे। केवल एक छोटा-सा मैदान था जो ग्रावा मील लम्बा ग्रौर इससे कुछ कम चीडा था । इसके उत्तर भाग मे गगाजी का ग्लेशियर है ग्रीर दक्षिण भाग में जिवलिंग पर्वत है। इसकी ऊचाई लगभग इक्कीस हजार फीट है। इसके सामने एक नदी है जो केदारनाथ की ग्रार ने ग्रा रही है। इसके किनारे भी एक वडा विञाल पर्वत है। यह हिम से ग्राच्छादित है। इसी पर्वत के दूसरी स्रोर केदारनाथ है। इस नदी को पार करके गगाजी के क्वेनियर के किनारे-किनारे लगभग दो मील जाना पड़ा । यहा से वापिस लौटकर तपोवन मे ही ऋागए । रात एक पत्थर के नीचे गुफा मे व्यनीत की। लकडिया वहा पर वित्कुल उपलब्ध न हो सकी। भूमि से कुछ जड़े-सी उखाडकर ग्राग जलाई ग्रीर जैमे-तम कठिनाई से रात व्यतीत की । तपोवन की ऊचाई लगभग तेरह हजार तथा गोमुख की वारह हजार नौ सौ फीट है।

दूसरे दिन गगाजी के ग्लेशियर को देखने के लिए चल दिए। वटी कठिनाई से इसे पार किया। इसकी चौडाई लगभग आघा मील थी। कही-कही वर्फ गल गई थी और वहा एक प्रकार का तालाव-सा वन गया था। ये लोग लगभग दोपहर के वारह वजे नन्दनवन में पहुचे। इसके एक ग्रोर एक नदी है तथा दूसरी ग्रोर चौखम्भा पर्वत। यह पर्वत सदा ही हिम से ग्राच्छादित रहता है। इस पर सारा साल वर्फ पडती रहती है। नन्दनवन की ऊचाई लगभग चौदह हजार फीट है। ये लोग दो घण्टे तक यहा रहे। इस समय ग्रापाढ का महीना था, ग्रत ग्रासमान स्वच्छ था। नन्दनवन से गोमुख और तपोवन सामने ही दिखाई देते थे। गगाजी के ऊपर लगभग ग्राघ मील तक वर्फ जमी हुई थी। वडी कठिनाई से इस मार्ग को पार किया। व्यासदेवजी तो एक स्थान पर वर्फ की दरार में फस गए। उनके साथियों ने वडी

कठिनाई से इन्हें वाहर निकाला। तपीवन से हिमालय का दृश्य ग्रत्यन्त मनोहर दिखाई देता है। सामने हिमाच्छादित वडे-वडे विशाल पर्वत दृष्टिगोचर होते है। यहा के दृश्यों की अनुपम सुन्दरता और मोहकता वर्णनातीत है। इसकी आनन्दानुभूति तो स्वय यात्रा करके ही प्राप्त करनी चाहिए। सायकाल व्यासदेवजी ग्रपने साथियो सहित गोमुख लीट ग्राए ग्रीर गोमुख के पास ही एक गुफा मे निवास किया। इघर-उघर से भोजपत्र की लकडिया वीनकर इकट्ठी की ग्रीर उनकी घूनी वनाई। रात भर वहा विश्राम किया। प्रात काल गोमुख से निकली हुई घारा में स्नान किया। इस गोमुख के विषय में इधर कई प्रकार की किंवदन्तिया प्रसिद्ध है। कई लोगों ने वताया कि गगा की हिमवारा के ऊपर जो पर्वत है इन सवको मिलाकर गाय के मुख के समान एक श्राकृति-सी वनी हुई है। इसे ही गोमुख कहते है। कोई कहते थे कि वर्फ के पहाड से जहां से गगाजी निकली है उसकी ग्राकृति गाय के मुख से मिलती-जुलती है, इसलिए यह गोमुख कहलाता है। कड़यो का विचार था कि जिस स्थान से गंगाजी निकली हैं वहा गोमुख की ग्राकृति-सी वनी हुई है। किन्तु व्यासदेवजी को इन सब वातों में कोई तथ्य मालूम नही पडा। इनके विचार से तो वेद मे गो नाम पृथिवी का है। निघण्टु में इसके २२ पर्याय दिए हैं। इनमें गो जब्द भी ग्राता है। इसलिए गो नाम पृथिवी का है। पृथिवी के मुख को फाडकर गगाजी का उद्गम हुआ है। गगा के ऊपर का भाग लगभग आधा मील तक हिम से आच्छादित है। इसे हिम की धारा भी कह सकते है। इसका सम्बन्ध निञ्चितरूपेण ग्रासपास के हिमाच्छादित पर्वतो से है। ऐसा प्रतीत होता है। किन्तु गगा के वास्तविक उद्गम स्थान का ग्राज तक किसी को पता नही लग सका है। जहां कहीं भी इसका उद्गम होगा वह ग्रदृश्य है, प्रत्यक्ष नहीं। गगाजी के ऊपर जो वर्फ है इसका सम्वन्ध एक ग्रोर वद्रीनाथ से है ग्रीर दूसरी ग्रोर केदारनाथ से। इतना वडा ग्लेशियर कहीं पर भी किसी नदी के ऊपर नहीं है। वद्रीनाथ की ग्रोर से इसी ग्लेशियर से ग्रलखनन्दा, ऋपिगगादि नदिया निकलती है ग्रीर दूसरी ग्रोर से केदारगगादि कई निदया निकल रही है।

गोमुख स्नान करने के पश्चात् सायकाल गगोत्री लौट ग्राए। तीन-चार दिन तक यहा रहे। यहा पर सन्तो-महात्माग्रो के दर्जन किए ग्रीर ग्रनेक दर्जनीय स्थानों का ग्रवलोक्तन किया। गगोत्री में केदारगगा ग्रीर गगा का सगम है। इसमें स्नान करने का वड़ा महत्त्व माना जाता है। यहां से लगभग एक मील की दूरी पर रुद्र-गगा का गगा के साथ सगम होता है। पकोड़ी गगा भी लगभग एक मील की दूरी पर गगा से मिलती है। ग्राधे मील की दूरी पर लक्ष्मी वन है जिसे गगाजी का वागीचा भी कहते हैं। मदिर के पास भगीरथ ज्ञिला है। यहां पर महाराजा भगीरथ ने तपस्या की थी। गौरी कुण्ड का दृश्य वास्तव में दर्जनीय है। यहां पर वहुत ऊचे से गगाजी

<sup>\*(</sup>१) मेरु शिखर २१८५० फीट ऊचा, (२) शिविलंग २१४०० फीट, (३) कीर्ति-स्तम्भ २०५७० फीट, (४) चतुरगी हिमधारा (केदारनाथ का शिखर) २२६६० फीट, (५) सुमेरु पर्वत २०६६० फीट, (६) भगीरथी पर्वत (इसके नीचे से गगाजी निकल कर वह रही है) २२४६५ फीट, (७) वासुकी शिखर २२२५८ फीट, (८) चन्द्र पर्वत २२०७३ फीट, (६) कालिन्दी १६५७० फीट, (१०) चौखम्भा पर्वत—इसके चार शिखर —(क) २३४२०, (ख) २३१६०, (ग) २२२८०, (घ) २२४८५, (११)मन्थरी पर्वत २०३२० फीट, (१२) नीलकण्ट २२१४० फीट।

इस कुण्ड मे गिरती है। ऐसी किंवदन्ती है कि भगवान् शकर का वरण करने के लिए पार्वतीजी ने यहां घोर तपस्या की थी, जिसके परिणामन्वकण शकर उसकी तपस्या से ग्रीर दृढ निश्चय से प्रभाविन होकर स्वय यहा ग्राए थे। गगोशी वा मिटर शीना- धिक्य के कारण छ मास तक वन्द रहता है। मूर्ति को पण्डे मुख्या में के जाते है, ग्रीर वहा इसकी स्थापना कर देते है। यही पर गगाजी की पूजा छ मान नक होती रहती है। यह स्थान वडा एकान्त है। वातावरण बडा शान्त ग्रीर ग्राध्यादिमक है। तपश्चर्या के लिए वहुत उत्तम स्थान है।

केदारनाथ की यात्रा-भटवाडी के पास मत्ला नामक एक न्यान है। यहा से केदारनाथ को राम्ता जाता है ग्रन व्यासदेवजी ने भट्याटी जाने का निय्चय किया। गगोत्री से प्रस्थान करके ये मुख्या पहुचे। मुख्या पण्टो का गाव है। यहा मार्कडेय का मदिर है। यहा पर मार्कडेय ऋषि न तपन्या की थी। मानग ऋषि ने भी यही ग्राकर सावना की थी। इसलिए उसका नाम मुखवा पड़ा है। उसे मुखीमठ भी कहते हैं। यहां के बाह्मण सन्तो-महात्मात्रों की पूत्र नेवा तथा ग्रादर करते हैं उनिता कोई न कोई मन्न यहां निवास किया ही करते हैं। व्यानदेवजी ने मार्गें ये के मदिर में एक रात तथा एक दिन व्यतीन किया । दूसरे दिन हमिल, भाला, मुक्यी, लुहारीनाग, गंगनाणी, भटवाडी होते हुए मल्ला पहुंचे। यहां से बूटा केवार लगभग ३० मील है। मार्ग में छोटी-छोटी कई चहियाँ ग्रांनी है। ब्यासदेवजी ने २० मी न के मार्ग को दो दिन में नय किया। इस मार्ग में देवदार के बहुत वडे-बडे पेट है। यहा एक वटा भारी वन है। इसमे आबादी बहुत कम है। व्यानदैवजी ने बूढे केदोर पहुचकर एक दिन विश्राम किया। यहा पर धर्मनदी का गगाजी के साथ सगम होता है। बूढे केदार का मदिर बज मुन्दर है। एक वर्मगाला बनी हुई है। अत्यन्त मनोरम न्यान है। यहा ने एक मार्ग घुनू से त्रियुगीनारायण होकर केदारनाय जाता है। इस मार्ग ने चटाई बहुत है। दूसरा मार्ग गुप्तकां की स्रोर से होकर जाता है। यह मार्ग कुछ तस्वा है. विस्तु चढाई नहीं है। जगल का मार्ग है। ग्रावादी वहुत कम है। किसी-किसी स्थान पर तो विन्तुन ही श्रावादी नहीं है। इसलिए इधर में यात्री बहुत कम जाते हैं। व्यागदेवजी ने उसी मार्ग से जाने का निञ्चय किया। इस मार्ग ने जाने वाला मायी व्यामदेवजी को बोर्ड नही मिला। वर्षा की ऋतु थी इसिनिए यात्रियों का ग्राना-जाना कम हो गया था। नगभग ७-इ मील चल पाएँ थे कि एक स्थान पर दो पगडण्डिया दिलाई दी। अब उनके सामने एक कठिन समस्या उपस्थित हो गई। वे यह निज्यत नहीं कर पाए कि कीन से मार्ग से जाना चाहिए। व्यामदेवजी ने जिस रास्ते ने जाना निय्चय किया उसमे जगली जानवर वहुत रहते थे। मार्ग वडे वीहड जगल मे ने गुजरना था। कोई यात्री उस मार्ग मे व्यासदैवजी को नही मिला। कुछ द्री पर व्यासदेवजी को एव छोटी सी नदी दिखाई दी। इसके ऊचे किनारे की एक नोह मे पत्ते ग्रादि विद्याकर ग्रपना ग्रासन लगा लिया, ग्रौर यही पररात्रि व्यतीत करने का निब्चय किया। योडी लाद्य सामग्री व्यासदेवजी के पाम थी। इसे ही कई दिनों से खा रहे थे। ग्राज भी इसमें में थोडा खाया। जिस वस्त्र मे यह भोजन सामग्री वंबी हुई थी उसे ही पन्तो पर विद्या कर सो गए। इस खोह में ग्राने के लिए दो मार्ग थे। एक मार्ग वडा था जिनसे ग्रादमी श्रासानी से भीतर बैठ कर प्रवेश कर सकता था, किन्तु द्सरा केवल एक फुट चौडा

था। व्यासदेवजी ने दोनो ही द्वार भली प्रकार मे बन्द कर दिए थे। चारो ग्रोर जब अघेरा छा गया तब वह सो गये।

चोर-भालू से रक्षा—श्रधंरात्र मे छोटे मार्ग से किसी ने उनके नीचे विछे हुए वस्त्र को पीचना प्रारंभ किया। व्यासदेव श्रधंरे में ही कुछ श्रावाज करके उसे भगाने का प्रयत्न करने रहे। जब उसने वडे-बडे वालो का उनके पावो पर स्पर्श किया तव मालूम हुश्रा वह कोई हिस्य-जीव है, श्रत उसे भगाने के लिए कई दियासलाइया जलाई श्रीर पुन श्रात्मरक्षार्थ बहुत-मी दियामलाइया जला कर उसके ऊपर फेंक दी। दिया-मलाइयो के प्रकाश में उन्हें पता लगा कि यह भालू था। श्रीन्न एकदम भालू के सारे बालों में फैल गई। वह जितना ही इघर-उघर भागकर उसे बुक्ताने का यत्न करता था उनना ही वायुवेग में श्रीन्न उसके शरीर पर फैलती गई। उसका सारा शरीर भुलम गया श्रीर श्रव उसने एक अची-मी पहाडी पर में नीचे नदी में छलाग लगा दी। ब्यासदेवजी श्रपनी गोह में चले गए किन्तु नीद नही श्राई। सारी रात बैठकर ही ब्यानीत की। उन्हें भालू के भुलम जाने पर परचात्ताप हो रहा था लेकिन उनका कार्य गुछ श्रनुचित न था। जो गुछ भी किया वह श्रात्मरक्षार्थ था।

दिशा-भ्रम--प्रात काल उन्हें कुछ समक्ष नही भ्राया कि किथर जाना चाहिए। मार्ग भूल गए थे। दिशा की भी भ्राति-सी होगई थी। केदारनाथ किस दिशा में है इसका भी ज्ञान नहीं रहा था, वरना वहीं वापिस लीट जाते। पास ही एक पहाडी थी, उस पर चढकर आवादी का पना लगाया, किन्तु कही मनुष्य का पता ही न चना। एक पगुण्डी-सी पास से ही जा रही थी। उसी पर चल दिए। मध्यान्ह तक उस पहारी के शिखर पर पहुच गए। उसके आगे एक और पहाडी दृष्टिगोचर हुई, किन्तु आबादी कही नाम-मात्र को भी दिखाई न दी। बहुत थक गए थे अत धूप मे ही मा गए। बड़ी गहरी नीद आई। बहुत देर तक सोते रहे क्योंकि गतरात्रि को भालू क माने के कारण मो नहीं सके थे। सायकाल हो चला था मन मास-पास से लक्डिया एकत्रित करके धूनी रमा कर बैठ गए। रात को अत्यधिक वर्षा हुई थी और स्रोले भी बहुत पटे थे। नपरवी युवक ने धूनी के सहारे जैसे-तैसे रात काटी। प्रात काल उठ-कर सामने एक पहाजी दिखाई दी, उसी पर चढना प्रारम्भ कर दिया श्रीर दोपहर तक उसके जिखर पर पहुच गए। यहां में चारों श्रीर दृष्टिपात करने पर सुदूर पहाड़ी के नीचे धृश्रा-मा दिखाई दिया। यह धृश्रा दूर तो बहुत था किन्तु भूले-भटके युवक के लिए यह एक श्राजा की किरण थी, उन्होंने उसी दिया की श्रोर चलना प्रारभ किया। मार्ग में एक हिरणों और वारहमीगों का वड़ा भुण्ड दियाई दिया। इसे भगाने का व्यास-देयजी ने वटा प्रयत्न किया किन्तु वे वही टटे रहे, अत उन्होंने अव दूसरे मार्ग से जाना प्रारंभ किया। उस भ्रोर कोई पगउण्डी न थी। बड़े घने बृक्षो के बीच मे से जैसे-तैसे निकले । कुछ दूर जाने के बाद एक बहुत बटी चट्टान दिखाई दी । उसी पर चढकर विश्राम करने का बिचार किया किन्तु इसके नीचे से बडी दुर्गन्ध श्रारही थी । नीचे भक्तकर देयने से माल्म हुग्रा कि यहा पर बहुत हिंदुया, माम तथा खालें पड़ी हुई है। द्यारादेवजी ने प्रमुमान लगाया कि यहा परकोई हिम-जीव श्रवश्य होना चाहिए जिसने इन जानवरों को मारा है। उधर-उधर देया श्रीर खूब कोर किया, पत्थर भी उठा-उठा कर नीचे फेंके। पत्थरों की चोट याकर एक बाघ मामने श्राया श्रीर उसने जोर-जोर से गर्जना प्रारभ किया । उस वन के सव जीव-जन्तु भयभीत होगए । व्यासदेवजी उस चट्टान के ऊपर खड़े होकर बाघ में लड़ते रहे । वह थोड़ी देर बाद नीचे उनरकर कही चला गया । व्यासदेवजी सूर्यास्त से किचित् पूर्व ग्रावादी में पहुच गए । इस ग्रावादी का नाम घुन्चट्टी था । यह केदारनाथ के मार्ग पर ही थी । मार्ग का ठीक-ठीक पता न चल सकने के कारण व्यासदेवजी तीन दिन तक भूखे, प्यासे तथा हिसक जानवरों में लड़ते हुए भटकते रहे । इस प्रकार लगभग ४० मील चले होगे । घुनू में त्रियुगीनारायण केवल १४ मील ही था । यदि सीधा मार्ग मिल जाना नो यह एक दिन में पटुच सकते थे । किन्तु मार्ग भूल जाने के कारण इस कठिनाई का सामना करना पड़ा । किन्तु इससे इन्हे एक वड़ा लाभ हुग्रा । जगली हिंस्र-जानवरों का मुकाविला करते-करने ग्रव ये इनसे सघर्प करने में सिद्धहस्त ग्रीर निपुण हो गए थे । ग्रव वे इन जानवरों को कुत्ते विल्ली के समान समभने लग गए थे । वन में विल्कुल निर्भीक भाव में विचरते थे । घुनूचट्टी पर व्यासदेवजी ने पूरा एक दिन विश्राम किया क्योंकि वनों में ट्यर-उधर भटकने के कारण ग्रत्यिक थक गए थे ।

त्रिगुणीनारायण-गमन-यहा से त्रिगुणीनारायण १४ मील था किन्तु चढाई वडी विकट थी। व्यासदेवजी एक ही दिन में इस चढाई को पार करके त्रिगुणीनारायण पहुच गए ग्रौर वहा धर्मशाला मे विश्राम किया। यहा पर त्रिगुणीनारायण का विशाल मदिर है। मूर्ति की नाभि में से गगा और सरस्वती की दो धाराए निकल रही हैं। यहा पर कई जल के कुण्ड भी है। एक छोटा-सा वाजार है। एक यज्ञाला है जिसमे सदा ग्रग्नि प्रज्वलित रहेती है। ऐसी किवदन्ती प्रसिद्ध है कि यहापर शकर श्रीर पार्वती का विवाह हुआ था। ब्रह्मकुण्ड तथा विष्णुनीर्य भी यही पर है। पास ही हरिदा नदी वहती है। इस स्थान से केदारनाथ १२ मील था। ग्रव व्यामदेवजी ने केदारनाथ के लिए प्रस्थान किया। दो घण्टे मे गौरीकुण्ड पहुच गए। यह मन्दाकिनी नदी के तट पर है। यहा पर दो जल के गर्म कुण्ड है। सायकाल व्यासदेवजी केदारनाथ पहुचे। यहा पर पत्थर का बना हुग्रा एक विञाल मदिर है। इससे दो फर्लाग पर भैरों का मदिर है। इससे कुछ ही दूरी पर एक स्रोत है जिसमे से मन्दाकिनी निकली है। केदारनाथ के मदिर से पाच या छ मील की दूरी पर एक ब्रह्मगुफा है जिसमे ब्रह्माजी ने यज्ञ किया था। केदारनाथ से एक मार्ग भृगु प्य को जाना है। यह सदा हिमाच्छादिन रहता है। ऐसा कहा जाता है कि शकराचार्यजी महाराज ने इसी पथ पर गमन किया था और फिर वहा से नहीं लौटे थे। यह किवदन्ती प्रसिद्ध है कि लोग यहा जाकर प्राण त्यागने मे वडा पुण्य समभते थे। व्यासदेवजी ने केदारनाथ मे एक सप्नाह ठहर कर सारे दर्जनीय स्थान देखे। केदारनाथ ११७०० फीट की ऊचाई पर है। यहा जीत बहुन होता है। वायु वहुत ठण्डी चलती है। ग्रास-पास के सारे पर्वत वर्फ मे ढके रहते है, इसलिए यात्री यहा वहुत कम ठहरते हैं।

बद्रीनारायण की यात्रा—अब ब्रह्मचारी व्यासदेवजी ने बद्रीनारायण के लिए प्रस्थान किया। प्रात केदारनाथ से चलकर दोपहर को नारायण कोटी पहुच गए। यहा मे गुप्तकाशी केवल दो मील है अत प्रथम उसे देखने गए। यहा पर एक कुण्ड है। गगा और यमुना इस कुण्ड के नीचे से गुप्तरूपेण इसमे गिरती है। यहा शिवजी का एक मिदर है और कुछ दुकाने भी है। यहा पर व्यासदेवजी ने एक दुकान पर दूध

पीया था। उनके पास ही एक युवक सड़ा था जिसने ब्रह्मचारीजी को दूध के दाम चुका कर शेप रुपये रुपते हुए ध्यानपूर्वक देखा था। इसका नाम कर्मसिंह था। यह ध्यानदेवजी के पाम ग्राया ग्रीर कहा कि वह भी बद्रीनारायण जा रहा है। एक पगडण्डी से जाने मे मागं छोटा पडना है। श्राप भी इसी मार्ग से चले। व्यासदेवजी पगटण्डी से चलने को नैयार हो गए। कर्मसिह के मन में क्या पाप छिपा था इसे वे समक नही सके। कर्मांसह ग्रार उसका साथी फूलसिंह व्यासदेवजी को मन्दाकिनी गगा के किनारे एक घने जगल मे ले गए और उनका रुपया छीनने लगे। व्यासदेवजी इनसे भयभीत होने वाल व्यक्ति न थे। उनमे ग्रह्मचर्य का ग्रोज, वल ग्रीर शक्ति थी। जब जगली हिस्त जानवरों से भी वे कभी भयभीत नहीं हुए, जहां कोई जानवर मिला वहीं उसे पछाउ देते थे, तो भला उन दुबले-पनले शवितहीन पहाडी व्यक्तियो से भयभीत होने का ग्रवसर ही तया था । कर्मसिंह ने जब यह देखा कि व्यासदेवजी रुपया चुपचाप नहीं देगें तब उसने छीना-भपटी प्रार्भ करने की कोशिश की ग्रीर ग्रपनी सोटी व्यासदेवजी के सिर पर मारी। किन्तु व्यासदेवजी ने स्कूल मे लाठी गतका चलाना सीखा था स्रीर यहानयं के वन से वह संस्पन्न थे, यन तुरन्त उन्होंने वार को रोककर अपनी सोटी कमंसिट की कनपटी पर ऐसे जोर से मारी कि वह बेहोश होकर गिर गया। यद्यपि वह पापी या और चौर या किन्तु व्यासदेवजी पाप से घृणा करते थे पापी से नही, ग्रन कर्मानह को बेहोश देसकर उन्होंने उसके सिर पर ठण्डे जल के छीटे दिए। बडे प्रयत्न ने उने होश दिनाया । यह सब देखकर फूलिसह नो भाग गया । व्यासदेवजी ामंनिह यो वाधकर ग्रोग्वी मठ ने गए ग्रोर वहां उसे पुलिस के मुपूर्व कर दिया। पुनिस बालों ने उनका बटा सम्मान किया।

श्रोखी मठ ने निवाम-ज्यागदेवजी यहा पर तीन दिन ठहरे। श्रोखी मठ मे श्रीकेटारनाथूजी की गद्दी है। गद्दी पर पचमुखी स्वर्ण मुकुट रखा रहता है। यहां का मदिर बटा बिकाल है। उसके पास ही राजा मान्याना की काले पत्थर की सूर्ति है श्रीकारेय्वर के मदिर मे श्रनेक मूर्तिया है। यह स्थान बड़ा सुन्दर, मनोहर श्रीर दिव्य है। अब ब्यासदेवजी ने यहा से पस्थान किया। मार्ग में कई चिट्टियों के पास से होते हुए वाणियाकुण्ट पहुचे । यहाँ से त्गनाथ केवल दो मील था । यहाँ पर एक दिन ठहरकर गोपैस्वर भगवान् के दर्शन करने गोपैस्वर गए। यहा मे चमोली गए। इसे लालसागा भी कहते है। अलगतन्यागगा के किनारेपर है और बड़ा मुन्दर स्थान है। यहां से बद्री-नारायण ८५ मील रह जाता है। यहा पर पुलिस की चौकी है और डिप्टी कलक्टर भी यहा रहना है। डाकराना और अरपनाल भी यहा पर है। यहा पर एक दिन ठहरकर पीपल कोटी पहुचे और फिर गुरुट गुगा और पाताल गुगा की बड़ी कठित चढाई चढते के बाट ज्योतिमठ पहुँच। मार्ग मे सैकडो यातियों से समागम हुत्रा किन्तु व्यासदेवजी जन-सपर्छ मे बचकर दूर भागते थे। उनको यात्रियो मे कोई प्रयोजन नही था। वे विचार और चिनन करते हुए अफेल ही चलते थे। ज्योनिर्मठ मे नारायण का मदिर है। शीनकाल में बढ़ीनारायण की प्रतिमा को यहा पधराया जाता है श्रीर यही उसकी पूजा होती है। उसमें अने कमदिर है। शकराचार्यजी महाराज ने जब भारतवर्ष में चार मठो की स्थापना की थी तब उत्तर में ज्योतिमंठ की स्थापना की थी। बद्रीनारायण यहां से फेयल १६ मील रह जाता है। यहां से प्रातः चलकर विष्णुप्रयाग पहुंचे। यहा

पर ग्रलखनन्दा गगा श्रौर घौली गगा का सगम है। इस सगम पर स्नान का वडा माहात्म्य समभा जाता है। केदारनाथ ग्रीर वद्रीनाथ की यात्रा के मार्ग मे पाच प्रयाग ग्राते है —देवप्रयाग, कर्णप्रयाग, रुद्रप्रयाग, नन्दप्रयाग तथा विष्णुप्रयाग। यहा से चलकर पाण्डुकेश्वर पहुचे। इस स्थान पर योगवद्री ग्रीर वासुटेव भगवान् के मदिर है। ऐसा प्रसिद्ध है कि पाण्डुराजा ने यहा पर अपनी दोनो रानियों कुन्ती और माद्री के साथ निवास किया था। इसी कारण से यह स्थान पाण्डुकेञ्वर कहलाता है। हनुमान चट्टी से बद्रीनारायण तक लगातार कठिन चढाई है। बद्रीनाथ से एक मील इंघर कचन गगा है। इसके स्रागे स्रलखनन्दा गगा का पुल पार करके ऋषिगगा स्राती है। इसके पश्चात् बद्री-नारायण का बाजार प्रारभ हो जाता है। वाजार केग्रन्तिम भाग मे वद्रीनारायणजीका मदिर है। यहा पर घर्मशाला मे व्यासदेवजी ठहरे। वद्रीपुरी चौथा घाम है ग्रीर यह म्रलखनन्दा गंगा के किनारे मन्दराचल पर्वत पर वसा हुम्रा है। यहा के मकान प्राय पक्के दो मजले बने हुए है। इसमे लगभग ढाई-तीन-सी मकान ग्रीर दूकानें है। जीवन के लिए सभी ग्रावश्यक वस्तुए प्राय मिल जाती हैं। वद्रीनाथजी का मंदिर वडा विशाल है। यह लगभग ४५ फीट ऊँचा है। ध्यानावस्थित वद्रीनारायण की मूर्ति काले रग की है। इसके मस्तक पर वडा चमकदार हीरा लगा हुग्रा है। श्री शकराचार्यजी महाराज ने इस मूर्ति को नारद कुण्ड से निकलवाकर इस मदिर मे स्थापित किया था। मदिर के सामने ही अलखनन्दा गगा वहती है। मदिर और गगा के वीच मे गर्म जल के कुण्ड हैं। मदिर के उत्तर की ग्रोर ब्रह्मकपाल नामक जिला है। यहा स्राकर यात्री पिडदान करते हैं। इससे थोडी-सी दूर मोता का मदिर है। यहां पर प्रतिवर्ष मेला लगता है। इसके थोडा श्रागे माणागाव है। यही पर वह व्यासगुफा है जिसमे वैठकर श्री व्यास भगवान् ने महाभारत और १८ पुराणों की रचना की थी। माणागाव से ही कैलाश तथा मानसरोवर को मार्ग जाता है। ऋषिगगा के किनारे-किनारे जाने से स्रागे वडे-बड़े विशाल पर्वत वर्फ से ढके रहते है, इसलिए आगे जाने का मार्ग वन्द हो जाता है। यहा पर ब्रह्मकमल वहुत होते है जिनसे वडी मधुर सुगध स्राया करती है। बद्रीनाथ में ४ मील लम्बा और डेढ मील चौडा मैदान है। श्रावण तथा भाद्रपद मासो मे विभिन्न प्रकार के पुष्प खिलते है किन्तु इस मैदान में वृक्ष नहीं हैं। वद्रीनाथ की ऊचाई दस हजार तीन सौ फीट है। गगोत्री की ग्रपेक्षा यहा वर्षा ग्रधिक होती है। यहा पर ब्रह्मचारी व्यासदेवजी दो मास तक रहे थे। वद्रीनाथ के श्रास-पास श्रीर भी कई तीर्थ-स्थान हैं। इनमे शतप्थ श्रीर स्वर्गारोहण मुख्य है। व्यासदेवजी ने इन तीर्थों की यात्रा करने का भी सकल्प किया। एक अन्य महातमा भी इनके साथ चलने के लिए तैयार होगए किन्तु वह इन तीर्थों का मार्ग नही जानते थे अत किसी जानकार की खोज में इधर-उधर फिरते रहे। ग्रन्त में माणागाव का ही एक व्यक्ति व्यासदेवजी के साथ जाने के लिए तैयार हो गया।

## शतपथ श्रीर स्वर्गारोहण की यात्रा

वसुघारा-गमन—ब्रह्मचारी व्यासदेव, शिवानन्द गिरी तथा माणागाव के धर्मसिंह ने चार-पाच दिन का भोजन साथ लेकर प्रस्थान किया। माणागाव से मार्ग जाता था। इस गाव से थोडी दूर वसुधारा है जो एक बहुत ऊचे पहाड से निकलती है। इसके पास ही सरस्वती गगा का अलखनदा गंगा से संगम होता है। इसके पास

ही अलकापुरी का पहाड है। इसका रग धूसर है। यहा से थोडी-सी दूरी पर हिमाच्छादित हिमालय पर्वत दिखाई देने लगता है। वद्रीनाथ से जतपथ केवल १८-१६
मील ही था। वद्रीनाथ से प्रस्थान करके सर्वप्रथम माता मूर्ति के मदिर के दर्शन किए
ग्रीर उसके वाद वसुधारा पहुचे। कुछ मील तक यात्रा करने के पश्चात् एक गुफा मे
विश्राम किया क्योंकि दूसरे दिन का सारा मार्ग वर्फ से ढका हुग्रा था। उसलिए इस
गुफा मे एक दिन तक विश्राम करना उचित समझा। ग्रागामी दिवस एक ग्रत्यन्त
वेगवती नदी को वडी कठिनाई से पार किया। व्यासदेवजी तथा इनके दोनो साथियो
ने परस्पर एक दूसरे के हाथ पकडकर इस नदी मे प्रवेश किया। यहा से ग्रागे का
मार्ग चारो श्रोर हिमाच्छादित था। ग्रलखनन्दा सारी वर्फ से ढक गई थी ग्रीर वर्फ
मे ही लुप्त-सी हो गई थी। उसका कही कोई चिह्न भी दृष्टिगोचर नही हो रहा था।
व्यासदेवजी के साथी कुछ ग्रागे निकल गए ग्रीर ये पीछे रह गए। व्यासदेवजी को
वर्फील मार्ग पर चलना था। सर्वत्र ही वर्फ विछी हुई थी।

वर्फ की दरार में फंसना--वर्फ मे एक स्थान पर एक दरार फट गई थी, किन्तु इसके ऊपर पतली-सी एक तह वर्फ की छा गई थी। व्यासदेवजी को इस दरार का पता न चल सका ग्रीर वे वर्फ के ऊपर से चलते-चलते इस दरार मे फस गए ग्रीर कटिभाग तक वर्फ के नीचे चले गए। वडे घवराए। ज्यो-ज्यो वर्फ से वाहिर निकलने का प्रयत्न करते थे त्यो-त्यो ग्रधिकाधिक नीचे डूवते जाते थे। वर्फ के कारण उनका शरीर निञ्चेष्ट-सा होता जा रहा था। उनके पर वर्फ मे विल्कुल दव गए थे। ऊपर निकलने की गक्ति उनमे न रही थी। वर्फ के ग्रन्दर से ही उन्होने ग्रपने साथियो को जोर-जोर से आवाजें लगाई, पर वे कुछ दूर निकल गए थे अत वे सुन न सके। थोडी दूर जाने के वाद उन्होंने देखा कि व्यासदेवजी उनके पीछे नहीं भा रहे हैं, तो वे घवराए ग्रीर पीछे लीटे। जब वह वर्फ की दरार के पास पहुचे तब उन्हें व्यास-देवजी की श्रावाज मुनाई दी। वर्मसिंह भाग कर श्राया पर ज्योंही वह व्यासदेवजी के समीन पहुचा त्योही वह भी वर्फ में धसने लगा। तव वह ठहर गया। उसने अपनी धोनी उतार कर ब्रह्मचारीजी के पास दरार के नीचे फेकी किन्तु वह नीचे तक नही पहुची। फिर उस धोती के साथ एक वडी रस्सी वाध कर नीचे लटकाई ग्रीर जब व्यासदेवजी ने इसे पकड लिया तव धर्मसिंह ग्रीर शिवानन्द ने खीच कर उन्हें ६-१० फीट गहरी वर्फ मे वाहिर निकाला। इनके शरीर मे उष्णता का ग्रभाव-सा होगया था, ग्रीर वित्कुल निञ्चेष्ट हो गए थे। दोनो साथियो ने मिलकर इनके गरीर को दवाया श्रीर श्रुपने हाथों से रगडा, तव कही इसमें गर्मी श्राई। यदि ये दोनो व्यास-देवजी को वाहिर न निकालते तो ये भी पाण्डवो के समान ही वर्फ मे गल जाते । जैसे-तैमे ये तीनो शतपथ के पास जाकर एक गुफा मे ठहरे। सर्वत्र वर्फ ही वर्फ थी ग्रत वहा लकडी नाममात्र को भी न थी। इसलिए ग्रन्नि जलाकर शरीर को उष्ण करने का कोई साधन वहा न था। जिन स्थानो पर वर्फ नही थी उनको तथा उनके ग्रासपास के सरोवरो को इधर-उधर भ्रमण करके देखा। पाण्डवो मे से जो-जो इस वर्फ मे गल गया था उस-उसके नाम से यहा पर ताल बने हुए है। किसी ताल का नाम भीमतौल तथा किसी का अर्जुनताल तथा किसी का द्रीपदीताल आदि था। स्वर्गारोहण विष्णु-ताल से लगभग ३ मील था, भ्रीर यही से ऊंपर जाने के लिए सीढिया बनी हुई थीँ। किन्तु वर्फ के कारण स्वर्गारोहण पर चढना ग्रत्यन्त किन था। मार्ग भी दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था। गतपथ के मार्ग हिमाच्छादित थे। तीन दिन तक विण्णुताल में रहे। यहां के सीन्दर्यपूर्ण दृश्य का ग्रवलोकन करके वडा ग्रानन्द-लाभ किया। गत अव के दाई ग्रोर स्वर्गारोहण के पार गोमुख है, ग्रौर वाई ग्रौर केदारनाथ। इन तीनों ग्र्यात् स्वर्गारोहण, केदारनाथ ग्रौर गोमुख के वीच हिमालय स्थित है। महाराजा युधिष्ठिर ने स्वर्गारोहण की सीढियो पर चढकर ऊपर हिमालय पर जाकर या तो ग्रपने गरीर को वर्फ में गला दिया होगा या स्वर्गलोक को पधार गए होगे। गेप पाण्डव तो गतपथ की हिम में ही गल गए थे। व्यासदेवजी तथा उनके साथी प्रान काल ही यहां से लौट ग्राए। मार्ग देखा हुग्रा ही था। इसके ग्रितिरक्त ग्रव उतराई भी थी, ग्रत कोई कष्ट प्रतीत नहीं हुग्रा ग्रौर सायकाल ४ वजे के लगभग वद्रीनाथ पहुच गए। यहा पर गर्म कुण्ड में स्नान करके सारी थकावट दूर हो गई। व्यासदेवजी योग द्वारा ग्रात्म-साक्षात्कार करना चाहते थे, इसीलिए किसी ग्रमुभव प्राप्त वडे योगी की ग्वोज में इस प्रकार की महान् किठनाइया उठाई, किन्तु उन्हें किसी भी योगी के दर्गन न हो सके।

म्रलखनन्दा के किनारे गुका मे म्रभ्यास—स्यासदेवजी ने म्रलखनन्दा के पुल को पार करके एक गुका को घास-फूस विछाकर निवास के योग्य बना लिया और उसमें योगाभ्यास करने लगे। यह स्थान ऋत्यन्त एकान्त था। नित्य कई-कई घण्टो तक यहा पर व्यासदेवजी साधना करते रहे। ये क्षेत्र से भोजन लेने नही जाते थे। स्वय ही गुफा के वाहिरभोजन वनाया करते थे। एक दिन कलकत्ते के मारवाडी सेठ वृजमोहन व्यासदेवजी से मिलने ग्राए । ब्रह्मचारीजी प्रात ६ वजे से १२ वजे तक ६ घण्टे एक ही ग्रासन प्र बैठ कर साधना किया करते थे। सेठ वृजमोहन जब ग्राए तब ग्रभी केवल ही बजे थे। व्यासदेवजी समाधिस्थ थे। सेठजी उनकी प्रतीक्षा करते रहे। जब व्यास-देवजी समाधि से उठे तव सेठ ने उनके चरण पकड लिए ग्रीर प्रव्न किया कि ग्रापके सासारिक सुख ग्रौर समृद्धि, भोग ग्रौर विलास के परित्याग का क्या कारण है ग्रौर किस देव तथा गंक्ति की उपासना ने ग्रापको इस महान् त्याग के लिए प्रेरित किया है। व्यासदेवजी ने उत्तर दिया कि सर्व सृष्टि के स्रष्टा, धर्ता, सहारकर्ना, पालक-पोपक भीर रक्षक भगवान् ही मेरे परमदेव है। मै उन्ही की उपासना भ्रोर भिक्त करना हू। सर्वदु खहर्ता वे ही भगवान् है। इन्हीं की प्राप्ति के लिए मैं विरक्त होकर सार्घना कर रहा हू। इस समय मैं किसी विद्वान् आत्मवित् योगी की खोज मे इस हिमालय मे घूमता फिर रहा हू जिससे अन्तर्यामी भगवान् से मिलने का सीधा और छोटा मार्ग उपलब्ध हो सके। व्यासदेवजी के उत्तरों से सेठजी वडे प्रभावित हुए। उन्होंने ब्रह्म-चारीजी को भोजन के लिए ग्रामित्रत किया किन्तु इन्होने स्वीकार नहीं किया क्योंकि ये नगर मे नही जाते थे। स्वय ही भोजन वनाकर खा लिया करते थे। दूसरे दिन सेठजी श्रपनी पत्नी श्रौर वच्चो को साथ लेकर साढे ग्यारह वजे भोजन लेकर व्यासजी की गुफा मे उपस्थित होगए। व्यासजी ने स्रौर सेठजी के परिवार ने इकट्ठे बैठकर भोजन किया। व्यासदेवजी ने सेठ तथा उसके परिवार को वडा सारगिमत उपदेश दिया। सेठजी ने व्यासदेवजी को ५०० रुपये भेट करना चाहा । वहुत ग्रनुनय ग्रीर विनय की। किन्तु उन्होने यह धनराशि लेना स्वीकार नही किया क्योकि वे वडे विरक्त थे ग्रीर सच्चे साधु थे।

### पुन सप्तसरोवर श्रागमन

व्यामदेवजी बद्रीनाथ के पट बन्द होने नक तो उस गुफा में साधना करते न्हें, किन्तु पट बन्द होने पर शीत की मात्रा ग्रत्यिवक हो जाती है ग्रत वे वहा से नीचे उत्र ग्राए। किसी योगी की उपलब्धि न हो सकने के कारण वे वहे निराश थे। मार्ग मे श्रीनगर चट्टी पर दो दिन ठहरकर वहा से नीसरे दिन ऋषिकेश पहुच गए। यहा पर एक साधुँ की कुटिया खाली थी, इसीमे कुछ दिन निवास करने के पञ्चात् सप्तसरोवर पहुँच गए। यहा पर साधना करने के लिए एक कुटिया बना ली। यहा पर तीन-चार महात्मा ग्रीर भी रहते थे। यहा मे लगभग ग्राध मील की दूरी पर मन्त रामदास एक पैर खडे होकर तपस्या कर रहे थे। व्यासदेवजी इनसे सुपरि-जित थे। पहिले जब ये मानसरोवर मे रहकर नपस्या कर रहे थे तब भी ये मन्त उसी प्रकार से एक पैर पर खड़े होकर नपस्या कर रहे थे। व्यासदेवजी प्राय इनके सत्सग मे जाया करते थे। रामदासजी की एक शिष्यों थी। इसका नाम रामप्यारी या । यह नित्यप्रनि ग्राने नौकर के साथ इनके लिए भोजन लाया करती थी । नित्य गर्ज-गर्ज घण्टे तम यह देवी उनके पास बैठी रहती थी। इनका पारम्परिक गमर्ग बहुत बढ गया। व्यासदेवजी ने उसके अनीचित्य के बारे में सन्त रामदासजी को बहन नमभाया । मर्यादाहीनना के दोषो को दिखाया । सन्तो के उच्च आदर्श का उन्हें बोब करवाया। उनकी अपनी कठोर तपस्या की स्रोर उनका ध्यान स्राक्षित किया । उनकी भूल का अनेक ऐतिहासिक तथा पीराणिक उदाहरण देकर दिग्दर्शन कराया । पर उनके कान पर ज्न रेगी । उन पर किचिन्मात्र भी इन उपदेशों का ग्रमर नहीं हुग्रा। परिणामस्वरूप कुछ दिनों बाद यह सुनने में ग्राया कि सन्त रामदास ने रामव्यारी से विवाह कर लिया है ग्रीर वे दोनों पेशावर चले गए है। रामप्यारी पेशावर की एक धनाह्य विधवा महिला थी। हरिहार मे भित्रपूर्वक अपना शेष जीवन ब्यतीन करने के लिए आई थी। ब्यासदेवजी को जब रामदास के पनन का पना चला तो वे उससे मिलने गए। उनकी दशा देखकर उन्हें बहुत धमगाया यौर फटकारा। उनकी वटी भत्मेंना की "क्या त्रापकी १६ साल की तपस्या का यह परिणाम है ? उतनी कठोर तपस्या के पब्चात् भी आप हाड-मास के पुनले के प्रलोभन को रोक न सके। हीरे के श्रम से काचमणि पर ही मुख होगए। श्रापके उस पतन ने श्रापके सब सेवको श्रीर भवतो का सिर नीचा कर दिया है। श्रापने हमें कहीं मह दिखाने के योग्य भी नहीं छोड़ा। आप दोनों को इस पवित्र भूमि को छोटार गही प्रन्यत चले जाना चाहिए।" मन्त रामदास लिजत होकर व्यामदेवजी की भन्मना को च्यचाय नीचा सिर करके सुनते रहे। ब्यासदेवजी दु खी होकर वहा ने नीट ग्राए।

पुन उत्तरकाशी गमन—सन्त रामदासजी के पतन का व्यासदेवजी के हृदय पर वटा आयात पहचा था और अब उनका मन हरिद्वार मे नहीं लगता था। इमिलए वे यहां में देहरादून, मसूरी, धमोटी, कानाताल और धरासू होते हुए उत्तरकाशी पहुच गए। यहा पर तेखला में जाकर एक गुफा में निवास करने लगे। व्यासदेवजी गायत्री-जाप के महत्व को पूव समभते थे। हमारी सभ्यता और संस्कृति का मूल आधार वेद है। गायती चारों वेदों का सार है। यह वेद माता है। योगीराज भगवान् कृष्ण ने इसी मत्र के लिए कहा है "गायत्री छन्दसामहम्"। इसलिए व्यासदेवजी ग्रपनी गुफा में ग्रव दस हजार गायत्री-जाप प्रतिदिन करते थे। वे चार मास तक वरावर जाप करते रहे। केवल खाद्य-सामग्री लेने के लिए उत्तरकाशी जाते थे। ग्राटे में नमक डालकर केवल दो मोटी रोटिया वनाकर एक समय दोपहर को खा लेते थे। प्राय मीन ही रहते थे। जव कभी ग्राटा, नमक ग्रीर घी लेने वाजार जाते थे तभी थोडा दुकानदार से वोलते थे। वडी उपराम-वृत्ति से रहते थे। सन्त रामदासजी के पतन से उनके चित्त को वडी ठेम पहुची थी ग्रीर इसीलिए वडे उदासीन से रहा करते थे। इधर वडी खोज के पश्चात् भी कोई योग्य योगी न मिल सका था इसलिए भी वडे निराग हो गए थे।

पुन हरिद्वार गमन—वेदव्यासजी दीवाली तक उत्तरकाशी मे रहे। उसके वाद टीहरी के रास्ते से ऋषिकेश ग्रागए ग्रीर शीतकाल मे वीर्भट्ट मे रहने का विचार किया। यहा से व्यासदेवजी स्वामी स्वरूपानन्द के दर्शन करने कनग्वल गए। किन्तु उनके दर्शन न हो सके क्योंकि वे कही अन्यत्र गए हुए थे। जब वे हर-की-पीडी पर स्नान कर रहे थे तब वहा पर उन्हें स्वामी हितानन्दजी के दर्शन हुए। व्यासदेवजी ने इनके चरण स्पर्श किए। स्वामीजी ने उनकी वढी हुई जटाए देखकर आञ्चर्य किया और पूछा, "किसी योगी का समागम लाभ हुआ या नहीं?" व्यासदेवजी ने वडा निरागापूर्ण उत्तर दिया। स्वामीजी ने वहुत स्नेह और प्यार से व्यासदेवजी का आलिगन किया और मोहन आश्रम में चलने के लिए आदेश दिया और कहा कि वहा पर वार्तालाप करके तुम्हे ठीक मार्ग वताऊगा । व्यासदेवजी स्वामी हिनानन्द के साथ मोहन ब्राथम चले गए। स्वामीजी उन्हे भोजन करवाकर गगाजी के किनारे ले गए श्रीर कहा, "महर्षि दयानन्द सरस्वती के मैंने ५-६ उपदेश मुने थे। उनका मेरे जीवन पर वडा प्रभाव पडा ग्रौर मैंने सन्यास ले लिया। मेरे ग्रब्ययन की कोई व्यवस्था नहीं हो सकी। मैंने जास्त्राध्ययन नहीं किया इसका मुक्ते वडा पञ्चात्ताप है। जास्त्र ज्ञान के विना मनुष्य पशु के समान ही रहता है। जिसके पास ज्ञान-चक्षु नहीं है वह ग्रथे के समान है। शास्त्राध्ययन के विना ग्रध्यात्म-विज्ञान समभने की योग्यता भी तो प्राप्त नहीं होती । इस दीपक के विना अन्धकार के गर्त में गिरने की प्रतिपल सम्भावना रहती है। जो महापुरुप विद्वान् है वही ग्रपना तथा मानव जाति का उद्धार कर सकता है। तुम युवक हो। कई वर्ष तुम्हे जगलो ग्रोर वनो मे भटकते हो गए है। अनेक प्रकार के कष्ट तुमने सहे हैं ग्रीर कठिन तपस्या की है। तुम ग्रव तक न तो पूर्ण योगी वन सके ग्रीर न शास्त्राध्ययन ही किया। यह वात उचित नहीं है। यदि तुम विद्वत्ता-लाभ कर लोगे तो तुम्हे ग्रात्म-विज्ञान प्राप्त करने मे विलम्ब नहीं लगेगा। योगियों की तो हमारे देश में कमी नहीं किन्तु उनकी परख वडी कठिन है। उनके विज्ञान को समभने के लिए किसी भाषा विशेष पर या सस्कृत पर तो ग्रधिकार होना चाहिए। तुम्हे न ग्रभी ग्रच्छी हिन्दी ग्राती है, न सस्कृत ग्रीर न उर्दू, न ग्रग्नेजी। इसलिए मेरा ग्रादेश है कि तुम सस्कृताध्ययन करो, शास्त्र पढ़ो ग्रीर फिर योगी वनो।" हितानन्दजी ने व्यासदेवजी की जटाए कटवा दी ग्रीर विद्यालय मे ग्राए एक देहली के विद्यार्थी रामचन्द्र द्वारा उनके पढ़ने तथा निवासादि का प्रवन्ध देहली में करवा दिया।

## देहली मे विद्याध्ययन

देहली मे निवासादि की व्यवस्था-प० रामचन्द्र ने व्यासदेवजी के पढने ग्रीर निवास का प्रवन्थ ज्योनि पाठणाला मे कर दिया तथा दो-चार समृद्ध व्यक्तियो में कहकर उनके पानपानादि की व्यवस्था भी कर दी। व्यासदेवजी ने पण्डितजी से पुन लघुकी मुदी तथा प्राज्ञ परीक्षा के ग्रथ पढने प्रारम्भ कर दिए। कुछ काल के पञ्चात वे पण्टितजी किसी कारण से पाठशाला छोडकर चले गए। कोई दूसरा प्रवन्थ कई मास तक नहीं हो सका। पाठगाला वन्द हो गई। अब व्यासदेवजी ने रामजस हाई स्कूल मे पढेना प्रारम्भ कर दिया क्योकि वहा पर सस्कृत परीक्षाश्रो की तैयारी करवाई जाती थी। व्यासदेवजी रहते तो ज्योति पाठणाला मे ही थे किन्तु पढ़ने स्कूल में जाते थे। ये इन दिनो विशारद परीक्षा के ग्रथ पढ़ा करते थे। पाठशाला में नए ग्रध्यापक की नियुक्ति हो गई। पाठशाला चिरकाल तक बन्द रही थी ग्रत इसमे केवल दो-चार विद्यार्थी ही पढने ग्राते थे। ग्रत पण्डितजी छात्र-मन्या वढाना चाहते थे जिसमे पाठणाला चलती रहे श्रीर उनको भली प्रकार से वृत्ति मिलती रहे। उन्होने व्यासदेवजी से इसी पाठशाला मे पढने का भ्राग्रह किया किन्तु उनकी पढ़ाई रामजस स्मूल मे ठीक-ठीक चल रही थी यत उन्होने पाठणाला मे प्राना स्वीकार नहीं किया। इस पर यह अध्यापक व्यासदेवजी को बहुत तग करने लगा। लउको से उन्हें तग करवाता और वे उनकी चीजे चुरा लेते। उन्होंने पाठवाला के मंत्री तथा नारायणदास ठेकेदार से इस कष्ट के निवारण के लिए प्रार्थना की। उन्होंने व्यासदेवजी को अपने निवास का कही अन्यत्र प्रवन्ध कर लेने की सम्मित दी। उन्हें भय या कि कही यह ग्रध्यापक भी छोडकर न चला जाए ग्रीर पाठशाला पुन बन्द हो जाए । अब व्यामदेवजी ने अपने निवास की व्यवस्था चावडी बाजार में एक पुस्तकालय में कर ली श्रीर लगभग दो-तीन वर्ष इसमें रहे।

### व्यासदेवजी द्वारा पीडितो की सहायता

देहली में काग्रेम का बटा बोलवाला था। यही एकमात्र ऐसी सस्था थी जो विदंशी मत्ता द्वारा देश को शोपण से बचाने ग्रीर इसकी प्राधीनता की बेडियों को काटने का प्रयत्न कर रही थी। किन्तु व्यासदेवजी को राजनेतिक कार्यों में रुचि नहीं थी। उनका ध्यान तो ग्रहिनश योग सीखने में लगा रहता था। योग सीखने के लिए ही वे मम्कृताध्ययन करने दिल्ली ग्राए थे। इन दिनो प्रथम महायुद्ध चल रहा था। उधर रवराज्य प्राध्नि का ग्रान्दोलन भी जोरो पर था। इन्ही दिनो देहली में बटे जोर का लग फैला। मैकटो ग्रादमी प्रतिदिन इसका शिकार बनकर मृत्यु का ग्रास बन रहे थे। बाजार ग्रीर गिलयों में जब इधर-उधर पड़े रहते थे। स्कूल ग्रीर कालेज बन्द हो गए थे। व्यासदेवजी का कोमल हृदय उस दयनीय दृश्य को देखकर द्रवित हो उठा ग्रीर उन्होंने मेवार्थ विद्यायियों की एक ममिति बनाई ग्रीर घरो, गिलयों ग्रीर बाजारों में जो लावारिस शव पड़े रहते थे उनके दाहकर्म की व्यवस्था की। एक वैलगाडी इसके लिए किराए पर खरीदी। उस कार्य के लिए चन्दा एकत्रित किया। दिन-रात घूम-घूमकर देहली की जनता की सेवा की। ग्रपने गरीर ग्रीर स्वास्थ्य का किचिन्मात्र भी ध्यान न कर ग्रनेक प्रकार के कब्द सहकर भी दूसरों को सुख पहुचाने के लिए सदैव प्रयन्तशील रहे।

जिस पुस्तकालय मे व्यासदेवजी ने अपने रहने की व्यवस्था की थी उसमे और भी कई विद्यार्थी रहते थे। इसमे एक विद्यार्थियों की सभा होती थी जिसमे विद्यार्थी व्याख्यान देने का अभ्यास किया करते थे। व्यासदेवजी ने भी व्याख्यान देने का अभ्यास किया। यहा पर एक विद्यार्थी ग्रुष्टाध्यायी पढ़ा करना था। इन्होंने भी अप्टाध्यायी कठाग्र कर ली। कोई पढ़ाने वाला वहा था नहीं इसलिए विना समसे ही उसे रट डाला। गणपाठ, धातुपाठ, उणादिकोप और निघण्टु आदि कई ग्रंथ कठस्थ कर लिए।

व्यासदेवजी घरवार छोड चुके थे, ग्रत माता-पिता का जामन उन पर नहीं रहा था। किसी वडे विद्यालय या ऋषिकुल में भी वे नहीं पढे थे ग्रीर न किसी ग्राचार्य के शासन में ही रहते थे। ऐसे विद्यार्थी प्राय उच्छृ खल ग्रीर स्वेच्छाचारी हो जाते हैं ग्रीर यदि उनके धार्मिक सस्कार न हो नो वे प्राय कुमार्गगामी भी हो जाग्रा करते है। व्यासदेवजी पर जासन किसी का भी नहीं था किन्तु उनकी भावनाए ग्रीर प्रवृत्तिया वहुत ऊची थीं। वे पूर्ण ब्रह्मचारी ग्रीर जितेन्द्रिय थे। जान ग्रीर वैराग्य की भावना थी। उनका मुख्य उद्देश्य यही था कि मैं पढ-लिखकर विद्वान् वनू ग्रीर ग्राटम-विज्ञान प्राप्त करू। परीक्षा देने का कोई विचार नहीं था, किन्तु विद्वान् वनने का ग्रवश्य था। व्यासदेवजी को तीन वर्ष दित्ली में विद्याध्ययन करते हो गए थे।

पारिवारिक सदस्यों का ग्रागमन—इनके परिवार वालों को कही में व्याम-देवजी के वहा रहने का पता चल गया, ग्रीर वे लेने के लिए ग्रा गए। जब व्यामदेवजी ने जाने से इन्कार कर दिया तब उन्होंने कहा कि तुम ६-७ माम में एक बार हमें मिलने तो ग्रा जाया करों ग्रीर ग्रावव्यकतानुसार हममें ग्रपने व्यय के लिए क्पये भी मगवा लिया करों। किन्तु व्यासदेवजी ग्रपने परिवार से किमी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना चाहते थे। पारिवारिक वधनों में वे दूर ही रहना चाहते थे, क्योंकि इममें ममता के पांग उत्तरोत्तर ग्रधिक कठोर होते जाते हैं ग्रीर फिर उनको काटना ग्रसभव हो जाता है। इतना ही नहीं, ग्रव वे यह भी समक्षते लगे थे कि ममता के क्कंश कोलाहल में ग्रध्यात्म की वीणा का मधुर सगीत श्रवण नहीं किया जा सकता। ग्रत वे ऐसी कोई बान नहीं करना चाहते थे जिससे ममता के बन्धन में वृद्धि हो।

#### काश्मीर-प्रस्थान

दिल्ली से भागकर कही अन्यत्र जाने के अतिरिक्त और कोई उपाय इस वयन से बचने का उन्हें नहीं सूभा। एक अन्य ब्रह्मचारी, जिसका नाम राम था, उनके साथ चलने को तैयार होगया। दोनों ने मिलकर काश्मीर जाने का निश्चय किया। माघ का महीना था। मैदानों में ही इस मास में अत्यिधिक जीत होता है। यह काश्मीर जाने का समय नहीं था किन्तु अवकी वार वे इतनी दूर चले जाना चाहते थे जहां उनके पिता तथा परिवार वाले कभी भी उन्हें ढूढ नहीं सके और उनकी उद्देश्य-प्राप्ति में बाधक न हों सके, अत वे अपने काश्मीर जाने के निश्चय पर दृढ रहे। उन्हें किसी ने यह भी बताया था कि काश्मीर में अप्टाध्यायी और महाभाष्य पढाने वाले एक वडे विद्वान् पण्डित रहते हैं। उनके काश्मीर प्रस्थान करने के विचार में यह भी एक वडा कारण था। इन्होंने रेलगाडी के समय से वहुत पहिले ही दो टिकट मगवा लिए और थोडा-बहुत जो कुछ सामान वहा पर जरूरी उनके पास था वह भी स्टेशन पर भिजवा

विया। वाजार से दूध खरीदने का वहाना करके एक लोटा लेकर निवास-स्थान से वाहर चले गए। जब दो घण्टे हो चुके ग्रीर वे नही ग्राए तब उनके पिताजी को वडी चिन्ता हुई। ज्यो-ज्यो समय वीतता जाता था त्यो-त्यो उनकी ग्रातुरता ग्रीर व्याकुलता वढती जाती थी। इसलिए ग्रव उन्होने पूछताछ प्रारम कर दी। एक विद्यार्थी ने उनके भाग जाने का समस्त वृत्तान्त उनसे कह मुनाया। वे दो-चार ग्रीर ग्रादमियो को साथ लेकर स्टेशन पर पहुचे। सारी रेलगाडी के १०-१२ चक्कर लगाए किन्तु उन्हें व्यास-देवजी कही भी दिखाई न दिए। देते भी कैसे । यह समभकर कि पिनाजी उनकी तलाश करने स्टेशन पर ग्रवश्य ग्राएगे, वे पहिले से ही रेलगाडी की एक वैच के नीचे छिपकर लेट गए थे। यह भी तब किया जब गाडी ग्रभी प्लेटफार्म पर नहीं ग्राई थी। रेलगाडी के डिब्बो मे ग्रभी विजली नहीं जलाई गई थी, इसलिए उनके वैच के नीचे छिपकर लेटने का किसी भी यात्री को पता नहीं लग सका था। व्यासदेवजी के पिताजी तथा उनके साथी निराश होकर वापस लौट गए। जब कई स्टेशन निकल चुके ग्रीर गाडी को दिल्ली से चले ३-४ घण्टे होगए तब व्यासदेवजी ग्रीर उनके मित्र राम वैच के नीचे से निकलकर ऊपर वैठ गए। उन्हें देखकर यात्रियो ने वहुत बुरा-भला कहा, गालियो की बीछार की, किन्तु ब्रह्मचारीजी ने मौन धारण कर लिया। उनकी किसी भी वात का कोई उत्तर नहीं दिया।

प्रात काल सूर्योदय के पञ्चात् रेलगाडी रावलिंपडी पहुची। दोनो ब्रह्मचारी स्टेंगन पर उत्तरे श्रीर ग्रंपना-ग्रंपना सामान कथी पर रखकर पैदल यात्रा प्रारंभ कर दी। प्रथम दिन १५ मील की यात्रा की। इसके ग्रागे कोहमरी पर्वत तक वर्फ पडी हुई थी। सारी सडक वर्फ से ग्राच्छादित थी। दोनो नगे पैर थे। वडी किठनाई से नगे पैर ही वर्फ पर चलना प्रारंभ कर दिया। व्यासदेवजी को वर्फ पर चलने की किठनाई का ग्रंपन्थ था। जब इन्होंने उत्तराखण्ड के चारो धामों की ग्रीर स्वर्गारोहणादि स्थानों में पर्यटन किया था तब इन्हों वडी किठनाई का सामना करना पडा था, पर राम इस किठनाई से विल्कुल ग्रंपनिंज था। उसे वर्फ पर चलने का विल्कुल ग्रंपनिंच या। चलते-चलते मार्ग में उन्हें एक सिक्ख युवक मिल गया। इसका नाम शिव-सिह था।

च्यासदेवजी के रुपयो की चोरी—व्यासदेवजी ने मार्ग मे एक स्थान पर दूध पिया था ग्रीर इसके दाम शिविसह के समक्ष दुकानदार को दिए थे। शेप रुपयो को इसके सामने ही इन्होंने ग्रपनी धोती के एक पल्ले मे वाधा था। रुपये देखकर शिविसह के मन में पाप ग्राया ग्रीर उसने रुपये चुराने की योजना वनाना प्रारभ कर दिया। रात हो जाने पर दोनो ब्रह्मचारी ग्रीर निविसह एक दुकान पर ठहरे ग्रीर वही रात्रि व्यतीत की। दोनो के पास केवल दो-दो कम्चल थे। इनसे जीत का निवारण नही हो सकता था। दिनभर के थके हुए थे, पैरो में फफोले पड गए थे, ग्रत रातभर उन्हें नीद नहीं ग्राई। चुपचाप लेटे रहे। जिविसह ने सोचा कि ये सो गए है, ग्रव रुपये चुराने का ग्रच्छा ग्रवसर है। वह चुपके से उठा ग्रीर व्यासदेवजी के कम्बल के ऊपर धीरे-धीरे हाथ का स्पर्ण करके रुपये ढूढने लगा। व्यासदेवजी तो जग ही रहे थे। फट चिल्लाकर वोले—कीन है विविसह भयभीत होकर फट पीछे होगया। व्यासदेवजी समक गए कि शिविसह रुपये चुराने के लिए चेष्टा कर रहा है। ग्रव वह सचेत होकर लेट गए

ग्रौर नीद का वहाना करके जोर-जोर से खुर्राट भरने लने । गिवसिह ने सोचा कि इस स्वर्णावसर को हाथ से नही खोना चाहिए, ग्रत वह धीरे से उठा ग्रौर गर्ने -गर्ने व्यासदेवजी के विस्तर के पास पहुचकर इधर-उधर रुपये टटोलने लगा। ज्योही उसने ग्रपना हाथ कम्बल के भीतर डाला कि ब्रह्मचारीजी ने ग्रपने दोनो हाथ कम्बल मे वाहर निकाल कर एक हाथ से शिवसिह की दाढी जोर मे पकड ली ग्रौर दूसरे से उसके मिर के बाल पकडकर उसे खूब भक्तभोराग्रीर धक्के-मुक्के लगाकर नीचे गिरा दिया। जिव-सिह ब्रह्मचारीजी के वल को ग्राक नही सका। वह समझ रहा था कि दुबला-पतला सा व्यक्ति है, वह उसका मुकाबला नही कर सकेगा। उसको यह नही मालूम था कि यह युवक केवल ऊपर से देखने मे ही कृज ग्रौर कमजोर मालूम होता है, वास्तव मे इसके ग्रन्दर ब्रह्मचर्य का वल, तेज ग्रौर वर्चस्व है। ग्रास-पास के लोगो के वीचवचाव करने पर ब्रह्मचरीजी ने उस चोर को छोडा।

धर्मशाला मे निवास—जैसे-तैसे रात व्यतीत करके प्रात काल कुहाले के लिए प्रस्थान किया। मार्ग हिमाच्छादित था। रात को नीद न ग्राने के कारण विश्राम नहीं किया था, ग्रत थकान दूर नहीं हुई थी। पैर भी नगे थे। वडी कठिनाई का सामना था पर हिम्मत नहीं हारी ग्रीर साहमपूर्वक उस मार्ग पर चल दिए। कभी-कभी पैर वर्फ मे धस जाते थे ग्रीर वृक्षो पर से वर्फ के बटे-वटे ढेले उनके गरीर पर ग्राकर गिर जाते थे। शीत के कारण पैर निश्चेष्ट हो रहे थे। गरीर मे मानो उप्णता नाममात्र को भी न रह गई थी। बडी कठिनाई से कुहाले का रास्ता तय किया। इसके बाद जैसे-तैसे वारहमूला पहचे। यहा ग्राते-ग्राते पैरो मे धाव होनए थे ग्रीर उनसे रुधिर स्रवित हो रहा था। वारहमूला से ग्रागे का मार्ग सीधा था। ग्रव किसी प्रकार की चढाई तथा उतराई नहीं थी। दोनो ब्रह्मचारी नौवे दिन रात्रि के ग्राठ वजे श्रीनगर पहुचे ग्रीर ग्रमीराकदल सिक्ख धर्मशाला मे ठहरे। चौकीदार ने इनके लिए एक श्रच्छा-सा कमरा खोल दिया ग्रीर उनकी सव व्यवस्था ठीक-ठाक कर दी।

चौकीदार की मूर्खता—प्रह्मचारी व्यासदेवजी वडे रूपवान थे। गरीर वडा सुडौल था। मुख पर कान्ति थी। गौर वर्ण थे। गरीर में प्रह्मचर्य का तेज था। अनेक किठनाइयों के सहने और अत्यन्त परिश्रमणील होने के कारण गरीर में चर्ची बढ़ने का अवकाश ही नहीं था, अत गरीर कृण था। इस सौन्दर्य की साकार प्रतिमा को देखकर भला कौन उनकी थोर आकृष्ट न होता होगा। दोनो ही युवक केण नहीं रखते थे। मूर्ख चौकीदार ने सोचा कि ये दोनो हिन्दु साधनिया हैं। इसिलए वह उन्हें माईजी कहकर पुकारने लगा। जब वह उन्हें इस प्रकार से सम्योधन करता तो दोनो ब्रह्मचारी मन ही मन में खूब हसते। ये दोनो उसे मूर्ख समभते थे, अत इस सम्बन्ध में उससे कुछ न कहकर चुप रहते थे। इस धर्मणाला में एक और नौकर भी था। चौकीदार ने इसे बुलाया और कहा कि ये दोनो महिलाए हिन्दू साधनिया प्रतीत होती है। इनमें से जो अधिक सुन्दर है उससे में विवाह कर लूगा और दूसरी से तू कर लेना। हम दोनो के घर वस जाएगे और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेगे। इस अम का कारण केवल इन ब्रह्मचारियों का सौन्दर्य ही नहीं था किन्तु उनके वस्त्र घारण करने का ढग भी था। पुरुष प्राय धोती की लाग लगाते हैं किन्तु ये ब्रह्मचारी लाग नहीं लगाते थे और शीत के कारण अपना मुह और सिर ढापे रहते थे। केवल

स्रासं खुनी रहती थी। जब चौकीदार उन्हें माई कहकर सम्बोधन करने लगा तब वे विनोद में स्राकर अपने को स्रधिकाधिक स्त्रीवत् दर्जाने लगे। इसलिए यह भ्रम स्रीर स्रियक प्रका होता गया। इनका ध्यान ग्रपनी ग्रोर ग्राकिपत करने के लिए दोनों नौकर इनकी सूब सेवा करते। उनके लिए सब सामान बाजार से लाकर देते। इसके दाम भी उनने नहीं लेते थे। व्यासदेवजी दाम चुकाने के लिए बहुत प्रयत्न करते पर वे सदेव लेने से उनकार कर देते थे। चार-पाच दिन तक पूरी खाते रहे, ग्रत ग्रव इनसे चित्त कुछ उपराम-सा होगया था। इसके ग्रितिस्कित यह भी विचार ग्राया कि चौकीदार हमें ४-५ दिन से पूरिया खिला रहा है। हमसे दाम नहीं लेता है। हमें वह स्त्रिया समक्त रहा है। सभव है उसके चित्त में कोई विकार पैदा होगया हो। यदि उसको पना लग गया कि हम स्त्रिया नहीं, पुरुष हैं, तो इसका शेखचिल्ली के समान वना-बनाया सेल सब समाप्त हो जाएगा ग्रीर यह ग्रपनी करनी पर बडा परचात्ताप करेगा। ग्रत कही ग्रन्यत्र जाने का विचार किया।

तारासिंह से परिचय-दोनो ब्रह्मचारी दस वजे के लगभग धर्मशाला से वाहिर निकले। वाजार मे सर्वत्र वर्फ जमी हुई थी। वडी कठिनाई से माई सेवा नामक बाजार में गए और कोई ऐसा होटल या दुकान ढूढने लगे जहां पर निरामिप भोजन प्राप्त हो सके। उन्हें धर्मशाना के चीकीदार ने बताया था कि श्रीनगर में सभी होटलो श्रीर रेस्टोरेंटो में माम पकता है। उसलिए वे बड़े चिन्तित भाव से वाजार में घूम रहे थे। दो घण्टे वाजार मे घूमते होगए किन्तु कही भी निरामिप भोजन प्राप्त न हो मका। अत्यन्त क्षुधानं होकर एक दुकान से दूसरी दुकान पर जाते थे किन्तु निराश होकर लोट आने थे। गत रात्रि को दुग्ध-पान नही किया था और थक भी बहुत गए थे क्योंकि उधर-उधर भ्रमण करते रहे थे ग्रीर धर्मशाला मे ग्राकर सो गए थे। चौकी-दार ने दूध पीने के लिए बहुन श्रनुनय विनय की किन्तु उन्होंने दूध पीने से सर्वथा उन्जार कर दिया। दिन के बारह बजे तक उनकी भोजन की संमस्या सुलभ नही नकी । किसी दुकान, ढाबे, होटल अथवा रेस्टोरेट मे भोजन करना पसन्द नही किया क्योंकि प्रत्येक दुकान श्रीर होटल श्रादि में मास बनाया जाता था। बाजार में चिन्तित भाय ने दोनो मित गरे थे। इनने मे पास ही एक सज्जन ग्रा पहुचे ग्रीर इन दोनो नवयुवको को चिन्तित ग्रीर उदामीन देयकर उत्मुकतापूर्वक उनकी चिन्ता ग्रीर उदा-मीनता का कारण पूछने पर मालूम हुम्रा कि ये दोनो भूल से व्याकुल थे ग्रीर श्रीनगर की दुकानो पर भोजन करना नहीं चाहते थे क्यों कि उनमें निरामिप भोजन प्राप्य नहीं था। उस सज्जन का नाम तारासिंह था। यह ग्रार्यसमाजी था ग्रत इसने विश्वास दिलाया कि इसके घर मे मास नहीं बनता है ग्रीर दोनो ब्रह्मचारियों से निवेदन किया कि वे उसके साथ उसके घर पर चले और भोजन करे। यह भी कहा कि उसके पास केवल उसकी माता रहती है इसलिए मकान में स्थान खाली है, उसीमें वे दोनो निवास भी कर मकते है। दोनो ब्रह्मचारी बड़े प्रसन्न हुए ब्रांर तारासिह के साथ हो लिए। इनकी माता ने दोनों को बड़े प्रेम से भोजन करवाया। इनके पास ये दोनों कई दिनो नक रहे। नारासिह ने बडे आग्रह से इनके लिए जूते और गर्म वस्त्र वनवा दिए तथा भोढ़ने बिछाने के लिए भी पर्याप्त वरत्र परीद कर दे दिए। एक दिन तारासिह इन्हे श्रायंगमाज मे श्रपने गाथ ले गए और प्राय सभी सदस्यों से इनका परिचय करवा दिया। इस ग्रार्थसमाज मे श्रार्य कुमार सभा प्रति रिववार को सायकाल लगा करती थी। यहा कुछ विद्याधियों ने व्यासदेवजी से इस सभा मे भापण देने की प्रार्थना की। इनके पाण्डित्यपूर्ण भाषण की सव ने भूरि-भूरि प्रजसा की ग्रीर सव लोग इनका सम्मान करने लगे। कई विद्यार्थी इनके मित्र वन गए जिनमें केशवदेव, योगेन्द्र, महेन्द्र, ताराचन्द, जानकीनाथ, माधोराम ग्रादि प्रमुख थे। इनमें से केशवदेव एक धनाढ्य परिवार का लडका था। उसने तारासिंह से कहा कि इन ब्रह्मचारियों के दूध का प्रवध में कहा। ग्रीर वह नित्यप्रति दो सेर दूध इन दोनों के लिए भेजने लगा। एक दिन व्यासदेवजी ने संस्कृत के विद्वान् पण्डितों से मिलने की इच्छा तारासिंह से प्रकट की। वह इन्हें पडित सुखानन्द ग्रीर नित्यानन्द के पास ले गए। व्यासदेवजी को संस्कृत में भाषण करने ग्रीर लिखने का खूब ग्रभ्यास था। इन्होंने इन पण्डितों में संस्कृत में ही सम्भापण किया। सुखानन्दजी संस्कृत में इनके वार्तालाप को मुनकर गद्गद् हो गए। उनसे पता चला कि उस समय काश्मीर में कोई ग्रप्टाध्यायी ग्रीर महाभाष्य को पढाने के लिए योग्य विद्वान् नहीं है ग्रीर यह सलाह दी कि वनारस में हरनारायण तिवारी नाम के सभी प्रकार के व्याकरण ग्रथों के परम विद्वान् पण्टित रहते हैं, ग्राप उन्ही के पास जाकर इन दोनों ग्रथों का ग्रध्ययन करों।

शालामार वाग मे एक अग्रेज से मुठभेड— ब्रह्मचारी व्यासदेवजी वटे निर्भीक व्यक्ति थे। सदा न्यायपथ पर निर्भय होकर डटे रहते थे और अन्याय के प्रतिशोध के लिए सदैव किटवढ़ रहते थे। जिन दिनो ये काश्मीर मे थे उन दिनो अग्रेज सरकार का भारतवर्ष मे, विशेषकर पजाव मे, वडे जोरो का दमन चक चल रहा था। इसके द्वारा वह स्वतत्रता के आन्दोलन का समूलोन्मूलन करना चाहती थी। पजाव में सैनिक कानून लगा दिया गया था। जितना ही दमन किया जाता था उतना ही विद्रोह की अग्नि प्रचण्ड रूप धारण करनी जाती थी। इसकी ज्वालाए यत्र-तत्र-सर्वत्र फैलती जा रही थी। अमृतसर मे जिलयावाले वाग के हत्याकाण्ड का दु खद स्मरण आज भी दिल को दहला देता है। राष्ट्र के वडे नेताओं को कारावास मे वन्द कर दिया गया और सत्याग्रह आन्दोलन को बुरी तरह से कुचला गया। अग्रेजी सरकार का सर्वत्र आतक छा गया था। सभी रियासतो मे काग्रेस का दमन किया गया। प्रमुख नेताओं को कैद किया गया। काग्रेस के सम्बन्ध मे रेजिडेटो ने रियासनो मे बडे कडे कानून जारी किए थे। काश्मीर इससे अछूता कैसे रह सकता था। यहा पर भी महाराजा प्रतापिसह ने किसी भी काग्रेस के नेता को सिर नही उठाने दिया। किन्तु प्रजा मे भीतर ही भीतर विद्रोह की अगिन सुलगती रही।

एक दिन व्यासदेवजी ग्रपने मित्र राम के साथ जालामार वाग देखने के लिए गए। जब वे एक सडक पर घूम रहे थे तब एक ग्रग्रेज ग्रोर उसकी पत्नी भी उसी सडक पर सामने से ग्रा रहे थे। उन्हें देखकर इन दोनों ने सडक को छोड दिया ग्रीर एक तर्फ को होकर खंडे होगए, लेकिन उन दिनों के ग्रग्रेज ग्रपने को भगवान के वेटे नहीं समभते थे बिल्क ग्रपने को भगवान का वाप समभते थे। उस ग्रग्रेज ग्रुवक को इन ब्रह्मचारियों को देखते ही कोघ ग्रा गया ग्रीर जान-बूभकर इन दोनों को नीचे वाग की एक क्यारी में धक्का दे दिया। भला व्यासदेवजी इस ग्रपमान ग्रीर ग्रन्याय को किस प्रकार सहन कर सकते थे। उन्होंने तुरन्त उस ग्रग्रेज को धर दवाया ग्रीर

उसे नीचे गिराकर घूसो ग्रीर लातो से खूव पीटा । श्रग्रेज महिला ने ग्रपने पित के वचाव के लिए उनसे वही अनुनय ग्रीर विनय की, तव कही उन्होंने इसे छोडा। श्रग्रेज दम्पित ने श्रीनगर जाकर पुलिस में रिपोर्ट कर दी कि महाविद्यालय (प्रताप कालेज) के दो विद्यार्थियों ने उनका शालामार वाग में घोर ग्रपमान किया ग्रीर मारा है। सारे नगर में ग्रिग्न के समान यह समाचार फैल गया ग्रीर महाविद्यालय में तो विशेष रूप से ग्रातक छा गया। विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों से नित्यप्रति इस दुर्घटना के सम्बन्ध में पूछताछ होती थी। श्रग्रेज युवक नित्य महाविद्यालय के विद्यार्थियों में से ग्रपने ग्रपमानकर्ता को पहिचानने के लिए जाता किन्तु पहिचानता तो तव जव वह वहां होता। वह तो कालेज का विद्यार्थी ही नही था तो भला वहा मिलता ही कैसे। व्यासदेवजी तो वहा के प्रताप महाविद्यालय के विद्यार्थी ही नही थे। श्रमृतसर में जिल्यावाले वाग में गोली चले कुछ दिन ही हुए थे।

महाराजा प्रतापिसह से भेंट, िक महाराजा तो सर्व प्रकार से सुखी होगे—व्यासदेवजी की काश्मीर-नरेश से भेट करने की चिरकाल से इच्छा थी। केशवदेव ने एक काश्मीरी पिडत के द्वारा महाराजा से निवेदन करवाकर मिलने का समय निश्चित करवा दिया। नरेश ने प्रात दस वजे पूजागृह में ही मिलने के लिए बुला लिया। प्रणाम करके सम्मानपूर्वक पास विठाया। विविध विषयो पर वार्तालाप हुग्रा। इसी वीच में व्यामदेवजी के राजपरिवार तथा प्रजा की प्रसन्तता और सुख के विषय में पूछने पर महाराजा ने निवेदन किया, "मुभे इस समय दो प्रकार के दुख पीडित कर रहे हैं। मैं ग्रव तक पितृ-ऋण से मुक्त नहीं हो सका हू। दूसरा दुख काश्मीर के भावी शासन का है। जब तक ये दो महान् चिन्ताए मुभे सता रही है मैं ग्रवने को कैसे मुखी मान सकता हूं राजकुमार हरिसिंह मेरे भाई के लड़के है। यदि वे सिहासन पर वैठ भी जाते है तो उनमे शासन की योग्यता नहीं है। ग्रीर उनसे मैं पितृ-ऋण से उर्ऋण भी नहीं हो सकता। ये दो चिन्ताए मुभे घुण की तरह से भीतर ही भीतर खा रही है।" राजा की ये सव बाते सुनकर व्यासदेवजी को वड़ा ग्राश्चर्य हुग्रा। यदि यह महती सुख-सम्पत्ति, धन, वैभव, गगनचुम्बी प्रासाद, ग्रसख्य धनराशि, सकड़ो दाम-दासिया, महान् प्रभुत्व ग्रीर विस्तृत राज्य पाकर भी सुख नहीं है तो फिर ससार के सर्वसाधारण व्यक्तियों को तो मुखी कहा ही कैसे जा सकता है। इन्होंने सुख ग्रीर दु ख के सम्बन्ध में महाराजा को वड़ा सारर्गाभन उपदेश देकर समभाया कि —

# न चेन्द्रस्य सुख किचिद् न सुख चऋर्वातनः । सुखमस्ति विरक्तस्य मुनेरेकान्तवासिनः ॥

मुख ग्रीर दु ख पदार्थ नहीं है। इस सज्ञा में वे ग्राते ही नहीं। ये दोनों तो केवल ग्रन्त करण की वृत्तिया है। वृत्ति ग्रीर चित्त उसके साथ तादात्म्य भाव ही सुख ग्रीर दु ख का कारण है। कभी दु ख मुख-रूप में प्रतीत होने लगता है ग्रीर जिसे हम सुख समभने लगते हैं वह भी परिणाम भाव को प्राप्त होकर दु ख में ही परिणत हो जाता है। ये दोनों ही एक-दूसरे के सापेक्ष है। इन दोनों का ग्रभाव चित्तवृत्ति के निरोध में ही हो सकता है, ग्रन्यथा नहीं। जिस प्रकार समुद्र की सतह से युलवुले ग्रीर लहरें उठती है इमी प्रकार से चित्त-समुद्र से ये वृत्तिया उठती है। जैसे सूर्य से किरणे निकलती है उमी प्रकार चित्तरूपी सूर्य से वृत्तिरूपी किरणें निकलती रहती है। जिस

प्रकार ग्रस्ताचल को जाते समय सूर्य अपनी किरणों को समेट लेता है उमी प्रकार ग्राप भी सुख ग्रीर दु ल दोनों से ऊपर उठने के लिए अपनी किरणों रपी चित्त-वृत्तियों को समेटने की कोशिश करें। भय उपस्थित होने पर कछुग्रा अपने हाथों ग्रीर पैरों को समेटकर निर्भय हो जाता है, उसी प्रकार ग्राप भी चित्त में सैकडों प्रकार की जो वृत्तिया उठा करती हैं इनका सवरण कर लीजिए। उन्हें उठने तक का ग्रवकाश ही कभी न दे तभी ग्राप सुख ग्रीर दु प रूपी महान् इन्द्र से मुक्त हो सकते हैं। चित्त ही वास्तव में सुख ग्रीर दु ख का उपादान कारण है। ये उसी में उत्पन्न होने है। ग्रन्त करण से पृथक हो जाने पर ग्रथवा उसके नाश हो जाने पर गुग्य ग्रीर दु ख दोनों का ग्रभाव हो जाता है।

काश्मीर-नरेश सुख ग्रीर दुख के विषय मे विद्वता ग्रीर विवेशपूर्ण वार्ताताप सुनकर वडे प्रसन्न हुए ग्रीर उनका इस विषय मे सारा भ्रम नष्ट होगया। महाराजा ने व्यासदेवजी को वडी ग्रमूल्य भेट देनी चाही किन्तु उन्होने स्वीकार नहीं की ग्रीर निवेदन किया कि में तो सदैव उपराम वृत्ति से रहता हू। विरयत ब्रह्मचारी के लिए इस भेट की कोई ग्रावश्कता नहीं। में तो भारत की प्राचीन पावन परम्पराग्रों में पूर्ण विश्वास करता हू। हमारे देश ने नपस्या ग्रीर त्याग ग्रीर वैराग्य को मदैव जवा स्थान दिया है ग्रीर 'कौपीनवन्त यनु भाग्यवन्त' के उच्च ग्रादर्श का सदैव पालन किया है।

'हिमालय का योगी' ग्रन्थ में 'वैराग्य का उदय' नामक प्रथम ग्रध्याय समाप्त ।।

#### द्वितीय प्रध्याय

## प्रारम्भिक योग साधना

परम विद्वान् योगी की खोज-ज्यामदेवजी अपने वाल्यकाल से ही एकान्त-प्रिय तथा विचारशील थे। उन्हे जनसम्पर्क कभी भी रुचिकर नही था। स्वामी रामानन्दजी महाराज के उपदेशों से उनकी निरोहित वैराग्यभावना एकदम प्रस्फुटित हो गर्जे ग्रीर प्रतिदिन के सत्सग ने उसे ग्रधिकाधिक दृढ बना दिया। इनकी ग्रायु इस नमय केवल १२ या १३ साल की ही थी। इस छौटी-सी ग्रायु मे ही उन्हें तीव वैराग्य हो गया था श्रीर १६ साल की श्रायु मे उन्होने गृह-परित्याग कर दिया था। इनके जीवन की अनेक घटनाए इस वात को सिद्ध करती हैं कि ये अपने प्राक्तन जीवन में कोई बड़े सिद्ध योगी रहे होगे। ऐसे ही महान् योगियों के विषय में गीता में कहा गया है "शुचिना श्रीमता गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते"। सम्पन्न गृह मे जन्म लेने के स्रितिरवत सन्य सनेक वाते ऐसी है जो इसकी पूर्णतया पुष्टि करती हैं। स्रापके ग्रन्दर योग द्वारा ग्रह्म-प्राप्ति की उन्कट ग्रिभिनापा बात्यकाल से ही थी। योग मीयने के लिए योग्य गुरु की योज के लिए उन्होंने अनेक प्रकार की कठिनाइया उठाई। बीहर यनो मे भ्रमण किया। हिमाच्छादित उत्तुग पर्वतमालाम्रो पर नगे पैर केवल मात्र एक कम्बल कथे पर डालकर उधर-उधर खोज की, किन्तु उन्हें इसमे सफलना प्राप्त नहीं हुई। भ्रव वे किसी छोटे-मोटे साधारण योगी से योग सीखना नही चाहते थे। उसके लिए वे किसी परम विद्वान् योगी की शरण मे ही जाना चाहते थे। मात्रारण योगियों में तो वे इससे पहले ही बहुत कुछ सीख चुके थे। हरिद्वार में मोहन ग्राप्रम में निवास किया और गंगा के किनारे घण्टो ही जॉप श्रीर योगाभ्यास करते थे। कजली वन मे म्यारह घण्टे तक प्रतिदिन ग्रामन, प्राणायाम तथा योग सायना की । उत्तरायण्ड में पहाडों की गुफाय्रों में वर्षों तक निवास किया ग्रीर योग मायना में ग्रहनिश मलग्न रहे। पर वे इनने मात्र से सन्तुष्ट नही थे क्योंकि वे एक महान् योगी वनना चाहते थे। इसके लिए एक मार्गदर्शक की वडी आवश्यकता थी ग्रीर उसी की पोज में वे व्यग्त थे। उस दिन की वड़े चाव से प्रतीक्षा कर रहे थे जब उन्हें योग में निपुण गुरु की प्राप्ति हो। वह दिन दूर नहीं था जिस दिन उन्हें एक योग्य योगी की प्राप्ति हुई।

श्रवधूत परमानन्दजी से भेंट—व्यासदेवजी जव काव्मीर मे रहते थे तब प्राय हजूरी बाग मे जाया करते थे। वहा पर गुलाब के पौधों के पास बैठकर श्रष्टाध्यायी श्रादि का पाठ किया करते थे। एक दिन उन्होंने एक परमहस महात्मा को कौपीन बाधे श्रीर एक कम्बल कथे पर डाले श्राते देखा। व्यासदेवजी तथा उनके मित्र राम ने उठकर उन्हें श्रादरपूर्वक प्रणाम किया। स्वामीजी ने दोनो ब्रह्मचारियों को श्राकीर्वाद दिया और उनके हाथ मे अप्टाध्यायी देखकर पूछा, "आप इसे क्यो पह रहे हो ? इसे पढकर क्या करना चाहते हो ?" व्यासदेवजी ने उत्तर दिया कि हम उने पढकर वेद-शास्त्रों के ग्रध्ययन द्वारा ग्रात्म-विज्ञान प्राप्त करेंगे। यह उत्तर सुनकर ग्रवधून परमानन्दजी ने उन्हें समभाया कि केवल शास्त्राध्ययन ने ही ब्रह्ममाक्षाटकार प्राप्त नहीं किया जा सकता। श्रुव, प्रह्माद ग्रीर निचकेनादि को नो बान्यकान में ही ग्रात्मविज्ञान प्राप्त हो गया था। उन्होंने किसी वेद या शास्त्र का ग्रध्ययन नहीं किया था। श्रुति भी इसी का प्रतिपादन करती है, "नायमात्मा प्रवचनेन लभ्य न मेधया न बहुना श्रुतेन।" ग्रात्मज्ञान लाभ के माधन तो कुछ ग्रीर ही है। वे हम तुम्हे बताएगे । वे दोनो ब्रह्मचारियो को हरि पर्वन की और न गए । मार्ग मे व्याम-देवजी के तर्क-वितर्क तथा ऊहापोह से वडे प्रयन्त हुए ग्रीर ग्राशीनीद देने हुए उन्हें म्रालिगन किया। ये दोनो ब्रह्मचारियों को गान्धरवन ने म्राए भीर नहर के किनार चुगी की चौकों के पास चनार के पेट के नीचे ठहर गए। उस चौकों के नपटासी ने भौजन वनवाया और स्वय तथा इन ब्रह्मचारियों को भी विलाया। व्यामदेवजी तथा राम दोनो के लिए विछाने और श्रोहने के लिए कम्यलो की व्यवस्था की । दोनों ने चनार के वेड के नीचे शयन किया। ग्रवधूतजी मी फीट की दूरी पर ग्रपना ग्रामन जमाकर बैठ गए। जाते समय ब्रह्मचारियों को उनके पास प्रान ग्राठ वर्ज नक न माने का मादेश दे गए। वे रात्रि को माठ बर्ज साधना में बैठे मीर प्रात ६ बर्ज तक एक ही ग्रासन में बैठे रहे। रात्रि में केवल दो घण्टे ग्रथित् छ में ग्राठ बजे नक ही उन्होने गयन किया। दोनो विद्यार्थी रात्रि मे सनै -सनै उठकर उन्हे देखते रहे। उनके हृदय मे यह जानने की वडी उत्मुकता थी कि स्वामीजी महाराज रावि में क्या साधना करते हैं और कितने ममय तक करते हैं। अवधूनजी की उम माधना का ब्रह्मचारियो पर वडा प्रभाव पडा। इससे उनके हत्य में उनके प्रति बडी श्रद्धा श्रीर भेक्ति उत्पन्न हो गई। प्रात नगभग ६ वजे मवने गायग्वन ने मोनमर्ग के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में सिंधु नदी के किनारे एक गुफा में ठहरे। भोजनी-परान्त व्यासदेवजी ने भावी कार्यक्रम के विषय में न्वामीजी से निवेदन किया। स्वामीजी ने त्रादेश दिया कि शीघ्र ही तुम दोनों के निए प्रनिदिन का कार्यक्रम निश्चित कर दिया जाएगा और उसी के अनुसार तुम कार्य प्रारम्भ कर देना।

योग शिक्षा ग्रहण—ग्रवधूतजी के माता-िपता का बात्यकाल में ही न्वगंवान हो गया था। तभी से तीव्र वेराग्य की भावना जागृत हो गई थी, इमिलए गृह-त्याग कर दिया था। कई वर्ष तक सस्कृत तथा वेद-शाम्त्रों का अध्ययन किया ग्रीर तत्परचात् एक योगी की शरण में चले गए ग्रीर उनसे योग मीत्वा। उन्हीं में दीक्षा भी प्राप्त की। इनका शरीर पजाबी था ग्रीर ये उदामीन सम्प्रदाय के थे। इनका रहन-सहन, बोल-चाल तथा सारा व्यवहार जीवन्मुवतों के समान था ग्रीर वे नर्दव यवधूत-वृत्ति से रहते थे। बहुत वहें योगी थे। भूत, वर्तमान ग्रीर भविष्य की मव वातें जानते थे। इन ब्रह्मचारियों को देखते ही वे समक्ष गए कि ये कई वर्षों से किमी योग्य योगी की खोज करते फिर रहे हैं किन्तु ग्रभी तक इन्हें कोई उचित मार्गदर्शक उपलब्ध नहीं हो सका है। इनकी योगनिष्ठा, भिवत, श्रद्धा ग्रीर योग्यता को देखकर प्रसन्त हुए। भगवत्प्ररणा से इन्होंने इन दोनों को योग सिखाने का निश्चय कर

लिया। व्यासदेवजी ने स्वामीजी के प्रति ग्रपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की ग्रौर निवेदन किया कि मेरी योग सीखने की चिरकाल से ग्रिभलापा थी। ग्राप जैसे महानात्मा परम विद्वान् योगी को पाकर ग्राज यह उत्कट ग्रिभलापा पूर्ण हुई। ग्राज हमारे किसी प्राक्तन पुण्य का उदय हुग्रा है। ग्रापकी इस ग्रहेतुकी कृपा के लिए हम सदेव ग्रापके ऋणी रहेंगे। ग्रापके समान कृपालु गुरु ससार मे वहुत कम है। ग्राप हमारा मार्ग-दर्शन की जिए। ग्राज हम ग्रापको गुरु मानकर ग्रापके चरणो मे ग्रात्मसमर्पण करके ग्रापसे दीक्षा लेने की प्रार्थना करते हैं। ग्रवधूतजी ने कहा, "तुम लोग मेरे पास रहकर श्रद्धा ग्रौर भित्तपूर्वक जो कुछ सीख सकोगे वही मेरी दीक्षा होगी। इस मम्बन्घ मे जिस-जिस बात की ग्रावश्यकता होगी वह सब तुम्हें समभा दी जाएगी।" दोनो त्रह्मचारी धूनी जलाकर गुफा मे रहने लगे ग्रौर यही पर एक मास तक इन्होने योगसाधना की। इनके लिए एक मास की दिनचर्या ग्रवधूतजी ने बना दी। यह दिनचर्या प्रति सप्ताह निम्न प्रकार से बदलती रही, यह स्थान कगण के पास सिन्ध नाले के किनारे गुफा मे था।

प्रथम सप्ताह—६ घण्टे गयन। ६ घण्टे निरन्तर एक ग्रासन पर बैठकर गायत्री जाप। इसमे केवल दो बार टागे बदल लेने की ग्राज्ञा थी। २ घण्टे तक योग दर्शन का ग्रध्ययन। २ घण्टे पठित पाठ को कण्ठस्थ करना। २ घण्टे हठयोग के ग्रानुसार ग्रासन, प्राणायाम तथा कियाए। २ घण्टे शीच, स्नान तथा वस्त्र-प्रक्षालनादि। २ घण्टे सायकाल को पास मे ही इधर-उधर भ्रमण। २ घण्टे भोजन विश्वामादि। भोजन मे चावल, नमक, मक्खन।

दूसरा सप्ताह—इसमे भ्रमण का समय निकाल दिया गया। शेप कार्यक्रम प्रथम सप्ताह के समान ही रहा। इस सप्ताह मे तीन व्याहृतियो का जाप भ्राठ घण्टे तक करने का ग्रादेश दिया गया। यह जाप एक ही ग्रासन से बैठकर करने की ग्राज्ञा दी। थकान होने पर केवल एक वार ही टागें वदली जा सकती थी।

तीसरा सप्ताह—इस सप्ताह का कार्यक्रम द्वितीय सप्ताहवत् ही रहा, किन्तु ग्रव १० घण्टे लगातार ग्रोकार जाप करने की ग्राज्ञा हुई। ग्रव टागें वदलना विल्कुल निपंध कर दिया गया। इस काल मे जाप कई वार वन्द हो जाता था ग्रोर कई घण्टो तक एक प्रकार की शून्यता सी छा जाती थी। कई-कई घण्टो तक व्यासदेवजी को ग्रपनी भी सुत्र न रहती थी।

चीया सप्ताह—ग्रव ग्रवधूतजी ने १२ घण्टे तक शून्य-समाधि लगाना सिखा विया। इसमे सकत्प-विकल्पो का नितान्त ग्रभाव रहता था। रात के १२ वजे से लेकर दिन के १२ वजे तक एक ही ग्रासन से समाधि लगाई जाती थी। इस सप्ताह मे केवल चार घण्टे तक मोने की ग्राज्ञा थी। शेप दिनचर्या पूर्ववत् ही थी।

उस १२ घण्टे की समाधि में व्यासदेवजी को न तो श्रपना ही कुछ भान रहता था श्रीर न जगत् के श्रस्तित्व का । इस एक मास में श्रवधूतजी ने दोनों को ४० प्रकार के प्राणायाम, १५४ प्रकार के श्रासन, पटकर्म (नेति, धोती श्रादि) सिखाए श्रीर व्याख्या सहित सारा योगदर्शन भी कण्ठस्थ करवा दिया । १२ घण्टे की समाधि इस थोडे से काल में लगाना सिखा देना उन्ही नैष्ठिक ब्रह्मचारी ब्रह्मनिष्ठ तेजोमूर्ति महायोगीजी की कृपा का ही परिणाम था। इस एक मास मे ग्रवधूतजी की कई विभूतिया देखने का ग्रवसर लाभ हुग्रा।
एक दिन दोनो ब्रह्मचारियो की वन-भ्रमण की इच्छा हुई ग्रोर योगीराज से उस विषय
मे निवेदन किया। वे उन्हे ग्रपने साथ लेकर पास ही एक पर्वत पर भ्रमणार्थ गए।
वे ग्रपनी साधारण गित से चल रहे थे। पर व्यासदेवजी तथा राम को उनके माथ
दौडना पड रहा था। ये थोडी ही दूर गए होगे कि इनको एक रीछ ग्राना दिगाई
दिया। वह एक भाडी से वाहिर निकला ग्रीर ब्रह्मचारियो पर भपटा। भयभीन होकर
इन दोनो ने ग्रपने हाथो मे उण्डे उठा लिए थे। ग्रवधूनजी ने नुरन्त इनके उन्टे फिनवा
दिए ग्रीर रीछ को हाथ का सकेत करते हुए कहा "जाग्रो वेटा, जाग्रो"। वह उनको
छोडकर कूदता फादता दूर चला गया। यह उनकी प्रथम यम, ग्रहिंसा की सिद्धि का
परिणाम था। इसे ही "ग्रहिंसाप्रतिष्ठाया तन्सनिर्धा वैरन्याग" कहा गया है।

ये योगीजी वडे दयालु तथा वात्मन्यपूर्ण ये। एक वार युवक योगियां की मिष्ठान्न खाने की इच्छा हुई। पर उन्होने मकोच ग्रीर भयवन गुरुदेव मे उस सम्बन्ध मे निवेदन नही किया। किन्तु उनमे कोई वान छिपाई न जा सकती थी। वे प्रत्येक व्यक्ति के हृदय की वात को अनायास ही जान लिया करते थे। उन्होंने उनमे पूछा, "क्यो, मिठाई खाना चाहते हो ? कीनसी मिठाई पात्रोगे ? किस स्थान की मिठाई खाने के लिए इस समय तुम्हारी रुचि है ?" व्यासदेवजी जिन दिनो दिन्ती मे सस्कृताध्ययन करते थे उन दिनो चादनी चीक मे घण्टाघर वाले की मिठाई कई वार खाने का अवसर उन्हें मिला था, इसलिए भट निवेदन किया कि चादनी चीक में घण्टेवाले की मिठाई उत्तम होती है। वे मुस्कराए और चुपचाप वेठ गए। कुछ देर वाद उन्होंने दोनों को नदी पर जाकर श्राचमन करने की ग्राजा दी। गुफा से निकलते ही उन्हे एक भालू दिखाई दिया ग्रत वे वडे भयभीत हुए ग्रीर बटी गीन्नता ने ग्राचमन करके भटपट भागकर वापस आ गए। योगीराज के हाथ पर मिठाई का एक बड़ा थाल देखकर वे वडे ब्राब्चर्यान्वित हुए। उन्होने उसमे से बहुत-सी मिठाई इन्हें साने के लिए दी । वह इतनी अधिक मात्रा मे थी कि इसे गाते-वाते अघा गए। यह मिटाई ठीक घण्टेवाले की मिठाई जैसी ही थी। इससे वे वडे चिकत हुए। जब तक उन्होंने मिठाई खाई तव तक यह थाल योगीराज के हाथ मे रहा। खा नेने के बाद उन्हें नदी मे जाकर हाथ-मुह प्रक्षालन की ब्राजा दी गई। ये दोनो कुछ ठिठक गए क्यों कि जब वे भ्राचमन करने नदी पर गए थे तव उन्होंने एक वडा रोछ देया था। भ्रवधूनजी ने कहा, ''जात्रो, भय की कोई वात नहीं है।'' दोनो गुफा में निकलकर चले किन्तु उनके मन मे रीछ का भय बना रहा। जब वे गए तो वहाँ उन्हें कोई रीछ दिखाई नहीं दिया और जब वे लौटकर ग्राए तो उन्होंने गुफा में मिठाई के याल को न पाकर बड़ा म्राश्चर्य किया। ये दोनो ही वाते उनके लिए वडे ग्राश्चर्य मे डुवा देने वाली थी। इनके सत्सग से युवक योगियो ने अपूर्व सुख-लाभ किया। गुरुदेव जिस पण्डित की दुकान मे चावल, मनेखन, नमक लाते थे दोनो ब्रह्मचारियो ने उनके साथ जाने का ग्रागह किया।

एक दिन की बात है, दोनो ब्रह्मचारियों को साथ लेकर गये। योगीजी ने वहां नदी स्नान किया। इन दोनों ने भी स्नान किया ग्रौर ग्राकर किनारे पर बैठ गए। किन्तु स्वामीजी महाराज गहरे जल में उत्तर गए श्रौर एक बड़े जोर की डुवकी लगाई। जब वे एक घण्टे तक बाहिर नहीं निकले तब इन दोनों को बड़ी चिन्ता हुई। प्रतिपल

उनके डूव जाने की ग्रागका वढने लगी। एव काग्मीरी सुसलमान गोताखोर को वुनाकर उन्हें जल में निकलवाया गया। जब वे निकले तो वे वद्धपद्मासन ग्रवस्था में थे। थोडी देर के परचात् उन्होंने एक लम्बा ग्वास लिया ग्रीर ग्राखे खोली। उनकी ग्रावे ग्रागरों के समान लाल थी। उन्हें देखकर मभी लोग वडे भयभीत हुए। वे दोनों त्रह्मचारियों में नाराज हुए ग्रीर कहा, "तुमने हमें क्यों निकाला? तुम तो जानते हो कि हम स्वय ही जलममाधि लेने के परचात् निकल ग्राया करते हैं। इसके दण्ड-स्वरूप ग्राज तुम्हें भोजन नहीं मिलेगा।" उस दिन इन तीनों ने भोजन नहीं किया। उन्होंने चार दिन तक ग्रह्मचारियों को निराहार रखा ग्रीर साथ ही स्वय भी निराहार रहे। नीनों ही चार दिन तक ध्यान-ममाधि रत रहे। पाचवें दिन ग्रपने समक्ष विठाकर रात्रि के ११ वजे में नेकर २ वजे तक उपदेशामृत की वर्षा की। इसके परचात् श्यान करने की ग्राजा हुई। दोनों त्रह्मचारियों को नीद नहीं ग्राई ग्रीर एक घटे वाद हीं माधना का समय समझकर उठे, नदीं में हाय-मुह धोने के लिए चले गए। जब लीटे तो ग्या देखते हैं कि उनके गुरुदेव ग्रपने ग्रासन पर विराजमान नहीं है। ये दोनों ग्रपनी गुका में चले गए। ग्रपने-ग्रपने ग्रासन पर वैठकर ग्रभ्यास प्रारभ किया किन्तु ध्याना-विस्थित न हो मके। मन ही नहीं लगा। जब प्रात होने पर भी वे कही दिखाई न दिए तो उन्हें महान् दुग हुगा। तीन महीने तक ग्रहानिंग उनकी खोज करते रहे पर उनका कही भी पना न चला।

यहे पुण्य कर्मों में उन्हें यह अवसर मिला था। यह उन्हें सदैव स्मरण रहा। उनकी जितेन्द्रियना, नपञ्चर्या, योगनिष्ठा, इन्हरहितता और रागडेपहीनता सदैव युवक योगियों के लिए स्मरणीय रही। इनके महान् उपकार, इनकी दया और वात्सल्य भाव को याद करके दोनों के नेत्रों से अनवरत अध्युधारा प्रवाहित होने लगनी थी। वे उनको निन्य नाल से निकलवाने की अपनी गलती का अत्यन्त पञ्चात्ताप करने लगे। सोनम्गं नक उन्हें ढूटा किन्तु उनका कही भी पता न चला। सिंधु नदी के किनारे दोनों निराग होकर घूमते-फिरते मई गाव में पहुचे। वहा पर नदी के किनारे कई दिनों तक रहे। कोई लाद्य-सामग्री उपलब्ध न हो सकी अत शहतूत खाकर निर्वाह किया। महीनों तक नदी का किनारा ही उनका निवास स्थान था और शहतूत भोजन। इसके याद मई गाव में चनार के पेड के नीचे नहर के किनारे भगवती के मन्दिर में रात्रि को सोने लग गए थे किन्तु अधेरे में ही उठकर नदी के किनारे चले जाया करते थे।

# भगवती देवी की विशेष कृपा

महेश्वरनाथ नामक ब्राह्मण नित्यप्रति भगवती को ग्राधा सेर खीर का भोग लगाया करना था। एक दिन व्यासदेवजी ग्रीर राम ने सोचा कि देवता तो केवल भावना, भाव ग्रीर भिवत से प्रमन्न होते हैं। भक्त लोग मूर्ति के ग्रागे भोजन रखकर स्वय ही देवी का प्रसाद मानकर उसे द्या लिया करते हैं। देवी तथा देवता तो किसी प्रकार का भोग खाने नहीं। उस ग्रवसर में लाभ उठाना चाहिए। वे दोनो ग्राजकल शहतूनो पर ही निर्वाह कर रहे थे ग्रत देवी के प्रसाद रूप में उस दीर को दोनो ने बाट कर खाना प्रारम कर दिया। खीर खाने के बाद मिट्टी की तक्तरी को चनार के पेट के नीचे जट के पास रख दिया करने। रात को वहीं पर शयन करके प्रात ४ वजे ही उठकर नदी पर साधना के लिए चले जाते थे। दूसरे दिन प्रात काल जव

महेश्वरनाथ मन्दिर मे ग्राया ग्रीर खीर की तन्तरी खाली देखी तो ग्रत्यन्त प्रसन्न हग्रा कि भगवती ने उसके भोग को ग्रहण किया है। वह इसी प्रकार खीर का भोग देवी को पहिले की ग्रपेक्षा ग्रधिक लगाता रहा ग्रीर उस भोग को दोनो ब्रह्मचारी नित्यप्रति खाते रहे। कई दिनो तक यही कम चलता रहा। एक दिन अचानक महेश्वरनाथ इन दोनो से नदी के किनारे मिला। इसने दोनो से निवेदन किया कि वे उसके मकान पर भोजन किया करे । जब व्यासदेवजी ने इसे स्वीकार नही किया तो उसने भोजन को नदी तट पर ही पहुचाने के लिए प्रार्थना की । ब्रह्मचारोजी ने अपनी स्वीकृति दे दी। ग्रव महेश्वरनाथ नित्यप्रति दोनो के लिए भोजन वनवाकर स्वय ही देने के लिए ग्राने लगा। एक दिन उसने व्यासदेवजी से कहा कि ग्राप ग्रीर भगवती दोनों मेरे ग्रन्न को ग्रहण करके मुभपर वडी कृपा करते हैं, इसके लिए मैं ग्राप दोनो का वडा कृतज हू। इस पर वह वड जोर का कहकहाटा लगाकर हमे और खीर के भोग का सारा वृत्तान्त सविस्तार कह सुनाया। एक दिन उन्होने पूछा कि तुम किस उद्देश्य से भगवती की श्रीर हमारी सेवा इतनी श्रद्धा ग्रीर भिनत से करते हो। इस प्रवन को मुनकर महेव्वर-नाथ ने अपना सारा हृदय खोलकर उनके सामने रख दिया। उसके कोई सन्तान नहीं थी। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार अपुत्र की मरने के वाद गति नहीं होती। इसीलिए वह वडा चिन्तित रहता था। पुत्र-प्राप्ति की उसे वडी उत्कट ग्रिभिलापा थी। व्यास-देवजी ने कहा, "तुम जैसे अनन्य भक्त की मनोकामना अवव्य पूरी होनी चाहिए। जाओ, तुम्हारे एक ही पुत्र नही किन्तु इतने पुत्र होगे कि तुम उनका पालन-पोपण करते थक जाओंगे। परन्तु एक वात है, आजसे हम तुम्हारा भोजन ग्रहण नहीं करेंगे क्योंकि तुम सकाम-भाव से सेवा करते थे। तुम्हारी सेवा के फलस्वरूप तुम्हे पुत्रप्राप्ति का वरदान मिल गया है ग्रत ग्रव तुम किसी प्रकार का कष्ट मत उठाग्रो ग्रौर ग्रपना कार्य करो।" कुछ वर्षों के पश्चात् व्यासदेवजी घूमते-फिरते पुन मई गाव मे ग्रा निकले । महेरवरनाथ का पता लगाया ग्रीर उसके घर गए। वहा पर वालको से भरा-पुरा परिवार देखकर वडे प्रसन्त हुए। क्यो न होते, युवक योगी का ग्राञीर्वाद फलीभूत हुआ था। होता भी क्यो नहीं वे गत कई वर्षों से यम और नियमो का वडी कठोरता से पालन कर रहे थे। ग्रसत्य-भाषण उन्होंने कभी किया ही नहीं। ऐसे ही सत्यनिष्ठ योगियों को सत्यसिद्धि प्राप्त होती है। उनकी वाणी ग्रमोघ हो जाती है। उनकी वाणी से शाप, वरदान तथा ग्राझीर्वाद जो निकलते हैं वे सब सत्य होते है। इन्ही योगियों के लिए कहा गया है कि "सत्यप्रतिष्ठया कियाफलाश्रयत्वम्।"

# मुफ्ती वाग मे निवास

सयमजयी तथा तप पूत व्यासदेवजी की धवल यज पताका सर्वत्र फहराने लगी। इन्होने यम और नियमो का निष्ठापूर्वक अनुष्ठान किया था। उनकी वाणी अर्थवती होगई थी। वे जो अपनी वाणी से उच्चारण करते थे वह सत्य का रूप धारण कर लेता था। उनके वरदान सदैव सफल होते थे। महेश्वरनाथ को पुत्रवान् होने का वरदान उन्होने दिया था। इस वरदान के फलस्वरूप उसके कितने ही पुत्र उत्पन्न हुए। इस प्रकार के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं किन्तु स्थानाभाव के कारण उनका उल्लेख यहा नहीं किया जा सकता। इनके वरदानो की सफलता की वार्ते काश्मीर में सर्वत्र वायु के समान फैल गई। लोग सदा उनसे आशीर्वाद प्राप्ते करने के

लिए इच्छुक रहते थे। उनके प्रति लोगों की वडी श्रद्धा ग्रीर भिक्त उत्पन्न होगई थी। यद्यिष यम ग्रीर नियम में वे प्रतिष्ठित थे ग्रीर इसके परिणामस्वरूप उन्हें ग्रनेक मिद्धिया भी प्राप्त थी, किन्तु वे इनका प्रदर्शन कभी नहीं करते थे। यदि उनसे ग्रामीर्वाद प्राप्त करके किसी को कार्य-सिद्धि प्राप्त हो जाती ग्रीर वह हार्दिक भावों से उनकी कृपा के लिए कृतज्ञता प्रकट करता तो वे सदैव विनम्रभाव से यही कहा करते थे कि यह सब प्रभुकृपा का प्रमाद है, हमारे में ऐसी कोई विशेष शक्ति नहीं जिसके परिणामस्वरूप ग्रापको उष्ट प्राप्ति हुई हो। परमात्मा की कृपा के विना कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता।

मई गाव से स्तीरभवानी को व्यासदेवजी ने प्रस्थान किया। यह स्थान गाधरवल के समीप ही है। यहा भगवती का मन्दिर है, इसके दर्शन किये। यहा से वे गाधरवल ग्राए ग्रीर फिर वहा में हार्वन भील चले गए। यहा पर पूर्णिसह नाम का एक मिक्स चीकीदार रहता था। इसने ग्रादरपूर्वक व्यामदेवजी को प्रणाम किया ग्रीर मेवा के लिए ग्राजा प्रदान करने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि यह स्थान श्रार सवा क लिए श्रांशा प्रदान करने का प्रायना का । उन्होन कहा कि यह स्थान हमें बहुन पमन्द ग्राया है। यदि कोई एकान्त-सा स्थान हमें यहा मिल जाए तो हम यहा पर कुछ दिन नक निवास करना चाहते हूं। उसने उन्हें ग्रपने भाई रगीलिंसह के पास जाने के लिए कहा। यह पिस्सू के वाग में चौकीदारी करता था। यह भी यहा एकान्त स्थान था। वे रगीलिंसह के पास गए ग्रीर सारा वृत्तान्त कह मुनाया। यह उन दोनो ब्रह्मचारियों को मुपनी वाग में ले गया। यह वाग हार्वन भील में लग-भग ग्राधा मील दूर था। यह वाग पिष्टत मुकुन्दजू की जागीर में था। वे यहा पर सपत्नीक रहते थे। दोनों ने वानप्रस्थायम धारण किया हुग्ना था। रगीलिंसह दोनों ब्रह्मचारियों को लेकर उनके पास गया ग्रीर निवेदन किया कि ये दोनों कुछ दिन तक पता जिल्हा करने स्थान हुग्ना था। यह सनकर पण्डित यहाँ निवास करके साधना ग्रीर ग्रम्यास करना चाहते हैं। यह सुनेकर पण्डित मुकुन्दजू को अगर हुप हुआ और तुरन्त अगने कुठार के ऊपर का एक वडा कमरा निवास के लिए उन्हें दे दिया। उन पण्डितजी के दो लडके थे। दोनो ही शहर मे रहते ये । एक पटवारी था तथा दूसरा हरिपर्वत पर मदिर मे नौकर था। मुकुन्दजू के बहुत श्राग्रह करने पर व्यासदेवजी ने उनके पास भोजन करना स्वीकार कर लिया। दोनो श्राग्रह करन पर व्यानद्वजा न उनक पास माजन करना स्वाकार कर लिया। दानी श्रानन्दपूर्वक वहा रहने लगे। मृकुन्दजू ने इनके रहने के कमरे मे दरी कालीन श्रादि विख्या दिए श्रीर श्रोदने-विद्याने के लिए भी पर्याप्त वस्त्र दे दिए। दोनो ब्रह्मचारी प्रतिदिन हार्वन भील पर श्रमणार्थ जाया करते थे। यहा से एक मील की दूरी पर महाराजा काव्मीर की एक वडी जिकारगाह थी। इसमे विभिन्न प्रकार के वन्य पशु रहते थे, जिनमे बाध, रीछ, सूत्रर, वारहसीगे श्रादि प्रमुख थे। यह जिकारगाह मैकटो मीलो तक विस्तृत थी। हार्वन भील से लेकर लगभग पहलगाव तक फेली नका नाला तक विन्तृत था। हायन काल स लकर लगमग पहलगाय तक फला हुई थी। उस शिकारगाह में तारसर, मारसर, चन्द्रमर तथा विवेकसर ग्रादि ग्रनेक भीलें थी। तारसर भील हार्वन भील से ३० मील दूर थी, तो भी इतनी दूर से उसका पानी उसमें ग्राना था। सारे श्रीनगर में पीने का पानी यही से जाता था। इस हार्वन भील का जब निर्माण किया गया था तब इसके ऊपर से ६-१० गाव उठाए गए थे। ब्रह्मचारीजी जब इस भील पर श्रमण के लिए जाते तब लोगों से प्रायः ग्रपने गुरुदेव के विषय में पूछा करते थे। उनके पुन दर्शन करने की इन्हें उत्कट ग्रभिलाषा थी। इस सम्बन्ध मे इन्होने पण्डित मुकुन्दज् तथा रगीलिसह से भी बातचीत की थी।

## तारासिंह से पुनः समागम

प्रति रिववार को प्राय श्रीनगर निवासी हार्वन भील पर सैर करने के लिए ग्राया करते थे। दैवयोग से एक दिन तारासिंह भी श्रपने साथियो सिंहत वहा ग्रा निकले। ये व्यासदेवजी तथा राम की खोज मे थे। तारासिंह ने इनकी वडी सहायता की थी। अपने पास इन्हें रखा था। इनके रहने की व्यवस्था की थी। ये दोनो इन्हें सूचित किए विना ही अवधूत परमानन्दजी के साथ सोनमर्ग की श्रोर चले गए थे। तभी से तारासिंह इनकी खोज कर रहे थे। वे प्राय लोगो से इनके विपय में पूछा करते थे। ग्रबकी बार जब वह हार्वन भील पर ग्राए तब यहा के चौकीदार पूर्णासह से इन दोनो ब्रह्मचारियों के वारे में पूछताछ करने पर विदित हुग्रा कि वे इधर ही रहते है। व्यासदेवजी तथा राम दोनो हार्वन भील पर एक एकान्त स्थान पर समाधि लगाने म्राया करते थे। इस रविवार को भी वे म्राए ग्रीर एकान्त मे एक पेड के नीचे समाधिस्य होकर बैठ गए। पूर्णसिंह ने यह सब समाचार तारासिंह को सुना दिया और एक मुसलमान लडके को जहां वे दोनों बैठे थे वहा जाकर बुला लाने के लिए कहा। उसने ग्राकर सूचित किया कि वे दोनो ग्राखे वन्दे करके वैठे हैं। मेरे पुकारने पर भी उन्होंने ग्राखे नहीं खोली ग्रीर न मेरी वात का कुछ उत्तर ही दिया। उस मुसलमान लडके को लेकर तारासिंह समाधिस्थ ब्रह्मचारियों के पास चले गए ग्रीर जब तक उनका समाधि से उत्थान नहीं हुआ तव तक वही बैठे रहे। सूर्यास्त होने पर दोनो युवक-योगाभ्यासियो की समाधि टूटी ग्रौर वे उठकर भील पर भ्रमण करने के लिए चल दिए। तारासिंह श्रीर उनके साथी सामने से ग्राकर उन्हें मिले। सवने दोनो को प्रणाम किया। तारासिह ने विनम्र भाव से निवेदन किया कि ग्राप तो यहा समाधिस्थ होकर बैठे है और हम लोग कई मास से आपकी खोज कर रहे है। आप विना ही सूचना दिए चले गए, इसलिए हमे वडी परेशानी रही। ग्राजतक ग्रापका कुछ भी पता न लग सका। ग्रांज ग्रचानक ही ग्रापको यहा समाधिस्थ देखकर चित्त को वडा सन्तोष हुग्रा। ग्रब तो ग्राप योग-पारगत होगए हो। कई-कई घण्टे की समाधि का भापको अभ्यास होगया है। ऐसी छोटी स्रायु में ही स्राप एक बड़े योगी वन गए हो। श्रापकी चिराभिलाषा पूर्ण हुई, इसकी हमे वडी प्रसन्नता है। तारासिह ने उन्हें ग्रपने साथ ले जाने के लिए निवेदन किया, किन्तु उन्होने स्वीकार नही किया और रात हो जाने के कारण उन्हे श्रीनगर जाने का ग्रादेश दिया ग्रीर कहा कि हमारे भागने का कारण और इस समय तक रहने के स्थानों के विषय में फिर कभी वताया जाएगा। तारासिंह ने कहा कि वह आगामी रविवार को तागा लेकर आएगा, तव आप लोग हमारे साथ चलने के लिए तैयार रहें। पूर्व निश्चयानुसार तारासिह तागा लेकर दोनो ब्रह्मचारियों को लिवा लाने के लिए आया। वे दोनो उसके साथ चल दिए। व्यास-देवजी ने दो-तीन घण्टे बैठकर साढे चार मास का अपना सारा विवरण तारासिह को सुनाया। वह सब घटनाए सुनकर बड़ा श्रचिम्भत हुग्रा। उससे व्यासदेवजी को मालूम हुग्रा कि उसने श्रवधूत परमानन्दजी को दूध-गगा के किनारे श्रमण करते हुए देखा था किन्तु उसके बाद कभी उनके दर्शन-लाभ नहीं हुए। वे तीन-चार दिन तक तारासिंह के पास ठहरे किन्तु श्रव उन्हें ग्रपने गुरुदेव की तीव्र स्मृति हो ग्राई ग्रीर उन्होंने इन्हें ढूंढने का पुनः निरुचय किया। तारासिंह के पास ग्राने के वाद वे एक दिन पुनः हार्वन भील पर गए। वहां उन्हें एक महाराजगंज का पंजावी दुकानदार मिला। उससे वहुत देर तक वार्तालाप करने के वाद व्यासदेवजी के उससे ग्रपने गुरुदेव ग्रवधूतजी के विषय में पूछने पर विदित हुग्रा कि ग्राषाढ़ मास में उसने इन्हें दूधगंगा के किनारे रहते हुए देखा था। वे प्रायः मौन रहते थे। जन-सम्पर्क उन्हें रिचकर न था। सदा एकान्त में रहते थे। वड़े मिताहारी थे। रुपया पैसा कुछ ग्रपने पास नहीं रखते थे। एक कौपीन तथा एक फटी-सी लोई ही उनकी सम्पत्ति थी। इसी मास में मैंने उन्हें किराया देकर वस में विठाया था। उन्होंने कहा था कि वे ग्रव गंगोत्री जाएंगे ग्रीर उधर ही कहीं निवास करेंगे। गुरुदेव के विषय में यह सब समाचार सुन-कर व्यासदेवजी का मन पुनः उद्धिग्न-सा होगया। एक वार फिर ग्रपने गुरु की खोज करने का निचव्य किया। तारासिंह को ग्रपने विचारों से सूचित करके जम्बू पैदल ही जाने का संकल्प कर लिया।

### ग्रमृतसर में निवास

व्यासदेवजी ग्रौर राम श्रीनगर से चलकर पामपुर, काजीकुण्ड, विनहाल, रामवन, वटोतादि स्थानों पर होते हुए ऊधमपुर पहुंचे । यहां पर श्री रघुनाथजी के मंदिर में १५ दिन तक निवास किया । इसके वाद वैष्णवदेवी की यात्रा की । कटरे में कुछ दिन तक ठहरे। इसके पश्चात् जम्वू पधारे ग्रौर यहां पर भी एक मंदिर में ही निवास किया। लगभग एक सप्ताह तक यहां ठहरे। दिवाली के पश्चात् रेलगाड़ी द्वारा ग्रमृतसर पहुंचे । यहां पर लोगड़ ग्रार्यसमाज में ठहरे । यह सार्वजनिक स्थान था भ्रतः भ्रध्ययन भ्रौर साधन में वड़ी बाधा उपस्थित होती थी । किसी विद्वान् पण्डित से अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य पढ्ने की वड़ी अभिलापा थी। काश्मीर जाने का भी प्रयान कारण यही था किन्तु वहां पर किसी वैयाकरण विद्वान् के न मिलने के कारण-वश उनकी व्याकरण पढ़ने की इच्छा पूरी नहीं हो सकी थी। इन्होंने लाला मैयादास से अपने निवासादि का प्रवंध करने तथा किसी योग्य संस्कृत के विद्वान् से परिचय करवा देने के लिए निवेदन किया। लालाजी दूसरे दिन प्रातः ६ वजे के लगभग इन दोनों ब्रह्मचारियों को लेकर स्वांक मण्डी में पण्डित हरिश्चन्द्रजी के पास गए। वाजार नरसिंहदास में मैयादास की लाला शिवसहायमल महेश्वरी से भेंट हुई। जब उन्हें यह मालूम हुग्रा कि लालाजी दो ब्रह्मचारियों के निवास ग्रौर ग्रध्ययन की व्यवस्था करने जा रहे हैं तब उन्होंने कहा कि इन्हें हमारी बैठक में, जो ग्रहलूवाले कटरे में है, ठहरा दो। ये दोनों भोजन भी मेरे मकान पर ही कर लिया करेंगे।

लाला शिवसहायमल से संपर्क व्यासदेवजी के निवास तथा भोजन की व्यवस्था लाला शिवसहाय के मकान पर करके लाला मैयादास पण्डित हरिश्चन्द्र से व्यवस्था लाला शिवसहाय के मकान पर करके लाला मैयादास पण्डित हरिश्चन्द्र से मिलाने के लिए ले गए। उनसे वार्तालाप करने से विदित हुग्रा कि इधर तो कोई ग्राउटाध्यायी ग्रीर महाभाष्य का विद्वान् नहीं है ग्रीर न कोई विद्यार्थी इन ग्रंथों को ग्राउटाध्यायी ग्रीर महाभाष्य का विद्वान् नहीं है ग्रीर न कोई विद्यार्थी इन ग्रंथों को पढ़ता ही है। मैरे भाई पण्डित पढ़ता ही है। मैरे तो ग्राजकल दर्शनों का ग्रव्ययन कर रहा हूं। मेरे भाई पण्डित कन्हैयालालजी व्याकरण पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते। वे सिद्धान्त-कन्हैयालालजी व्याकरण पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते। वे सिद्धान्त-कन्हैयालालजी व्याकरण पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते। वे सिद्धान्त-कन्हैयालालजी व्याकरण पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते। वे सिद्धान्त-कन्हैयालालजी व्याकरण पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते। वे सिद्धान्त-कन्हैयालालजी व्याकरण पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते। वे सिद्धान्त-कन्हैयालालजी व्याकरण पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते। वे सिद्धान्त-कन्हियालालजी व्याकरण पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते। वे सिद्धान्त-कन्हियालालजी व्याकरण पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते। वे सिद्धान्त-कन्हियालालजी व्याकरण पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते। वे सिद्धान्त-कन्हियालालजी व्याकरण पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते। वे सिद्धान्त-कन्हियालालजी व्याकरण पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते हैं। वे सिद्धान्ति के पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते। वे सिद्धानिक क्राव्याकरण पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं कि पढ़ाते हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं कि ति हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों को नहीं कि ति हैं। किन्तु वे इन दो ग्रंथों के किन्तु के विक्य किन्तु के विक्य किन्तु के विक्य किन्तु के विक्य किन्तु क

लौट ग्राए । इन्होने इनके निवास का प्रविच ग्रपनी वैठक मे ग्रीर भोजन की व्यवस्था ग्रपने घर पर कर दी ।

ग्रह्लूवाले कटरे मे इन लालाजी ने एक दुकान पर एक वैठक किराये पर ले रखी थी। यहा पर वे केवल दो घण्टे के लगभग प्रतिदिन वैठते थे। इन्होने ग्रपना सव कारोबार छोड दिया था, केवल हुडियो द्वारा रुपया व्याज पर दिया करते थे। इनके कोई लडका नही था। केवल दो लडिकया थी जिनका विवाह होगया था ग्रीर अपने व्वसुर-गृह मे रहती थी। ये अपने घर मे अकेले ही रहते थे। एक नौकर था जो इनके लिए भोजन बना दिया करता था। ये अच्छे पढे-लिले थे। अच्छे बनाढ्य थे। अच्छे संभ्रान्त व्यक्ति थे। इनके दादा रायवहादुर नर्रामहदास महाराजा रणजीतिसह के कोपाध्यक्ष थे। ब्रह्मचारियों को ग्रभी नाला शिवमहायमल के पान रहते केवल ३-४ दिन ही हुए थे। वे सोचने लगे कि इन ब्रह्मचारियों के विषय में विना ही कुछ जाने-वूभे इन्हें पास रखना उचित नहीं था क्यों कि 'ग्रजानकुलगीलस्य वासों देयों न कहिचित्'। ग्रत इन विद्यार्थियों की परीक्षा लेने के लिए उन्होंने ग्रपनी पेटी में से पचास रुपये निकालकर वाहर रख दिए ग्रार उसे खुली छोडकर स्वय ग्रन्यत्र चले गए। जब ब्रह्मचारी बैठक में लालाजी के घर पर भोजन करने चले तो उन्होंने पेटी को खुला पाया । उन्होने पेटी को वन्द करके चावी ग्रपने पास रस ली ग्रीर घर जाकर चावी लालाजी को दे दी ग्रांर वाहर जो पचाम रपये पडे थे वे भी उन्हें दे दिए। लालाजी ने चावी ले ली ग्रौर बैठक मे जाकर पेटी खोलकर देखा तो रुपये पूरे मिले । तव से उन्हें इन दोनो ब्रह्मचारियो पर पूर्ण विश्वान होगया । उन पर मर्न्टेह करने के कारण उन्होंने वडा पश्चात्ताप किया । ग्रव ये इन दोनो से वडा प्यार करने लगे ग्रौर उनके लिए वस्त्रादि सव वनवा दिए। यज्ञ के लिए यृत तथा सामग्री की भी व्यवस्था कर दी और इनसे कहा कि जब कभी ग्रापको किसी वस्तु की ग्राव-व्यकता हो तो मुभे नि सकोच भाव से कहा करो, मै तुरन्त उसकी व्यवस्था कर दिया करूगा। कम्पनी वाग तथा नहर पर कभी-कभी भ्रमण के लिए जाया करते थे। यहा पर इनकी सन्त बुद्धिप्रकाण से भेट हुई। इस प्रकार मे लाला शिवसहायमल के पास पाच मास तक व्यासदेवजी तथा राम ने निवास किया।

# श्री स्रवधूत परमानन्दजी की पुन. खोज

व्यासदेवजी ने लाला जिवसहायमल से एक दिन धन्यवाद देते हुए कहा कि हमने पाच मास ग्रापके पास वडे सुख से व्यतीत किए हैं। हमारे गुरु ग्रवधूत परमानन्दजी हमें छोड़कर कही ग्रन्थत्र चले गये हैं ग्रत ग्रव हम उन्हें ढूढ़ने के लिए गगोत्तरी की ग्रीर जाना चाहते हैं। सर्दी समाप्त होगई है। हिमालय में जाने के लिए उपयुक्त मौसम है। लालाजी व्यासदेवजी की तपस्या, तिनिक्षा, भगवद्भ क्ति, स्वाभाविक मरलता, योगनिष्ठा, ग्रध्ययनरुचि, सत्यपरायणतादि गुणो पर वडे ग्रनुरक्त थे। जब उन्हें व्यासदेवजी ने ग्रमृतसर से ग्रन्थत्र जाने की ग्रिभलापा व्यक्त की तो वे वडे उद्विग्न से हो गए। उन्हें इनका ग्रमृतसर से कही ग्रीर जाना रुचिकर नहीं लगा। वे इनसे वडा स्नेह करते थे। उनके दृढ निश्चय को देखकर उन्हें जाने की ग्रनुमित तो दे दी किन्तु उनसे कहा कि ग्राप दोनों के भोजन, वस्त्र, पुस्तक, यात्रादि का सारा व्यय मैं करूगा। ग्रभी ग्राप छ मास का व्यय ग्रपने साथ ले जाइए। इसके पञ्चात् ग्राप जहां भी हो

मुफ्ते एक पत्र लिय दीजिएगा, में तुरन्त रुपया भेज दिया करूगा। मेरे पास प्रभु की छुपा से पर्याप्त रुपया है। व्यय बहुत थोड़ा है। मेरे पुत्र तो कोई है नही। दो लडिकया है जिनका विवाह बड़े बनाढ्य परिवारों में किया है। वे अपने-अपने घरों में वटी मुगी है। उमलिए आपका व्यय वहन करने में मुक्ते किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। नाला शिवसहाय के बहुत आग्रह करने पर व्यासदेवजी ने अपना तथा राम का व्यय उनमें लेना म्बीकार कर लिया।

स्रमृतसर से प्रस्थान—दोनो ब्रह्मचारी स्रमृतसर में रेलगाडी में सवार होकर हिरद्वार पहुंचे। यहां जाकर एक धर्मशाला में निवास किया। राम ने हिमालय पर स्वामी परमानन्दजी स्रवधून की पोज करने के लिए जाने की स्रिनच्छा प्रकट की स्रोर व्यासदेवजी में कहा कि वह हिरद्वार से नीचे के प्रदेशों में स्रवधूतजी की खोज करेगा। व्यासजी ने स्रपने हिमालय-गमन का निश्चय दृढ रया। इग प्रकार दोनों मित्र हिरद्वार पर स्राकर स्रलग होगए। व्यासजी उत्तरावण्ड की स्रोर चले गए स्रीर राम ने पजाव की स्रोर प्रस्थान किया। ग्वामी परमानन्दजी के विषय में दोनों में यह निर्णय हुस्रा कि उन दोनों में में जिस किसी को भी वे मिले वह उन्हें स्रपने साथ लेकर स्रमृतसर में लाता शिवसहायजी के मकान पर ले जाए। यदि यह सभव न हो तो इसकी सूचना उनके पास स्रवश्य पहुंचा दे।

व्यागदेवजी ने राम से विदा लेकर हिमालय की ग्रोर प्रस्थान किया। लगभग सारे ही हिमालय का पर्यटन ये प्रथम ही अपने प्रारंभिक साधना काल में कर चुके थे। जमनोती, गगोत्री, केटारनाथ तथा बद्रीनाथ चारो धामो की यात्रा भी ग्रापने कर ली थी। उत्रर के सभी रास्तों से गुपरिचित थे। उन दिनो इन धामो की यात्रा की महान् कठिनाज्यों को वे जानते थे किन्तु परमानन्दजी अवधून योग-शिक्षा में उनके प्रथम गुरु थे। उनके प्रति उनकी बटी निष्ठा, भिक्त तथा श्रद्धा थी। वे उन्हें एक दिन ग्रचानक ही ग्रकेले छोउकर युचित किए विना ही कही चले गए। इसका उन्हें महान् दूर्य था । बटे बिन्तिन रहते थे । उनको ढूढने के लिए कई योजनाए बनाई ग्रीर उन्हें कार्यमप में परिणत भी किया किन्तु अभी तक उन्हें कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई। उसीलिए हिमालय के दुर्गम-मार्गो, गगन-चुम्बी चोटियो तथा हिमाच्छादित पथी और सानपानादि की कठिनाउँयों की किचिन्मात्र भी परवाह न करके गुरु की खोज के लिए चल पड़े। पाच महीने तक जगलो, बीहट बनो, पर्वेनो, गिरिकदराश्रो श्रादि सभी ग्यानी पर उन्हें टूटा किन्तु कही पर भी उनका पता न लग सका। ग्रत हताश ही कर लीट ग्राए। यह शायद ग्राञ्चिन का महीना था। हरिद्वार ग्राकर ग्राप कनखल गए। यहा त्राकर स्वामी चेतनदेव की कुटिया मे ठहरे। यहा पर एक युवक सन्त से समागम हुआ। प्रतिदिन के मेलजोल से दोनों को ही एक दूसरे के प्रति आकर्पण हो गया । जब व्यासदेवजी ने सहारनपुर जिले मे गगा की नहर के किनारे जाने का प्रपना निश्चय प्रकट किया तो वह भी इनके साथ जाने के लिए समुद्यत होगया।

मधुकरी का प्रथम श्रमुभव—ज्यासदेवजी श्रपना भोजन सदैव स्वय ही वनाया करते थे। व्यय के लिए रूपए भी उनके पास रहते थे। श्रव लाला शिवसहाय ने स्वय ही श्रायह करके उनके सारे व्यय का उत्तरदायित्व ले लिया था श्रीर छ मास का पूरा व्यय उन्हें दे दिया था। इसलिए भिक्षा-याचना का कभी उन्हें श्रवसर ही नहीं मिला। रुपया पास होते हुए भिक्षा मागना, श्रपना किसी प्रकार का भार समाज पर डालना, किसी की कृपा के भिखारी वनना वे महान् पाप समभते थे। एक दिन चलते-चलते एक गाव मे जा निकले। जब भोजन का समय हुग्रा तो उस गाव मे ग्राट की दुकान ढूढने लगे किन्तु वहा पर कोई परचूनी की दुकान ही नहीं थी। दो-नीन दिन तक इसी प्रकार भूखे रहकर व्यतीत किए। इनका साथी सन्त भूख से व्याकुल हो उठा ग्रीर गाव मे भिक्षा याचना के लिए चल दिया। उसको जाता देखकर व्यासदेवजी भी उसके साथ हो लिए। दोनो ने मिलकर गाव की एक गली मे प्रवेश किया। एक गृहस्थी के मकान पर गए। व्यासजी तो वाहिर द्वार पर खडे रहे और दूसरे सन्त ने भीतर जाकर ग्रागन के द्वार के समीप वाले किनारे पर खडे होकर भिक्षा-याचना की। उस समय लगभग पैतीस साल की एक महिला घर मे भोजन बना रही थी। उसका स्वभाव वडा कोधी था। वात-वात पर कुद्ध हो जाया करती थी, चिंढ जाती थी ग्रीर मरने-मारने को तैयार हो जाती थी। सन्त की ग्रावाज मुनत ही वह कोव से लाल होगई ग्रौर जलती हुई लकडी चूल्हे मे से निकालकर ग्रपने हाथ में नेकर तुरन्त रसोई से बाहिर निकलकर ग्रागन में ग्रा गई ग्रीर भिक्षुक सन्त को मारने के लिए समुद्यत होगई। घर से बाहिर निकलकर दोनो पर गालियों की वौछार की। इस दु जद दृश्य को देखकर सव लोग गली मे एकत्रित होगए। सभी वडे दु खित हुए। उस ग्रायाप्ट, र्धर्मविहीन स्रौर कोधी महिला के निन्दनीय कार्य के लिए उनसे अमा-याचना की। इतने में ही वहा एक सज्जन कधे पर हल रखे हुए ग्रा निकला। जब उसे सारा वृत्तान्त विदित हुग्रा तो उसे वडा पञ्चात्ताप हुग्रा ग्रीर वडे विनम्रभाव से उसने व्यासदेवजी को ग्रपने घर भोजन करने के लिए निमत्रित किया। उन्होने उसके घर पर जाना स्वीकार नहीं किया। इस पर उसने उन्हें निवेदन किया कि वे सामने वाले कूए पर बैठे । व्यासदेवजी तथा उनका साथी सन्त दोनो गाव से वाहिर कूए पर जा वैठे । थोडी देर बाद उस किसान की धर्मपत्नी भोजन लेकर ग्राई ग्रीर वर्डे ग्रादर ग्रीर शिष्टता से उसने दोनो को भोजन करवाया। भिक्षा-याचना करने पर एक देवी तो सन्तो को जलती लकडी से मारने के लिए समुद्यत हुई तथा दूसरी ने उन्हे श्रद्धापूर्वक भोजन करवाया। यह ससार विभिन्नतात्रों का सगम है। इसमे कोई स्वार्थी है तो कोई परमार्थी, कोई विद्वान् है तो कोई मूर्ल, कोई इन्द्रियलोलुप है तो कोई तितिक्षु, कोई विलासी है तो कोई तपस्वी और कोई भगवद्भक्त है तो कोई नास्तिकादि । अब दूसरे सन्त ने इनका साथ छोड दिया ग्रीर वह वापस कनखल लीट गया। व्यासदेवजी ने इस घटना के पश्चात् यह निश्चय किया कि वे कभी भी भिक्षाचर्या नहीं करेगे। जीवन में प्रथम बार ही इस गाव में भिक्षा मागी थी ग्रीर वह भी तीन-चार दिन भूखे रहने के बाद । यदि गाव में परचून की कोई दुकान होती तो भिक्षा मागने का मौका ही न ग्राता, ग्राटा मोल लेकर वे स्वय भोजन बना लेते । उस महिला द्वारा ग्रपमानित होने के कटु श्रनुभव से उन्होने शिक्षा ली ग्रौर भविष्य मे कभी भिक्षा-याचना नहीं की।

बेहट मे नहर के किनारे साधना—ग्रपने साथी सन्त के कनखल लौट जाने के पश्चात् वे वेहट (सहारनपुर) चले गए ग्रौर वहा पर एक नहर के किनारे साधना करने लगे। वहा पर एक परचूनी की दुकान से ग्राटा दालादि लेने के लिए गए। दुकानदार का नाम कबूल था। जब इसने देखा कि ग्राहक एक ब्रह्मचारी है तव उसने कहा कि

त्राप निश्चिन्त भाव से अपनी साधना करे। भोजन बनाने के भभट मे न पडें। मैं आपके भोजन की पूरी व्यवस्था अपने घर पर कर देता हू। आप स्वय वहा आकर भोजन कर जाया करे अथवा नहर के किनारे जहा पर आप साधना करते हैं वहा पहुंचा दिया जाया करेगा। कवूल नित्यप्रति यथासमय व्यासदेवजी के लिए नहर पर भोजन भेजने लगा। दुकानदार की इस प्रार्थना को बडी कठिनाई से इन्होंने स्वीकार किया था।

जिस नहर पर ब्रह्मचारीजी साधना कर रहे थे वह गगा की नहर से निकाली गई थी, ग्रत छोटी-सी ही थी। इसका जल नीला था। व्यासदेवजी ने इसके नीले जल पर ग्राखे खोलकर त्राटक करना प्रारम्भ कर दिया। कई-कई घण्टे तक निर्निमेप नेत्रों से त्राटक किया करते थे। इसमें इनकी दृष्टि इतनी तेज होगई थी कि दिन के समय भी ये तारे देख सकने थे। यहा पर दो मास तक रह चुकने के पश्चात् ये रुडकी चले गए। बास्त्राध्ययन के प्रति इनकी बड़ी रुचि थी क्योंकि ये एक विद्वत्तापूर्ण तथा सर्वशास्त्रयारगत योगी वनना चाहते थे, एक साधारण योगी नही। इसलिए ग्रमृतसर जाकर विद्याध्ययन करने का पुन सकलप किया।

### पुनः ग्रमृतसर मे निवास

व्यासदेवजी के प्रारंभिक तपस्या तथा योगाभ्यास के काल के साथ ग्रमृतसर नगर का वडा सम्बन्ध है। घन्य है यह नगरी जिसमें ग्रखण्ड ब्रह्मचारी व्यासदेवजी ने वर्षों ही तपस्या की ग्रीर एक महान् योगी वने। गीतकाल में ये ग्रमृतसर में योगाभ्यास तथा विद्याध्ययन करते थे ग्रीर ग्रीष्म ऋतु में प्राय काश्मीर चले जाया करते थे। ग्रासन, प्राणायाम, घारणा, ध्यान तथा समाधि के लिए शीतप्रधान प्रदेश की ग्रावव्यकता होती है क्योंकि इनके ग्रभ्यास से मस्तिष्क में उष्णता की वृद्धि हो जाती है। इसीलिए योगी ग्रीर तपस्वी प्राय गिरिकन्दराग्रो में निवास करते हैं।

पुनः लाला शिवसहायमल की बैठक मे निवास—साधना काल मे शिवसहाय-मल से व्यासदेवजी का विशेष सम्बन्ध रहा। इन्होंने इनकी बडी सहायता की। अपने मकान में रवा श्रीर वर्षों तक इनके सारे व्यय का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया। व्यासदेवजी पूर्ववत् अव भी इनकी अहलूवाले कटरे वाली बैठक में रहने लगे। यहा पर शिवमहायजी में मिलने के लिए अनेक व्यापारी तथा धनाढ्य दुकानदार आया करते थे। ब्रह्मचारीजी के ब्रह्मचर्य, साधना, तप, त्याग, योग, विरक्ति तथा शास्त्रा-ध्ययन श्रादि के विषय में प्राय वातें हुआ करती थी। इनमें से कइयों ने व्यासदेवजी से घनिष्ठ परिचय कर लिया। इनमें से काल्लचन्द, रामभज, हसराज, मायाराम आदि मुख्य है। यहा रहते हुए अभी कुछ ही दिवस हुए थे। इनकी प्रसिद्धि सारे नगर में फैल गई। लोग दशनार्थ नित्य आने लगे। धीरे-धीरे दर्शकों का एक ताता-सा वधने लगा। इससे उनके अध्ययन तथा साधना में वाधा उपस्थित होने लगी, अत अब इन्होंने नहर के किनारे किसी एकान्त स्थान में निवास करके अध्ययन और साधना करने का निश्चय किया। जब इस निश्चय से शिवसहायमल को सूचित किया तो उनके तथा अन्य कई श्रद्धालुओं के समभाने पर इस विचार को स्थिगत कर दिया क्योंकि शीत-काल में नहर के किनारे शीत बहुत होता है। ग्रीष्म ऋतु में वहा आराम रहता है। ग्रव व्यासदेवजी ने पण्डित हरिज्वन्द्र में योगदर्शन तथा उस पर व्यास-भाष्य का अध्ययन पुन प्रारम कर दिया। दो-नीन विद्यार्थी ग्रार भी इनके साथ पढ़ने के लिए ग्राने लगे। योगदर्शन के ग्रव्ययन के नाथ ही पण्डिन कर्न्ह्यालाल में सिद्धान्तकी मुदी भी पढ़ना प्रारम कर दिया। इनके भोजन की व्यवस्था शिवसहायमल तथा काहन-चन्द्रजी ने की थी। व्यासदेवजी भोजन शिवसहायमलजी के पास ही करते थे किन्तु काहनचन्द्र भी व्यासदेवजी के व्यक्तित्व वर्मनिष्ठा, भगवद्भिक्त तथा कठिन तपस्या से वहे प्रभावित थे, ग्रत इन्हें भोजन करवाकर वे भी पुण्य-लाभ करना चाहते थे, इस लिए उन्होंने भी भोजन-व्यवस्था का भार ग्रपने ऊपर लेने का निश्चय कर लिया था।

सन्त बुडिप्रकाश की वगीची में साधना-गीय ऋतु के प्रारंभ में ही नहर के किनारे नन्ने बुडिएकाश की वर्गाची में एक शम की कुटिया व्यासदेवजी ने अपने लिए वनवा ली । यह कुटिया वहुन छोटी-मी थी । इसमे केवल एक तस्त ही विछाया जा नजता था। इसके बाद इसमें चलने फिरने के लिए भी स्थान न रहता था। इसके ग्राने जो भूमि थी उस पर एक यज्ञाला का निर्माण किया नया ग्रीर ग्रामपास फूलो के पौधे लगा लिए गए । यहाँ पर निवास करके ब्ह्यचारीजी ने बड़ी कठिन साबना का प्रारम किया। ग्यारह वजे ने दो वजे तक योगदर्शन, सिद्धान्तकौमुदी ग्रादि पढ़ने के लिए नगर में जाते थे और बेप समय योगास्यास किया करते थे। प्रायः कड़ी बूप में बैठकर जाप करते थे। घण्टो ही बूप में बैठने में पसीना वह निकलता था श्रीर जब जीनकाल होता तो नहर के जल में बैठकर जाप करते थे। जल उनके गले तक रहता था। इन्हों से मुक्तिलोभ करना उनका उहेच्य था। देहाध्यास का परि-त्याग भी इसका एक कारण था। नर्जी की मौनम मे कपड़ा नहीं पहिनते थे और रजाई कम्बल ग्राटि भी नहीं ग्रोड़ते थे। जब कभी ग्रविक गीन होना या तो विविव प्राणायामों के द्वारा गरीर को गर्म कर निया करते थे। ग्रामन ग्रौर प्राणायाम का ग्रस्थाम शीतकाल मे प्रविक करते थे। प्रायायाम का ग्रस्थाम इतना वढा लिया था कि कमी-कभी प्राणायाम करके छाती पर तस्त रखवाकर उस पर ५-६ ब्राइमियों को विठा लिया करने थे। इन्हीं दिनो प्राणायाम करके ग्रपने वक्षस्थल पर लोगो से जोर-जोर में मुक्के लगवाया करते, तथा दोनो भुजात्रो पर रन्सी वधवा कर खिन-वाण करते थे । मन्त बुद्धिप्रकाशजी के ४-५ नवयुवक शिष्य भी प्राणायाम तथा कुन्ती ब्रावि मे रुचि रवने थे। ब्यामदेवजी ये चीजे इन्हें प्रायः सिखाया करते थे।

व्यानदेवजी ने इस बगीची में रहकर बड़ी कठिन साधना की। नित्यप्रित राति के दो बजे जग जाने थे और प्रान आठ बजे तक अस्यास करते थे। जब कभी गर्मी अविक होनी थी तो नहर पर पानी की ठोकर के पास जाकर अस्यास किया करने थे। योगास्यास के साथ-साथ बास्त्राध्ययन भी वरावर चलता रहना था। एक बार एक विद्यार्थी ने व्यासदेवजी से कहा कि नीनरी सहारनपुर की तहसील में एक ग्राम है। वहा पर प्यारेलाल नाम के एक ब्रह्मचारी रहते हैं। उन्हें अप्टाव्यायी का अच्छा जान है। यह सुनने ही वे नीतरी अप्टाव्यायी पढ़ने के लिए चले गए। वहां जाकर कुछ मान तक इस अथ का प्यारेलालजी ने अध्ययन किया किन्तु वे स्वयं ही बनारस पढ़ने के लिए चले गए अन अन्य कोई प्रवय वहां पर पढ़ने का न देखकर व्यासदेवजी अमृतसर वापस आगए।

प० हरिश्चन्द्रजी से व्यासदेवजी ने दर्जन, निरुक्त तथा उपनिपदें पहिले ही पढ ली थी। पण्डितजी का जन्म एक बनाढ्य परिवार में हुया था। ग्राजन्म ब्रह्म-न्यं-त्रत को बारण करके विद्यायियों को पढाने का वृत बारण किया था। इसीलिए व्यासदेवजी का उनसे बडा न्नेह था। जिनके गुण, कर्म तथा स्वभाव समान होते हैं उनमें मंत्रीभाय का उद्य होना स्वाभाविक ही है। हरिश्चन्द्रजी वडे प्रेमभाव से व्यायदेवजी को पटाते थे श्रीर योग तथा विज्ञान सम्बन्धी ग्रित गूढ रहस्यों की विश्व व्यायया करके विषय को हदयगम करवाया करते थे।

च्यानदेवजी ने नन्त बुद्धिप्रकाणजी की वगीची में अपने लिए एक पर्णकुटि बनानी थी। उसी में रहकर अपनी मावना और अभ्यास किया करते थे। इस कुटिया में उन्हें बजी अमुबिया थीं, विशेषकर वर्षाकाल में। उसी कुटिया में कई साल तक ये रहे। जब मोनीराम आटेबाने ने इस बगीची के पास ही एक अच्छा बडा उद्यान बनवाकर उसमें सन्तों और महात्माओं के निवास के लिए १६ कुटियाए बनवा दी, नब उन्होंने व्यासदेवजी से उद्यान में अपने पसन्द की एक कुटिया में आकर निवास रसने में लिए आयर किया तो वे वहा जाकर रहने लगे।

मर्प ने ब्रह्मचारी व्यासदेवजी की चोर से रक्षा की-व्यासदेवजी प्राय ज्येत्व मास में रिसी न किसी पहाड पर चले जाया करते थे क्योंकि गर्मी में साधना ग्रीर ग्रम्यान में वाचा उपस्थित होती थी। ये मान माम ग्रमृतमर में रहते थे ग्रीर पान मान प्राय राष्ट्रमीर रहा करते थे। कभी-कभी किसी ग्रन्य पर्वत पर भी चले जाते ये। एक बार गर्मी में किसी पर्वत पर जाने की सुविधा प्राप्त न हो सकते के कारण ग्रमृतसर में ही रहना पड़ा। गर्मी के ग्राधिक्य के कारण नहर पर पानी की ठोकर के पास रात्रि में ग्राकर योगाभ्यास किया करने थे। ग्राम-पास कई स्थानो पर सर्वी ने ग्रयने बिल बना रसे थे। बहा पर एक बडा घानक, लम्बा, काला सर्प रहता था। जब ब्यासदेवजी नहर पर अभ्यास करने के निए ग्राने तब यह भी प्राय अपने विल में में निकलकर उनके पास या बैठना था योर उनके अभ्यासकाल तक वही बैठा रहना । ऐसा प्रतीत होता है मानो वह उनकी रक्षार्य ही वहा स्राता था । जब व्यास-देवजी उठगर प्रानी गुटिया में चले जाते तो यह भी धीरे-धीरे ग्रपने विल में प्रविष्ट हो जाना था। पानी की ठोकर के पास ही नहर पर एक छोटा-सा पुल बना हुआ था। उस पर गाडिया नहीं चल सकती थी। केवल श्रादमी ही इसके ऊपर से जा सकते थे। एक दिन की बात है कि रात्रि के लगभग ग्यारह बजे छ मात चोर चोरी की तलाश में उधर-उधर पात लगाते किर रहे थे। वे वहा ग्रा निकले। व्यासदेवजी के पास एक मुगदायादी लोटा देलकर उसको चुराने के लिए उनका जी ललचाया श्रीर उनमे ग एक भर उठाने या गया किन्तु पाग ही वही कृण्णनाम बैठा था। जब उसने देखा कि ब्यागदेवजी की यह विवा प्रांजा प्राप्त किये ग्राया है ग्रीर चोरी करना चाहता है तो उसने बटे जोर से फुकार मारी श्रीर उसकी श्रोर फनटा। चोर भय से कापने लगा भ्रोर जमीन पर गिर पड़ा। वटी कठिनाई से उठकर जान बचाने के लिए भागा। टन चोरों ने नगर में यूव चवकर लगाए किन्तु कही पर भी चोरी करने का अवगर नहीं मिला। प्रात होते जब लीटने लगे तो एक खरवूजो के खेत पर छारा मारा ग्रार वहुत मे परवूजे वाधकर ने चले। जब व्यासदेवजी के पास पहुचे तो उनकी ग्रोर विनोद ने कई खरवूजे फेंके किन्तु सर्प के भय से पास जाने का साहस नहीं हुग्रा।

इन दिनो अमृतसर में चोरियों की दुर्घटनाए प्राय प्रतिदिन होती थी। अमीर, गरीव, सांधु तथा मन्त कोई भी इनसे न वच सका था। एक दिन रात्रि के तीन यंजे जब व्यासदेवजी भजन से तल्लीन थे तब तीन-चार चोरों ने मोतीराम की वगीची की दीवार को फादकर उनकी कृटिया का उरवाजा चटचटाया। वे व्यान-मग्न थे अत उन्हें किसी प्रकार की ग्रावाज मुनाई नहीं दी। जब चोरों ने मिनकर पूव जोर ने बोर किया और किवाडों को नोड देने की धमकी दी तब उनकी समाधि भग हुई और उन्होंने दरवाजा पोला। चोर भीतर धुम ग्राए और ललकार कर कहा, "जो तुम्हारे पान है मब यहा रच दो, ग्रन्यया तुम्हें ग्रपनी जान में हाथ घोना पड़ेगा।" व्यास-देवजी ने वडे वर्ष में मुम्कराते हुए उत्तर दिया, "जो कुछ मेरे पान है वह ग्रापके मामने है। ग्राप जो चाहे महर्ष ने जा सकते है।" चोरों ने मारी कुटिया में इघर-उचर खोजा किन्तु उनके मनपनन्द का कोई मामान उन्हें दिखाई न दिया। वे एक-डो चीजें लेकर चलते वने।

व्यासदेवजी ने चोरों को भोजन बनाकर खिलाया—एक बार रावि के दम बंजे के लगभग बारह चोर उद्यान में आए। व्यामदेवजी की कुटिया में लालटेन का प्रकाश हो रहा था किन्तु वे समाधिस्थ थे। उनके गोर में उनकी समाधि टूट गई और उन्होंने दरवाजा खोल दिया। उन्होंने व्यामदेवजी में भोजन की प्रार्थना की। उन्हों दवा देवकर वडी दया ग्रार्ड। उनके पास ५-६ मेर ग्राटा मूग की वाल ग्रार थोटा-मा घी था। उन्होंने उनके लिए भोजन नैयार किया और उनको खिलाया। वे मब वडे प्रसन्त हुए। उनमें में एक वयोवृह ने व्यासदेवजी से ग्राशीवाद के लिए प्रार्थना की किन्तु वे भला पापियों को उनके पाप कर्म के लिए ग्राशीवाद क्यों देते! वे पापी में घृणा नहीं करते थे। उनके नुधार का पूरा प्रयत्न करने थे, किन्तु उनके पाप में उन्हें वडी घृणा थी, ग्रन उन्होंने इसमे साफ उन्कार कर दिया। नव उस वृह चोर ने व्यामदेवजी का हाथ पकड़कर वलपूर्वक सबकी पीठ पर थापी देकर हाथ फिरवाया और चलते वने। ग्रमृतसर में ग्रफीम की दुकान में जा चोरी की।

कुछ दिनो वाद वे चोर पुन व्यामदेवजी की कुटिया में आए और एक यान मलमल का तथा एक सी एक रुपया उनकी भेट करना चाहा, किन्तु व्यामदेवजी इम पापपूर्ण भेट को स्वीकार करने के लिए कभी भी समुद्यत न थे अन. वहा में उठकर नहर की ओर चल दिए। पापात्माओं में भी कभी-कभी सद्वृत्तिया निरोहित रूप में रहिती हैं। उस दिन तो ये चोर निराग होकर चले गए किन्तु चार-पाच दिन के पव्चात पुन वे व्यामजी को भेट देने के लिए आए। उस समय व्यामजी कुटिया में नहीं थे। पास ही कही व्यानमन्नावस्था में बैठे थे। कुटिया खाली देवकर वे एक मलमल का थान, एक सी एक रुपये तथा बहुत-सी मिठाई कुटिया में रखकर चले गए। कुटिया में लौटने के बाद व्यासदेवजी यह सब सामान देखकर चिकत हुए। यह सममकर कि यह सब चीजें उन चोरों ने ही यहा भेंटरूप में रखी है उन्होंने वे सब आम-पास के दीन-दु खी नथा दिद्ध लोगों को बाट दी।

पुलिस के सिपा हियो से मुठभेड़-इन दिनो व्यासदेवजी प० हरिश्चन्द्र से सास्यदर्शन तथा न्यायदर्शन पढा करते थे। उनसे पढने के पश्चात् एक दिन् वे लाला शिवसहायमल के पास उनके मकान पर चले गए। वहा वाते करते-करते लगभग १० वज गए। उन्होने उनसे रात्रि को वही शयन करने के लिए आग्रह किया किन्तु इससे साधन तथा अभ्यास मे वाधा की ग्राशका करके उन्होने वहा ठहरना पसन्द नहीं किया। मोतीराम की वगीची में पहुचने के लिए मार्ग में लगभग एक मील तक निर्जन जगल स्राता था। इस जगल मे बहुत चोरिया तथा हत्याए हुस्रा करती थी। व्यासदेवजी को भी यह जगन पार करना पडा। उस रात्रि को छ -सात सिपाही उस जगल मे चोरो की घात नगाए बैठे थे। व्यासदेवजी की खडाऊ के शब्द को मुनकर उन्होने जोर से चिल्लाकर कहा, "ठहरो, कौन जा रहा है ?" व्यासदेवजी ने इन्हें चीर समभा। उन्हें भय था कि कही उनकी घड़ी ये न छीन लें, ग्रत वे ग्रीर भी तीवगति से चलने लगे। सिपाहियों ने यह देखकर पुन आवाज दी। इससे व्यासदेवजी खडाऊ उतारकर जोर मे भागे ग्रीर वुद्धिप्रकाणजी की वगीची मे प्रविष्ट हो गए। इस वगीची के चारो ग्रोर काटेदार तार की वाड लगी हुई थी। व्यास-देवजी इसको फादकर अन्दर चले गए। सिपाहियो ने इनका पीछा किया किन्तु वे उन्हें पकड़ न सके ग्रीर वगीची में घुसने लगे तो तार में फसकर गिर पड़े ग्रीर घायल हो गए। सन्त तेजप्रकाशजी ने जोर से चिल्लाकर कहा, "इघर मत आना, वरना मार दिए जात्रोगे।" सिपाहियों ने कहा, "सन्तजी । श्रापकी वगीची में एक चोर भागकर श्राया है, उसे हमारे मुपुदं कर दो।" जब उन्हें मालूम हुश्रा कि भागने वाला भी एक सन्त है तो वे बड़े हुमें। व्यासदेवजी ने कहा कि "तुम एक सन्त को भी नहीं पकट सके, तुम चीरो को कैसे पकडते होगे श्रीर किस प्रकार उनका सामना करते होंगे ?" मिपाहियों ने कहा, "हमारा काम सन्तों को पकडना नहीं है, चोरों को पकडना है। यदि हमे पता होता कि श्राप सन्त है तो हम श्रापके पीछे न दोडते।"

उपरोक्त घटनात्रों के कारण व्यासदेवजी के वैराग्य ने ग्रौर भी तीव रूप घारण कर लिया। उनको तत्कालीन समाजसगठन दोपपूर्ण दिखाई देने लगा। यदि मब को जीवन निर्वाह के लिए श्रावश्यक सामग्री प्राप्य हो तो इस प्रकार की चोरियों की सख्या बहुत कम हो सकती है। जिनके पास खाने को भोजन, शीत, गर्मी ग्रौर वर्षा से बचाव के लिए मकान, पहनने को कपड़े, रोग से बचने के किए ग्रीपच नहीं है, तो भला वे चोरी नहीं करेंगे तो क्या करेंगे। "बुभुक्षित. कि न करोति पापम्।"

श्राकार-मीन तथा गायत्री-पुरश्चरण—शीतकाल का समय था। ब्रह्मचारीजी ने श्राकार-मीन धारण करके सवा लाख गायत्री मनत्र का पुरश्चरण करना प्रारम्भ कर दिया। श्रव इन्होने मोतीरामजी की वगीची वाली पक्की कुटिया में रहना छोड़ दिया। वहा पर जाप श्रीर ध्यान में श्रनेक विष्न उपस्थित हो जाया करते थे श्रीर चोर भी पक्की कुटिया में निवास के कारण सममते थे कि इस सन्त के पास बहुत रुपया होना चाहिए। उमें चुराने के लालच से प्राय चोर श्राकर तग किया करते थे, पर उन्हें दो-चार सेर श्राटे, मूग की दाल, थोड़े घी श्रीर दो वस्त्रों के श्रतिरिक्त कभी कुछ भी इस कुटिया में दिखाई नहीं दिया श्रीर वे निराश होकर चले जाते थे।

इसलिए व्यासदेवजी अब सन्त बुद्धिप्रकाशजी की वगीची मे अपनी पुरानी पर्णकुटि मे आकर रहने लग गए। यहा आकर चैत्र मास की सकान्ति के दिन इन्होने आकार मौन वृत और गायत्री पुरश्चरण की समाप्ति की।

ब्रह्मचर्य-व्रत की परीक्षा—ग्रभी व्यासदेवजी ने ग्रपना ग्राकार-मीन समाप्त भी नहीं किया था कि उनके सामने एक वड़ा भारी सकट श्राकर उपस्थित हो गया। ग्रमृतसर के लाला काहनचन्द ब्रह्मचारीजी के ग्रनन्य भक्त थे ग्रीर इनके प्रति इनकी म्रत्यन्त श्रद्धा, निष्ठा तथा विश्वास था। वे इनसे प्रेम भी वहुत करते थे। एक दिन उन्होने अपने साले दीवानचन्द से इनके स्वभाव, तप, व्रत, सांधना, जप तथा अवण्ड ब्रह्मचर्य की बडी प्रशसा की। इन्होने उनकी वात पर विश्वास नही किया, क्योंकि मनुष्य एक वन्द बोतल है। ऊपर से यह बोतल वडी सुन्दर दृष्टिगोचर होती है किन्तु इसके भीतर कैसा विप भरा है इसे कोई समक्त नहीं सकता। लिफाफा कितना ही सुन्दर हो पर इसके ग्रन्दर क्या मजमून लिखा हुग्रा है इसे जानना ग्रसम्भव है। इसी प्रकार से मनुष्य के बाह्यरूप से उसका वास्तविक स्वरूप नही समभ मे ग्रा सकता है। प्राय मनुष्य दीखने मे कुछ ग्रौर होते है ग्रौर भीतर कुछ ग्रीर । उन्होने इन व्रह्मचारीजी की गणना भी ऐसे ही लोगो की कोटि मे की ग्रीर इनके ब्रह्मचर्य की परीक्षा लेनी चाही। साला ग्रीर वहनोई दोनो मे इस विषय पर एक गर्त ठहर गई। दीवानचन्द ने काहनचन्द से कहा कि यदि ये ब्रह्मचारीजी परीक्षा मे सच्चे उतरे तो मैं ग्रापको ४०० रुपये दूगा ग्रीर यदि ये ग्रसफल रहे तो ग्राप मुभे २०० रुपये देना। इन्होने ब्रह्मचारीजी की परीक्षा लेने के लिए ग्रमृतसर की दो प्रसिद्ध वैश्याग्रो को उनकी कुटिया मे भेजा। व्यासदेवजी उस समय ग्रंपनी कुटिया मे वैठकर जाप कर रहे थे। कुटिया के सामने एक वडी यज्ञशाला वनी हुई थी। इसमे वे नित्यप्रति यज्ञ किया करते थे । यज्ञ किए विना वे भोजन नही करते थे । यह उनका ग्रचूक व्रत था। इसी यज्ञशाला मे बैठकर इन कुलटा-स्त्रियो ने ब्रह्मचारीजी को ब्रह्मचर्य से पतित करने के लिए योजना बनाना प्रारम्भ किया। ग्रत उन्होने उन पर ग्रपना जादू चलाने का प्रयत्न किया। जव व्यासदेवजी ने इनकी ग्रोर किचिन्मात्र भी ध्यान नहीं दिया तो वे वडे जोर-जोर से कोलाहल करके कामोद्दीपक वार्तालाप करने लगी। म्राकार-मौन के कारण ब्रह्मचारीजी बोल तो सकते ही न थे म्रत डगारे से उन्हें वहा से चले जाने के लिए कहा। डण्डा उठाकर मारने की धमकी भी दी किन्तु ये टस से मस न हुई। तव उनका मन्यु कुछ जागृत हो ग्राया ग्रौर वे पास ही एक उद्यान मे गए जहा पर कारीगर लोग एक चारदिवारी वना रहे थे। इन्होने अपने हाथ की एक अगुली से जमीन पर गुरमुखी भाषा मे उन्हे लिखकर समभाया कि मेरी कुटिया मे दो वैश्याए आई हुई है और वे मुभ्ने वडा परेगान कर रही हैं तथा मेरे भजन मे विष्न उपस्थित कर रही है। तुम लोग वहा चलो और उन्हे वहा से भगाश्रो। वे श्रपने फावडे लेकर तुरन्त वहा गए श्रौर उन्हे वहुत गालिया दी। जव वे ढीठ बनकर निर्लज्जतापूर्वक वही बैठी रही तव उन्होने मारने की घमकी दी। वे इससे बडी भयभीत हुईं श्रौर लिज्जित होकर वहा से भाग गई।

जव दीवानचन्द और काहनचन्द को यह समाचार मिला तो वे बडे प्रसन्न हुए ग्रौर साथ ही लज्जित भी। उन्होने ब्रह्मचारीजी की भूरि-भूरि प्रशसा की। काहनचन्द की उनके प्रति श्रद्धा श्रीर भिवत मे श्रीर भी श्रिधिक वृद्धि हो गई। इस परीक्षा से श्रमृतसर के नर-नारियों में उनके प्रति निष्ठा वढी श्रीर वे श्रव उनका श्रिधिक सम्मान करने लगे। वे दोनो उनके पास गए श्रीर लिंजित होकर वैश्याश्रों के सम्त्रन्थ में सारी कथा उन्होंने मुनाई श्रीर साष्टाग करके विनम्र भाव से उनसे क्षमा-याचना की। व्यासदेवजी कभी कोंध तथा श्रावेश में नहीं श्राते थे। वे समुद्र के समान गम्भीर, चन्द्रमा के समान सौम्य, सूर्य के समान तप पूत श्रीर हिमालय के समान धीर श्रीर श्रटल थे। वे सदैव शान्त तथा गम्भीर मुद्रा में रहते थे। उनकी मन शान्ति कभी भग नहीं होती थी। दीवानचन्द तथा काहनचन्दजी से सारी कथा मुनकर उनकी मुखमुद्रा में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुश्रा। वे किचित् मुस्करा भी दिए। ये दोनो वडे लिंजित हुए।

### काष्ठ मौन तथा सवा करोड़ गायत्री पुरक्चरण

वुद्धिप्रकाशजी की वगीची में व्यासदेवजी ने मौन तथा सवा लाख गायत्री पुरश्चरण की समाप्ति चेत्र मास की सकान्ति के दिन की ग्रीर उसी दिन काण्ठ-मौन ले लिया ग्रीर सवा करोड गायत्री जाप का व्रत घारण किया। केवल प्रत्येक मास की मकान्ति के दिन एक-दो घण्टे वोला करते थे क्योंकि उस दिन वे वाजार से खाद्य-मामग्री तथा ग्रन्य ग्रावश्यक मामान मगवाया करते थे। इस पुरश्चरण को महाराजजी ने चार वर्ष में समाप्त किया। त्याग, व्रत ग्रीर वैराग्य भावना तीव्र से तीव्रतर होती जा रही थी। ग्रव ग्रध्ययन के प्रति भी कोई विशेष रुचि नहीं रही थी। ग्रव ग्रध्ययन के प्रति भी कोई विशेष रुचि नहीं रही थी। ग्रवर-उधर कहीं जाना वन्द कर दिया था। जनसपर्क विल्कुल पसन्द नहीं था। नितान्त एकान्त में रहना ग्रधिक रुचिकर होगया था। पुरश्चरण के प्रारंभिक काल में नो वारह हजार गायत्री का जाप प्रतिदिन करते थे। इन दिनो दैनिक चर्या निम्न प्रकार से थी

प्रात ४ से ७ वजे तक ध्यान गायश्री जाप ७ से दोपहर के २ वजे तक २ से ३ वजे तक भोजन वनाना तथा खाना ३ मे ४ वजे नक विश्रामादि ४ से ७ वजे तक गायत्री जाप भ्रमणादि साय ७ से = वर्ज तक गायत्री जाप म से १० बजे तक १० मे ११ वजे तक दुग्धपानादि गत्रि ११ से ३ वजे तक शयन

उपरोक्त दिनचर्या में स्पष्ट है कि ब्रह्मचारीजी केवल चार घटे सोते थे, एक घटा दिन में विश्राम करते थे, एक घटा भोजन बनाने और खाने में व्यय होता था, एक घटा भ्रमण तथा दुग्धपानादि में लगाते थे। दिन के २४ घण्टों में से केवल नी घण्टों के ब्रितिरक्त उनका सारा समय ब्रथ्यित् १५ घटे ध्यान तथा गायत्री के जाप में ही प्रतिदिन व्यतीत होते थे। इन दिनों भोजन के रूप में केवल सांबुत मूंग ही खाते थे। मूंग को उवालकर उसमें थोडा-सा घी डालकर खा लिया करते थे। इसके बनाने में समय बहुत थोडा व्यय होता था। साथ ही यह सात्विक भोजन भी माना

जाता है। रात्रि को केवल ग्राधा सेर दुग्धपान करते थे। घारीरिक मुख का घ्यान विल्कुल छोड दिया था। देहाध्यास नितान्त न्यून हो रहा था। इन दिनो जब भ्रमण के लिए जाते तो मुह ढापकर जाते थे, जिसमे न किमी को वे देखे ग्रोर न कोई उनको देख सके। मानसिक विक्षेप से वचने के लिए ऐसा करते थे। किसी के साथ इघारे से भी वात नहीं करते थे। ग्रनेक साधु-सन्त मीन व्रत रखकर प्राय इिंद्रित से ग्रथवा म्लेट पर या जमीन ग्रौर हाथ पर लिखकर ग्रपने भावों को व्यक्त कर दिया करते है, किन्तु यह काष्ठ-मीन की सजा में नहीं ग्रा सकता। त्रह्मचारीजी किमी पर भी ग्रपने भाव किसी प्रकार से भी प्रकट नहीं करते थे। ग्रीष्म काल में ग्रापाद की गर्मी में धूप में बैठकर ४-५ घण्टे तक जाप करते तथा ग्रीतकाल में नहर के पानी में बैठकर। पानी उनके गले तक रहता था। गरीर, मन तथा इन्द्रियों के प्रति ग्रनानिक की भावना को दृढ करना ही इनका ध्येय था।

पुरक्चरण-काल मे चोरो द्वारा भ्रपहरण--जैमा कि ऊपर लिखा जा चुका है, व्यासदेवजी रात्रि को ७ वजे से ८ वजे तक भ्रमणार्थ जाया करते थे। प्राय नहर की पटडी पर चला करते थे। इघर लोग वहुत क्म म्राते थे म्रीर्वेडा एकान्त स्थान था। जब वाहिर जाते तो मुह को भली प्रकार मे ढापकर चलते थे, जिसमे काष्ठ मीन मे किसी प्रकार की कोई वाघा उपस्थित न कर सके। एक दिन मार्ग मे उन्हें पाच नवयुवक मिले । इन्होने मदिरा पान की हुई थी । उनकी टागे लडवडा रही थी ग्रीर वे मदोन्मत होकर पागलों की तरह प्रलाप कर रहे थे । उन्होने मौन तथा पुरक्चरण का कभी नाम भी न मुना था। मन्तो के प्रति न उनकी किसी प्रकार की श्रद्धा थी ग्रीर न विक्वास। व्यासदेवजी को ग्राते देखकर वे वडे विस्मित हुए। वे इस वात का निञ्चय नही कर पाए कि यह पुरुष है या स्त्री । उन्हें त्राकार-प्रकार तथा गति तो इनकी नवयुवको के समान दिखाई देती थी किन्तु उनके मुह टकने पर उनके स्त्री होने का सन्देह होता था। वे इन्हे पहिचान नही सके कि ये मोनीरामजी की वगीची वाले सन्त है, अत इनमे छेड-छाड करनी प्रारम्भ कर दी। नवयुवको ने इनमे पूछा कि तुम कहा जा रहे हो, कहा रहते हो, तथा क्या करते हो। व्यानजी ने काष्ठ मौन धारण कर रखा था। कैसे बोलते । ग्रत उन्होंने ग्रनेक प्रश्नों का कुछ भी उत्तर नही दिया । उन मदोन्मत्तो ने समभा कि यह व्यक्ति वडा दम्भी है इसीलिए नहीं वोलता है। वे मदिरा के मद में यथार्थता तक नहीं पहुच सके, ग्रत कोष के मारे वे आगवबूला होगए और व्रतनिष्ठ मीनी व्यासदेवजी के हाथ वाघ कर उन्हें अपने पीछे-पीछे ले चले। ब्रह्मचारीजी ने काप्ठ-मीन धारण कर रखा था त्रत ग्रपने भाव कैसे व्यक्त करते । जैसे उन्होंने कहा वैसे ही उनके पीछे चलने लगे। वे न तो वोले ग्रीर न किसी प्रकार की प्रतिशोध भावना को ग्रपने हृदय मे स्थान दिया। वे निञ्चल ग्रौर निञ्चिन्त थे। उन्हें न तो गन्तब्य दिशा का ज्ञान था और न उन्हें यही पता चला कि वे शरावी उन्हें कहा और क्यों ले जा रहे हैं। किन्तु उनके मन में इससे कोई विक्षेप या क्षोभ उत्पन्न नहीं हुआ। धन्य हो दृढवती ब्रह्मचारीजी । ग्राप धन्य हो। ग्राञ्चर्यान्वित कर देने वाली है ग्रापकी यमनियमोपासना, ग्रापकी जितेन्द्रियता, ग्रौर ग्रापका शम, दम तथा देहाध्यास की क्षीणता!

वे उद्दण्ड ग्रीर उद्धत गरावी युवक उन्हे ग्रपने गाव मे ले गए। पास ही एक गुरुद्वारा था। वहा के ग्रथी के पास इन्हे ले जाकर कहा कि इसको एक कमरे मे वन्द करके रखो, हम सुवह ग्राकर सब फैसला करेंगे। वे चले गए।

यथी ने दीपक जलाया श्रोर जब व्यासदेवजी को पहिचाना तो वह वडा दु खी हुआ। उसका हृदय काप उठा। उसने क्षमा याचना की श्रीर उन युवको को गालिया देकर उनकी वडी निंदा की। उनसे निवेदन किया कि श्राप यहा वैठिए, मैं गाव से श्रापके लिए दुग्ध लेकर श्राता हू। उन दुष्टो को भी उनके घर जाकर उनके निन्दनीय कार्य के लिए वडी ताडना करूगा। वह वन्तासिंह के घर गया। यह युवक वडा उद्धत श्रीर चोर था। ग्रथी ने पूछा कि तुम इस वगीची वाले सन्त को श्रपने साथ क्यो लाए ? इन्होने काप्ठ-मीन का व्रत लिया हुश्रा है। केवल वाणी का काष्ठ-मीन ही नहीं इनका मानसिक मीन भी है, इसीलिए इन्होंने ग्रपना मुह ढाप रखा था। तुमने श्रजान से इतने वडे सन्त का श्रपमान किया है। यह तुम्हारा वडा निन्दनीय श्रीर पाप-कमं है। लाग्रो, उनके लिए दूध दो। वन्तासिंह श्रपनी माता के पास गया श्रीर दूध लाकर ग्रयीजी को दे दिया। महाराजजी ने दूध पीकर गुरुद्वारे मे ही विश्राम किया ग्रीर पात ही उठकर ग्रपनी कुटिया मे चले गए जिससे उनके व्रत मे कोई वाधा उपस्थित न हो। उन दुष्ट युवको के प्रति न तो उनके मन मे किसी प्रकार की ग्लानि उत्पन्त हुई ग्रीर न कोई प्रतिशोध की भावना। वे पूर्ववत् गान्त ग्रीर गभीर रहे। उनकी इम प्रकार की मुख-मुद्रा सहसा मर्यादापुरुपोत्तम भगवान् रामचन्द्रजी के मुखारिवन्द का ध्यान दिलाती है, जो—

प्रसन्नता या न गताभिपेकतस्तथा न मम्ली वनवासदु खत । मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य भवतु मे मजुलमगलप्रदा ।।

ये तपोनिष्ठ ब्रह्मचारीजी साधना के वडे धनी थे। सर्दी के मौसम मे जब नहर के जल मे वैठकर जाप करते थे, तो शरीर प्राणहीन-सा हो जाना था। सर्वत्र शून्यता छा जाती थी, किन्तु उन्हें देहाध्यास नहीं रहा था, ग्रत इस पीडा को कभी अनुभव ही नहीं किया। इस लम्बी साधना के परिणामस्वरूप उनमें वल-वृद्धि हुई ग्रौर प्राण-निरोध की शक्ति भी उत्तरोत्तर वढने लगी। सकल्प-सिद्धि लाभ होगई तथा वृद्धि ग्रत्यन्त सूक्ष्म होगई।

वैशाली के दिन वड़े समारोहपूर्वक इस पुरव्चरण की समाप्ति की। एक वृहद् यज्ञ का श्रायोजन किया गया जो कई दिनो तक चलता रहा ग्रीर कई दिन सन्तो ग्रीर महात्माग्रो को भोजन करवाया। इस यज्ञ ग्रीर भण्डारे में ब्रह्मचारीजी के सैकड़ो भक्त ग्रमृतसर के सम्मिलित हुए। ब्रह्मचारीजी ने गायत्री पुरव्चरण ग्रीर मीनवृत के ग्रनेक लाभ ग्रपने उपदेश में जनता को वताए। चार वर्ष के काष्ठ-मीन ग्रीर यज्ञ की पूर्णाहुति करके व्रत समाप्त कर दिया।

#### काश्मीर-यात्रा

स्थायी रूप से तो व्यासदेवजी का साधना-स्थल वर्षों तक अमृतसर ही रहा किन्तु प्राय ग्रीष्मकाल के ज्येष्ठमास में काश्मीर तथा अन्य जीतप्रधान प्रदेशों में चले जाया करते थे। लगभग सात मास अमृतसर में निवास करते थे भ्रीर पाच मास काश्मीर तथा अन्य पर्वतीय प्रदेशो पर । काश्मीर मे प्राय हार्वन भील के पास मुफ्ती वाग मे निवास करना उन्हे अधिक पसन्द था। सन्त बुद्धिप्रकाश की बगीची मे वे एक छोटी सी घास की कुटिया मे रहते थे। जब लाला मोतीराम ने अपने उद्यान मे महात्माओं की साधना और निवास के लिए १५-१६ कुटियाए बनवाई तो इनसे भी वहा रहने के लिए आग्रह किया था और ये वहा पक्की कुटिया मे पुन निवास करने लगे थे। वहा कुछ मास रह चुकने के बाद गर्मी की तीव्रता के कारण काश्मीर चले गए और मुफ्ती बाग मे निवास किया। प्रात काल शिकारगाह मे भ्रमणार्थ जाते थे और सायकाल हार्वन भील के तट पर।

काइमीरी पण्डितो से समागम—एक बार सायकाल के समय जव हार्बन भील पर भ्रमण कर रहे थे तब कई काइमीरी पण्डित उन्हें मार्ग में मिल गए। विविध्य विषयों पर वार्तालाप होने लगा। जब ग्रमरनाथ की चर्चा चली तब इन पण्डितों ने कहा कि वहा पर शिवलिंग की मूर्ति पन्द्रह दिन तक क्षीण होती है ग्रीर पन्द्रह दिन तक वृद्धि को प्राप्त होती है। ब्रह्मचारीजी किसी भी वात को स्वीकृत करने से पूर्व उसे तक तथा वृद्धि की कसौटी पर कसते थे। जो वात वृद्धिसगत तथा तर्कसगत होती थी वही उनके लिए ग्राह्म होती थी, ग्रन्य नहीं। उन्होंने पण्डितों की इस वात को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि यह तर्क तथा वृद्धिसगत नहीं थी। उन्होंने तुरन्त कहा कि जड पदार्थों में इस प्रकार घटना ग्रीर वढना धर्म नहीं हो सकता। वृद्धि ग्रीर क्षय चेतन सत्ता के सयोग से ही सभव है, ग्रन्यथा नहीं। क्योंकि वहा पर चेतन के सयोग का ग्रभाव है ग्रत शिवलिंग की वृद्धि ग्रीर क्षय ग्रसभव है। ग्रमरनाथ की प्रतिमा वर्फ से बन जाती है। जिस प्रकार पहाडों पर शितकालीन वर्षा में मकानों की छतों से जो पानी नीचे गिरा करता है वह प्राय गीत के ग्राधिक्य से जमता जाता है ग्रीर वर्फ के बडे-बडे शिवलिंग-से बन जाया करते हैं ग्रीर जव गर्मी पडने लगती है तो ये शिवलिंग-से पिघल जाते है। कुछ तो विलकुल पिघल जाते है ग्रीर कुछ का ग्राकार बहुत सूक्ष्म सा हो जाता है। यही बात ग्रमरनाथ की गुफा में स्थित शिवलिंग के विषय में भी कही जा सकती है। काश्मीरी पण्डित ग्राग्रहपूर्वक ग्रपने मन्तव्य पर डटे रहे। पण्डित मुकुन्दजी कौल ने भी पण्डितों की बात की ही पुष्टि की। ग्रब उन्होंने ग्रमरनाथ जाकर स्वय इस बात की जाच करने का दृढ सकल्प कर लिया।

श्रमरनाथ की यात्रा—शीतकाल के प्रारभ होते ही श्री ब्रह्मचारीजी श्रमृतसर पधार गए। नियमानुसार योगाभ्यास, तप, जप तथा साधना पूर्ववत् श्रपनी कुटिया में नहर के किनारे करते रहे। ग्रीष्म ऋतु के प्रारभ होते ही पुन काश्मीर पधारे क्यों कि चैत्र मास में श्रमरनाथ जाने का निश्चय कर लिया था। सोनमर्ग के मार्ग से जाने का विचार किया क्योंकि इस मार्ग से श्रमरनाथ केवल ७० मील के लगभग था श्रीर श्रीनगर से यह स्थान लगभग ६६ मील था। व्यासदेवजी महाराज जितना सामान श्रासानी से श्रपने ग्राप उठाकर ले जा सकते थे उतना ही सामान लेकर चल दिए। सोनमर्ग के पोस्टमास्टर माधोराम ने व्यासदेवजी को श्रमरनाथ जाने की श्रनेक कठिनाइया बताईं। सोनमर्ग से बालतल लगभग नौ मील था ग्रीर वहा से ग्रार्ग १० मील तक बर्फ पर ही चलना पडता था। इन्होने पोस्टमास्टर से चार कुली श्रमरनाथ की गुफा तक सामान ले जाने के लिए मर्श्रंद्री पर कर दैनें के लिए कहां।

तीन रुपया प्रतिदिन पर तीन मजदूरो को साथ ले जाना तय पाया। कुछ सामान ब्रह्मचारीजी ने भी उठाया। वालतेल पहुचकर एक डाकवगले मे ठहरे। दूसरे दिन प्रात काल ग्राठ वजे वहा मे प्रस्थान किया। यह मार्ग वडा कठिन था। ग्रमरनाथ से जो नदी सोनमर्ग जाती थी वह सारी हिमाच्छादित थी। उसी के किनारे-किनारे वर्फ पर चलना था। शीत का ग्राधिक्य था। वर्फ पर चलते-चलते पैर सज्ञा-हीन से हो गए थे। उनमे चेप्टा करने की शक्ति नाममात्र को भी शेप नही रही थी। इस-लिए पैर वार-वार लडयडाते थे। इस नदी की ऊचाई की ग्रोर चढाई वडी भयावह थी। पैरो मे शून्यता छा जाने के कारण से व्यासदेवजी का पैर वर्फ पर से फिसल गया, लाठी हाथ में छूट गई ग्रीर लगभग ग्रावा मील ऊची वर्फ की पहाडी से फिसलते हए नीचे उस स्थान पर ग्रा गिरे जहा वर्फ पिघलने के कारण नदी मे एक कूग्रा सा वन गया था। फिसलते हुए अनेक चोटे आई थी अत लगभग आध घण्टे तक चेतना-हीन रहे। जब सजीपलिंध हुई तब उठकर बैठ गए और इगित करके मजदूरो को बुलाया। दो मजदूर ग्राए ग्रीर ग्रपने हाथो की रगड से उनके गरीर को उष्णता पहुचाने का प्रयत्न किया। जहा व्यासजी गिरे थे वहा से वर्फ का क्य्रा केवल ३-४ फुट ही दूर था। भगवान् ने ही उनकी रक्षा की। त्रह्मचारीजी का ब्रह्मवर्चस्व ग्रसीम था। उनके साहम, हिम्मत ग्रीर पराक्रम की कोई मीमा न थी। उन्होंने साहसपूर्वक कुलियो ने कहा कि में नदी के ऊपर वर्फ की कितनी मोटी तह जमी हुई है इसे देखना चाहता हू। तुम मेरे पैर घोनी से बावकर यही बैठ जाग्रो, में पेट के बल लेटकर सरक-सरक कर आगे जाकरदेख आऊगा और अगर में गिरने लगू तो तुम धोती खीच कर मुक्ते खीच लेना। नदी मे भाक कर देखने मे मालूम हुम्रा कि उस पर लगभग एक सी फुट वर्फ जमी हुई थी मीर उसके नीचे जल वह रहा था। यदि कही इसमें गिर जाते तो फिर निकलने का कोई उपाय न था। वहा से उठकर धीरे-धीरे ऊपर ग्राए ग्रीर ग्रमरनाथ का मार्ग लिया। सारा दिन चनने के पञ्चात् लगभग चार वजे ग्रमरनाथ की गुफा मे पहुचे। मुनियों ने महाराज से कहा कि ग्राप यहा पर उच्चस्वर से न वोलिएगा, यदि वोलेंगे तो वर्फ गिरने लगेगी। उन्हें इस बात का पता नहीं था ग्रत उन्होंने कुलियों की बात नहीं मानी ग्रीर गुफा में वाहिर निकलकर वड़े ऊचे स्वर से 'हरि ग्री३म्' के नारे लगाने लगे। उनका नारे लगाना था कि थोडी ही देर मे चारो श्रोर से बादल घिर श्राए श्रीर लगभग श्राध घण्टे के पञ्चात् हिमपात होने लगा। कुली वडे नाराज हुए श्रीर उस श्रायका में कि न जाने कब तक वर्फ पडना श्रव जारी रहेगा श्रीर ताजी वर्फ पड जाने मे मार्ग का पता लगाना भी कठिन हो जाएगा, पाच वर्जे ही ग्रमरनाथ की गुफा में भाग गए। व्यासदेवजी को ग्रयनी भूल पर वडा पश्चात्ताप हुग्रा। वास्तव में बात यह थी कि जोर का शब्द होने मे ग्रासमान मे श्राकर्पण सा पैदा हो जाता है श्रीर वादल वन जाने है श्रीर ऊवाई श्रधिक होने के कारण वर्फ गिरने लग जाती है। पहलगाव में जब हत्यारे तालाव पर जाते हैं तो वहां भी कभी-कभी ऐसा हो जाया करना है। गुफा के श्रासपास दो-तीन दिन तक वादल छाए रहे ग्रौर एक-एक कर वर्फ भी पड़तीँ रही। इन दिनों में भ्रमरनाथ की गुफा में हजारों मन वर्फ थी। इसमे प्राय मारो मार्न वर्फ का जल टपकता रहता है स्रीर स्रत्यन्त कीत होने के कारण यह जल जमना रहना है। इस समय गुफा में एक इच भर भी सूखी जमीन न थी। गुफा के वाहिर पहाड के समीप कुछ थोड़ा सा स्थान सूखा था। यही ग्राकर ब्रह्मचारीजी ने अपना भ्रासन लगाया। चारो भ्रोर वर्फ ही वर्फ दृष्टिगोचर हो रही थी। इस थोडे से सूखे स्थान पर ही इन्हें एक मास व्यतीत करना था। श्रीन जलाकर शरीर को जैसे-तेसे गर्म करने का भी कोई साधन न था। लकडिया वर्फ से गीली थी, जो थोड़ी बाहिर थी वे भी सब गीली थी। दियासलाई भी भीगी हुई थी। श्रनेक उपाय किए किन्तु ग्रीन न जलाई जा सकी। जब शरीर को गर्म करने का कोई साधन दृष्टिगोचर नहीं हुश्रा तो ब्रह्मचारीजी ने प्राणायाम के द्वारा अपने शरीर को गर्म किया और तब कही जाकर शरीर का कम्पन यितंकचित् कम हुश्रा।

स्रमरनाथ मे एक मास तक निवास—स्रमरनाथ की गुफा में महाराजजी ने स्रत्यन्त कठिनाई के साथ एक मास व्यतीत किया। यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति के लिए वे किसी भी सकट का सामना करने के लिए समुद्यत हो जाते थे। उनकी ज्ञान-पिपासा के सामने सभी कठिनाइया, चाहे वे कितनी ही कठोर क्यों न हो, पानी के समान पिघल जाती थी। वे कभी कातरता से उन कठिनाइयों को दूर करने के लिए प्रार्थना नहीं करते थे। वे केवल यही याचना करते थे कि उन सकटो और विपत्तियों को वीरतापूर्वक साहस के साथ सहन करने तथा उनका मुकावला करने के लिए वह उन्हें बल, शक्ति और शीर्य प्रदान करे।

इस गुफा मे केवल तीन या चार कवूतर रहते थे। ये दिन मे इधर-उधर चले जाया करते थे ग्रौर रात्रि मे इसमे ग्रा जाया करते थे। ग्रासपास न नो ग्रन्य कोई पक्षी दृष्टिगोचर होता था, न पशु श्रीर न कोई मनुष्य। ज्ञान-पिपासु व्यासदेवजी के ग्रतिरिक्त वहा और कोई न था। रात्रि मे गीत की ग्रधिकता के कारण उन्हें नीद न ग्राती थी। इसलिए सारी रात जाप तथा ध्यान में ही व्यतीत होती थी। जब थक जाते थे तब सिकुड कर लेट जाते थे। दिन मे रात्रि की ग्रपेक्षा शीत कुछ कम रहता था ग्रत दिन मे सोने ग्रीर रात्रि मे जगने का एक नियम-सा वना लिया था। ग्रमर-नाथ के पास दो निदया बहती है--ग्रमर गगा तथा एक ग्रीर वडी नदी। ये दोनो वर्फ से ढकी हुई थी। इसलिए वहा स्नान करने तथा पीने के लिए भी पानी ग्रप्राप्य था। वर्फ से ही प्यास बुआई जाती थी तथा ग्रन्य सब कार्यों के लिए भी इसी प्रकार काम चलाया जाता था। वर्फ को गलाकर इन ग्रावब्यकताग्रो की पूर्ति की जा सकती थी पर वर्फ को पिघलाने का कोई साधन ही पास न था क्यों कि ग्रग्नि ज्लाने के लिए न पास सूखी लकडी थी ग्रीर दियासलाई विलकुल भीग गई थी। भोजन बनाने का कोई साधन नहीं था ग्रत जो कुलचे, ग्राटा, चावल ग्रादि साथ लेकर ग्राए थे उन्हें ही खाकर निर्वाह किया। पन्द्रह दिन तक तो कुलचे खाकर भूख शान्त की। ग्रब केवल ग्राटा ग्रीर चावल ही शेप रहे थे। ग्राटा खाना प्रारभ किया किन्तु यह मुह मे जाकर जम जाता था ग्रीर जव गीला करके खाना प्रारभ किया तब उसके खाने से छाती मे पीडा होने लगती थी। ग्राटा छोडकर ग्रव कच्चे चावल खाना प्रारभ किया। ये पेट में जाकर जम जाते थे भ्रौर इससे कोष्ठवद्धता होने लगी। अत ये दोनो चीजे खाना त्याग दिया। शरीर अतिकृश होगया और शक्ति क्षीण होगई। परन्तु व्यासदेवजी अपनी धुन के पक्के थे, दृढव्रती थे, अपने निश्चय से डिगने वाले न थे। उन्होने अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए अपने शरीर को भी तृणवत् समका। उनकी यह धारणा थी "कार्य वा साधयामि, शरीर वा पात- यामि।" ग्रत वे हिमालय की तरह ग्रपने व्रत मे ग्रटल रहे। ग्रपने पूर्व निश्चयानुसार उन्हें एक मास तक गुफा मे रहना था, भले ही उनके सामने कितनी ही कठिनाइया क्यों न ग्राए। उनके पास ग्रव कोई भी ऐसी वस्तु न थी जिससे वे ग्रपनी क्षुधा को गान्त करते ग्रीर गिक्त प्राप्त करते। जब कभी मुख सूख जाता तो वर्फ को चूसकर प्यास बुक्ताने का प्रयत्न करते थे। इस प्रकार बड़े कव्ट के साथ जैसे-तैसे ग्राठ दिन व्यतीत किए, किन्तु ग्रभी तो उन्हे वहा पर इसी कव्ट मे तीन सप्ताह ग्रीर व्यतीत करने थे।

गुफा के भीतर मैदान मे हजारो मन वर्फ जमी हुई थी। इस वर्फ के ऊपर दस या वारह शिवलिङ्ग की पिण्डिया वनी हुई थी। शीतकाल मे ग्रमर गगा का जल गुफा के ऊपर से होकर जाता है। इसी का जल ग्रमरनाथजी की गुफा मे टपकता रहता है। गीतकाल मे तो यह जम जाता है ग्रीर जव गर्मी ग्राती है तो यह पिघलकर वह जाता है। शीतकाल मे जब जल जमना प्रारभ हो जाता है तब ये पिण्डिया बनना प्रारभ हो जाती है। गुफा में टपकते हुए जल को जमते हुए व्यासजी ने अपनी आखी मे देखा। ज्यो-ज्यो गर्मी बढती त्यो-त्यो वर्फ भी गलती जाती। इसके परिणामस्वरुप गिवलिङ्ग की पिण्डिया भी घटती जाती ग्रीर ज्येष्ठ तथा ग्रापाढ मास तक ये गिवलिङ्ग तथा गुफा की सारी वर्फ पिघल कर वह जाती। जब यात्रा प्रारभ होती तो पण्डे लोग यात्रियों के दर्शनार्थ ग्राने के पूर्व ही पास वाली जमी हुई नदी से लगभग सौ मन वर्फ का ढेर लगाकर शिवलिङ्ग वना दिया करते थे। व्यासदेवजी ने चार-पाच शिवलिङ्गो को ग्राने सामने गलते हुए ग्रीर वनते हुए देखा। इस सत्य का ग्रन्वेषण करके उन्हें वडा हर्प हुग्रा। इसके लिए उन्होंने ग्रनेक कठिनाइया उठाई, भूखे तथा प्यासे रहे, एक मास तक वर्फ मे ही निवास किया ग्रीर ग्रपने जीवन को भी खतरे मे डाला, किन्तु ग्रपने निश्चय को पूरा करके ही उन्हे सन्तोप हुग्रा । जब एक मास व्यतीत होने में केवल ३-४ दिन ही अवशेष रहे गए तव उनके भूख और प्यास से मुर्भाए हुए गरीर मे कुछ वल, गिक्त, उत्साह ग्रीर धैर्य-सा उत्पन्न होगया ग्रीर निरागा मे ग्रागा की भलक दृष्टिगोचर होने लगी। गुफा के कवूतर भी कभी-कभी इनके पास ग्राकर बैठ जाते थे। इस प्रकार के कबूतरों को व्यासदेवजी ने गगोत्री ग्रीर गोमुख मे भी देखा था। ये इन कवूतरो को प्राय चावल खिलाया करते थे। उनके पास चावल तो बहुत थे, पर कच्चे चावलो के खाने से उन्हे कोष्ठबद्धता हो जाती थी ग्रीर टट्टी में खून ग्राने लगता था, इसलिए उन्होंने खाए नहीं ग्रीर कबूतरों को ही टाल दिए। ये ब्रह्मचारीजी से स्नेह करने लग गए थे ग्रीर इन्हें बड़े प्रेम ग्रीर कृतज्ञता की दृष्टि से देखा करते थे। कभी-कभी एक-दो काली चिडिया भी ग्रा जाती थी। यात्रा प्रारम होने से पूर्व वस यही इनके मित्र थे। पूरे ३० दिन वीत जाने के वाद इन्होने नीचे उतरने की तैयारी की। जो कुछ थोडा सामान था उसे वाधकर कथे पर रया किन्तु उसे उठाने की शक्ति उनमे नहीं थी। माधोरामजी ने कुली भेजने का वचन दिया था किन्तु उन्होने नही भेजा, क्योंकि उनको यह समाचार कुलियों ने दिया था कि त्रह्मचारीजी तो वर्फ मे दव गए होगे। सोनमर्ग के लोगो ने इनके ग्रनिष्ट का निज्ञय कर लिया था क्योंकि ग्रमरनाथ में कोई जीवन का साधन न था।

सोनमर्ग के लिए प्रस्थान—व्यासदेवजी ने कघे पर ग्रपने कम्बल ग्रौर दो-तीन वर्तन जो साथ थे ररो गीर चलना प्रारभ किया। दुर्वलता तथा जीत के कारण उनके पैर कापते तथा लडखडाते थे। मार्ग मे कई वार गिर भी गए थे। मारा गरीर काला पड गया था ग्रीर कृण होगया था। वाल वहुन वह गए थे। गरीर मे शक्ति केवल नाममात्र को ही गेप रह गई थी, किन्तु हिम्मन ग्रीर साहम की कमी न थी। मार्ग मे भोजपत्र की पतली-सी दो लकडिया मिल गई थी। इन्ही के सहारे मे मार्ग पर चलते रहे।

भालू से मुकाबला तथा व्यासदेवजी का प्रत्युत्वन्तमित्व—ग्रभी व्यासदेवजी केवल छ या सात मील ही चले होगे कि उनको सामने से एक भूरे रग का वडा वलवान् श्रीर शिक्तमान् भालू श्राता दिखाई दिया। उसका सामना करने के लिए इटकर खड़े होगए। किन्तु एक मास से ग्राहार विलकुल नहीं किया था। वड़ी विपत्ति में थे। ग्रत्यन्त कृश होगए थे। शरीर शिक्तहीन होगया था। किन्तु ग्रान्मिक बल में किसी प्रकार की न्यूनता न ग्राई थी। इसी के वल पर भालू का नामना करने के लिए किटवढ़ होगए पर शरीर ने साथ नहीं दिया। न पैरो में वहा से भाग जाने की शिक्त थीं श्रीर न हाथों में उसने लोहा लेने की। इसने पूर्व कई बार रीछो, हाथियों से ग्रपने वहावर्ष के वल से सफलतापूर्वक लड़ाई कर चुके थे किन्तु इन समय शरीर विलकुल शिक्तहीन था। उन्हें ग्राशका हुई कि कही उन्हें निवंत जानकर यह भयकर भालू उन पर श्राक्रमण न कर दे। इस भय के उपस्थित होते ही उन्हें एक उपाय मूक्ता। तुरन्त दोनों लकडियों के ऊपर ग्रपने कम्बल को कृष्ठ टील देकर मजबूती से पकड़ लिया। दोनों लकडियों को ग्रपने दोनों हाथों ने ऊपर को उठाकर स्वय उस कम्बल के नीचे ग्राकर ग्राँर ग्रपने को उसमें छिपाकर जोर-जोर में शोर-गुल मचाकर नाचने, कूदने ग्रीर छलागे मारने लगे। भालू इसमें वड़ा भयभीत होगया ग्रीर नदीं की ग्रोर भाग गया, टट्टी करते हुए।

भूत का भय—िर्नवंता के कारण ब्यासदेवजी वहुत बोरे-घीरे चलते हुए राग्नि में वालतल पहुचे। इन्होंने डाकवगले के चीकीदार को उच्चस्वर में पुकारा। वह उस समय भोजन बना रहा था। उमें उस ममय किसी के वहा ग्राने की सभावना न थीं अत गान्तिपूर्वक भोजन बनाने में ब्यस्त था। ग्रचानक ग्रपना नाम मुनकर वह भयभीत होगया ग्रीर जब बाहिर निकल कर ग्राया तो वह ब्यामदेवजी को पहिचान नहीं सका। उनका बरीर ग्रत्यन्त कृश तथा दुर्वल था। मुख काला नया कान्तिहीन था। केवल बरीर का ढाचा ही रह गया था। जब ब्यामजी ने ग्रपना परिचय चौकीदार को दिया तब वह ग्रीर भी ग्रविक भयभीत हुग्रा ग्रीर कापने लगा। उसने मुन रखा था कि ब्रह्मचारीजी ग्रमरनाय की वर्फ में गल गए हैं, ग्रत उसे उनको देखकर भी यह विश्वास नहीं हुग्रा कि वे जीवित हैं। उसके मन में भट यह विश्वास उत्पन्न हुग्रा कि यह सोनमर्ग वाले वावा का भूत है जो मुक्ते भक्षण करने के लिए यहा ग्राया है। वह 'भूत' 'भूत' कहकर चिल्लाने लगा। व्यासजी के वार-वार नमभाने पर भी उसे कुछ समक्त नहीं ग्राया ग्रीर भयभीत होकर ग्रपनी रोटी तवे पर छोडकर ही सीवा सोन-मर्ग भाग गया।

व्यासदेवजी ग्रत्यन्त क्षुघार्त थे ग्रत उस मुसलमान की रसोई मे ही उसीका मकई की ग्राटा लेकर चार मोटी-मोटी रोटी वनाकर खाई। एक मास से ग्रन्न खाया ही नहीं था ग्रत सक्ई की रोटी ने पेट मे जाकर वडा विकार किया। वे उदर पीडा मे व्याकुल हो उठे। सट गर्म पानी किया ग्रीर उसमे कुछ नमक मिलाकर पीया। थोडे ही समय मे उन्हें कई वमन हुए ग्रीर इसके पश्चात् उनके कष्ट का निवारण हुग्रा। रात भर चीकीदार की रसोई में ही शयन किया। प्रात काल उठकर पास ही एक वृक्ष के नीचे वैठकर जाप ग्रीर व्यान करने के लिए वैठ गए। चौकीदार शावाना के ग्राने पर ही व्यामदेवजी ने ग्रागे चलने का विचार किया था। दिनभर उन्होंने वही विश्राम किया ग्रीर दिनभर शावाना के लौटने की प्रतीक्षा करते रहे। दूसरे दिन प्रात काल चौकीदार पाच श्रन्य ग्रादिमयों के साथ वालतल ग्राया। जब वे डाकवगले ने चौथाई फर्नांग रह गए तब वे सब भयभीत होकर खडे होगए ग्रीर भूत के विपय में ग्रपनी-ग्रपनी ग्रावकाए ग्रीर विचार एक दूसरे में प्रकट करने लगे। काश्मीरी लोग स्वभाव ने ही भीर होते हैं। उनमें ग्रागे वढने की हिम्मत नहीं थी। वे स्वनिर्मित भूत के भय ने ग्रपनी मूर्जनावश भयभीत हो रहे थे।

ज्यन ब्यासदेवजी ने सोचा कि ये पाची कही ग्रात्मरक्षार्थ मुभपर ग्राक्रमण ही न करदें, ग्रन वे पास वाले एक पेड पर चढ गए। इन लोगो ने सोचा कि भूत उनके भय के कारण पेट पर चढ गया है। इसमें उनमें हिम्मत तथा साहस बढा तो, किन्तु भय ने उनवा पीछा नहीं छोडा, उमिनए उस वृक्ष के समीप श्राने का साहस नहीं हुआ। दूर यह हो कर ही भूत के विषय में वाले करते रहे। व्यासदेवजी उनके भय को भगाने संया उनको शान्ति देने के उद्देश्य में पेड पर में उतरे। उन्हें उतरते देखकर ये लोग बड़े जोर ने भागे। उन्होंने मोचा कि उन्हें भक्षण करने के लिए भूत पेड पर से उतरा है। प्रह्मनारीजी ने जोर-जोर से चित्लाकर उन्हें विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया ग्रीर कहा कि भे कोई जिन्न या भूत नहीं हूं। मैं तो वहीं महात्मा हूं जो एक मास पूर्व वटा ने ग्रमरनाथ गया था, पर उन मूर्वों को किसी प्रकार से भी विश्वास नही म्राया श्रीर वे उन्हें भूत ही समभते रहे। उन भागते हुए ग्रादिमयों का व्यासदेवजी ने इस ब्रायय ने पीछा निया कि वे उन्हें पकडकर यथार्थता समभाएंगे, क्योंकि ऐसे तो वे उनके पान ग्रात न थे। जब वे भाग रहे थे तो उनमें से कोई मार्ग में गिर गया, श्रीर किसी की लकटी हाथ से छट गई। बाबाना चौकीदार भी भागते-भागते गिर गया । उन्होने तुरत पास जाकर उसे उठाया । वह काप रहा था । उसके शरीर से पर्साना टपक रहा था। भय के कारण उसने अपनी आखे बन्द कर ली थी और जोर-जोर रे रहा था। व्यासदेवजी ने इसे वहुत पुचकारा, प्यार किया, ढाढस वधाया ग्रीर तब कही बटी देर में उसे होश ग्राया। जब उसकी बुद्धि ठिकाने ग्राई तब कही जाकर उसे विश्वास हुआ कि यह भूत नहीं किन्तु वहीं महातमा है जो एक मास पूर्व सोनमां से अमरनाथ गए थे। वह बड़ा लिजित हुआ और उसने बहुत पश्चात्ताप किया। जब ये सब बगले पर पहुंचे तब उन सबने एक दूसरे से खूब हसी मजाक किया। व्यास-देवजी ने अपने लिए चावल बनाए और भोजन किया । इसके पब्चात् उन्होने इनका नामान उठाया श्रीर सब मोनमर्ग की श्रोर चल दिए। शर्न -शर्न चलकर सायकाल प्र वर्ण सोनमग् पहुचे । ब्रह्मचारीजी को देखकर सबको हार्दिक प्रसन्नता हुई श्रीर सबने मिलकर उनका वटा स्वागत किया। उनका गरीर दुर्वल तथा शक्तिहीन था अत यही पर पण्डित माधोरामजी के पास पन्द्रह दिन तक निवास किया। पण्डितजी ने उनका पूरा श्रातिथ्य किया और खूब सेवा की। जब व्यासजी कुछ सजकत हुए श्रीर थकान दूर हुई तब वहा से मुफ्ती बाग के लिए प्रस्थान किया। वहा पर मुफ्ती बाग में पिडत मुकुन्दजू के पास कुछ दिन तक रहे। ब्रह्मचारीजी ने मुकुन्दज् को बटे रोचक तथा विनोदपूर्ण ढ्रग से अपनी यात्रा का विवरण मुनाया। उनकी कठिनाउँयों को मुन कर वे दु खी हुए किन्तु भालू तथा शाबाना की कहानी मुनकर बटे प्रसन्न हुए। व्यासजी पुन अमरनाथ दो बार गए थे। एक बार श्रावण में तथा दूसरी बार ग्राव्विन मे। इनका उद्देश्य ग्रमरनाथ की गुफा में स्थित शिवलिङ्ग की प्रतिमा, जिनके लिए यहा जाता था कि वह पन्द्रह दिन में बढती तथा पन्द्रह दिन नक घटती है, के विषय मे तथ्य ग्रीर यथार्थता का पता लगाना था। दोनो यात्राग्रो मे उन्होने नत्य का ग्रन्वेगण किया और यह सिद्ध कर दिया कि यह प्रतिमा न तो क्षय को प्राप्त होती है और न वृद्धि को ही। ये दोनो यात्राए उन्होने पडिन मुकुन्दजू के निवासन्थान से ही प्रारभ की थी। इन दोनो यात्राचो का व्यय भी उन्हें पंडितजी ने ही प्रदान किया था। ये वडे उदार सज्जन थे ग्रीर व्यामदेवजी का वटा ग्रादर करते थे तथा उनके ब्रह्मचर्य, योग, समाधि तथा व्यक्तित्व से वडे प्रभावित थे। कुछ दिन तक उनके पास निवास करने के पश्चात् इन्होने अमृतसर जाने की उच्छा प्रोग्ट की। अभी उनकी कमजोरी पूरी तरह से गई नहीं थी। गरीर भी सभी कृग ही था, सन पण्डिनजी ने उन्हें समृत-सर जाना स्थिगत करने के लिए बहुत आग्रह किया, किन्तु उन्होने उनकी प्रार्थना को स्वीकार न किया श्रौर प्रस्थान कर दिया । यहा पर ब्यामदेव जी ने चार माल मे गायती का सवा लाख तथा सवा करोड पुरश्चरण किया तथा आकार मीन और काण्ठ मीन के कठिन व्रत को धारण किया श्रीर सवा करोड गायवी के पुरव्चरण की बड़े समारोह है साथ वृहद यज्ञ तथा भोज करके समाप्ति की । इसके पञ्चात् जोष्ठ मान मे काश्मीर के लिए प्रस्थान किया। यहा आकर पुन मुक्ती बाग मे ही ठेहरे। पूर्ववन् अपनी दिन-चर्या के अनुरूप साधना, ध्यान् तथा योगाभ्याम प्रारंभ कर दिया। शिकारगाह मे प्रतिदिन चार-पाच मील की सैर किया करते थे। स्नान, सध्या, प्राणायामादि भी प्राय वही किया करते थे। इस शिकारगाह मे विविध प्रकार के भालू, चीते. हिरण, वारहिंसगे आदि का आधिक्य था। इन्हें इन हिन्न जीवों को देखने का बडा भीक था। कारमीर आने से पूर्व ही कई बार इनकी भिटन्त हाथियों, भानुओं नया सूक्षरों में हो चुकी थी और अपने बल, शक्ति, साहस श्रीर शौर्य में सदेव ये उनाते भगाते रहे थे। इस शिकारगाह के चौकीदारो, जमादारो तथा ग्रन्य राजकीय नेवको से उनका घनिष्ठ परिचय होगया था । इसलिए ये लोग इन्हें इस जिकारगाह मे स्वतन्त्रतापूर्वक भ्रमण करने देते थे। वे इनसे जाप, ध्यान, प्राणायामादि के सम्बन्ध मे प्राय वाते सुना करते थे ग्रीर इनसे उपदेश ग्रहण करते थे। ब्रह्मचारीजी वैद्यक भी जानते थे। इन लोगो मे से जब कोई रोगी हो जाता था तो ये ग्रपने पास ने ग्रापध देते ग्रीर उन्हें रोग मुक्त कर देते थे, इसलिए ये सभी सेवक इनका वडा सम्मान करते थे।

शिकारगाह में भाजुओं से कई बार तथा सूत्ररों से दो बार मुकाबला—एक दिन प्रात काल व्यासदेवजी शिकारगाह में एक गुद्ध ग्रीर स्वच्छ नाले के किनारे पर बैठे दातुन कर रहे थे। ग्रासपास कई भाडिया थी। कुछ दूरी पर कई भाडिया कुछ जोर से हिल रही थी। जब इन्होंने ग्रावाज दी तो इनका हिलना बन्द हो गया किन्तु थोडी देर के पश्चात् वे फिर हिलने लगी। झाडियों में कौन छिपा है यह जानने के

लिए इन्होने उनमे एक पत्थर वहें जोर से फेका। उन फाडियो मे एक भालू छिपकर इनके फल खा रहा था। पत्थर के लगते ही एक भूरे रग का भालू कोंघ से गुर्राता हुग्रा वाहिर निकल ग्राया। वह इनके ऊपर ग्राक्रमण करने के लिए तैयार हो गया। य वहें प्रत्युत्पन्नमित तथा साहसी थे। इन्होंने तुरन्त ग्रपना वल्लम उठाया ग्रीर उसकी छानी में जोर में भोक दिया। भालू ने इन के दोनो हाथ पकड लिए ग्रीर वार-वार ग्रपने पजे से उनकी ग्राखो पर प्रहार करने का प्रयत्न करता रहा पर जव वह पजा उठाता तभी व्यागदेवजी तुरत ग्रपना मुह पीछे कर लेते थे। इस प्रकार कई मिनट नक लडाई होनी रही। पास ही एक पत्थरों की वुर्जी-सी वनी हुई थी। इन पत्थरों में चूना नहीं लगाया गया था। व्यासदेवजी भालू को ग्रपने वल्लम से धकेलते हुए इम बुर्जी के पास लेगए ग्रीर वडे जोर से भालू को इस बुर्जी से धक्का दिया। धक्का लगते ही बुर्जी के पत्थर घडाघड नीचे गिर गए। इनकी ग्रावाज को सुनकर भान भयभीत होकर छोडकर भाग गया।

व्यामजी ने हिस्र जीवों से भयभीत होना कभी सीखा ही न था। उनसे वच कर दूर जाना उन्हें पसन्द न था। उनका वीरतापूर्वक सामना करना, उन्हें छेड़ कर उन्हें भगाने में इन्हें वडा ग्रानन्द ग्राता था ग्रीर कभी-कभी तो स्वय ही उनसे लटाई मोल ले लेते थे। एक दिन एक वडी रोचक घटना हुई। उस दिन कई काठ्मीरी पण्टित उनके साथ इस जगल में भ्रमणार्थ गए। इस जगल में सेवों के पेड वहुत थे। ये सब इन पेडों पर चढ कर सेव खाने लगे। व्यासदेवजी ने ग्रपनी धोती को फटने के भय में उतार कर एक भाडी पर रख दिया ग्रीर स्वय सेव खाने के लिए पेड पर चढ गए। देवयोग में एक भालू वहा पर सेव खाने के लिए ग्रा निकला। जायद इसने व्यासदेवजी की भालुग्रों को परास्त करने की वात सुन ली थी ग्रत वह डर के मारे भागते हुए उनकी धोती उठाकर ले गया। उसका पीछा इन्होंने वहुत दूर तक किया किन्तु वह भागकर एक अची पहाडी पर चढ गया ग्रीर व्यासजी के हाथ नहीं ग्राया।

जहा व्याग्देवजी जाए वही भालुग्रो को भी जाने मे मजा ग्राता था। एक दिन की वान है कि रगीलसिंह ग्रीर ये ग्रखरोट खाने के लिए गए। यहा के ग्रखरोट खंडे मीठे ग्रीर कागजी होते हैं। इन्हें ये वहें ग्रच्छे लगते थे। जब ये ग्रखरोट खाने के लिए पेडो पर चढें तब उन्होंने कई भालू पेडो पर ग्रखरोट खाते हुए देखे। इनसे छेड करने के लिए व्यासदेवजी के दिल में गुदगुदी उठने लगी। वे तुरन्त पेड पर से उनरे ग्रीर नीचे से भालुग्रो के ऊपर पत्थर फेकना प्रारभ कर दिया। एक-एक करके वे सब भाग गए। जगलों में रहते-रहते ब्रह्मचारीजी वनले पशुग्रो के स्वभाव को समभने लग गए थे। वे जानते थे कि भालू कभी एकत्रित होकर सामूहिक रूप से ग्राजमण नहीं करते। इनमें से कई तो वृक्षो पर से कूदे ग्रीर ग्रपने हाथ-पैर तुडाकर भागते वने।

इन भालुग्रों के लिए व्यासदेवजी का नाम ही भयोत्पन्न कर देता था। जहां कही वे उनको देख लेते वहीं से तुरन्त भाग जाया करते थे। एक बार होशियापुर निवासी ठाकुर मोतीसिंह के साथ ये भ्रमण के लिए उपरोक्त वन में से जा रहे थे। एक भालू वृक्ष पर चढ कर सेव खा रहा था। व्यासजी को देखते ही इसने पेड पर

से छलाग लगाई ग्रौर वेतहागा भागता डरता चला गया। ये उससे मनोरजन करना चाहते थे किन्तु उनके मन की उनके मन में ही रह गई। यही नहीं, एक ग्रौर भानू भी इसी प्रकार से व्यासदेवजी को देखकर भय के मारे कापने लगा ग्रौर टट्टी फिरता भाग गया था। सरदार पूर्णिसह गिकारगाह का जमादार था ग्रौर उसके ग्राधीन १०-१२ नौकर थे। ये सभी ब्रह्मचारीजी का वडा सम्मान करते थे। एक दिन व्यामदेवजी को दाघी गाव जाना था। पूर्णिसह ग्रपने कथे पर बदूक रखकर उनके पीछे-पीछे चलने लगा। उस जगल में एक भाडियों के समूह में से एक भालू निकला ग्रौर पूर्णिसह को जोर से घक्का देकर उसे चित जमीन पर पटक दिया ग्रौर बन्दूक छीनने लगा, किन्तु व्यासदेवजी को लकडी हाथ में लेकर ग्राते हुए देखकर उसके भय के मारे प्राण निकलने लगे ग्रौर वह दुलक्की लगाता हुग्रा भाग गया।

एक दिन महाराजा हरिसिहजी शिकारगाह में शिकार खेलने के लिए स्राए। राजकर्मचारियो ने शिकार को पूरा-पूरा प्रवध किया। एक मचान बनाई गई जिम पर बैठकर महाराजा साहिब शिकार मारेंगे। फिरायती लोग भालू को ग्राबाज देकर उसे घेरकर मचान के सामने लाएगे श्रीर तब महाराजा ऊची मचान पर ने उसकी गोली मारेंगे। युद्धप्रिय क्षत्रिय जाति के महाराजा की रक्षा के लिए किनना भारी प्रवध किया गया, किन्तु हमारे व्यामदेवजी जगल के पेडो की टहनिया तोडकर ही इन भालुयों को वात की वात में भगा दिया करते थे। इन्हें ब्रह्मचारीजी से इतना भय लगने लग गया कि उनको देखने मात्र से भाग खडे होते थे। महाराजा कैमे शिकार खेलते हैं, इसे देखने के लिए ये भी शिकारगाह गए और सारा तमाझा देखकर चूव हसे। जमादार ने इनकी रक्षा के लिए कई कर्मचारी नियन कर दिए थे, यद्यपि इन्होंने म्राग्रहपूर्वक कहा था कि उन्हें किसी प्रकार के रक्षकों की म्रावय्यकता नहीं है। शिकारगाह में इधर-उधर घूमते हुए वे एक पचगाव के चर्म में पानी पीने के लिए चले गए। इनमें से एक ग्रादमी के पाम शहनाई थी। जल पी चुकने के पश्चात् व्यासजी ने उससे शहनाई वजाने के लिए कहा। उसने वजाना प्रारम किया। उसी समय एक भालू भाडियों में से वहा निकल ग्राया ग्रीर शहनाई की घुन पर उसने नाचना, कूदना, उछलना प्रारभ कर दिया और वडी मस्ती मे ग्राकर कुछ देर तक नाचता ही रहा । वे सब यह नजारा देखकर वडे प्रसन्न हुए । व्यासजी का तो हमते-हसते सास फूल गया और पेट दु खने लगा। थोडी देर नाच चुकने के बाद वह भालू पहाडी पर भाग गया।

व्यासदेवजी को इस शिकारगाह के जगली जानवरों को देखकर हुप, मनो-रजन तथा कौतूहल होता था। कभी-कभी अपने मनोरजन के लिए जानवूभकर भी छेडछाड किया करते थे। इनकों कभी भय तो इनसे लगता ही नहीं था। ये तो एक प्रकार से इन्हें अपना सहचर समभने लग गए थे। नित्यप्रति कोई न कोई जानवर इन्हें अवश्य मिल जाया करता था। इनकी निर्भयता को देखकर आसपास के लोगों का विश्वास होगया था कि ब्रह्मचारीजी ने इन जानवरों को अभिमित्रत कर रखा है और ये सब इनके वशीभूत हो रहे हैं, क्योंकि ये अकेले ही बनों में घूमते थे पर कोई जानवर इन्हें तकलीफ नहीं पहुचाता था। नगर के कई लोग व्यासजी के साथ इन जगली जानवरों को देखने के लिए जाया करते थे। जब व्यासदेवजी साथ होते थे तो कोई भी हिन्त्र जानवर किसी पर ग्राक्रमण नही करता था । जगली जानवरो मे ग्रापुर्ण इस शिकारगाह में किसी की भी अकेले जाने की हिम्मत नहीं होती थी। इसमें केवल राजे-महाराजे, रेजिडेट तथा वायसराय ग्रादि वेडे-वडे ग्रादमी ही शिकार खेलने के लिए ग्राते थे। व्यासदेवजी ने इस शिकारगाह में वारहसिंगो के सैकडो ही भुण्ड देखे थे । इसमे महाराजा हरिसिंह ने मछलिया पालने के लिए एक बहुत बडा तोलॉब वन-वाया था। उसकी चारदीवारी पाच फुट ऊची थी ग्रीर इसमे एक वडा फाटक लगवाया गया था। ग्रभी उसमे मछिलया रखी नहीं गई थी। एक दिन की वात है कि इस ग्रहाते में कृछ जगली सुग्रर चर रहे थे । व्यासदेवजी ने विनोद में ग्राकर फाटक वन्द कर दिया । उन्होने मनोरजनार्थ इनको नीन-चार पत्थर मारे । सूत्रर भयभीत होकर फाटक की श्रोर भागे पर निकल न सके क्यों कि फाटक बन्द था, श्रत वे श्रहाते के भीतर ही उधर-उधर भागते रहे। इनमें में एक वडा शक्तिशाली सूत्रर था। उसने ग्रहाते की दीवार में बड़े जोर में टक्कर दी, दीवार को तोड दिया ग्रीर ये सब वाहिर भाग गए। उनमे से जो अधिक शक्तिशाली थे वे एकत्रित होकर व्यासदेवजी पर आक्रमण करने के लिए आए। दीवार पर अपने आगे के पैर रखकर ये जोर-जोर से फुरारे मारने लगे। उन्होने अपनी बत्लम इनकी तर्फ की ग्रीर पत्थर भी उठा-उठाकर मोरे पर ये वहा ने किचिन्माय भी न हटे श्रीर धक्के दे-देकर दीवार को तोडने का प्रयत्न करते रहे । ग्रव व्यामदेवजी को एक उपाय मूझा । वे नुरन्त फाटक पर चढ गए ग्रौर वहा जाकर जमकर बैठ गए। तब वे मूत्रर तुरन्त भयभीत होकर भाग गए। कुछ दिनो के पश्चात् उन्ही सूत्ररो का भुण्ड पुन व्यासदेवजी को दिखाई दिया। इनमे ने नर्वाधिक शन्तिशाली सूत्रर ने सामने से भागकर इन पर आक्रमण करना चाहा। वह गोली की नरह मीवा भागकर उनकी तर्फ ग्राया पर व्यासदेवजी तुरन्त एक पेड पर चट गए। शी झनावश ये अपनी बल्लम नीचे ही छोड गए थे। यह सूअर बहुत देर ना नीच पटा रहा ग्रीर व्यासदेवजी पेड की टहिनया तोड-तोडकर उसके ऊपर फॅफने रहे। यन्त में निराश होकर वह वहां से भाग गया। ये घटनाए कुछ आगे की ग्रीर कुछ पीछे की है ग्रन उन्हें एक जगह लिख दिया है।

पटित मुकुन्दजू के पोते शभुनाथ का विवाह था, इसलिए वे स्रव नगर में जाकर रहने लग गए थे। उन्होंने स्रपने पुत्र गोपीनाथ को व्यासदेवजी को निमन्तित करने के लिए भेजा। ये वर श्रीर वधू को स्राशीर्वाद देने के लिए उनके मकान पर गए स्रीर एक नष्नाह वहा ठहरे।

## श्रमृतसर के लिए प्रस्थान

प० मुकुन्दज् के पोने के विवाह के पश्चात् व्यासदेवजी ने अमृतसर के लिए प्रस्थान किया। यहां मोनीरामजी की वगीची में अपनी कुटिया में निवास किया। अब पुन दर्शनशास्त्र पढ़ने की किच जागृत हुई ग्रीर प० हरिश्चन्द्रजी से न्यायदर्शन श्रीर वैद्येपिक पढ़ना प्रारंभ किया। निश्वत भी पढ़ना शुरू कर दिया ग्रीर साथ न्याय-मुक्तावली भी। ये दोपहर के वारह वजे में पाच वजे तक इनका अध्ययन करते थे। लगभग छ माम तक उनका अध्ययन करते रहे।

एक योगी से समागम-एक दिन मोतीरामजी की वगीची मे खहर की एक चादर प्रोहे, नगे पैर तथा कृश शरीर एक योगी सन्त श्राए। व्यासदेवजी को योग मे

म्रत्यधिक रुचि थी ग्रौर सदा ही किसी योग्य योगी की तलाश मे रहते थे। इस योगी को देखकर इन्हें बड़ी प्रसन्ता हुई ग्रौर उनका वड़ा स्वागत किया । ये महात्मा हिसार की ग्रोर के रहने वाले तथा वडे विद्वान् वीतराग ग्रोर त्यागी योगी थे। द्वन्द्वो को सहन करने का इन्होने खूव ग्रभ्यास किया था। दो कीपीन तथा एक खद्दर की चादर ही इनकी सम्पत्ति थी। ये योग ग्रीर साख्य मे पार्गत् तथा वडे सिद्ध पुरुप थे। ग्रपना नाम इन्होने योगीराज वताया था। व्यासदेवजी ने इनमे योग सीग्वने का विचार किया। योगीराज ने इनसे दो छटाक मूग की दाल श्रीर एक भटाक घी की व्यवस्था करने के लिए कहा। इसके लिए मनीग्रोर्डर से रुपया मगवाकर देने का वायदा किया। उन्होने ग्रपनी यह भी इच्छा प्रकट की कि जो व्यक्ति दाल बनाएगा उसको वेतनरूप मे कुछ दे दिया जाएगा। कहा कि मैं २४ घण्टे मे केवल यही खाता हू वयोकि योगी के लिए यही सर्वोत्तम भोजन है। व्यासदेवजी योग की सिद्धियो ग्रादिक के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त करना चाहते थे ग्रत उनकी सेवा का सपूर्ण भार ग्रपने ऊपर ने लिया। इन्होने उनसे योगसूत्र विणत ग्रणिमादि सिद्धियो के बारे मे जिज्ञामा की ग्रीर निवेदन किया कि कुछ सिद्धिया प्रत्यक्षरूप से दिखाने की कृपा की जाए। योगीराज नवयुवक योगी व्यासदेवजी की योग के प्रति जिज्ञासा ग्रीर रुचि देखकर ग्रन्यधिक प्रसन्त हुए, वचन दिया कि ग्रष्ट सिद्धियो मे से एक सिद्धि ग्रापको ग्रवण्य दिखाई जाएगी । योगीराज ब्रढाई मास तक मोतीराम के वगीचे मे रहे। दोनो योगियो मे योग सम्बन्धी वार्तालाप प्रतिदिन होता था । जव योगीराज के वहा से जाने मे केवल थोडे से ही दिन रह गए तब सिद्धि प्रत्यक्षरूप मे दिखाने के लिए व्यासदेवजी ने ग्राग्रह किया। इन्होने उनकी इच्छा पूर्ति के लिए उन्हे पूरा विश्वास दिलाया। ये योगीराज किसी से ग्रावश्यकता से ग्रधिक वार्तालाप नहीं करते थे। दिन-रान ग्रपनी कुटिया के दरवाजे वन्द करके उसमे रहा करते थे। प्राय चारपाई पर लेटे रहते थे। लग-भग दस-ग्यारह वजे स्नानादि नित्य कर्म करने के लिए कुटिया ने बाहर निकलते थे। एक दिन योगीराज ने सिद्धि दिखाने की इच्छा प्रकट की ग्रीर व्यासदेवजी से एक कुटिया तैयार करने, एक कुञा का ग्रासन उसमे विछाने, एक लोटा जन का उसमें रखने, कुटिया के भरोखे-रोशनदानादि को वन्द करवाने ग्रादि के लिए कहा ग्रौर साथ ही चार दिन के लिए कुटिया पर पहरेदारो के प्रवन्ध के लिए भी कहा। इसमे योगीराज समाधि लगाना चाहते थे। उन्होने व्यासजी को समभाया कि जव वे भीतर जाकर समाधि लगा ले तब कुटिया मे ताला लगा देना, उस पर सील लगा देना, एक व्यक्ति को सावधानतापूर्वक पहरा देने के लिए तैनात कर देना । व्यासदेवजी को यह सब सुनकर थोडा आश्चर्य हुआ क्योकि तीन-चार दिन की समाधि तो वे प्राय लगाया करते थे किन्तु कभी किसी पहरेदार की भ्रावश्यकता उन्होने अनुभव नही की । इन्होने योगीराजजी की श्राज्ञानुसार सब प्रवध कर दिया । इस समाधि मे क्या विलक्षणता थी इसे समभ न सके। योगीराज ने स्नानादि करके प्रवजे कुटिया मे प्रवेश किया और १६ घटे की समाधि प्रारभ कर दी। उस समय वहा पर पन्द्रह-बीस स्रादमी उपस्थित थे। इस समाधि की धूम सारे अमृतसर मे फैल गई। ६६ घण्टे के पश्चात् जब समाधि खुलने का समय भ्राया तो वहाँ पर सैकडो नर-नारी एकत्रित होगए। जब ताला खोला गया तो उसमे योगीराज नही थे। वे अन्तर्ध्यान हो चुके थे। सवको वडा भारचर्य हुमा। इसके पश्चात् योगीराजजी के दर्शन-लाभ कभी नही हुए।

#### पुनः काश्मीर प्रस्थान

गर्मी का पजाब में वटा प्रकीप रहता है। योग साधना के लिए शीतप्रधान प्रदेश उपयुक्त रहता है, अन व्यासदेवजी ने काव्मीर के लिए प्रस्थान कर दिया। श्रपनी प्रारंभिक सायना का प्रारंभ इन्होंने यही से किया था इसलिए उस स्थान से उन्हें विशेष अनुराग था। जब ये काव्मीर पहुचे तो पडित मुकुन्दजू के पुत्र पडित गोपीनाथजी उनके पास ग्राए ग्रीर उन्हें मुफ्नी बाग में ही निवास करने के लिए निवेदन किया ग्रीर विश्वास दिलाया कि श्रापकों किसी प्रकार का कष्ट नही होगा। श्रापकी मुन-मुविधा की मारी व्यवस्था कर दी जाएगी। इनके पिताजी का स्वर्गवास ही चुका था उमीलिए उन्हें यह सब बाने कहने की ग्रावण्यकता हुई थी। पण्डित मुकुन्दजू का व्यागदेवजी से बटा स्नेह था। उनका वडा ग्रादर करते थे ग्रीर उनसे विविध विषयो पर प्राय उपदेश मुना करते थे। पण्टित गोपीनाथ के ग्राग्रह करने पर ब्रह्मचारीजी ने मुपनी वाग मे ही ठहरने का निय्चय किया। महात्मात्रो के विशेष सम्पर्क से व्यागदेवजी को रसायन बनाने का बडा शीक था। वैद्यक का भी इन्होने अध्ययन किया था। सभी रोगो की ग्रीपधिया ग्रपने पास रखा करते थे। गरीबो को ग्रीपधिया वितरण किया करते थे। उनसे दाम नहीं लेते थे। इसलिए निर्धनों में ये सर्वप्रिय थे। पहाडो पर, भरनो, भीलो और नदियो के किनारे प्राय जडी-बूटिया तथा श्रीपिधया एकवित करने जाया करते थे।

तारसर, मारसर म्रादि भीलो पर भ्रमण--श्रावण मास मे व्यासदेवजी ने श्रीपिधया बनाने के लिए तारसर, मारसर श्रादि भीलों के किनारों पर से बूटिया ढूढने का विचार किया। जिन दो मजदूरों ने इन भीलों को पहिले में देख रखा था उन मजदूरों को मजदूरी पर करके उनके ऊपर वस्त्र, विस्तर तथा भोजन-सामग्री लदवा कर प्रस्थान किया । तीनो एक नदी के किनारे-किनारे चल दिए। इस नदी का पानी हार्वन भील में गिरता था। यह नदी तारसर भील से निकलती है। मारसर भील ने पहलगाव की नदी निकलती है। तारसर से कुछ मील की दूरी पर चन्द्रसर नामक झील है। उम झील में भी एक नदी का निकास होता है जो गावरवल चली जाती है। इन भीलों में नारसर सबसे बड़ी तथा विवेकसर सबसे छोटी है जिसका जल सोनमगं की ग्रोर जाता है। ये भीलें प्राय तेरह-चीदह हजार फीट की ऊचाई पर हैं। उनके एक तर्क हार्वन, दूसरी ग्रोर पहलगाव, तीसरी ग्रोर ग्रमरनाथ तथा सोनमर्ग श्रीर चीथी श्रोर गावरवल तथा कगण है। व्यासदेवजी हार्वन से चलकर दूसरे दिन तारसर भील पर पहुच गए। इसके किनारे पर तो कोई वृक्ष नही थे। इसके नीचे मुछ वृक्ष ग्रवण्य थे। यही पर एक देवदार के वृक्ष के नीचे ठहर गए। चारो स्रोर जेटी-वृटियो तथा पुर्णो से परिपूर्ण ऊची-ऊची पहाटिया दृष्टिगोचर हो रही थी। रात्रि के समय उस स्थान से लगभग श्राध मील की दूरी पर उन्हें दीपक की ज्योति के समान प्रकाश दिखाई दिया। उन्होंने एक कुली से, जिसका नाम श्रक्वर था, पूछा कि सामने की पहाडी पर कैसा प्रकाश हो रहा है। जब उसने कहा कि यह वूटियो का प्रकाश है तब व्यासजी तथा श्रकवर दोनो उन्हें तोडने के लिए चल दिए। ज्यो-ज्यों ये आगे वढते थे त्यो-त्यो प्रकाश कम होता जाता था श्रीर जब उन वृटियों के पाम पहुंचे तब वह प्रभाग विलक्ल लुप्त होगया। इसलिए इन्हें कुछ पता न चल

सका कि ये बूटिया क्या थी ग्रांर इनके नाम क्या थे। प्रांत ६ वर्जे तारसर भील के किनारे गए। यह भील कई मील लम्बी चौडी है ग्रांर इसके किनारे वडी-वडी पहा-डियो पर बडे विस्तृत मैदान है जिन पर जडी-बूटियो ग्रांर पुष्पो का ग्राधिक्य है। इसके ग्रासपास की मिट्टी मे क्षार था, इसे खाने के लिए वारहिंसगों के भुण्ड ग्राया करते थे। इसे खाकर वे नमक की पूर्ति कर लिया करते थे। इनकी की डाए तथा लीलाए, उछल-कूद, फुदकना ग्रीर फादना देखकर उन्हें वडी प्रसन्नना लाभ हुई। इस भील पर से बहुत सी जडी-बूटिया एकत्रित की। एक दिन घूमते-फिरते इसके किनारे दो बडे चमकदार विलोर पत्थर उपलब्ध हुए। इनका प्रकाश हीरे के समान था। एक पत्थर मे दो स्थानो पर चमक थी ग्रीर दूसरे पर एक स्थान पर। ऐसा प्रतीत होता था कि एक पत्थर मे दो हीरे तथा दूसरे मे एक हीरा तिरोहित था। उन हीरो को ग्रमृतसर जाकर निकलवाने के विचार से ग्राने पास मभालकर रख लिया। मारसर भील बहुत दूर थी इसलिए ये बहा नही गए। तारसर मे ऊपर महादेव पर्वत है जो शिवलिंग के ग्राकार का है। काञ्मीर मे लोग यहा यात्रा करने ग्राया करते हैं। यहा से भी कई ग्रीपिंध उपयोगी जडी-बूटिया एकतित्र की। यहा पर भी ग्रनेक भालू, वाघादि द्ष्टिगोचर हुए। ग्रहु। हिन तक विविध प्रकार की बूटिया ग्रीर जटे लेकर वापस लीट ग्राए। यह स्मरण नही रहा कि तारसर का पानी भील मे ग्राना है या मारसर का।

होतीमर्दान के नवाव को आशीर्वाद—मैयद जवाशाहपीर नामक एक मुमल-मान नवयुवक पर व्यासदेवजी के चरित्र का वडा प्रभाव था। सायकाल जब ये म्रमणार्थ जाते तो वह उनके साथ जाना था। इसको साथु-महात्माओ का मग वडा प्रिय था। यह घण्टो ही इनके पास बैठकर उपदेश सुना करना था। यह उन्हें अपना गुरु मानता था और इनकी वटी सेवा करता था। इनके प्रति उमकी वटी श्रद्धा थी। धीरे-धीरे यह अपने साथ अन्य मुसलमानो को भी लाने लगा। ये मभी इन पर बडी श्रद्धा और विश्वास रखने लगे और इनके वटे सेवक और भक्त वन गए। हिन्दुओ मे तो इनकी ख्याति थी ही, अब मुसलमानो मे भी उनकी कीर्नि होने लगी। ये इनमे भी सर्वप्रिय वन गए।

एक दिन सैयद जवाजाहपीर व्यासदेवजी के साथ मैर करने गया। मार्ग में होतीमदीन के नवाव अपनी मोटरगाडी में सैर करते हुए उघर आ निकले। इन्होंने सैयद को अपने नौकर के द्वारा अपने पास बुलाया और व्यासदेवजी के विषय में पूछताछ की। उसने इनकी वडी प्रशसा की और जब नवाव को पना चला कि ये वालब्रह्मचारी बडे विद्वान् महात्मा और महान् योगी हैं तथा सैयद के गुरु है तब उसने इससे कहा कि इनको वडी सिद्धिया प्राप्त होगी। अपने केवल ध्यान मात्र से ये जो चाहते होगे कर लेते होगे। ये देश, काल और अवस्था से बधे नहीं है। ये जहा चाहे जा सकते है, जब चाहे वहा पहुच सकते है और जिस रूप में इच्छा हो उसी रूप में जा सकते है। इनके लिए कोई वात असम्भव नहीं। तुम मेरा परिचय इनसे करवा कर मेरा एक काम इनसे करवा दो। गुलजार वेगम नामक एक युवती इसकी प्रेमिका थी। वह लाहौर में रहती थी। यह उससे विवाह करना चाहता था किन्तु वह इस बात को स्वीकार नहीं करती थी। नवाव यह चाहता था कि किसी

प्रकार में व्यासदेवजी उमका मन इसकी ग्रोर मोट दे ग्रीर वह इससे विवाह कर ले। संयद ने नवाव का परिचय नो व्यासदेवजी में करवा दिया किन्तु उसकी ग्रिमलापा को पूर्ण करने के लिए प्रार्थना नहीं की। उस प्रकार की वात करने की उसकी हिम्मत ही नहीं हुई। नवाव ने उनसे हाथ जोडकर ग्रीर वहें ग्रदव के साथ भुककर प्रणाम किया। व्यासदेवजी ग्रपने योगवल से दूसरों के हृदय के भावों को जान लेने थे। नवाव के मन में उस समय जो कुछ भी भाव थे वह तुरन्त समभ गए ग्रीर "तुम्हारी मनोकामना सिद्ध हो" यह ग्रागीवाद देकर उसे विदा किया। इस ग्रागीवाद के परिणामस्यम्य लगभग एक-दो मास के भीतर ही गुलजार वेगम ने नवाब में विवाह कर लिया। ये दोनो महारोजजी का ग्रागीवाद लेने के लिए ग्रमृतसर गए ग्रीर वडी कृतजना प्रकट की।

सत्यनिष्ठ सिद्धों के वाक्य कभी व्यर्थ नहीं होते, उनकी वाणी से जो वात निकलती है वह सदैव सन्य होती है। यद्यपि अभी व्यासदेवजी नवयुवक ही थे किन्तु योगाभ्यास और यमनियमपालन और वडी-वडी लम्बी समाधियों द्वारा इन्हें वडी यक्ति नथा योगवल प्राप्त हो गया था। अपने आशीर्वादों तथा वरदानों से इन्होंने मैकटों नर-नारियों की कामनाओं को पूर्ण किया था। दुष्तियों का दुख हरण, पीडितों की पीडा को दुर करना, आतों की आर्ति को मिटाना इनका स्वभाव था।

## पुन श्रमृतसर के लिए प्रस्थान

विजयादशमी के उपरान्त व्यासदेवजी ग्रमृतसर पधारे ग्रोर पूर्ववत् मोतीराम की बगीची में ग्रपनी कृटिया में रहकर योगाभ्याम करने लगे। इस बार इन्होंने उपनिपदों का शाकरभाष्य पण्डित हरिश्चन्द्रजी में पढना प्रारम्भ किया। नित्य ही पाच-छ घटे इनके पास पढने के लिए जाया करते थे ग्रीर शेप समय स्वाध्याय ग्रीर ग्रम्यास में ब्यतीत करते थे।

हिन्दू-मुसलमानों के दगे—च्यानदेवजी को पण्डित हरिश्चन्द्रजी से विदित हुया कि नगर में हिन्दू-मुसलमानों ने दगा कर दिया है। कटरा ब्राह्न्वालिया में बहुन में हिन्दू मारे गए है। नगर के लगभग मारे वाजार वन्द हो गए है। हिन्दू ब्रार मसलमान दोनों में यडी तनातनी श्रीर विचाव हो रहा है। पण्डितजी ने ब्रह्मात्यों को जब तक यह दगा और किमाद बन्द न हो जाए तब तक प्रतध्याय रक्ते का श्रादेश दिया श्रीर जहा पर हिन्दुश्रों की संख्या कम है श्रीर मुसलमानों की श्रावक बहा जाकर हिन्दुश्रों की रक्षा का प्रवन्ध करने श्रीर जहा पर हिन्दुश्रों की सम्या श्रीवक है वहा पर उन्हें श्रात्मसम्मान, अपनी सम्पत्ति श्रीर वहू-वेटियों की एका के लिए साहमपूर्वक तैयार रहने का श्रादेश दिया। व्यासदेवजी को श्राजा दी गई कि वे सब बाजारों में यूम-धूमकर कूर वस्तुस्थिति से पण्डितजी को श्राजा दी गई कि वे सब बाजारों में यूम-धूमकर कूर वस्तुस्थिति से पण्डितजी को श्रावगत करें। इन्होंने श्राकर सूचना दी कि भाई के कटरे श्रीर लोगढ के कटरे में मुसलमान श्रीवक रहते हैं उमलिए यहा के हिन्दू बडे भयभीत हो रहे हैं श्रीर निवेदन किया कि में नहर पर जाकर हिन्दुश्रों की रक्षा करुगा क्योंकि भाई के कटरे के एक हजार मुसलमान एकत्रित होकर फूलों के चौक मे हिन्दुश्रों पर श्राक्रमण करने की तैयारी में लगे हुए हैं। इन्होंने फूलों के चौक में जाकर काहनचन्द, डाक्टर

मनोहरलाल, हकीम निक्कामल, साहवदयाल इत्यादि प्रतिष्ठित लोगो की एक सभा की ग्रीर इन सवको ग्रात्मरक्षार्थ तैयार किया। हिन्दुग्रो की रक्षा के लिए तत्काल एक योजना वनाई। महिलाग्रो ग्रीर वच्चो को मकानो के ग्रन्दर रहने का ग्रादेश दिया गया। मकानो की छतो के ऊपर पत्यर, ईटें रख दी गई श्रीर महिलाश्रो को समभाया गया कि जब भी मुसलमान हल्ला बोलें तभी उनके ऊपर पत्थरों की बौछार करे ग्रीर जब वे ऊपर को देखें तो तुरन्त उनकी ग्राग्वों पर मिचें फेंक दें जिससे वे घटो ही ग्रपनी ग्राखे मसलते रह जाए ग्रीर हिम्मत हार जाए। सब नव-युवको तथा पुरुषो मे कुल्हाडिया, विषया, छुरे ग्रीर मोटिया वितरित करटी गई ग्रीर छुरा तथा भाला चलाने की शिक्षा का प्रत्येक घर मे प्रवन्य किया गया। इस कार्य के लिए मुहल्ले का प्रत्येक मकान एक प्रशिक्षण केन्द्र वन गया। ४६ नवयुवको की एक कमेटी बनाई गई जिसका काम मुहल्लो मे जाकर सबको श्रात्मरक्षायं उत्ते-जित करना ग्रीर जहा हिन्दुग्रो का पक्ष कमजोर देखें वही जाकर उनकी महायता करना था। इनमे हे नवयुवको ने यह प्रण किया था कि मर जाएगे पर पीठ नही दिखाएगे । व्यासदेवजी इन नवयुवको के प्राण थे । ये ही इनको प्रेरणा देने वाले पथप्रदर्शक थे ग्रौर नगर की रक्षा के लिए प्राणप्रद मजीवनी शक्ति का इनमे सचार कर रहे थे। श्रीमद्भगवद्गीता के श्रात्मा की नित्यता के विषय के व्लोको को मुना-सुनाकर देह की अनित्यता तथा आत्मा की नित्यता का बार-वार उपदेश करने थे ग्रीर उन्हें जनरक्षा ग्रीर जनकल्याण तथा समाजसेवा के लिए कटिवद्ध करते थे। जहा हिन्दुग्रो मे कमजोरी ग्राते हुए देखते वही "नैन छिन्दन्ति गस्त्राणि नैन दहिन पावक " का घोप सुना कर उन्हें उत्साहित करते थे। 'मरो या मारो' का नारा बुलन्द हो रहा था। इनमें प्रेरणा पाकर हिन्दुक्रों ने इटकर मुसलमानो का मुकावला किया। कई मुहल्लो में दगा हुग्रा, संकडो हिन्दू ग्रौर मुसलमान घायल हुए ग्रीर मृत्यु का ग्रास वन गए। हिन्दुग्रो की वीरता ग्रीर साहस को देखकर मुसलमानो की पीठ टूट गुई। लगभग एक सप्ताह तक यह मारकाट जारी रही ग्रौर उसके वाद गान्ति स्थापित हुई।

सन्त रामदासजी का सत्सग—सन्त रामदासजी अमृतसर मे वडी नहर के किनारे किठन तपस्या का जीवन व्यतीत कर रहे थे। जीजम के एक पेड के नीचे इन्होंने एक चवूतरा वनवा लिया था। वे सदैव इसी चवूतरे पर वैठे रहते थे। गर्मी, सर्दी, धूप तथा वर्षा में यही उनका मकान था। दो खहर की मैली-सी चादरों के अतिरिक्त कोई अन्य सम्पत्ति उनके पास न थी। दियामलाई के अतिरिक्त वे कभी किसी से कुछ नही मागते थे। अन्न का इन्होंने सर्वथा परित्याग किया हुआ था। प्राय मौन रहते थे। गर्मी, सर्दी, भूख, प्यास, रागद्वेष, मान-अपमान, हानि-लाभ आदि इन्हों से रहित थे। यदि कोई सेवक या श्रद्धालु भक्त इन्हें फल आदि देने जाते तो वे इसे कभी स्वीकार नही करते थे। वडे ऊचे दर्जे के तपस्वी थे। इनका वैराग्य वडा तीच्र था। ये सदा वृक्षों के पत्ते उवालकर खाया करते थे। जगली अजीरों के पत्तो पर प्राय निर्वाह करते थे। वर्षों तक ये नहर के किनारे पर रहे। व्यासदेवजी को इनका सत्सग वडा पसन्द था। वे प्राय इनके पास जाया करते थे और जब कभी इन्हें दियासलाई की आवश्यकता होती थी तो उन्हें भट जाकर दे आया करते थे।

ब्रह्मचारीजी साढे ग्यारह वजे श्रध्ययन के लिए पडित हरिव्चन्द्रजी के पास जाया करते थे। एक दिन सन्त रामदासजी भी उनके पीछे-पीछे चल दिए। जव ये लक्ष्मणसर वाजार में पहुचे तो उन्होंने एक हलवाई को गर्म-गर्म जलेवी घी मे से निकालते हुए देखा। सन्त रामदासजी उस हलवाई की दुकान के सामने खडे होगए। इनका सब लोग वडा सम्मान करते थे। हलवाई ने सन्तजी से पूछा कि ग्राप जलेवी खाग्रोगे। सन्तजी चुप रहे ग्रीर उसकी वात का कुछ भी जवाव नही दिया। जव हलवाई किसी काम से भीतर चला गया तव इन्होंने जलवियों से भरे थाल में मुह डालकर इन्हें खाना प्रारभ कर दिया। जब दुकानदार वाहिर ग्राया ग्रीर सन्तजी को थाल मे मुह डाल-कर जलेवी खाते हुए देखा तो वह कोध के मारे ग्रागववूला होगया ग्रीर फट झरना उठाकर उनकी पीठ पर मारने लगा । इसने न ग्राव देखा न ताव, मारता ही गया। व्यासदेवजी ने जव हलवाई को सन्तजी को मारते हुए देखा तो उससे कहा कि सन्तजी को मत मारो, जितनी जलेवी ये खाते हैं खाने दो, सारे थाल के दाम चुका दिए जाएगे, श्रीर रामदासजी से कहा कि श्रापने जलेवी खाने की कभी इच्छा प्रकट नहीं की। ग्राप मुक्ते ग्राज्ञा देते तो मैं ग्रापको जितनी ग्रावव्यकता थी उतनी जलेविया लाकर दे देता। ग्रापने दुकानदार का सारा थाल क्यो भूठा कर दिया ? सन्तजी ने उत्तर दिया कि यदि आप ही सब कुछ कर देते तो इस सन्त को मार कैसे पडती और जिह्वा को वश मे न रख सकने के कारण दण्ड कैसे मिलता। ये २६ साल से अपने मन को जलेविया खाने से रोक रहे थे। उसके ऊपर वडा नियत्रण रखते थे। वर्षी तक जलेविया खाई थी किन्तु इनकी भूख ज्ञान्त नही हुई थी। ज्ञानेन्द्रियो मे रसना वडी वलवनी है। काम ग्रीर रसना पर विजय पाना वडा दुस्साध्य है। भोग भोगने से कभी ज्ञान्त नहीं होते ग्रीर यदि विषयों से मन तथा इन्द्रियों को रोका भी जाए तो इनका रस बना रहता है। इनका स्वाद नप्ट नहीं होता। जो प्रकट रूप से तो इन्द्रियों को वंश में कर लेते हैं किन्तु मन में उनका ध्यान करते रहते हैं, ऐसी स्थिति को भगवान् श्रीकृष्ण ने मिथ्याचार की कोटि में रखा है। भर्तृ हरिजी ने भी ऐसे ही व्यक्तियों के लिए कहा है "भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता ।" सन्तजी के मन को हलवाई ने वडा भारी दण्ड दिया। इस मार से वे प्रसन्न थे क्यों कि उनका विश्वास था कि इस भारी मार को खाने के वाद ग्रव जलेवी देखकर मुह मे पानी नहीं भरेगा। इसे दण्डित करने के लिए ही सन्तजी ने हलवाई के जलेवियों से भरे थाल मे मुह डाला था। जानवूसकर ही इन्होने ऐसा किया था। इन्होने हलवाई पर किसी प्रकार का कोघ नही दिखाया। उसकी प्रशसा की श्रीर इस दण्ड के लिए उसे घन्यवाद दिया। हलवाई ने उनके पैरो मे सिर रखकर क्षमा-याचना की। रामदासजी हलवाई को ग्राजीर्वाद देते हुए नहर के किनारे ग्रपने स्थान पर चले गए।

ग्रध्ययन समाप्त करने के पश्चात् व्यासदेवजी सीधे सन्त रामदासजी के पास गए ग्रीर वाजार मे जो कुछ हुग्रा था उसके लिए वटा ग्राइचर्य घ्यक्त किया। २६ साल तक कठिन तपस्या करने पर भी ये एक इन्द्रिय पर विजय प्राप्त न कर सके तो शेप ६ इन्द्रियो पर विजय पाने के लिए तो ग्रनेक जन्म धारण करने की ग्रावश्यकता होनी चाहिए। जो सन्त वर्षों से केवल पत्ते उवालकर खा रहा हो, जो सदीं, गर्मी, घूप, वर्षी एक चवूतरे पर बैठकर काट रहा हो, जो कभी न भिक्षा मागता हो

श्रीर न किसी से किसी प्रकार की भेट स्वीकार करता हो श्रीर जो पूर्ण रूप से श्रपिरग्रही हो, यदि उसकी यह स्थिति हो सकती है तो फिर छोटे-मोटे सामुग्नो की क्या
हालत होती होगी ! सन्तजी ने व्यासदेवजी से सब बात सिवस्तार कहीं । वे ह्टणूर्वक
कई वर्षों से गम श्रीर दम का श्रभ्यास कर रहे थे । पर उनमें ज्ञान श्रीर वैराग्य की
न्यूनता थी । प्रवल ज्ञान ग्रीर वैराग्य के विना इन्द्रियो पर विजय पाना ग्रमभव है ।
सर्वप्रथम इन्द्रियो ग्रीर इनके स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, तब ग्रात्मिवज्ञान
श्रत्यन्त ग्राव्यक है । इसके विना सब माधनाए व्यर्थ है । सन्तजी को रमनेन्ट्रिय के
जीतने मे इतने वर्ष लगे तो शेप इन्द्रियो की तो बात ही वहुत दूर है । व्यासजी ने
कहा कि पट् रस का ग्रास्वादन करना रसना का धर्म है, इसे ग्राप कैमें हटा सकते
है ? इसीलिए तो गीता में भगवान् ने कहा है कि "प्रकृति यान्ति भूतानि निग्रह कि
करिप्यति ।" इसका बडा सुन्दर उत्तर सन्तजी ने दिया "जलेवी खाने में रम की बात
नहीं थी । वहा तो ग्रासिक्त की बात थी । गरीर की ग्राव्यक्ता की पूर्ति नो गुट
ग्रीर चीनी खाकर भी की जा सकती थी । ग्रासिक्तपूर्वक किमी भी इन्द्रिय के विपय
को ग्रहण करना राग है । भोग में ग्रामिक्त ही नो बन्धन का कारण है।" इस घटना
के पञ्चात् मन्तजी ग्रमृतसर में नहीं रहे । सट्टोरे लोग उन्हें बहुत तग किया वरते
थे । श्रद्धालुग्रो, भक्तो ग्रीर मेवको की मख्या भी बहुत होगई थी । प्राय सारा दिन
कोई न कोई ग्राते ही रहते थे । इससे इनकी साधना ग्रीर भजन में क्योंकि विव्य
उपस्थित होता था ग्रत ये वहा से कही ग्रन्यत चले गए।

व्यासदेवजी की रसनेन्द्रिय मे स्रासनित—व्यासदेवजी ने जब से गृह-परित्याग किया था तब से वे स्वयपाकी थे और अभ्यास करते-करते भोजन बनाने में सिद्ध-हस्त होगए थे । ग्रालू ग्रीर मटर का मीसम ग्रभी प्रारभ ही हुग्रा था कि इन्होंने इन दोनो को मिलाकर संडजी वनाई। वह ग्रत्यधिक स्वादिप्ट वनी। खाते-खाने पेट तो भर गया किन्तु रसनेन्द्रिय की ज्ञान्ति नहीं हुई। वह अधिकाधिक साना चाह रही थी। इन्हें तुरन्त सन्त रामदासजी की स्मृति हो ग्राई। इनको नयम ग्रमीम था। वृक्षो के पत्तों के श्रितिरिक्त कुछ भी नहीं खाते थे। श्रयनी रसनेन्द्रिय को इन्होंने बहुत धिक्कारा श्रीर कहा, "सन्त रामदासजी की रसनेन्द्रिय तो पत्ते खाकर ही सन्तुष्ट हो जाती थी किन्तु त्रालू मटर तथा अन्य विविध प्रकार के स्वादिष्ट भोजन करके भी जान्त नहीं होती। इन ग्रालू मटरों में नमक, मसाला, दही इत्यादि ही तो हैं। श्रव तुम्हे कल से ये सब श्रलग-श्रलग खिलाए जाएगे।" दूनरे दिन मे ही इन्होने मटर श्रीर श्रालू, नमक, मिर्च तथा मसाले के बिगा ही बनाने शारभ कर दिए। इनको खाया किन्तु कुछ भी स्वाद नही ग्राया। वस, इसी दिन से नमक, मिर्च, ममाला तथा चीनी खाना सर्वया त्याग दिया। ग्रव दाल गाक ग्रादि सव विना नमक ही खाना प्रारभ कर दिया ग्रौर दूध मे चीनी डालना भी वन्द कर दिया। तीन साल तक नमक ग्रीर चीनी विलकुल नहीं खाई। इससे इनके हृदय में दर्द रहने लग गया था। भ्रनेक उपाय किए किन्तु इस पीडा को ग्राराम नहीं ग्राया। जब नमक ग्रीर चीनी खाना प्रारभ किया तो स्वत ही दो तीन दिन मे ग्राराम ग्रागया ग्रार एक सप्ताह मे भ्रौपयोपचार किए विना ही यह पीडा जाती रही। भ्रायुर्वेद का यह सिद्धान्त है कि पड्र रस के नियमानुसार नित्य सेवन करने से मनुष्य नीरोग रह सकता हे भ्रौर सव

धानुस्रो नी वृद्धि समानन्पेण होती रहती है तथा वात, वित्त स्रीर कफ भी विषम होकर कुषित नहीं होने पाते।

सन्त भण्डू से वार्तालाप—सन्त भण्डू वहुत सालों से नहर पर नारायणिसह की बगीची में रहा करते थे। ये सिक्य धर्म के अनुयायी थे और वहुत ज्ञान्त प्रकृति के थे। सदेव वाहनुरु के नाम का जाप किया करने थे। इनका खर्चा केवल छ पैसे प्रतिदिन होता था। उन छ पैसों के लिए ये नित्य नमक मण्डी में मजदूरी करने जाया करने थे। जब मजदूरी करके छ पैसे कमा लेते नो इनका आटा मोल ले आते और रोटी बनाकर जा कि । दाल और शाक ये बहुत कम खाते थे। लकडी ये स्वय बीन लाते थे। एक ज्वहर की चादर, एक कच्छ, एक बनियान, एक छोटी-मी मिट्टी की यानी, एक नवा मिट्टी का बादर, एक कच्छ, एक बनियान, एक छोटी-मी मिट्टी की यानी, एक नवा मिट्टी का बादर, एक कच्छ, एक वित्यान, एक छोटी-मी किट्टी की यानी, एक नवा मिट्टी का बादर जनकी दिन के लिए एक मिट्टी का पात्र ही वस इनकी मम्पिन थी। इनामदेवजी उनकी दशा देवकर नित्य ही इनसे बातचीत करने का अवसर हटा करने थे। एक दिन ये इन मन्तजी के पास आए और दोनों में निम्न बार्तालाप प्रार्भ हुआ

ब्यानदेवजी—ग्रापके पास केवल एक फटी पुरानी चादर है। शीत बहुत पड रहा है। यदि कही तो में ग्रापके लिए कपड़े, चादर ग्रीर कम्वल की व्यवस्था कर दू।

गन्त भण्डूजी —ग्रापकी बड़ी कृषा है, किन्तु क्षमा करे, मुक्ते इनकी ग्रावय्यकता नहीं । द्यामदेवजी—मर्टी बहुत पड़ रही है । ग्रापको जीत तो मताता ही होगा ।

सन्त भण्डूजी—जगल के पशु-पत्नी, गुत्ते, विल्ली, गाय, भैस ग्रादि जीवो को ठण्ड क्यो नहीं तगती वे तथा शीतकाल में गर्म वस्त्र धारण करते हैं विश्वावश्यकता-नुसार मेरे पास पर्याप्त वस्त्र है।

व्यासदेवजी—किन्तु सहाराज । वे पुराने हो गए ई, फट गए है, स्रीर मैंले है। सन्त भएपूजी—लेकिन उस शरीर से तो स्रच्छे ई। उसमे मास, मज्जा, चर्बी, टट्टी स्रीर पैसाब के स्रतिरिक्त स्रीर है ही क्या ?

स्यासदेवजी -- प्रापको छ पैसे का आटा लाने के लिए नित्यप्रति मजदूरी करने के लिए नमक मठी जाना पड़ता है। कष्ट होना होगा। मे आपको नित्यप्रति दो आनं का आटा मगवा दिया कर ?

गन भण्टूजी—महाराज । ग्राप की कृपा के लिए में ग्रापका वडा ग्राभारी हूं, किन्तु धमा करें, में नूता, लगडा, रोगी तथा ग्रपाहज नहीं हूं जिससे में ग्रपने लिए दो रोटी का ग्राटा भी न कमा सकू।

ह्यासदेवजी—ग्राप केवल दो ही ग्राने की मजदूरी नित्यप्रति क्यो करते हैं ? सन्त भण्यूजी—क्योकि मुक्ते उतने की ही जरूरत है।

ह्यानदेवजी—यदि कभी वीगार हो जायो प्रथवा मजदूरी न मिले तो बड़ी कठिनाई उपस्थित हो जाए।

मन्त भागूजी—प्रव तक तो कभी ऐसा प्रवसर ग्राया नहीं, फिर व्यर्थ में ही भविष्य के लिए चिन्ता क्यों कर ग्रीर इस करपना से लाभ भी क्या है ? व्यासदेवजी—ग्रापको यह सन्तोप कैसे प्राप्त हुग्रा ? सन्त भण्डूजी—सन्तो के सत्सग ग्रीर वाहगुरु की कृपा मे ।

व्यासदेवजी का दृढ विश्वाम था कि मत्सग से गुढ़ भावनाए, पित्रत्र विचार श्रीर श्राध्यात्मिक साधन, ध्यान, जाप तथा त्याग श्रादि दृढभूमि होते हैं। इसिलए नवयुवक होने पर भी कभी वे साधारण गृहस्थियों से श्रीवक सम्पर्क नहीं रनते थे। सुदूर किसी एकान्त स्थान पर वास करना उन्हें श्रविक रुचिकर था। सदैव सायुत्रों, सन्तों, महात्मात्रों तथा योगियों के साथ निवास करते तथा उनके साथ वार्तानाप तथा उनका सत्सग किया करते थे। अपने गन्तव्य पथ ने विचलित न होने, अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हिमगिरि के समान श्रटल रहने नथा मसार के श्राधानों और प्रतिघातों को वीरतापूर्वक सहने में सन्तों का सपकं उनका यटा महायक रहा है।

सन्त दासुरामजी का समागम—दामुराम एक सिधी सन्त थे। उन्होंने गेरए वस्त्र धारण नहीं किए थे। सदैव स्वेत वस्त्र ही घारण किया करते थे। एक बार ये कही वाहर से श्राए श्रीर व्यासदेवजी के पास वाली कुटिया मे श्राकर रहने लग गए। ये प्रात काल ही जगल मे किसी एकान्त स्थान पर ग्रयवा नहर के किनारे सायना करने के लिए चले जाया करते थे। दोपहर में भिला मागने के लिए जाने थे ग्रीर सायकाल वर्गीची मे श्रा जाते थे। ये वडे धनाढ्य गुल के मज्जन थे। उनके लडके शिकारपुर मे व्यापार करते थे। इनको तीव वैराग्य होगया था, अन गृह-पित्याग करके चले ग्राए थे। प्राय रात्रि के नी वजे ये वराण्डे मे व्यासदेवजी के पास बैठ जाते श्रीर ज्ञान, ध्यान, साधना श्रीर वैराग्य श्रादि के सम्बन्ध मे वार्तानाप किया करते थे। उनके वाल्यकाल ने ही वैराग्य ले लेने ग्रीर घर तथा परिवार के सब मुखो को ठोकर मारकर गृह-त्याग, उनके ग्रावण्ड ब्रह्मचर्य, शास्त्राध्ययन, ज्ञानिषपाना, एकान्त सेवन से वे वर्डे प्रभावित थे। उन्हे देखकर इनका भी वैराग्य दृटनर होता जाना था। दासुरामजी अपने पास रुपया पैसा नहीं रखते थे। एक दिन उनका लडका व्यापार सम्बन्धी किसी कार्यवय अमृतसर श्राया । उन्होने उने व्यासदेवजी को चार सौ रुपये भेट रूप मे देने की आजा की । ये जब्द सुनते ही उन्होने कहा कि मुक्ते रुपये की विलकुल ग्रावश्यकता नही है। दासुराम ने ग्रपने लडके से पूछा कि क्युमलता ग्रव कितने वर्ष की होगई है। पुत्र ने कहा कि १७-१= वर्ष की होगई है, उसके लिए वर की वडी खोज कर रहा हू किन्तु श्रभी सफलता नही मिल सकी है। दानुराम ने व्यासदेवजी को बुलाया श्रीर एक श्राम के वृक्ष के नीचे ले गए। दोनो मे निम्न वार्तालाप हुश्रा दासुराम—ब्रह्मचारीजी । जबसे मेरा श्रापसे परिचय हुत्रा है तब से कई बार मेरी ऐसी

इच्छा हुई है कि मै कुसुमलता का विवाह ग्रापके साथ करवा दू और लडको से ग्रापको खूब वडी घनराशि दिलवा दू जिससे ग्राप दोनो सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके। यदि ग्राप मेरी यह प्रार्थना स्वीकार कर लें तो मैं ग्रापका चिर ऋणी रहूगा ग्रीर कुसुमलता का जीवन भी सफल हो जाएगा।

व्यासदेवजी--(हसकर) इस वात का उत्तर रात के नौ वजे दूगा। इन्होने पिता ग्राँर पुत्र दोनो को बुलाया ग्रीर कहा, "दासुरामजी । मैं तो ग्रापको बहुत ऊंचा सन्त समभता था ग्रीर ग्रापकी भिवत, श्रद्धा ग्रीर साधना की सदैव सराहना किया करना था। त्रापने मेरे ब्रह्मचर्य, वैराग्य और साधना की भूरि-भूरि पनानो बार प्रधना की है, किन्तु आज आप मुक्ते पतन के गहन गर्त मे गिराने के लिए समुद्रत हो रहे हैं। क्या जाप, तप, ध्यान, पूजा, ज्ञान और वैराग्य ना बही फल है जो आज आप मुक्ते देना चाहते हैं यह तो सासारी लोगों यो भी प्राप्य है।"

दामुराग—गृहर्यो बनना यया पतन के मार्ग पर चलना है ? क्या ऋषि-मुनियों ने प्राचीन काल में गृहर्थ धर्म का पालन नहीं किया था ? क्या वे पतन के मार्ग पर चल रहे थे ? तथा उन्होंने वेद ग्रीर शास्त्रों के विरुद्ध ग्राचरण किया था ?

स्पानदेवजी—मेरे जैंगे आत्मितिज्ञान और ब्रह्मविज्ञान के जिज्ञासु के लिए तो यह पतन का मार्ग ही सिद्ध होगा। कहा तो उतनी ऊची ज्ञान, ध्यान, समाधि और पैराग्य की बाने और कहा अब विवाह की चर्चा! मेरे तीब वैराग्य और गृहत्याग की उच्छा को देनकर मेरी माताजी ने कहा था, वेटा! ससार में तीन बड़े-बड़े प्रलोभन है—धन, रती श्रीर भूमि। ये तीनो परम सुख के साधन माने जाने हैं श्रीर ये नीनो मनुष्य को अपनी श्रोर आकपित करते रहते हैं। जो इनके प्रलोभन में कम जाता है उसका पतन अवश्यमभावी है। अने वेटे! तुम उनसे नर्देय बचना। जिन सुखों की श्रोर दासुरामजी श्राप सुक्ते आकर्षित कर रहे हैं वे नव मुद्रों घर पर भी मिल सकते थे। मैंने घर पर स्वाग श्रारमजान और ब्रह्मजान की प्राप्ति के लिए किया है। यही मेरा उद्देश्य है। श्राप मुक्ते भेरे प्रथ में विचलित कर रहे हैं। श्राज के पश्चात् श्राप कभी मुक्ते विवाह या गृहत्य की चर्चान करे।

दासुराम —महाराज ! मैं बडा लिजन हू। श्राप इस प्रकार के दृढव्रती है, इसका मुक्ते पता न लग सका। श्राप मुक्ते क्षमा करे। मैंने बडा पाप किया है, यह पहने-कहते उन्होंने ब्रह्मजारीजी के पाव पकड़ लिए।

यक्षानारीजी को अनेक प्रलोभन देकर पथश्रण्ट करने का यत्न किया गया पर उन बालयोगी को कोई भी प्रलोभन अपनी और आकृष्ट न कर सका। हिमगिरि के समान अदिग रहे। श्रापकी निष्ठा, श्रापका बन, श्रापका तप, श्रापकी साधना तथा आपका योग वर्णनातीन है। धन्य हो बालयोगी, तुम धन्य हो।

# दलहोत्ती, चम्बा ग्रीर पाङ्गी भ्रमण

व्यागांत्रजी शीरम ऋतु में अमृतसर नहीं ठहरा करते थे क्योंकि वहां अत्यिक्त गर्मी पठती है। गर्म रवान योग मावना के लिए उपयुक्त नहीं होते। उस बार वे काव्मीर नहीं गए और उनहींजी, चम्बा तथा पाड़ी जाने का विचार कर लिया। ज्येष्ठ माम के प्रारम्भ होते ही वे गाडी में सवार होकर पठानकोंठ पहुँच। यहा पर ये अपने एक मुपरिचित व्यापारी नारायणदास के पास ठहरे। नारायणदासजी के नामीदार मलावामल कुलदीपचन्द भी व्यासदेवजी से बडा रनेह करने वे तथा उनके प्रति उनकी बडी श्रद्धा थी। यहा तीन-चार दिन ठहरने के परवात् ये मोटरगाडी हारा उनहींजी पहुंच गए। यहा पर आर्यसमाज

मन्दिर मे पाच दिन ठहर कर सभी दर्जनीय स्थानों को देखा। यहां से चम्वा तक पैदल का मार्ग था। इस रास्ते पर एक वडा ही सुन्दर स्थान है। इसका नाम खजयार है। इसमें पहाडियों के बीच में एक छोटी भील है। इस भील में जमीन के दो-तीन छोटे-छोटे टुकडे पानी पर तैरते रहते है। इसके ग्रास-पास वडे विज्ञाल देवदार के वृक्ष है। यह स्थान लगभग ग्राठ या नौ हजार फीट की ऊचाई पर है। यह बडा मनोहर स्थान है। यहा पर तीन-चार उपाहारगृह तथा दुकाने भी हैं। यहा पर एक दिन ठहरे। यहां से चम्बे तक कई मील की उतराई है। एक दिन में चम्बे जा पहुंचे। यहां पर इनका कोई परिचित नहीं था ग्रत ग्रार्यसमाज मन्दिर में जाकर ठहर गए।

चम्बा पजाब की एक पहाडी रियासत थी। जहर रावी के किनारे वसा हुग्रा है। बीच मे एक वडा सुन्दर ग्रौर चौडा मैदान है। श्रावण मास मे इस चौगान मे एक वडा भारी मिजरो का मेला भरता है। इस ग्रवसर पर रावी नदी मे वहुत ऊचे स्थान से एक भैसा गिराया जाता है। यदि वह भैसा किसी प्रकार से वच कर जीवित निकल ग्राता है तो इसे बडा ग्रग्रुभ माना जाता है ग्रौर यदि वह डूवकर मृत्यु का ग्रास हो जाए तो ग्रत्यन्त ग्रुभ माना जाता है। हजारो नर-नारी ग्रावाल-वृद्ध इस दृश्य को देखने के लिए ग्राते है। चम्वे से लगभग साठ या सत्तर मील पर एक मनीमहेश नामक भील है। यहा से रावी नदी निकलती है। यहा पर भी एक वडा मेला लगता है ग्रौर हजारो नर-नारी इसे देखने ग्राते है। यह एक तीर्थ-स्थान है जहा प्रतिवर्ष लोग यात्रा करने जाया करते है।

एक दिन व्यासदेवजी जब चम्बे के चौगान मे वैठे हुए थे तव जवाहर नाम का एक नवयुवक भी उनके पास ग्राकर बैठ गया। पागी की यात्रा के विपय मे दोनों में वार्तालाप होने लगा। उस नवयुवक ने भी वहा जाने का ग्रपना विचार प्रकट किया ग्रीर कहा कि मैं भी ग्रापके साथ चल्गा। चलने की तारीख भी निश्चित कर ली गई। जवाहर का घर पागी जाते हुए मार्ग में ही चम्बे से केवल ग्राठ मील की दूरी पर था। सर्वप्रथम जवाहर के गाव पुखरी में पहुंचे। यहा पर तीन-चार दिन ठहरे। इसके वाद प्रस्थान किया। यहां से केवल इतना ही सामान ग्रपने साथ लिया जो दोनो मिलकर स्वय उठा सके। पुखरी से चलकर तिस्सा पहुंचे। इसका दूसरा नाम चुराहा है। यह स्थान चम्बा से २५ मील है ग्रत ये उसी दिन सायकाल को वहा पहुंच गए। वहा पर एक छोटे से उपाहारगृह में ठहरे। यहा पर एक छूटी पर एक वालो का गुच्छा-सा टगा हुग्रा था। ये कटी हुई जटाग्रो का गुच्छा लग रहा था। व्यासदेवजी इसे देखकर बडे ग्राज्वयिन्वित हुए ग्रीर दुकानदार से पूछा कि यह वाल से कैसे टग रहे हैं। दुकानदार ने मुस्कराते हुए कहा कि ये मेरी जटाए हैं। व्यासदेवजी ने ग्राक्चर्यविकत होकर पूछा, ग्रापकी जटाए, क्या यह ग्रापकी जटाए है इससे ग्रापका क्या ग्रामित्राय हे हि तुकानदार ने कहा, "मैं भी पहिले ग्रापके समान ही एक सन्त था। जटाए घारण करता था ग्रीर उदासी मत का साधु था। वाल्यकाल से ही सन्त बन गया था। मैंने सातवी-ग्राठवी कक्षा तक पढ़ाई की थी। मैं एक उदासी निर्वाण सन्त का चेला वन गया था। ऊपर से तो मै वडी विरक्त वृत्ति से रहता था किन्तु युवावस्था में व्रह्मचर्य पालन बडा किंठन होगया। काम-वासना ने सताना प्रारम

कर दिया। पर लीट कर जाने तथा विवाह करने में वडी लज्जा प्रतीत होती थी। भिने प्रपने एक परिनित मन्त से मुन रया था कि चम्वा तथा कुल्लु के लोग बड़े भोल भाने होते हैं। ये ग्रानी लड़ियों का विवाह पजाबियों से करके दॉमाँद को ग्रपने घर पर ही रम नेते है। में यहा चला ग्राया ग्रीर एक लड़की से विवाह कर लिया। खेती-बार्ज का राम बना परिधमसान्य होता है। वह तो मुखरे हो नही सकता था, अत एक दुक्तन जो न तो । जुछ जमीन तो न्वसुर से मिल गई थी, और कुछ मैने स्वय गरीर जी। यहा पर प्रमीन की काव्त का कार्य प्राय स्त्रिया ही करती है। इसलिए एक विवाह धीर तर लिया जिससे दूसरी पत्नी चेनी-बाड़ी का सब काम सभाल ले। इसने भी जब जान न नना नब एक तीसरी बादी कर ली। इस समय यह स्त्री जिसे न्नाप देख रहे हैं मेरे पान दुकान पर काम करती है। भोजन भी यही बनाती है न्नीर वर्तनादि भी साफ रर नेती ह। द्यरी समान पर रहती है श्रीर वेती-वाडी का सब काम करती है और तीनरी भी येत पर जाकर उसकी महायता करती है। केवल हल चलाने हे निष् एक नीवर रखा हुआ है। मैं दुकान पर काम करता हू और यह मेरी पत्नी टोटन का काम चतानी है। दियापदेवजी उसकी बाते मुनकर खूब हसे। इसी दुगानदार में उन्हें यह पना चना कि यहा पर कई ऐसे सन्त रहते हैं जिन्होंने यहा मार विवाद पर तिया शीर गृहर्शी वन गए। दुकानदार ने ब्रह्मचारीजी से पूछा रिया याप भी उभी उदेश्य ने यहा ग्राए हो तो में श्रापके विवाह की सब व्यवस्था कर् सरता है। उब दुकानदार को पह मालूम हुआ कि उनके वहा आने का यह उद्देश्य नहीं भा आर उन्होंने प्राजीयन प्रहानयं पालने या व्रत धारण किया हुआ है तो उसने उन्ह यहा ने सीम्न नले पाने की मलाह दी पयोक्ति वहा के लोग नीचे में माने वाले न बगुव हो हो प्राय अने र प्रशार के प्रलोभन देशर विवाह के जान में फसा लिया करते थे। इयानदेवली को बटा पर और भी कई ऐसे दुकानदार तथा काव्तकार मिले जो प्रवर्गी पूर्णवस्या में सापु वे फिल्नु ग्रागे चलकर गृहस्थी वन गए ग्रीर व्यापार, काव्त-कारी तथा नी हरी जरने तम गए। यहा पर उन्हें यह पता चला कि यहां की स्त्रिया प्रको हो अवेता अभि परिवमनीला, स्वस्य और मुन्दर होती है। यहां पर दुकान गया तम चनाने का कार्य और नीकरी नो पुरुष करने हैं, शेष मारा कार्य स्त्रिया ही रस्ती है। यहा के लीग प्रवासियों के साथ अपनी पुत्रियों का विवाह करना अविक पसद करते है प्याकि य बड हाइ-पुन्द, व्यवहारमुगल तथा समभदार होते है। इनके नाय ग्रानी तटकियी का विवाह करके पर-जवाँटे रप नेते हैं किन्तु ग्रपनी लडकियो को पत्राव नहीं भेजने। शायद उसका कारण पजाब में गर्मी का स्रोधिक्य ही होगा। महाराजा नम्बा ने श्रानी रियामन के लिए कानून भी ऐसा ही बना रखा था। यहां की किसी न की के नाथ विवाह करके कोई उसे नम्बा से बाहिर नहीं ले जा सकता था। उमे नामे में ही रहना होता था। इसीनिए उप्ण-प्रदेशों के कई लोग यहा विवाह करके यही वन गए ग्रांर ग्रपना कारोबार करने नग गए। यहा पर पुरुषों की ग्रपेक्षा न्त्रिया की नन्त्रा अधिक है ।योकि पुरुषों का जीवन वटा आलमी और प्रमादी होता है. इसीलिए वे बडे दुवंन और शनित्रीन होते हैं और शीझ ही वे काल द्वारा कवलित कर लिए जाते है। इस प्रदेश में विध्या-विवाह का वटा प्रचलन है। पति का देहान्त होने के कुछ काल परचान् ही रशी का पुनर्विवाह हो जाना है। व्यासदेवजी तथा जवाहर ने उस दिन राति में उसी होटल में विश्राम किया। रात्रि के लगभग दस वजे कई

नवयुवतिया उस होटल मे ग्राईं ग्रीर इन दोनो का उपहास करने लगी। व्यासदेवजी ने इनकी वडी भर्त्सना की ग्रौर समभाया कि वे साधु है। उनकी भावनाए वहुन ऊची है। ग्रीर वडे सदाचारी ग्रीर ब्रह्मचारी हैं, वहा यात्रा के लिए ग्राए है ग्रीर ये सव देवियों को माता, विहन और पुत्री के ममान समभते हैं। इतना समभाने पर भी वे नवयुवितया वहा से नहीं हटी और विवाह के लिए उन्हें प्रेरित करने लगी। उन्होंने वताया कि यहा कई ब्रह्मचारी और साधु आए हैं जिन्होंने यहा आकर विवाह कर लिए, ससुराल में रहने लग गए और यही अपना कारोवार प्रारभ कर दिया। इनमें ने रुक्मणी नाम की लड़की वहुत सुन्दर थी। ये सभी यह चाहती थी कि इसमे व्यासदेवजी का विवाह जैसे-तैसे हो जाएँ। उन्होने रुक्मणी की ब्रह्मचारीजी से वहुत प्रवसा की। वार-वार उसके सौदर्य का वर्णन किया। उसके वाप से वहुत-सी जमीन दिलाने के वचन दिए। ब्रह्मचर्य व्रत के पालन मे विविध कठिनाइया समभाई। कलियुग का वखान किया। वहा आकर जिन साधुआ ने विवाह करके गृहस्थ जीवन मे प्रवेश किया और सासारिक वन गए उनमे से ही एक साधु की लड़की रुक्मणी थी। इन्होने उनसे विवाह करने का वार-वार अनुरोध किया और कहा, आप ब्रह्मचारी है। ब्रह्मचर्य से गृहस्थ में प्रवेश करे और फिर यदि इच्छा साधु वनने की शेष रहे तो माधु भी वन जाना। व्यास-देवजी ने इन्हें वहुत समकाया ग्रीर फटकारा। रात्रि के ग्यॉरह वज चुके थे। उन्हें वहा से चले जाने को कहा। पुलिस को बुलाने की धमकी दी, पर वे वहा से टम में मस न हुई। जब पुलिस चौकी पर जाने के लिए ये उठे नो इन निर्लंग्ज युवितयों ने उनका दरवाजा रोक लिया। व्यासदेवजी जैसे-तैसे धक्का देकर वाहिर निकल गए स्रौर पुलिस चौकी पर जाकर सर्व वृत्तान्त कह मुनाया। उन्होने कोई कार्रवाई नहीं की स्रौर केवल इतना ही कहा कि यह देश ही ऐसा है, स्राप यहां चौकी पर स्राकर विश्राम करों। वे लोग इनका सब सामान दुकान पर से उठा लाए। इसी भुमेल में वारह वज गए। इन्होने शेप रात्रि चौकी में ही व्यतीत की। प्रान काल उठे ग्रार स्नान नथा ध्यान किया और इसके पश्चात् तरेला के लिए प्रस्थान किया। यहा पर इन्हें पागी के एक जमीदार मिल गए। इनका नाम कर्मरास था। ये कुछ व्यापार भी करते थे। व्यासदेवजी ने पागी मे अपने ठहरने की व्यवस्था करने के लिए कहा क्यों कि वहा पर उनका कोई परिचित न था। कर्मदास ने अपनी पत्नी के नाम एक पत्र लिख दिया और उसे उन्हें देकर कहा कि इसे वहा ले जाकर मेरी पत्नी को दे देना, वह भ्रापकी सारी व्यवस्था कर देगी। वह पजावी भी थोड़ी-थोडी जानती है। भ्रापको किसी प्रकार की कठिनाई न होगी। ग्राप निर्वित रहें।

नीलम की प्राप्ति—तरेले से कुछ ग्रागे काश्मीर रियासत का इलाका ग्रा जाता है। इस इलाके को वहा के लोग पाडर कहते हैं। वहा के लोगों से पता चला कि यहा पर नीलम की खान है। मार्ग में एक स्थान पर एक भरना वह रहा था। व्यासदेवजी यहा स्नानादि करने के लिए ठहर गए ग्रांर जवाहर को ग्रागे चलने का ग्रादेश दिया। एक गाय इसी भरने पर पानी पीने के लिए ग्राई। यह लगडा कर चल रही थी। इसे देखकर व्यासदेवजी को वडी दया ग्राई। उसका पाव ऊपर उठा कर देखने से मालूम हुग्रा कि उसके खुरों के वीच में एक पत्थर घुस गया है, इसलिए पर में घाव-सा होगया है। इन्होंने ग्रपनी सोटी की सहाँयता से उस कंकर को

निकालकर वेचारी गाय का सकट दूर किया। ककर खून से लथपथ था श्रीर नीला सा प्रतीन होना था। व्यामदेवजी ने उमे श्रच्छी तरह से घोया तो वह चमकने लगा श्रीर उनका रग नीला-मा निकल श्राया। उन्हें यह नीलम-जैसा लगा इसलिए इसे सभाल कर रग्य लिया। उसका जिक जवाहर में भी नही किया। मार्ग में एक गाव श्राया। उनमें तीन-चार मनुत्यों ने जाकर व्यापारियों से नीलम दिखाने के लिए कहा, किन्तु किसी के पाम नहीं निकला। केवल एक दुकानदार के पाम छोटा-सा नीलम दिखाई दिया। उमे परीदने की वातचीत हुई किन्तु उसने कीमत बहुत मागी, श्रत इसे खरीदा नहीं श्रीर आगे चल दिए। व्यामदवर्जी ने उस नीलम की श्रपने पास वाले नीलम से मुलना की तो उन्हें मानूम हुश्रा कि उनका नीलम दुकानदार के नीलम से श्राकार में बहुत यहा है और उनमें चमक भी उसकी श्रेपक्षा बहुत श्राधक है। इसे इन्होंने सम्भालकर श्रपने पास रग लिया। श्रव पागी तक कोई गाव इन्हें मार्ग में नहीं मिला। तरेने में श्रागे पागी तक श्रत्यांक चढाई थी। थोडी चढाई चढने के पश्चात् इनका गाम पूलने लगा श्रीर थकान भी श्रयिक मानूम होने लगी। यहा की ऊचाई श्रयिक थी, श्रत वागु भी श्रया गूधम थी, उसलिए इनका दम घुटने लग गया था। इस चढाई पर कई प्रकार की नर्गली बूटिया लगी हुई थी। उनमें ब्वास लेने से इन्हें कुछ नथा या भी होगया था श्रीर श्रात भी बहुत थे, श्रत कुछ देर के लिए विश्राम करने के लिए देठ गए। उसके बाद थोडा-गा लेटे कि नीद श्रागई।

श्रनात देवी के दर्शन—िजन समय व्यासदेवजी श्रीर जवाहर पागी की श्राधी नटाई चटार एक स्थान पर निद्राभिभूत सो रहे थे, उस समय उन्हें एक विशाल-काय देगी ने साकर जनाया। ये दोनो वही किठनाई में साखे समसते-मसलते जगे। जब श्राणे गोली तो सामने एक देवी को पाउं पाया। यह श्रत्यन्त मुन्दर थी। इसके नेत्र वटे दिशाल थे। उसका कट लगभग छ फीट होगा। यह बडी सुडौल तथा स्वस्थ थी। उसना रंग गोरा था। मुख पर कान्ति थी। इसने श्रपने मिर पर लगभग एक सन भार उठाया हुआ था। उसने मुस्कराते हुए कहा, "श्रापको बूटियो का नशा चढ गया है। उमीलिए श्रापको नीद श्रागई है। किन्तु यहा पडे रहने से मिजल तय नही रोगी श्रीर श्राप श्रपने निदिष्ट स्थान पर न पहुंच सकोगे। श्राश्रो, मेरे साथ चलो।" व्यागदेवजी ने थोडा श्रीर श्रापम कर लेने के पञ्चात् चलने की इच्छा प्रकट की। एसने उनके नियास स्थान श्रीर गत्तव्य स्थान के विषय में पूछा। जब उसे मालूम हुआ कि ये पागी जाएंगे नव उसे श्राश्चर्य हुशा, क्योकि ये लोग श्राधी चढाई से कम चटाई चटकर ही हाकने लग गए थे। उसने उनसे कहा, तुमसे यह विकट चढाई नहीं चढी जाएंगी। उठो, में तुम्हे श्रपने साथ ने चलूगी। उसने यह कह कर व्यासदेवजी को नीचे भुक्तर राथ पकड कर उठा लिया श्रीर शेरनी के समान उस पहाडी पर चह गई। थोडी दूर चलने के बाद इसने एक बूटी तोड कर दी श्रीर उसे नुमने के लिए कहा। उस बूटी को सूथने से चढाई चढते समय तवीयत खराब नहीं होती श्रीर उसमें नहा। भी उतर जाता है। यह देवी व्यासदेवजी का हाथ पकड कर उन पहाडी पर छ मील तक ने गई। इसके शिखर पर इस देवी के परिवार का उस लगा हुआ था। यह देवी गूजर जाति की थी। इस पहाडी के शिखर पर एक वडा मैदान था। उस समय उसी पर ये लोग रहते थे। इनके पास लगभग २००

भेंसे थी। इन्हीं को चराने के लिए इन्होंने यहां डेरा लगा रखा था। इस देवी का नाम राघा था। इसने महात्माजी का सारा वृत्तान्त अपने भाई को मुनाया और कहां कि इनमें पागी जाने की गिक्त नहीं है, इन्हें दूध, पनीर, मक्खन तथा दूध की रोटी खिलाकर सगकत वनाकर यहां से पागी भेजेंगे। राधा के भाई ने एक पतील में द-१० सेर दूध उवाला। दूध गर्म होना रहा और दोनो वहिन-भाइयों ने महात्माजी का सर्व वृत्तान्त उनसे पूछा। जव उनको यह विदिन हुआ कि ये ब्रह्मचारी साधु है तो वे वडे प्रसन्न हुए। जव दूध को उवाल आगया तव उन्होंने व्यासदेवजी और जवाहर को दो-दो सेर दूध वडे-वडे कटोरों में डालकर दे दिया। जव इन्होंने कहा कि वे इनना दूध नहीं पी सकते तो सबने उनका वडा उपहास किया और कहा हुए पीकर सोने के लिए वाध्य किया। राधा ने उनका वडा मज़ाक उडाया ग्रीर कहा, दूध पीकर मोटे ताजे और हुण्ट-पुष्ट हो जाग्रोगे, तभी पागी की चढाई चढ सकोगे। में खूब दूध पीती हू, इसीलिए मुभमे इतना वल हे कि मै श्रापको हाथ पकडकर इस पहाडी पर बीझता से चढा लाई। इसी वीच मे परिवार के श्रन्य सदस्य भी वहा श्रा पहुचे। वे सव तुरन्त ही महात्माजी से स्नेह करने लग गए । रात्रि के समय जब सब त्रपने-श्रपने काम से निवृत्त हो जाते नो व्यासदेवजी सवको उपदेशात्मक कहानिया मुनाने थे। इन लोगो को इनका व्यक्तित्व और उपदेश इतने ग्राकर्पक लगते थे कि इन्होने उन्हे १६ दिन तक जाने नही दिया । राधा ने कहा कि महात्माजी ग्रापने हमे बहुत सुन्दर उपदेश दिए है, इसके लिए हम सब ग्रापके वडे कृतज है। मेरा ग्रापमे निवेदन है कि ग्राप एक उपदेश मेरा भी मान लो, वह यह कि श्राप प्रतिदिन एक-डो घण्टे व्यायाम किया करो । तभी ग्रापको दूध, दही ग्रोर मक्ष्वन ग्रादि पच सकेगा ग्रीर ग्राप वलवान नथा गक्तिमान हो सकोगे। एक दिन राधा की माता ने महाराजजी से निवेदन किया कि राधा की ग्रायु वडी होती जाती है। हम लोग इसके लिए वर की योज कई सालो से कर रहे है। कोई योग्य वर ग्रीर घर उपलब्घ नहीं हो सका। इसकी हम सबको वडी चिन्ता रहती है। इन्होने विञ्वास दिलाया कि खोज जारी रन्दो, एक साल तक विवाह हो जाएगा। इस पहाडी की ऊचाई लगभग दस हजार फीट से अधिक थी, अत इस पर वृक्ष नही थे। राघा के भाई रामू तथा गामू ने मिलकर ब्रह्मचारीजी के लिए एक छोटी सो भोपडी सी वना दी ग्रौर उसके पास धूनी लगा दी। ये इसमे रहने लगे। इस परिवार ने इनकी वडी सेवा की। १५ दिन में ही व्यामदेवजी ग्रीर जवाहर का चेहरा वदल गया। मुखो पर लालिमा छा गई ग्रीर थोडे-थोडे मोटे भी होगए। ग्रव उनके गरीर पुष्ट प्रतीत होने लगे और उनमे गक्ति का सचार होगया। १५ दिन के पश्चात् व्यासदेवजी ने पागी जाने के लिए ग्राग्रह किया। इस परिवार को उनके श्राग्रह के समक्ष नतमस्तक होना पडा श्रीर उनके प्रस्थान की पूरी तैयारी करके गामू को उनके पहुचाने के लिए साथ भेजा। इन्होने गामू के साथ द सेर मक्खन ४ सेर दूध ग्रीर द-१० कलाडिया देकर इनके साथ जाने का ग्रादेश दिया। विदाई के समय सारे परिवार को ही वडा दु ख हुग्रा। राधा ग्रीर उसका छोठा भाई रामू तो विह्नल होकर रुदन ही करने लग गए। चलते समय एक बार पुन व्यासदेवजी ने इस परिवार को अपने उपदेशामृत का पान कराया। रामू ने भी साथ जाने का बड़ा हठ किया, अत रामू और शामू दोनो ने मिलकर महात्माजी का सामान उठाया ग्रीर साथ हो लिए।

पागी में कर्मदास के घर पर निवास—रामू और गामू ने व्यासदेवजी को कर्मदास के घर पर पहुचा दिया। वहुत कहने पर भी वे वहा ठहरे नहीं। कर्मदास की गणना यहा के ग्रच्छे धनाटच व्यक्तियों मे की जानी थी। इनके यहा पर कई मकान थे। तीन इनके स्त्रिया थी। वडी स्त्री के नाम कर्मदास ने पत्र दिया था। जव यह पत्र उसे दिया गया तो वह वडी प्रसन्त हुई। व्यासदेवजी के चरणस्पर्श करके वह उन्हें मकान की दूसरी मजिल पर ले गई। विस्तर विछाकर उन्हें उस पर विठा दिया। पागी में सर्दी बहुत पड़ती है। माल में ७-८ मास तक वर्फ पड़ती रहती है। इमिलए इनके लिए चाय ग्रीर सेव मगवाकर उनके सम्मुख ग्रादरपूर्वक रखे। कर्मदास की वटी पत्नी का नाम सुभद्रा था। इसने तुरन्त इनके सोने, वैठने, घ्यान करने म्रादि की व्यवस्था कर दी। यहा के रिवाज के ग्रनुसार ग्रपनी एक लडकी को ग्रासपास की सब महिलायों को यनिथि के स्वागत के उपलक्ष्य में गायन ग्रीर नृत्य के लिए ग्रामत्रित करने के लिए भेज दिया । सुभद्रा के पूछने पर महाराजजी ने ग्रादेश दिया कि हम पहाडी भोजन करेगे, पजावी नहीं । यह ग्रादेश पाकर वह मास ग्रीर शराव की तैयारी करने लगी क्योंकि पागी में मास ग्रीर गराव से ही प्रतिष्ठित ग्रतिथियो का ग्रातिथ्य किया जाता था। जब मुभद्रा को मालूम हुग्रा कि महात्माजी ने कभी शराव का स्पर्श भी नहीं किया श्रीर मास स्वय तो क्या खाते, उस मकान तथा परि-वार मे भी कभी भोजन नहीं किया जहां पर मास पकाया जाना हो, तो वह ग्रत्यन्त दु यी हुई। महात्माजी के चरण स्पर्श करके उनसे विनम्र भाव से क्षमा याचना की भ्रीर वडी लिजित हुई। भ्रव उसने महाराजजी को विश्वास दिलाया कि वह स्नान करके वस्त्र वदलकर चीका लगाकर सारे वर्तन ग्रादि माज-धोकर उनके लिए भोजन तैयार करेगी । उसने श्रव पजावी भोजन वनाया । उडद की दाल तथा पराठे वना कर उनको परोसा और उस प्रकार भोजन करते-करते नौ वज गए। इसके उपरान्त निमत्रित महिलाए नृत्य ग्रीर गायन के लिए उपस्थित होगई। सुभद्रा ने महाराजजी को ग्रागन मे गायन मुनन ग्रीर नृत्य देखने के लिए बुलाया। व्यासदेवजी जैसे नैष्ठिक वहाचारी तप पून योगी को भला यह कैसे पमन्द हो सकता था। उन्होने सुभद्रा से कहा कि देवी, हम तो महात्मा है, साथु है, हमे ये सब वाते रुचिकर नहीं हो सकती।
तुम यह मत्र ग्रायोजन वन्द कर दो। मुभद्रा के बहुत आग्रह करने पर जो कुछ हो रहा था वह सब उन्होने होने दिया, किन्तु स्वय वहाँ से ऊपर चले गए। इन देवियो ने कृष्ण-भिक्त के भजन गाए। अतिथि को लक्ष्य करके भी कुछ गीत गाए और इसके वाद सब ययास्यान चली गर्डं। तीन दिन के पश्चात् व्यासदेवजी ने वहां से जाने के निए इच्छा प्रकट की। मुभद्रा ने जव तक उसके पतिदेव सीट न ग्राए तव तक वही रहनें का ग्रीर उसका ग्रांतिथ्य स्वीकार करने का ग्राग्रह किया। तव व्यासदेवजी ने यह कहा कि सामान हम ग्रापको ला दिया करेंगे ग्रीर भोजन ग्राप वना दिया करें। उनके वार-वार कहने पर इस वात को सुभद्रा ने स्वीकार कर लिया।

व्यासदेवजी जैमे महान् महात्मा कभी किसी भी परिवार पर भाररूप नहीं होना चाहते थे, विशेषकर उस स्थिति में जब गृहपित घर में उपस्थित न हो।

कर्मदासजी की ग्रायु इस समय ६० वर्ष की थी। इनकी माताजी भी जीवित थी। उनकी ग्रायु सौ वर्ष से ऊपर मालूम होती थी। यह वृद्धा माता चौरी गाए चराने जाती थी। उसने एक दिन व्यासदेवजी से कहा, "महात्माजी, पजावियों ने हमारा देश यहा आकर खराव कर दिया है। हमारी लडिकयों से विवाह करके ये इन्हें अपने देश में ले जाते हैं। दुराचार की मात्रा अधिक वढ गई है। छोटी-छोटी लडिकया विवाह की वाते करती हैं। मेरी पोती वेग मोहनी अभी वहुत छोटी आयु की है किन्तु वह भी अभी से विवाह के विपय में वाते करती रहती है। घोर किल-युग आ गया है।" व्यासदेवजी ने कहा कि आपने अपने पुत्र कर्मदास के तीन विवाह क्यों किए यह भी एक वडा भारी पाप है। इस पर वृद्धा ने निवेदन किया कि सुभद्रा के कोई सन्तान नहीं थी। ये पित-पत्नी इसलिए वडे चिन्तित रहते थे। मुभद्रा के वहुत आग्रह से इसने दूसरा विवाह किया है। अपने पिता के परिवार में से ही इसने एक लडिकी से कर्मदास का विवाह किया है। एक वात यह भी है कि हमारे यहा इघर खेती-वाडी का सव कार्य स्त्रिया ही करती है। वडे घरानों में एक विवाह से काम नहीं चलता क्योंकि उनके यहा कृषि कार्य वहुत होता है। दूसरी जादी से भी कर्मदास के कोई सन्तान जव नहीं हुई तव तीमरा विवाह करना पडा। अव तीसरी वहू को ७० साल की आयु में कर्मदास के घर यह वेग मोहनी पैदा हुई है और एक तीन वर्ष का वच्चा है। मेरे चार लडिक पैदा हुए थे जिनमें से तीन की मृत्यु होगई, केवल कर्मदास ही आपके चरणों की कृपा से वचा है। इसके पिता का स्वर्गवास हुए ५० वर्ष होगए हैं। इस देश में स्त्रिया पित के मरने पर दूसरा विवाह कर लेती है। यहा पर ऐसा रिवाज है, किन्तु महाराज जी। मैंने तो दुवारा विवाह नहीं किया।

कर्मदास की माता का बेग मोहनी के साथ विवाह का स्राग्रह—वेग मोहनी की स्रायु इस समय वीस वर्ष की थी। उसके विवाह की चर्चा प्राय घर में चला करती थी। इसके योग्य घर ग्रीर वर की खोज हो रही थी, किन्तु ग्रभी इस विपय में सफलता नहीं मिल पाई थी। वृद्धा माता ने इसके विवाह का प्रस्ताव व्यासदेवजी के समक्ष रखा ग्रीर निवेदन किया कि यदि ग्राप इस वालिका को स्वीकार करने तो हमारे परिवार का वडा गौरव वढ जाए ग्रीर हम ग्रपने को घन्य समभे ग्रीर ग्रापका वडा उपकार मानेंगे। वेग मोहनी भी इनके रूप, लावण्य, स्वास्थ्य ग्रीर व्यक्तित्व पर वडी मुग्ध हो रही थी। वह वार-वार ग्रपनी मा ग्रीर दादी से इनके साथ विवाह करने के लिए ग्राग्रह कर रही थी, इसीलिए दादी ने विवाह का प्रस्ताव व्यासदेवजी के सामने रखा था। इस सम्बन्ध में जब इन्होंने इन्कार किया तब वेग मोहनी को वडा कोष ग्राया ग्रीर वह तुरन्त वोल उठी, "यदि विवाह नहीं करना था तो ग्राप यहा ग्राए ही क्यो श्रापके यहा ग्राने का मतलव ही क्या था ?" वेग मोहनी की वात ग्रीर हाजरजवावी को सुनकर सुभद्रा ग्रीर उसकी दादी खूब जोर-जोर से हसी। व्यासदेवजी ने कहा, "क्या इस देश में ग्राने के लिए मुझे यही सजा मिलेगी? विवाह करना तो ग्रपनी इच्छा पर निर्भर है। कोई चाहे तो विवाह करे ग्रीर न चाहे तो न करे। यह कोई जवरदस्ती की वात तो नही। मैंने ग्राजन्म ब्रह्मचर्य व्रत को घारण किया हुग्रा है। मैं कभी विवाह नहीं कर्लगा। तू भी मेरी तरह ब्रह्मचर्य का व्रत घारण करके ब्रह्मचारिणी क्यो नहीं वन जाती?" वेग मोहनी ने उत्तर दिया, "हा, मैं ब्रह्मचारिणी वनकर ग्रापकी सेवा करूगी। ग्रापको मुफे ग्रपने साथ रखना

होगा । में नदा श्रापके नाथ देश-देशान्तरों का श्रमण कहगी और श्रापसे पहनी भी। व्यानदेशजी ने वहा, "तू जानती भी है, शिष्या पुत्रीवत् होती है। व मेरी पुत्री जनकर मुक्तमें विद्या पढ सकती है।" यह लड़की कुछ उहण्ड म्वभाव की थी श्रीर श्रत्यिक लाड़ श्रीर प्यार के कारण उसके मनमें नकी कुछ उहण्ड म्वभाव की थी जो रत्री में नहज ही होनी है। यह तुरन वोली, क्या पत्नी वन कर में श्राप में नहीं पट सकती श्रीपने श्राने वनपन में श्राजीवन ब्रह्मचयं का ब्रत विना समके यूके ने विद्या है। यात्रयक्षाल के ब्रत का कुछ महत्व नहीं होता। श्रव श्राप युवा हो गए श्राप उस पर पुनिवनार कर सकते हैं। उस ब्रत को छोड़ गृहस्य में प्रवेज कर सकते हैं। उसनी प्रतांत श्रीर उसने बहा, जाशों, तुम घर में कुछ काम करों या वाहिर जाकर सेली। उसनी माना और दार्श में कहा कि में बड़ा दृहत्रती है। मेरा श्राजीवन ब्रह्मचर्य का श्रव चहुन की नरह से श्रव है। उसमें किसी प्रभार का कोई हेर-फेर नहीं हो सकता। यह थीज लिलान होतर पत्ने लगी, "न जाने उस लड़की को उस प्रकार की वाते की करनी पा गई है। पर ने वहने काम करनी है। समक्राने पर भी नहीं मानती। एम उसे पर से बाहिर बहुन कम जाने देते हैं। उसको किसी स्कूल में पहने के लिए भी नहीं भेजा। उसकी बठी मा ने ही उसे कुछ थोड़ी हिन्दी पहा दी है। पर महा-राजी, गीनिनक्षी यह बड़े जान की वाते रहनी है जो हमारी भी समक्ष में नहीं श्राती।

पन्द्रह दिन पे बाद कमंदाय चम्द्रे ने ग्रागए। व्यामदेवजी को प्रणाम करके पूछा कि सामने यहा गुळ उत्तर नो नहीं हुआ। मेरी बडी पत्नी स्नातिथ्य सत्कार मे वटी प्रयोग है। पर हिन्दी भी बीटी जानती है, उसने ग्रापको भाषा-सम्बन्धी कोई पठिनाई नहीं हुई हागी। उन्होंने उनकी धर्मात्नी की वडी प्रशमा की, उसके प्रातिथ्य के लिए बरत धरवपाट दिया और पागी में कही स्रत्यत्र जाकर रहने का विचार व्यक्त रिया, र गिक उन्हें यहा रहते हुए पन्द्रह दिन होगए थे। कर्मदास ने उन्हें वही निवास जरने के लिए बहुत आपर विया किन्तु उन्होंने बहा ठहरने में कई कठिनाइया बनाई। एक नो मायु को किसी गृहरवी के यहा बहुत दिन तक निवास नहीं करना चाहिए ग्रीर दूसरे वैंग मोहनी सदैव उनके नाथ विवाह करने की चर्चा करेती रहती थीं। जब कमंदास को विवाह की बात का पता चला तो उसने ब्रह्मचारीजी से हाथ जोड कर निवेदन किया कि आपको मेरी लउकी के साथ विवाह करने में क्या आपित है ? लटभी बुछ पटी-लिमी है। मेरे पास जायदाद भी बहुत है। इसमें से आघी आपको दे दृगा। ग्राप विवाह करके यहा पर ग्रानन्द मे जीवन व्यतीत करना। यदि ग्राप वंग मोहनी से विवाह कर ले तो भे उसे अपना वडा सीभाग्य समभूगा और इस लडकी का तीवन भी मुघर जाएगा। ग्राप वेग मोहनी को ग्रवब्य स्वीकार करने की कृपा गरे। ब्रह्मचारीजी ने प्रमस माफ प्रन्मार कर दिया वयोकि उन्होंने प्राजनम ब्रह्मचर्य व्रा धारण करने का दृढ सकत्प किया हुआ था। इसलिए कर्मदास को डाटते हए कहा, ग्राप विवाह के विषय में किसी प्रकार की कोई भी वात न करे। में इसे सुनने के लिए नैयार नहीं। कर्मदासजी घवरा गए पर उन्होंने उन्हें प्रपने पास ठहरने का बहुत श्राग्रह किया श्रीर विस्वास दिलाया कि वह वेग मोहनी को समका देगे। इस सम्बध में अब कोई नर्चा नहीं होगी। उस देश की प्रथा ही कुछ ऐसी है। यहा पर लटिकयो

को विवाह के सम्बंध मे पूर्ण स्वतत्रता है। वे जिसे ग्रपने ग्रनुकूल तथा ग्रपने योग्य समभे उससे विवाह कर सकती हैं। जिसे चाहे अपना जीवन साथी वना सकती है। यहा पर जाति-पाति का भी विवाह के विषय में कुछ विचार नहीं किया जाता। क्षत्रियों की लडकियों का विवाह ब्राह्मणों के साथ हो जाता है। ग्रायु का भी कोई ववन नहीं है। मेरी तीसरी शादी ६५ साल की ग्रायु में हुई थी। यहा पर धनिक लोग कई-कई शादिया कर लेते हैं। मैं मोहनी को डाटूगा ग्रीर समक्ता दूगा कि भविष्य मे वह इस प्रकार की कोई चर्चा न करे। किन्तु व्यासदेवजी ने किसी प्रकार भी उनके माकन पर रहना ग्रव पसन्द नही किया। इन्हें विवाह का ध्यान कभी स्वप्न मे भी नही ग्राया, फिर भला जागृतावस्था मे तो ग्रा ही कैसे सकता था । इन्होने वहा जो कृछ देखा भीर सुना उससे इनको वडी ग्लानि भीर घृणा होगई थी, इसलिए अब वे वहा पर एक क्षण भी रुकना नही चाहते थे। वेग मोहनी की वातें सुनने के दूसरे दिन ही वे जा कर एक मील के फासले पर अपने लिए एकान्त मे एक स्थान ढूढ आए थे, केवल कर्म-दास के लौटने की प्रतीक्षा मे थे। इनके घर ग्राते ही इन्होने उस स्थान पर जाने का ग्रपना विचार प्रकट कर दिया ग्रीर उनके वार-वार ग्राग्रह करने पर भी न रुके। ब्रह्मचारीजी सर्वसाधारण व्यक्ति न थे। वे ब्रह्मनिष्ठ थे। त्योपूत थे ग्रीर ग्रपने व्रन के पक्के तथा यशोधन थे । उनके मार्ग मे यही एक प्रलोभन नही स्राया था, इससे पूर्व कई प्रलोभन इन्हें दिए जा चुके थे, किन्तु वे इन तुच्छ प्रलोभनों में ग्राकर ग्रपने पथ से विचलित होने वाले व्यक्तियों में से न थे। वड से वडे प्रलोभन को एक ककर की भाति ठुकरा दिया श्रीर श्रपना मस्तक गीरव से उन्नत करके श्रपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए डटे रहे । इस ब्रह्मनिष्ठ ने भ्रपने जन्म से भारतवसुघराको गीरवान्विन किया है ।

कर्मदास ने बड़े विनयपूर्वक इनसे इनका गन्तव्य मार्ग पूछा। वह स्थान इनके मकान से केवल एक मील दूर था। कर्मदास ने वहा जाकर यथायोग्य सब प्रवन्ध कर दिया। दूसरे दिन ही व्यासदेवजी उस स्थान पर चले गए। इनके चले जाने के वाद बेग मोहनी ने भोजन करना त्याग दिया और सारा दिन रोती रही। अपनी माता तथा दादी से वार-वार ब्रह्मचारीजी को बुलाने के लिए आग्रह करती रही। माता-पिता ने उसे बहुत समकाया, वे महात्मा है। उनके देश का पता नही, जाति का पता नही और न कुल का ही पता है। रमते राम है। इनके न रहने का कोई ठिकाना न खाने का। ऐसो से विवाह करना मूर्खता है। अज्ञात पुष्प के साथ विवाह करना अपनी अक्ल का दिवाला निकालना है। कोई समक्तदार लड़की ऐसे व्यक्ति से कभी विवाह नही कर सकती। माता-पिता के समक्ताने के पाच-छ दिन के बाद उसने अपने मुह मे अन्न डाला।

व्यासदेवजी कई मास तक पागी मे रहे। ग्राहिवन के ग्रन्त मे जब हिम-पात प्रारम होगया तब पागी से चम्बा के लिए प्रस्थान किया। मार्ग मे कुछ दिन तक पुखरी मे जवाहर के घर पर रहे। कुछ दिन तक चम्बा मे भी निवास किया। इसके वाद डलहौजी चले गए। मार्ग मे दो पजाबी नवयुवक इनके साथ हो लिए। इनके पास भोजन के लिए खर्चा नही था। ब्रह्मचारीजी ने प्रबन्ध कर दिया। ये डलहौजी भी इनके साथ ही रहे। वहा पर रात्रि मे जब व्यासदेवजी सो गए तब इन्होने उनकी एक पुस्तक मे रखे हुए उस नीलम को चुरा लिया जो इन्होने गाय के खुर मे से निकाला था। ये दोनो नवयुवक उसे कही दूर जाकर छिपा ग्राए। व्यासदेवजी ने उन्हे वहुत धमकाया

किन्तु उन्होने ग्रपराध स्वीकार नही किया ग्रीर नाराज होकर वहा से चलते बने। ब्रह्मचारीजी ने भी ग्रव ग्रमृतसर के लिए प्रस्थान किया ग्रीर दीवाली के ग्रवसर पर वहां पहुन गए।

## कई-कई दिन की समाधि का विशेष श्रभ्यास

जब पहाडो पर हिमपात प्रारभ होगया श्रीर जीत का श्राधिक्य होगया तब व्यागदेवजी ने ग्रमृतसर के लिए प्रस्थान किया श्रीर दीवाली के श्रवसर पर वहा पहुच गए। वहा जाकर मोनीराम की वगीची वाली श्रपनी कुटिया मे रहने की सव व्यवस्था कर नी। दीवानी के ४-५ दिन पञ्चात् मे ही पूर्ववत् शून्य-समाधि के लिए विशेष प्रयाम प्रारम कर दिया। इस वर्ष सारी सर्दी के मीसम मे अध्ययन करने का विचार छोड़ दिया था, क्योंकि समाधि में कई-कई घण्टे व्यतीत हो जाते थे, श्रध्ययन के निए नमय ही घेप न रहना था। समाधि के लिए जीतकाल ही उपयुक्त होता है। नित्यप्रति एक ही ग्रामन पर बैठकर कई-कई घण्टे ग्रभ्याम किया करते थे। नित्यप्रति १०-१५ मिनट ग्रामन बढाने लगे थे। सकल्प-विकल्प का श्रभाव कर देन का नो उन्हें कई मालों ने ग्रभ्याम था। नित्यप्रति नेति, घोती, वस्ती ग्रादि यौगिक कियास्रो के द्वारा उन्होंने स्रवने शरीर को हलका भ्रौर सात्विक बना लिया था। दो नीन मान मे ही उनका अभ्याम उतना वढ गया था कि कई-कई घण्टे की शून्य-समाधि में स्थिर हो जाया करते थे। इसके परचान तो ऐसा श्रभ्यास इनको होगेया था कि ये जिनने घण्टे समाधिस्थ होने का निस्चय करने उतने ही घण्टे समाधिस्य हो जाया गरने ये ग्रीर निध्चित नमय पर ही समाधि ने व्युत्थान होता था। व्युत्थान के समय नेत्र सोत्ने पर भी नहीं सुनते थे। हाथ ग्रीर पाव ऐसे जकड जाते थे कि ग्रासन नो उन में यह न समय लग जाना था। कानो की भी ऐसी ही स्थिति हो जाती थी। कोई पान बैठकर बात करे तो यह पता नहीं लगना था कि वह क्या बाते कर रहा है। दारीर को पूर्ववत् स्थिति में लाने के लिए कम से कम आधा घण्टा लग जाता या । इसके परचात् उन्होने उतना श्रभ्याम बढाया कि श्रव ये कई-कई दिन समाधिस्य रहने लगे। जिन दिनो कई-कई दिनो की समाधि में बैठते थे उन दिनो परिचित लीग प्राप्तर बाग तम फरते थे। दरवाजा श्रन्दर से बद होता था। उसे खुलवाने के लिए बार-बार दरवाजे को खटखटाया करते। इससे समाधि मे विघ्न पडता था, इमितिए इन्होंने भाई हरनामितिह से बाहिर से कुटिया को ताला लगवाना प्रारंभ कर दिया । ये सज्जन मोनीराम की बगीची में पास ही रहते थे । व्यासदेवजी जिस समय ताला लगाने के लिए कहते थे उसी समय ये ताला लगा दिया करते थे श्रीर जिस समय श्रीर जिस दिन गोलने का श्रादेश होता उस दिन खोल दिया करते। ताला खोलने का नमय श्रीर दिन प्राय लियकर दिया जाता था। जब कई-कई दिन की समाधि नगाने थे तय ये प्रथम नेति, धोती, कुजर, बित्ति, बज्जीली म्रादि कियाए गरीर मुद्धि के लिए कर लिया करने थे जिससे ब्युत्थान के पश्चात् कोई विकार उत्पन्न न होने पाए और शरीर स्वस्य रहे। नैरिठक ब्रह्मचारी योगीजी की समाधियों की धूम यत्र, तय, मर्वत्र फैल गई। मभी लोग एक स्वर से उनके ब्रह्मचर्य, तपस्या, त्यांग और यागाभ्याम की प्रथमा करते थे। ग्वामी विशुद्धानन्दजी की गणना तत्कालीन वडे प्रिंगिस योगियों में यी। जब उन्होंने मुना कि एक नवयुवक योगी कई-कई दिनों की समाधि लगाते है तो वे भी इनसे मिलने के लिए ग्राए। ये ग्रपने साथ कई गिप्यों को भी लाए थे। ब्रह्मचारीजी तथा स्वामीजी में चिरकाल तक योगसम्बन्धी विपयों पर वार्तालाप होता रहा। व्यासदेवजी की पाण्डित्यपूर्ण वाते सुनकर ग्रीर उनकी योग में इतनी गित को देखकर उन्होंने इनकी भूरि-भूरि प्रश्नसा की। नवयुवक योगी की कई-कई दिन की समाधियों ने रवामीजी को ग्राश्चर्यचिकत कर दिया। उन्होंने कहा कि मैंने तो ग्राज तक किसी भी योगी को सात ग्राठ घण्टे तक एक ही ग्रासन पर बैठने वाला नहीं देखा ग्रीर ग्राप तो इतनी छोटी सी ग्रायु में ही तीन-तीन चार-चार दिन की समाधि लगा लेते हो। मैं तो कई वर्ष तक साधना करने के पञ्चात् केवल ३ घण्टे तक ही एक ग्रासन से बैठने का ग्रभ्यास कर पाया हू। इसमें ग्रविक बैठा ही नहीं जाता। व्यासदेवजी—सभव है, ग्रापने ग्रासन वढाने का जो त्रम है उसके ग्रनुसार ग्रपना ग्रासन न वढाया हो।

स्वामीजी—क्या ग्राप ग्रासन वढाने का कोई सुगम क्रम या साधन वना सकते है ?

व्यासजी—सर्वप्रथम अपने अभ्यस्त आसन पर वैठ जाना चाहिए। जब थकावट मालूम होने लगे तब आसन से उठ जाना चाहिए। विना थकान के कितने घण्टे या मिनट का आसन स्थिर रहा है इसे घडी देखकर निश्चित कर लेना चाहिए। दूसरे दिन दो मिनट पहिले दिन की अपेक्षा अधिक बैठो। इसी प्रकार एक सप्ताह तक दो-दो मिनट बढाते जाना चाहिए। इसके पश्चात् ५-७ दिन तक इसी काल तक आसन को दृढ करना चाहिए। इसके दृढ हो जाने के बाद फिर दो-दो मिनट आसन मे वृद्धि करके एक सप्ताह के बाद फिर इमे ४-५ दिन तक दृढ करे। इस विधि मे आप जितना चाहें अपनी इच्छानुरूप आसन मे वृद्धि कर सकते है।

स्वामीजी—मैं तो ग्रापका ग्रासन देखने ग्राया हू।

व्यासजी—मुभे तमाशा दिखाने या किसी प्रकार के प्रदर्शन में विश्वास नही ग्रीर न मै ग्रापको ग्रपनी परीक्षा ही देना चाहता हू।

स्वामीजी—मैं न तो किसी प्रकार का प्रदर्शन करवाना चाहता हू ग्रीर न मै ग्रापकी परीक्षा ही लेना चाहता हू। मेरी तो वडे विनम्र-भाव से ग्रापसे प्रायंना है कि ग्राप ग्रासन के सम्वन्ध मे मेरी भ्राति को दूर कर दे। जब तक मेरे सगय का निवारण ग्राप न करेंगे मैं यही वैठा रहुगा।

व्यासजी--ग्राप कल सायकाल पाच वजे तैयार होकर ग्रा जाए।

स्वामी विशुद्धानन्द दूसरे दिन नियत समय पर अपने जिप्यो को साथ लेकर वहा पहुच गए। इन्होंने अपने जिप्यो की तीन-तीन घण्टे की वारी लगा दी और अप्रदेश दिया कि जब तक व्यासदेवजी आसन पर से न उठे तव तक तुम वारी-वारी से उनका निरीक्षण करते रहना। जब वे उठे तो तुम मुभे इसकी सूचना दे देना। स्वामीजी पास वाले एक कमरे मे ठहर गए।

व्यासदेवजी ने ग्रासन विछाया । लालटैन जलाई । दरवाजा खोल दिया । शिष्यो को दरवाजे पर बिठा दिया । सिद्ध ग्रासन से निश्चेष्ट होकर स्थिर भाव से वैठ



राजयोगाचार्य वालब्रहाचारी श्री व्यासदेवजी महाराज (युवावस्था)

गए श्रीर ग्रपनी श्राप्ते वन्द कर ली। इससे पूर्व शिष्यों भी सूचित कर दिया कि में कल दम बजे श्रासन पर से उठ्गा। ये लोग पास वैठकर बरावर देखते रहे। व्यास-देवजी १७ घण्टे तक समाधि में बैठे रहे। दूसरे दिन समाधि से व्युत्थान हुश्रा श्रीर लगभग श्राधा घण्टा श्रासन से उठने में लगा। विशुद्धानन्दजी को यह सब देखकर श्रत्यन्त श्राश्चर्य हुश्रा श्रीर उन्होंने युवक योगी की भूरि-भूरि प्रशसा की। इनके प्रति स्वामीजी की वडी श्रद्धा होगई। वे इनसे वडा प्रेम करने लगे श्रीर दोनो में मेंशी सम्बन्ध स्थापित होगया।

श्री राजयोगाचार्य ब्रह्मचारी व्यासदेवजी महाराज की युवावस्था का चित्र, जो इस समाधि की समाप्ति के पञ्चात् लिया गया था, सामने है।

## कुल्लू मे चार मास तक निवास

ज्येष्ठ मास का प्रारभ होगया था। उष्णता वहुत वह गई थी, ग्रत सदैव की भाति पहाड पर जाने का विचार किया। किन्तु इस वार कुल्लू जाने का निञ्चय किया। ग्रमृतसर से रेलगाड़ी मे सवार होकर पठानकोट पहुच गए। वहा पर नारायणदास के पास द दिन तक निवास किया। इसके पञ्चात् कागड़े चले गए ग्रीर वहा से ज्वाला-देवी की यात्रा करने के लिए चल दिए।

ज्वालादेवी के दर्शन—यहा ग्राकर एक धर्मशाला मे ठहर गए। इस मदिर की देवी के सम्बन्ध मे अनेक किंवदन्तिया प्रसिद्ध है। कोई कहते थे, रात्रि के समय देवी माक्षात् रूप मे त्राती है। दूव का कटोरा पीती है। दातुन करती है ग्रीर पलग पर सोती है। इन सब वातों को प्रत्यक्षरूपेण देखने के लिए व्यासदेवजी ने यहा पर एक मास तक रहने का विचार कर लिया । प्रात साय दोनो समय ग्रारती मे सम्मि-लित होना प्रारभ कर दिया। इस मदिर के प्रवेश-द्वार के पास वाए हाथ की स्रोर तीन या चार फीट ऊचा एक कुण्ड बना हुग्रा था। इसमे से २४ घण्टे ग्रग्नि की लाट भक-भक गव्द करती हुई निकला करती यी। ग्रास-पास ग्रीर भी ज्वालाए निकलती थी। यानो लोग इस कुण्ड की प्रग्नि मे दूब, बी, मिठाई ग्रादि की ग्राहुतिया दिया करते थे। व्यामदेवजी ने वडी चतुरता से कई पड़ो ग्रीर पुजारियों से मेल-जोल कर लिया। जब मेल-जोल मित्रना के रूप मे परिणत होगया, तब इन्होने देवी के साक्षात् दर्शन करवाने के लिए उनसे कहा। उन्होंने निवेदन किया कि श्रारती के वाद मदिर के पट वन्द हो जाते है। ग्रापको देवी के साक्षात् दर्शन होन। ग्रसभव है। व्यासदेवजी ने जय देवी के थाने पर सन्देह प्रकट किया तो उन्होंने विश्वास दिलाया कि हम नित्य-प्रित देवी का साक्षातकार करते है। उनके लिए दांतुन रखी जाती है, वे दांतुन करती है। दूव का कटोरा भर कर रखा जाता है, वे उसे पीती है। उनके लिए शय्या विछाई जाती है, वे उस पर सोती हैं। हमे दातुन तोडी हुई मिलती है। दूध का कटोरा खाली होता है ग्रीर शय्या सोने के कारण ग्रस्त-व्यस्त हुई मिलती है।

व्यासदेवजी अब चिन्ता में डूब गए और वास्तिवकता का पता लगाने के उपाय सोचने लगे। इन्होंने प्रात आरती में सिम्मिलित होना छोड़ विया। अब केवल सायकाल को ही आरती में जाया करते थे। धीरे-धीरे यासिमिलिं औरिंगिकुं के में होगया। अब केवल १०-१२ व्यक्ति ही रात्रि की आरति कि सिम्मिलित होते थे। एक रात्रि को

व्यासदेवजी ने एक पड़े को भीतर जाते हुए तो देखा किन्तु याते हुए नहीं देखा श्रीर मदिर के पट वन्द होगए। इन्होंने पट वन्द करने वाले पड़े से वहुत कहा कि एक पड़ा भीतर रह गया है ग्रीर पट बन्द कर दिए गए है किन्तु उसने इस वात को स्वीकार नहीं किया। दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। व्यासजी का सदेह वढता ही गया। इसे दूर करने का उपाय वडी तत्परता से सोचने लगे। इन पुजारियों में से एक पुजारी र से इनकी मित्रता कुछ अधिक होगई थी। एक दिन उससे इन्होने अपना सदेह प्रकट किया और यथार्थता का पता लगाने के लिए आग्रह किया। जब ब्रह्मचारीजी ने विश्वास दिलाया कि वे किसी से इस बात की चर्चा नहीं करेंगे तब उसने इन्हे एकान्त मे ले जाकर इस सारी वात का रहस्योद्घाटन कर दिया। उसने वताया कि कोई देवी साक्षात रूप से यहा नहीं आती। न वे दूधे पीती हैं, न दातुन करती है। और न इस पलग पर शयन ही करती है। हम में से एक पुजारी भीतर रह जाता है। वही यह सब कुछ करता है। इस मदिर ग्रीर देवी के महत्व की वृद्धि ग्रीर प्रसिद्धि के लिए यह सब बाते की जाती है। यहा पर कभी किसी ने ग्राकर ग्रापके समान जिज्ञासा नहीं की ग्रौर न किसी प्रकार की छानवीन ही की है। इस यथार्थता का पता लगाकर व्यासदेवजी को वडी प्रसन्नता हुई। इसी पुजारी ने एक घटना सुनाई। महाराजा पटियाला एक बार देवी पूजन के लिए वहा पर ग्राए। वे देवी के ग्रनन्य भक्त थे। उन्होने वहा के पुजा-रियो और पड़ो के समक्ष एक प्रस्ताव रखा। वे द-६ वर्ष की एक कुमारी ब्राह्मण-कन्या की देवी के रूप मे पूजा करना चाहते थे। वे जास्त्रविधि से सब कुछ करना चाहते थे। उन्होने यह विश्वास दिलाया कि जव उस कन्या का विवाह होँगा तो मैं विवाह का सारा व्यय दूगा। कृत्या लावण्यमयी तथा सोन्द्यपूर्ण होनी चाहिए। रुपये के प्रलो-भन में ग्राकर कई पड़े ग्रौर पुजारी अपनी-ग्रपनी कन्या इस कार्य के लिए देने को तैयार होगए। इस पूजा मे विचित्रता यह थी कि कन्या को नग्न करके पूजा की जाती थी। जिस ससय पूजा होती थी उस समय पुजारी के ग्रतिरिक्त ग्रीर कोई व्यक्ति वहा नहीं रह सकता था। व्यासजी को ये वार्ते भला कैमे पसन्द ग्रा सकती थी। उनका मन वडा खिन्न हुम्रा म्रीर भारतीय मध-विश्वासी, उनकी म्रज्ञानता तथा रूढि-वादिता की वडी निन्दा की। अब वे ज्वालादेवी से धर्मशाला चले गए। एक सप्ताह तक यहा निवास किया। यहा से भागसूनाय के चश्मे को देखने के लिए गए। यह स्थान अत्यन्त रमणीक है। दो शेरो के मुह से पानी की वड़ी मोटी-मोटी घाराए निकल रही हैं। अनेको पजावी यहा गर्मियों मे आते है। यहा ठण्ड वहुत होती है। वर्षा भी खूव होती है। इसके वाद पालमपुर देखने के लिए गए। फिर वैजनाथ ग्रीर पपरोला के विजलीघर को देला। यहा से सारे प्जाव को विजली पहुचाई जाती है। मण्डी, सुकेत ग्रोर रिवालसर देखने के लिए चले गए। रिवालसर के पानी पर भूखण्ड तरते हुए देखकर वडी प्रसन्नता लाभ की । यहां पर एक मदिर भी है । यहां पर बौद्ध यात्री दर्शनार्थ ग्राया करते थे। यहा से कुल्लू के लिए प्रस्थान किया ग्रीर वहा पर चार मास तक ठहरे।

कुल्लू मे निवास—कुल्लू मे भी मलावामल कुलदीपचन्दजी की दुकान थी। इन्होंने व्यसादेवजी की ठहरने की व्यवस्था कर दी थी। कुछ दिन यहा पर रहे और इसके बाद एक एकान्त स्थान मे जाकर रहने लग गए। व्यास नदी के पार एक कुटिया मे निवासादि की सारी व्यवस्था कर दी गई थी। इसी कुटिया मे रहकर इन्होंने अपनी समाधि के अस्यास मे वृद्धि की। भोजन दोपहर के समय स्वयं ही वनाते थे। यहा पर इन्होंने अपने समाधि-काल में बहुत उन्नित कर ली थी और अस्यास करने-करने वहुत ऊची अबस्था तक पहुच गए। ये स्थितप्रश्रं थे और इनकी बुद्धि वडी निब्चया-रमक थी। जिस वार्य में एक वार लग जाने थे उसे पूरा करके छोडते थे।

विशिष्ठ कुण्ड श्रीर व्यास कुण्ड की यात्रा—ग्राध्विन मास तक महाराजजी कुल्लू में रहे। वर्षां इस माम के प्रारम्भ में ही वन्द होगई थी। यहा से २५ मील पर मनाली अन्यन्त रमणीक और शीत-प्रवान प्रदेश है। वगीचो में पेड सेवो तथा अन्य विविध फलो में लड़े रहते हैं। इस मनोहर स्थान को डेखने के लिए आब्विन मास के प्रारम्भ मे ही प्रम्यान किया क्यों कि यहा का जलवायु कुल्लू की अपेक्षा अविक अच्छा था। मनानी में नगभग १५ मीन की दूरी पर व्याम कुण्ड है। यह एक पहाडी के शिवर पर है। इसी जलस्रोन मे च्यास टिरिया निकलता है जी कुछ मील पर जाकर एक वटा दरिया वन जाता है। इसमें अनेक नदी-नाले मिल जाते है जो इसके ग्राकार मे वृद्धि कर देते हैं। व्यास कुण्ट के ग्रास-पास एक वहुन ऊची पहाडी है। उस पर ऊर्चाई के कारण कोई वृक्ष नहीं उगता। एक वहुत वहाँ मैदान ग्रवय्य है। वर्षा ऋनु मे यहा पर विविध जेडी-वृटियो ग्रीर पुष्पो की वडी वहार रहती है। उस मैदान के ग्राम-पास हिमाच्छादिन बटे विशाल पर्वत हैं। यहा पर ठहरने का कोई प्रवन्य न होने के कारण वापस लौटना पढ़ा । इसी प्रकार से विशिष्ठ कुण्ड में भी वे ऋषिक देर नहीं ठहरे थे, यद्यपि यह वडा रमणीक स्थान था। यह कुण्ड मनाली मे ही है। व्यास कुण्ड मे लीट कर फिर मनाली ग्रा गए ग्रीर यहा पर १५ दिन तक ठहरे। इन दिनों फल पक चुके थे और उनका वडा आधिक्य था, इमलिए वे बहुत नस्ते विकते थे। कुत्लू का दशहरे का मेला वडा प्रसिद्ध है। इमें देखने की ग्रमिलाया ने यहा पर दशहरे तक ठहरने का विचार किया ग्रीर ग्रपनी उसी कृटिया में रहने की व्यवस्था कर ली। कुत्तू में दशहरे का मेला लगभग १० दिन नक मनाया जाना है। व्यापारी लोग अपनी-अपनी दुकानें यहा लगाते हैं। ये लोग दूर में अपना आकर्षक और जीवनोपयोगी तथा विविध प्रकार का विलासिता का सामान यहा पर वेचने के लिए लाते हैं। मेले की ठीक-ठीक व्यवस्था सरकारी श्रफसर करते हैं। दुकानों को उत्तम तथा श्राकर्षक ढग में मजाया जाता है। इस मैल के नमारोह को देखते के लिए दूर-दूर में यात्री ग्राते हैं। व्यास नदी के किनारे एक बटा भारी मैदान है। इसी में प्रति वर्ष यह मेला लगा करता है। इस नदी के किनारे ही पुराने ढग को एक लम्बा बाजार भी है।

कुल्लू के मेले पर व्यभिचार रोकने का उपाय—कुल्लू के मेले के अवसर पर व्यभिचार पराकाष्ठा को पहुच जाता था। नगर के गण्यमान्य तथा प्रतिष्ठित लोगो का एक प्रतिनिधि-मण्डल व्यामदेवजी में इसकी रोक-याम के विषय में मिलने आया। पठानकोट आर्यमाज के प्रधान लाला कुलदीपचन्दजी भी इस सम्बन्ध में मिलने आए। उन्होंने ब्रह्मचारीजी को कई स्थानीय स्वयमेवक देने का वचन दिया। वीस स्वयमेवक इस कार्य के लिए भर्नी किए गए। मेले में एक शिविर लगाया गया, जिसमें नीन घण्टे सायकाल व्यासदेवजी स्वय ब्रह्मचर्य, सदाचार, चरित्र-निर्माण,

धर्मानुष्ठान, गृहस्य धर्म, सुखी परिवार, कर्त्तंच्य पालन, मानव के पतन के कारण, सन्तान के प्रति माता-पिता का कर्त्तंच्य, सुखी जीवन, पतन की ग्रोर ले जाने वाली प्रवृत्तिया, कर्म-मीमासा, जगद्गुरु भारतवर्ष, भारतवर्ष की दार्गिनकता, भारतवर्ष के सन्त, वर्णाश्रम-व्यवस्थादि विविध विषयो पर व्याख्यान देते थे। संकडो की सख्या में लोग इन उपदेशों को सुनने के लिए ग्राते थे। सदाचार तथा कुरीति निवारण सम्बन्धी भजन गाए जाते थे। रात्रि के समय स्वयसेवक सारे मेले में घूमा करते थे। जहा-जहा पर व्यभिचार के प्रसिद्ध ग्रंड थे वहा पर विशेषण्य से खंडे रहते थे। दुराचारी स्त्री ग्रीर पुरुषों को पकड कर पुलिस थाने में ले जाते थे। पुलिस ने भी इस कार्य में व्यासदेवजी को वडा सहयोग दिया। पुलिस दुराचारियों को हवालात में रखती थी ग्रीर उन्हें डाटती-फटकारती ग्रीर शिमन्दा करके छोड़ देती थी। इस प्रकार १५ दिन तक ब्रह्मचारीजी ने ब्रह्मचर्य ग्रीर सदाचार के प्रचार तथा दुराचार के निरोध के लिए ग्रनथक परिश्रम किया।

कुल्लू के ग्रास-पास देहातों में लुगडी नाम की एक प्रकार की जराब वहुत वनाई जाती थी। प्राय सभी देहात के लोग इसे पीते थे। दशहरें के मेले के समय भी इसकी खूब विकी होती थी। पुरुप ग्रीर स्त्रिया ग्रपनी टोलिया बना कर इस मिंदरा का पान करके इबर-उबर मेले में घूमा करते थे तथा विविध प्रकार के नृत्य किया करते थे। मिंदरा-पान के विरुद्ध भी व्यासदेवजी ने वडा ग्रान्दोलन किया था ग्रीर इसमें उन्हें कुछ सफलता भी प्राप्त हुई।

इस मेले के अवसर पर ग्रामीण लोग कम्वल, गर्म चादरे तथा पट्टी ग्रादि वेचने के लिए आते थे। अमृतसर तथा अन्य नगरो के व्यापारी गर्म कपडे को खरीदने के लिए आते थे। लाखो का व्यापार इस मेले में होता था।

मणीकरण की यात्रा—दगहरे का मेला समाप्त होने के पश्चात् श्री ब्रह्मचारीजी ने मणीकरण के लिए प्रस्थान किया। यह स्थान कुरलू से २४ मील की
दूरी पर है। यहा पर गवक के कई चश्मे है जिनमे से सदैव गर्म जल निकला करता
है। यह जल इतना गर्म होता है कि यात्री लोग इसमे चावल तथा ग्रालू जवालते
थे। वे त्रालुग्नो को पोटली मे वाधकर चश्मे मे डाल दिया करते थे ग्रीर थोडी देर वाद
ही वे उवलकर तैयार हो जाते थे। जव ये पक जाते तो इनमे से गधक की थोडी खुजबू
ग्राया करती थी, किन्तु जो पतीले मे दूसरा पानी डालकर उसमे इच्छानुसार चावल
डालकर कुण्ड के जल मे रख देते थे वे चावल उवल जाते थे ग्रीर उनमे किसी प्रकार
की गध नही ग्राती थी। इसी प्रकार दाल भी वहुत जल्दी पककर तैयार हो जाती
थी। रोटिया वेल-वेलकर इस जल के ग्रन्दर रखने से ये रोटिया भी पक जाती थी
किन्तु उनमे गीलापन रह जाता था। पर उनके पकने मे किसी प्रकार की कमी नही
रहती थी।

मणीकरण की यात्रा करने के पश्चात् व्यासदेवजी भूनित्तर लीट ग्राए ग्रीर यहा से मण्डी को प्रस्थान किया। यहा पर ये दो दिन तक ठहरने के वाद सुकेत, विलास-पुर ग्रीर ग्रर्फी की यात्रा के लिए चले गए। ये चारो रियासते थी ग्रीर मण्डी इन सव मे बडी रियासत थी। ग्रर्फी मे काग्रेस के दो कार्यकर्ताग्रो से भेट हुई। इनमे से एक मेरठ के निवासी थे ग्रीर दूसरे लाहौर के ग्रखवार वन्देमातरम् के सम्पादक थे। ये दोनो सज्जन

वडे देशभनत ग्रीर फ्रान्तिकारी दल के थे। भारत को स्वतन्त्र करवाने की इनमे वडी लगन थी। अहाँनिय यही धुन उन्हें लगी रहनी थी। स्वतन्त्रता की वलिवेदि पर ये श्रपना नर्वस्य निछावर करने को कटिवद्ध थे श्रीर श्रपनी जान को हाथ की हथेली पर रसकर अपने आपको उस कार्य के लिए जूझ दिया था। अर्फी मे एक वडा बुद्धिमान नुहार रहता था। यह नई-नई चीजे वनाने की खोज किया करता था। इसने एक प्रकार से देशी पिस्तीन का श्राविष्कार किया था। इस पिस्तील के तीन टुकडे किए जा नकते थे। जब उसके नीन टुकटे कर दिए जाते थे तो कोई यह नहीं पहिचान सकता था कि यह पिस्तीन है या अन्य कोई वस्तु। एक पिस्तील को यह १६) में वेचता था। गोलिया बनाना भी वह जानना था। क्रान्तिकारी देशभक्त इससे प्राय पिस्तील ग्रीर गोलिया परीदा करते थे। यह नुहार उनको पिस्तील ग्रीर गोलिया चोरी से वेचा करता था, वयोकि ब्रिटिश सरकार का सदा भय बना रहता था। ये क्रान्तिकारी मज्जन इस लुहार को अपने साथ ने जाना चाहते थे और इसी उद्देश्य से ये यहा अर्फी में स्नाए थे। उन नज्जनों से व्यासदेवजी को पता चला कि वे इस लुहार को भारी वेनन पर गही ग्रन्यत्र ले जाना चाहते थे जिससे यह गोलिया ग्रीर पिस्तील बना कर नैकटों की सत्या में देना रहे। उनका उद्देश्य एक भारतीय सेना का निर्माण करके ब्रिटिश सरकार में लोहा लेना या। उन्होंने उस कार्य के लिए एक बहुत बडी योजना बनाई थी। उन नवयुपनो को देखकर ब्रह्मचारीजी के मन में भी पराधीनता की कडी श्रुह्म लाख्रो ने जकडी हुई भारत माता को स्वतन्त्र करने के लिए जो ब्रान्दोलन चल रहा था उसमे योग देने की भावना जागृत हुई किन्तु वे इसमे मिक्रय योग न दे सके क्यों कि वे साधना, नप नथा योगाभ्यास में निरत ये। उन्होंने भी सोलह रुपये में एक पिस्तील उस लुहार से त्रनीदा श्रीर उसे अपने साथ अमृतसर ने गए। वहा जाकर उसे एक मिट्टी की हाडी में रसकर जमीन में गाउँ दिया। वहां पटे-पटे उसमें जग लग गई ग्रीर किसी काम का न रहा। क्यर्की से ये शिमला चले गए श्रीर वहा पर श्रमृतसर के रायसाहव गगा-रामजी की कोठी में कुछ दिवस तक निवास किया। दीवाली के अवसर पर ये अमृतसर पहुच गए। यहा पर योडे ही दिन ठहरे क्योंकि ग्रव उनका विचार कलकत्ते जाने का होंगपा जिसमे वहा जाकर नव्य-न्याय का ग्रध्ययन किया जाए श्रीर फिर वहा से दाजिलिङ्ग जाने का निय्नय किया।

#### वग देश की यात्रा

परमीने के गई व्यापारियों के आग्रह पर श्री व्यासदेवजी ने शीतकाल में कलकत्ते जाने का विचार किया और नवम्बर के अन्त में कलकत्ता पहुंच गए। यहा पर खिंगरा-पट्टी में लाला रामभज काहनत्तन्द पर्मीने वालों के पास ठहरे। यहा आकर इनका अमृतगर निवासी लाला मूलराज में बहुत परिचय होगया था। ये ईश्वरदास श्यामल के हिस्सदार थे। यह बनारगी कपडे की बडी भारी फर्म थी। इनकी प्रेरणा से सन्त महात्माओं के दर्शनार्थ नवहीप चले गए। नवहीप का दूसरा नाम नदिया-शान्ति था। यहा पर लगभग एक माम तक एक प्रसिद्ध धर्मशाला में निवास किया। इस नदिया-शान्ति में बहुत में भजनाश्रम है जिनमें सैकडों की सत्या में महिलाए प्रतिदिन ४-५ घण्टे तक कीर्नन किया करनी है। ये प्राय विधवा होती है। यहा पर कीर्तन करने के परनात् उन्हें दाल, चावल, घी, लकडी आदि सामान प्राप्त होता है। यह कीर्तन

इन वेचारी विधवात्रों के लिए ग्राजीविकोपार्जन का एक साधन था। इनके निवास की व्यवस्था भी ग्राथम की ग्रोर से की जाती थी। यह व्यवस्था ग्राथम में नहीं परतु कही ग्रन्यत्र की जाती थी। यहां पर ग्रनेक बंगाली सन्त भी रहते थे जिन्होंने ग्रपन निवास के लिए कुटियाए प्राय गंगा के किनारे बनाई हुई थी। ये मन्त ग्रीर महात्मा गौरागप्रभु के अनुयायी तथा अनन्य भक्त थे। भगवतनाम स्मरण और कीर्तन इनका परमोद्देश्य था। यहा पर कई संस्कृत पाठगालाए थी किन्तु नव्य-न्याय के कोई विद्वान् यहा पर इस समय नहीं थे। ये सब इन पाठगालाग्रो को छोडकर वनारस चन गए थे। लिलतासिख नाम के एक सन्त वडे उच्चकोटि के विद्वान् थे। ये सखीभाव से कृष्ण की भिक्त करते थे तथा स्त्रीवेश में रहते थे। इनके साथ प्राय शास्त्र-चर्चा हुआ करती थी। व्यासदेवजी की प्रतिभा, त्याग, ब्रह्मचर्य और योगाभ्यास मे वडे प्रसन्न हुआ करता था। ज्यासद्वजा का प्रातमा, त्याग, ब्रह्मचय और यागाभ्यास म वड प्रसन्न थे और इनसे वडा स्नेह रखते थे। एक दिन ब्रह्मचारीजी मूलराज और चरणदास को लेकर गगा के किनारे भ्रमण के लिए चले गए। वहा पर एक बगीचा था जिसमे एक सुन्दर मकान और गुफा बनी हुई थी। इन्होंने इन दोनों को समाधि में विठाने की इच्छा प्रकट की। किन्तु उन्होंने निवेदन किया कि दुकानदारी और समाधि में मेल नहीं है। महाराजजी ने विनोदपूर्ण ढग में मुस्कराते हुए कहा कि ग्राज इन दोनों में मेल करवा देंगे। मूलराज तथा चरणदास समाधि के लिए तत्पर होगए। योगी-राज ने इन दोनों को समाधि का तरीका बताया और गुफा में विठा दिया और स्वय उनके सन्मुख बैठ गए। पाच सात मिनट मे ही दोनो के मन, चित्त तथा इन्द्रिया जात ग्रौर स्तव्ध होगईं। तीन घण्टे तक ये समाधिस्य रहे। प्रात ६ वजे ये समाधि मे बैठे थे और दोपहर को १२ वजे उठे। तीन घण्टे तक इन्हें कुछ भी पता न रहा। इनकी उस समय की ग्रवस्था ग्रनिर्वचनीय थी। ये निरन्तर ग्रानन्दानुभव करते रहे। तीन घण्टे के पश्चात् वडी कठिनाई से योगीराजजी ने इन्हें समावि से उठाया। मूल-राज ने उठ कर तुरन्त महाराजजी के चरण पकड लिए ग्रीर उनके नेनो से ग्रानन्दाश्रु राज न उठ कर तुरन्त महाराजजा क चरण पकड ालए ग्रार उनक नना स ग्रानन्दाश्रु प्रवाहित होने लगे। वे ग्रानन्द-विभोर होगए थे। उन्होने चरण स्पर्श करते हुए कहा कि वर्षों की खोज के पश्चात् ग्राज सच्चे गुरु की उपलब्धि हुई है। ग्राज जिस ग्रपरिमेय तथा ग्रहितीय ग्रानन्द की प्राप्ति हुई है ऐसी ग्राज तक कभी उपलब्ध नहीं हुई। मुक्तमे तो ग्राध घण्टे तक भी बठने की क्षमता न थी किन्तु ग्रापने मुक्ते तीन घण्टे तक एक प्रकार से वाध कर विठा दिया। मुक्ते तो दीन-दुनिया का कुछ भी ज्ञान रहा। मुक्ते ग्रपनी विलकुल सुध-बुध न रही। ग्रात्म-विस्मृति-सी होगई। महाराजजी, ग्राप धन्य है, ग्राज हमारा जीवन सफल होगया। ग्रापके इस महान् उपकार का बदला कसे चुका सकते है। भोजन की ब्यवस्था इसी उद्यान मे की गई ग्रीर सारा दिन बही हमतीन किया। दिन वही व्यतीत किया।

सन्तो का बाजार—नवद्वीप मे एक वाजार था जिसमे सब सन्त महात्मा ही रहते थे। कई गुफा बनाकर रहते थे। कइयो ने तस्तो पर कील ठुकवा रखे थे ग्रीर उन पर बैठकर नपश्चर्या करते थे। कइयो ने ग्रपनी कोठडियो के दरवाजो को सीखे लगवा कर बन्द करवा दिया था ग्रीर भीतर बैठकर ध्यान लगाते थे। ध्यानावस्थित सन्तो के सामने श्रद्धालु लोग ग्राकर रुपये-पैसे चढा जाते थे। इस वाजार के एक बराण्डे मे एक युवक ब्रह्मचारी रहता था। इसके विषय मे यह प्रसिद्धि थी कि यह

दो दिन तक समाधिस्य रहता था। एक दिन व्यासदेवजी इसके दर्गन के लिए गए ग्रीर २२ घण्टे तक निरन्तर उनको पास वैठे रहे। इसका ग्रासन स्थिर था। पास वैठे हुए व्यक्ति को इनकी व्वान-प्रव्वान की गित का भी कुछ पता नहीं लगता था। केवल कौपीन वाधकर ही समाधि में वैठा था। इनकी ग्रायु लगभग २४-२५ साल की होगी। इससे वातचीत करने का ग्रवसर कभी नहीं मिला क्योंकि जब ये जाते थे तब वह ममाधिस्य ही मिलता था। एक सन्त ऐमें थे जो एक फुट चौडे रोशनदान से ही 'हरि योल' कहकर दर्शन दिया करते थे। इन प्रकार में यहा पर इन्होंने कई सन्त महात्माग्रो दर्शन किए ग्रीर कड़यों में वार्तालाप करने का भी सुग्रवसर लाभ हुग्रा।

भजनाश्रमों में प्रायं ग्यारह वजे तक भजन तथा कीर्तन होता था। ग्रन्त में महिलाए चंडी होकर कीर्तन करती थी। उनमें से कई भावावेश में ग्राकर वेहोंग हो जाती थी ग्रीर कर्ड-कई घण्टे तक ग्रचेन पड़ी रहती थी। बहुत-सी महिलाए भिक्त-रस में उननी विभोर हो जाती थी कि उनके नेत्रों में प्रेमाश्रुधारा वह निकलती थी ग्रीर करन करती हुई ही कीर्नन करती थी। प्रेम, श्रद्धा ग्रीर ग्रानन्द से ग्राप्लावित होकर जब ये कीर्नन करती थी तो दर्शको तथा श्रीताग्रों के हृदय में ग्रत्यन्त श्रद्धा, भिन्त ग्रीर प्रेम का सचार होता था ग्रीर भगवान् के प्रति श्रनुराग की भावना जागृत होती थी।

व्यासदेवजी अपने दोनो भक्तो के साथ नित्यप्रति गगाजी के किनारे भ्रमण के निए जाते थे। यही स्नान, ध्यान, व्यायाम, प्राणायाम तथा योगाभ्यास किया करते थे। इस प्रकार यहा एक मास तक निवास करके ये कलकत्ता लीट गए।

क्रमकत्ते में नाना काहनचन्द यन्ना रफल के व्यापारी थे। ये व्यासदेवजी से यदा रनेह करते थे और उनके प्रति उनकी अनन्य श्रद्धा थी। उनका रफल का व्यापार फाम की एक कम्पनी में चलता था। उनकी उस वर्ष उस व्यापार में बहुत घाटा पड़ा था। उन्होंने मोचा कि ब्रह्मचारीजी बड़े भारी योगी और त्यागी सन्त है। यदि इनके नाम ने व्यापार किया जाए तो शायद जो घाटा पड़ा है उसकी पूर्ति हो जाए। इसन्तिए उन्होंने व्यामदेवजी के नाम में रफल का मौदा किया। इसमें इन्हें पाच हजार का नाम हुआ और काहनचन्दजी को २० हजार का। काहनचन्दजी यह रुपया निकर उनके पान गए और रुपया उनकी भेंट किया और निवेदन किया कि रफल की कुछ गाठों का व्यापार आपके नाम में किया था, उसमें पाच हजार रुपये का लाभ हुआ है। यह रुपया आपका है। आप उसे रवीकार करने की कुपा करे। महाराजजी ने उन उचित नहीं नगका और उन्हें नमकाया कि नाधु-सन्तों के नाम पर व्यापार नहीं करना चाहिए। यह उनके लिए कोई शोभा और सम्मान की बात नहीं है। उन्होंने यह धनराधि लेने में उनकार कर दिया।

गगा सागर की यात्रा—जीतकाल में व्यासदेवजी ने गगा सागर की यात्रा करने का विचार किया। मूलराजजी भी उनके साथ चलने को तैयार होगए। एक जलपोन में गयार होगए। यह जलपोन सायंकाल को रवाना हुआ। रात भर चल कर प्रान गगा गागर पहुचा। यहा पर गगाजी समुद्र में मिलती है। यहा पर समुद्र में म्नान करने का यटा महत्त्व माना जाता है थयोकि इसमें गगा आकर मिलती है। हज़ारों की परया में यात्री यहा रनान करने आते हैं। वे यहा एक दिन ही ठहरते

है। स्नान तथा मदिर दर्शन के पश्चात् चले जाते है। समुद्र के किनारे भाटियों से सटा हुग्रा एक छोटा-सा मैदान है। इस मैदान में किपलदेवजी का मदिर हैं। इसके पास ही एक ग्रौर मदिर है जिसमें ब्रह्माजी की चतुर्मुखी प्रतिमा है। व्यासदेवजी तथा लाला मूलराज चौथे दिन गगा सागर से कलकत्ता लौट ग्राए।

#### दार्जिलग ग्रीर शिलांग भ्रमण

ग्रीष्मकाल में कलकत्ते में रहकर साधना करना ग्रत्यन्त किठन था। इसलिए व्यासदेवजी ने बगाल के उत्तरी भाग में स्थित दार्जिलिंग ग्रीर ग्रासाम के उत्तरी प्रदेश में स्थित शिलाग जाने का विचार किया। इन दोनो प्रान्तों के गवर्नर ग्रीप्म ऋतु में इन स्थानों में जाकर निवास किया करते थे। लाला मूलराज ग्रपनी दुकान से ग्रवकाश प्राप्त करके इनके साथ चलने को तैयार होगए। ये महाराजजी के सत्सग तथा उनके उपदेशों को सुनकर ससार से कुछ उपराम से होते जा रहे थे, इसलिए जहा ये जाते वही उनके साथ चलने को तैयार रहते थे। ये नि सन्तान थे। इनकी पत्नी को कुछ मस्तिष्क का विकार होगया था ग्रत वह ग्रपनी माता के पास जालघर में रहा करती थी। मूलराज के पास लगभग एक लाख रुपया था ग्रीर उनका ग्रपना मासिक व्यय वहुत कम होता था। व्यासदेवजी ने उन्हें सलाह दी कि तुम्हारे पास रुपये की कमी नहीं है। तुम ग्रपना सारा समय ईव्वर-भित्त में लगा सको तो वहा उत्तम हो। मूलराज ने उनकी इस वात को मान लिया ग्रीर इस पर विचार करना प्रारम कर दिया। दार्जिलिंग पहुचकर एक मकान में दो कमरे किराये पर लिए गए। यहा पर रहकर इधर-उधर दर्शनीय स्थानों को देखने के लिए चले जाते थे। यहा पर दो मास तक निवास करने का निश्चय किया।

टाइगर हिल पर सूर्योदय दर्शन—दाजिलिंग में टाइगर हिल नाम का एक वडा सुन्दर स्थान है। यहा पर सूर्योदय का अलीकिंक दृरय देखने के लिए वहुत दूर-दूर से लोग आया करते थे। इन दिनों वर्ण ऋतु प्रारम होगई थी। दाजिलिंग में वर्ण अन्य पर्वतीय स्थानों की अपेक्षा होती भी अधिक है। व्यासदेवजी तथा मूलराज ने टाइगर हिल पर इस अद्वितीय दृश्य को देखने का विचार किया। ये दोनों प्रात्न काल ही इस पहाडी पर जा पहुचे। कई दिन से वर्ण हो रही थी किन्तु उस दिन देवयोंग से यह वन्द होगई। सैंकडो व्यक्ति इस दृश्य को देखने के लिए इस पहाडी पर जाते थे किन्तु वर्ण के कारण सूर्यदेव के दर्शन नहीं हो पाते थे। व्यासदेवजी जिस दिन गए उस दिन गगनमण्डल विलकुल साफ होगया। मार्ग में २५-३० यात्री व्यासदेवजी के साथ हो लिए। जब ये लोग पहाडी के ऊपर मैदान में पहुचे तो इन्हें जर्मनी के वहुत से लोग मिले। ये भी सूर्योदय के दृश्य को देखने के लिए कई दिनों से आ रहे थे किन्तु वर्ण के कारण निराश होकर लौट जाते थे। वहुत दिनों के पञ्चात् उस दिन इन्हें अवसर मिला। व्यासदेवजी का परिचय प्राप्त कर लने के पञ्चात् उस दिन इन्हें अवसर मिला। व्यासदेवजी का परिचय प्राप्त कर लने के पञ्चात् उस दिन इन्हें अवसर मिला। व्यासदेवजी का परिचय प्राप्त कर लने के पञ्चात् उस दिन इन्हें अवसर मिला। व्यासदेवजी का परिचय प्राप्त कर लने के पञ्चात् उस दिन इन्हें पास आकर कहा, ''आज ऐसा मालूम होता है कि आपने अपने योगवल से नम में आच्छादित मेच-मडल को छिन्न-भिन्न करके तितर-वितर कर दिया है। आप मनुष्य नहीं किन्तु आप मनुष्य रूप में देखा की यूर्व की अरेर एक वडा भारी मैदान है। यही से सूर्योदय देखा जाता था। जब सूर्य उदय होता था तो ऐसा प्रतीत होता था मानो यह पर्वतीय भूमि

के स्राचन में निकलकर चला श्रा रहा है। प्रतिक्षण यह नया-नया रूप धारण करता था। पल-पन में स्रपना रग बदलता था। उसमें एक प्रकार का स्ननुभूत सा स्पन्दन तथा हलचल गी प्रतीत होती थी। उसके कपन स्रीर क्षोम स्पप्ट दृष्टिगोचर होते थे। यह परिवर्तनरण श्रिया प्रान ४ बजे में लेकर ठेढ घण्टे तक रहती है। इस चित्ता-क्षांक दृष्य की देशने के लिए किमी-किमी दिन तो सैकड़ों की सहया में लोग एकत्रित हो जाने है। गूर्योद्य की यह छटा देखते ही बननी है। यह बाणी का विषय नहीं है। यहा का मूयदीय तथा साच पर्वा का चूर्यांत्र दोनों ही श्रनुपम दृष्य है। टाइगर हिल पर जारे के लिए पनकी नटक बनी हुई है। प्रात सूर्योदय के दृष्य को देखने के लिए वाधियों को गिर्म में श्री बहा पहुचना होता था। व्यासदेवजी तथा मूलराज ने इस भटा इन्य को कई बार देखा।

दाजितिग में नाय के नई बाग है। ये लोग इन्हें भी प्राय देखने के लिए जापा रक्ते थे। यहा पर चाय बनाने के कई कारत्वाने हैं। यहा पर मच्छर श्रीर सक्ती यहा राग होने हैं। क्यानाभ्यान के लिए यह रथान उपयुक्त था। योगीराज ने इस पार्च के निए एक एकान्य-स्थान नियन किया हुशा था।

जिलाग के लिए प्रस्थान—दानिलिंग में दो मास नियास करने के बाद ग्यासंत्रिकी नथा मूलराज में जिलाग जाने का निश्चय किया। दार्जिलिंग से प्रस्थान रहें। यह एक छोटी सी पहाडी पर स्थित है। यहां पर एक धर्मशाला में निवास किया। प्रजापन नदी में स्नान किया और तल्लाब्बात कामाक्षा देवी के दर्शन किए। नव ये दूसरे दिन स्वान करने के लिए गए नव बहा दो महिलाए स्नान करने के लिए आई हैं। ये दोनों युक्तिया सन्यासी के बेश में थी। दोनों की आयु २०-२५ वर्ष के घन्त्रांन थी। उनमें ने एक गुरु नथा दूसरी शिष्या थी।

मन्यामिनी देवी से परिचय—हो मन्यामिनी देविया त्रह्मपुत्रा नदी के तट पर गरागाजी गो मिनी थी। उनमें जो गुरु थी वह उनके व्यक्तित्व में बडी प्रभावित थी। उनने उनके पान जाकर राग उनका परिचय प्राप्त किया। उने मालूम हुमा कि उनका परीर पताब प्रान्त का है। ये कलकत्ता ने श्राप् है। दार्जिलिंग में दो मास ठरपर गोराटी श्राप् है गोर यहा एक धर्मशाला से उन्द दिवस रहने के पञ्चात् शिलाग जाने वा विचार है। उनने माउर प्रणाम करके निवेदन किया कि वे उसके ही प्राथम में उहरें। यहा उनके लिए सब उनकी सुरा नुविधा के अनुर प व्यवस्था कर दी जाणी। व्यागीवधी ने वहा जाने में पूर्व उनके श्राध्यम को देखने की इच्छा प्रकट की। उनका श्राध्यम बहा में २-३ फर्वांग पर ही था। ये उनके माथ उनके भ्राध्यम में पहुंचे। यहा जाकर देशा कि एक बडा मुन्दर बगला एकमजला बना हुम्रा था। इसमें बहुत विध्या चार कमरे थे। उस वगले के श्रामपास श्रीर भी कई बगले बने हुए थे। व्यागीवधी ने प्रमानकर कर गारा मकान देशा किन्तु उन्हें कही कोई भी पुरुष दिखाई न दिया, अन उन्हें धर्मशाला ने यहा श्राने में बडा मकोन श्रानुभव होने लगा। जब उन्होंन श्रामा गक्तेच गुक देवी पर प्रकट किया तो वह मुन्कराई श्रीर कहा कि श्राप उनने उने महात्मा है, प्रभी भी श्रापको पुरुष श्रीर रत्री का भेद बना हुग्रा है। श्राप यहा उहरें, भी श्रापकी रक्षा के लिए जितने पुरुष श्रीर रत्री का भेद बना हुग्रा है। श्राप यहा उहरें, भी श्रापकी रक्षा के लिए जितने पुरुष श्रीर रत्री का भेद बना हुग्रा है। य

सव बाते सुनकर व्यासदेवजी ने अपने सुन्दर भाव व्यक्त किए कि जव तक पूर्णरूपेण ज्ञान और वैराग्य नहीं हो जाता और स्वरूप स्थित नहीं हो जाती तव तक भेदभाव बना ही रहता है और यह ग्रावश्यक भी है। इन्होंने ग्रनेक प्रकार से उसे समभाया किन्तु कोई भी बात उस देवी के गले नहीं उतरी। उसने एक ग्रादमी को भेजकर तुरन्त महाराजजी का सामान धर्मशाला से ग्रपने ग्राश्रम मे मगवा लिया और उनके तथा मूलराजजी के रहने की सारी व्यवस्था कर दी। गुरु देवी की शिष्या ने भोजन बनाया ग्रीर वडी श्रद्धा ग्रीर भिवत से दोनों को भोजन करवाया।

उपनिषदों की कथा—सायकाल ४ वजे वराण्डे में चटाइया विछा दी गईं। ग्रास-पास के सव लोग वहा पर एकत्रित होगए। महाराजजी ने योग के सम्वन्ध में एक सारगिमत उपदेश दिया। इससे एकत्रित सभी सज्जन वडे प्रभावित हुए। लगभग दो घण्टे तक सत्सग होता रहा। इसी अवसर पर एक मारवाडी सेठ वहा आए। गुरु देवी ने महाराजजी से इनका परिचय करवाया। यह सेठ इन दोनो देवियों को सब खर्च देते थे। वगला भी इन्होंने ही वनवा कर दिया था और वहा पर जितने भी सन्त और महात्मा ग्राते थे उन सबका खर्चा भी यह ही करते थे। श्री ब्रह्मचारीजी सात दिन तक यहा ठहरे और सातो ही दिन उपनिपदों की कथा सायकाल के समय करते रहे। इनकी कथा ने वहा के निवासियों में ग्राध्यात्मक नव-चेतना का सचार किया। पथ अव्हां का मार्ग दर्शन किया ग्रीर कर्त्तव्य-विमुखों को कर्त्तव्य पथ पर ग्रारुढ किया।

गोहाटी से प्रस्थान का विचार—सारे दर्गनीय स्थानो को देखने के पश्चात् व्यासदेवजी ने गोहाटी से प्रस्थान करने का विचार किया। यहा रहते वहुत दिन हो गए थे। नवयुवती सन्यासिनियों के पास ग्रधिक दिन तक निवास को वे उचित नहीं समभते थे। उनके ग्रातिथ्य तथा ग्रत्यिधक उपचार को भी वे सन्देह की दृष्टि से देखते थे। एक नीति वाक्य भी इस विषय में इनके रुख का समर्थन करता है ''श्रत्युपचार गकनीय''। इन्होंने यहा की महिलाग्रों के विषय में ग्रनेक प्रकार की किंवदित्या सुनी हुई थी, इसलिए भी ग्रव वे वहा से शीघ्र ही गमन करना चाहते थे। इन्होंने ग्रपने प्रस्थान का विचार गुरु देवी से प्रकट किया। इस देवी ने उन्हें ठहराने के लिए वडा ग्राग्रह किया क्योंकि एक सप्ताह तक उनके सत्सग से जनता ने वडा लाभ उठाया था। जब वह वार-वार हठ करने लगी तव व्यासदेवजी ने उन्हें भली प्रकार से समभाया कि ''जब एक सप्ताह हमारे यहा ठहरने से ग्रापको मोह होगया है तो हम यदि ग्रौर ग्रिधक यहा ठहरेंगे तो यह मोह का वधन ग्रौर भी ग्रिधक वृढ हो जाएगा। ग्राप लोग सन्यासिनिया हो, ग्रपने परिवार की ममता का परित्याग करके यहा ग्राई हो ग्रौर गेरुए वस्त्र धारण किए है। ग्रापको वीतराग होना चाहिए ग्रौर उपरामवृत्ति से रहना चाहिए। ग्रापको जड ग्रयवा चेतन किसी भी पदार्थ से राग नही होना चाहिए। ग्रवावस्था में ब्रह्मचारी को स्त्रियों के पास ग्रधिक नही रहना चाहिए ग्रौर युवती सन्यासिनियों के लिए भी पुरुषों के ससर्ग में रहना ग्रनुचित है। एक नीति-वाक्य मेरी बात की वलपूर्वक पुष्टि करता है, ''यद्यिप ग्रुढ लोकविरुढ नाचरणीय नाचरणीयम्।'' गुरु देवी ने जबसे व्यासदेवजी को घाट पर देखा था तभी से उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनमें गुरु भावना करने लग गई थी। उसके गुरुषी का देहावसान तीन साल पूर्व हो चुका था। वे वडे विद्वान् ग्रौर

सिद्ध पुरुष थे। उन्होने ही इस देवी को वाल्यकाल से शिक्षा दी थी। उनके देवलोक गमन परचान् यह वडी दु खी-सी रहने लगी। जो सेठजी महाराजजी की कथा मुनने त्राते थे वे उसके गुरु-भाई थे। ये सब प्रकार से इन दोनो देवियो का विशेष ध्यान रग्वते थे ग्रीर ग्रव भी सव प्रकार की उनकी व्यवस्था ये ही करते थे। इन्हें ग्रपनी पुत्रियों के समान समभते थे। यह देवी व्यासदेवजी की गुरु भावना से ही सेवा कर रही थी श्रीर उनके सत्मग मे लाभ उठा रही थी। यद्यपि इस देवी के गुरुजी ने इसे ही अपने वाद अपनी गद्दी पर विठाने का निर्णय दे दिया था तो भी यह व्यास-देवजी को ग्रपना गुरु बनाना चाहती थी ग्रीर सेठजी ने भी इसकी ग्रनुमति दे दी थी पयोगि वेयह चाहते ये कि इसकी प्रवृत्ति धर्म, ध्यान ग्रीर भिक्त की ग्रीर जमी रहे। यह बडी निष्ठावनी, श्रद्धानु ग्रीर भगवद्भवता थी। जब उसे ज्ञात हुन्ना कि महाराजजी दो-तीन माम के लिए शिलाग जा रहे है तो उसने भी इनके साथ जाने की इच्छा प्रकट की जिससे वह उनके सत्सग से लाभ उठा सके श्रीर श्रभ्यास भी करती रहे। उन्हें यह बान पमन्द नही थाई और कहा कि ग्रभी हमारे ठहरने ग्रादि की वहा पर कोई ठीक व्यवस्था नहीं है, अन आपका हमारे साथ जाना उचित नहीं है। जब गुरु देवी ने यह विद्वास दिलाया कि वहा पर निवास ग्रादि का सारा प्रवध सेठजी करवा देंग तब ब्रह्मचारीजी ने वहा जाकर म्वय ही सब प्रवध करने का तथा सब व्यवस्था हो जाने पर सब समाचार लियने का विश्वाम दिलाया । इस प्रकार समभा-बुभाकर यदी कठिनार्र ने अपना पीछा छुटाया। दूसरे दिन प्रात काल विदाई के समय गुरु देवी ने उन्हें हार पहिनाया और २०० क्पये भेंट रूप मे देना चाहा किन्तु इन्होंने रवीकार नही किया गयोकि वह गन्यामिनी थी। यद्यपि गुरु देवी ने इन्हे गुरु मान लिया था नो भी उन्होंने रपयों को नहीं लिया।

## शिलाग के लिए प्रस्थान

टैयसी में यात्रा—प्रान काल ठीक श्राठ वजे टैक्सी श्रा गई। पाथेय का पूरा गामान सेठजी ने व्यागदेवजी के गाय रम दिया। मार्गव्यय तथा शिलाग में निवास श्राटि के लिए भी उन्हें एक वटी धन राशि देनी चाही किन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं की श्रीर मेठ मूलराज की श्रोर गकेन करते हुए कहा, "मेरे साथ ये सेठजी हैं। ये ही मारा व्यय कर रहे हैं। गुभे रमये की कोई चिन्ता नहीं है। ये ही सब कुछ कर रहे हैं।" विदार्ज के गमय बहुमरया में नर-नारी बहा पर एकत्रित होगए। उन सभी को उनका गोहाटी में प्रस्थान श्रच्छा नहीं लगा। ये सभी चाहते थे कि ये कुछ दिन श्रीर बहा विराज श्रीर वहां की जनता को प्रपने उपदेशामृत का पान करवाए। गुरु देवी की श्रापों से श्रश्रुधारा वह निकली। वह बार-बार महाराजजी से उसे शिलाग बुलाने के लिए श्रनुरोध कर रही थी। इन्होंने उसे धीरज बधाया श्रीर सान्त्वना दी। सेठ मूलराज श्रीर ये दोनो टैयमी में सवार हुए श्रीर शिलाग के लिए प्रस्थान कर दिया।

मार्ग मे दुर्घटना—कुछ ही मील की यात्रा की होगी कि टैक्सी खराव होगई। कई घण्टे उम ठीक करने मे लगे। सायकाल को यदि प्रस्थान वहा से कर भी लेते तो उमी दिन शिलाग पहुच नहीं सकते थे, श्रत मार्ग में ही कही ठहरने का निश्चय किया। मार्ग में ही रात्रि के श्राठ वज गए। ड्राईवर भली प्रकार से गाडी चला रहा

था। मार्ग मे एक वडा विशालकाय तथा मदमस्त हाथी खडा हुग्रा था। उसको सडक पर से हटाने के लिए इसने वीसियो बार हार्न दिया, उसके ऊपर प्रकाश भी डाला, कोलाहल भी किया, किन्तु वह वहां से तनिक भी न हटा, वहीं डटा रहा । ड्राईवर वडा चिन्तित हुग्रा। हाथी प्राय हार्न या प्रकाश से भयभीत होकर भाग जाया करते हैं किन्तु इस पर इन दोनो का ही कुछ ग्रसर नहीं हुग्रा। जिस वन में से गुजर रहे थे उसमें बहुत हाथी रहते थे। भुण्डों के भुण्ड उस वन में विचरा करते थे। इस हाथी ने इससे पूर्व भी एक लारी को सडक पर रोक लिया था ग्रीर कई घण्टे तक सडक पर से नहीं हटा था। जब पीछे से कई लारिया ग्राईं तब कही जाकर उसने इन्हें जाने दिया था। हाथी को वहा से हटाने का इनके पास कोई सावन नही था। गाडी भी छोटी थी ग्रीर ग्रादमी भी कुल पाच ही थे, ग्रत टैक्सी को वही खड़ा करके वन के किमी सुरक्षित भाग मे जाकर रात्रि व्यतीत करने का निश्चय किया। ड्राईवर ने टैक्सी की वित्तिया वुभा दी ग्रीर इसे थोडा हटाकर खडा कर दिया। मब लोग चुपके मे वन मे चले गए ग्रीर एक वडे मजबूत वृक्ष पर चढ कर बैठ गए। पन्टह बीस मिनट के ग्रन्दर ही हाथी ने ग्रपनी सूण्ड से टैक्सी को पकड लिया ग्रीर उसको भटके देने लगा ग्रीर एक पत्थर से टकरा-टकरा कर उसे तोड डाला। इजन मारा चकनाचूर कर दिया। वृक्ष पर बैठे लोग कर भी क्या सकते थे । विवश होकर सब क्षति को अपनी ग्रांको से देखते रहे। हाथी ने गाडी के शीको तथा कई पुर्जो को तोड-फोड डाला था। गहिया फाड दी थी। गाडी मे जो सामान था वह सव तोड कर इघर-उघर फैक दिया था। सुर्योदय होने पर ब्रह्मचारीजी तथा उनके साथी वृक्ष पर ने उतरे ग्रीर टैक्सी की दशा देखकर दु खित हुए। कई घण्टे तक खडे-खडे शिलाग की ग्रोर जाने वाली लारियो की प्रतीक्षा करते रहें। इतने मे तीन-चार वनवासी कुली उथर से निकले ग्रीर हाथियो तथा ग्रजगरो से होने वाले कष्टो का वर्णन किया। एक वार एक हाथी के वच्चे को एक ग्रजगर ने निगल लिया। जगलान के सरकारी नौकरों ने उस ग्रजगर को मारकर हाथी के वच्चे को उसके पेट में से निकाला था। ड्राईवर ने योगीराजजी तथा मूलराजजी ग्रादि को तो एक-एक, दो-दो करके लारियों मे विठवा दिया ग्रौर स्वय टैन्सी को एक ट्रक से वान्धकर वापस गोहाटी चला गया।

शिलांग में निवास—यहा ग्राकर महाराजजी एक वडी धर्मगाला में ठहरे किन्तु यहा पर केवल दो-तीन दिन तक ही रहे। इसके पश्चात् एक छोटा-सा मकान किराए पर ले लिया। इस मकान से थोडी-सी दूर एक जल-स्रोत था। यह वडा सांदर्यपूर्ण था ग्रीर इसका जल वडा स्वच्छ ग्रीर मथुर तथा पाचक था। इसके जल-पान से भूख बहुत लगती थी। जो खाया जाता था तुरन्त पच जाता था। योगीराजजी तथा मूलराजजी दोनों के स्वास्थ्य की वृद्धि हुई ग्रीर अक्ति तथा वल सम्पन्न होगए। यहा पर योगीराजजी सेठजी को गीता ग्रीर भागवत पढाया करते थे। इनके लिए योगाभ्यास करने का छ घण्टे का कार्यक्रम बना दिया गया था। ग्रीर ब्रह्मचारीजी स्वय भी वारह घण्टे तक प्रतिदिन ग्रभ्यास करते थे।

चिरापूंजी गमन—यह स्थान शिलांग से पच्चीस या तीस मोल की दूरी पर है। यहा पर भारतवर्ष में सर्वाधिक वर्षा होती है। ग्रच्छा रमणीक स्थान है। यहा पर व्यासदेवजी एक सप्ताह तक रहे ग्रीर इसके वाद जिलाग लौट ग्राए।

शिलाग के रोति-रिवाज-कुछ वर्ष पूर्व यहा की आवादी लगभग दस लाख थी। यहा पर खसिया क्षत्रियों की संख्या अधिक है। ईसाई धर्म सदैव से ही भारतीय धर्म के लिए घानक सिद्ध होता रहा है। भारत का कोई कोना इनके प्रचार ग्रीर ग्रत्या-चार मे श्रष्ट्रता नहीं बचा । यहा पर भी उन्होंने श्रपना प्रचार-कार्य किया श्रीर विविध प्रलोभन दें कर यहाँ की जनना को ईमाई बनाया। इन्होने स्थान-स्थान पर स्कूल तथा ग्रग्पनाल पोले श्रीर कही पर रुपया बाट कर, कही पर श्रीपिधयो को वितरण करके ग्रीर यही वस्त्र देकर तथा कही पर नौकरियो का लालच देकर खिसया जाति को र्जनार्ज बना लिया। 'जिसकी लाठी उसकी भैस' इनका सिद्धान्त था। ईसाई पादिरयो को मनचाही धनराशि इगलेड, अमेरिका तथा फासादि देशो से ईसाई धर्म के प्रचार के लिए प्राप्त होनी थी, जिसके ग्राघार पर ये पादरी विलासिता का जीवन व्यतीत करने थे श्रीर उनाई धर्म का प्रचार करते थे। भारत की भोली-भाली श्रीर विदेशी शामन के कारण शोषित ग्रीर पीडित जनता को गुमराह करते थे। दस लाख मे से केवल दस हजार ही सिनया हिन्दू शेप रहे थे, श्रीर सबने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था। ये उमार्ट भारतवर्ष के लिए एक वडा श्रभिज्ञाप है। यहा पर मूर्तियों को खडित किया गया, उन्हें नोउ कर अपमानित किया गया श्रीर मन्दिरो को गिरा कर उनके स्थान पर गिर्जे बनाए गए। कही-कही पर मन्दिरो का रूपान्तर करके गिर्जे बनाए गए। कोर हिन्दू साधु महातमा अथवा पण्डित सुले-ग्राम हिन्दू शास्त्रो की न कथा कर नकता था ग्रीर न किसी प्रकार का भाषण दे सकता था। कही-कही किसी-किसी मन्दिर में हिन्दू धर्म की चर्चा हुया करती थी यथवा कोई धर्मनिष्ठ व्यक्ति ग्रपने निवास-स्थान पर व्यक्तिगत रूप से कथा या भाषण करवा लेता था। एक मारवाडी व्यापारी ने महाराजजी के भाषण का प्रवन्ध एक मन्दिर में करवाया था। उन्होंने भागवत के एरादश स्त्रांत्र की कथा की थी। उससे लोगों ने बड़ा लाभ उठाया किन्तु श्रोतागणी की सत्या कम ही ग्रानी थी। यनिया जाति के लोगों के घरों में प्राय भागवत-पुराण की कथा हुआ करनी थी। यहां का सब व्यापार मारवाडियों के हाथ में था। ये लोग यटे धनवान ये फिन्तु यहा की जनता बडी निर्धन तथा दरिद्र थी।

यहा पर पिता की उत्तराधिकारिणी छोटी लडकी होती है। व्यापार तथा दुकानदारी प्राय स्त्रिया करती है। कही-कही पर सप्ताह में एक नियत दिन पर विशेष बाजार लगाया जाता है। उसमें विभिन्न प्रकार की उत्तम ग्रीर सुन्दर वस्तुए विक्रेंग के लिए ग्रानी है। रारीदने वालों की वटी भीड लग जाती है। एक प्रकार का मेला-मा लग जाता था। यहा पर लटकिया ग्रपना वर स्वय चुनती हैं। प्राय फुटबॉल के मैचों में यह कार्य सम्पन्न होता है। इन मैचों का यहा पर बडा रिवाज है।

## पुन कलकत्ता गमन

मूलराज जी कलकत्ते में दुर्गापूजा का उत्सव महाराजजी को दिखाना चाहते थे। यह उत्सव वहा पर वटी धृम-धाम से तथा समारोहपूर्वक मनाया जाता है। ये वहा जाने के लिए वहुत उत्सुक न थे क्योंकि वहा पर इन्हें योगाभ्यास के लिए कही एकान्त स्थान न मिलना था। वहा उन्हें काहनचन्दजी के परिवार में ही रहना पडता था। येठ मूलराज के यह विश्वाम दिलाने पर कि वहा एक एकान्त-स्थान में एक कमरा किराए पर ले लिया जाएगा, ये कलकत्ता जाने के लिए तैयार हुए। कलकत्ता पहुंच

कर खिड़्नरापट्टी के पास एक मकान किराए पर लिया गया। इस वार सारा गीत-काल महाराजजी ने कलकत्ता मे ही व्यतीत किया या नदिया-गान्ति मे।

बुरे स्थान का मन पर प्रभाव—नए किराए के कमरे मे महाराजश्री ने प्रवेश किया। दैनिक घ्यान ग्रीर ग्रभ्यास के पञ्चान् रात्रि मे जयनार्थ ग्रपने विस्तर पर लेट गए किन्तु नीद नही ग्राई ग्रौर मन मे वर्वस ग्रवोछनीय विचार उत्पन्न होने लगे । वार-वार ऐसे विचार ग्राकर तग करने लगे जिनका इन्हें जागृत में तो नया कभी स्वप्न में भी ध्यान नहीं ग्राया था। इन विचारों से युद्ध करते-करते ग्यारह वज गए। ये तुरन्त ग्रपने कमरे से निकल कर बाजार मे चले गए। वहां जाते ही विचारो में परि-वर्तन होगया ग्रीर मन भी जान्त होगया। योडी देर वाद पुन कमरे मे ग्राकर मोने का प्रयत्न करने लगे, पर नीद नहीं आई। तव १२ वजे उठकर सेठ मूलराज की दुकान पर गए। नौकर को जगाकर उसे अपने कमरे से विस्तर उठाकर लाने का आदेश दिया । उसके विस्तर लाने पर दुकान पर ही मोए, नव नीद ग्राई । व्यासदेवजी को इसका कारण समभने में कुछ भी विलम्ब नहीं लगा। वे समभ गए कि इस कमरे में ग्रवन्य ही कोई कुत्सित विचारो का व्यक्ति रहता होगा जो निन्दनीय कार्य करता होगा। उसके कुसस्कारो तथा कुविचारो ने उस कमरे का वानावरण दूपित हो रहा था ग्रीर उन विचारो का प्रभाव इन पर पड रहा था। प्रात काल इन्होने सारी स्थिति से सेठ मूलराज को ग्रवगत किया और टेलीकोन से मालिक मकान से यह पूछने का ग्रादेश दिया कि पहिले इस कमरे मे कौन किराये पर रहता था । पूछने पर विदित हुम्रा कि इसमे एक वैञ्या सात वर्ष तक रही थी। एक नेठ इसके पास म्राया जाया करते थे। यह कमरा उसके लिए छोटा था ग्रत उसने यह खाली कर दिया।

मनुप्य विचारों का पुतला है। उसके विचारों के अनुरूप उनका व्यक्तित्व वनता है। उसके विचारों पर दूसरे के विचारों का तथा वातावरण, परिस्थितियों और सगित का प्रभाव पडता है। मनुष्य के भने और बुरे विचार ग्राकांग में मडराते रहते हैं और लोगों को प्रभावित करते रहते हैं। सिंहचारों का ग्रच्छा प्रभाव तथा ग्रसिंहचारों का बुरा प्रभाव पडे विना नहीं रहता। इसीलिए जप, तप, साधना तथा योगाभ्यासादि के लिए ग्राध्यात्सिक रुचि के लोग प्राय उत्तराखण्ड में जाकर निवास करते हैं क्यों कि हिमालय प्रदेग हजारों वर्षों से ऋपियों और मुनियों की तपोभूमि रहा है। इनकी विचारधाराओं से यहा के सारे वायुमण्डल तथा भूमि का एक-एक कण ग्रोत-प्रोन है। उनकी ग्राध्यात्मिक विचारधाराओं का प्रभाव उन पर पडता है और उनकी साधना में सहायक होता है। सदैव ग्रुद्ध, स्वच्छ और पावन वातावरण में रहने का प्रयत्न करना चाहिए।

# श्री ब्रह्मचारीजी के प्रभाव से पद्मा को वैराग्य

लताकुज में समावि—श्री ब्रह्मचारीजी रिववार को कभी-कभी कम्पनी वाग में गगा के किनारे सैर करने जाया करते थे। वहीं स्नानादि करके एक लताकुज में समाधि में वैठा करते थे। कई घण्टे तक वहीं रहा करते थे। पद्मा ने वाग में समाधिस्थ ग्रवस्था में दर्जन किये थे।

रानी साहिवा की सेविका का निवेदन—एक दिन श्री ब्रह्मचारीजी जगन्नाय सडक पर से अपने निवास स्थान पर जा रहे थे। एक देवी वहा आई, आगे वढी और प्रणाम करके निवेदन किया कि हमारी रानी साहिवा श्रापके दर्शन करना चाहती है। व्यासदेवजी ने उसे रानी साहिवा का परिचय देने के लिए कहा क्योंकि वे उसे जानते न थे। यदि वे दर्शनार्थ श्राना चाहती है तो मुक्ते मेरे निवास स्थान पर मिलें, में पिद्गरापट्टी मे रहता हू। जब उस देवी से विदित हुश्रा कि वे कही बाहिर नहीं जानी है तब उन्होंने कहा, "में भी किसी श्रजात देवी को दर्शन देने उसके मकान पर नहीं जाना।" वह निराध होकर चली गई। २-४ दिन के पब्चात् वही देवी ब्रह्म-चारीजी को पुन उसी मार्ग पर मिली श्रीर प्रणाम करके निवेदन किया कि रानीजी ने हाथ जोउकर श्रापणे प्रार्थना की है कि श्राप उनके निवास स्थान पर भोजन करने की कृपा करें।

च्यानदेवजी—नहीं, में किसी भी अपरिचित के मकान पर वास्तव में कभी भोजन करने के लिए नहीं जाता। यत क्षमा करें।

देवी ने फहा—सन्तो स्रीर महात्मास्रो के लिए भला परिचय करने-कराने की क्या स्रावस्यकता है ? जो उन्हे श्रद्धा स्रीर भिवत से स्रथवा प्रेम से भोजन करवाए उसीका भोजन उन्हें दया की भावना से स्वीकार करना चाहिए।

ट्यानदेवजी--रानीजी का श्रापने क्या सम्बन्ध है ?

देवी ने एहा—में उनकी नेविका हू।

य्यासदेवजी—ये उतना आग्रह कर रही है ? क्या वे मुक्ते पहिले से जानती भी हैं ? नेतिका—महाराज ! उन्होंने आपके दर्शन किए हैं।

ध्यासदेवजी-यदि पहिले दर्शन फिए है तो श्रव भी मुभे मिलने श्रा सकती है, जहा मैं निवास करता हू।

ने किता — ग्राजकन ये कुछ ग्रस्यस्थ सी है, ग्रत उनका ग्राना नहीं हो सकता। ग्रापही वटा प्यारने की कृपा करे।

ह्यामदेयजी- प्रच्छा । चलो, चलते है। जो होगा देया जाएगा।

रानी की अवस्था के कारण दर्शनार्थ आने में विवशता पर व्यासदेवजी को दया आगई और उस गेजिक के साथ रानी के निवास स्थान के लिए चल दिए। मेविका उन्हें एक गर्नी में ने गई और एक मकान की दूसरी मजिल पर लेकर चढ गई तथा एक छोटे गे कमरे में विटा दिया। यह कमरा वटा मुमजित था। उसकी सजावट एक मन्दिर के समान थी। ओकुण भगवान की एक मूर्ति यहा पर रखी हुई थी। उसके समक्ष पूजा की सब सामग्री रखी हुई थी। मेविका ने उस कमरे में प्रवेश करते ही विजली जना दी और एक आसन पर उन्हें विटा दिया। वह रानी साहिवा को बुलाने चली गई और मीहियों का दरवाजा वाहिर से वन्द कर गई। ये १५-२० मिनट तक तो प्रतीका करने रहें, जब बहा कोई भी नहीं आई तो उन्होंने 'देवी' कहकर जोर से पुकारा। उनने में ही पास वाले कमरे से आवाज आई, "महाराज, ठहरिए, में अभी प्रारा । उनने में ही पास वाले कमरे से आवाज आई, "महाराज, ठहरिए, में अभी प्रारा है।" तसभग आध घण्टे के बाद वे आई। प्रणाम करके ईपत् हास्य किया और आसन विद्यार कमरे के बाहिर दरवाजे के पास बैठ गई। उन्होंने बहुत अधिक और आसन विद्यार कमरे के बाहिर दरवाजे के पास बैठ गई। उन्होंने वहुत अधिक श्रीर आसन विद्यार कमरे के बाहिर दरवाजे के पास बैठ गई। उन्होंने वहुत अधिक

कुछ घवराए भी । इन्हें यह सदाचारिणी महिला नहीं दिखाई दी । सदाचार के कोई चिह्न उसमें नहीं थे। इसकी ग्रायु लगभग तीस साल की होगी। उससे पूछने पर व्यासदेवजी ने उसके जीवन-वृत्त से परिचय प्राप्त किया। उसका जीवन उत्थान ग्रीर पतन, चढाव ग्रीर उतार, ग्रन्तर्द्वन्द्व ग्रीर सघर्ष, ग्रात्मक्षोभ ग्रीर ग्रात्मग्लानि की एक लम्बी कहानी थी। यह एक राजकुमारी थी ग्रीर राजा के साथ ही इसका पाणिग्रहण हुग्रा था। राजसी ठाठ-वाठ मे इसका लालन-पालन हुग्रा था ग्रीर स्वमुर गृह मे भी बड़े ऐस्वर्य के साथ विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत किया था। यह सीन्दर्य तथा लावण्य की साक्षात् प्रतिमा थी। किन्तु दुर्दैव को इसका सुख, इसका ऐश्वर्य ग्रीर इसकी विलासिता फूटी ग्राख भी न भाई ग्रीर उसके ऊपर एक महान् वज्रपात कर दिया। जब वह केवल २० साल की ही थी तभी उस पर वैवव्य का महान् सकट आ पडा। दैव उसके हास्य को सहन नहीं कर सका। उसने इसे रुलाया और ऐसा रुलाया कि ग्राजीवन उसके ग्रासू सूख नहीं सके। वैवव्य हिन्दू समाज पर एक वडा कलक है। हमारे देश में ग्राज भी विधवाग्रों की कैसी दुर्दशा है, यह किसी से छिपी नही। विधवा का समाज मे कोई स्थान नहीं। उसके ग्रपमान की कोई मीमा नही। विधवा रानी हो या रक, कुलीन हो या अकुलीन, शिक्षित हो या अशिक्षित, उसके लिए परिवार में तथा समाज में कही भी स्थान नही है। यही स्थित इस रानी की थी। राजपरिवार मे से विधवा होने ही इसका सम्मान उठ गया। जीवन की काले कपड़े, जो राजघरानो में वैयव्य का चिह्न माना जाता है, पहिनकर एक कमरे मे बैठे-वैठे रुदन करना ही एकमात्र इसका काम था। युवती थी, राजप्रासाद मे पली होने के कारण पर्दे मे रहती थी। कभी किसी प्रकार का सत्सग करने का अवसर लाभ न हुन्ना था। धार्मिक ग्रन्थों के ग्रध्ययन से भी विचित थी। किसी भी प्रकार का ज्ञान और विवेक उसमे न था। ऐसी विधवाग्रो के पतन मे कुछ विलम्ब नहीं नगा करता। जब घर मे उन्हे प्रेम, ग्राश्वासन, सहारा तथा सान्त्वना नही मिलती तो जहां भी उन्हें ये चीजे प्राप्य होती है उधर ही भुक जाया करती हैं। पद्मा भी विथवा थी। दु खी थी। श्रयमानित थी। उसे कहीं से भी राजपरिवार से प्रेम तथा सहानुभूति की ग्रांशा नहीं रही थी। ग्रत जहां उसे मनुष्यता का व्यवहार मिला, जहां उसे मानवता दिखाई दी, उधर ही वह लुढक गई । एक मारवाडी सेठ राजमहलो मे अपने व्यापार के सम्बन्ध मे आया जाया करता था। अन्त पुर मे भी उसकी गति थी। यह सेठ पद्मा को अपहरण कराके कलकता ले ग्राया। विघना का विघान ऐसा ही था। इसने उसके लिए एक मकान किराये पर ने दिया ग्रीर वडे सुख, ग्राराम से उसे वहा रखा। विलासिता के सभी साधन उसके लिए जुटा दिए। किसी वात की कमी नही रखी। प्रतिमास हजार डेढ हजार रुपया वह पद्मा पर व्यय करता था। पर पद्मा इस पतन से सुखी न थी। वह पश्चात्ताप की भट्टी मे ग्रहर्निश जला करती थी। ग्रपने ग्रापको कोसती थी। ग्रात्मग्लानि उसे खाए जा रही थी। इस निन्दनीय कर्म से वह दु खी थी। यह जघन्य पाप सदा उसके सामने मुह खोले खड़ा रहता था। भगवान् प्तितपावन् है। वे दीन-वन्धु और दयालू है। पतितो का उद्घार करने वाले है । उन्होने पद्मा की पुकार को सुना । उस पर द्रवित हुए और इस पतिता का उद्घार करने के लिए ग्रपनी विभूति के रूप मे ग्रखण्डब्रह्मचारी व्यासदेवजी को उसके पास

भेजा। इससे पूर्व ही ये सैकडो पतितो तथा पथभ्रप्टो का परित्राण कर चुके थे। पद्मा ने महाराजजी से ग्रपनी भ्रान्तरिक स्थिति का वर्णन किया भ्रीर वहा से कही ग्रन्यत्र चले जाने की उच्छा प्रकट की। इसने ब्रह्मचारीजी को कम्पनी वाग मे एक लताक्ज मे पीताम्बर धारण करके समाधिस्थावस्था मे बैठे देखा था। उनके तप पूत ग्रौर तेजस्वी, ग्रीर ब्रह्मवर्चस्वपूर्ण मुखारिवन्द को देखकर वह वडी प्रभावित हुई। कुछ काल तक लताकुज के पास खडी रही। वातचीन करना चाहती थी किन्तु ये समाधिस्य थे त्रत वह निराश होकर लौट गई। वह सेठ के साथ उस ग्रोर भ्रमण के लिए गई थी। निवास स्थान पर पहुचकर उसने ग्रपनी सेविका को इनको ग्रामत्रित करने के लिए भेजा था। महाराजजी को किसी भी महिला का, चाहे वह परिचित हो ग्रथवा ग्रपरिचित, सपकं पसन्द नहीं था। यू तो किसी भी प्रकार का जन-सपकं रुचिकर न था पर महिलाग्रों से तो वे कभी भी मिलते-जुलते न थे। यहां तक कि गोहाटी मे दो सन्यासिनी देवियो के पास भी उन्हे ठहरने मे अत्यधिक सकीच हुआ था। पद्मा के ग्रत्यन्त ग्राग्रह, ग्रनुनय, विनय तथा ग्रनेक प्रार्थनाग्रो के पश्चात् ही उन्होने निवास स्थान पर जाना स्वीकार किया था। इन्हे समाधिस्थावस्था मे देखेकर पद्मा ने सेठ से कहा था, "देखो, यह तपस्वी युवक साधु कैसे एकान्त मे समाधि लगाकर ग्रपने प्रभु का स्मरण कर रहे हैं। इनको तो भक्ति के लिए एकान्त की ग्रावश्यकता है किन्तु हम कामी कुत्तो को भी एकान्त चाहिए, भगवान् के भजन के लिए नही किन्तु ग्रपनी काम-वासना की पूर्ति के लिए। धिक्कार है हमारे जीवन को, त्रीर धन्य है ये तपस्वी जो अपने तेज, तप, व्रत, साधना, ध्यान और योग से विश्व का कल्याण कर रहे हैं। हम पृथ्वी पर भार रूप है और इन्होंने पापो के भार से दवी पृथ्वी के भार को हल्का करने के लिए और हम जैसे पापियों के परित्राण के लिए अवतार लिया है।"

पद्मा मे परिवर्तन — पद्मा ने जिस दिन से महाराजजी के दर्जन किए थे उसी दिन मे उसकी अन्तरात्मा मे एक महान् परिवर्तन का प्रारभ हुआ था। तभी से उसको अपने जीवन से घृणा होगई थी। उसका एक-एक पाप और जघन्य कम उसके सामने भीपण रूप धारण करके भयानक नृत्य कर रहा था। उसको अपनी सुध-बुध नही रही थी। वह प्रकम्पित हो रही थी और पश्चात्ताप से जल रही थी। वह ब्रह्मचारीजी को अपने निवास स्थान पर पाकर अपने को घन्य मान रही थी। वह ब्रह्मचारीजी को अपने निवास स्थान पर पाकर अपने को घन्य मान रही थी। वह ब्रह्मचारीजी को अपने निवास स्थान पर पाकर अपने को घन्य मान रही थी और इसे अपने किसी प्राक्तन पुण्यकमं का परिणाम समभती थी। लगभग एक घण्टा तक व्यासजी वहा उहरे। सन्याकाल होगया था। यह अभ्यास का समय था अत जाने की इच्छा प्रकट की, किन्तु पद्मा नही चाहती थी कि वे जाए। उसने कहा, आप हाथ मुह धो लीजिए और यही पर सन्या कर लीजिए। पर वे उठे और चलने को तैयार होगए, किन्तु सीढियो का दरवाजा वन्द देखकर वापस बैठ गए। करते भी क्या, अन्य कोई चारा ही नही था। रानी ने हाथ जोडकर उनके चरण स्पर्श करते हुए अश्रु-जल भरकर वहा से न जाने के लिए निवेदन किया। महाराजजी को अव एक क्षण के लिए भी वहा उहरना अच्छा नही लगा। वहा आने के विषय मे उनको वडा पञ्चात्ताप होने लगा। रानी का ऐसा व्यवहार इनको विल्कुल पसन्द न था। वे फिर उठ खडे हुए। रानी ने कहा, दरवाजा वन्द है। सेविका के पास इसकी चावी है। वह वाहर गई है।

ग्रभी ग्राती ही होगी। जब तक वह ग्राकर दरवाजा खोलनी है तब नक ग्राप मध्या कर लें। महाराजजी पद्मा के ग्राग्रह ग्रीर दरवाजा वन्द करवाने को वडी सन्देहात्मक दृष्टि से देख रहे थे, किन्तु कुछ उपाय वहा से जाने का उन्हे नही सूफ रहा था, ग्रत वही पर ध्यान करने बैठ गए।

पितता पद्मा के लिए भगवान् से प्रार्थना—महाराजजी जव ध्यान मे बैठे तो सर्वप्रथम भगवान् से उसके उद्धार ग्रीर उसके मुवार तथा परित्राण के लिए प्रार्थना की—"हे पिततपावन परमेश्वर । ग्राप इस पद्मा को सद्बुद्धि प्रदान करे जिससे वह कुमार्ग का परित्याग करके सुमार्ग पर चले । दुराचार को छोडे ग्रीर सदाचारिणी वने । पिततावस्था से निकलकर सती-साध्वी वने । प्रेय मार्ग का परित्याग करे ग्रीर श्रेय मार्ग पर चले । हे मेरे पूज्यदेव । ग्रापने पिंगला जैसी वैध्याग्रो का उद्धार किया है । क्या ग्राप पद्मा का उद्धार न करेंगे ? हे ग्रन्तर्यामिन् । ग्रापने वडे-वडे पापियो का परित्राण किया है, ग्राप इस पितता का भी परित्राण करो । हे वन्दनीय भगवान् । ग्राप पद्मा पर दया की दृष्टि करे । इसे पाप कम से हटाए । ग्रपनी भिक्त का दान इसे प्रदान करें । हे सर्वज्ञ । ग्रापने वडी-वडी पापात्माग्रो को तारा है । ग्राप इस पद्मा को भी भव-पाण से मुक्त करो । हे सर्वदु खहर्ता भगवान् । ग्राप इसके मिलन मन को गुद्ध करो । इसे ग्रपनी भिक्त दो जिसके द्वारा यह पाप-कम से मुक्त हो जाए । हे सर्वायार सर्वे- ववर । में ग्रापसे हाथ जोडकर विनम्न प्रार्थना करता हू कि ग्राप पद्मा को विलासिना के नर्क कुण्ड से निकालकर ग्रपनी शरण प्रदान करे ।"

पद्मा के घर पर १५ घण्टे तक निर्विकल्प समाधि—पद्मा के परित्राण के लिए उस करणासिंद्य दीनवन्यु ग्रीर दयालु भगवान् मे प्रार्थना करते-करने महाराजजी समाधिस्य होगए। १५ घण्टे की समाधि का सकल्प कर लिया था क्योंकि रात्रि भर उस पितता पद्मा के मकान पर रह कर जलकमलवत् निर्मल रहने का यही मर्वश्रेष्ठ उपाय था। पद्मा की पाप-वृत्ति मे परिवर्तन करने का भी उद्देश्य था। उस महिला के मकान को महाराजजी ग्रपने लिए एक कारागार समभ रहे थे। शीनकाल का समय था, ग्रवेरा होगया था ग्रीर ग्राठ वज चुकेथे। इन्हें कुछ समय तो मन के नकल्प-विकल्पो के ग्रभाव करने मे लगा। इसके कुछ मिनट वाद ही सारा शरीर ग्रीर मिन्तष्क शून्य होगया ग्रीर जडता सी छा गई। सारा शरीर पर्वत के समान भारी होगया ग्रीर इन्हें ग्रपनी कुछ भी सुध-बुध न रही।

समाधि के प्रभाव से पद्मा के जीवन मे परिवर्तन—महाराजजी ने एक पद्मा ही क्या सैकडो पिततो का परित्राण किया था, ग्रज्ञान के गहन गर्त मे गिरे हुन्नो को ग्रपने ग्रध्यात्म वल से पकडकर उठाया था, पथभ्रप्टो की वाह पकडकर उन्हे पथ पर चलाया था, सान्द्रान्यकार मे डूवे हुए प्राणियो को ज्ञान का प्रकाश दिखाया था, कर्तव्य-च्युत लोगो को कर्त्तव्य-पथ पर ग्रारूढ किया था। महाराजजी समाविस्थ होगए। पद्मा ग्रपने कमरे मे चली गई। वहा जाकर इनके समाधि से उठने की उत्कट प्रतीक्षा करती रही। ये कृष्ण मिदर मे समाधि लगाकर वैठे हुए थे। वह वार-वार इस मिदर मे ग्राकर उन्हे देखती रही। दो घटे व्यतीत होगए किन्तु उनकी समाधि भग न हुई। पद्मा को उन्हे समाधि से उठाने का साहस नही होता था। वडी भयभीत तथा व्याकुल ग्रीर परेशान थी। रात्रि के दस वज गए, पर वे ग्रभी तक समाधिस्थ थे। वह ग्रव इस वात पर वडा

पञ्चात्ताप कर रही थी कि उसने एक महापुरुष को कष्ट दिया है, एक महात्मा को सकट में डाला है। इस महानात्मा को मैंने ग्रकारण ही दुख दिया। इनके मुखारविन्द पर कैसा तेज ग्रीर ग्रोज है । कैसी ग्रलीकिक शान्ति इनके चेहरे से टपक रही है । ग्रपने प्यारे भगवान् मे कैसे विलीन से हो रहे है। महाराजजी को ऐसी लम्बी समाधि मे देखकर उसे ग्रपने कुकर्मों पर ग्रीर ग्रपने पतन पर वडा पश्चात्ताप हुग्रा । उसने इस महान् सन्त को ग्रपने जाल मे फसाने का प्रयत्न किया था। इसके लिए उसे वडी ग्रात्मग्लानि हो रही थी ग्रीर वार-वार ग्रपने को धिक्कार रही थी। सेविका को भी ग्रपनी स्वामिनी को यह वात पसन्द नही ग्राई थी। वह भी उसे भला बुरा कह रही थी। स्रापने इस महात्मा को यहा रोककर इनके साथ वडा ग्रन्याय किया है। वे जाना चाहते थे, उनको जाने देना चाहिए था। इनके दर्जन कर लेने के पश्चात् इन्हें रोकना वडी भारी भूल थी। फिर कभी जब दर्शनाभिलापा होती तो ग्राप इन्हें बुला सकती थी ग्रीर स्वयं भी इनके निवास स्थान पर जा सकती थी। सेविका की इन बातो को सुनकर उसके पश्चात्ताप की ग्रग्नि ने प्रचण्ड रूप घारण कर लिया ग्रीर प्रव वह फूट-फूटकर रोने लगी ग्रौर सारी रात सिसकिया भरते हुए व्यतीत की । कभी मदिर में जाती, कभी ग्रपने कमरे में जाती। इसी प्रकार ग्रातुरता तथा व्याकुलता में ताना-वाना बुनते प्रभात होगया। इस पश्चात्ताप की भट्टी में तप कर उसकी बुद्धि निर्मल होगई ग्रीर उसने दृढ सकल्प किया कि ग्रव वह कभी भी दुराचार का जीवन व्यतीत नहीं करेगी। प्रतिपल उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो महाराजजी से प्रध्यात्म की धाराए निकल-निकल कर उसके हृदय में प्रविष्ट होकर उसका उद्वोधन कर रही हो, जगा रही हो, कुनथ से हटा रही हो, पाप के कूए मे से निकाल रही हो, पतिवृत धर्म का सदेश दे रही हो और उसे अपने सर्व पापों को प्रायश्चित्त की अग्नि में दग्ध करके सन्मार्ग पर चलने का ग्रादेश दे रही हो। उसके मन मे महान् ग्रन्तईन्द्र तथा सघर्प हो रहा था। वह यह ग्रनुभव कर रही थी जैसे उसे कोई वलपूर्वक पाप से खीच कर दूर लेजा रहा हो। वह घवरा रही थी। भयभीत थी। किकर्त्तव्यविमूढ थी। उसके पाप भीपण रूप धारण करके उसके सामने ग्रा रहे थे। उसे कल नहीं पढ रही थी। चैन उससे कोसो दूर भाग गई थी। ग्रात्मग्लानि उसके समक्ष मुह खोले खडी थी। ग्राव उसे सेठ से ग्रत्यन्त घृणा होगई। इसी ने उसे राजमहल से निकलवाया था ग्रीर कलकता ले ग्राया था। यह उसे वार-वार कोस रही थी। पाप से कमाए धन ग्रीर विलासिता की सामग्री से तथा सेठ से ग्रव उसका मन फिर गया। वह एक-एक वस्तु को उठा-उठाकर फेंकने लगी। प्रात ६ वजे के लगभग इसने सेठ वृजमोहन को युला भेजा। ये वडे धनाढ्य व्यक्ति थे ग्रीर इनकी दुकान वहा पर धर्मतल्ला मे थी। ये राजस्थान के रहने वाले थे। इनके कोई सन्तान न थी। ये १० वजे पद्मा के निवास य राजस्थान क रहन वाल थ। इनक काइ सन्तान न था। य १० वज पद्मा के निवास स्थान पर पहुंचे। इसने सारा वृत्त सेठजी को सुनाया। वे सुनकर चिन्ता में डूव गए। इन्होंने उसे वहुत समभाया बुभाया, ग्रनेक प्रलोभन दिए, पर उसने एक न सुनी ग्रीर जो कुछ भी घन-सम्पत्ति, वस्त्राभूपण उसके पास थे वे सव उनके सामने फेक दिए। पद्मा की सेविका वार-वार महाराजजी को मदिर में देखने जाती थी। लगभग ११ वजे इनका समाधि से व्युत्थान हुग्रा। सेविका ने तुरन्त जाकर इसकी सूचना पद्मा को दी। इसके नेत्रों से पश्चात्ताप ग्रीर ग्रात्मग्लानि के ग्रासू प्रवाहित हो रहे थे। वह सेठजी को लेकर मदिर में गई ग्रीर करुण कन्दन करती हुई महाराजश्री के चरणो

पर गिर पडी । सेठजी ने भी सम्मानपूर्वक इनके चरण स्पर्श किए । पद्मा को यह दृढ निश्चय होगया था कि योगीराजजी की कृपा से ही उसका उद्घार होगा, उसके सव पापो का प्रक्षालन हो जाएगा और उसको सन्मार्ग सूभेगा। जवसे ये मदिर मे समाधिस्थ हुए थे तभी से महाराजश्री की ग्रध्यात्म-धाराग्रो के उसके गरीर मे प्रविष्ट हो जाने के कारण से उसे ऐसा ऋनुभव होने लगा था मानो उसके पापो का ग्रन्त होगया है। उसने ब्रह्मचारीजी को नतमस्तक हो ग्रीर हाथ जोडकर विश्वास दिलाया कि ग्रव वह कभी पाप-कर्म नहीं करेगी और दुराचार से बचेगी। पतिवृत-धर्म का पालन करेगी, सदाचारपूर्वक रहेगी, श्रौर ग्रपना शेप जीवन भगवद्भिक्त तथा भगवदाराधना मे व्यतीत करेगी । सेठजी वडे दु खी थे, चिन्तित थे ग्रीर व्याकुल थे । उन्हे ग्रपना सारा खेल विगडता हुम्रा दीख रहाँ था। वे समझते थे कि महाराजजी ने पद्मा पर कोई जादू कर लिया है जिससे इसकी मनोवृत्ति मे महान् अन्तर ग्रा गया है, उसके मन की दशा और से श्रीर ही होगई है। इन्होने विश्वास दिलाया कि ऐसी कोई वात नहीं हुई है। पद्मा ने ही उन्हें घोखा देकर वुलाया था। इनका उससे कोई परिचय नहीं था। दर्शन के निमित्त उसने बुलाया। वाहर से सारे दरवाजे वन्द कर दिए। यहां से भागने का प्रयत्न किया किन्तु जाते कैसे, कोई दरवाजा खुला नहीं पाया। मुभे तो इसने एक प्रकार से कैंद कर लिया था। पारव्रह्म परमात्मा ही मेरे उस समय रक्षक थे। मैं ग्राठ बजे से ही समाधि में बैठ गया था ग्रीर ग्रभी ११ वजे के लगभग समाधि से उठा हू। मैं १६ घण्टे से पद्मा के वन्दीगृह मे रहा, ग्रव मैं शीघ्र ही इससे मुक्त होना चाहता हू। पद्मा ने तुरन्त हाथ जोडकर निवेदन किया, "महाराजजी, मै भी आपके साथ चलूंगी और अब आपके समान ही साधु वनकर भगवान् की भिक्त करूगी। मैंने कई वर्षों से वडा निन्दनीय जीवन व्यतीत किया है। मुभे ग्रव ग्रपने इस जघन्य जीवन से अत्यन्त घृणा होगई है। मुभे अव गगाजी मे डूवकर प्राण त्याग देना स्वीकार है किन्तु दुराचार का जीवन नहीं। सेठजी से सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया है। अब मैं इनके पास न रहूगी। इन्होने ही मेरा जीवन पतित किया है। अब मैं जहा भी आप जाएगे वही आपके साथ जाऊगी ग्रीर ग्रापकी शिष्या वनकर आपसे ग्रात्म-ज्ञान प्राप्त करूगी और ग्रापकी सेवा करके पुण्य लाभ करूगी।"

निदया शान्ति मे पद्मा का प्रवन्ध—श्री महाराजजी ने पद्मा को बहुत सम-भाया कि तुम्हारा वैराग्य क्षणिक है। तुम भली प्रकार से विचार कर लो। साधु बनना बड़ा कठिन है। यह मार्ग वड़ा दुर्गम है। ग्रहिन्ग सजग ग्रोर सतर्क रहने की ग्रावश्यकता है। इस मार्ग पर चलना तलवार की धार पर चलने के समान है। मैं ब्रह्मचारी हू, किसी भी देवी को, चाहे वह पुत्री, शिष्या, बहन या माता बनकर ही क्यों न रहे, मैं सदा ग्रपने साथ नहीं रख सकता।

पद्मा--- त्राप मुभ्ते स्त्री न समभ्ते। स्राप तो मुभ्ते अपनी पुत्री व शिष्या समभ्ते।

महाराजजी—१६ घण्टे पूर्व ग्रापकी क्या भावना थी ? इतनी जल्दी ग्रापकी भावना में कैसे परिवर्तन हो सकता है ? यदि परिवर्तन हो भी जाए तो इसका स्थायी ग्रौर दृढ रहना ग्रत्यन्त कठिन है।

पद्मा--महाराजजी । पिंगला वैश्या मे भी तो एक रात्रि मे ही परिवर्तन होगया था।

महाराजजी--पर मेरे साथ श्रापका रहना नितान्त श्रसम्भव है। पदा-तव में श्रपने प्राण गगा के श्रपण कर दूगी।

महाराजजी—ग्राप गगा में न डूबें। मेरी एक वान मान ले। इसमें ग्रापका भी कल्याण है श्रीर में भी वन्धनमुक्त हो जाऊगा। श्राप कुछ दिन निदया शान्ति में जाकर तपस्या करें, जिसमें ग्रापके ग्रन्त करण की गुद्धि हो जाए श्रीर वैराग्य में दृढता श्रा जाए। तब हम ग्रापको ज्ञान श्रीर वैराग्य का उपदेश देकर मोक्ष का मार्ग बता देंगे। श्रापने कई वर्षों तक भोग श्रीर विलान का जीवन व्यतीत किया है। इसके संस्कार दूर होने में समय लगेगा। श्रभी ग्रापके कथन पर हमें विश्वास भी नहीं होता है। श्राप भली प्रकार से विचार कर लो। श्री द्याता मत करो, क्यों कि "सहसा विद्धीत न कियाम्।" शीद्यकारिता में मनुष्य श्रनेक विपत्तियों से घिर जाता है श्रीर दुर्य उठाता है। प्रत्येक कार्य विचारपूर्वक करना चाहिए, श्रत श्राप श्रभी नवद्वीप में रहकर साधना करके देख लो।

मेठजी ने भी पद्मा के साथ नवद्वीप जाने की इच्छा प्रकट की किन्तु उसने इस बात को स्वीकार नही किया क्यांकि वह उनसे सम्बन्ध विच्छेद कर चुकी थी। ग्रय यह उनमें पृणा करनी थी क्योंकि ये ही उसके पतन के प्रमुख कारण थे। महाराजेजी ने उम समजाया कि जब तक नवेद्वीप में उसका कोई उचित प्रबन्ध न हो जाए तय तक वहा मठजी का जाना आवश्यक है। जय वहा पर निवासादि की व्यवस्था हो जाएगी नव ये लीट जाएगे। पद्मा ने सेठजी से किसी भी प्रकार की गहायता नेने में उन्हार कर दिया। इस बात की उसने प्रतिज्ञा करली थी कि यह नेठजी में एक पार्र भी अब न लेगी। महाराज ने उसे समकाया कि पहले तुम सेठजी में एतया पाप की भावना से लेती थी श्रेव धर्म-दान की भावना से लेना, किन्तु वह किसी प्रकार भी उस बात पर राजी न हुई। महाराजजी के पास इतना रुपया न था कि वे उसके व्यय का भार जीवनपर्यन्त निभा सकते। सेठजी से वह लेना नही नाहनी यी ग्रीर महाराजश्री के पाम था नहीं। वडी समस्या उपस्थित होगई। पद्मा भीन्य माग कर तथा मजदूरी करके निर्वाह करने के लिए उद्यत थी किन्तु सेठ से महायना नेना नहीं चाहती थी। यहा तक कि नदिया ज्ञान्ति जाने के मार्ग व्यय के लिए भी महाराजजी में ही प्रार्थना कर रही थी। महाराजजी, सेठजी तथा पद्मा तीनी नदिया शान्ति पहुच गए ग्रीर भजनाश्रम के पास एक धर्मशाला मे ठहर गए। महाराजजी ने मूलराजजी को पद्मा की सब व्यवस्था करने के लिए बुला लिया। यह गगा के किनारे एक फूत की कुटिया वनवा कर रहना चाहती थी। किन्तु उस
युवती के लिए यह उचित नहीं समभा गया। सभी किसी श्रीवक मुरक्षित स्थान पर उनके रहने के प्रवन्ध की चिन्ता मे थे। मूलराज ने पद्मा को अपनी गुरुवहिन समभ निया था ग्रीर उमलिए उसकी मारी व्यवस्था का उत्तरदायित्व ग्रपने ऊपर ते लिया था। उन्होंने उसके लिए सब ग्रावय्यक सामान खरीदा। ग्रव पद्मा मे महान् परि-वर्तन होगया था। श्रत्यन्त साधारण मोटे वस्य पहनना प्रारम्भ कर दिया। गेगा के किनारे एक वगाली महात्मा के ग्राश्रम में उसके रहने की व्यवस्था कर दी गई। श्रव पता रानी माहिया नही थी, श्रव वह एक तपस्विनी श्रीर भक्ता वन गई। सेठ वृजमोहन इस परिवर्तन से वडे दु खी थे। उन्होंने इसे वडे सुख तथा ऐव्वर्य से रखा था। कभी ये रानी थी। सेविकाए इनकी सेवा करती थी। किन्तु ग्राज यह एक भिखारिन वन गई थी। उनका दु ख स्वाभाविक ही था।

सेठ वृजमोहन को उपदेश--ससार मे मुख ग्रीर दुख मनुप्य के मन की भावना पर निर्भर है। एक व्यक्ति जिसे सुख समभता है दूसरा उसे दुख समभता है। एक पदार्थ एक व्यक्ति के लिए सुख का हेतु होता है, वही दूसरे के लिए दुख का हेतु वन जाता है। पद्मा ने क्या त्याग किया है। केवल १४०० रु० मासिक छोडकर ही तो विरक्त हुई है। किसी ने वलपूर्वक उसे विरक्त नहीं किया। स्वय ही उसके हृदय मे वैराग्य की उत्पत्ति हुई है ग्रीर ग्रपने वर्तमान जीवन से घृणा । उस ग्रवस्था की अपेक्षा इसमें कुछ अधिक ही सुख अनुभव करती होगी, फिर आप क्यो दु.खी होते है श्रापने पद्मा से विवाह तो किया ही नहीं था। आप और वह कुछ अच्छा कर्म तो करते नहीं थे। उसने दुराचार के जीवन का ही तो त्याग किया है। ग्रापको तो प्रसन्तता होनी चाहिए कि पद्मा की भगवान् के चरणों में ग्रनन्य भिक्त उत्पन्न हो गई है। ग्राप दोनो का पारस्परिक व्यवहार वडा निन्दनीय था जिससे ग्रापकी समाज मे वडी निन्दा थी। ग्राप भी पद्मा के समान ग्रपने कुकर्मों पर पश्चात्ताप करें ग्रीर उसी के समान विरक्त होकर शेप जीवन यापन करें। ग्राप घनवान् है। सन्तान ग्रापके कोई है नहीं । दान-पुण्य की ग्रोर ग्रापकी प्रवृत्ति नहीं । फिर व्यापार द्वारा ग्रीर ग्रविक रुपया कमाकर क्या करोगे ? ग्राज तक जो पाप किए है, यहा नदिया मे वैठकर उनका पञ्चात्ताप करो। अव वार्धक्य ने आपको घेर लिया है। अपने पाप कर्मो पर पश्चात्ताप करो ग्रौर सदाचारी वनो। इस पुण्यवाम मे रहकर भगवद्भजन करो। सेठजी वडे लज्जित हुए, ग्रात्मग्लानि हुई ग्रीर पञ्चात्ताप भी किया, किन्तु महाराजजी से हाथ जोडकर निवेदन किया कि वह पद्मा के समान तुरन्त घर छोडकर नहीं ग्रा सकते। वडा भारी कारोवार है। उसको नौकरों के हाथ में छोडकर यहा ग्रा गया हू। उसकी सारी व्यवस्था किए विना यहा ठहरना उचित नही है। फिर मुभे यह भी अभी निञ्चय नही है कि पद्मा की तरह मेरा भगवद्भजन मे मन भी लगता है या नही । ग्रभी मैं २०-२५ दिन कलकत्ता रहकर फिर ग्राऊगा।

पद्मा का नवद्दीप मे निवास—लाला मूलराज ने पद्मा के लिए एक पर्णकृटी गगा के किनारे वगाली भजनाश्रम के पास वनवा दी थी। मूलराजजी पद्मा को ग्रपने साथ ले जाकर वहा छोड ग्राए थे। वहा पर ग्रीर भी दो-तीन देविया रहती थी जो भजन ग्रीर कीर्तन किया करती थी। इनमें से एक देवी ने पद्मा का भोजन वनाना स्वीकार कर लिया था। ग्रव यह ग्रपनी कृटिया में वैठकर ग्रहानिंग भगवान् का भजन करने लगी। मूलराजजी ने ४०० रुपये वगाली भजनाश्रम के वडे ग्रधिकारी के पास पद्मा के व्यय के लिए जमा करवा दिए थे ग्रीर उनसे कह दिया था कि उसे ग्रावश्यकता ग्रनुसार वस्तुए वाजार से मगवा दिया करे। पद्मा का सारा उत्तरदायित्व इन्होंने ग्रपने ऊपर ले लिया था।

पद्मा के लिए श्री महाराजजी का उपदेश—पद्मे । यह मानव जीवन वडा श्रमूल्य है। यह वडे पुण्य कर्म से लाभ होता है। तुमने श्रव तक इसे भोग श्रीर

विनाम गा साधन बनाया हुम्रा था। भोग बुद्धि तो पशु-पक्षियों में भी होती है। कहा

ग्राहार-निद्रा-भय-मैथुन च समानमेतत् पशुभिर्नराणाम् । धर्मो हि तेषामधिको विशेष धर्मेण होना पशुभिः समाना ॥

जब नान, पान, निद्रा यांर भय ब्रादि मनुष्य ब्रीर पशुब्रो में समान हप से है तो फिर रन दोनों में ब्रन्तर ही पया हुब्रा विस्तव में जो भगवद्भिवन, सदाचार, धर्म ब्रीर पण्य में बिहीन है यह नर पशु नृत्य है। यही तो मनुष्य की विशेषता है ब्रीर यही उसारों पशुषों में पृथक करनी है ब्रीर इसी कारण में मनुष्य मनुष्य कहनाता है। गी विशेषता को नुमने ब्रव तक नाक पर रने रपा था। ब्रव शेष जीवन में इस विशेषता में तुन्त प्राप्त करना है। मानव देह का उद्देश्य यही है। ब्रव तुम गत जीवन की सब स्मृतियों को भून जाब्रो। उनका स्वष्न में भी कभी भ्यान मत करो। तुम प्रव पनिरूप में भगवान की ब्रारायना करो। उनकी सर्व-व्यापकता में विचरण वरो। यही भव-पान से मुन करने वाल है। समार नाशवान है। विषय ब्रितिय है। भोग ब्रीर जिलास पत्रन की ब्रोर ने जाने वाल है। मृत्यु के समय ये सब छूट जाने है। मरने पर नभी भोग-सामगी छोटकर परलोक गमन करना पटता है। मनुष्य बा बराज सेन-कूद, योवन विषय-भोग, वार्धवय रोग में व्यतीत कर देता है, क्रीजिए कन्तरान से हुनी होना है. रोना है ब्रीर विलाप करना है। भोगेच्छा कभी स्वन जान्त कहीं है। मृत्य वा बर्ग होनों। एम भोग दूसरे भोग को जन्म देता है। भोगे कभी पूरे नहीं रोजि है। जितना उन्हें भोगा जाना है उत्ता ही वे वृद्धि को प्राप्त होते हैं। बृद्धनृप यगित ने पत्रनी भोग-शृणा को वान्त करने के लिए ब्रपने पुत से उसका योवन मागा था। पपनी नारों ब्रागु भोग-विलाम में ब्यतीत की, किर भी शान्ति प्राप्त न होने के लाग ब्राव पुत्र ना योवन मागा ब्रीर किर भी भोगों के प्रति उसकी तृष्णा शान्त मही है। मृत्य वा वारोर जबेरित हो जाता है किन्तु "तृष्णका तकणायते।" मृत्य वृदा हो जाता है पर उसकी तृष्णा सदा युवती रहती है, उसीलिए स्वामी धारपायंगी महारात ने कहा है कि

श्रद्भ गनित पतित मुण्डम्, दशन-विहीन जात तुण्डम् ॥ वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डम्, तदपि न मुचत्याशा पिण्डम् ॥

दिय । भोगों की समाप्ति नहीं होती, मनुष्य स्वय ही समाप्त हो जाता है। एक न एक दिन मृत्यू प्राण्मी, उस समय ये विषय विवय हो कर छोड़ने पड़ेंगे। जब कोई वस्तु छोनी जाती है तो महान् दुष्य होता है, किन्तु यदि स्वत ही उसका परित्याग कर दिया जाए तो दुष्य नहीं होता है। चोर धन चुरा कर ने जाता है तो बड़ा कष्ट होता है प्रोर यदि उस धन को स्वय दान कर दिया जाता है या किसी शुभ-कार्य में स्यापा जाता है तो प्रमन्तना होती है। कोई हाथ से छीने तो कष्ट, किन्तु स्वय दे दो नो कप्ट नहीं होता। एमलिए विषय-भोगों को स्वय ऐसे छोड़ देना चाहिए जिस

प्रकार से सर्प अपनी केंचुली को छोड देता है। उसकी केंचुली को कोई खींचकर उतारे तो उसको दुख होता है ग्रीर वह काटने को दौडता है किन्तु जब वह स्वय उसको ता उत्तमा दु ल हाता ह आर पह पाटन पा पाउता ह निन्तु जप पह स्पर्प उत्तमा ग्रापने शरीर से उतार कर फेंक देता है तो उसे किसी प्रकार का कव्ट नहीं होता। तुमने स्वय इन विषय भोगों पर लात मारी है। यह तुमने वडा शुभ कार्य किया है। यव तुम प्रण करों कि जिसका तुमने विष्टावत् परित्यांग कर दिया है उन विषयों की कभी इच्छा न करोगी। थूक कर चाटने का जधन्य कार्य करने का कभी स्वयन में भी ध्यान न करोगी। सासारिक भोगों को भोगकर कभी कोई ग्राज तक तृष्त नहीं हुग्रा। केवल सन्तोष कर लेने से ही तृष्ति होती है। सन्तोष ही परम धन है श्रीर जो सन्तोषी है वह सदा सुखी है। जन्म-जन्मान्तरों में श्रुनेक बार विषयोपभोग किया है। उनसे जब श्रव तक तृष्ति नहीं हुई तब श्रव तृष्ति होने की क्या श्राणा हो सकती है। ससार में वहीं मनुष्य श्रेष्ठ है जो कीर्तिमान् तथा यशस्वी है। श्रपकीर्ति के जीवन से तो मरना ही उत्तम है। भगवान् के साथ अपना सपर्क वढाग्रो। उनके सन्निधान से अन्त करण के सब मल क्षीण हो जाएगे। तुम जन्म-मरण के वधन से मुक्त हो जाग्रोगी। ग्रहनिश भगवान का भूजन करो। उसके चरणो में ग्रात्म-समर्पण करो। यह देह प्रभु का मदिर है। सर्वव्यापक भगवान् हमारे हृदयों में भी विराजमान है। इसलिए इसे सदैव शुद्ध और पवित्र रखों। जिस प्रकार से घर में बुहारा लगाकर सफाई की जाती है उसी प्रकार से तुम अपने अन्त करण मे ज्ञान का वुहारा लगाओ और सारे विषय-भोग, कषाय, कुसस्कार भाडकर बाहर फेक दो जिससे यह निर्मल हो जाए और तुम उस दीनबन्धु, दयालु, करुणासिधु भगवान् के समीप पहुच सको । इस बात को सदा स्मरण रखों कि वे निर्बल के बल, निर्धन के धन, निराधितों के ग्राश्रय ग्रीर ग्रसहायो के परम सहायक हैं। तुम ग्रपना सारा उत्तरदायित्व उनपर छोडकर सुखी ग्रीर ज्ञान्त हो जास्रो । निर्भय होकर विचरो स्रीर किसी प्रकार की चिन्ता मत करो । तुम मीरा वनो। जानती हो मीरा ने राजसी धन-दौलत, सुख-समृद्धि ग्रौर वैभव, ग्रौर गगनचुम्बी स्रद्वालिकास्रो का परित्याग करके स्रपने गिरिधर को पाने के लिए वृन्दावन की कुज गलियों में "मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरों न कोई रे प्रभु" का गायन करना स्रधिक मगलमय माना था। उसने वृन्दावन की गलियो, लताओं, कुजो मे, वन और पर्वतो पर फिर-फिरकर ग्रुपने गोविन्द को खरीद लिया था। जानती हो कैसे ? ग्रुपने त्याग् ग्रीर भिनत के वल से। तुम भी ऐसा ही करो। तुम ग्रवश्य भगवद्-कृपा प्राप्त करोगी। भगवान् तुम पर श्रवश्य कृपा करेगे।

महाराजजी तथा दोनो सेठो का प्रति सायकाल पद्मा से मिलना—श्री महाराजजी, सेठ मूलराज तथा सेठ वृजमोहन नित्य सायकाल पद्मा से मिलने जाया करते थे। पद्मा ने महाराजजी से निवेदन किया कि वे सेठ वृजमोहन को ग्रपने साथ न लाया करे। महाराजजी ने पूछा, इनके ग्राने मे तुम्हे क्या ग्रापित है ? उसने पुन निवेदन किया कि गत सात-ग्राठ वर्ष से इनका ग्रौर मेरा सम्बन्ध रहा है। मुभे सन्देह है कि ये पुन मेरे ऊपर डोरे डालने प्रारम्भ कर देगे क्योंकि वैराग्य मुभे हुग्ना है इनको नही। ग्रापके सामने ये कुछ नही कहते पर ग्राप तो नवद्वीप मे सदा रहेंगे नही, इसलिए मै चाहती हू कि इनका मेरे साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध न रहे। इनकी गुद्ध तथा पवित्र भावना कभी मेरे प्रति नहीं हो सकती। लोभ ग्रौर मोह की जडे इनके ग्रन्दर

वहुत गहरी गड़ी हुई हैं। इन्होंने ही मेरे जीवन को वर्वाद किया है ग्रतः मैं नहीं चाहती कि ये मेरे समक्ष ग्राएं। इस पर सेठजी ने न ग्राना स्वीकार कर लिया किन्तु उसका कुल खर्चा भेजने के लिए ग्राग्रह किया। उसने नाराज होकर कहा, "नहीं, में ग्रापसे एक पैसा भी नहीं लेना चाहती।" महाराजजी ने आजा दी कि तुम्हारे प्रति मातृ-भावना रखकर तो ये या सकते हैं ग्रौर तुम्हारे व्यय के लिए रुपया भेज सकते हैं। पद्मा ने सन्देह प्रकट करते हुए कहा, इनमें इस भावना का उदय होना ग्रसंभव है। मैंने ग्रापके दर्शन कम्पनी वाग में किए। मुभमें जो कुछ भी परिवर्तन हुग्रा है यह सव महाराजशी के चरणों की कृपा का ही परिणाम है। इन पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा । इनके विचारों में तिनक भी परिवर्तन नहीं हुआ । अतः में आपसे नतमस्तक हो प्रार्थना करती हूं कि ग्राप इन्हें ग्राज्ञा दें कि ये कल से यहां न ग्राएं। ग्रापके मार्ग-दर्शन के अनुसार जीवन यापन करने के लिए अब मैं कटिबद्ध होगई हूं। आपकी सब श्राज्ञात्रों का पालन करूंगी। ग्राप मेरे सच्चे पथप्रदर्शक गुरु हैं, पिता हैं। ग्रापने मुफ पथभव्टा को सुपथ पर लाकर खड़ा कर दिया है। पतन के गहन गर्त में से वाहिर निकाला है। मैं जन्म-जन्मान्तरों में भी आपके इस महान् ऋण से उर्ऋण नहीं हो सक्री। ग्राप मुक्त पर इतनी क्रुपा ग्रौर करें कि ग्रपनी एक फोटो मुक्ते प्रदान करें ग्रौरे वर्ष में कम से कम एक वार ग्रपनी इस ग्रधम शिष्या तथा पुत्री की सुध ग्रवस्य लेने की कृपा करें।

पद्मा का आश्रम में निवास तथा कार्यक्रम--पद्मा अव रात-दिन कीर्तन और भजन करती रहती थी ग्रोर कीर्तन करते-करते उसकी ग्रांखों से ग्रश्रुधारा वह निकलती थी। केवल एक समय भोजन करती थी। वह भी थोड़ी-सी खिचड़ी, अन्य कुछ नहीं। ग्रपना सब काम स्वयं करती थी। वड़ी सादगी से रहती थी। गंगा स्नान के ग्रति-रिक्त कभी आश्रम से वाहिर न जाती थी। ग्रव वह वहुत मितभापिणी वन गई थी। म्रिधिक संपर्क भी उसे म्रव पसन्द न था। घण्टों ही भगवान् कृष्ण की फोटो के सामने वैठी रहती थी। उसका कोमल शरीर ग्रव मुर्भा गया था ग्रौर कृश होगया था। तेल भौर साबुनादि सब लगाना छोड़ दिया था। खद्दर पहिनती थी। केवल दो जोड़ी कपड़े अपने पास रखती थी। तख्तपोश पर सोती थी और बहुत मामूली-सा विस्तर उसके पास था। घी और दूव का विलकुल परित्याग कर दिया था। उसके चित्त में भगवान् ने एकदम तप और त्याग की महान् भावना भर दी थी। ऐसा मालूम होता है कि यह पूर्व जन्म की कोई योगभ्रष्टा महिला थी जो वर्तमान जन्म में ग्रपने शेप पाप-कर्मों के फल को भोगने के लिए ग्राई थी। पाप-कर्म का भोग ग्रव समाप्त हो गया था। इसी कारण से भोग ग्रौर विलासिता के जीवन से एकदम घृणा होगई थी। भगवान् के प्रति सच्चा अनुराग उत्पन्त होगया था और गुरु के प्रति पूर्णरूप से श्रद्धा और भिवत की भावना जागृत होगई थी। रोते-रोते कहा करती थी, मुक पितता ग्रौर दुराचारिणी को ग्रपनाकर गुरुदेव ने मेरा परित्राण किया है। ग्रपनी शरण में मुफ्ते लिया है। मेरा उद्धार किया है। धन्य है ऐसे गुरुदेव जो मुफ्त जैसे सहस्रों पतित प्राणियों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। भगवान् ने ग्रपना प्रतिनिधि वनाकर गुरुदेव को संसार में भेजा है। ये मेरे लिए तरन-तारन बनकर ग्राए हैं। गुरुदेव के व्यक्तित्व, तप, त्याग, योग ग्रौर ब्रह्मनिष्ठा ने मेरे ऊपर जादू का सा काम किया है। कम्पनी वाग

मे समाधिस्थावस्था मे केवल एक वार दर्शनमात्र से मेरे मन मे महान् परिवर्तन हो गया है। मुक्ते अपने जीवन और कुकर्मी पर वडी घृणा होगई है। मेरा मन सेठ से विल्कुल उपराम होगया था। मैं किसी ऐसे महात्मा की तलाग मे थी जिसके सामने में अपनी व्यथा रख सकती। अपने मन को उनके सामने खोलकर रख देती और उनसे उपदेग ग्रहण करती। उनके समक्ष अपने पापकर्मी के लिए पश्चात्ताप करती। महाराजजी का मुक्तपर वहुत प्रभाव पडा था इसीलिए मैंने अपनी सेविकाओं के द्वारा उन्हें अपने निवास-स्थान पर बुलाया था। किवाड इसलिए वन्द करवाए थे कि कही महाराजजी मेरी व्यथा सुने विना ही न चले जाए। यदि ये उस दिन समाधिस्थ न होते तो न जाने मेरे उद्धार मे और कितना समय लगता। इनकी समाधि ने मेरे जीवन मे महान् परिवर्तन कर दिया। मैं इनके उपकार को कभी नहीं भूल सकती। मुक्ते तो ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो भगवान् कृष्ण मेरे लिए गुरु का अवतार धारण करके आए हैं। कितना ही अच्छा होता कि मेरे भगवान्, मेरे गुरुदेव यहा नवद्वीप मे रहते और मैं नित्यप्रति उनके चरणामृत का पान करके अपने मन मे तिरोहित पाप की मिलनता का प्रक्षालन कर सकती, किन्तु उन्हें तो मुक्त जैसे अनेक पतित प्राणियों का उद्धार करना है, केवल मेरे लिए यहा कैसे सर्देव रह सकते है।

श्री महाराजजी का कलकत्ता आगमन-एक मास तक नवद्वीप मे रहने के पक्चात् महाराजजी ने पद्मा से वहा से प्रस्थान की इच्छा प्रकट की ग्रौर कहा, "देवि । तुम्हे भगवद्भिक्ति का मार्ग वता दिया है। अव तुम इस मार्ग पर दृढ रहना, विचलित मत होना। ईश्वर-भक्ति ही जीवन का सार है। नर तन वडे पुण्य से उपलब्ध होता है, इसे वृथा खोना महान् पाप है। हमारी वात को गाठ वाघ लो। हमने समय-समय पर जो तुम्हे उपदेश दिए हैं उन्हें सदैव स्मरण रखना । हमने तुम्हे भगवान् के श्रर्पण कर दिया है। तुम इन्ही की वनकर रहना। भगवान् की तुम पर विशेष कृपा है। इसी-लिए तुम पतन के गहन गर्त मे से निकल सकी हो । उन्होने ही तुम्हारा उद्घार किया है। अपना सारा समय जाप, उनके नाम के सकीर्तन, भजन, ध्यान तथा प्रार्थना मे व्यतीत करना। भगवान् से मिलने का प्रयत्न करो। वे वडे भक्तवत्सल हैं, कृपा के सिन्धु हैं। श्रद्धा और भेक्ति से उनकी उपासना करो। उन्हे पाने के लिए कही दूर जाने की ग्रावश्यता नहीं। वे तुम्हारे पास हैं। तुम्हारे हृदय में विराज रहे हैं। पर इनके दर्शन के लिए दिव्य नेत्रों की ग्रावश्यकता है, उनसे ही इनके दर्शन-लाभ होते हैं। तप, ज्ञान, घ्यान तथा भिनत और उपासना से इन दिव्य नेत्रो की प्राप्ति होती है। अपनी इन्द्रियों को वहिर्मुख मत होने दो। उन्हें अन्तर्मुखी करो। भगवान् ने इन्द्रियों को वहिर्मुख वनाया है किन्तु तुम इन्हें अन्तर्मुखी वनाओ । जव-जव ये वोहिर भागने के लिए प्रयत्न करे तव-तव तुम इन्हें खीचकर अन्तर्मुखी करो । देवि । तुमने कछुआ देखा होगा। जव उसके सामने कोई भय उपस्थित होता है तो वह अपने हाथ-परादि को समेट कर भीतर खीच लेता है श्रीर तव निर्भय होकर बैठ जाता है। उस समय कितने ही प्रहार किए जाए पर उस पर कुछ ग्रसर नहीं होता। तुम्हें भी कछुए का श्रनु-सरण करना चाहिए। जव तुम सारी इन्द्रियों को भीतर खीच लोगी ग्रीर वाहिर नहीं जाने दोगी तो तुम निर्भीक होकर विचरोगी। ससार का कोई भी प्रलोभन तुम्हें ग्रपनी ग्रोर ग्रार्कापत नहीं कर सकेगा। कोई भी तुम्हें ग्रपने श्रेप्ठ पथ से विचलित

न कर सकेगा। तुम ग्रडिंग रहोगी। प्रभु कृपालु हैं। तुम पर ग्रमृत की वर्षा करेंगे ग्रीर तुम परम धाम को जाग्रोगी। सेठ मूलराजजी तुम्हें मिलते रहेंगे ग्रीर तुम्हारे सारे व्यय का भार वहन करेंगे। ये तुम्हारे भाई हैं। मेरे शिष्य हैं। जव कभी कोई किठ-नाई उपस्थित हो तो तुम निःसंकोच इनसे निवेदन करना, ये तुम्हारी समस्या को ग्रवश्य सुलभाएंगे।"

पद्मा के नेत्रों से गुरुदेव के प्रति भिक्त ग्रीर प्रेम की ग्रश्रुधारा वह निकली ग्रीर उसने ग्रवरुद्ध कण्ठ से महाराजजी से निवेदन किया, गुरुदेव ! ग्रपनी दासी की संभाल करने की कृपा करते रहें । मेरा जीवन-सूत्र ग्रापके ही हाथों में है । इस जीवन नैया के खिवेया ग्राप ही हैं । महाराजजी ! सागर गहरा है, उत्ताल तरंगें इसमें उठ रही हैं, तट दूर है, नाव मंभधार में है, मेरी भुजाग्रों में वल नहीं है, मैं इसे कैसे किनारे पर ले जाऊंगी । मेरे भगवान् ! मेरे गुरुदेव ! ग्राप ही इसके चप्पू संभालें, ग्रापके ग्रातिरक्त ग्रीर कोई इसे पार नहीं ले जा सकता । जहां भी, महाराजजी ! मेरे देवता ! ग्राप रहें मुभे सहारा देते रहना, मेरी सुध लेते रहना । कहीं ऐसा न हो कि भगवान् का दामन मेरे हाथ से छूट जाए । इसे वलपूर्वक पकड़े रहने के लिए वल ग्रीर ज्ञावित ग्राप ही से प्राप्त होगी । ग्राप ही भगवान् ! मेरे वल हैं, ज्ञावित हैं, मुभ निर्धन के धन भी ग्राप ही हैं ग्रीर निराधित के ग्राथय भी ग्राप ही हैं । इस दासी की महाराजजी ! खबर लेते रहना ग्रीर उपदेश लिखकर भेजने की कृपा करते रहिएगा ।

सेठ वृजमोहन का संन्यास लेना—महाराजजी ने इन सेठजी से कलकत्ता जाने के वारे में पूछा। वे वड़े दु:खी हुए ग्रौर निवेदन किया, महाराज! मेरा तो वसा वसाया सारा घर उजड़ गया। मेरे लिए कलकत्ता ग्रव उजाड़ तथा सुनसान वीहड़ वन के समान है। वहां जाकर ग्रव मैं क्या करूंगा! जिस पद्मा को मैं ग्रपना समभे वठा था, जिस पर मैंने ग्रपना तन, मन तथा घन न्योछावर कर दिया था, वह मेरे प्रति ग्रव उदासीन होगई है। वह विरक्त होकर साधु वन गई है। उसे मेरा मुख देखना भी पसन्द नहीं। वह मुभ से वात तक नहीं करती। मेरा ग्रव कलकत्ते में कौन है जिसके पास मैं जाऊं! मैं भी ग्रव सिर मुड़ाकर जोगी वन जाऊंगा। महाराजजी ने उनकी इस भावना की वड़ी प्रशंसा की ग्रौर ग्राशीर्वाद दिया। नदिया में ग्राने के पश्चात् पद्मा केवल चार साल तक जीवित रही। उसने पश्चाताप ग्रौर तपश्चर्या से ग्रपना सारा शरीर सुखा दिया था ग्रौर ग्रहिंग्श भगवन्नाम स्मरण करती रहती थी। महाराजजी उसे पन्नों द्वारा ग्रपने उपदेश भेजते रहते थे।

### श्री महाराजजी का वनारस प्रस्थान

कलकत्ता में कुछ दिवस रहने के पश्चात् महाराजजी ने वनारस के लिए प्रस्थान किया। वहां पर पंडित ब्रह्मदत्त तथा शंकरदेवजी भोलानाथ के उद्यान में रहते थे। वहां पर विद्यार्थियों को पढ़ाते थे ग्रौर साथ ही प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य पंडित नारायणजी तिवारी से महाभाष्य का ग्रध्ययन भी करते थे। तिवारीजी कचौड़ी गली में निजी तौर पर कुछ विद्यार्थियों को पढ़ाया करते थे। ये क्वीन्स संस्कृत कालिज में प्राध्यापक थे। एक वार एक ग्रंग्रेज ग्रफ्सर इस कालिज का निरीक्षण करने ग्राया। वह इनके व्यवहार तथा ग्रध्यापनकार्य ग्रौर पाण्डित्य से वड़ा प्रभावित हुग्रा। पंडितजी ने उनसे निवेदन किया कि मेरा घर वहुत दूर है, ग्राने-जाने में समय की वड़ी हानि होती

है, ग्रत विद्याथियों को मेरे घर पर भेजने की व्यवस्था कर दी जाए। में वही उन्हें पढा दिया करूगा। ग्रफसर महोदय ने उनके निवेदन को स्वीकार किया ग्रीर विद्यार्थियों को उनके घर पर पढ़ने की ग्राज्ञा दे दी। महाराजजी ने भी भोलानाथ के उद्यान में ही निवास करना प्रार्थ कर दिया ग्रीर दूसरे विद्यार्थी जो कुछ पढ रहे थे वे ही ग्रथ तिवारीजी से पढ़ने लगे। इस समय प० ब्रह्मदत्त विद्यार्थियों को काशिका ग्रप्टाध्यायीं की द्वितीय वृत्ति पढ़ा रहे थे। इन्होंने भी उनसे यही पाठ सुनना प्रार्थ कर दिया। प० ब्रह्मदत्तजी स्वय तिवारीजी से नवाह्निक महाभाष्य पढ़ा करते थे, इन्होंने भी उनके साथ इस ग्रथ को पढ़ना शुरू कर दिया। प० टूण्डीराजजी वेशेपिक पढ़ाया करते थे। ये भी इनके पास इस ग्रथ को पढ़ने जाते थे। इस प्रकार सारा दिन पठन का कार्यक्रम चलता रहता था।

प० तिवारीजी की प्रेरणा-एक दिन तिवारीजी ने ग्रध्यापन कराते समय श्री व्यासदेवजी को सलाह दी कि ग्राप व्याकरण के गव्दजाल मे क्यो फम गए? ग्राप त्रपना योग पथ इस कार्य के लिए क्यो छोड रहे हैं ? मैं ३५ वर्ष से व्याकरण पढा रहा हू। जब्दाडम्बर के ग्रतिरिक्त ग्रीर कुछ हाथ नहीं लगा। किसी प्रकार की मानसिक शान्ति व्याकरण से मुक्ते नही प्राप्त हुई। वृद्धावस्था मृत्यु की घण्टी वजा रही है पर व्याकरण के पठन-पाठन के ग्रतिरिक्त मैं शान्ति प्राप्ति के लिए कुछ भी न कर सका। सारी ग्रायु इस गव्दजाल मे ही व्यतीत होगई, कुछ तत्त्व लाभ नही हुन्ना। तत्त्वज्ञान की प्राप्ति, मन की जान्ति तथा मोक्ष-साधन के लिए योग ही यथार्थ मार्ग है। ग्राप क्यो हीरे को छोडकर काच मणि के पीछे भाग रहे है <sup>?</sup> जाग्रो, ग्राप हिमालय मे जाकर योग-साधन द्वारा समाधि से लाभ उठायो। हम लोग तो गहस्थी हैं। मोह-माया के जाल मे फसे हुए हैं। कही ग्रा जा भी नही सकते। ग्राप ब्रह्मचारी हैं, गृह तथा परिवार का ग्रापने परित्याग कर दिया है। मोह ग्रीर ममता से रहित है। त्रापने जो कुछ पढ लिया है यही पर्याप्त है। वात तो सारी पढे हुए को जीवन मे चरितार्थ करने की है। ग्राप जान-वूभकर व्याकरण के भभट मे क्यों फस रहे हैं? ब्यासदेवजी ने कहा, आप यथार्थ कह रहे हैं। किन्तु मैं एक साल तक और पढना चाहता हू। वस, गुरुमुख से पढने का आप यह अन्तिम साल ही समिक्तिए। मुक्ते यहा की जलवायु भी अनुकूल नही है। यहां की प्रचण्ड गर्मी वडी असह्य प्रतीत होती है। व्यासदेवजी ने वडे परिश्रमपूर्वक पढना प्रारभ किया। सारा समय पढने मे ही लगाते थे। एक घण्टा भोजन वनाने मे व्यतीत होता था। वह भी इन्हे वहुत अखरता था, इसलिए पास ही विद्यार्थियों के अन्त-क्षेत्र में भोजन करना प्रारंभ कर दिया। १५ मिनट में ही भोजन करके निवास स्थान पर ग्रा जाया करते थे। कभी-कभी मणि-करण घाट पर स्नानार्थ जाया करते थे।

श्री महाराजजी का ठगे जाना—एक दिन की वात है। महाराजजी गगा स्नान करके लौट रहे थे। इन्होने पीताम्वर घारण किया हुग्रा था। गीली घोती कघे पर डाल रखी थी ग्रीर लोटा हाथ मे था। इन्हें मार्ग मे एक देवी मिली। इसकी ग्रायु लगभग ३४-३५ वर्ष की होगी। इसने हाथ जोडकर इनको भोजन के लिए निमत्रित किया। इन्होने स्वीकार नही किया किन्तु उसके विशेष ग्राग्रह से इन्होने भोजन करना स्वीकार कर लिया। वह इन्हे एक हलवाई की दुकान पर ले गई ग्रीर उसे ब्रह्मचारीजी

को खूव मिठाई खिलाने का ग्रादेश दिया। जब ये भोजन करने बैठ गए तब उसने यह कहकर कि लोटे में जो गंगाजल है उसमें कुछ मिही है, लोटा उठाया ग्रार नल में से पानी लाने का वहाना करके चलनी वनी। इन्हें प्यास लगी तो इयर-उथर ताकने लगे। वहुत प्रतीक्षा की किन्तु वह देवी लौटी ही नहीं। तव इन्होंने हलवाई से प्रार्व्य प्रद-र्शित करते हुए पूछा, वह देवी पानी लेकर ग्रव तक नहीं ग्राई। हलवाई ने सहास्य कहा, महाराज ! ऐसी वातें तो यहां ग्राए दिन होती हैं। वह नहिला ग्रव वापस नहीं ग्राएगी। त्रापका लोटा चुराने के लिए ही उसने ग्रापको भोजन करवाने का जाल रचा था। व्यातदेवजी को बड़ा ग्राइचर्ष हुग्रा ग्रीर किकनेव्यिवमूढ़ मे होकर खड़े रहे। हलवाई ने भोजन के दाम मांगे। ये देंते कहां से ! उनके पास कुछ था ही नहीं, गंगा-स्नान के लिए आए थे। साथ में रुपये वांवकर तो लाए नहीं थे। इन्होंने कहा, पैसे इस समय हमारे पान नहीं हैं। वास्तव में तो भोजन के दोन उस देवी को ही चुकाने चाहिए थे पर वह दाम तो क्या चुकानी मेरा लोटा ही उनकर ले गई। ग्राप मेरी बोती ग्रयने पास रख लें। मैं जाज सायंकाल या कल दाम चुकाकर बोती ले जाऊंगा। हलवाई को इन पर विष्वास तथा भरोसा हीनवा और इनकी सत्यता श्रीर ईमानदारी का भरोसा करके इनकी धोनी अपने पास नहीं रखी और कहा कि जब ग्राप स्नान करने ग्राएं तब दाम चुका देना।

श्रान की दावत — एक दिन एक सेठ ने कई ब्रह्मचारियों को श्राम खाने के लिए निमंत्रण दिया। श्री व्यासदेवजी भी इनमें सम्मिलिन थे। नेठजी ने बनारसी श्रामों के कई टोकरे मंगवाए। विद्यार्थियों ने खूब खाए। जब सब खाने-वात श्रवा गए तब सेठ ने कहा, जो विद्यार्थी श्रव श्राम खाएंगे उन्हें प्रित श्राम चार श्राना दिया जाएगा। श्रामों के लालच में श्राकर विद्यार्थियों ने खूब श्राम खाए। सेठ ने श्रव प्रात श्राम एक काया देने के लिए कहा। जब विद्यार्थी पुनः श्राम खाने लगे तब इन्होंने उन्हें समक्ताया कि श्रियक श्राम खाने से बीमार होने की श्रायंका है, श्रतः श्रव श्राप लोगों को श्रीर श्रविक लालच नहीं करना चाहिए। सेठ से भी निवेदन किया कि श्राप लालच देकर श्राम खिलाकर पुण्य के स्थान पर पाप कमा रहे हैं। ये सब ब्रह्मचारी विद्यार्थी हैं। ये यदि श्रविक श्राम चा जाएंगे नो इनके रुग्ण हो जाने की संभावना है, श्रतः श्रापको जितने रुग्ये देने हों विना श्राम विलाए ही दे दीजिए। इम प्रकार से श्रापका पुण्य भी होगा श्रीर ये लोग रोग से बचेंगे। श्रापको भी श्रामों पर लर्च नहीं करना पड़ेगा। इनकी वात सुनकर किर मेठजी ने श्राम खाने के लिए इनाम देना वन्द कर दिया।

राणावस्था में वैर्य वनारस में एक बनारसी साड़ियों की दुकान थी। यह पन्ना-लाल सालग्राम की थी। ये अमृत्तसर-निवासी थे। ये व्यासदेवजी को जानते थे। वनारस में आकर इनसे परिचय वहुन वह गया था। लाला जिवसहायमल इन्हीं की मारफत ब्रह्मचारीजी के लिए रुपया भेजा करते थे। बनारस में भाइपद में मलेरिए का बड़ा प्रकीप हो जादा करता था। अब भी इसमें कुछ कमी नहीं है। व्यासदेवजी पर भी इसका प्रहार हुआ। वे कई दिन तक भोलानाथ के उद्यान में ज्वर-पीड़ित रहे। साथी ब्रह्मचारियों ने इनकी बहुत सेवा-मुश्रूपा की और इलाज करवाया किन्तु जब किसी प्रकार भी ज्वर ज्ञान नहीं हुआ तब इन्हें रामकृष्ण मठ के हस्पताल में

भर्ती करवा दिया। वहा पर वडा ग्रच्छा प्रवन्ध था। इलाज भी भली प्रकार से हुग्रा किन्तु ज्वर का प्रकोप वैसा ही वना रहा। सरसाम होगया। दिन-रान वेहोर्जी मे पडे रहते थे। ग्रव डाक्टरों को इनके वचने की ग्रांगा नहीं रही। जिस वार्ड में ग्रसाध्य रोग के रोगी रहते थे इन्हें वहा पहुचा दिया गया। वहा पर वे कई दिन तक सज्ञाहीन रहे। एक दिन एक जमादार वहाँ पर सफाई करने ग्राया तो उसने व्यास-देवजी का कराहना सुना। उसने तुरन्त इसकी सूचना डाक्टरो को दी। पाच-छ डाक्टर फौरन ग्राए ग्रौर छ दिन के वाद व्यासदेवजी को होश ग्राने पर वहुत प्रसन्न हुए। रोगी भी इन डाक्टरों को अपने पास खड़े हए देखकर आञ्चर्य में पड गए। डाक्टरो ने व्यासदेवजी को सान्त्वना दी ग्रौर विश्वास दिलाया कि ग्रव ग्राप खतरे से वाहर निकल ग्राए हैं । ग्रव ग्रापको ग्रीपध देना प्रारम्भ करेंगे ग्रीर ग्राप ठीक हो जाग्रोगे। डाक्टर ग्रव उन्हे ऊपर के कमरे मे ले गए ग्रीर विधिवत् उपचार करना प्रारम्भ कर दिया। कुछ दिनों के पञ्चात् ज्वर जाता रहा। इन तीन माह की बीमारी में ये वडे कुश होगए ग्रीर शरीर शक्तिहीन होगया। बीरे-बीरे हस्पताल में कमरे के भीतर चलना फिरना प्रारम्भ कर दिया। शनितवर्धक श्रोपिधयो के सेवन करने से थोडी गक्ति ग्रानी प्रारम्भ होगई। डाक्टरो ने इन्हे वनारम से कही ग्रन्यत्र जाने की सम्मति दी क्योंकि वहाँ का जलवायु इनके अनुकूल न था और उनका विश्वाम था कि वहा ये स्वस्थ नही रह सकेंगे। परमात्मा की परम कृपा से महाराजजी ने स्वास्थ्य लाभ किया। डाक्टरो की सलाह के अनुसार अब ये सोचने लगे कि वनारम में कहा जाना चाहिए। इस जारीरिक दुर्वलता के कारण प्रथम वार इन्हे अपने घर नथा परि-वार का स्मरण हो ग्राया। देहाध्यास तथा पारिवारिक ममता के जागृत होने का यह पहला ही अवसर था। जब से गृह परित्याग किया था तब से कभी घर की स्मृति नही हुई थी। पर वहुत विचार करने के पश्चात् इन्होने अपने घर जाने का सक्तप छोड दिया और अमृतसर के लिए प्रस्थान किया। वहा जाकर मोतीराम की वगीची में ठहरे। अमृतसर का जलवायु इनके अनुकूल था। दो मास में ही पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कर लिया। लाला शिवसहायमल तथा अन्य परिचितो ने अपने घर पर ले जाने के लिए बहुत आग्रह किया किन्तु ये वडे एकान्तप्रिय थे, ग्रत कही भी नहीं गए। २-३ मास में अमृतसर में स्वास्थ्य लाभ करने के पश्चात् हरिद्वार चले गए।

### तीन मास तक हरिद्वार मे निवास

हरिद्वार पधारकर महाराजश्री मोहन ग्राश्रम मे ठहरे। वहा पर वलदेवसिंह ने ब्रह्मचारियों के पढ़ने के लिए एक विद्यालय खोला हुग्रा था। किन्तु उनके देवलोंक हो जाने के पञ्चात् यह वन्द होगया था। इसका इन्हें वडा दु ख हुग्रा। यह स्थान वडा एकान्त था, ग्रत यही रहकर योग-साधना का कार्यक्रम वना लिया। ग्रीप्म ऋतु में सकडो परिवार हरिद्वार में ग्राया करते थे। महाराजजी नित्यप्रति चण्टाधर के सामने उपदेश दिया करते थे। ग्रापके उपदेशामृत का पान करने के लिए वहा मैंकडो नरनारी एकत्रित होते थे ग्रीर ग्राध्यात्मक लाभ उठाते थे।

सन्त रामदासजी का गृहस्थी के रूप मे मिलाप—एक दिन ब्रह्मचारीजी कुछ सत्सिगियो को उपदेश दे रहे थे। उस समय वहा एक सज्जन ग्राए। ग्रपनी पोशाक से ये पजावी मालूम होते थे। इनके साथ एक देवी तथा एक ७-८ वर्ष का वालक

था। ये मुज्जन भीट चीरते हुए आगे आए और महाराजजी को दण्डवन् प्रणाम किया। ये बहुत देर तक जमीन पर से नहीं उठे। उपदेश में विक्षेप हो रहा था श्रत कथा बन्द करके उन्होंने उसे उठाया, किन्तु ये उसे पहिचान नहीं सके। उस सज्जन ने स्वय हो अपना परिचय देते हुए कहा, "महाराजजी। में वही पापात्मा रामदास हूं जो सप्त-नरोवर पर एक पैर पर यदा होकर नपस्या किया करता था। यह मेरे साथ वहीं रामप्यारी है जिसने मेरा लोक श्रीर परलोक विगादा है। श्रापने मुक्ते बहुत समकाया या कि रामप्यारी का मेरे पास ग्रधिक काल तक रहना अनुचित है। लौकापवाद से इरना चाहिए। यदि उस समय में ग्रापकी तसीहत ग्रीर चेतावनी को मान लेता तो मेरी यह दशा न होती। यदि में कही भ्रन्यत्र चला जाता श्रयवा इसका श्रपने पास श्राना वन्द कर देता तर्व मेरा यह पतन न होता । मै कई दिन से आपके उपदेश सुन रहा ह किन्तु अपने पाप में बटा लिंजन हूं, उमीलिए ब्रापके समक्ष ब्राने का साहस नहीं हुया । परन्तु श्राज् मुभने रहा नहीं गया श्रीर उस भीड में श्राकर श्रापकी चरणवन्दना की । पहिले आप मेर चरण छूत्रा करते थे, ब्राज मेने ब्रापको दण्डवत् की है । ब्राप तो तपस्या करने-करने उन्नित के शिखर पर पहुच गए। महान् योगी, सिद्ध पुरुष तथा विद्वान् वस्ता वन गए। किन्तु एक में हू जो पतन के गहन गर्त में पड़ा हू। मुक्ते बड़ा दृष्य है कि भीमगोंडे स्नाकर स्नापने जो मुक्ते उपदेश दिया था स्नीर मेरी जो भन्मेना री यी उस पर मेने उस समय ध्यान नही दिया। में श्रव श्रपने जीवन की बहुत बिक्कारना हू । में स्वर्ग को लात मार उस घोर नरक में पड़ा हू । मेरी मान-निक कमजोरी को रामप्यारी ने अनुचित लाभ उठाया है। मेरे कारण साधु-समाज कलकित हुआ है। मुने मुब लोग अब घृणा की दृष्टि मे देखते है। कई सन्त तो सामने ग्रामेर मुक्त पर गालियों की बीछार करते हैं। ग्राज ग्रपने इन पापी का ग्रन्त करणा। पितरपायनी उस गगा ने ही मुक्ते ठुकराया था। वही श्राज मुक्ते अपनी गोद में विठाकर पार करेगी। बाते करते-करते उसकी श्राखों से श्रनवरत श्रश्रुपात होने लगा। उन शब्दों के नाथ वे गगा में कूद गए श्रीर तैरकर परले पार चले गए। रामप्यारी ने २-३ मास तक उनकी खोज की। जब कही भी उनका कुछ पता न चला तब ग्राने लड़के को साथ लेकर बायस पेशावर चली गई किन्तु रामदास ने ग्रपने पाप मा चनवार प्रायश्चित किया। पश्चानाप की भट्टी में अपने पापों को जला देने का प्रयत्न किया। मृपासिंगु प्रीर दयाल भगवान् से अपने पापों के लिए क्षमा याचना भी श्रीर पूर्वयत् तप श्रीर भनित में लीन होगए श्रीर अब वे पुन सन्त रामदास वन गए।

#### काइमीर प्रस्थान

ज्येग्ठ मास का प्रारम था। हरिद्वार मे जोरो की गर्मी पडने लगी थी। इसलिए महाराजजी ने प्रमृतसर होते हुए काश्मीर जाने का निश्चय किया। रावलिंपडी मे
उन दिनो स्वामी विश्वहानन्दजी रामवाग मे ठहरे हुए थे। ये ब्रह्मचारीजी के सुपरिचित
थे। उनके कर्ठ-कर्ठ दिन समाधिय्थ रहने की वाते ये प्राय लोगों से किया करते थे।
उनकी योगसाधना में ये वर्ड प्रभावित थे। सत्सग के अभिप्राय में योगीराज भी इनके
पास ही रामवाग में ठहर गए। उन्ही के साथ ये भी योगी अमरनाथजी के मकान
पर नगर में जाया करते थे। स्वामी विश्वहानन्दजी के कई भक्तों में भी परिचय हो

गया था । इनमे से प्रमुख ये थे —वैद्य धर्मचन्द, रामदित्तामल, मदनलाल, कृपाराम बदर्स, पडित मुक्तिराम, वैद्य सत्यव्रत, गोविन्दराम, सुन्दरदास, इत्यादि ।

४८ घण्टे की समाधि—रावलिपण्डी मे एक दिन योगीराजजी पट् कर्म करने के पश्चात् ४८ घण्टे के लिए समाधिस्य हुए। ग्रपनी कुटिया का ताला स्वामी विगुद्धा- नन्द जी से लगवाया। इस रामाधि की ख्याति नगर मे सर्वत्र फैन गई। हाट मे, वाजार मे, गली मे, कूचे मे, विद्यालयो ग्रीर देवालयो मे सर्वत्र ४८ घण्टे की समाधि के विगय मे लोग वातचीत करते थे। रामवाग मे प्राय सारा दिन भीड लगी रहती थी। जब ४८ घण्टे के पश्चात् कुटिया का ताला खोला गया तो योगीराजजी के दर्गन के लिए सैकडो की सत्या मे लोग रामवाग मे एकित्रत हुए। उस समाधि के विपय में कर्ड दिनो तक वाते होती रही। महाराजजी ने यहा पर पन्द्रह दिन तक निवास किया, इसके पश्चात् ये काश्मीर चले गए। श्रीनगर मे पटिन गोपीनाथ के पान कर्ड दिन तक निवास किया ग्रीर फिर मुफ्ती वाग के लिए प्रस्थान किया।

मुक्ती बाग भे ३ मास का काष्ठ मीन—श्री महाराजजी ने इस वाग मे ग्रा कर तीन मास का काष्ठ मीन रखा। केवल ग्रमावस ग्रीर पूर्णिमा के दिन वातचीत किया करते थे और सायकाल एक घण्टे के लिए हारवन भील पर भ्रमणार्थ जाया करते थे। मुक्ती वाग मे गोपीनाथजी का एक मुसलमान नौकर देराभाल के लिए रहा करता था। इसका नाम ग्रकवरा था। जिस मकान मे योगीराजजी रहा करने थे ग्रीर योगाभ्यास करते थे उसमे जब ये ध्यानस्थ होते थे तब एक सर्प ब्रांकर इनके पास कुण्डली मार कर बैठ जाया करता था। मकान की खिडकी के पास एक ब्राल्डखारे का पेड था। उस पर चढकर खिडकी में से भीतर ग्रा जाना था। किसी में कभी कुछ नहीं कहता था। चुपचाप महाराजशी के पास वैठा रहना था। यह भी एक सम्कारी जीव मालूम होता था। योगीराजजी के सामने ऐसी स्थित मे बैठता था मानो वह भी ध्यान में वठा हो। प्रकवरा इस सर्प को देखकर वडा भयभीन होगया। यह मप् कई-कई घटे तक जब महाराजजी समाधिस्थ होते तो इनके पास बैठा रहता ग्रीर फिर चला जाता । अकवरा इस सर्प पर दृष्टि रखने लगा । एक दिन इसने इने घड़े मे बद करके रख दिया। इसका श्रागय महाराजजी के मीनव्रत के पञ्चात् इस सर्प को उन्हें दिखाने का था। मौन खुलने पर उसने सव समाचार इनसे निवेदन किया। उन्होने श्रकवरा को श्रादेश दिया कि इसका वध न किया जाए, इसे ४-५ मील की दूरी पर किसी वन मे छोड दिया जाए। यह साप भी महाराजजी का भन्न या। यह ३-४ दिन के पश्चात् पुन वहा आगया और पूर्ववत् उस समय इनके पास आकर वैठता जिस समय ये समाधिस्य होते । ग्रकवरा ने फिर यह समाचार इन्हे दिया । वह उमे मारना चाहता था किन्तु महाराजजी ने ग्राज्ञा दी कि इसे किसी वन मे ले जाकर छोडने की ग्रावश्यकता ग्रथवा पकडने की त्रावश्यकता नही । वह साप नियमानुसार समाधिस्य योगीराजजी के पास ग्राकर वैठा रहता था । मनुष्य तो उनके भक्त थे ही किन्तु सर्प जैसे तिषैले जीवो की भी इनके प्रति वडी भिवन थी।

भवत मामकोलू—प्राय सभी जातियो ग्रीर सप्रदायो के लोगो की महाराजश्री के प्रति ग्रास्था ग्रीर श्रद्धा थी। मामकोलू एक वडा प्रतिष्ठित घनाढ्य मुसलमान था। श्रीनगर के उच्चस्तर के लोगो मे इसकी गणना थी। वह बागो के ठेके लिया करता था। उसने अपने दागों के रक्षकों के किए एक ग्राम ग्राजा निकाल रखी थी कि महा-राजजी को जो फल पनन्द हो वे सब उनकी ब्रावश्यकतानुसार नित्यप्रति उनके पास भेज जाया करे। महाराजजी महीने मे केवल दो दिन मीन योला करते थे। सैकडो नर्-नारी इन दिनो मे उनके दर्शनार्थ मक्ती बाग मे ब्राते थे ब्रीर योगीराजजी इन सदको विविध विषयो पर भागण दिया करते थे।

### मथुरा तथा वृन्दावन यात्रा

श्रीनगर ने योगीराजजी त्रमृतगर पधारे। वहा कुछ मान तक मीन वर्ष धारण किया। उनके परचान् मयुरा, वृन्दावन पवारे। आर्यसमाज तथा सनातनधर्म मे वडे जोरदार शास्त्रायं हुआ करने थे। जब दो दलो मे वादविवाद होता है, उनमे से जिस दल को दूसरे दल की दलील का जवाय देना नहीं याता या उस समय नहीं सूभता यो वह तिनियाकर गानिया देने नगना है, निन्दा करता है ग्रीर मरने-मारने को तैयार हो नाता है। प्राय यही बात इन जास्त्रायों में देखने को मिलती थी। मयुरा में ए त्यार स्रायममाजियो का नगरकीनंत निकला था। तय एक कालिज के विद्यार्थियो ग्रीर मयुरा के पण्डों में भगड़ा होगया ग्रीर उसने भहा रूप घारण कर लिया। इसकी ननी यत्र, तत्र, सर्वत्र फीन गई ब्रीर नगरवासियों में एक प्रकार का स्रातक-सा फैल गया था। एक-दो दिन में उस स्थिति में सुधार होगया था परन्तु फिर भी ग्रार्थसमाजिया में चौबे और पण्डे बहुत चिट्ने थे। एक दिन व्यामदेवजी मबुरा से बृन्दावन जा रहे बे, तब कई पण्टो ने उनका तागा रोक तिया और पूछने लगे --पण्डे-- त्या स्राप स्रायंसमाजी हो ? उन स्रायंसमाजियो ने यहा के चीवो स्रीर पण्डो को

बहुत मारा था। थ्यानदेवजी—हमारे प्रार्वनमाजी होने का ग्रापके पास दया प्रमाण है <sup>?</sup> पण्डे--प्रापने पीले यस्त्र जो धारण किए हुए हैं।

व्यासदे । जी-स्या आर्यसमाजी ही पीन वस्त्र धारण करते हैं ? पण्टे—हा। ग्रावनमाज के गुम्गुलों में पहनेवाले विद्यार्थी ही पीत वस्त्र पहिनते हैं। व्यागदेवजी-पीन वन्त्र तो भगवान् कृष्णचन्त्रजी महाराज भी पहिनते थे। प्या वे

भी ग्रायंगमाजी थे ?

यह बात गुनार उनका क्षेत्र शान्त हुम्रा मीर ये पूत्र कहकहा लगाकर हसे। श्री महाराजिको की गूक भ्रीर प्रत्युत्पन्तमतित्व ने पज्ञी का कोध जान्त हुगा भ्रीर उनका पीछा छोटा।

श्री व्यागदेवजी नन्दगाव, वरमाना, गोवर्धन पधारे ग्रीर वृन्दावन तथा इन सब स्थानों के मदिरों के दर्शन किए। बाद में महारनपुर चले गए श्रीर बहा पर वास्ति प्रिटिंग प्रेन के मालिक लाला जी जलप्रसाद के पास एक सास तक ठहरे।

# दक्षिण के तीर्थों की यात्रा

उनर भारत के नभी तीर्थों की यात्रा श्री महाराजजी कर चुके थे। ग्रव दक्षिण भारत भ्रमण का विचार किया। वनारम, प्रयाग, गया ग्रादि होते हुए कलकत्ता पहुचे। यहा पर चार दिन ठहरने के बाद ये पद्मा से मिलने नवहीप गए। वह बहुत

कृश होगई थी किन्तु तप, त्याग ग्रीर ईंश्वरभिक्त में लगी हुई थी। उसको वडा तीव वैराग्य होगया था ग्रीर उसकी तपस्या पराकाष्ठा को पहुच चुकी थी। इसने रुदन करते हुए श्री महाराजजी की चरण-वन्दना की ग्रीर निवेदन किया, मैं पथ भ्रष्ट होगई थी, ग्रपने कर्त्तव्य को भूल गई थी, जीवन के उद्देश्य को ग्राखों से ग्रोभल कर दिया था ग्रीर सब मर्यादाए तोडकर पतन के गर्त मे जा पड़ी थी। ग्रापने मुभे सन्पथ पर लाकर खडा किया है। ग्रव मैं जान्त हू, सुखी हू ग्राँर भगवान् के श्रीचरणों में ग्रहिंग मेरा ध्यान लगा रहता है। महाराजजी ने पूछा, ग्रापको यदि किसी वस्तु की ग्रावश्यकता हो तो मगवा दी जाए। पद्मा ने हाथ जोडकर निवेदन किया, महाराजजी । मुभे किसी वस्तु की ग्रावञ्यकता नहीं है। मुभे तो केवल भगवान के चरणों की भिक्त चाहिए, ग्रन्य कुछ नहीं। महाराजजी के यह पूछने पर कि तुम्हें कलकत्ते से खर्चा तो नियमानुसार मिलता रहता है, पद्मा ने जवाव दिया कि मुभे तो कुछ भी मालूम नही । मुभे तो भोजन-वस्त्र मिल जाता है, ग्रत मुझे ग्रन्य कुछ नही चाहिए। मैंने तो रुपये का स्पर्भ करना भी त्याग दिया है। पद्मा को ज्ञान, ध्यान का उपदेश देकर महाराजजी कलकत्ता लीट गए। यहा पर केवल एक दिन ठहरकर जगन्नाथ पुरी के लिए प्रस्थान किया। यहां पर तीन दिन तक निवास करके पुरी तथा ग्रन्य ग्रनेक ग्रासपास के मदिरों के दर्शन किए। यहा से भुवनेश्वर पथारे ग्रीर वहां से विजवाडा में पन्ना नर्रासह के दर्शन के लिए गए। इसके वाद मदुरा पंचारे स्रीर यहा पर एक धर्मनाला मे निवास किया। यहां पर मीनाक्षी देवी का एक वडा विशाल मदिर है। यह मदिर वहुत सुन्दर बना हुआ है। प्राचीन भारत की कारीगरी का एक ग्रत्युत्तमे उदाहरण है। इस मदिर को देखने के लिए भारतीय तथा विदेशी यात्री दूर-दूर से ग्राते हैं ग्रीर इसकी ग्रहितीय कला को देखकर ग्राश्चर्य से दान्ती तले अगुली दवाते है। यहा से कन्याकुमारी लगभग १५० मील है। तीन दिन तक मदुरा में ठहर कर कन्याकुमारी के लिए प्रस्थान किया। मार्ग मे सर्वप्रथम नोदादरी में ठहरे। यहा पर एक मदिर है जिसमे तेल चढाया जाता है। यह तेल एकत्रित होकर एक कुण्ड मे जमा होता रहता है। कुष्ठ के रोगी इसे श्रीपिध के रूप में प्रसाद समभकर ले जाते है। इसकी मालिश करने से कई रोग मिट जाते है। कभी-कभी कूष्ठ रोग से भी रोगी मुक्त होते देखे गए हैं।

जिस प्रकार पूर्वकाशी (वनारस) के समान उत्तर में एक उत्तरकाशी है, इसी प्रकार के दक्षिण में एक दक्षिणकाशी भी है। नोदादरी से महाराजजी दक्षिणकाशी पंघारे। यहा पर भी पूर्वकाशी तथा उत्तरकाशी के समान विश्वनाथ का एक वड़ा विशाल मदिर हैं। यहा पर और भी अनेक मदिर हैं। एक ऊचे पर्वत से एक वड़ा भरना गिरता है। उसका दृश्य वड़ा सुहावना है। यहा पर प्राय यात्री आकर स्नान करते है। दक्षिणकाशी पूर्वकाशी का प्रतिद्वन्द्वी मालूम होता है। वड़ा विस्तृत नगर है। भूमि शस्यश्यामला है। दक्षिणकाशी को यहा के लोग 'उत्तालम' कहते है। महाराजजी कई दिन तक यहा ठहरे। भरने के ऊपर एक बहुत वड़ा मैदान है। इसमें केले बहुत होते है। इस मैदान में से एक नदी वहती है। कदाचित् यही भरने के रप में पर्वत से गिरती है। इस वन में एक योगी सन्त के दर्शन हुए। ये थोड़ी हिन्दी वोलना जानते थे। ये केलो के अतिरिक्त और कुछ नही खाते थे। ये भी कई वर्षों

मे िक्नी विद्वान् योगी की तलाश मे थे। इनके आग्रह से महाराजजी भी इनके पास ही ठर्र गए और इनको हठयोग की िकषाए तथा विविध प्रकार के प्राणायामादि िम गए। इनकी महाराजजी के प्रति घीरे-धीरे वडी श्रद्धा और भिवत होगई। इसके वाद महाराजजी जनादंन मिदर के दर्शन करने पधारे। इसके पश्चात् त्रिवेन्द्रम गए। वहा पर पर्मनामजी के मिदर के कुछ ही दूर एक छोटे से उद्यान मे एक कुटिया मे ठहरे। नित्यप्रति पर्मनाभजी के दर्शन करते थे। यह मिदर वडा भव्य है। इसमे पर्मनाभजी की एक विशान प्रतिमा है जो क्षीरशायी भगवान के समान लेटी हुई है। महाराजजी जिनने दिन यहा पर रहे खिचडी बनाकर पाते रहे। इस उद्यान मे एक दिख्णी पण्टिन आया करते थे। ये वडे सङ्जन थे और सस्कृत के विद्वान् थे।

तम्बे नारायण नथा छोटं नारायण के मिंदरों के भी दर्शन किए किन्तु ये जीर्ण तथा गीर्ण प्रवस्था में थे। उन मिंदरों के निर्माना कारीगरों ने इनके निर्माण में प्रयनी कारोगरों का बटी निर्मुणना से परिचय दिया है। दक्षिण के सभी मिंदर भारत की प्राचीन कर्ना के यटे मुन्दर नमूने हैं। यहां के विशाल, कलापूर्ण तथा सुन्दर मिंदरों के गमान मिंदर किया भी प्रान्त में उपलब्ध नहीं है। थोड़ी सी दूरी पर सुन्दर महादेवजी का एक विशाल मिंदर है जो अपनी महानता और गौरव का स्वय ही योतक है। उनके आगे कुछ मील पर कन्याकुमारीजी का मिंदर है। वहा पर महाराजजी चार दिन नक ठहरे और चारों ही दिन उस मिंदर में दर्शनार्थ जाते रहे। मूर्ति के आभूपणों में बटे-बटे हीरे लगे हुए थे जिनकी चमक राित्र में बहुत दूर तक जानी थी। उनकी आभा से मूर्ति बडी देरीप्यमान रहती थी। कन्याकुमारी भारत की दिल्यों नीमा है। हिन्द महामागर उसके पाव घोता है। यहां से ये वापस मदुरा आ। गए बीर एक नमशाला में निवास किया। मीनाक्षी देवी के मिंदर के सीन्दर्य में बटे प्रनावित्र थे। उनका प्रत्येक भाग सीन्दर्यपूर्ण था, विशेषकर स्तम्भ। कई एक बटे स्नम्भ और कई छोटे स्नम्भ काटकर और तराश कर बनाए गए थे। ये नित्य उम मिंदर में दर्शनार्थ जाने और पण्टो ही उसके सीन्दर्य का प्रवलोकन किया करते थे।

धनराजजी से परिचय—श्री महाराजजी नित्यप्रति मीनाक्षी के मन्दिर में एक एकान्त रथान में बैठकर ध्यानाभ्याम किया करते थे। मन्दिर का वातावरण शान्त था उपलिए उसी न्थान को इन्होंने श्रभ्याम के उपयुक्त समभा। धनराजजी, उनकी पत्नी तथा लउकी कृष्णा नित्यप्रति इनको समाथिस्थावस्था में देखा करते थे। एसमें उन पर बटा प्रभाव पटा श्रोर उनका श्राक्षण योगीराज के प्रति दिन प्रति दिन बटना गया। एक दिन माना श्रोर पुत्री चिरकाल तक महाराजजी के सामने पत्री होकर उनको देगनी रही श्रीर प्रभसा करती रही। माना इन्हें भोजनार्थ निमित्रत करना चाहनी थी। गृहकार्यवद्यान स्वय तो घर चली गई। कृष्णा को इन्हें समाधि से च्युत्थान होने पर भोजन के लिए श्रपने साथ लाने के वास्ते वहा छोड गई। कृष्णा २२-२३ नाल की युवनी थी। महाराजजी ने जब श्राखे खोली तो उसे श्रपने समक्ष पदा पाया। उसने भुककर प्रणाम किया श्रीर भोजनार्थ उसके साथ उसके घर जाने की प्रार्थना की। एक प्रपरिचित देवी के साथ इन्होने जाना उचित नही समभा। जब वह बार-बार श्राग्रह करने लगी तब महाराजजी ने कहा कि श्रपने पिताजी को भेजो, हम उनके साथ जाएगे। वह घर गई श्रीर श्रपने पिता को भेजा। इनका भेजो, हम उनके साथ जाएगे। वह घर गई श्रीर श्रपने पिता को भेजा। इनका

नाम धनराज था। ये उनके साथ गए और इस परिवार में भोजन किया। भोजनो-परान्त कृष्णा की माता ने निवेदन किया कि जब तक ग्राप मदुरा मे है नव तक त्राप यही भोजन किया करे। उसने कहा कि हन लोग पजाब के रहने वाले थे। धनराजजी के पिता दक्षिण में ग्राकर बस गए थे ग्रीर यही पर ग्रपना कारो-वार प्रारम्भ कर दिया था। हमारे विवाह-सम्बन्ध ग्रभी भी पंजाय ग्रीर दिन्ली मे वार प्रारम्भ कर । दया था। हमार । ववाह-सम्बन्ध ग्रभा भा पजाब ग्रार । वन्ती में ही होते हैं। कुःणा के विवाह का प्रबन्ध करने के लिए हम पजाब जाने का विचार कर रहे हे। वर्षों से यहा रहने के कारण पजाब से सम्बन्ध कुछ टूट-सा गया है। मेरे पीहर में कोई बेप नहीं रहा ग्रौर यहा पर भी हम प्रकेले ही हैं। रात-विन उस लड़की की चिन्ता मुक्ते खाए जा रही है। क्या कर, कुछ समक्त में नहीं ग्रा रहा। यहा पर हमारी दुकान हे, जमें छोड़कर भी नहीं जा सकते। क्या कर, न हम दक्षिणी ही बने ग्रोर न पजाबी ही रहे। ये सब बात सुनने के बाद नहाराजजी धर्मजाला में चले गए। हूसरे दिन कृष्णा युलाने गाई नो उसके साथ पुन भोजन करने के लिए चले गए। कृष्णा की माताजी के ग्रनुरोध से महाराजजी न प्रान काल द से ६ वजे तक उनके मकान पर कथा करना पारम्भ किया। एतिहिन गीना एवं एवंडन ने के तक उनके मकान पर कथा करना प्रारम्भ किया। प्रतिदिन गीता पर प्रवचन होता था। यह प्रवचन लगभग १५ दिन तक चलना रहा। एक दिन धनराजजी के श्राग्रह करेने पर योगीराजजी ने श्रपनी श्रात्मकथा नक्षेप मे नुनाई। जब बनराजजी को यह पता लगा कि ये ब्रह्मचारी हे तव तो व इनकी स्रोर प्रार भी स्रियक स्राक्पित होगए और तुरन्त उनके मन मे कुरणा के विवाह के विचार आने लगे। कुरणा की माताजी ने वडे चातुर्यपूर्ण ढग से कृष्णा के विवाह का प्रस्ताव रखा श्रीर तहाचर्य वत की महती कठिनाइयों का प्रदर्शन किया। चारों ग्राथमों के धर्म गलन की महत्ता वताई। धन, ऐश्वर्य, मुख और याराम ने कई प्रकार के प्रलोभन दिए, विन्तु इनके जीवन में अनेक ऐसे अवसर पहले भी आ चुके थे। सभी अवसरी पर ये अपनी उद्देश्यपूर्ति के लक्ष्य पर हिमालय के समान ग्रंटल रहे। विसी प्रकार का प्राकर्षण तथा प्रलोभन इन्हे पथ-विचलित नहीं कर सका। नारद गुनि का उपारयान मुनाकर कहा कि मैं इनके समान मूर्व नहीं हूं। मैं अपने जीवन के तथ्य को कभी आखों में स्रोभन नहीं कर सकता। मुक्ते यदि ये सब कुछ ही करना था तो भना में अपने घर स्रोर परिवार को छोडता ही क्यों रे सात्म-विज्ञान तथा प्रह्म-विज्ञान इनका जीवन का चरम लक्ष्य था। इन्होंने कभी प्रेय-मार्ग की ग्रोर ग्रपना भुकाव नहीं होने दिया। सदैव श्रेय-मार्ग का अनुसरण किया। जिस महापुरुष ने अपना सारा जीवन तपञ्चर्या, ध्यान, साधना, योगाभ्यास और समावियो में व्ययीन किया हो, भला वह हाइ-मास के नश्वर पुतले और चादी-मोने के टुकड़ो पर कैंने ग्रासकत हो सकता था। इस प्रकार के भोग तो पूर्व जन्मों में भी भोगे हैं। जब अब नक इनसे तृष्ति नहीं हुई तो प्रव क्या होगी । विषय कभी भोग से जान्त नहीं होते, तो भी मनुष्य इनके प्रति तृष्णा का परित्याग नहीं कर सकता। मनुष्य का वार्धक्यावस्था में गरीर जीर्ण हो जाता है किन्तु 'तृष्णेका तरुणायते'। इस वात को ब्रह्मचारीजी ने भली प्रकार से पिछले कई वर्ष से ग्रंपने हृदय पर अिकत किया हुग्रा था, ग्रंत वह भोग ग्रीर विलासिता की ग्रोर ले जाने वाली वातों को एक जान से सुनकर दूसरे से निकाल देते थे। अब इन्होंने मदुरा में रहना उचित नहीं समका। वहा से कही अन्यत्र जाने में ही अपना कल्याण समभा।

रामेश्वर के लिए प्रस्थान-- ब्रह्मचारीजी ने रामेश्वर जाने का निश्चय किया। रात्रि की गाडी से चलकर प्रात रामेश्वर पहुच गए। वहा एक धर्मजाला मे निवास किया। वहा पर इन्होंने सात दिन तक निराहार रह कर प्रायश्चित्त किया। ऐसा इसलिए किया कि लोग वार-वार इन्हें मायाजाल में फसाने का यतन क्यो करते हैं। उनके श्रेय-मार्ग मे क्यो वार-वार वाघाए उपस्थित होती है। इन विघ्नो के निवारण के लिए रावंगिकतमान भगवान् से प्रार्थना की । ग्रपराव किया वनराज ग्रीर उसकी धर्मपत्नी ने, किन्तू उनके अपराध के लिए प्रायश्चित्त किया श्री महाराजजी ने । दस दिन तक ये रामेश्वर मे ठहरे। दर्शनार्थ नित्य मन्दिर मे जाते थे। इस मन्दिर की परिक्रमा मे मधुर जल के कूए थे। इसके चारो कोनो पर वेदपाठ होता था। यहा पर इन्होंने अनेक प्राचीन इमारतों को देखा। यहां से धनुपकोटि गए। इसके पश्चात् मद्राम पहुचे ग्रीर यहा पर तीत दिन तक रहकर यहा के दर्शनीय स्थानो को देखा। यहा में श्रीरगपुरम् गए। यहा पर एक वडा विज्ञाल मन्दिर है जिसके चारो ग्रोर प्रकोटा खिचा हुया है। इस प्रकोटे में वडे विशात दरवाजे वने हुए है। इसके घेरे मे यहन वडा वाजार बना हुम्रा है। मन्दिर मे एक छोटी-सी मणिमय मूर्ति है। इसी मन्दिर मे एक दिन लाहौर तथा अमृतसर के कई सुपरिचित पुरुषो तथा देवियो से नाक्षात्कार हुग्रा। इनकी सख्या लगभग तीस चालीस थी। इन सबने मिल कर महाराजश्री में अनुरोधपूर्वक डकट्ठे यात्रा करने की प्रार्थना की । इन्होने इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और सबने इकट्ठे होकर आगे की यात्रा के लिए प्रस्थान किया। जिस-जिम स्थान पर एक से ग्रधिक दिन तक ठहरते वही महाराजजी उप-निपद् की कथा किया करते थे। इनमें से कड़यों ने पहिले भी इनकी कथाए सुनी थी। इस उपनिषद् की कथा ने यात्रा को ग्रीर भी ग्रविक ग्राकर्षक ग्रीर मधुर वना दिया था। रेलगाडी मे, यस मे, पैदल, सभी जगह अध्यात्म चर्चा वरावर होती रहती थी श्रीर जहा ठहरते थे वहा उपनिपदो की कथा होती थी। ग्रन्य यात्री भी इस कथा मे ग्राकर लाभ उठाने थे। गिवकाची, विष्णुकाची, कुमाकोनम, ग्रारकोनम तथा पक्षीतीर्थादि के दर्शन कर वालाजी पहुच गए। वालाजी का मन्दिर एक वहुत ऊचे पहाड पर स्थित है। सहस्रो मीढिया चटकर मन्दिर मे जाना पडता है। यहा पर ग्रधिक न ठहर कर किष्किच्या, तथा पम्पा सरोवर गए। पम्पा सरोवर पर यात्रियो को वडा कष्ट उठाना पडा। यहा पर मच्छरों का वटा वाहुल्य था ग्रीर उनके डक भी वडे तीक्ष्ण थे। चादर ग्रथवा कम्बल श्रोहने पर भी उनके ऊपर से हक भीतर घुसाकर काटते थे। यात्री इनके कारण रात भर सो न सके। वडी वेचेनी रही। यहा से विट्ठलपुर गए ग्रौर विट्ठलपुर से गोलापुर होते हुए वम्बई पहुच गए। यहा पर कालवा देवी रोड पर लाला विश्वनदास वृजलाल के पास ठहरे। ये माता विशनदेवी के पुत्र थे। दोनो वडे सज्जन थे। ये देवी महाराजजी की सुपरिचित थी। इनके मकान पर इन्होंने एक वार कई दिनो तक कथा की थी। सेठ तुलसीटासजी तथा इनके परिवार से इस यात्रा में कुछ विशेष परिचय होगया था। इनकी पत्नी वडी वार्मिक तथा सेवापरायण थी। इन्होने कई वार भोजन के लिए निमत्रित किया था। कुछ दिन वम्बर्ड मे निवास करके प्राय सभी दर्शनीय स्थान देखे।

इसके उपरान्त द्वारिका की यात्रा करने का विचार किया। वम्बई से भी वहुत से यात्री साथ हो लिए। मार्ग मे जूनागढ ठहरे। यहा पर एक वडे ऊचे पर्वत

पर दत्तात्रेयजी महाराज की चरणपादुका के दर्शन करने गए। रास्ते मे जैनियो के कई विशाल मन्दिर देखे। इन मदिरों को देखते-देखते सायकाल होगया। लौटते समय रात्रि होगई। ग्रासपास के वनो से शेरो की गर्जना सुनकर सब भयभीत हो रहे थे। केवल योगीराजजी ही निर्भीक भाव से चल रहे थे ग्रीर ग्रन्य यात्रियों को हिम्मत बधा रहे थे। इसके पश्वात् सर्वप्रथम सारे सघ ने मूलद्वारिका जाने का निञ्चय किया। यहा का मदिर समुद्र के किनारे है। सभी यात्रियों ने पहिले समुद्र स्नान किया ग्रीर फिर मदिर मे दर्शनार्थ गए। दर्शन करके ग्रासपास के ग्रन्य कई स्थानो को देखकर सारा सघ समुद्र के किनारे स्नाकर बैठ गया स्नीर महाराजजी से व्याख्यान देने के लिए निवेदन किया। इस सघ मे ७० नर-नारी थे ग्रीर इतने ही इघर-उघर से ग्राकर ग्रीर एकत्रित होगए थे। सबने वडे प्रेम से महाराजश्री के वचनामृत का पान किया। कथा की समाप्ति पर सभी श्रोताग्रो ने इन्हें घेर लिया ग्रीर हाय जोडकर प्रार्थना की कि श्रापने कई बार कई लोगों को समाधि का श्रानन्द प्रदान किया है। हम भी श्रापके म्रनन्य भक्त है, भमे भी इस ग्रानन्द-रस का ग्रास्वादन करवाने की कृपा की जाए। समुद्र का किनारा है, वडा उत्तम स्थान है, एकान्त भी है, ग्रत हमे भी ग्राप समाविस्थ करने का अनुग्रह करे। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए चालीस व्यक्ति तैयार हुए। महाराजजी ने इन सबको समाहित होकर बैठ जाने का ग्रादेश दिया ग्रीर कहा कि वे ग्रपने मनोबल से जब तक चाहेंगे इन्हे समाधिस्य रखेंगे। स्थान वहुत ज्ञान्त तथा एकान्त था। केवल समुद्र की लहरों की त्रावाज मुनाई देती थी। इतनी वडी सख्या में लोगों का समाधि के प्रति उत्साह देखकर ये वडे प्रसन्न थे। इन्होंने ग्रपने मनोवल में तथा विशेप शक्ति के प्रयोग से इन सबको तीन घण्टे तक समाधिस्थ रखा। सब एक ही म्रासन से समाहित होकर मडोल वैठे रहे। सात वजे इन्हे विठाया गया मीर रात्रि के दस वजे इनका समाधि से व्युत्थान हुग्रा। महाराजजी का ग्रादेश पाकर सवने ग्रपनी म्राखे खोली। जब इन सबको भोजन करने के लिए कहा गया तो सबने एक स्वर से कहा कि उन्हें किसी प्रकार भी इस समय भूख तथा प्यास नहीं है और न कुछ खाने-पीने की इच्छा ही है। सब लोग उठे ग्रीर धर्मशाला मे चले गए। मूलद्वारिका मे तीन दिन तक निवास करके सब भेटद्वारिका गए। यहा पर भी तीन दिने तक ठहरे। यहा का मदिर वडा विज्ञाल तथा सुन्दर है। यहा पर मदिर-प्रवेश से पूर्व ही भेट ले ली जाती है। जो भेंट नही देते उन्हें मदिर-प्रवेश की ग्राज्ञा नही मिलती। इसीलिए इसे भेटद्वारिका कहते है। महाराजजी ने यहा के पुजारी से संस्कृत मे वार्तालाप किया। इन्होने कहा कि वलपूर्वक भेट लेने का तरीका तो ठीक नही है। भेट लिए विना मदिर मे प्रवेश से रोकना अनुचित है। अपनी श्रद्धा, भिनत और सामर्थ्य के अनुसार जो यात्री जितनी भेंट मदिर में चढाए उसे ही स्वीकार करना चाहिए। यह भेट नही, यह तो एक प्रकार का टैक्स है। इसका मतलव तो यह हुआ कि जो निर्धन है वे भगवान के दर्शन ही नही कर सकते । विशेषकर भगवान् कृष्ण के जो गरीव ग्वालो के सखा थे, जो सन्तो के परित्राता, दु खियो के दु खहर्ता तथा निर्घनों के धन थे। दर्शको से टैक्स लेना उनके साथ अन्याय करना है। ब्रह्मचारी और सन्यासी जो कभी अपने पास रुपया पैसा रखते ही नहीं, वे तो कभी भी दर्शन न कर सकेंगे। पुजारी ने इन्हें तो भीतर जाने की आजा दे दी किन्तु उनके साथी अन्य यात्रियों में से किसी को भी भेट दिए विना भीतर नही जाने दिया । इसीलिए इसे भेटद्वारिका कहते हैं।

जब सब यात्री दर्गन करके लौट ग्राए तब पुजारी ने महाराजजी को एक ग्रोर बुलाया ग्रीर कहा, ग्राप ठहरिए, ग्रापको विशेषरूपेण दर्शन करवाए जाएगे। वह उनको एक गद्दी के पास ले गया और उनसे निवेदन किया कि ग्राप तो यही ठहर जाइए। यहा की गद्दी पर बैठकर मुख से जीवन व्यतीन कीजिए। यहा के महन्त को देवलीक हुए कुछ ही माग हुए थे। मदिर के अधिकारी एक योग्य ब्रह्मचारी को गद्दी पर विठाने के लिए सोज कर रहे थे किन्तु ग्रभी तक उन्हें सफलता लाभ न हो सकी थी। इस गद्दी पर वालब्रह्मचारी ही बैठ सकता था। पुजारी तथा यहा के ब्रिधकारीवर्ग सब महाराजजी के व्यक्तित्व, तेज, श्रोज श्रीर संस्कृत सभापण से वडे प्रभावित थे। भ्रध्ययन काल में ये सब विद्यार्थियों से मस्कृत में ही वार्तालाप करते थे और दक्षिण यात्रा में तो जहां भी गए वहां पर मदिरों के पुजारियों तथा अधिकारियों से सदैव मन्कृत मे ही बातचीत करते थे। भेंटद्वारिका के श्रधिकारियो ने इनसे गद्दी पर बैठने का भागह निया, तय उन्होंने उनको बडा सुन्दर उत्तर दिया कि मैं एकदेशी भगवान् की नेया नहीं करना चाहता। में तो ऐसे भगवान् की गद्दी या सेवा चाहता हूं जो सब जगह मौजूद है। जो नवंज, परिपूर्ण, मर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वेनियन्ता, सर्वेकर्ता, सर्वधर्ता, सर्वेद वर्तमान, तीनो कालो में समान, सर्वरक्षक, सर्वपालक, सर्वव्यापक, निराकार, निरययव, तथा निष्किय हो। यदि आप उसकी गद्दी दिलाना चाहते हो तो मैं तत्पर हु। यह मुनकर मूब अधिकारी चुप होगए। उसके पञ्चात् प्रभास क्षेत्र आदि के दर्शन किए। यह बही क्षेत्र है जहा पर यादव बंबी परस्पर युद्धे करके समाप्त होगए थे। यही पर ब्याप ने भगवान् श्रीकृष्ण के पैर में घातक तीर मारा था।

इसके परनात् राजपूनाने में तीर्थाटन किया। यहा पर नाथद्वारा, एकलिङ्ग, गतकरीनी स्नादि न्यानों में स्थित मदिरों के दर्शन किए। चित्तीड का किला भी देखा। स्रव यात्रा करने-करने थक गए थे, गर्मी भी स्नविक होगई थी, स्रत मथुरा, वृन्दावन होते हुए स्नमृतसर चले गए।

श्रमृतसर में लाला शिवसहाय के मकान पर ही निवास किया। श्रव की वार मौतीराम की वगीची में नहीं ठहरे। यहां कुछ दिन निवास करके गर्मी के कारण काश्मीर चले गए।

## तीन मास का काष्ठ मौन

कारमीर में प्राय मभी स्थान महाराजजी के देखे हुए थे, किन्तु इन्हें सबसे ग्रियम मुपनी बाग ही निवास के लिए पसन्द था, ग्रत यही ठहरे। यहा रहने में कई मुजियाए थी। नवने बटी मुविधा भ्रमण की थी। हारवन भील मुफ्ती बाग के पास ही थी। वहा कुछ एकान्त भी था। उसी भील के किनारे भ्रमणार्थ जाया करते थे। मुपनी बाग में ग्रवकी बार उन्होंने ३ मास तक काष्ठ मीन रखा। इस ब्रत को समाप्त मुक्ती कुछ दिवस तक श्रीनगर में निवास किया। तत्परचात् ग्रमृतसर के लिए प्रस्थान किया।

श्रमृतसर मे निवास

श्रमृतसर में लाला मोतीराम की वगीची में ठहरे। लाला मोतीरामजी का न्वगंत्राम होगया था। दीवाली के श्रवसर पर जो सन्त महात्मा श्राते थे उनके लिए

वे क्षेत्र खोला करते थे। यह क्षेत्र लगभग एक मास तक चलता था। इस वार व्यवस्था की कमी होने के कारण क्षेत्र ग्रव तक नहीं खुल सका था। मोतीरामजी की पत्नी तथा उनका दामाद गुरुदयाल महाराजजी के ग्रमृतसर पधारने की प्रतीक्षा कर रहे थे जिससे उनकी व्यवस्था तथा निरीक्षण में क्षेत्र खोला जाए। इन दोनों ने इनसे क्षेत्र की सव व्यवस्था करने के लिए निवेदन किया। इन्होंने ग्रपनी स्वीकृति दे दी। क्षेत्र के लिए सव सामान मगवा लिया गया ग्रीर सन्तो-महात्माग्रों के भोजन की पूरी-पूरी व्यवस्था कर दी गई। यह लगर दीवाली के ग्रवसर पर एक मास तक चला करता था। मोतीरामजी के देहान्त के कारण उनकी पत्नी मानकीर की ग्रायिक स्थित उतनी ग्रच्छी नहीं रही थी ग्रत महाराजजी ने ग्रपने श्रद्धालु भक्त देवीदासजी से प्रति वर्ष इस क्षेत्र का सारा खर्चा देने के लिए कहा ग्रीर उन्होंने इनकी ग्राजा का पालन किया।

भक्त देवीदासजी-भक्त देवीदास वहे घनवान थे ग्रौर साथ ही दानी, धर्मातमा तथा ईश्वर के ग्रनन्य भक्त थे। वे दिन में तीन वार साधना करते थे। प्रांत ३ वजे से ५ वजे तक, फिर ६ वजे से १० वजे तक तथा सायकाल नूर्यास्त के वाद एक घण्टा। ये केवल मानसिक जाप तथा ध्यान किया करते थे। ये देण में हो ग्रथवा विदेश में, रेलगाडी से यात्रा कर रहे हो या मोटरगाडी से, कभी ग्रपने जाप ग्रौर ध्यान का समय नहीं चूकते थे। कई वार ये महाराजजी के साथ कई-कई महीनों तक रहे हैं किन्तु कभी ग्रपने ग्रभ्यास में पाच मिनिट का भी विलम्ब नहीं होने दिया। इनके वडे पुत्र को डाकुग्रों ने घर लिया था ग्रौर पिस्तील से उनकी हत्या कर दी थी। जब उनकी ग्रन्त्येष्टी की तैयारी हो रही थी, पारिवारिक सदस्य विलाप कर रहे थे, घर में चारों ग्रीर करण कन्दन हो रहा था, हाहाकार मचा हुग्रा था ग्रौर सभी ग्रातुर तथा व्याकुल हो रहे थे, उस समय भी लाला देवीदास पूजा, जाप तथा ध्यान में बेठे हुए थे। इसे कहते हैं स्थितप्रजता महाराजजी के सपर्क से उनके भक्तो में ग्रलौकिक परिवर्तन हो जाता था। उनका नैतिक स्तर एकदम ऊचा उठ जाता था ग्रौर उनकी भगवान के प्रति ग्रास्था तथा भित्त हो जाती थी। लाला देवीदास प्रयाग में कुम्भ तथा ग्रम्बंकुम्भी के ग्रवसर पर सदा ही महारमाग्रों के लिए गीतकाल में दो तीन मास के लिए ग्रन्त-क्षेत्र खोला करते थे। कोट वावा द्याराम के स्थान पर इस क्षेत्र को खोला जाता था। इस स्थान पर कई गुफाए है जिनमें सन्त महारमा निवास किया करते हैं। कोट वावा दयाराम में स्वामी पूर्णानन्द तथा सन्त पजानन्द रहा करते थे। ये दोनो वडे त्यागी सन्त थे।

श्रमृतसर से महाराजजी हरिद्वार चले गए। वहा पर मोहन श्राश्रम मे ३ मास तक ठहरे, फिर जालधर गए श्रौर डा॰ नारायणिसह के पास ठहरे। इनकी पत्नी डा॰ विद्यावती वडी योग्य गृहिणी है। ये वडी ईञ्वरभक्ता श्रीर दानजीला है। नित्य नियमानुसार जाप, ध्यान तथा यज्ञादि करती है।

#### चम्बा यात्रा

जालधर से महाराजजी होशियारपुर चले गए ग्रीर वहा पर डाक्टर मोतीसिह के पास ठहरे । उन्होंने ही इन्हें निमत्रण देकर जालधर से बुलाया था । वहा से चौधरी ज्योतिसिंह के साथ चम्बा के लिए प्रस्थान किया । यह स्थान महाराजजी का देखा हुम्रा था किन्तु उनके भाग्रह मे ये उनके साथ जाने को तैयार होगए। यहा पर चौधरी ज्योतिसिह के मित्र डाक्टर मेलाराम चीफ मैडीकल ग्रफ्सर ये। इनकी कोठी रावी नदी के किनारे पर थी। यह स्थान वडा सुहावना था ग्रत यही पर ठहरने का निञ्चय किया। श्री महाराजजी चीधरी ज्योतिसिंह के साथ चम्वा नही गए थे क्योंकि उन्हें ग्रमृतसर में कुछ काम था, ग्रत होशियारपुर से ये ग्रमृतसर चले गए थे। चौधरी ज्यों तिसिंह इनसे पहिले चम्बा चले गए थे ग्रीर ये कई दिन पीछे पहुचे थे। जब डा॰ साहव की कोठी पर गए तो वहा चीवरी साहव नही दिखाई दिए। पूछने पर मालूम हुया कि डाक्टर मेलाराम ग्रीर चीधरी साहव मे वातचीत करते-करते कुछ नाराजगी होगई, चौधरी साहब ने अपना वडा अपमान समभा और वे वापस चले गए। महा-राजजी ने भी अब यहा ठहरना अनुचित समभा, अत एक दो दिन यहा ठहरने के पञ्चात् कागडा, धर्मजालादि स्थानो पर जाने का निञ्चय कर लिया। इसी बीच मे चम्बा त्रार्यसमाज के कुछ परिचित सज्जनों ने महाराजजी से ग्रार्यसमाज के उत्सव पर भाषण देने की प्रार्थना की ग्रीर महाराजजी को पाम ही एक कोठी मे ठहरा दिया। साय-काल जब डाक्टर मेलारामजी महाराजजी से मिलने श्राए तो ईश्वर के सम्बन्ध मे नथा वेदो भी प्रामाणिकना के सम्बन्ध में वानचीत होने लगी। डाक्टरजी न तो ईश्वर को, न पुनर्जन्म को ग्रीर न वेदो को ही मानते थे। साधु ग्रीर सन्तो मे उनका विश्वास नहीं था। महाराजजी ने उन्हें वेद श्रीर शास्त्रों के प्रमाण देकर समकाया, किन्तु उनके कोई भी बात समभ मे नहीं ग्राई। ये वडे दम्भी, ग्राममानी, हठी ग्रीर वितण्डा-वादी थे। इनकी उदृण्डता को देखकर महाराजजी ने कहा, भगवान की कृपा है कि तुम एक ऊचे पद पर हो, उसका धन्यवाद करो। इस पर डाक्टर ने कहा कि मैने तो अपनी योग्यता मे यह पद प्राप्त किया है, यदि मुक्तमे योग्यता न होती तो यह पद मुक्ते किम प्रकार मिल सकता था । महाराजजी ने कहा, देखो प्रभु से डरो । अभि-मान का मिर नीचा होता है। मुक्ते ऐसा भास रहा है कि दो चार मास मे ही तुम यहा से ग्रपमानित होकर निकाल दिए जाग्रोगे। ऐसा ही हुग्रा भी। इनका राजमत्री माबोरामजी से भगटा होगया और डाक्टरजी को बरखास्त कर दिया गया और चम्बा स्टेट मे निकाल दिया गया। कई मास वाद जब कभी महाराजजी होिंगयारपुर गए तो डाक्टर मेलाराम इनमे मिले। वडा पञ्चाताप किया श्रीर वताया कि श्रढाई महीने वाद ही ग्रपमानित होकर उन्हें चम्वा छोडना पटा। श्रव उनकी भगवान मे ग्रास्था होगई थी ग्रीर भजन करना प्रारम्भ कर दिया था।

धर्मशाला, कागडा तथा फुल्लू के लिए प्रस्थान—ग्रायंसमाज चम्वा के वािपको-त्सव पर चार व्याल्यान देने के पञ्चात् महाराजजी ने कागडा के लिए प्रस्थान किया। यहां से एक मार्ग धर्मशाला के लिए नजदीक पडता था किन्तु यह था वडा दुर्गम। उस मार्ग में कई ऊचे पहाड ग्राते थे जिन्हें पार करके जाना पडता था। ब्रह्मचारीजी ने इसी मार्ग से जाने का निश्चय किया। ग्रपना कुछ सामान चम्वा में ही छोड ग्राए थे। थोडा-मा ही सामान साथ लाए थे। दो दिन तक पहाडो पर चलने के पश्चात् १० वजे के लगभग एक निर्जन वन में पहुचे। वहा एक भालू से सामना करना पडा। भालुग्रो का महाराजजी से वडा प्रेम था। उन्हें इनके हाथो पिटने ग्रीर घायल होने में वडा मजा ग्राता था। यह भालू इनका मार्ग रोककर खडा होगया। इधर-उधर से पत्थर इकट्ठे करके उसे मारना प्रारंभ किया जिससे वह मार्ग से हट जाए, पर वह हटा नहीं। तब इन्होंने ग्रंपना चाकू निकाला श्रीर उचित ग्रंवसर देखकर उसकी नाक पर बलपूर्वक मारा। उसकी नाक फट गई ग्रीर रुविर की धारा वह चली। वह कराहता हुग्रा दूर चला गया। कुछ काल तक इसी वन में विश्राम किया। यहां से चलकर पाचवें दिन धर्मशाला पहुंच गए। यहां पर ग्रायंसमाज मदिर में ठहरे। यहां के दर्शनीय स्थान इससे पूर्व ही देख चुके थे, फिर दुवारा भी उन्हें देखने के लिए पधारे। यहां से कागडा, पालमपुर, वैजनाथ तथा मण्डी होते हुए कुल्लू पहुंचे। यहां पर व्यास नदी के पार एक वगीचा था। उसमें एक कुटिया में निवास किया। यहां से दशहरे के वाद पठानकोट चले गए ग्रीर वहां कुछ दिन तक ग्रंपने भक्त नारायण दास के पास ठहरकर ग्रमृतसर के लिए प्रस्थान किया।

### पुनः श्रमृतसर मे निवास

यहा ग्राकर पूर्ववत् मोतीरामजी की वगीची मे निवास किया। लाला काहन चन्द खन्ना महाराजजी के वड़े भक्त थे। उन्हें पता चला कि ये मीन व्रत लेने वाले हैं, ग्रत निवेदन किया कि इस बार ग्रधिक लम्बा मीन व्रत न किया जाए क्यों कि उनका विचार कलकत्ता से तीर्थाटन के लिए एक विशेष रेलगाडी चलाने का था। इसका सब प्रवध होगया था। जनवरी से यात्रा प्रारभ होगी ग्रौर ७२ तीर्थों के दर्शन इसमें किए जाएगे। महाराजजी से भी साथ चलने का ग्राग्रह किया।

# भारत के मुख्य-मुख्य वहत्तर तीर्यो की यात्रा

महाराजजी तथा ग्रमृतसर से जो लोग तीर्थाटन के लिए विशेष रेलगाडी से जाने वाले थे, दिसम्बर १६३० को कलकत्ता पहुच गए। इस गाड़ी को ३१ दिसम्बर को कलकत्ता से चलना था। सारी यात्रा २ मास ग्रीर १० दिन की थी। इसमे यात्रा करने वालो की सख्या लगभग ४०० थी। १५० रुपया थर्ड क्लास का टिकट या ग्रीर ४०० रुपया सैकड क्लास का था। भोजन व्यय भी इसी में शामिल था। रेलगाडी मे ही भोजन की सब व्यवस्था की गई थी। दिन में तीर्थों के दर्शन किए जाते थे ग्रीर रात्रि मे सफर किया जाता था। कलकत्ते से सायकाल ५ वजे रेलगाडी रवाना हुई ग्रीर प्रात १ वजे जगन्नाथ पुरी पहुची। एक दिन यहा ठहरे। समुद्र स्नान किया, भगवान कृष्णचन्द्रजी के दर्शन किए तथा घूम फिर कर अन्य छोटे-छोटे देवस्थानो को देखा। इसके पश्चात् विजवाडा मे पन्ना नरसिंह ग्रीर भुवनेश्वर के मदिरों के दर्शन किए। मदुरा में मीनाक्षी देवी के दर्शन किए ग्रीर यहा से चलकर कन्याकुमारी पहुचे। इस ग्रोर मुख्य तीर्थस्थान १० है -नोतादरी, लवे नारायण, छोटे नारायण, जनार्दन, दक्षिण काशी, पद्मनाभ, सुन्दर महादेव, कन्याकुमारी, आदि । मदुरा से रेलगाडी रामेश्वर गई। महाराजजी रामेश्वर मे यह तीसरी वार ग्राए थे ग्रीर जगन्नाथ पुरी मे चौथी बार । यहा से श्रीरङ्गपुर ग्रौर मद्रास गए । इसके पश्चात् शिवकाची, विष्णु काची, पक्षी तीर्थ, वालाजी, किष्किन्धा, विठ्ठलनाथ, शोलापुर, नासिक, वम्वई, जाम-नगर, जूनागढ, दत्तात्रेय, मूलद्वारिका, भेटद्वारिका, ग्रादिद्वारिका, प्रभास क्षेत्र, ग्रावू, चित्तीड, उदयपुर, काकरौली, एकलिंग, नाथद्वारा, जयपुर, मथुरा, वृन्दावन, ग्रागरा, देहली, हरिद्वार, ऋषिकेश, अमृतसर, लाहीर, लखनऊ, प्रयाग, वनारस, गया, वजनाथ

होते हुए कलकत्ता पहुंचे। सभी यात्रियों की धर्म में निष्ठा थी। सभी विचारजील थे। परस्पर एक दूसरे का ध्यान रखते थे ग्रौर स्नेहपूर्वक व्यवहार करते थे।

#### दरभंगा गमन

वालेश्वरप्रसाद चौघरी इसी लम्बी यात्रा में महाराजजी के वड़े श्रद्धालु भक्त होगए थे। ये चौघरीजी १५० गांवों के मालिक थे। जहां-जहां विभेष गाड़ी ठहरती थी वहां-वहां चौघरीजी और उनकी पत्नी इन्हें तीथों के दर्भन करने के लिए अपने साथ ले जाते थे। इन्होंने महाराजजी को अपने स्थान क्योटा (दरभंगा) चलने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने अभी तो चलने से इन्कार कर दिया किन्तु कुछ दिन वाद वहां जाने का वचन दिया। श्री महाराजजी तीन दिन तक कलकत्ता में ठहरने के बाद निदया ज्ञान्ति गए और वहां से वापस कलकत्ता आकर दरभंगा के लिए प्रस्थान किया। इसकी सूचना चौघरीजी को दे दी गई थी। वे अपने मित्रों सिहत दलसिंह सराय पर स्वागतार्थ उपस्थित हुए। वहां से इन्हें क्योटा ले गए और अपनी ही कोठी में ठहराया। इनकी कोठी वड़ी सुन्दर थी और इनका रहन-सहन राजसी ढंग का था। कई हाथी और मोटरें थीं। कोठी के चारों ओर वड़ा सुन्दर बगीचा था। अतिथिगृह कोठी से कुछ दूरी पर बनाया हुआ था। इनके पास २०६ सेवक थे जो इनका सब कारोबार करते थे। इनकी सम्पत्ति और गांवों का सब काम इन्हीं के हाथों में था।

चौधरीजी कभी-कभी महाराजजी को हाथी की सवारी करवाया करते थे ग्रौर भ्रमण के लिए प्रायः इसी पर जाते थे। चौधरीजी ने वड़े रईसी ढंग से श्री योगीराजजी का ग्रातिथ्य किया। किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दिया। ब्रह्मचारीजी प्रायः नित्य ही इन्हें तथा इनके परिवार को उपदेशामृत का पान कराया करते थे।

पालतू शेर से बालिका की रक्षा—महाराजजी क्योटा में प्रायः वरांड में वैठ कर स्वाध्याय किया करते थे। एक दिन एक सेविका चौधरीजी की सबसे छोटी पुत्री को गोद में लेकर महाराजजी के पास ग्राशीर्वाद के लिए लाई। उसी समय एक सेवक शेर को सैर करवा रहा था। चौधरीजी को शिकार खेलने तथा जंगली जानवरों को पालने का वड़ा शौक था। जब यह शेर छोटा-सा ही था तब इसे पकड़कर ले ग्राए थे। इसे मांस नहीं खिलाया जाता था। यह पूरा शाकाहारी था, मांसाहारी नहीं। ग्रव यह वड़ा होगया था। सेविका की गोद में वालिका को देख कर मांस के प्रति उसकी सहज प्रवृत्ति जागृत होगई ग्रौर नौकर के हाथ से सांकल कर मांस के प्रति उसकी सहज प्रवृत्ति जागृत होगई ग्रौर नौकर के हाथ से सांकल कर मांस के प्रति उसकी सहज प्रवृत्ति जागृत होगई ग्रौर नौकर के हाथ से सांकल कर मांस के प्रति उसकी सहज प्रवृत्ति जागृत होगई ग्रौर नौकर के हाथ से सांकल सहा । उसने ग्रपनी छाती के नीचे वालिका को भट से दवा लिया। इघर महाराजजी भी भट भागकर ग्राए ग्रौर ग्रपने दोनों हाथों से शेर का गला पकड़ लिया ग्रौर उसे धक्का देकर वहुत दूर गिरा दिया। वालिका तथा सेविका की रक्षा की ग्रौर नौकर शेर को सांकल से खींचकर दूर ले गया ग्रौर उसे वांघ दिया। इन्होंने वालेश्वरप्रसादजी को सांकल से खींचकर दूर ले गया ग्रौर उसे वांघ दिया। इन्होंने वालेश्वरप्रसादजी को समभाया कि हिस्र जानवरों को इस प्रकार से खुला नहीं रखना चाहिए। इनका समभाया कि हिस्र जानवरों के इस प्रकार से खुला नहीं रखना चाहिए। कोठी में रखना उचित नहीं है। यदि रखना ही हो तो पिजरे में रखना चाहिए।

चौधरीजी की महाराजजी के प्रति वड़ी श्रद्धा और भिक्त थी। ये अपने हाथों से इनकी सेवा करने में वड़ा गौरव मानते थे। इसमें ये वड़ा ग्रानन्द अनुभव करते थे। दरभग नरेश से भेंट—दरभगा में एक बार एक सर्कस ग्राया था। चीयरीजी ने इसे देखने के लिए महाराजजी से निवेदन किया। इन्हें सर्कस, सिनेमा तथा खेल तमाजे देखने का विलकुल जाँक नहीं था। इस रुचि का इनमें नितात ग्रभाव था। ग्रत इन्होंने बात को टाल दिया। पर चीयरीजी के वार-वार ग्राग्रह करने पर जाने के लिए तैयार होगए। विशेष ग्राकर्षण तो दरभगा जाने का दरभगा नरेश से भेट करने का था। चीयरीजी मैथिल ब्राह्मण थे ग्रीर दरभगा भी ब्राह्मण राज्य था, ग्रत ब्राह्मणत्व के नाते इनका दरभगा नरेश से घनिष्ठ परिचय था ग्रीर दरभगा नरेश की इन पर बड़ी कृपा थी। ये महाराजजी को उनके दर्शन करवाने के लिए ग्रपने साथ ले गए। नरेश इनमें मिलकर वड़े प्रसन्न हुए ग्रीर ग्रपने राज्य का सारा इतिहास इन्हें सुनाया। दरभगा वश राजपूत नरेशों के पुरोहित है। राजपूताने के राजकुमारों को यजोपवीतादि सस्कार ये ही करवाते हैं ग्रीर दान-दक्षिणादि प्राप्त करते है। दरभगा राज्य वड़ा घनाढ्य तथा सम्पन्न राज्य था। जागन-प्रवन्ध भी यहा का उत्तम था। जासक वड़े विद्वान् ग्रीर सदाचारी थे। दरभगा नरेश के साथ महाराजजी तथा चीधरीजी सर्कस देखने के लिए पधारे ग्रीर उसकी समाप्ति पर क्योटा चले गए। यहा पर कुछ दिवस निवास कर चुकने के पश्चात् महाराजजी ने नैपाल जाने की इच्छा प्रकट की। चीबरीजी इन्हें ग्रीर प्रधिक ठहराना चाहते थे किन्तु इन्होंने महाराजजी के प्रस्थान की सारी तथारी कर दी ग्रीर ग्रपने उष्ट-मिन्नो तथा सेवको सिहत वड़े सम्मानपूर्वक ग्रमूत्य भेट देकर ग्रीर पुष्पों के हार पहिनाकर दलमिह मराच के रटेशन में विद्या किया।

#### नैपाल यात्रा

नैपाल जाने के लिए पात्रपोर्ट प्राप्त करना प्रावन्यक होता था किन्तु जिवरात्री के प्रवसर पर यह वधन नहीं रहता था। महाराजजी के लिए चीधरीजी ने समु- चित रूप से यात्रा की सारी व्यवस्था कर दी थी। इलिसह मराय में रेलगाडी में सवार होकर ब्रह्मचारीजी रिक्सोल पहुंचे। इससे ग्रागे नैपाल राज्य प्रारम होना था। रिक्सोल से तीस मील तक एक छोटी-सी रेलगाडी में सवार होकर नैपाल की राजधानी काठमण्डू से २० मील इधर तक पहुंचे। इसमें ग्रागे वीस मील पैंदल चलकर काठमण्डू पहुंचे। शिवरात्री के ग्रवसर पर ही ये यहा पहुंचे। शिवरात्री का पादन पर्व नैपाल में वड़े समारोह के साथ मनाया जाता था। महस्त्रो सन्त महातमा तथा गृहस्थी यात्री पशुपित मिंदर में इनके दर्शनार्थ जाते हैं। रिक्सोल में मथुरा के चींचे किशनलाल से परिचय हुग्रा ग्रीर उसने महाराजजी के साथ ही यात्रा करने दे लिए निवेदन किया। यह इनके व्यक्तित्व से वड़ा प्रभाविन हुग्रा ग्रीर इन्हें ग्रपना गृरु मानने लग गया। इनके प्रति वडी श्रद्धा ग्रीर भिंत होगई। गाडी का मार्ग समापत होने पर ये दोनो साथ ही चल दिए। किशनलाल ने उनका सामान उठा लिया ग्रीर ग्रावर्यकतानुसार भोजन भी इनके लिए यही वनाया करना था। काठमण्डू पहुंचने के लिए मार्ग एक वीहड वन में से जाता था। हनुमान गढी के ग्रतिरिक्त ग्रीर कोई विशेष वस्ती मार्ग में नही थी। हनुमान गढी पहुंचने से पूर्व ही मूर्य नारायण ग्रस्ताचल को चले गए। एक वाघ इनके मार्ग को रोककर खड़ा होगया। एक वड़ी समस्या खड़ी होगई। महाराजजी के पास तो एक वड़ी मजबूत सोटी थी किन्तु किशनलाल के पास कुछ न था

किन्तु वह बलवान तथा हृष्टपुष्ट ग्राँर साहसी ग्रादमी था। वह नित्य व्यायाम करता था। ग्रखाड़े में कुवती लड़ने जाना था। कई ग्रखाड़े इसने जीते थे। वह पत्थर ग्रथवा सोटी की सहायता के विना ही वाघ के साथ जूक गया। वाघ गुरीना हुग्रा दोनों पंजों पर खड़ा होकर उत्तपर लपका। किशनलाल ने इसके दोनों पंजे पकड़ लिए ग्रौर जोर से इसके पेट में लात मारी जिससे वह बड़ाम से भूमिनात् होगया। चौबेजी ने बाघ के मुंह में उसका पंजा दे दिया। यह उसके पेट पर बैठ गए ग्रौर दोनों पंजे उसके मुंह में देने का प्रयत्न करने लगे। इतने में महाराजजी भागकर ग्राए ग्रौर उसके मुंह में यने का प्रयत्न करने लगे। इतने में महाराजजी भागकर ग्राए ग्रौर उसके मुंह में ग्रानी सोटी डालकर उसे भीतर घुमा दिया। इससे उसका मुंह भीनर से वायल होगया ग्रौर रुविर की बारा बहने लगी। वह ग्राव बण्टे में मृत्यु का ग्रास वन गया। किशनलाल ने इसे बकेलकर नीचे गिरा दिया। महाराजजी स्वयं ग्रकेले ही इसका सामना करना चाहते थे किन्तु चांबेजी इन्हें गुरु मानते थे, इनमें बड़ी भिन्त रखते थे, ग्रन: उन्होंने इन्हें वाघ के समीप जाने नहीं दिया। बह्मचारीजी मार्ग में इन्हें उपनिपदों की कथा मुनाते रहे जिसका उनके ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ा। दो दिन में ये काठमण्डू पहुंच गए।

शिवरात्रि महोत्सव—काठमण्डू में वाघमती नदी के किनारे हजारों सावु, सन्त श्रीर महात्मा ठहरे हुए थे। ये सब शिवरात्रि के महोत्सव में भाग लेने तथा दुर्शन करने के लिए घोए हुए थे। नैपाल सरकार की ग्रीर से इस पर्व पर महात्माग्रों का वड़ा सत्कार होता था। यह महोत्सव लगभग एक मास तक मनाया जाना था। इस मेले में लाखों नर-नारी एकत्रित होते थे। नैताल नरेश की ग्रोर से ग्रन्न के भण्डार ख्ले रहते थे। जो सन्त स्वयंपाकी थे उनको यहां से ग्राटा, दाल, चावल, घी, लकड़ी स्रोदि सोमान दिया जाता था। कई दुकानें नियत कर दी गई थीं जहां से सन्त-महात्माओं को पूरी, शाकादि वितरण किया जाता था। राजकर्मचारी इतस्ततः घूम फिर कर इस वात का निरीक्षण करते थे कि महात्मात्रों को समय पर भोजन ग्रीर रसद मिलनी है या नहीं। महाराजजी वाधमती के किनारे एक उदासी सन्त के स्थान पर ठहर गए। किंगनलाल भी उनके साथ था। इनके पास एक दक्षिणी साबु भी ग्राकर रहने लगे। यह केवल संस्कृत में ही वार्तालाप करते थे। महाराजजी को भी संस्कृत संभाषण करने का बहुत अभ्यास था। ये दोनों सदैव संस्कृत में ही वानचीत करते थे। जो सन्त पास बैठे होते थे यदि वे संस्कृत से अनिभन होते तो उन्हें संस्कृत का हिन्दी में ग्रनुवाद करके सुना दिया करते थे। महाराजजी के पास भी कई राजकर्मवारी भोजन इत्यादि के विषय में पूछने ग्राए किन्तु इन्होंने ग्रपनी भोजन व्यवस्था स्वयं ही की थी। इनके त्याग भाव को देखकर राजकर्मचारी वड़े प्रभावित हुए ग्रौर इनके सत्संग में नित्य ही ग्राने लगे। श्री महाराजजी ने एक दिन इन ग्रफसरों के समक्ष, राज्य की और से महात्माओं को जो विदाई दी जाती थी उसे देखने की इच्छा प्रकट की। महोत्सव की समाप्ति पर नैपाल नरेश एक दिन साबुग्रों ग्रौर संन्यासियों क विविध प्रकार की भेंटों से सम्मानित करके विदा करते थे। प्रायः रुपये, कम्बल, विस्तर, कमण्डल, मृगचर्म, वावन्वर, ग्रासन, लोटा, गिलास, कटोरी ग्रादि के रूप में भेंट दी जाया करती थी। राजकर्मचारियों ने महाराजजी के लिए महात्माग्रों की विदाई के उत्सव को देखने का प्रवन्व करने का विचन दया। नैपाल में सैकड़ों मंदिर

है। नैपाल मे ऐसी प्रथा प्रचलित है कि जव-जब राजपरिवार का नोई सदस्य देवलोक होता है तो उसके नाम पर मदिर का निर्माण किया जाता है। इसलिए मदिरो की यहा कमी नही है। ऊचे-ऊचे पर्वतो के बीच मे लगभग २० मील लम्बा १७ मील चीडा एक वडा मुन्दर मैदान है। वाघमती नदी इसी के वीच मे से प्रवाहित होती है। इस मैदान मे तीन वडे-वडे नगर वसे हुए है —काठमण्डू, भत्तगाव तथा एक ग्रीर छोटा सा नगर है। काठमण्डू नैपाल की राजधानी हे। यहा पर वडा प्रसिद्ध पजुपितनाथ का एक मिंदर है। शिवरात्रि का महोत्सव यही मनाया जाता है ग्रीर इसी मूर्ति के दर्शन के लिए हजारो सन्त्र यहाँ ग्राते हैं ग्रीर लाखों की सख्या में लोग एकत्रित होते हैं। मूर्ति पारस पत्थर की बनी हुई है। इस पर्व पर नैपाल नरेश तथा महारानी दोनो दर्शनार्थ ग्राते है। वडे भारी समारोह के साथ इनकी सवारी निकलती है। इस ग्रवसर पर लाखो रुपया सन्तो ग्रौर महात्माग्रो पर व्यय किया जाता है। शिवरात्रि के पञ्चात् साधुग्रो तथा सन्यासियो को विदाई दी जाती थी। इन्हे पिकत वाधकर जहा विदाई वाटने का स्थान नियत होना था वहा जाना होता था। इसके लिए विशेष मार्ग वनाया जाता था। पुलिस का पूरा प्रवन्थ किया जाता था। राजकुमार तथा राज्य के प्रमुख ग्रफसर विदाई वितरण करते थे। श्री महाराजजी के लिए भी बैठने का प्रवन्ध इन्हीं के पास कर दिया गया था। इन अफसरों के पास ही इनके लिए कुर्सी रख दी गई थी। विदाई के समय का प्रवन्ध वडा उत्तम था। वर्तन, विस्तर, कमण्डल म्रादि के ढेर लगे हुए थे। थैलियों में रुपये वाधकर तैयार थे। राजकुमार तथा राज-कर्मचारियो ने साधुयो का यथायोग्य सत्कार किया। दर्शक स्रतिथियो के लिए बैठने का समुचित प्रवन्ध किया गया था। लाखो नर-नारी साधुग्रो के दर्शनार्थ ग्राए थे। रात्रि के ६ वजे तक साधुयों को उनकी इच्छा तथा यावय्यकता के यनुसार वस्तुयो का वितरण होता रहा। पीताम्वरवारी श्री महाराजजी ने ग्राठ वजे वही मे प्रस्थान करने की इच्छा प्रकट की। जब ये चलने लगे तब इनके पास एक राजकुमार श्राया श्रीर भेट के लिए इनसे पूछा। किन्तु महाराजजी ने कहा, "हमे किसी वस्तु की ग्राव-व्यकता नहीं है। हम अपरिग्रह का पूर्ण पालन करते हैं श्रीर ग्रावव्यकता से ग्रिविक सामान ग्रपने पास नहीं रखते है। हम तो यहा पर दर्शक के रूप में राज द्वारा साधु-सन्यासियो के सत्कार को देखने आए थे। यहां का सब प्रवन्ध, राजपरिवार की धर्म-निष्ठा, दानशीराता तथा सन्त-सेवा देखकर हमे वहुत प्रसन्नता हुई है। मै ग्रन्तर्यामी भगवान् से इस राज्य के लिए प्रार्थना करता हू कि वे इसे सदेव समृद्धिगाली रखे, राजपरिवार बढे, फूले ग्रीर फले।" महाराजजी के इन गट्दो से राजकुमार बढे प्रभावित हुए ग्रीर निवेदन किया कि "ग्राप ग्राधे घण्टे के लिए ग्रीर यहा विराजे। मैं ग्रापके लिए सवारी की व्यवस्था करता हू।" इस राज्य मे एक पाच सरकार तथा एक तीन सरकार कहलाती है। पाच सरकार महाराजा के रूप मे तथा तीन सरकार राजमत्री के रूप में । यह राजकुमार तीन सरकार का पुत्र था । यह राजकुमार प्रथम महाराजजी को अपने महलों में ले गया और वहा चाय-पानादि करवाकर ग्रापका वडा सम्मान किया। इस राजकुमार के वहुत पत्निया थी किन्तु उसकी भोगे-च्छा की परिसमाप्ति नही होती थी। वह वडा परेगान सा था। उसने ब्रह्मचारीजी से इसकी समाप्ति तथा ब्रह्मचर्य पालन के सम्बन्ध मे उपाय बताने के लिए निवेदन किया । इन्होने एक घण्टा तक राजकुमार को उपदेश दिया श्रीर ब्रह्मचर्य-पालन तथा

मोगेच्छा की शान्ति के लिए कई उपाय वताए। १० वजे के लगमग राज की सवारी में विराजकर वे अपने निवास-स्थान पर पवार गए। इसरे विन नैयाल के मंदिरों के वर्धन करने के लिए गए। इस राज्य में नहाराजकी १५ दिन तक रहे। कई उन्तों ने इससे मुक्तिनाय चलने के लिए कहा किन्तु ये उनके साथ नहीं गए और हरिद्वार जाने का निरुचय कर लिया। हरिद्वार में लगमग अहाई सास तक मोहन आश्रम में ठहरे। इसके परचान् अमृतसर पवारे और वहां केवल एक सप्ताह ठहरकर कारमीर के लिए प्रस्थान कर विया।

## पुनः काइमीर निवास

रावलींपडी में योगी ग्रमरनाय इनके ग्रनन्य मक्त थे, ग्रनः कावनीर जाते तथा वहां से लौटते समय इनके पास कुछ दिवस अवस्य ठहरा करते थे। अवकी बार भी इनके पान कुछ दिवस तक निवास किया और तलक्चात् कास्मीर पदार गए। थीनगर में पंडित गोंपीनाय के पाम ठहरे। इनका मकान किनकेदल में था। इन दिनों स्वामी मत्यानन्दजी महारत हजूरीवाग ब्रायंसमाज में ठहरे हुए थे। इनका स्वामीजी से यहन पुराना दरित्वय था। योग के विषय में इनकी वड़ी प्रसिद्धि थी। नहाराजनी ने इन-लिए योग के सम्बन्ध में विकेष ज्ञान प्राप्त करने के लिए उनमें निवेदन किया। नाति के ब्राठ वजे से नी बजे तक का समय इस कार्य के लिए निविचत कर लिया गया। स्वामीजी महाराज ने इन्हें अपने मानने विठाया और राम नाम का जाप करने का ग्रादेश दिया । इसके पूर्व महाराजजी प्रणव जान किया करने थे किन्तु ग्रव इनके ग्रादेश के अनुसार राम नाम का जाय करना प्रारम्भ कर दिया। कभी-कभी तो ये दो-तीन घण्टे तक जाप करते रहते थे। एक दिन तो आर्यनमात्र में जाप करने व वजे वैठे र्श्वीर प्रातः ३ वजे तक जाप करते रहे। लगमग २० दिन तक इस प्रकार से जाप करते रहे। इसके बाद स्वानीजी नहाराज ने इन्हें अन्तिम उपदेश दिया और कहा कि ग्रद ग्रापकी प्रात्मा उद्दुढ़ होगई है, भिवष्य में इसी प्रकार से जाप का ग्रम्यास करते रहना । ब्रह्मचारीजी ग्रांजा लेकर चले गए किन्तु इस प्रकार के ग्रम्यास से इन्हें संतोष नहीं हुआ और न ही अपनी आत्ना में किसी प्रकार की विशेष जागृति ही अनुभव की। इसके परवात् इन्होंने रत्म नान का जाय करना छोड़ दिया ग्रौर पुनः प्रणेव दौप प्रारंभ कर दिया। ये पुनः सुक्ती वाग में ही पवार गए। यहां पर लगभग प्रहाई नास तक सीन ब्रत बारण किया । श्रीनगर में चार पांच दिन तक पंडित गोदीनाय के पास ठहरे।

दीवाली के अवसर पर अमृतमर जाकर मोतीरान की वर्गीची में अपनी कृटिया में निवास किया। यहां पर पूर्ववत् कई नास का काष्ठ नौन किया। केवल अमावस्था और पूर्णिना को ही बोलते थे। इस मीन-ब्रत के काल में महाराजकी ने एक ही आसन में बैठकर कई-कई घाटे की जून्य समावि का अम्यास किया।

# ब्रर्वकुन्भी पर हरिद्वार पनन

वैद्यात सास में अर्घकुन्सी के अवसर पर नहाराजजी हरिद्यार पद्यारे और रामानन्द वर्मशाला में ठहरे। यह वर्मशाला लण्डोरे वालों की थी। ये लाला विवसहाय के घनिष्ठ परिचित थे। इसलिए ब्रह्मचारीजी को इस वर्मशाला में कई कनरे निल गए थे। इनके कई मक्त साथ थे। इस वर्मशाला में सुविद्यानुरूप इन सबको निवास के लिए उचित स्थान मिल गया । भोजनोपरान्त महाराज मध्याह्न मे इतस्तत सन्तो, साघुग्रो के दर्शनार्थ चले जाया करते थे । कभी-कभी ग्रमृतसर के भक्त भी इनके साथ हो लेते थे ।

सन्त-ससागम—घूमते फिरते एक दिन महाराजजी भीमगोडे चने गए। वहा पर एक सन्त मिले। सन्त ने इनसे कुछ पैसे मागे। इन्होने पूछा, "पैमे किस लिए चाहिए? यदि भोजन करना हो तो चलो ग्रापको भोजन करवा दे।" इस पर उसने ग्रीपघ के लिए पैसे लेने की इच्छा प्रकट की। जब महाराजजी ने ग्रौपध भी एक वैद्य से दिलवाने के लिए कहा तव उसने नाराज होकर कहा, "जाग्रो, ग्रयना रास्ता नापो। में तुम्हारे जैसे नास्तिक से बात करना नहीं चाहना। मुक्ते तुममें न पैसों की ग्रावञ्यकता है ग्रीर न ग्रीपिंध की।" महाराजजी के यह पूछने पर कि वे उन्हें नास्तिक क्यों सम्भते हैं, उन्होंने कहा कि नास्तिक के कोई सींग या पूछ नहीं होती। इस पर इन्होंने कहा, वताइए तो फिर श्रीर क्या-क्या होता है। सन्त ने कहा, "जब से तुमने साख्य शास्त्र पढ़ा है तब से तुम्हारी भगवान के प्रति निष्ठा जाती रही है। तुम भगवान को सृष्टि का कर्ता, धर्ता, पालक, पोपक एव सहारकर्ता नही मानते हो। ग्रत उसकी उपासना, प्रार्थना, भिनत तथा ज्ञान प्राप्ति में भी प्रमाद करने लगे हो।" महाराजजी सन्तजी की वाते सुनकर एक प्रकार की चिन्ता-सी मे पड गए, क्योंकि सन्त की वाते इन्हें ठीक-सी ही मालूम हो रही थी। इन्होंने २-३ वर्ष पूर्व साख्यदर्शन, विज्ञानिभक्ष-भाष्य ग्रौर साख्यकारिका पढी थी। योग-साधना द्वारा भी कोई विशेष ज्ञान प्राप्त न होने के कारण कभी-कभी कुछ नास्तिक-सी भावना उत्पन्न होने लग जाती थी। ईश्वर के नाम-जाप ग्रादि को भी वेकार-सा ही समभने लग गए थे। केवल प्रकृति ग्रौर पुरुष के सम्बन्ध-विच्छेद को ही विशेष महत्व देने लग गए थे। ब्रह्मचारीजी ने सन्तर्जी से कहा, "मैने ईश्वर-प्राप्ति के लिए ग्रनेक साधनाए की है, ग्रनेक उपाए किए है, कई-कई घण्टे तथा दिन समाधिस्थ रहा हू, किन्तु ईव्वर के विषय मे ग्राज तक कुछ भी ज्ञान प्राप्त न कर सका।" सन्त ने इस पर कहा कि गुरु के विना इस ज्ञान की उपलब्धि नही हो सकती । महाराजजी ने कहा, ''मैं तो कई गुरुग्रो के पास गया किन्तु ग्राज तक ईश्वर साक्षात्कार नहीं हुन्ना, इसलिए मुक्ते कुछ निराञा-सी होगई है। काश्मीर मे गुरु ग्रवधूत परमानन्दजी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुन्ना था। उनसे वहुत कुछ मार्ग दर्शन प्राप्त हुग्रा था किन्तु उनसे पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं हो सका क्योकि वे शीघ्र ही अन्यत्र चले गए। उस समय मेरी वुद्धि भी कुछ परिपक्व न थी। उनके श्रादेगानुसार ग्रव तक बहुत तप, त्याग ग्रीर कठिन तपस्या तथा विविध साधनाए करता रहा हू किन्तु किसी प्रकार का विशेष ज्ञान प्राप्त न हो सका । यदि ग्राप मुभे ग्रात्म-विज्ञान श्रीर ब्रह्म-विज्ञान करवा सके तो मै श्राज से ही श्रापका किप्य वन जाता हू। श्राप ही ऐसी कृपा करें। मै श्रापके श्रादेशानुसार सव कार्य करने लग जाऊगा।" सन्तजी ने हसते हुए कहा, 'मुफे कोई गुरु महाराज का ग्रादेश नहीं मिला है जो ग्रापको कुछ सिखाऊ।" महाराजजी ने पूछा, "ग्रापके गुरु महाराज कहा रहते हैं यदि ग्राप वताने की कुपा करें तो मैं वहीं चला जाऊ।" महाराजजी के पूछने पर पता चला कि सन्तजी के गुरुदेव तिब्बत मे तीर्थापुरी की ग्रोर रहते है। उन दिनो उन्होने मौन वत लिया हुग्रा था। यह मौन ग्राहिवन मास मे खुलेगा। सन्तजी से यह भी पता चला कि ग्राहिवन मास मे वे कभी-कभी गगोत्री की ग्रोर ग्राया करते हैं। महाराजजी ने यह सुनकर कहा, "मैं नो गगोती कर्ड बार गया हू। ग्राम-पास के प्राय सभी प्रदेशों को जानता हू। वहा तो कोर्ड ऐसे सन्त दृष्टि-गोचर नहीं हुए।" सन्तजी ने कहा, "उस वर्ष उनसे तुम्हारा गुमागम हो जाएगा।" मेर पूज्य गुरदेव जी बहुत वर्षों से निद्यत में ही रहते हैं। वे बर्णय सन्त है। बहुत वर्षे पहिले वे ग्रयोध्यापुरी में रहते थे। इसके पश्चात् वे तिद्यत, हिमालप कैनाम मानसरीवरादि की यात्रा के लिए चले गए थे। पुन लौटकर नहीं शाए। उन बार गर्मियो में वे नीर्यापुरी ने गगोत्री की श्रोर श्राएंगे श्रीर श्राकर हरसिल कि चान-पाग रहें। यहन वृद्ध मन्ते हैं। उनकी आयुसी वर्ष से भी अधिक है। प्राय मीन ही रहते है। अत्यन्त श्रोवन्यकता पडने पर ही बोलते हैं। श्राव्यित के श्रन्त मे वे निब्बा ही लीट जाएगे । निब्बनी भाषा का उन्हें बहुत ज्ञान है, तिब्बतियों के साथ निध्यती भाषा में ही बातचीन करते हैं। फिन्तु ग्राप नी यह भाषा जानने नहीं ग्रत शानि तो वे सरहत में ही सभावण करेंगे।" महाराजजी ने कहा, "क्या श्राप भी साथ चलोगे ?" मनाजी ने उत्तर दिया, "मुभो वे आजा नहीं देगे।" महाराजजी ने कहा, "तव वे मुनम कीमे बोलेंग और कैमे वर्शन की याजा देंगे ?" मन्तजी ने कहा, "हा, श्रापसे वे भ्रवस्य मित्रेंग । भन उनकी भ्राजा का पालन नहीं किया इसलिए केवल मेरे लिए उनका हार बन्द है। सबके लिए नहीं।" महाराजजी ने उन सन्तजी की बातो पर पूर्ण विश्वास कर निया स्योक्ति उन्होंने उनके अन्त करण की सब बाते ततला दी थी। सन्तजी ने कहा, "प्राप उनसे मिलने अवस्य जाइए, श्रापका कत्याण हो जाएगा। हरसिल श्रापने देखा है। उसके उधर व्यामगगा है। उसके किनार पर कही किसी गुका में वे मिल जाएगे। गुरु महाराज नम्बे कद के हैं। स्वेत उनकी जटाए हैं। सिर के मध्य में केश प्रथवी जटाए नहीं है। प्रति युष्ठ है। सरीर पतना नवा दुर्व न है किन्तु मुखमण्डल तेजस्वी तथा दीप्ति-मान है। रिवन को पीन प्रारण किए रहते हैं। जब कही उँघर-उबर जाना होता है तब चोला पारण कर लेने हैं। उनके नेत्र बड़े-बड़े है। मराक विशाल है और सदैव प्रसन्न बदन रहते है। वे प्रस्त नहीं खाते। केवल कर्यमूल या फलाहार ही करते है। वे प्रपत्ते नाय हिनी नयह या शिय को नहीं रखते।" महाराजजी ने जब उनका नाम पूछा नो सरावी न मुस्कुरात हुए कहा, 'तुम्हे श्राम खाने हैं या पेट गिनने हैं, ' उनकी ग्राजा नहीं है कि उनका नाम अववा विशेष पांच्चम किसी को दिया जाए ।" उस सन्त की उपरायन वालों में महाराजजी के ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ा प्रौर वे उन्हें वड़ा परोप कारी जीव समक्ते लग गए और उनमें पूछा कि स्नापको स्नीपधि के लिए कितने रुपये की प्रावश्यक्ता है। सन्तजी की केवल ४-६ प्राने की ही जरस्त थी किन्तु इन्होंने २५) उन्हें देन नाहे पर उन्होंने नहीं लिए और कहा "अभी तो छ आने की जरूरत है। अतिक की जनरन नहीं है। जब आवब्यकता होगी तो उस समय कही श्रीर से मित जाएंगे।" उनके गुमजी भी किसी से किसी भी प्रकार की भेटपूजा ग्रहण नहीं करते थे। इन सन्तजी की नाम क्रुणिदास था। महाराजजी ने उन्हें छे आने दे दिए ग्रीर यहा ने जाने की ग्राज्ञा मागी।

उन मराजी ने वार्तालाप फरने के पश्चान् महाराजजी के हदय मे पुन वैराग्य भावना प्रचण्य हो उठी। प्रव उन्होंने इवर-उधर जाना छोड़ दिया। मिलने-जुलने की उन्हां भी प्रव नहीं रही। गगोत्री जाने का ग्रव दृढ़ निश्चय कर लिया। प्रधं-गुम्भी के पश्चान् जाने की सैयारी कर ली।

# द्यात्पज्ञानी गुन्देव की सोज

महाराजजी ने ग्रर्धकुम्भी के पञ्चात् गगोत्री जाने का दृष्टनापूर्वक विचार कर लिया था। गुरुदेव के दर्शन का समय ग्राञ्चिन की सकान्ति था ग्रत ये प्रथम जम-नोत्री चले गए। इनके पास ग्रत्यन्त मामूली ना नामान था। इने ग्रपने कबे पर रख कर प्रस्थान किया। जहा कही रात्रि हो जानी थी वही पर रात्रि व्यनीन कर नेते वे ग्रीर जहा पर रमणीक एकान्त नान्त स्थान होता वहा कुछ ग्रधिक ठहर याया करने थे। भोजन चिरकाल से एक ही समय करते थे और उस स्वय बना लेने थे। जमनोत्री के मार्ग मे एक शिमली नाम की चट्टी ब्राती है। उसके समीप ही चीट के वृझी का एक वन है। पर्वन जिखर पर एक छोटा-ना मैदान है। उसके ग्रानपान भी चीट है पेड़ हैं और नीचे जमना वह रही है। जमनाजी के विनारे बैठ कर श्री महाराजजी को बड़ी गान्ति प्राप्त हुई। इस स्थान पर कुछ काल अस्यान करने का विचार थिया। बहुत दिनों के पञ्चात् वृत्तिया पुन जान्त हुई थी। वैराग्य भावता भी एउटम प्रवत होंगई थी। बहुत सा समय इवर-उवर पर्यटन मे व्यतीत तरने पर बटा परचाताप होने लगा। अब यहा पर बान्त धीर समाहित होकर कई घण्टे की सून्य मनाधि से बैठ गए। जब समाधि से ब्युत्थान हुआ तो एक गोमीण नरमुख भोर्नन तिए बैठा था। उसने प्रणाम करके निवेदन किया, महाराज ! भ बहुत वर ने आपके लिए भोजन लिए बैठा हू। इन्होने उससे लेकर आधा भोजन तो स्वय तर लिया और रेग प्रसाद रूप से उसे दे दिया। इस मज्जन ने महाराजजी ने अपने वर पर ने जाने के लिए निवेदन किया। जब इन्होंने इन बात को त्यीकार न त्या तब उसने नित्यप्रति दोपहर के भोजन को लाने के लिए त्राजा मांगी। महाराजजी ने उसरी स्वीकृति दे दी। ये यहा पर लगभग एक मास तक ठहरे। यहा पर ये एक ही ब्रामन पर नैटकर वस-दस घण्टे ध्यान मे वैठा करने थे। नायकात ६ घण्टे ग्रभ्यास मे बैठने थे। इनके परचात् ये जमनोत्री चले गए। वहा केवल तीन दिन ही ठडरे बदोकि वहा यादियो की बहुत भीड़ होगई थी। प्रहा से उत्तरकाशी पहुच गए। वहा पर तेखला में यहाजी की कुटिया में ठहरे। वे हठयोग की नियाए बहुत अच्छी जानने थे। महाराजजी के उत्तरकाशी पहुचने पर वे कही अन्यत नवे नए और एक नमरा इन्हें निवासार्थ दे गए। तेखला के पास ही एक छोटी नी नदी थी। इसने किनारे नीन गुफाए थी। एक दिन इन्हें महाराजजी देखने चले गए। एक गुफा के चन्दर फू फू वी सी ग्राचाज श्रा रही थी। इन्होने समक्ता कि बायद कोई साप फुकार मार रही है किन्तु पान जाकर देखा तो मालूम हुआ कि एक महात्मा गुफा हार की ओर पीठ करके भन्निका प्राणायाम कर रहा था। प्राणायाम के पञ्चान् उन महात्माजी ने चामन वरने प्रारभ कर विए और एक घण्टा तक करते रहे। महान्माजी ने उनने पूछा नि वया आप इन आसनो से भिन्न आसन भी कोई जानते हे विष्यानिवजी ने नहा कि मैं ये सभी श्रासन कर सकता हू। मैं दो नी श्रामन तया नानीस प्रकार के प्राणायाम जानता हू। यह नुनकर महात्माजी ने वलपूर्वक कहा कि में ''एक हजार प्रकार के श्रासन तथा बहुत प्रकार के प्राणायाम जानता हू । श्रामन में यहा ही श्रापको दिवाना हू ।" ये वह्मचारी दोनो हाथो पर खडे होगए, फिर एक को उठाकर एक पर खडे रहे । इसके परचात् हाथ के एक श्रपूठे पर सारे गरीर को नोलकर दो मिनट तक

अडोल गरे रहे। इसके पञ्चात् कहा, एक प्राणायाम में श्रापको सभी गगा-तट पर न्नान करते समय दिखाऊगा। महाराजजी इन महात्मा जी के साथ गगा-तट पर चले गए। उन्होंने गगा-तट पर एक पत्थर पर बैठकर पद्मासन लगा लिया चीर एक नासिका ने पूरक प्राणायाम करके अपने बरीर को फुलो लिया तथा उछन कर गर्गा के जन के ऊपर जा बैठे। ये जल के ऊपर बैठे-बैठे ही ३०० फीट तक जल के प्रवाह के नात-नाथ चलते रहे। उसके बाद शरीर को घुमांकर एक पत्थर के पास ने गए और उस पर दोनो हाय रायकर उलट कर बैठ गए। जब उनको देखा नो मानूम हुत्रा कि उनका शरीर विलकुत नहीं भीगा था, केवल पैर स्रीर जघाए ही थोड़ी-योड़ी नी भीगी थी। महाराज ने तब उनके चरण पकड़ लिए और क्षमा योचना की सीर कहा कि स्राप जैसे महात्मास्रो ने भारत बनुन्धरा के मस्तक को उन्तर किया है। ेटनके बाद महात्माजी ब्रीर महाराजजी दोनो ने गगा स्नान किया। महात्माजी ने कहा, "मै त्राजकल प्राकाश-गमन की एक विशेष साधना कर रहा है। गुभी विश्वास है कि चार साल में मैं स्नाकाश-गमन करने लगूगा।" महाराजजी ने पूँछ। कि स्ना स्रधिकतर कहा रहते है। महात्माजी ने उत्तर दिया, "में ब्रह्मनारी है श्रीर प्रायू पर्वन पर रहता है। उधर तो केवल यात्रा करने चला स्राया था।" महाराज ने निवेदन किया, "स्राय स्राज मेरे पास ही भोजन करे।" वे स्वयाको थे, किसी के हाथ का बना भोजन नहीं करते थे। दिन भर में केवल एक नमय दो छटाक प्राटा और एक छटाक पी ही पाते थे ग्रीर ग्राट दिन का भीजन प्राने साथ उत्तर गांशी से ले प्राए थे, उसलिए उस निमतण को स्वीकार नहीं किया। महाराजनी ने ये प्राप्तन, प्राणायाम तथा प्राप्तान-गमन की कियाए पीयने की इच्छा प्रकट भी। महात्माजी ने सियाना स्वीकार कर लिया किन्तु कहा कि आपको आबू पर्वत पर मेरे पान जाकर रहना होगा। अभी तो महात्माजी गगोती स्रीर बद्रीनाथ जा महे थे ग्रन महाराजजी को ग्राना पना निष्यवा दिया ग्रीर कह दिया जब ग्रापकी इच्छा हो तभी या जाना। महाराजजी ने कहा, "मुभे भी हरमिल याब्विन की न गानि को एक महान्माकी ने मिलने चाना है। उनमें योग गीलने की अभिलापा है। उसके परचान् आपके पान उपस्थित हुगा।" ये ब्रह्मचारी महात्माजी हूसरे दिन गगोबी चल गए ब्रीर महाराजवी ने २० साहपद तक वहा ठहर कर हरिमल के लिए प्रस्थान किया। यहा पहुनकर ब्रह्मचारी राजाराम के पास ठहर गए ब्रीर सन्त महाराजवी की सोज करनी ब्रार्थ कर दी।

## गुरु दर्शन

हरियत के पास ही वगोरी एक न्यान है। यहा पर नीता हू ग्रीर तिव्वत से प्राय लोग ग्राने-जाने रहने है। ये लोग जाट कहलाने है। महाराजजी ने इनसे पूछा, क्या नीर्वापुरी से कीई महात्मा तो उधर नही श्राए है ? उनमे से एक ने कहा, श्राए तो अवस्य है पर पता नहीं वे कहा पर है। इधर-उधर किसी कदरा मे जा बैठे होंगे। प्राय मीन रहने है। योज करने से पता लग जाएगा। हमने तो उन्हें कई दिनो से देया नहीं है। थोज-ना पता लगने ही महाराजजी ने ज्यामगगा के किनारे उनकी योज प्रारम्भ कर दी। इटने-दूढते श्राध्विन सकानि का दिन स्थामगगा के किनारे

ही ग्रागया। महाराजजी वडे चिन्तित हुए ग्रीर कुछ हताश से भी। किन्तु खोज का परित्याग नहीं किया। इधर-उधर खोजते हुए फिर रहे थे कि उन्हें दूर एक गुफा से धूग्रा निकलता हुग्रा दिखाई दिया। महाराजजी को ग्रन्त करण से ग्रावाज-सी मुनाई दी जो कह रही थी कि उस गुफा मे ही जाग्रो, वही तुम्हें उन महात्मा के दर्शन-लाभ होगे। उस धूए को लक्ष्य बनाकर ब्रह्मचारीजी उधर ही चल दिए। जव उस कटरा के पास पहुचे तो उसमे एक तेजोमयी दिव्य मूर्ति को पद्मासन लगाकर ध्यानाव-स्थित बैठे हुए देखा। दो लकडियो पर मिट्टी बिछाकर उसपर भोजपत्र ग्रास्तीर्ण करके उसपर ये तेजस्वी महात्मा ग्रासन लगाकर वैठे हुए थे। इनकी मुद्रा वडी जान्त थी भ्रीर ये निश्चेष्ट तथा निष्किय थे। इनके प्राण की गति ग्रत्यन्त सूक्ष्म थी। ऐसा मालूम होता था मानो ये किसी वडी गहन अवस्था मे पहुच गए हो। ससार के सभी कत्तंव्य इनके समाप्त होगए थे। वे महापुरुप प्रकृति श्रौर उसके कार्यो 'स्थूल तथा सूक्ष्म' दोनो पर श्रौर सभी प्रकार की दूरियो पर विजय प्राप्त कर चुके थे। वडे निस्पृह श्रीर ससार से विरक्त होकर अपनी अन्तरात्मा या अपने प्यार भगवान मे विलीन हुए से तादात्म्यभाव को प्राप्त हुए से प्रतीत हो रहे थे। हुए-गोक, मानापमान, हानि-लाभ, जय-पराजयादि किसी प्रकार का कोई भी द्वन्द्व इन्हें स्पर्श नहीं कर सकता था। प्राण, इन्द्रियो, मन ग्रौर शरीर में कही पर भी किसी प्रकार की चेटा दृष्टिगोचर नहीं हो रही थी। सर्वत्र गान्ति का साम्रोज्य स्थापित हो रहा था। श्री महाराजजी दो कर रहा हू किन्तु विज्ञान श्रभी कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। समाधिकाल में कुछ झून्य-सी ग्रवस्था बनी रहती है। ग्रात्मा तथा परमात्मा का कुछ भी ज्ञान ग्राज तक मुभे प्राप्त नहीं हो सका है। ग्रव तो मैं सर्व प्रकार से निराज होगया हू। यदि मुभ पर कुपा कर दे तो मेरा उद्धार हो सकता है ग्रीर जन्म सफल हो जाएगा। मैं इसे ग्रापका महान उपकार समभूगा और त्रापका सदैव ऋणी रहूगा। जव तक त्रापसे मुक्ते सन्तोप-महान उपकार समभूगा ग्रार ग्रापका सदव ऋणा रहूगा। जब तक श्रापस मुक्त सन्ताप-पूर्वक कुछ प्राप्त नहीं होगा मैं ग्रापके द्वार से नहीं जाऊगा। वडी भारी ग्रांगा लेकर मैं ग्रापके चरणों में उपस्थित हुग्रा हूं।" इन शब्दों के साथ महाराजजी ने कुछ लड्डू श्रीचरणों में रख दिए। महात्माजी ने कहा, "मैं ग्रन्न नहीं खाता। केवल कन्द, मूल, श्रालू, फलाहार ही खाता हूं। इसलिए ये लड्डू तो ग्राप उठा ले। ग्राप ही इन्हें खा लेना। ग्राज तो ग्राप इन्हें ले ग्राए किन्तु कल कौन लाएगा। ग्राप कुछ देर यहा ठहरे। मैं ग्रापका ग्रभी ग्रातिथ्य करता हूं।" इन्होंने कुछ कन्द गुफा के पास ही जमीन में नीचे दबाकर रखे हुए थे। इनको इन्होंने चिमटे से निकाला ग्रीर धूनी की ग्राप्त में दबा दिगा। यह ग्राल के समान ही ग्राकार के पालम होने हो। इसके हाह ने स्वामादि के दिया। यह श्रालू के समान ही श्राकार के मालूम होते थे। इसके बाद वे स्नानादि के लिए चल गए। वृह्मचारीजी भी श्रपना सामान रखकर स्नान करने के लिए चल दिए। लगभग दो वजे के करीव महात्माजी ने इन कन्दमूलों को निकालकर छीला, कुछ ब्रह्मचारीजी को दे दिए श्रीर शेप स्वय खा लिए। इसके बाद महात्माजी ने इन्हें पास

वानी छोटी गुका में विश्वाम करने के लिए भेज दिया। दूसरे दिन प्रांत काल महान्माजी के श्रीचरणों में उपन्थित हुए भीर उनके श्रादेशानुसार रेत पर श्रासन विद्यावार बैठ गए।

> 'हिमालय का योगी' ग्रन्थ में 'प्रारम्भिक योग साधना' नामक दिनीय ग्रध्याय समाप्त ॥

### तृतीय ग्रध्याय

# तत्त्व-ज्ञान की प्राप्ति

गुरुदेव से वार्तालाप-महात्माजी ने योग-मार्ग के काठिन्य ग्रीर दुर्गमता की विशव व्याख्या की। कोई विरला ही इस मार्ग पर चल सकता है। इस पर्थ के पथिक प्राय मार्ग में ही भटक जाते हैं। इस पथ पर चलते-चलते जब कभी भगवद्कुपा से कोई छोटी-सी विभूति मिल जाती है साधक उसी से चिपटकर वैठ जाते है और ग्रपने यथार्थ लक्ष्य को भूल जाते है। ससार के भोगो से मानव कभी तृप्त नहीं होता। भोग एक मृगतृष्णा के समान है अत इनसे विरक्त होकर सन्तोप-धन को प्राप्त करने में ही कल्याण हो सकना है और मानव जीवन के उद्देश्य को पूर्ण कर सकता है। मनुष्य का लक्ष्य भोग सग्रह नहीं किन्तु दु ख से मुक्ति है। निवकेना के समक्ष यमाचार्य ने भोगजन्य पदार्थ प्रस्तुत किए किन्तु उसने सवको ठोकर मारकर एक ग्रात्म-विज्ञान ही मागा था। योग-मार्ग के पथिक की माग केवल ग्रात्मविज्ञान ग्रीर ब्रह्मविज्ञान ही होनी चाहिए, ग्रन्य कुछ नही । परन्तु इस प्रकार की भावना ग्रत्यन्त कठिन है। इसके लिए वहुत वडे बलिदान की ग्रावञ्यकता होती है । यदि ग्रापका चित्त सासारिक भोगो से उपराम हो चुका है, तभी ग्राप योग ग्रीर ग्रात्मविज्ञान सीखने के ग्रधिकारी हो सकते हो। ग्रव तक ग्राप वहुत भटक चुके हो। ग्राज ग्रापका इघर-उघर भटकना गान्त हो जाना चाहिए। ग्रव सभव है ग्रापको इतस्तत भटकने की ग्रावञ्यकता न पडेगी। ब्रह्मचारीजी ने महात्माजी के चरण पकड लिए ग्रौर नेत्रो से ग्रासू वहाते हुए हाथ जोड कर निवेदन किया, "गुरुदेव । मै आपके उपकार को कभी नही भूलूगा। सदैव आपका कृतज्ञ रहूगा। जीवनपूर्यन्त श्रापके श्रादेश का पालन करुगा। सर्वदा सावधानता-पूर्वक ग्रापके द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलता रहुगा। ग्राज में श्रीचरणो मे ग्रात्मसमर्पण करने मे अपना महान् गौरव मानता हू। किसी महान् पुण्य के परिणाम रूप ही आपकी कृपा लाभ हुई है। श्रापकी दया से मेरा कल्याण हो जाएगा। मैने विज्ञान प्राप्ति के लिए वहुत साधना की किन्तु ग्रभी तक मुक्ते सफलता लाभ नही हुई।" गुरुदेव ने कहा, "पूर्वजन्म के योगभ्रष्ट हो ग्रौर इस जन्म मे भी वाल्यकाल से ही यत्नशील हो। परमानन्दजी अवधूत ने कृपा करके आपको योग-मार्ग पर चला दिया था किन्तु आप फिर वीच में इस पथ से भटक गए।" व्यासदेवजी ने निवेदन किया, "क्या ग्राप इन अवधूतजी को जानते है ? आपको यह कैसे पता चल गया कि मै काश्मीर मे उनके पास साधना करता रहा हू ?" गुरुदेव किचित् मुस्कराए किन्तु कहा कुछ नही । ब्रह्म-चोरीजी ने विनीतभाव से पूछा, "महाराजजी। ग्रापके ग्राहार पर मुक्ते वडा ग्राइचर्य होता है। इसमे न अन्न है, न घी, दूध है न गाक। ईश कृपा से इनके अभाव मे भी म्राप स्वस्य मौर दीर्घायु है।" इस पर गुरुदेव ने बहुत ही मच्छा उत्तर दिया, "धनिक

बहुत गरिष्ट भोजन करते है, फिर भी वे रोगी वने रहते है श्रीर ग्रल्पायु होते है। वन-चर न ग्रन्न खाते हैं न घी, ग्रांर न दूध पीते हैं, न फल खाते है, तो भी वे कितने स्वस्थ ग्रांर दीर्घायु होते हैं । योगी के दीर्घायुप्य तथा स्वास्थ्य के कारण है—ग्रल्पाहार, ग्रन्प-व्यवहार, ग्रेल्प निद्रा, ग्रल्प भाषण, ग्रल्प परिश्रम, ग्रल्प भोग, ग्रल्प चिन्ता तथा ग्रत्प कर्म 1" व्यासदेवजी ने सप्रश्रय जिज्ञासा की, "महाराजजी, ग्राप इतने एकान्त स्थान मे क्यो निवास करते है ?" गुरुदेव ने कहा, "एकान्त मे भोक्तव्य पदार्थी श्रीर विषयो के साथ सपर्क नहीं होता।" व्यासजी ने निवेदन किया, "गुरुदेव, इनकी स्मृति तो हो सकती है ?" गुरुदेवजी ने समभाया कि "मुमुक्षु योगी इन सर्व स्मृति-जन्य संस्कारो का ग्रसम्प्रज्ञात समाधि द्वारा निरोध करता जाता है। निर्जन वन मे रहने से भोक्तव्य पदार्थों का प्राय ग्रभाव ही रहना है। विशेष रूप से पदार्थ उपलब्ध नही होते है। पास न रहने से या सामने न ग्राने से भोगने की इच्छा ही उत्पन्न नही होती, इसलिए इन्द्रिया, मन तथा बुद्धि सदैव शान्त रहती है। विषयो का सम्वन्थ न होने से या कम हो जाने से मन ग्रीर बुद्धि के सब बाह्य व्यापार ज्ञान्त हो जाते है ग्रीर ग्रन्तर्मुख-वृत्ति वनी रहती है। वैराग्य के दृढीकरण का भी अच्छा अवसर मिलता है। जीवनकाल मे ही सब विषय-भोग ग्रविकार-पूर्वक छूट जाते हैं। जान तथा वैराग्य पूर्वक ही त्याग होना चाहिए।" व्यासदेवजी ने पुन प्रवन किया, "फिर त्व तो ये कन्दमूल भी उपार्जन नहीं करना चाहिए।" गुरुदेव ने इस पर कहा, "यदि ऐसा न किया जाएगा तो यह ग्रात्मघात की कोटि मे गिना जाएगा। यह तो सामान्य भोग है। इनके विना जीवन धारण करना ही कठिन है। यदि इतना भी न करता तो आपको लाभ कैसे होता ?" ब्रह्मचारीजी ने कहा, "महाराजजी । इस प्रकार मे तो ग्राप लाखो को लाभ पहुचा सकते है।" गुरुदेव ने उत्तर दिया, "यह साधन-चतुष्टय-सम्पन्न ग्रधिकारियों के मिलने पर निर्भर है।" व्यामदेवजी ने प्रार्थना की कि महाराजजी, ग्राप मुक्ते ग्रात्म-विज्ञान के विषय में भूमिका रूप में कुछ वताने की कृपा करें। गुरुदेव ने ग्रादेश दिया, "कथन मात्र से ज्ञान नहीं होगा। केयल इतना ही जान सकोगे कि ग्रापको क्या ज्ञान करवाया जाएगा।" इसके पश्चात् पूज्य गुरुदेवजी ने सप्रज्ञात समाधि द्वारा क्या-क्या साक्षात्कार करवाया जाएगा, यह समभाते हुए कहा --

श्रात्मिवज्ञान तथा ब्रह्मविज्ञान का उपदेश—सर्वप्रथम हम श्रापको श्रपने मनो-वल द्वारा ध्यान ग्रीर समाधि में प्रवेश करवाकर स्थूल शरीर के ग्रन्दर प्रवेश करवाएगे। सपूर्ण शरीर के नस-नाडियो ग्रीर सप्त-धातुग्रो इत्यादि का प्रत्यक्ष ज्ञान करवाएगे। स्रापको स्थूल शरीर का भली प्रकार साक्षात्कार हो जाएगा। ग्रापके दिव्य-चक्षु खोलकर ग्रन्तर्मुखी वृत्ति द्वारा ग्रापको स्थूल शरीर के ग्रन्दर के सव पदार्थों के दर्शन करवाए जाएगे। तब ही वैराग्य ग्रीर ज्ञान की प्राप्ति होगी। यह ही मोक्ष का हेतु वन सकेगा। इसके पश्चात् ग्रापको १० चक्रो, प्राणोत्थान तथा कुण्डिलनी उत्थान का साक्षात्कार करवाया जाएगा। ग्राप इन सवके विज्ञान को देखकर ग्राश्चर्य-चिकत हो जाएगे। इसके ग्रनन्तर १० प्रकार के प्राण का विज्ञान, इनकी ग्रपने-ग्रपने प्रदेश में भिन्न-भिन्न कियाए, भिन्न-भिन्न रग-रूप ग्रीर व्यापार का प्रत्यक्ष ग्रापको होगा। स्थूल शरीर तथा प्राण का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्राण के विना स्थूल शरीर जीनिन नहीं रह सकता। जिस प्रकार स्थूल शरीर के लिए प्राण जीवन का हेतु है इसी प्रकार तेज की भी गरीर मे प्रधानता है। तेज ग्रम्निभूत का कार्य है। ये दोनों सघात को प्राप्त होकर इस स्थूल गरीर की स्थित-स्थापना के हेतु हैं। गरीर में पाकादि के सब कार्य इस तेज के द्वारा ही होते हैं। इसके ग्रभाव में या न्यूनता हो जाने से स्थूल गरीर निर्जीव सा हो जाता है। उपरोक्त विज्ञान इम स्थूल गरीर में ग्राप साक्षात् रूप से देखेंगे। इसके उपरान्त ग्रापको सूक्ष्म गरीर में प्रवेग करवाया जाएगा। यह मुख्य रूप से ब्रह्मरध्न में स्थित हैं ग्रौर गौण रूप से सम्पूर्ण स्थूल गरीर में। इसके सब व्यापार रग रूप ग्रादि दिव्य ज्योतियों का माक्षात्कार करोंगे। इस सूक्ष्म गरीर में ग्रापको ११ तत्त्व दिखाई देंगे। ज्ञानेन्द्रिया, कर्मेन्द्रिया, पचतन्मात्रा (सूक्ष्मभूत), मन, बुद्धि, स्थूल भूत, इनके व्यापारों ग्रौर मृष्टि की रचनादि का साक्षात्कार होगा। स्थूल ग्रौर सूक्ष्म भूतों का ग्रौर कार्य-कारण का साक्षात्कार भी ग्रापको यही होगा। इसके ग्रनन्तर ग्राप हृदय प्रदेग में कारण-गरीर में प्रवेग करोंग। वहा पर ग्रापको सूक्ष्म प्राण, ग्रहकार, चित्त, जीवात्मा, प्रकृति ग्रौर ईग्वर का व्यिष्ट रूप में प्रत्यक्ष ज्ञान होगा। तदनन्तर ग्रापको तीनो गरीरों से ऊपर उठाकर समिष्ट पदार्थों का साक्षात्कार ग्राकाग-मण्डल में होगा ग्रौर ग्रन्त में ३२ पदार्थों के कारण रूप प्रकृति में ब्रह्म के व्याप्य-व्यापक भाव की प्रत्यक्षानुभूति होगी ग्रौर ग्राप पूर्णरूपेण कृतकुत्य हो जाग्रोगे।

लगभग तीन घण्टे तक उपरोक्त ज्ञान के विषय मे गुरुदेव ने उपदेश दिया ग्रौर सावधान होकर वैठने की ग्राज्ञा दी। ग्रौर कहा, ग्रव ग्रापको सप्रज्ञान समावि हारा उपरोक्त पदार्थों का साक्षात्कार करवाया जाएगा।

सप्रज्ञात समाधि तथा कारण-कार्यातमक प्रकृति-पुरुप का विज्ञान—श्री पूज्य गुरुदेव ने, सुखपूर्वक जिस ग्रासन से बैठने का ग्रभ्यास हो उसमें बैठने की ग्राज्ञा दी। वृह्यचारीजी गुरुदेव के समीप ही सुखासन से ज्ञान्त मुद्रा में बैठ गए ग्रीर उनकी ग्रीर त्राटक करके देखने लग गए। थोडी देर के पश्चात्, श्री गुरुदेव के ग्रपने दाए हाथ के ग्रगूठे ग्रीर ग्रगुलियों से ज्यासदेवजी के मस्तिप्क को स्पर्ज करने पर, इनके नेत्र स्वत ही वन्द होगए। इसके पश्चात् सभी वाह्य कियाग्रो का ग्रभाव होगया। ग्रपनी तथा गुरुदेव की भी सुध नहीं रही। मन, प्राण, इन्द्रिया वृद्धि सव ज्ञान्त हो गए। मूलाधार में एक ग्रलौकिक प्रकाश उत्पन्न हुग्रा जिससे सपूर्ण जरीर देदीप्यमान होगया ग्रीर शरीर के भीतर का सव भाग प्रत्यक्ष होगया। इसके पश्चात् ब्रह्मरश्च से प्रकाश की दिव्य धाराए प्रवाहित होने लगी ग्रीर स्थूल जरीर का विज्ञान प्राप्त होने लगा। जरीरस्थ सव पदार्थों का साक्षात्कार होगया। इस समय व्यासदेवजी को उस सव विज्ञान का साक्षात्कार हुग्रा जिसका सविस्तृत वर्णन इन्होंने ग्रात्म-विज्ञान तथा वृह्य-विज्ञान गत्थों में किया है। ये सायकाल ५ वजे से १० वजे प्रात तक समाधिस्थ रहे। इन १७ घण्टो में समस्त विज्ञान प्राप्त किया। पूज्य गुरुदेव ने ग्रपन दाहिने हाथ की ग्रगुलियों से सिर को थपथपाया ग्रीर कहा, "बृह्यचारी! ग्रापका ग्रात्म-विज्ञान ग्रीर वृह्य-विज्ञान प्राप्ति का लक्ष्य पूरा होगया। ग्राप उठो ग्रीर ग्रपन इच्छित गन्तव्य पथ पर जाग्रो। विज्ञान केवल इतना ही है जिसका ग्रापको प्रत्यक्ष-रूपेण साक्षात्कार करवा दिया गया है। ग्रव ग्राप इसका एकान्त सेवन करके ग्रीर मौनव्रत धारण करके दृढीकरण करे।"

समाधि से व्युत्थान—प्रहाचारीजी के नेत्र खुल गए। उनसे प्रथुधारा वहने नगी। उनके गरीर मे एक प्रकार का सन्नाटा-मा छा गया था। वाणी गद्गद् हो गई थी। श्री गुक्देव के चरणों में प्रणाम किया और उनके चर्णारिवन्दों को प्रपने नेत्र-जन ने यो दिया । गृरुदेव ने कहा, "बेटा <sup>।</sup>यह ग्रवसर तो रोने का नही है ग्रपितु प्रमन्न होने गा है। स्नानन्द स्रीर स्नाह्नाद का है।" पूज्य गुरुदेव ने पुन उन सर्व पदार्थी के विज्ञान को समनाया जिन्हे ब्रह्मचारीजी ने समाधिस्थ होकर देखा था । इस विज्ञान के पूर्वार्ध का ब्यासदेवजी ने स्वरिचत ग्रय 'ग्रात्म-विज्ञान' मे उल्लेख किया है। यह केवल टाप्टि-विज्ञान के रूप मे है और उनका सम्बन्ध केवल जीवात्मा से है। उत्तरार्व नमन्दि-विज्ञात पा उत्तेग उन्होंने अपने 'ब्रह्म-विज्ञान' नामक ग्रथ में किया है। श्री कृतानारी भी ने नाम जोए और ननमस्तक होकर गुरुदेव से उनके नरणों में रहकर नेवा रुग्ने तो स्राज्ञा के लिए प्रार्थना की । गुरुदेव ने स्राज्ञा नहीं दी क्योंकि वे किसी को भी धानने नाय नहीं रसते थे। व्यासदेवजी ने निवेदन किया, "आपने मुक्त पर महान् उपकार किया है। मुक्तं कृतकृत्य तिया है। मैं जन्म-जन्मान्तरों में भी आपके इस महान् नृण को नहीं चुका सकूगा। ग्राप मेरे लिए साक्षात् भगवान् के रूप मे ग्रयनरिन हुए है। मेरी वाणी में उननी शक्ति नहीं है जिसमें मैं श्रापके उपकार ग्रीर गुना का वर्णन कर सह ।" पूज्य गुरुदेव ने ग्रन्त मे इतना श्रादेश और दिया कि "कुछ वर्ष महान्त से रहकर कार्छ मौन बन करके इस विज्ञान को दृढभूमि करना श्रीर दन नियमो का पालन करना क्योंकि इनसे यह विज्ञान दृढभूमि हो जाएगा। जिस प्रतार बाउ रोन जी रना गरनी है उसी प्रकार से ये नियम साधक की रक्षा करते र्र। '' भी पूज्य मुरदेव ने जिन नियमों के पालन की खाजा दी थी वे निम्नलिखित है -

- श्राप्तस्य श्रीर प्रमाद को त्यागकर श्रद्धा-भिक्त श्रीर प्रेम से इस विज्ञान को इट करना श्रीर प्रकृति-पृर्ण के विवेक को वृष्टभूमि करके प्रकृति श्रीर इसके कार्यों के पनि वैराग्य उत्पन्न करना ।
- २ स्रश्मिमान का त्याग करना । नम्र स्रीर विनीत भाव रयना । कोध का दमन करना और सदैव यान्त, गंभीर, निब्चिन्त स्रीर प्रसन्न रहना ।
- ः गुयती स्त्रियो के पास कभी एकान्त में मत बैठो । अष्ट प्रकार के मैथुनो ने गरैय बनो ।
- गुरुजनो नथा सम्मानाहं व्यक्तियो का सदा सम्मान करो । प्रत्यक्ष या
   परोज मे कर्जा उनकी निन्दा मन करो । महानात्माग्री का सत्सग करो श्रीर ज्ञान
   तथा यैराग्य को दृढ करने का नदीब प्रयत्न करो ।
- प्र परिद्धान्वेषण एभी गत करो। ग्राह्मिनिरीक्षण हारा ग्रपने दोषो का पना नगाकर उन्हें दूर करने के लिए सर्वेव प्रयत्नशील रहो।
- ६ योगिवया का उपयोग जीविकोपार्जन के लिए कभी मत करना। यदि कभी गोर्ज योग-निद्धि प्राप्त हो जाए उसका न तो कभी अभिमान करना श्रीर न कभी उसका प्रदर्शन करना।
  - ७ योग-विद्या गोपनीय है, उसे सदा गोप्य रखना। किसी उत्तम ग्रधिकारी को

ही प्रदान करना जिससे वह फलवती हो । सासारिक लोगो से विशेष सपर्क रखने की ग्रावश्यकता नही । ग्रावश्यक कार्य के ग्रतिरिक्त ग्रविक पत्र-व्यवहार भी मत करना।

- प्रतिदिन ग्रथवा प्रिनसप्ताह ग्रपना दोप निरीक्षण करते रहना चाहिए। एक मास मे कितने दोपो का निवारण हो सकता है इसका हिसाव रखना चाहिए। इससे जीघ्र ही दोपो का क्षय होने लगता है।
- ह इन्द्रिया विपयासक्त न होने पावे। यदि ज्ञान ग्रीर विचार से इनका दमन न हो सके तो हठ तथा वलपूर्वक इनका दमन करना चाहिए। बुद्धि के विकार—काम, क्रोब, लोभ, मोह, ग्रहकार, रागद्वेपादि का ग्रहिन्च दमन करते रहना। मान-ग्रपमान, निन्दा-स्तुति, हर्प-गोक, हानि-लाभादि द्वन्द्वो मे साम्यभाव रखना। ग्रामी मन गान्ति को कभी भी भग न करना। प्रत्येकावस्था मे ज्ञान्त नथा सनुष्ट रहने का प्रयत्न करना।
- १० यमो तथा नियमो का पालन करने मे सदैव कटियद्व रहना क्योंकि ये योग की ग्राबारिशला हैं। नित्यप्रति ग्रण्टाग योग का ग्रभ्यान करना। घारणा, ध्यान, समाधि द्वारा नित्यप्रति प्रकृति के कार्य-कारणात्मक पदार्थ, प्रकृति-पुरुप विवेक ग्रीर ब्रह्मविज्ञान को दृढभूमि करना। परम वैराग्यवान् होकर मोक्ष में स्थिर रहना। ये मव तुम्हारे ज्ञान ग्रार वैराग्य को दृढभूमि वना देगे ग्रीर तुम्हारी रक्षा करेगे।

गुरुदेव का व्यक्तित्व—श्री गुरुदेवजी अत्यन्त सरल-स्वभाव थे। वहुत सरल सस्कृत वोलते थे। उनका विषय को समस्काने का ढग वडा आकर्षक था। वाणी में अलौकिक माधुर्य था। उनमें असीम वात्सल्य भाव था। स्नेह तथा प्रेमपूर्वक प्रत्येक वात को समस्काते थे। त्याग, वैराग्य और विज्ञान की साक्षात् मूर्ति थे। वे निस्पृह, विरक्त तथा ब्रह्मज्ञानी थे और योगेञ्वर थे। इनका जुभ नाम श्री आत्मानन्दजी था।

गुरुदेव से विदाई—श्री व्यासदेवजी ने पूज्य गुरु महाराजजी को उनकी ग्राज्ञा का पालन करने तथा उनके वताए नियमो पर चलने का विज्वास दिलाया ग्रीर निवेदन किया, "पूज्य महाराजजी । ग्रापके श्रीचरणो मे पृथक् होने को चित्त विलकुल नही कर रहा है। ग्रापके ग्रादेश का पालन करने के लिए ही में ग्रापसे विदा हो रहा हू। ग्राप मुक्ते सर्वेव ग्रपना ग्राशीवींद देने की कृपा करते रहिएगा ग्रीर मुक्ते डम मार्ग पर चलने के लिए वल, शक्ति, पराक्रम, बुद्धि ग्रीर वैर्य प्रदान करने का ग्रनुगह करते रहिएगा जिससे ग्रापका कृपापूर्वक प्रदान किया हुग्रा यह विज्ञान दृढभूमि होकर परम वैराग्य द्वारा मोक्ष प्राप्ति करा सके।" श्री गुरुदेव की चरण-वन्दना करके तथा उनके श्रीचरणो की रज ग्रपने मस्तक पर सादर लगाकर व्यासदेवजी ने ग्राखो मे ग्रश्रुवारा वहाते हुए वहा से प्रस्थान किया।

थोडी देर चलकर व्यामगगा के किनारे एक पत्थर के नीचे गुफा में ठहरने का विचार किया। दो दिन तक महाराजजी सोए नहीं थे ग्रत इसी गुफा में रात्रि को व्यन किया। दूसरे दिन ब्रह्मचारीजी राजाराम के पास रहे ग्रीर फिर वहां में गगोत्री चले गए। वहां जाकर गौरी कुण्ड पर एक गुफा में निवास किया। यहां से कुछ दिनों के बाद पुन उत्तरकाशी लौट ग्राए ग्रीर तेखला में ब्रह्मजी की कुटिया में निवास किया।

### श्रमृतसर के लिए प्रस्थान

काष्ठ मीन यत—कुछ दिन उत्तरकाणी रहने के उपरान्त श्री महाराजजी अमृतनर जने गए ग्रीर वहा पर मोनीराम की तगोची में निवास किया। यहा रहकर काण्ठ मीन व्रत घारण किया।

किंटन साधना का कार्यक्रम--श्री त्रह्मचारीजी ने प्रव नमक, मीठा, शाक, नव्जी नारा फन उत्यादि पाने का परित्याग कर दिया था। केवल मूग की दाल उवाल कर उसमें बोदा-ता वी टालकर ही भोजन के एप में लेते थे। नित्यप्रति रात्रि के दो चन जग जाते वे स्नार स्नानादि करके ठीक तीन वने सभ्यास मे बैठ जाते थे। दोपहर के १२ प्रति गर पूज्य ग्रेयेवणी ने जिन परायों का विज्ञान करवाया था उनके समावि हारा प्रयत्व उर्धने करने का अभ्यान करने थे। ऊहापोह और नर्क-वितर्क हारा उन पदार्थी रा निस्त्र गरके युदि को निरचयात्मक बनाते थे। समाधि से ब्यूत्यान होने के पञ्चान सम्तितीत करो ते। गत्रननर भोजन बनाते, गोजन करके विश्राम करते वे। उसमें लगभग तीन घण्टे लगने थे। तीन वजे से पाच बजे तक पुन अभ्यास करते ो । इपके परचात् ५ ने ६ पर नहर के किनारे ध्रमणार्थ जाने थे । इस समय चादर न गर को दक्तर नतने थे, किनी को तेनने का प्रयत्न नहीं करने थे जिससे मन मे विर्मा प्रकार का विधेष उत्परन न तो परे। उसके पश्चात् पुन ६ वजे से १० वजे नक अभ्यान करने थे। आन कान के समाच ही ज्या समय भी अनुभूत विज्ञान का प्रत्यक्षीतरण होता ता । १० वजे समाधि से उठकर द्ध गर्म करके पीते स्रोर साहे दस यन रायन रायने थे। एन दिनों महाराजजी केवल नाढे तीन घन्टे ही सोते थे। छ सास ना काठ मीन रसा। केपन पृणिमा केदिन ही सान-पानादि की व्यवस्था करने के जिए ही कीन सोकते थे। वैशारा के अना में इस गीन बन की समाप्ति हुई। अब साजा जिल्लासमय के मकान पर नगर में जाकर रहने लग गए। कठिन तपस्या तथा श्रमास के कारण श्रव मन सान्यक होगया था।

बन्दान प्रदान—एक दिन पारटर कर्मनत्यजी महाराजजी से मिलने के लिए ग्राम । ये उनी हुई के चीक से अप्रेजी दवायमों की दुकान करते थे । इनके अनन्य भाग थे । उनके पुत्रिया नो कई जी किन्तु पुत्रहीन थे । उन्होंने ब्रह्मचारीजी से निवे- उन किया कि मुर्क भी आपकी नप्या का कुछ अब मिलना चाहिए। में पुत्रहीन हू अब भाग मुने अपना प्रदान रूप आशीर्वाद दीजिए जिनमें पुत्रवान हो सकू । महाराजजी ने उन्हें आपीर्वाद देने हुए बहा, "नुम्हारी उन्छा पूर्ण होगी । अपनी धर्मपत्नी के गर्भवाद दोने की मुलना मुके दे देना। में अपने मनोवल से परिवर्तन करने का प्रवन्त करणा।" उन्होंने कई प्रकार के मानस्वित प्रयोग किए। ईश-कृपा से कर्मपत्रवी के पुत्र उन्हान हुआ। सत्यनिष्ठ योगियों के वरदान सदैव सफल होते हैं।

प्रमृतनर में महाराजजी ने उस बार कई व्यक्तियों को प्राणीविद दिए जो सभी नफ़त हुए। लाला जगन्नाय भी महाराजजी के बड़े भक्त तथा श्रद्धातु थे। इनकी एक नए की थी जो पाठ वर्ष की प्रायु की थी। उसकी नृद्धि बड़ी तीक्षण थी ग्रीर राभाय बड़ा चवन था। वह भागकर महाराजजी के पास श्राई ग्रीर अपना हाथ उनकी श्रीर फैनाकर कहा, "पण्डिनजी, ग्राम नेरा हाथ देखकर बताग्रो मेरी किस्मत

कैमी है।" यह अपने साथ अन्य कई वालको और वालिकाओं को ले आई थी। महाराजजी को हस्त-रेखाओं का ज्ञान तो था नहीं पर यू ही विनोद में वच्चों के हाय देखते रहे। जगन्नाथजी की अण्टवर्पीया पुत्री कैलागवती का हाय वेखकर कहा, "तुम्हें और पदार्थ तो सब ठीक मिलेंगे किन्तु पित तुम्हारा काना होगा।" समय पाकर जव वह विवाह के योग्य हुई तो उसका विवाह एक वडे घनाड्य परिवार में हुआ किन्तु उसकी एक आख खराव थी। जो वान विनोद में कहीं गई थी वह भी सफल सिद्ध हुई।

लाला शिवसहाय का दौहित्र भोला एक वार महाराजजी के पात ग्राकर ग्रयना हाथ दिखाने लगा। इसने भी प्रासमास के बच्चो से मुना था कि ये हाथ देखते हैं। ब्रह्मचारीजी ने हाथ देखकर बनाया कि तुम बहुत धनांग्राजन करोगे। उनका यह वरदान फत्रीभून हुग्रा। यह बालक जब बजा होकर कारोबार करने लगा तो इसकी मासिक प्राय लगभग दस हजार थी ग्रौर इसे लोग राजकुमार कहा करने थे। विदेशों से इसका बडा व्यापार होना था ग्रांर एक बडा प्रस्थान उद्योगपति बन गया था।

इसी प्रकार लीलानती नाम की एक वालिका ने अपना हाथ महाराजजी को दिखाया, तब इन्होंने उससे कहा, तेरा पिन तेरी प्राज्ञा में रहेगा। इसके साथ भी ऐसा ही हुआ। वह अब तक श्री महाराजजी का गुणगान करनी रहनी है।

इस काप्ठ मौन से महाराजजी की सकल्पनिन मे वहुन वृद्धि होगई थी, इसी-लिए भविष्य की वाने वहुन बताया करने थे।

काइमीर गयन—महाराजजी प्राय गर्मी के मीसम मे काइमीर श्रीर सर्दी के मीसम मे अमृतसर श्रा जाया करते थे। इन दोनो तथानो पर पूज्य गुरदेव प्रदन्त विज्ञान को मीन वन धारण करके दृढभूमि करने में सलग्न रहते थे। मदियों में प्राय श्रन्न खाना छोड देते थे। केवल फल, दूब, जाकादि ही भोजन के रूप में लेने थे। श्रीष्म ऋनु के प्रारम में ही ये काइमीर पद्यार गए श्रीर वहा जाकर काष्ठ मीन वन किया। पूर्ववत् सुपनी वाग में ही निवास किया। कई वर्ष इसी प्रकार श्रमृतनर श्रीर काइमीर में मौन वन करके साधना करते रहे।

## कैलाश तथा मानभरोवर वाजा

पूज्य महाराजजी काञ्मीर जाते हुए योगी ग्रमरनाय भसीन के पास रावलपिडी में ठहरें। इन्हीं दिनों में स्वामी विज्ञुद्धानन्दजी भी रामवाग में ठहरें हुए ये। इन दोनों ने कैलाज तथा मानसरोवर की यात्रा करने का विचार किया। रावलिंपडी से ये दोनों ग्रमृतसर चले गए। एक दिन के लिए लाला जिवसहायमल के मकान पर निवास किया। उनकी सम्मति लेकर इन्होंने ग्रलमोडा के लिए प्रस्थान कर दिया। यहीं से कैलाज-यात्रा प्रारंथ होती थीं। ग्रलमोडा पहुचकर कम्पनी दाग के पास एक कोठी में ठहरें। यह कोठी वडे एकान्त स्थान पर थी। यहा रहकर केलाज-यात्रा की पूरी तैयारी की ग्रीर ६ जून को इस यात्रा पर जाने का निश्चय किया। ग्रतमोडा से पाच पैसे प्रतिमील के हिसाब से चार नेपाली कुली कर लिए। यहां से गर्ज्यांग १५० मील है। मार्ग में प्रति ६-१० मील पर पडाव ग्राते हैं। इनमें मुख्य ये हैं — ग्रस्कोट, धारचला, बेला, इत्यादि। नित्यप्रति १५ मील चलते थे। ग्रम्कोट ग्रांर

घारनुता में दो-दो दिन ठहरे। श्रम्कोट एक छोटी सी रिसायत थी। यहा का राजा वडी धार्मिक प्रवृत्ति का था। कैलाश जाने श्रीर श्राने वाले सन्त-महात्माश्रो का वडा सम्मान करता था। उन्हें श्रन्त-वम्य ग्रीर रुपये वितरित किया करता था। इन्होंने स्प्रामी विशुद्धानन्द तथा श्री ब्रह्मचारीजी को भी उस प्रकार की सहायता देनी चाही थी किन्तु उन दोनों ने ही स्वीकार नहीं की।

विछडे हुए राजपूतो का पुन धर्म-प्रवेश—धारचुला के कई राजपूत घराने ईनार्ज बन गए थे। वे पुन हिन्दू धर्म मे ग्राना चाहते थे, किन्तु यहा के राजपूत उसमे बहुत पृणा करते वे इसलिए इन्हें पुन हिन्दू धर्म मे लेना नही चाहते थे। ये सब एक्सिन होकर की महाराजजी के पास आए और निवेदन किया, "महाराज, हम सोभ के नशीभून होकर ईमाई वन गए थे। अपनी मूर्वता पर हमें वडा पश्चाताप हो रहा है। याप हमारे जाति-गाउयों को समकावे स्रीर पुन हमारा प्रवेश हिन्दू धमं में करवाने की कृता करें। हमारे धमं परिवर्तन में यहा के हिन्दू हमसे बहुत घूणी उन्ते नग गए है। हमारे माथ ये किसी भी प्रकार का व्यवहार रखना नहीं चाहते। हमारा यहा पर रहना बड़ा कठिन होगया है। हमारी शुद्धि करके आप पुन हिन्दू धर्म मे हमारा प्रवेश करवा दे। हम ग्रापका वजा उपकार मानेंगे।" महाराजजी के गन पर उनकी प्रार्थना का बहुत प्रभाव पटा श्रीर स्वामी विशुद्धानन्दजी से कहा, इन्हें गुद रको हिन्दू अमे मे सम्मिलिन करना एक वडा पुण्य-कार्य होगा। ये गोभक्षक से गोरका वन जाएं। यहा पर ८-५ दिन ठहरकर इन्हें हिन्दू घर्म पर उपदेश देना चाहिए ग्रीर एक यृहद् यज करके तथा उनमें प्रायध्वित्त करवाकर इन्हें पुन हिन्दू धमं मे प्रिविष्ट रचना नाहिए। महाराजजी की बाने सुनकर ये सब बडे प्रसन्त हुए भ्रोर एक दिन मे ही यज के निए बहुत गी धनराशि एकत्रित कर ली। घी, सामग्री नथा समियादि सब यन-साधन जुटा लिए। उन सब लोगो को तीन दिन तक व्रत रखवाया गया, जाप उत्याया गया श्रीर हिन्दू धर्म की महत्ता पर तीन दिन तक उपदेश दिए गए। इन सबने गाम तथा मदिरा का सेवन न करने की प्रतिज्ञा की। लगभग एक सो नरतारियो की शुद्धि की गई। इसके पञ्चात् एक बृहद् प्रीतिभोज किया गया जिसमे गुद्ध होने वाले उंसाउयों के स्रतिरिक्त सत्तर के लगभग हिन्दू परिवार भी सम्मिति हुए वे । सबने एक ही स्थान पर बैठकर प्रीतिपूर्वक भोजन किया । इनके हिन्दू जाति मे प्रयिष्ट होने पर सबने सुशी मनाई ग्रीर उनके साथ फिर से रोटी वेटी का मम्बन्ध स्थापित होगया। श्री महाराजजी का दृष्टिकोण वडा उदार है।
समुचित भावनाण उन्हें कभी स्पूर्ण तक न कर सकी थी। उनकी धार्मिक तथा सामाजिक उपारता बडी उन्नकोटि को पहुंची हुई थी।

भारनुता में जहां पर योगी सीयारामजी ने अपना शरीर छोडा था उस स्थान को देगने के लिए महाराजजी प्यारे। सीयारामजी के साथ इनका बहुत पुराना परिचय था। उनके प्रति थद्धा भी थी। उस स्थान पर पहुचते ही इन्हें उनका स्मरण होगया और उन्होंने जहां पर प्राणन्यांग किए थे उस स्थान को देखने के लिए गए। सन्त सीयारामजी को हैजा होगया था। जो भक्त इनके साथ थे उन्हें भी इसी रोग ने घर द्याया था। धारचुता अलमोटा से एक सी मील है। यहां से आगे जीयित का मार्ग द्या किटन है। यह विशाल पर्वतों के उत्तर चढना था। वडी किटनाई के साथ

१६-१७ दिन मे गर्व्याग पहुचे । यहा से कुलियो को दाम चुकाकर वापम कर दिया, इससे आगे खच्चरो और घोडो का रास्ता था। यहा मे लगभग एक मी मील कैलान था। गर्व्याग की ऊवाई लगभग १०-११ हजार होगी। यहा ऊवाई के कारण शीन वहुत होता है। गर्व्याग एक छोटा-सा गाव है। जनसम्या बहुत कम है। यहां के लोग तिब्वत से व्यापार करते है। क्षत्रियों की सम्या अधिक है। ये लोग बनाइय है। यहा पर एक डाकखाना भी है। गर्व्याग भारत की सीमा की ग्रन्तिम चौकी है। यहा मे केलाग जाने के लिए प्राय यात्री एक सघ वनाकर जाया करते हैं, अन यहा पर इन्हें १०-१२ दिन तक रुकना पडा जिसमें सब यात्री इकट्ठे होकर यहां ने कै नाम के लिए प्रस्थान कर सके। यहा से आगे लिपूलेक-लिपूबूरा नाम का एक अट्टान्ह हजार फीट ऊचा पहाड है। इस पर्वत के उस पार तिव्वन तथा इम पार भारतवर्ष है। यह पर्वन दोनो देशो की सीमा पर है। ६-७ दिन में एक सिबी सेठ, एक विहार का टाक्टर तथा ३-४ साधु एकत्रित हो सके। ये कुल मिलाकर ८-१० यात्री थे। उस ग्रोर चौर तथा डाकुग्रो का वडा भय रहता था। इसीलिए यात्री एकत्रिन होकर जाया करने थे। यहा से श्री ब्रह्मचारीजी तथा स्वामीजी ने दो-दो वच्चरे ग्रयना सामान ने जाने के निए तथा एक-एक घोडा सवारी के लिए किराए पर निये। इसने ग्रागे ग्रायादी यहन कम थी ग्रत खाद्य पदार्थ यही से खरीद लिए थे। ऊगर पहाड पर सब सामान यही से जाता था। यही से एक प्येप्रदर्शक भी मार्थ ने लिया। एक छोलदारी भी यही में ने नी। डाकुग्रो से ग्रात्मरक्षा करने के निमित्त से बन्दूक, तलवार, पिन्नील, वर्छी, कारतूमादि सर्वे किराए पर साथ रखे। खच्चरो स्रीर घोडो के चानक नथा पैदन स्रीर घोडो पर जाने वाले मिलाकर कुल १६ व्यक्तियो का एक मत्र वना । पहिला पडाव काली नदी पर किया। यह वहा से १० मील पर थी। वहा पर साय राल ५ बजे पहुंचे। रात्रि को सबने वही पर विश्राम किया। दूसरे दिन ग्रद्धारह हजार फीट की ऊचाई पर चढना या । मार्ग वडा दुर्गम था । पर्वत के ऊपर वर्फ जमी हुई थी । इसी पर इन सब यात्रियो को चलना था। प्रात काल जब चढाई प्रारम्भ की तो वर्षा होने लगी। इनना ही नही, उस समय वर्फ भी पड़ने लगी। वडी कठिनाई के माथ जैने-तैमे निप्यूरे की चोटी पर पहुचे। वर्फ पड़ने के कारण मार्ग का कोई चिन्ह दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था. इसलिए इन्हें पर्वत-शिखर पर ही एकना पड़ा। चारो ग्रोर वर्फ ही वर्फ दृष्टिगोचर हो रही थी। कही भी सूखी भूमि दिखाई न दे रही थी। तम्बू नगाने के निए भी कोई न्यान वहा पर न या। नई वर्फ ने पुराना मार्ग ग्राच्छादित कर दिया था। पथप्रदर्शक भी ग्रागे जाने के लिए तैयार न था। किसी व्यक्ति ग्रथवा खच्चर या घोडे के वर्फ मे दवकर मर जाने का भय था, इसलिए उसने सलाह दी कि आगे वहना भयोत्यादव है म्रत जैसे-तैसे यही पर पडाव डाला जाए। म्रव वर्फ को हटाकर छोलदारिया लगाने का विचार किया गया। वडी कठिनाई से वर्फ को हटाकर छोलदारिया नगाई गई। वर्फ हटाते-हटाते हाथ नि सज-से होगए थे। प्राय सभी यात्रियों को शिरपीड़ा ने घर दवाया । इनके पास आयुर्वेदिक, एलोपैथिक तथा होम्योपैथिक ग्रादि अनेक ग्रीपविया थी। इस पीडा के निवारण के लिए विविध श्रीपिधयों का उपयोग किया गया किन्तु कोई भी सफल नहीं हुई। सभी यात्री इस पीडा से व्याकुल हो रहे थे। दुभाषिया वेचारा भी वडा परेगान था क्यों कि कभी इस मौसम में इतनी वर्फ नहीं पढ़ी थी। ग्रीर न कभी इस स्थान पर पडाव ही किया था। यह दुभापिया प्राय यात्रियो के नतों के साथ प्रतिवर्ष श्राया करता था। उसके लिए यह एक श्रभूतपूर्व वात थी। उसने महाराज्जी से निवेदन किया, "महाराजजी, इस प्रकार से वर्फ इस मीसम में कभी नहीं पड़ी। मुक्ते ऐसा मालूम होता है कि हमारे सब मे कोई पापिष्ठ व्यक्ति है। इसी मे असमय मे यह भयकर हिमपात हो रहा है।" महाराजजी ने कहा, "पापी तो एक टो ही होगे फिन्तु उनके पाप का दण्ट हम सबको भोगना पड़ रहा है।" सब यात्रियो ने यननी-प्रानी छोलदारियों में स्टोव जलाकर गरीर को जैसे-तैसे गर्म करने के लिए नाय पी। महाराजजी का दुभाविया उनकी सभी प्रकार की सेवा करना था। विस्तर बाबना, घोडे पर नवारी करवाना, टेट लगाना, जल लाना, वर्तन साफ करना श्रादि नय काम वही करता था। इसका नाम कीचिंसह था। सदा प्रसन्न-वदन रहता था ग्रोर बडा सब्जन था। बडी अद्धा से महाराजजी की सेवा-मुश्रुपा करता था। ग्रपने जीवन के पुर्वभाग में यह २६ माल तक कैलाज-मानसरीवर के मैदानों में रह चुका या गौर टाँक मारकर ग्रेपना निर्वाह किया करना था। यही उसकी ग्राजीविका का मन्य साधन था। एक सन्त के उपदेश ने इसके जीवन में महान् परिवर्तन ला दिया ग्रीर यह दानव ने मानव बन गया। डाके डालना छोड दिया, धर्मपूर्वक ग्राजीविको-पार्च र रेने लग गया । स्रयामिक जीवन का परित्याग करके धर्मपूर्वक जीवन व्यतीत गरने लग गया या । ग्रमत्य को छोडकर सत्यवादी श्रीर सरल वन गया था । श्रव यह जो मन्त के ताम-मानसरोवर की यात्रा करने आते थे उनका दुभाषिया बनकर उनके माय जाया जन्मा या। जो कुछ वै दे देते थे उमी पर मन्तीय कर नेता था। प्रतिदिन एक राया तो यह नेता था सीर इसका भाई कचनसिंह स्राठ स्नाना लेता था। यह गुनवर नताना था। सभी यात्री तथा घोटे श्रीर पच्चर भूख के मारे व्याकुल हो रहे थे। झरीर नि मज नया निरुचे हो रहे थे। यही घास या लकडी दिखाई नही देनी थी जिसको जनाकर शरीर को गर्म किया जा सके या थोटा-बहुत भोजन तैयार ित्या जा सके । त्याय-मामग्री नो सभी साथ थी किन्तु भोजन बनाने की वडी कठिन समस्या सामने थी। दाल-चावल बनाने का विचार किया किन्तु वे यहा के पानी से परने ही न थे। जैसे-नैसे स्टोब पर बेसन के पकौडे बनाकर इनकी रसदार सब्जी बनाई गई श्रीर म्होब पर ही जैसे-तैसे रोटिया तैयार की गई। उस श्रदाई मास की यात्रा मे प्राय एक ही प्रकार का भोजन किया। इसमे परिवर्तन करने का कोई साधन ही प्राप्त न था। निरूपवंत पर बडी भवकर वर्फ पट रही थी, अत रात्रि में कोई भी शयन नहीं कर सभा। वर्फ को आउने के लिए थोडी-थोडी देर में छोलदारियों को सोटी से हिनाना पटना था। प्रतिघण्टा छोलदारियो के वर्फ में दव जाने का भय वना रहता था। स्वामी विशुद्धानन्दजी भीत के ग्राधिक्य में बहुत घवरा गए थे। इन्होंने महा-रानजी ने गहा, "मेरा नो शीत के कारण खन जम गया है। सारा शरीर चेण्टाहीन होगया है। फिसी भी प्रकार से उसे गर्म करने का उपाय करो, अन्यथा मेरी मृत्यु मुभे बहुत नगीर दिलाई दे रही है।" कोई उपाय समभ मे नही श्रारहा था। श्री महाराजजी ने अपना तथा रवामीजी का विस्तर इकट्ठा करके दोनो विस्तरों को एक दूसरे के ऊपर विछा दिया और उस प्रकार एक ही विस्तर पर दोनो लेट गए। ब्रह्मचारीजी ने अपने मरीर की उप्पता ने स्वामीजी के भरीर को गर्म किया किन्तु उन्हें रातभर नीद नहीं ग्रार्ट । यही ग्रवस्था दूसरे यात्रियो की भी थी । सभी ग्रोर से हाय-हाय की श्रावाज ग्रा रही थी । दूसरे दिन १० बजे तक निरन्तर वर्फ गिरती रही । सभी यात्री बडे

व्याकुल होगए थे ग्रौर वही से लौट जाने का विचार कर रहे थे। केवल महाराजजी दुढिनिश्चयी थे । उन्होने कठिनाई तथा सकट से डटकर मुकावला करने का पाठ पढा था। जीवन मे वडे कठिन सघर्षों के घातो ग्रीर प्रतिघातों को उन्होंने सहा था। भगवान मे उनका ग्रटल विश्वास था। उनमे ग्रद्भुत साहस ग्रीर ग्रलीकिक वैर्य था। विपत्ति मे घवराना वे जानते ही न थे। हसते-हसते सकटो को भेलना वे जानते थे। जिस काम को करने का एक बार निक्चय कर लेते थे उसे पूरा करके ही छोडते थे। जो वात एक वार कह देते थे उसे करके ही ज्ञान्ति करते थे क्योकि 'रामो द्विन विभापते' पर सारा जीवन इन्होने अनुष्ठान किया था। फिर इनका उद्देश्य केवल यात्रा करना ही नही था। ग्रात्म-विज्ञान तथा ब्रह्म-विज्ञान के प्रदाना ग्राने पूज्य गुरुदेवजी को वे जहां भी हो उनकी खोज करके उनके दर्शन करना ग्रीर उनके चरणों में उनकी महनी कृपा के लिए धन्यवाद अर्पण करना ही उनकी इस यात्रा का मुन्योहेश्य था। अन वे ग्राना पग पीछे उठाना नही चाहते थे। खच्वर ग्रीर घोडो के स्वामी भी पीछे लीटना नहीं चाहते थे क्योंकि यात्रियों को ले जाना तथा चोभा ढोना ही उनकी ग्राजीविका थी। इन सबने तथा दुभाषिए ग्रीर गाजीपुर के एक डाक्टर ने महाराजजी के नाव जाने का निश्चय किया। धीरे-धीरे सभी यात्री मानसरीवर जाने के लिए तैयार हो गए। अप मार्ग ढूढने की वड़ी समस्या सामने उपस्थित होगई। पुरानी वर्फ पर नई वर्क की कई-कई फुट तक एक मोटी तह जम गई थी, अर मार्ग का पना लगाना बडा कठित था। किसो प्रकार भो गत्तव्य मार्गका निञ्चय करना एक जटिल समस्या वन गई थी। दो खच्चर वालो को मार्ग का पता लगाने श्रीर वर्फ हटाने के लिए श्रागे भेजा गया। इनके पीछे दो घोडे वालो को भेजा। जहा कही ये लोग वर्फ मे धमते हुए मे मालूम होते थे वही पर सारा सब रुक जाता था। उन्हें वर्फ ने निकाल कर ग्रागे बढ़ने थे। कही-कही घोडे भी वर्फ मे धस जाते थे। उनका सामान उनारकर उन्हे वर्फ से निकाला जाता था। दोपहर के वारह वजे प्रस्थान किया। चार मील नक वरावर वर्फ मे ही चलना पडा। लिपू-धूरे की उतराई पर एक मैदान है। उसमे एक चय्मा वहता है। उसी के पास पडाव डालने का निञ्चय किया गया। यहा पर घोडे ग्रौर खन्चरों के लिए थोडा घास था। वेचारे भूखे पशुग्रों को ग्राज कई दिन में घास प्राप्त हो सका ग्रीर यात्रियो को भी इसी स्थान पर गान्ति लाभ हुई। यही ग्राकर नवको मुंखपूर्वक नीद ग्राई। यह स्थान लगभग पन्द्रह हजार फीट ऊँचा था। ग्रावादी यहा पर नही थी। यहा से प्रस्थान करके चौथे दिन तकलाकोट पहुचे। यहा पर व्यापारियो की एक मण्डी लगा करती है। इस समय तक केवल लालमिंह ग्रीर नन्दराम ही यहा पहुच सके थे। ये दोनो व्यापारी थे। ये दोनो भाई बडे स्वजन थे। साध्यो के प्रति इनकी वडी श्रद्धा ग्रीर भिक्त थी। सभी यात्री यहा पर दो दिन ठहरे। तकलाकोट की पहाडी पर एक वडा मन्दिर है। सभी इसके दर्शन करने के इच्छुक थे। छोलदारिया इसी मैदान मे लगा दी गई। लालसिह ग्रीर नन्दराम से बहुत देर तक तिव्वत के सम्बन्ध मे वातचीत होती रही। ये दोनो बहुत ग्रच्छी हिन्दी बोलते थे ग्रीर इस प्रदेश के वडे धनाढ्य व्यापारियों मे इनकी गणना थी। इनमें पता चला कि मदिर मे एक वड़े सन्त रहते है। दूसरे दिन ६-१० वजे के लगभग महाराजजी ग्रपने दुभाषिए को साथ लेकर मदिर में सन्तजी के दर्शनार्थ गए क्यों कि ये सन्त हिन्दी नही जानते थे।

तकलाकोट में एक योगी से भेंट—महाराजजी मदिर के दर्जन करके मन्तजी के पान जाकर बैठ गए। ये महातमा चौबीम घण्टे बारह महीने एक चौकी पर बैठे रहते थे। यह चौकी एक गज लम्बी तथा इतनी ही चौडी थी श्रीर ५-६ इच ऊची थी। उनके उत्तर एक जगना लगा हुशा था। इसी चौकी पर बैठकर ये महातमा जाप, ध्यान श्रीर नाधना करते थे। यह चौकी ही इनका पनग श्रीर यह चौकी ही इनका घर था। इन मन्तजी के नाथ महाराजजी का निम्नलिखित वार्तानाप हुशा ——

महाराजजी—ग्राप उन चीको पर ही उतनी कठिन साधना क्यो कर रहे हैं ? सन्तर्जी—मेने मन को दमन करने ग्रीर इन्द्रियो पर ग्रिथिकार पाने के लिए यही उपाय

त्रजा—नन नन का दमन करने आर अन्द्रया पर आवकार पान के ।लए वहा उपाय उत्तम समस्ता है। यह मन बेलगाम घोड़े के समान मनुष्य को जीवन भर परेशान करना रहना है। इसको जब तक किसी खास नियम में न बाधा जाए नव नक यह बशीभून नहीं होना।

महाराजजी--वा मे होने में क्या नाभ होगा ?

सन्तजी—सर्ववृत्तिनिरोध हो जाएगा और उसके सब व्यापारो का स्रभाव हो जाएगा भीर तब यह मान्त होकर स्थिर हो जाएगा । उसमे स्थायी रूप से एकाग्रता स्रागे लगेगी और अपने स्वरूप मे उसकी स्थिति हो जाएगी ।

महाराजजी—प्रया श्राप ग्रपना स्वम्प बना सकते हो, क्या श्रीर कैसा है ?

गन्नजी—नो, यह मिश्री का टकटा है, इसे अपने मृह मे रख लो और मृह को बन्द कर लो। फिर मुक्ते बनाओं कि उसका स्वाद कैसा है ? जिस प्रकार आप मुख और वाणी को पान बिना उसके स्वाद का वर्णन नहीं कर सकते, इसी प्रकार स्वार किया जा सकता। जैसे मानसिक चिन्ता के स्वार का वर्णन नहीं किया जा सकता। जैसे मानसिक चिन्ता के स्वार का वर्णन नहीं किया जा सकता, कितनी लम्बी और चीटी है, चीकोर या गोल है उत्यादि, उसी प्रकार स्वमय स्थित का वर्णन करना कठिन ही नहीं अपितु असनव है।

महाराजजी—उन स्थिति मे पहुन जाने पर विविध सिद्धिया प्राप्त हो जाती होगी। ग्राप्त मो ये सिद्धिया बहुत प्राप्त होगाउँ होगी।

गन्नजी-हा, हुई नो थी किन्तु ये ग्रत्यन्त विक्षेप का हेतु सिद्ध हुई।

महाराजजी—कैमे ह

गलजी-सम्मय वल में नोगियों के रोग दूर कर दिया करता था, इससे सदा उनका नाना वधा रहता था श्रीर ध्यानाभ्याम में वाघा पडने लगी।

महाराजजी-ग्राप मनोवल से किस प्रकार काम लेते थे ?

मन्त जी — रोगी आकर दरज्वन् प्रणाम करते थे श्रीर में अत्यन्त वात्मल्यभाव से शनै शनै पीठ पर बार-बार हाथ फैरता था श्रीर रोग को समूल नण्ट कर देता या। किमी प्रकार के श्रीपशीवचार की आवश्यकता न होती थी। रोगी स्वस्थ होकर चला जाना था।

महाराजजी-नया ग्रीर भी कोई सिद्धि प्राप्त हुई है ? नन्तजी- जहा तक श्राकाश या मैदान में मेरी दृष्टि पहुचती थी वहा तक में वृष्टि, हिमपात तथा प्रचण्ड ग्राधी को रोक देता था ग्रीर मेरे लिए यह एक साधा-रण-सी वात थी।

महाराजजी—मेरे ऊपर भी यह कृपा करो। इस प्रकार की सिद्धियो की विधि बताने की कृपा करो जिससे मैं भी जनता का कुछ कल्याण कर सकू।

सन्तजी—(हसकर) जिस काम को मैं अपने लिए उपयोगी नहीं समकता उसे मैं आपको सिखाना भी ठीक नहीं समकता।

महाराजजी—जो काम एक के लिए हानिकर है वह दूसरे के लिए हितकर हो सकता है।

सन्तजी—यदि सिद्धियो की विधि वता भी दूतो मेरे समान मनोवल कहा से लाग्रोगे ? मैं ७० वर्ष से साधना कर रहा हू। क्या ग्राप भी ऐसा कर सकते हैं ?

महाराजजी—इस यात्रा को समाप्त करके ऐसा ही करूगा। यह स्रावश्यक नहीं है कि मुक्ते भी ७० वर्ष में ही मनोवल प्राप्त हो। तीव्र-सवेगी जीघ्र भी प्राप्त कर सकता है।

सन्तजी—सुनो । तुम्हे मनोवल प्राप्त करने की विधि विस्तारपूर्वक वताऊगा ।

महाराजजी—तिव्वत मे ग्रौर भी वडे-वडे सन्त होगे। यदि ग्राप वता दे तो उनके दर्शन का भी सौभाग्य प्राप्त हो जाए।

सन्तजी—हा, वे पहिले तीर्थापुरी की ग्रोर रहते थे। वे तिब्बत निवासी नही है। भारतीय है। संस्कृत, हिन्दी ग्रीर तिब्बती भाषा पर उन्हें पूर्ण ग्रधिकार है किन्तु वे प्राय मौन रहते है।

महाराजजी—वे महात्मा ही मेरे पूज्य गुरुदेव है। ४-५ साल हुए, वे हरसिल पधारे थे। उन्होने मुभपर अपार कृपा की थी। मैं उनका अत्यन्त कृतज्ञ हू। उनके उपकार को कभी भूल नहीं सकता।

सन्तजी—तब तो तुम मेरे छोटे गुरुभाई हो। उनसे वढकर सन्त तिव्वत, मानसरोवर तथा कैलाश मे कोई नहीं है।

महाराजजी—उनके दर्शन श्रव मुभे किस स्थान पर हो सकते है ? इस यात्रा का मेरा यही उद्देश्य है।

सन्तजी—अब उनके दर्शन होना कठिन है क्यों कि वे दो वर्ष से लासा की श्रोर चले गए थे, तब से लौटे नहीं।

महाराजजी—वे तो भारतीय है, वे ग्रापके गुरु किस प्रकार वन गए ? ग्रापका साक्षात्कार उनसे कैंसे हुग्रा ?

मन्तजी—विद्वान् योगी किसी भी देश का क्यो न हो, वह गुरु बन सकता है। महात्मा बुद्ध भी तो भारतीय ही थे। वे हमारे ही देश के नहीं ग्रिपितु सारे ससार के गुरुदेव थे। ससार में सर्वाधिक सख्या उनके ग्रनुयायियों की है। गुरु नानक-देवजी तिब्बितयों के गुरु है। ग्राप तिब्बत को भारत से पृथक् क्यों समभते हैं? यह तो भारत भू का ही एक भाग है। इन शब्दों के साथ इन्होंने तिब्बती नमकीन चाय तथा सत्तू खाने के लिए देकर महाराजजी का ग्रातिथ्य किया।

महाराजजी—(पच्चीस रुपये हाथ मे लेकर) यह ग्रापकी भेट है। सन्तजी—में एक रुपया ले लेता ह। इसे भी मदिर की भेंट करूगा, शेप चीवीस रुपये ग्राप ग्रपने पास रुख ले।

महाराजजी—गुरुदेव की करनी श्रीर कथनी को हम लोग कभी नही पहुच सकते। वे नच्चे महात्मा है। दिव्य पुरुष है। उन्होने लोक-कल्याणार्थ ही जीवन-धारण किया है। कई वर्षों में तिब्बत को पिवत्र कर रहे है। वड़े ऊचे दर्जे के वीतराग श्रीर परमात्मजानी है। उनका तप, त्याग, वैराग्य पराकाष्ठा को पहुचा हुश्रा है। ग्राने बरीर को तृण के समान समभते है। वास्तव में ये विदेह है। श्रापके ऊपर सचमुच उन्होने वड़ी कृश की है। ४ वर्ष हुए, वे गगोत्री हरसिल की ग्रीर गए थे। उसके पञ्चात् वे सोचरनाथ तीर्थापुरी श्रीर मानसरोवर की ग्रीर रहे थे। ग्रव दो वर्ष में लामा चले गए है।

उन महात्माजी से विदा लेकर महाराजजी श्रीर कीचसिंह दोनो वापस निवास म्यान पर पहुने । स्वामी विशुद्वानन्दजी कुछ नाराज से हो रहे थे क्योंकि ब्रह्मचारीजी को मदिर में लौटने मे बटा विलम्ब होगया था श्रीर भोजनोदि की सारी व्यवस्था न्यामीजी को अकेले ही करनी पड़ी थी । महाराजजी ने इन्हें सारा समाचार सुनाया। रात्रि को सबने यहा विश्राम किया और प्रांत काल कुछ ग्रभ्यास किया और दूवजे के लगभग याता प्रारम्भ की। श्राज की यात्रा १४००० फीट की ऊचाई पर एक मैदान में ने यी। नकलाकोट ने लेकर मानसरोवर ग्रीर कैलाश तक मैदान ही मैदान है। कही-कही पर छोटी-छोटी-सी पहाडिया है। यहा से आगे कोई वस्ती नही है, केवल मदिर ही मदिर है। १४ मील यात्रा करने के पञ्चात् एक स्रोत के पास छोलदारिया लगाई गई। यहा पर टाकू बहुत रहते थे ग्रत सब बडे सावधान रहे। कीचसिंह स्वय पहिले टाकुमा का सरदार था। यह उनका चोरी करने भ्रीर डाके-डालने का सारा रहस्य जानना था। ग्रन उसने समभाया कि यदि कोई भिक्षादि मागने ग्राए तो न दी जाए, क्योंकि ये लोग भिक्षा के वहाने सारा भेद लेने आते है और रात्रि के समय चोरी करते हैं। उनने में सामने से एक वृद्धा आती हुई दिखाई दी। कीचसिंह ने उसकी और सफेन करके महाराजजी को बनाया कि यह अपनी युवावस्था मे घोडे पर सवार हो कर टाकुको के साथ जाकर डाके डाला करती थी ग्रीर ग्रव भी यहा कुछ भेद लेने ग्रा रही है। ग्राज रात्रि में कुछ न कुछ उपद्रव श्रवश्य होने की सभावना मालूम होती है। इस वृद्धा ने इयर-उवर फिरकर सबके तम्बुग्रो मे जाकर भिक्षा मागी। उसकी श्राप्ता में ऐसा मालूम होता था मानो वह कुछ खोज लगा रही है। उसकी दृष्टि वडी पैनी थी। महाराजजी ने भी उमे ४-५ लड्डू दिए, इसके बाद वह चली गई। तकला-काट में मन्तजी से परिचय हो जाने के बाद से कीचिंसह महाराजजी को गुरुजी कह कर पुरारने लगा। जब से उसने महाराजजी का मदिर के मन्तजी से बार्तालाप सुना भीर उस स्रोर के महान् सन्त का शिष्य होने का पना चला था स्रोर उसे यह मालूम हुस्रा था कि प्रहाचारीजी बड़े विद्वान् महापुरुष, उच्चकोटि के सन्त श्रीर महात्मा है, तब से उसकी उनके प्रति विकाय श्रद्धा और भिन्त होगई थी। रात्रि को भोजनीपरान्त सब मुखपूर्वक मोगए किन्तु कीचिमिह वडा सेतर्क तथा सजग रहा। उसे रात्रि मे चोरों के चौरी करने की श्रायका थी। उसका सन्देह ठीक ही निकली क्योंकि रात्रि को लगभग ११ बजे चोर ग्राए ग्रीर चार खच्चरे चुराकर चलते बने। कीचिसह ने महाराजजी से उनकी टार्च मागी जिससे चोरो का पता लगाया जा सके। इसने चोरो का पीछा किया ग्रीर उनकी ग्रीर बन्दूक से कारतूस चलाने प्रारम्भ कर दिए। वे भयभीत होगए ग्रीर खच्चरों को छोडकर भाग गए। इस इलाके में यात्री जहां भी ठहरते थे वहां पर दो व्यक्ति रात्रि को पहरा दिया करते थे। चोरो का भय सदा बना रहता था। रात्रि को ग्रन्थेरा रहता था जिससे चोरों को पता न चले।

मानसरोवर दर्शन--सारे यात्री ४ दिन मे मानसरोवर पहुच गए। जब मान-सरोवर के तट पर पहुचे तव सूचना मिली कि डाकुग्रो का एक दल लूटने के लिए ग्रा रहा है। यहा पर तिब्वत सरकार की ग्रोर से यात्रियों की मुरक्षा का कोई प्रवन्य नहीं था। ग्रत लूट-मार तथा हत्याए प्राय होती रहनी थी। मानसरोवर के किनारे पर डेरा डाला गया। डेरे से एक मील के लगभग एक मदिर था। कीचिंसह ने मदिर के पास या मदिर मे ही जाकर ठहरने की सलाह दी क्यों कि वहा मदिर की शरण मे जाने से लूट-मार का भय नहीं रहेगा, किन्तु महाराजजी को यह वात पसन्द नहीं आई। सदैव तो मदिर मे रहना नहीं था। वहां रहने से यात्रा कैसे हो सकती थी। मानसरोवर की परिक्रमा भी करनी थी ग्रत भय के मारे मन्दिर में बैठे रहने से तो काम नहीं चल सकता था और यात्रा का उद्देश्य भी पूरा नहीं हो सकता था। महा-राजजी वडे निर्भीक महापुरुष हैं। भय नाम की कोई वस्तु श्रापने कभी जानी ही नहीं। उनकी वीरता, जौर्य, पराकम, तेज श्रीर श्रोज के सामने तो भय भी भय-भीत होता था। उन्होंने कहा कि हम डाकुग्रो का मुकावला करेंगे ग्रीर यही इसी मैदान मे तीन दिन तक रहेगे। चौथे दिन ग्रहण का स्नान करके यहा से प्रस्थान करेंगे। रात्रि में दो व्यक्तियों ने पहरा दिया। ग्रंगले दिन एक घुडसवार ने श्राकर की चिंसह को सूचना दी कि यहां से थोड़ी दूरी पर डाकू ठहरे हुए हैं ग्रौर तुम्हारे यात्रियों को लूटने के विषय में परस्पर वार्तालाप कर रहे हैं। जब महाराजजी को इस बात का पता लगा तो वे कुद्ध हुए ग्रौर की चिंसह को घोड़े पर सवार होकर डाकु श्रो के पास जाकर यह कहने के लिए कहा कि यदि तुमने हमारे पड़ाव की ग्रोर मुह भी फेरा तो तुम मे से एक-एक को भस्म कर दिया जाएगा। तुम मे से ग्रीर तुम्हारे परिवार, पशु, घोंडे, खच्चर म्रादि में से एक भी जिन्दा न वचे सकेगा। यदि तुम श्रपनी प्राण-रक्षा चाहते हो तो लूट-मार का नाम भी मत लो। इस सघ के मुखिया काशी लामा बड़े प्रसिद्ध ब्रह्मचारी योगी है। ये बड़े निभय हैं। यपने योगवल से तुम सवको भस्मीभूत कर देगे। एक भी शेप नहीं रह सकेगा। कीचसिह से सब समा-चार सुनने के पश्चात् डाकुग्रो के सरदार ने कीचिसह से कहा, क्या तुम्हे विश्वास है कि ये मुठ्ठी-भर म्रादमी ४० प्रसिद्ध भीर बक्तिवाली डाकुम्रो का सामना कर ह कि य मुश्चान्तर आदमा ६० आवह आर जानताला जानुआ का ताना कर सकेंगे ? कीचिसह ने कहा, तुम्हारी जिन्त उनके सामने कुछ भी नहीं है। वे वडे भारी योगी हैं। काजी लामा है। तुम तो केवल ४० ही हो, यदि सैकडो भी ग्रा जाग्रो तव भी उनको किसी प्रकार की हानि नहीं पहुचा सकते। तुम लोग ग्रपने प्राणों की रक्षा का प्रवन्ध करो। मैंने उनके योगवल को देख लिया है। उनके प्रभाव से ही मैं उनकी ग्रवतिक सेवा कर रहा हू। उनसे कुछ भी नहीं लेता हू। वे वडे भारी महात्मा हैं। वालब्रह्मचारी हैं। महान् योगी है। उन्हें वहुत सिद्धिया प्राप्त हैं। तुम

नतो श्रीर उनमे क्षमा-याचना करो, श्रन्यथा तुम मपरिवार श्रीर पशुश्रो सहित नण्ट हो जाश्रोगे। कीचिनिह की बाते मुनकर उनके प्राण निकलने को होगए। सभी बड़े भयभीत होगए। उनकी रित्रया हाथ जोडकर कीचिंगह से कहने लगी, इन सब की युद्धि नण्ट होगई है। कभी महात्माश्रो को भी लूटा जाता है? उनकी सेवा करनी नाहिए। उन्हें भेट देनी चाहिए। उन सबको महात्माजी के पास जाकर श्रपने कुविनारों के लिए क्षमा-याचना करनी चाहिए। उनकी रक्षा का केवलमात्र यही उपाय है, श्रन्य नही। उस पर वे सभी उाकू एक-दूसरे का मुह नाकने लगे। कुछ निर्णय नहीं जर पाए कि श्रव उनका गया कर्नव्य है।

डाङुग्रो की स्त्रियो की क्षमा-याचना—जब मभी डाकू किकर्तव्यविमूढ से हों कर खड़े ये तब उनकी स्विया आगे आई और माफी मागने के लिए तैयार हो गर्व क्योंकि उन्हें इस बात का विश्वास था कि महात्मा लोगों की स्त्रियों पर विशेष कृपा होती है। उन पर वे कभी कोघ नहीं करते। वे हमे ब्रवश्य क्षमा प्रदान करेगे। इस विज्ञान भीर अप्ना ने वे उनसे धमा मागने के लिए चल दी। इनमे से ४-५ स्त्रिया ग्रपनं बच्चो को गाव ने कर श्रीर महाराजजी के चरणों में भेट रूप से एक वर्तन में चीरी गाय का द्य, एक गर्म वस्त्र तथा २१ तिव्यती टके साथ लेकर क्षमा-याचना के जिए चल थी। इसी बीच में कीचिंगह ने जाकर सब समाचार महाराजजी से निवेदन कर दिया था। महाराजजी रेन के एक वड़े चयूतरे पर बैठ गए ब्रीर साथी यात्री भी गय उनोः ग्राम-पास प्राक्तर बैठ गए। दो बजे के लगभग डाकुन्नो की नित्रमा बहा पर्नो । उन्होंने २-३ सी फीट की दूरी से ही साप्टांग दण्डवत किया श्रीर भूमि को मापनी हुई गही के पास पहुंची। यहा पहुंचकर वे बहुत देर तक भूमि पर ही तिही रही । कीचीमह ने निवेदन किया कि जब तक महाराजजी श्राप स्वय उठकर इनकी पीठ पर आशीर्वादात्मक हाथ नहीं फेरोगे तब तक ये जमीन पर से नहीं उठेगी। हहानारीजी ने दयाभाव से ऐसे ही किया। ये देविया उठकर बैठ गई त्रौर ग्रानी भाषा मे प्रपने ग्रादिमियों के ग्रपराधी की क्षमा-याचना की-"हमारे श्राद्यमियों ने बदा अवराध किया है। स्नाप भगवान् हैं। स्रवतारी पुरुष है, दयावान है, यन तम ग्रापम प्रायंना करनी है कि ग्राप हमें ग्रपनी दया की भिक्षा दीजिए श्रीर हमारे ग्राराधी के लिए क्षमा प्रदान की जिए। महात्मा सदा ही श्रवलाग्री पर प्रया करन ग्राए है। ग्राप हमें क्षमा करें। ग्राप हमें वरदान दीजिए कि हमारे सब धर्यात, यच्चे, श्रारमी तथा पशु ग्रादि गय ठीक रहे।" वे उठी ग्रीर जो सामान लाई यी गय महाराजजी गो भट जिया, किन्तु उन्होंने यह भेट स्वीकार नहीं की श्रीर महा कि में प्रापुत्रों की भेट कभी स्वीकार नहीं किया करता। कीचसिंह ने कहा कि ग्राप यह भट उन्हें वापम न करें। हम लोगों को दे दीजिएगा। यदि ग्राप इस भेट को न्यीकार नहीं करने ना इन पर इसका श्रन्छा प्रभाव न पड़ेगा। वेचारी निराध हो जाएगी। ये नमकेगी कि स्रापने उन्हे प्रयन्ननापूर्वक साशीर्वाद नही दिया। महा-राजिती ने भेट स्वीकार कर ली श्रीर उन्हें श्राशीवींद देकर प्रसाद रूप में मेवा श्रीर मिटाई दी। उनकी छोलदारी में स्टोब जलता देखकर वे स्नापस में कहने लगी कि देता, महाराजजी ने अपने योगवल से पानी से आग जला रखी है। उससे ये वडी प्रनावित हुरी। पूम-फिरफर सब फेश्य देशे और विविध प्रकार के पदार्थ देखकर ग्रत्यन्त ग्राश्चर्यचिकत होगईं। इन्होने महाराजजी को विश्वास दिलाया कि जव तक ग्राप मानसरोवर पर विराजेगे तब तक हम ग्रपने ग्रादमियों को ग्रापकी रक्षार्थ भेजेंगी। इन शब्दों के साथ ये स्त्रिया लीट गई।

डाकुग्रो को क्षमा प्रदान—ग्रागामी दिवस इनके ग्रादमी भी विभिन्न प्रकार की भटे लेकर उपस्थित हुए। ब्रह्मचारीजी पूर्ववत् ग्रपनी गद्दी पर विराज रहे थे। इन डाकुग्रो ने ग्रपने घोडे तथा भेंट का सामान कुछ दूरी पर रख दिया ग्रीर स्वय दण्डवत प्रणाम करके महाराजजी से क्षमा-याचना की। योगीराजजी ने इन्हें भी क्षमा प्रदान की। यह सब तिब्बती भाषा मे वातचीत करते थे। महाराजजी का दुभाषिया सब वाते जैसी की तैसी अनुवाद करके उनको सुनाता जाता था। डाकुग्रों ने महा-राजजी से निवेदन किया कि इधर डाकुग्रो का वडा भय रहता है इसलिए हमने ग्रापकी सुरक्षा के लिए ४-५ ग्रादिमयों को नियत कर दिया है। यह पहरेदार का काम करेंगे। महाराजजी ने कहा, हमे किसी पहरे की ग्रावव्यकता नहीं है। हम स्वयमेव अपनी रक्षा कर सकते है। यह लोग कई घटे तक वहा ठहरे और सब कुछ भली प्रकार से देखते रहे। ग्रव इनका सब भय जाता रहा था। ये लोग सायकाल लौट गए और अगले दिन दूध लेकर आए। महाराजजी सिद्ध पुरुप है। इनके व्यक्तित्व का प्रभाव पडे विना नही रहता। इनके ग्रन्दर पत्यरो को पिघला देने, कठोर हृदयो को कोमल बना देने, हिस्त्र जीवो को पालतू बना देने, पापियो को पुण्यात्मा वना देने, दुराचारियो को सदाचारी वनाने ग्रीर नास्तिको को ग्रास्तिक वनाने की ग्रलीकिक शक्ति है। जो डाकू इनके डेरे मे डाका डालने की योजना बना रहे थे ग्रौर ग्रपनी शक्ति का वडा दम्भ कर रहे थे वे सव इनके योगवल के सामने भीगी विल्ली के समान ग्राचरण करने लगे ग्रौर सव ने इनके चरणारविन्द मे जतग प्रणाम करके भूरि-भूरि क्षमा-याचना की ग्रीर इनके परम अद्धालु सेवक वन गए।

मानसरोवर पर चन्द्र और सूर्य ग्रहण-जिन दिनो महाराजजी और उनके साथी मानसरोवर पर थे उन्ही दिनो चन्द्र तथा सूर्य ग्रहण लगे। इस पर्व पर मानसरोवर पर स्नान करने का विचार था। चन्द्रग्रहण के ग्रवसर पर मानसरोवर की परिक्रमा की गई श्रीर फिर सूर्यग्रहण का स्नान करके कैलाग यात्रा प्रारम्भ की । चन्द्रग्रहण रात के ११ वजे समाप्त हुआ। महाराजजी ने मानसरोवर मे स्नान करते समय उन सभी भनतों के नाम से गाते लगाए जिन्होंने इसके लिए इनसे निवेदन किया था। रात्रि का समय, शीत प्रधान प्रदेश, लगभग पन्द्रह हजार फीट की ऊचाई पर ग्रत्यन्त शीतल जल मे स्नान करना कोई सहज काम न था। इनका शरीर गोते लगाते-लगाते निश्चेष्ट ग्रीर नि सज्ञ-सा होगया। कीचिंसह तथा ग्रन्य साथी यात्रियो ने इघर-उघर से सूला हुग्रा गोवर एकत्रित किया ग्रौर जैमे-तैसे ग्राग जलाकर इनके गरीर को गर्म किया। इसके पश्चात् वे थोडा बोलने लगे। रक्त का सचार होकर गरीर का नीला-पन दूर हुमा। इसके पश्चात् कपडे पहने ग्रीर चाय पी। तत्पश्चात् गरीर की स्थिति पूर्ववत् हुई। पन्द्रह हजार फीट की ऊचाई पर रात्रि के समय अत्यन्त जीतलजल मे इतने गोते लगाना कोई सुगम कार्य न था। किन्तु युवावस्था मे मनुष्य मृत्यु से भी टक्कर लेने के लिए समुद्यत हो जाता है। दूसरे दिन सारे सघ ने मानसरीवर की परिक्रमा प्रारम्भ की।

डाफु स्रो से चोरी न करने की प्रतिज्ञा करवाना—जो टाकू महाराजजी के पास धमा-याचना करने श्राए थे उन्होंने रक्षार्थ चार घुडमवार भेजने के लिए कहा था, किन्तु ब्रह्मनारीजी ने उस कार्य के लिए निपंध कर दिया था, तो भी ४ चार सवार रक्षार्थ यागए। महाराजजी ने उनके हाथ में मानसरोवर का जल देकर प्रतिज्ञा करवाई कि वे भियाय में कभी भी चोरी या उकि नहीं डालेगे। परिक्रमा करते हुए जब टाकु श्रो के देरे के पास पहुने तो उन सबको उपदेश देकर हाथ में जल दिया श्रोर उनमें भी उनके न उालने की प्रतिज्ञा करवाई। ये लोग प्राय सभी दुष्ट प्रकृति के होते हैं। जीवन भर रनान करने का तो नाम ही नहीं जानते। कच्चा मास भक्षण करते हैं। उनके पास पड़ा होना श्रसभव है। उस प्रदेश में ग्रन्त कम उत्तन्त होना है अत बहुत महणा विक्रता है। वस्तु-विनिमय ही व्यापार का एक साधन है। ये लोग भारतीय व्यापारियों को ऊन, नमक, मुहागादि देने र ग्रार उनसे ग्रन्त कथा दूसरी श्रावय्यक वस्तुए लेते हैं। उस समय यहा के श्राठ टके भारत के एक रपये के बरीवर समझे जाते थे। निव्यत में चादी बहुत सस्ती थी श्रत भारतीय व्यापारी नहपं उन दक्षों को भारत में लाकर उन्हें गला कर श्रीर उनकी चादी बनाकर महगे डामो पर बेचने थे।

मानसरोवर परिक्रमा—मानसरोवर की परिक्रमा करते हुए मार्ग में एक छोटा मा मिटर यावा। उसमें गुर नानकदेवजी की रवर्णनिर्मित प्रतिमा थी। इसके पास की वाला तथा मरदाना की प्रतिमाए थी। ये तीनो प्रतिमाए श्रादमकद थी श्रीर तीनो श्रामन लगा कर बैठी हुई थी। इस मिदर के पुजारी पक्के में रंग के थे श्रीर छोटे कद के थे। उनमें पना चला कि गुरु नानकदेव उस पुजारी के गुरु के गुरु थे। इसकी श्रायु उस समय भी वर्ष में ऊपर की थी। श्री गुरु नानकदेवजी मानसरोवर पर कई मास तक श्राकर रहे थे। उनके पाथ वाला श्रीर मरदाना भी थे। उसी समय इस मिदर में उस रवर्ण निर्मित प्रतिमा की स्थापना हुई थी। ये बहुत ऊचे दर्जे के सन्त थे। वडी महान श्रात्मा थे। निद्यत के सभी लोग उन्हें श्रपना गुरु मानते हैं। यहा पर बौद्ध-धर्म प्रचलित है। भाषा-भेद श्रवस्य है किन्तु तिद्यत तथा भारत की सभ्यता में परस्पर श्रत्यिक सामजस्य है। यह पुजारी भी एक बार भारतवर्ष में श्रमृतसर स्थित गुरु-हारे के दर्शन करने गया था।

मानगरंतर की परिक्रमा में श्राठ मदिर है श्रीर लगभग २२ छोटी बडी नित्या मानगरंत्रर में श्राकर गिरनी है। मानसरीवर का घरा लगभग ७०-५० मील है। यह भील श्रण्टाकार है। उसका जल निर्मन तथा नीलवर्ण का है। स्थान बटा रमणीक है। किनारे पर कई स्थानों पर बटी दलदल भी है। दो सी मील के घेरे में एक बटा जिन्तन मैदान है। इसी के बीच मानगरोवर भील थी। यह मैदान चारों श्रोर में बटे-बटे विशान हिमाच्छादिन पर्वत-मालाश्रों में घिरा हुआ था। यहां पर बहुन में जगली घोड़े किरा करने थे। ये पालतू नहीं थे। ये बडी तीं नित से दीडते थे। ये वटे मुनदर थे। उनका जील-जील बटा श्राकर्षक था। मरोवर के किनारे पर एक बो उन लम्बी नाम उनती है, उसी को चरा करने है। यही इनकी उदरपूर्ति का मायन है। किन्तु उस घास में बहुन शिवत होती है, भेडे, बकरिया, सच्चर तथा चीरी गाम उने साकर बहुन मोटी श्रीर बलवान हो जानी है।

महाराजजी का दलदल मे फसना-महाराजजी का घोडा वहुत चुस्त ग्रीर चालाक था। गान्ति उसमे नाम मात्र को भी न थी। सब घोडो से ग्रागे रहता था। जब महाराजजी उस पर सवार होते थे तव उन्हें वहुत तग करता था। वडी कठिनाई से उस पर बैठा जाता था। मानसरोवर के किनारे यह एक दलदल मे फस गया। महाराजजी के पैर भी घुटनो तक दलदल मे फस गए। यहा से निकलना वडा कठिन होगया। कचनसिंह ने दो रस्से फेके ग्रीर महाराजजी से निवेदन किया कि ग्राप एक रस्सा घोडे के गले मे बाध दे। ऐसी मजबूती से वाधे जिससे वह खुलने न पाए और दूसरा रस्सा ग्राप जोर से पकडकर दलदल के ऊपर लेट जाए। सर्वप्रथम हम ग्रापको खीच लेते हैं। जब ग्राप किनारे पर ग्रा जाएगे तव घोडे को खीच लेंगे। महाराजजी को वडी कठिनाई से दलदल में से निकाला गया ग्रीर घोडे को निकालने में तो कई घण्टे लग गए। ब्रह्मचारीजी ने अपने कीचड मे सने हुए कपडे उतारे श्रीर सरोवर मे स्नान किया। कीचेसिंह ने इनके वस्त्र धोए। घोडे को भी स्नान करवाया गया। अव इस स्थान से लगभग आधा मील दूरी पर पडावं डाला। प्राय १० वजे भोजन करके यात्रा प्रारभ की जाती थी और सायकाल पाच वजे पडाव डाल दिया जाता था। इस यात्री सघ मे एक डाक्टर था जो प्राय महाराजजी की गक्ति का उपहास किया करता था श्रीर इन्हें कुश्ती के लिए ललकारता था। एक दिन दोनों में कुश्ती प्रारभ होगई। महाराजजी ने वात की वात में डाक्टर को पछाड दिया। लिजत होकर उसने कहा, "मैं सावधान नहीं हो सका था ग्रत दुवारा कुग्ती लडी जाए।" महाराजजी ने दुवारा उसको पछाडने में एक मिनट भी नहीं लगाया। तुरन्त उसे म्रपने कधो पर उठाकर जमीन पर चित्त पटक दिया ग्रीर उस पर चढकर बैठ गए। डाक्टर ने ग्रपनी पराजय स्वीकार की ग्रौर उनसे क्षमा-याचना की।

मिदर तथा उनमे पूजा—ितव्वत के लोगों में स्नान करने का रिवाज नहीं है। महाराजजी के साथीयात्री नित्यप्रति स्नान करते थे। तिव्वती इन सबका तमाज्ञा देखा करते थे। सभी यात्री स्नानोपरान्त वौद्ध मिदरों के दर्गन करने जाते थे। कई मिदरों में विष्णु ग्रीर महाकाली की मूर्तिया भी थी। इन मिदरों में भारतीय हम से पूजा होती थी। मूर्तियों के ग्रागे एक मच-सा वना हुग्रा था। इस पर पूजा-सामग्री रखी जाती थी। कई मिदरों में पुस्तकालय भी थे तथा कई मिदरों में वहुत वडे-बडे घी के दीपक जला करते थे। ये दीपक चौवीस घटे जलते ही रहते थे। ग्रनेक मिदरों में गौगालाए थी। इनमें चौरी गाय के दूध से घी तैयार किया जाता था। तक वना कर बडे-बडे हौजों में भरकर रखी जाती थी। इसको सुखाकर इसे खाने के काम में लाया जाता था। तिब्बत सरकार की ग्रोर से प्राय प्रत्येक मिदर में गाय, भेड तथा वकरिया दान रूप से दी जाती थी। सत्तू, चाय ग्रादि सामान भी राज्य की ग्रोर से प्रदान किया जाता था। तिब्बत में सरकार उस समय लामा साधुग्रों की ही थी। मिदरों में लामा साधु ही पुजारियों का काम करते थे।

रोति-रिवाज—भारतीय ग्रन्थों के तिव्वती भाषा में अनुवाद यहा पर अनेक स्थानों पर मिलते हैं। महाराजजी में स्वय महाभारत और रामायण के तिव्वती भाषा में अनुवाद सुने थे। भारत के समान ही यहा के मिंदरों में रुपये-पैसे चढाए जाते हैं। मन्दिर प्राय मकानों के समान ही बनाए जाते हैं। छते समतल होती है। उन पर किसी प्रकार का गुवज या कलश ग्रादि नहीं होता है। इससे जब छत पर वर्फ जमा हो जाती होगी तो उसे उतारने मे सुविधा होती होगी। कई मन्दिरो मे स्त्रियो का प्रवेश निषिद्व है। वहा पर माधु मास भक्षण नहीं करते, किन्तु गृहस्थी करते है। प्राय कच्ना मास भक्षण किया जाना है क्योंकि उसे पकाने के साधन लकडी, कोयला ग्रादि उगलब्य नहीं है। यहा पर वकरों, भेड, गाय ग्रादि का सूखा गीवर ही पकाने के काम में निया जाना है। गृहस्थी प्राय वकरी ग्रीर भेटो के वालयुक्त चमडे के चीले धारण करते है। गीएम तर्तु में तो ये लोग चमड़े का भाग अन्दर कर लेते है श्रीर दीत गाल में वालों गा। ये बहुत गरे रहते हैं। न कभी स्नान करते है ग्रीर न कपडे योने है। उनके पास से यदी दुर्गन्य ग्रानी है। उनके पास खड़े होने को तबीयत नही चाह्ती। जिस गृहस्यी के मेरान पर गाय, बैल, बकरी, भेडे ब्रादि जानवरी की नोपंडिया जिननी अधिक टगी हुई मिलनी थी, बही सबसे अधिक बनवान् समका जाता या। अन्त भी उपन वहां बहुत कम होती है। नदियों के किनारे कही-कही जी मीर महर पैदा होते है। भारतवर्ष में व्यापार की महियों में तिव्वती ज्यापारी उन, पशम, नाभर नमक तथा मुहागा ग्रादि वेचने के लिए ले जाते है, इसके बदन में अपनी त्रावस्यकता का नामान नाते हैं। कभी-कभी गाय, भेड, बकरी, घोटे सारि भी ये लोग वेनले है बीर उनके बदले में प्राय अन्त ही लेते है क्योंकि तिब्बत में प्रस्त बहुत ही कम उतान्त होता है। उस प्रदेश में तकलाकोट, सानमा नया नाता तो गठिया प्रसिद्ध है। ये मण्डिया जुलाई से अगस्त तक लगती है। इनमे [ाटानी श्रीर भारतीय व्यापारी एकतित होते हैं श्रीर परस्पर व्यापार करते हैं।

मानमरोवर भोल--मानगरोवर मे गगा नामक एक नदी निकलती है। यह नार-पाय मीत की दूरी पर राक्षम-नाल में जाकर गिरती है। यह ताल प्राय सूला ही रहता है। जब कभी किसी वर्ष वर्क अधिक पटनी है और इसके परिणामस्वरूप मान-सरोयर में जन प्रथिक बट जाता है तब इसमें से निकल कर जल राक्षस-ताल में चला जाना है। मानगरोवर श्रीर राक्षम-ताल के बीच मे एक छोटी-सी पहाडी है, यही इन दोना के बीच में किनारे का काम देती है। मानसरोवर का सारा मैदान लगभग २०० मील के नगभग होगा । किन्तु यह भील श्ररमी मील के लगभग होगी। यह श्रण्टाकार बनी हुई है। उसका जल श्रत्यन्त निर्मल, मधुर श्रीर स्वा-विष्ट है। किनार पर कड़ी-कही मिल्पिया पड़ी रहती है किन्तु मोती कही दिखाई नहीं देन थे। यहा पर एक प्रकार का पक्षी होना है। इसका आकार-प्रकार जल-गुगियों में मिलता-गुनना होना है। उनके जोडे घूमते हुए उनस्तत दिखाई देते है। प्राय में दो रग के ट्रोने है। नीलिमा को लिए हुए ब्वेत रग के तथा मोतिया रग के। य रात्रि में उराज्य ग्रामपास की कदराग्रों में चले जाते हैं। इन्हीं को यहां के लोग हम करने है। राक्षम नाल नामक भील नगभग १५० मील लम्बी ग्रीर चीडी है। उसी किनारी पर कही-कही का जल कडवा श्रीर पारा है। यह झील मानसरोवर से वरी है जिन्तु मानसरीवर का दृष्य ग्रधिक सुन्दर ग्रीर मनोरम है। राक्षस ताल भील का बदुन कुछ भाग सूसा भी रहता है। उस सूसे भाग पर भेड तथा वकरिया प्राय चरा करती है। यहाँ पर भेड़ श्रीर वकरिया बहुत होती है। इनकी ऊन बड़ी नर्म श्रीर होगल होती है। वकरियों का कद श्राय छोटा होता है। उसलिए इस प्रदेश में लाखो मन ऊन और पगम पैदा होती है। यहा पर भी अनाज की कमी रहती है, इसलिए लोग मास भक्षण करके अपना निर्वाह करते है। चीरी गाय यहा पर सवारी
और वोझा ढोने के काम आती है। इनके वाल भी ऊन का काम देते हैं। इनके मरने
पर इनकी पूछ काट लेते है जो मन्दिरों, गुभ कार्यों अथवा राजा-महाराजाओं के
चवर बनाने के उपयोग में लाई जाती है। इसकी सवारी घोडे-खच्चरों की अपेक्षा
अधिक अच्छी होती है क्यों कि ऊची-ऊची पहाडियों पर भी लेकर चढ जानी है। मानसरोवर की परिक्रमा करते समय महाराज जी ने तिच्चतियों से बहुत से पुखराज, नीलम
तथा पन्ने खरीदे थे। तिच्चत की न्त्रिया चादी के आभूपण बहुत पहनती है। ये
अपनी खोढिनियों पर अनेक प्रकार के आभूपण पिनों से टाक कर पहनती है। केवल
धनाइय परिवारों की स्त्रिया ही इस प्रकार के जेवर पहनती हैं। मानसरोवर की
परिक्रमा एक सप्ताह में पूरी हुई। मानसरोवर पर १८ दिन रहे।

कैलाश परिक्रमा--सूर्यग्रहण करके कैलाश की यात्रा के लिए प्रस्थान किया। कैलाज का मार्ग यहा से केवल एक ही दिन का है। इस मार्ग मे चौरी गौत्रो का दूध ग्रौर घी ग्रधिकता से मिलता है वियोकि यहा पर मैदान मे पशु-पालत ग्रधिक होता है । सायकाल को कैनाश पर्वत के दामन मे पहुच गए । इसकी ऊचाई २४००० फीट है। यह पर्वन विलकुल गोलाकार शिवलिंग की पिण्डी के समान है। यह वारह मास हिम से म्राच्छादित रहता है । इस पर्वत पर प्राकृतिक सीढिया सी बनी हुई है । कैताब की परिक्रमा का घेरा २६ मील है। इस परिक्रमा मे तीन वीद्व मदिर है। इनमे बीद्व सन्त रहते है। ये ही मन्दिरों में पूजा भी करते हैं। रात्रि में यहा एक मन्दिर में विश्राम किया ग्रौर प्रात काल परिकंमा प्रारभ कर दी । प्रस्थान करते ही वर्षा प्रारभ होगई। बहुत वडे-वडे स्रोले गिरने लगे। कम्वलो की ग्राठ-ग्राठ तहे वना कर सिरो पर रखी पर फिर भी ओले वारूद की गोलियो के समान मार कर रहे थे। घोडे और खच्चर सभी ग्रोलो की मार से घायल होगए थे। विहार के एक सन्त जीन के कारण वीमार होगए और बेहोश होकर गिर पड़े। इन्हें घोड़े पर ही रस्सी से वाघ दिया गया। किया क्या जाता, ग्रौर कोई चारा ही नहीं था। ग्रोलों से प्राय सभी को कुछ न कुछ चोटे म्राई। कही कोई भी वचाव का स्थान नही था। कोई गुफा भी दृष्टि-गोचर नहीं हुई। प्रतिपल ऐसा मालूम हो रहा था मानो कोई पत्थर उठा-उठाकर मार रहा हो। वडी कठिनाई से रात्रि को एक मदिर मे पहुचे। इसमे भी कही मूखा स्थान नहीं था। यह रात्रि वडी कठिनाई से कापते हुए व्यतीत की। भोजन भी नहीं वना सके। स्रागामी दिवस गौरी कुण्ड के लिए प्रस्थान किया। यह स्थान १८००० फीट की ऊचाई पर है। मार्ग में एक नदी ग्राती है। इसका पुल टूटा हुग्रा था। यहा की ऊचाई लगभग १७००० फीट है। घोडो से उतर कर कुछ दूर तक पैदल चलना पडा । सास फूलने लगा । पैर उठाने ग्रत्यन्त कठिन होगए । ग्रपने गरीर का तथा धारण किए हुए वस्त्रो का भार उठाना भी दूभर हो रहा था। ऊचाई के कारण हवा बडी पतली थी। ग्रत दम घुटने लग गया था, हृदय घडक रहा था। ग्रत्यन्त घवराहट हो रही थी। जैसे-तैसे लगभग १० वजे गौरी कुण्ड पहुचे। कैलाश पर्वत के नीचे एक तालाव ग्रथवा छोटी-सी भील है। यह विलकुल वर्फ से ग्राच्छादित थी। जल कही भी दिष्टिगोचर नहीं हो रहा था। यह ग्रवश्य मालूम होता था कि वर्फ के नीचे

कोई सरोवर है। महाराजजी ने इस गीरी कुण्ड में स्नान करने की इच्छा प्रकट की क्यों कि इसमें रनान करने का वड़ा माहात्म्य है। यहा श्राकर वे इस पुण्य से विचत होना नहीं चाहते थे। इन्होंने कीचिंसह से कहा, "कही वर्फ को तोडकर ऐसा यतन करों जिससे नीचे से जल निकल ग्राए।" कचनसिंह ग्रीर कीचिंसह दोनो भाइयों ने वर्फ को खोदकर एक क्या-सा वना दिया किन्तु यह पता न लग सका कि पानी कितना गहरा है। दूबने की सभावना वनी हुई थी। इसलिए महाराजजी ने इनसे कहा कि मेरे दोनो हाथ वाव कर नीचे लटका दो। यदि जल थोडा हुग्रा तव तो मैं खडा हो कर स्तान कर लूगा और यदि गहरा हुआ तो मुभे एक डुवकों लगवा कर ऊपर खीच लेना । इस पर महाराजजी के साथी खूब हमे । इनमें से कोई भी स्नान करने के लिए तैयार नही हुग्रा। मरोवर के किनारे का कही पता नही चल रहा था। वर्फ को फिर तोडा गया। यहा पर जल केवल ४-५ फीट ही गहरा था। एक वस्त्र पर मिट्टी का तेल डाल कर ग्रेग्नि जलाकर तैयार की गई। वडी कठिनाई से केवल तीन ही गोने महाराजजी लगा पाए ये कि उनका गरीर निमन्न होगया। चलने मे भी ग्रममर्थ होगए। वडी कठिनाई से कीचसिह इन्हें ग्रग्नि के पास लेगया। इनमे तौलिए से शरीर पोछने की भी सामर्थ्य नहीं थी। कुछ देर तक ग्रग्नि के पास बैठकर शरीर गर्म करके वस्त्र धारण किए। सब लोग चलने की तैयारी करने लगे। यहा मे केवल २-३ घण्टे का ही रास्ता था। महाराजजी ने सभी साथियो को आगे भेज दिया और म्बय की विसिद्ध के साथ कैलाश पर्वत पर चढने का विचार किया। की चिसिह इस वात पर राजी नहीं हुन्रा ग्रीर मलाह दी कि कल के लिए इस चढाई को स्थिगत रखा जाए। कल चढाई की जाए। ग्रन ये सभी चल दिए। पडाव पर पहुच कर भोजनादि की व्यवस्था की गई। दूसरे दिन कीचिंसह ग्रीर महाराजजी ने दो घोडे लिए ग्रीर गीरी कुण्ड के लिए प्रस्थान किया। घोडों को वाघ दिया और चढाई प्रारभ कर दी। कीवसिंह वर्फ मे मार्ग वनाता जाना था ग्रीर महाराजजी पीछे-पीछे धीरे-धीरे चढते जाते थे। साम फूलता था, दम घुटता था, पैर भारी होते जाते थे, पर ये विलकुल नही घवराए, हिम्मत नही हारे ग्रीर चढते ही गए। निरन्तर प्रयत्न करने पर भी केवल २१००० फीट तक ही पहुच सके। आगे पर्वत विलकुल सीधा ही खडा था। एक कदम ग्रागे चलते थे तो दों कदम पीछे फिसल जाते थे। कीचिंसह ने ग्रव हिम्मत हार दी। यह नितान्त थक गया था। घोडे भी भूखे थे। ग्रागे चलने में जान खतरे मे थी। इसने महाराजजी से कहा, "ग्राप ग्रव ऊपर जाने का हठ न करे। ग्रपने जीवन को यतरे में डालना ठीक नहीं है। चढाई के लिए कोई साधन भी हमारे पास नहीं है। यह आये आगे पैर नहीं ठहर रहे हैं अत नीचे उतरना ही उचित है।" महाराजजी ने इस वात को नवीकार कर लिया। क्योंकि ग्रव उतरने की भी शक्ति गरीर में नहीं रही थी ग्रत पर्वत से नीचे फिसल कर उतरने का उपाय सोचा। जहा तक फिसलने के योग्य मार्ग या वहा तक तो फिसल कर उतरे ग्रीर शेप पैदल। गीरी कुण्ड से घोडो पर सवार होकर चले ग्रीर सायकाल छ वजे पडाव पर पहुच गए। स्वामी विशुद्धा-नन्दजी ने पराठे वना कर रखे हुए थे। वे खाए ग्रीर चढाई तथा उतराई का सब वृत्तान्त उन्हें मुनाया। तिव्वती भवत लोगों में से कोई-कोई यात्री कैलाश यात्रा दण्डवत के साथ करते है अर्थात् सारी यात्रा ही पेट के वल करते है। इन्हें कई-कई मास इस यात्रा मे लग जाते हैं। तिब्बती लामा कहते थे कि ग्राज तक कैलाश की चोटी पर कोई नहीं चढ़ा है। इनकी जिब तथा पार्वती के प्रति वड़ी श्रद्धा ग्रौर भिक्त थी ग्रौर इनका विश्वास था कि शिवजी ग्रौर पार्वतीजी इसके शिखर पर ग्राते हैं। इन्होने ग्रन्य कई देवताग्रो के नाम वताए थे जो कैलाश पर ग्राया करते हैं।

कैलाश ग्रीर मानसरोवर की यात्रा समाप्त करके वडी जान्ति प्राप्त हुई। एक चिरकालीन ग्रिभलापा पूरी हुई। तीन दिन कैलाग की परिक्रमा में लगे तथा एक दिन विश्राम किया ग्रीर पाचवे दिन भोजनोगरान्त प्रस्थान किया। कैलाग ग्रीर राक्षस ताल के बीच में जो वडा मैदान है उसमें वकरिया चराने वालों के पास ठहर गए। यहा रात्रि व्यतीत करके दूसरे दिन चल दिए। इन लोगों ने रात्रि को खूव चौरी गौग्रो का दूध पिलाया ग्रीर वहुन-सा मक्खन ग्रीर खीर ग्रादि साथ भी रख दिए। दूसरे दिन राक्षस ताल पर पडाव किया। यहा पर चाय वनाकर जव पीने लगे तो वह कडवी थी। किसी ने भी नही पी। वहुन खोज करने पर पता चला कि राक्षस ताल का पानी वहुत खारा था, इसीलिए चाय भी कडवी थी। रात्रि को राक्षस ताल पर ही विश्राम किया ग्रीर प्रात ग्रागे के लिए प्रस्थान किया।

चोरो का मुकाबला-मार्ग मे जिस स्थान पर पडाव किया वहा चोरो का वडा भय था। सबने वारी-वारी से तीन-तीन घण्टे का रात्रि मे पहरा दिया। दिन भर खच्चर ग्रीर घोडे सफर करते थे ग्रीर रात्रि को चरने के लिए छोड दिए जाते थे। हमारे पडाव पर चोर चोरी करने के लिए गाए। उस रात्रि को पहरा देने वाला यात्री सो गया। चोरो ने प्राते ही सर्वप्रथम घोडो के गले मे जो घण्टिया वदी हुई थी उन्हें घोड़ों के गले से उनारा जिससे घोड़ों को चुराकर ने जाते समय किसी प्रकार की श्रावाज न श्राए। चोर दो घोड़े चुरा कर ले गए तथा एक यात्री की छोनदारी मे से समान निकाल लिया था, किन्तु कुछ ग्रावाज हो जाने से प्राय सभी यात्री जग गए। प्रकाश करके जब देखा गया तब सामान छोलदारी मे नही मिला। सामान लेकर भागते हुए चोर अवश्य दिखाई दिए । यात्रियो ने इनका पीछा किया और वन्द्रक से कारतूस उनकी स्रोर चलाने लगे। चोरो ने भी गोलिया चलानी प्रारभ कर दी। सामान उठाकर भागने वाले चोर के साथ उसकी रक्षा के लिए एक ग्रीर चोर हाथ मे वन्दूक लेकर चल रहा था। इसके पास वारूद भरने वाली वन्दूक थी ग्रत यह वन्दूक का ठीक प्रयोग न कर सका क्योंकि उसे वारूद भरने में विलम्ब लगता था। महाराजजी के दल के पास कारतूसी वन्दूके थी। घडाघड चोरो के ऊपर गोलियो की वर्ण की गई। चोर सामान छोडकर भाग गए। इनमे से कई तो बुरी तरह मे घायल होगए थे। ये लोग घोडे भी अपने साथ नहीं ले जा सके।

यहा से रवाना होकर तकलाकोट पहुचे। यहा पर एक रात निवास करके खोचरनाथ गए। यह एक छोटा-सा गाव है। इसमे एक मन्दिर है। यहा पर एक रात्रि ठहर कर लिपू घूरा पर्वत पर पहुचे। इस वार इसकी चढाई करते समय कोई विजेष कष्ट नहीं हुग्रा क्योंकि इसके मार्ग से जाते समय परिचय होगया था। इसको पार करके गर्व्यांग पहुचे। जाते समय यहा पर घोडे, खच्चर तथा ग्रन्य सामान छोड कर गए थे। यहा पर बहुत-सा सामान, जो ग्रनावञ्यक समक्षा गया था, सब महाराज-जी ने गरीबो को वाट दिया था।

स्रलमोड़े मे यात्रा की समाप्ति--इम यात्रा मे लगभग ग्रढाई मास लगे। जव ग्रलमोडा वापस पहचे तो परिचित व्यक्तियो ने महाराजजी से कहा, "ग्राप तो स्वस्य, सवल और स्यूल होकर यात्रा से लीटे है किन्तु ग्रापके सब साथी यात्री तो वहुत दुर्वल ग्रीर शक्तिहीन से मालूम होते हैं।" इसका कारण यह था कि महाराजजी ने ग्रपने खान-पान का विशेष ध्यान रखा था। वहुत ऊचे पर्वतो पर भूख कुछ कम हो जाया करती है। वहा पर थोडा भोजन ही हिनकर होता है। जो इस नियम का पालन करते हैं वे स्वस्थ रहते हैं। ब्रह्मचारीजी के ग्रतिरिक्त प्राय सभी यात्री घायल होगए थे। स्वामी विशुद्धानन्दजी का घुटना घायल होगया था। चलने मे उन्हे वडी कठिनाई होती थी किन्तु वे वडे साहसी थे। हिम्मत वाधकर बरावर चलते रहे। ब्रह्मचारीजी मे ब्रह्म-तेज तया ब्रह्म-शक्ति थी, अन वे कही लुढके अथवा गिरे नहीं। अन्य सभी यात्री दुर्वल गरीर थे, अत कई वार गिरे और घायल हुए। अलमोडे के कम्पनी वाग में एक कोठी में सभी यात्री ठहरे। यहा पर सबने प्रीतिभोज किया ग्रीर बड़े स्नेह ग्रीर प्यार मे एक दूसरे से मिलकर अपने-अपने लक्षित स्थान के लिए प्रस्थान किया। श्री महाराजजी यहा मे नैनीनाल पवारे ग्रौर वहा पर ४-५ दिन तक निवास किया। नैनीनाल का सौन्दर्य वडा ग्राकर्पक है। नाल के चारो ग्रोर सडको ग्रीर कोठियो का दृश्य वडा मुन्दर है। रात्रि मे जय विजली जलती है तो इस ताल का दृश्य वडा अनु-पम प्रतीत होता है। इसका सौन्दर्य वास्तव मे ग्रहितीय है।

नैनीताल से महाराजजी ने श्रमृतसर के लिए प्रस्थान किया। वहा पर पूर्व-वत् लाला शिवसहायमल के मकान पर निवास किया। इनके परम भक्त लाला मुलखराज श्रीर लाला गुरुचरणदत्त ने महाराजजी से दीनानगर चलने के लिए निवेदन किया। ग्रीप्म ऋतु मे ये कभी पजाव मे रहे नहीं थे इमलिए ग्राम खाने का श्रवसर नहीं मिला था। इन्होंने दीनानगर जाकर ग्राम खाने के लिए बहुत श्राग्रह किया। दोनों ने १० दिन का श्रवकाश लिया श्रीर मुलखराजजी ग्रपनी मोटरगाडी मे महाराजजी श्रीर गुरचरणदत्तजी को दीनानगर ले गए। नगर के किनारे एक टाकवगले में निवास का प्रवध किया गया। मुलखराजजी की दीनानगर में ससुराल थी श्रत इनके सम्बन्धियों ने कोठी में भोजन का श्रत्युत्तम ढग से प्रवध कर दिया था। दो टोकरे बढिया श्रामों के प्रतिदिन कोठी पर पहुच जाते थे। नहर पर नित्यप्रति तैरने के लिए जाते थे। महाराजजी का तपस्या का जीवन था। इनकी तितिक्षा परा-काण्ठा को पहुची हुई थी। कठोर साधना करते थे। कभी-कभी जब श्रद्धालु भक्तो के श्राग्रह ने इस प्रकार का श्रवसर मिल जाता था श्रीर कुछ श्राराम-सा मिलता था तो इनका वजन वढ जाया करता था। यहा दस दिन में इनका वजन १० पांड वढ गया था।

दीनानगर मे वावूजी की मोटरगाडी से मुजानपुर पहुचे। यहा भी नहर के किनारे एक कोठी मे ठहरे। खान-पान की सब व्यवस्था यही पर की गई। यहा पर भी वडा मनोरजन रहा।

ग्यारहवे दिन सव लोग ग्रमृतसर वापस पहुच गए। गर्मी ग्रधिक हो जाने के कारण ग्रव महाराजजी ने काव्मीर के लिए प्रस्थान किया। काव्मीर मे पूर्ववत् हारवन जाकर ठहरे। वहा नित्य ग्रभ्यास, व्यान ग्रादि साधना वरावर चलती रही। दीवाली पर पुन ग्रमृतसर पधार गए। दीवाली के पश्चात् मोतीरामजी की वगीची मे निवास

किया। कई मास यात्रा मे रहे थे, अत साधना मे उचित समय नही लगा सके थे। इस वगीची मे आकर चार मास का मीन व्रत धारण कर लिया और सारा समय पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त विज्ञान को दृढभूमि करने मे लगाया।

> 'हिमालय का योगी' ग्रन्थ में 'तत्त्व-ज्ञान की प्राप्ति' नामक तृतीय ग्रध्याय समाप्त ॥

### चतुर्य ग्रध्याय

## योग प्रशिक्षण

पूज्य गुरुदेवजी से जो तत्त्व-ज्ञान प्राप्त हुग्रा था तथा जो ग्रात्म तथा ब्रह्मविज्ञान लाभ हुग्रा या ग्रीर उसमे जो ग्रानन्दानुभूति उपलब्ध हुई थी उसे महाराजजी ग्रपने तक ही सीमित नहीं रखना चाहते थे। जिन्होंने ग्रपने वाल्यकाल से
ही 'वसुधेव कुटुम्बकम्' का पाठ पढ़ा हो वह कभी ऐसा कर भी नहीं सकते थे। महाराजजी स्वभाव में ही वड़े दयालु तथा उदारचेना है। वे विब्व-कल्याण में ही ग्रपना
कल्याण समभने है। परिवार के मुखों का परित्याग करने का उद्देश्य भी योग द्वारा
विश्व-कल्याण-साधन ही था। स्वय तत्त्व-ज्ञान लाभ करने के पश्चात् ग्रापने योग
प्रशिक्षण की एक बृहद् योजना बनाई जिसके द्वारा दु िययों के जीवन को मुखी बनाया
जा सके, पथ-अप्टों को सत्पय पर लाया जा सके, कर्त्तव्यविमुखों को कर्त्तव्य का
जान करवाया जा सके ग्रीर योग-मार्ग पर चलाकर उनके त्रिविध ताप का निवारण
किया जा नके।

मोहन स्राश्रम में साघकों को स्रम्यास शिक्षण—स्रपने प्रारम्भिक साधनाकाल में महाराजजी ने मोहन स्राश्रम में स्रपना बहुत समय व्यतीत किया था। यही पर रह कर यहां के विद्यालय में सम्स्रनाध्ययन किया था। सम्ध्या, हवन, जाप तथा ध्यान तो ये यहां स्राने ने पूर्व भी करते थे किन्तु योगाभ्यास का प्रारम्भ यही से किया था। यह स्थान गगा के किनारे बडे एकान्त में हैं। ध्यान तथा समाधि के लिए बडा उपयुक्त स्थान है, स्रन महाराजजी ने योग-प्रशिक्षण का कार्य यही से प्रारम्भ किया। स्रमृतसर में चार मान का मौनवन समाप्त करके दो मास के लिए हरिद्वार प्रस्थान किया। योगीराजजी में योग सीयने के लिए सर्वप्रथम ब्रह्मचारी जगन्नाथ पथिक, मेहता सावनमलदत्त, रावनिवडी बान लाला वसन्तराम स्रीर लाला गुरुचरणदत्त मोहन स्राश्रम में स्राए। ब्रह्मचारी जगन्नाथ गुरुकुल कागडी के स्नातक थे। मेहता सावनमलदत्त स्रायंसमाज के प्रसिद्ध उपदेशक थे। वसन्तराम रावनिवडी के एक बडे व्यापारी थे स्रीर गुरुचरणदत्त स्रमृतसर के व्यापारी थे।

प्रशिक्षण का विज्ञान से प्रारम्भ—महाराजजी ने योग-प्रशिक्षण का कार्य विज्ञान से प्रारम्भ किया। उन साधकों को सर्वप्रथम चक्र-विज्ञान श्रीर कुण्डिलिनी उत्थान के कम से साधना करवाई गई। कुछ अभ्यास के पश्चात् जगन्नाथ तथा मेहता सावनमलदत्त की कुण्डिलिनी जागृन होगई थी श्रीर चक्र-विज्ञान प्रारम्भ होगया था। जब जगन्नाथजी नाभि-चक्र मे पहुचे तो उन्हें श्रत्यिक प्रसन्नता हुई श्रीर वडा सन्नोप लाभ हुआ। उन्होंने गद्गद् स्वर से महाराजजी से निवेदन किया, "महाराजजी में मुक्ते महान सफलता प्राप्न हुई है। चिरकाल तक इधर-उधर भटकने के

a the west of the way the word

पञ्चात् ग्राज इस विज्ञान मे प्रवेश हुग्रा है। ग्राप धन्य है जिन्होंने हमारा मार्ग दर्शन किया है। मैं ग्राज ग्रपने को कृतकृत्य समभता हू। मेरे लिए इतना ही इस वर्ण पर्याप्त होगा। मैं इसे ट्ढभूमि करके ग्रागे वढूगा। ग्रापकी कृपा से मुभे जो दिव्य ज्योति प्राप्त हुई है यह मेरे जीवन की महान सफलता है।" मेहताजी को भी दिव्य ज्योति प्रकट होकर चक्र-विज्ञान होने लग गया था। वसन्तराम ग्रधिक ग्रागे नहीं वढ सके। इन्हें भूमध्य मे दिव्य ज्योति ही लाभ हो सकी।

वर्षा को रोक देना-एक दिन महाराजजी के साथ जगन्नाथ, सावनमलदत्त ग्रीर वसन्तराम सप्तसरोवर पर म्रमणार्थ गए। उस समय गगन मेघाच्छन्न था। सर्वत्र वर्षा हो रही थी। जिस भाग पर महाराजजी ग्रपने भक्तो के साथ भ्रमण कर रहे थे केवल उस स्थान पर पानी नहीं वरस रहा था। शिप्यों ने महाराजजी से वापस चलने के लिए प्रार्थना की, क्योंकि वर्षा में भीग जाने की प्रतिपल ग्रांगका हो रही थी। इन्होने कहा, "घवराग्रो नही। तुम्हारे करडे भीगने नही दिए जाएगे।"
भक्तो ने पुन वडी उत्सुकता से कहा, "जब वर्षा होगी तव करडे ग्रवच्य भीगेंगे।
ग्राप वर्षा को कैसे रोक सकते है ?" महाराजजी ने कहा, "घवराग्रो नही। हम
तुम्हारे ऊर वर्षा नही होने देगे।" इस पर सब हसने लगे ग्रीर प्रस्पर एक दूमरे से कहा कि मोहन ग्राश्रम मे विना भीगे पहुचना ग्रसम्भव है। योगीराजजी म्रमण करके नियत स्थान से लौटने लगे। इस समय ग्रासमान मे त्राटक किया ग्रीर जहा ये सब चल रहे थे वहा पर वर्षा का होना बन्द कर दिया ग्रीर जब तक ये मोहन श्राश्रम मे नहीं पहुच गए तव तक वर्षा वन्द रही श्रीर जब ये सब श्राश्रम मे पहुच गए तव एकदम मूसलांघार वर्षा होने लगी ग्रीर घण्टो ही वन्द न हुई। इस चमत्कार से इनके भक्त बंडे प्रभावित हुए। दो मास तक ग्रभ्यास करवाने के पञ्चात् महाराजजी भ्रमृतसर लौट गए भ्रौर चार दिन तक वहा निवास किया। इसके वाद ये रावलिंडी चर्ने गए ग्रौर वहां पर योगी ग्रमरनाथ के पास ठहरे। यहा पर कुछ दिवस तक रहने का विचार था ग्रत ग्रमरनाथजी ने पास ही देवसमाज के भवन मे रहने का प्रबन्ध कर दिया। यह स्थान बहुत एकान्त मे था। भोजन की सब व्यवस्था ग्रमर-नाथजी ने अपने ही निवास-स्थान पर कर दी थी। इन दिनो ये तथा इनकी धर्म-पत्नी महाराजजी से प्राणायाम की विधि सीखा करते थे। इन्हे विविध प्रकार के प्राणायाम स्राते थे स्रीर कई-कई मिनट तक व्वास-प्रव्वास को रोककर कुम्भक करने का ग्रभ्यास था।

हृदय-स्तम्भ और नाड़ी-अवरोध का परीक्षण—एक दिन ग्रमरनायजी ने पण्डित मुक्तिराम, वसन्तराम ग्रीर वैद्य धर्मचन्द तथा ग्रन्य कई भक्तो को महा-राजजी को प्राणायाम करते हुए देखने के लिए बुलाया । धर्मचन्दजी वडे योग्य वैद्य थे। गुरुकुल के स्नातक थे। पण्डित मुक्तिरामजी दर्शन-शास्त्रो के वहे विद्वान् थे। प्रात द बजे सारा भक्तमण्डल देवसमाज मे ग्राकर एकत्रित होगया। वैद्य धर्मचन्द हृदय की गति देखने के लिए यत्र (स्टेथोस्कोप) साथ लेकर ग्राए थे। सर्वप्रथम महाराजजी ने हृदय-स्तम्भ प्राणायाम किया ग्रीर ग्रपने हृदय की गति को विलकुल वन्द कर दिया। जब वैद्यजी ने यत्र लगाकर देखा तो हृदय की गति विलकुल वन्द थी। रक्त-परिभ्रमण ग्रौर लुप्डप् किया रुक गई थी। सभी एकत्रित भक्त-समुदाय

ग्राञ्चर्य-चिकत होगया । कुछ विश्राम करके इन्होने नाडी-ग्रवरोध प्राणायाम करके दिखाया। दाए हाथ की नाडी विलकुल वन्द करके दिखाई। वैद्यजी तथा पण्डित मुनितरामजी ने इसका परीक्षण किया। इन दोनो प्रकार के प्राणायामो का प्रदर्शन देखकर सभी बडे प्रभावित हुए। इससे सभी के हृदयो मे महाराजजी के प्रति ऋनन्य भिवत ग्रीर श्रद्धा के भाव उत्पन्त होगए। स्वामी विशुद्धानन्दजी इनके बहुत बड़े प्रशमको मे मे थे। उन्होने रावलिंदी में सर्वत्र इनके योग ग्रोर यीगिक सिद्धियो की वड़ी न्यानि कर दो थी ग्रीर ये ग्रपने शिष्यो से प्राय कहा करते थे कि वर्तमान युग मे ब्रह्मचारी व्यासदेवजी के समान कोई दूसरा योगी आर्य जगत् मे दृष्टि-गोचर नहीं होता। हृदय-स्तम्भन तथा नाडी-ग्रवरोधन प्राणायामी के प्रदर्शन से महाराजजी के सम्मान मे अत्यन्त वृद्धि हुई। पण्डित मुक्तिरामजी भी वडे प्रभावित हुए। योगी अमरनाथजी की अण्टवर्षीया पुत्री कुलद्रीपा देवसमाज मन्दिर मे महा-राजजी को भोजनार्य बुलाने स्राया करती थी। वैद्य धर्मचन्दजी वडी सन्देहात्मक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन्होंने कुलदीपा को कई बार महाराजजी के पास देवसमाज मन्दिर मे जाते देखा था। उनके मन मे भ्रतेक शकाए उत्पन्न होने लगी। एक दिन योगी ग्रमरनाथजी के पास जाकर कहा कि ग्राप ग्रपनी पुत्री को ब्रह्मचारीजी के पास भोजन के लिए बुलाने मत भेजा करों। वे वहा अकेले रहते है अत में इसका वहा जाना उचिन नहीं समभता। ग्रमरनाथजी उनकी वात मुनकर स्तम्भित से रह गए श्रीर कहने लगे कि श्राप ब्रह्मचारीजी को नहीं जानते। ये बहुत ऊचे दर्जे के महात्मा है और प्रसिद्ध योगी है। उनके प्रति ग्रापकी दुर्भावना देखकर मुभे दु ख तथा ग्राश्चर्य दोनो हो हो रहे है। आपका उस प्रकार का सन्देह अत्यन्त निराघार तथा अनुचित है। ऐसी महान् ग्रात्माग्रों के प्रति इस प्रकार का सन्देह करना एक वडा पाप है। वैद्यजी बडे घवरा गए और शास्त्र का प्रमाण देकर कहा कि युवावस्था प्राप्त माता, वहिन और पुत्री के पास कभी भी एकान्त में नहीं बैठना चाहिए। अमरनाथजी ने यहा, मेरी पुत्री तो इतनी छोटी है कि वह ब्रह्मचारीजी की भी पुत्रीवत् ही है श्रीर यदि व्यागदेवजी जैंगा महान् व्यक्ति मेरी पुत्री से विवाह करना भी चाहे तो मुक्ते इसमे अपार हुए होगा और में इसमे अपना महान् गीरव समभूगा। कई वर्ष के अनन्तर अमरनायजी ने यह बान बटे विनोदपूर्ण ढग से श्री महाराजजी को सुनाई थी ग्रांर तब बड़ा मनारजन रहा था।

वैद्य धर्मचन्दजी के पुत्र को योगवल से श्रारोग्यता प्रदान की—एक वार महाराजजी काश्मीर से लौटते हुए पुन रावलिंपडी ठहरे। उन दिनो धर्मचन्दजी का
नवजान पुत्र अत्यधिक वीमार था। इसे अतिरेचन हो रहा था। दिन-भर में ५०६० वार गीच जाता था। अत्यन्त कृश तथा दुर्वल होगया था। उसके जीवन की
कोई आशा नहीं रही थी। वैद्यजी ने स्वय बहुत उलाज किया और कई डाक्टरो से
भी उपचार करवाया, किन्तु किसी से भी लाभ नहीं हुआ। सारा परिवार निराशा
में ज्या हुआ था। कही से भी आशा की किरण दृष्टिगोचर नहीं हो रही थी। जव
वैद्यजी का यह मालूम हुआ कि महाराजजी नगर में पधारे हुए है तब वे भागे हुए
असरनाथजी के घर पर उनसे मिलने गए और निवेदन किया, "महाराजजी, नवजात
शिजु अत्यन्त गंण है। उसके प्राण सकट में है। विविध उपचार करवा चुका हू।

कुछ ग्राशा उसके जीवन की प्रतीत नहीं हो रही है। ग्रव मुफे ग्रापका ही भरोसा है। ग्राप ही में इसके प्राण वचाने की जिंकत है ग्रीर ग्राप ही इसे ग्रपने योगवल से प्राणदान दे सकते है। ग्राप इस पर ग्रपना मानसिक प्रयोग करने की कृपा करे। मुफे ग्राप पर पूर्ण विश्वास है। ग्राप ही इसे नीरोग कर सकते है।" वैद्यजी की प्रार्थना पर महाराजजी ने उनके पुत्र पर प्रयोग करना स्वीकार कर लिया। वालक फूले में लेटा था। ग्रत्यन्त कृश होगया था। उसका केवल ग्रस्थि-पजर ही जेप रह गया था। महाराजजी ने फूले के पास खडे होकर ग्रपना मानसिक प्रयोग प्रारम्भ किया। वालक बहुत देर से वेहोंग था किन्तु १५-२० मिनट के प्रयोग से वालक होंश में ग्रा गया ग्रीर नेत्र खोलकर महाराजजी की ग्रोर त्राटक करके वहुत देर तक देखता रहा। इन्हे विश्वास होगया कि वालक ठीक होगया है। महाराजजी ने ग्राधा घण्टा तक प्रयोग किया। वच्चा कुछ ठीक हुग्रा। उन्होंने वैद्यजी से कहा कि वालक कल तक विलकुल ठीक हो जाएगा। वालक के दस्त वन्द होंगए ग्रीर वह विलकुल नीरोग हो गया।

इस वर्ष महाराजजी काश्मीर मे ४ मास के लगभग मौनव्रत समाप्त करके ग्राए थे। इन दिनो ग्रपने मनोवल के द्वारा ये रोगियो को नीरोग करने का ग्रभ्यास भी किया करते थे।

#### श्रमृतसर पधारना

साधना का कार्यक्रम—महाराजजी दीपावली के ग्रवसर पर रावलिपडी से ग्रमृतसर पधारे ग्रीर मोतीराम की वगीची में निवास किया। दीपमाला के पश्चात् इन्होंने काष्ठ मौन वर्त धारण किया ग्रीर ग्रपना साधना का कार्यक्रम नियत कर लिया जो निम्न प्रकार से था —

प्रात काल २ वजे से दोपहर के १२ वजे तक—एक ही ग्रासन पर वैठकर श्रभ्यास।

दोपहर १२ वजे से २ वजे तक—स्नान, ग्रग्निहोत्र, फल ग्रौर दूव लेकर थोडा विश्राम ।

४ वजे से रात्रि के १० वजे तक-योगाभ्यास मे वैठना।

योग प्रशिक्षण—उपरोक्त प्रकार से प्रतिदिन १६ घण्टे घ्यान तथा समाधि में व्यतीत करते थे। काष्ठ मौन वर्त चैत्र की सक्तान्ति को समाप्त किया। इसके पञ्चात् हरिद्वार पधारे ग्रौर वहा पर मोहन ग्राश्रम में निवास किया। पूर्ववत् पुन दो मास का योग प्रशिक्षण का कार्यक्रम वनाया। कई ग्रभ्यासी योग साधना के लिए उपस्थित होगए। इस वार दिन में तीन वार ग्रभ्यास करवाया जाता था। साय ग्रौर प्रात तो ग्रभ्यास मोहन ग्राश्रम में ही करवाया जाता था किन्तु प्रात द वजे से लेकर १२ वजे तक ग्रभ्यास गगाजी के तट पर करवाया जाता था क्योंकि वहा पर नितान्त एकान्त स्थान था। चैत्र ग्रौर वैशाख मास में यह साधना करवाई गई थी। इस ग्रवसर पर मोहन ग्राश्रम में स्वामी विशुद्धानन्दजी, स्वामी पुरुषोत्तमानन्दजी, स्वामी सोमतीर्थजी ग्रौर स्वामी ग्रोमानन्दजी ग्रादि महात्मा ठहरे हुए थे। इन सवसे योग के विषय में प्राय वार्तालाप होता रहता था।

### उत्तरकाशी (हिमालय) मे निवास

शकर मठ मे निवास--मोहन ग्राथम से उत्तरकाशी जाने का विचार कर लिया। नगभग त्राघे ज्येग्ठ मे महाराजजी देहरादून मसूरी होते हुए उत्तरकाशी पहुच गए। यहा पर शकर मठ में स्वामी पुरुषोत्तमानन्दजी की कुटिया में निवास किया। यहा त्राकर चार मास का मीन व्रत घारण कर लिया। उत्तरकाकी मे इन दिनो मिक्यिया ग्रत्यियक होती है। ये यहा पर कमरा विलकुल बन्द करके भोजन बनाते थे। दरवाजे वन्द करने के कारण ग्रंधेरा हो जाता था, उसके निवारण के लिए दिन में भी दीपक जलाना पटना था। यहां पर उन दिनो एक रुपये का डेढ सेर घी ग्रीर ६-७ पैसे सेर दूध विका करता था । पजावी क्षेत्र के प्रवन्धक पण्डित जगतराम नारी खाद्य मामग्री मगवा कर कुटिया मे भिजवा देते थे, इसलिए मीन व्रत मे किसी प्रकार की ग्रमुविधा नहीं थी। महाराजजी केवल ग्रमावस्या तथा पूर्णिमा की अपना मीन वन लोलने थे। इस बार ये यह अनुभव करना चाहते थे कि आहार और निद्रा को मन्ष्य कहा नक बढ़ा सकता है। उस मीन से पूर्व ये १० वजे से २ वजे तक अर्थान् केवल ८ घण्टे ही मोते ये और केवल एक पान साटा २४ घण्टे में खाते थे। उपरोक्त अनुभव करने के लिए दूसरे दिन आधी छटाक आटा और वढा दिया किन्तु घी की मात्रा नही बढाई और १५ मिनट निद्रा में वृद्धि कर दी। साढे तीन मास में बीन छटाक ग्राटा लाने तथा बारह घण्टे नीद लेने लग गए। इस ग्राहार ग्रीर निद्रा को ग्रीर भी बटाया जा सकता था किन्तु महाराजजी ने इसे हानिकर समभकर इसका श्रीर ग्रिथिक ग्रनुभव नहीं किया। ग्रिथिक ग्राहार ग्रीर निद्रा गरीर को तमोगुणी वनागर पशुवन् वना देते है। बुद्धि जडवत् हो जाती है। सूक्ष्म विज्ञान को समभते में ग्रममर्थनों ग्रो जानी है। नन्द्रों ग्रीर निद्रों का एक साम्राज्य-सा स्थापित हो जाता है। इयास-प्रव्यास की गति श्रधिक होने लगती है। इससे मनुष्य ग्रल्पायु भी हो जाता है। उसलिए योगी के लिए यह परमावश्यक है कि ग्रत्प ग्रीर सात्विक ग्राहार करे। उसे ८-४ घण्टे से श्रधिक निद्रा भी नहीं लेनी चाहिए। इस श्रनुभव के पश्चात् महा-राजजी ने अन्त का परित्याग करके उपवास कर लिया। नेति, घोती, गजकर्णी, वस्ती प्रयादि त्रियाए भी की श्रीर प्राणायाम के द्वारा जारीरिक गुद्धि करके उसकी हत्का वरना प्रारम कर दिया। अब आहार में केवल थोडा-सा दूध लेना ही प्रारम्भ कर दिया था। १४-२० दिन मे इनका शरीर पूर्वस्थिति मे श्रागया। श्री महाराजजी को व्हाध्याम का न्यशंगात्र भी न था। ग्रपने शरीर पर इन्होने श्रनेक श्रनुभव करके देन थे। उनका शरीर शान, विशान तथा नवीन ग्रनुभव प्राप्ति की एक जीवित-जागृत प्रयोगयाला थी ।

# हरिद्वार मे योग प्रशिक्षण

महाराजजी दीवाली के ग्रवसर पर सदैव की भाति ग्रमृतसर पंधार गए। इस वार यहा रहकर तीन मास का मीन व्रत लिया। हरिद्वार में इस वार कुम्भ का मेला होने वाला था, उसलिए ग्रभ्यासियों को इससे पूर्व ही समय देने का निश्चय कर लिया। ग्रत समाप्त करके हरिद्वार में मोहन ग्राश्रम में चले गए। कुम्भ के कारण इस बार ग्रभ्यास में सम्मितित होने वालों की सस्या ग्रधिक थी। इस वार डेढ मास तक ही प्रशिक्षण चला। कुम्म के मेले से १५ दिवस पूर्व ही ग्रभ्यास समाप्त कर दिया जिससे मेले मे सम्मिलित होने की इन्हें मुविधा रहे। ग्रंव महाराजजी मोहन ग्राश्रम में नगर में बड़े डाकखाने के पास माई मानकौर की धर्मजाला में चले गए। यह धर्मजाला लाला मोतीरामजी, जिनकी बगीची में ब्रह्मचारीजी ग्रमृतसर में रहकर ग्रभ्यास किया करते थे, उनकी पत्नी ने बनवाई थी। इनसे परिचय होने के कारण महाराजजी को इस धर्मशाला में कई कमरे मिल गए। ग्रमृतमर के मेठ तुलमीरामजी महाराजजी को मिलने ग्राए। इनका ग्रपने भाइयों से सम्पत्ति के विषय में मुकहमा चल रहा था। माता मनसादेवी इनकी बहुत पुरानी परिचित थी। इन्होंने महाराजजी में निवेदन किया कि ग्राप ऐसा उपाय कर जिसने हम इस मुकहमें बाजी में मुक्त हो जाए ग्रीर ग्रपना शेप जीवन ईश्वर-भिवत में लगा सकें। इस रात-दिन की चिन्ता के कारण कुछ भी भजन-पाठ नहीं हो सकता।

सेठ तुलसीराम ग्रीर मनसादेवी को वरदान-श्री महाराजजी की ग्रपने श्रद्धालु भक्तो पर वडी कृपा थी । मुकद्दमे के कारण तुलसीरामजी ग्रीर मनसादेवी को चिन्तित देखकर उन पर इन्हे दया या गई ग्रीर इनकी ग्रादेश दिया कि ग्राप दोनी हाथ मे गगाजल लेकर प्रतिज्ञा करो कि भगडों से मुक्त होकर अपना शेष जीवन हरिद्वार मे रहकर ईव्वर-भिक्त मे व्यतीत करोगे और अपना सारा व्यापार आदि श्रपने पुत्रों के सुपुर्द कर दोगे। माता मनसादेवी ने हाथ जोडकर निवेदन किया, "महाराजजी, हमारे पास इतना घन कहा है कि हम सब घघा छोडकर हिन्हार में ग्रा बैठे । हमारा निर्वाह किस प्रकार होगा ?" महाराजजी ने हमकर कहा, "तुम्हारे पास जब एक करोड की सम्पत्ति हो जाएगी तब तो हिन्दार में आकर गंगा के तीर पर बैठकर भजन करने लगोगी ?" इस पर सेठजी तथा उनकी पत्नी मनमादेवी ने हाथ मे गगाजल लेकर हरिद्वार मे निवास करके भजन करने की प्रतिज्ञा की ग्रीर महाराजजी से निवेदन किया कि "महाराजजी, ग्राप ऐसी कृपा करे कि जिनसे इस मुकद्मे का फैसला हमारे पक्ष मे हो जाए।" योगीराजजी ने जिस जज के पाम उनका मुकद्मा था उसकी फोटो मगवाई ग्रार उसकी ग्रायु ग्रीर रग ग्रादि के विषय मे पता लगाया और मानसिक प्रयोग के द्वारा उसकी भावना मे परिवर्तन ला देने के लिए उनसे कहा। मुकद्दमे की तारीख भी पूछी जिसमे उसी दिन माननिक प्रयोग किया जाए। इनके सुपुत्र हरिकिशनदास ने लाहीर जाकर सब बानो का पता लगाकर महाराजजी को सूचित कर दिया। लगभग दो मास मे सालम (मध्यस्थ) नियत हो गया और इसने सेठ तुलसीरामजी के पक्ष में मुकहमें का फैनला दे दिया। इनको वम्बई मे इस निर्णय के अनुसार एक वडा भारी कारखाना मिल गया। इसी समय योरुप मे महायुद्ध प्रारभ होगया ग्रीर ये चार-पाच माल मे ही करोड़ो की सम्पत्ति के मालिक वन गए । इन्होने महाराजजी की ग्राज्ञा के ग्रनुसार हरिद्वार मे कपूरयला हाऊस एक लाख में खरीद लिया ग्रीर यही ग्राकर रहने लग गए। इन्होने ग्रपना शेप जीवन ईश्वर-भिक्त के ही ग्रपण कर दिया। तभी से ये महाराजजी को ग्रपना गुरु मानने लग गए और इनके प्रति उनकी अनन्य भिनन होगई।

कुम्भ के ग्रवसर पर एक वडी दुर्घटना होगई जिसका महाराजजी के हृदय पर वहुत गहरा प्रभाव पडा। हर की पीडियो पर लगभग दो सौ गज के फासले पर कई स्थानो पर सडक पर विल्लिया वाघी गई थी। प्रात चार वजे से ही जनता ने म्नानार्थ ग्राना प्रारभ कर दिया। दैवयोग से विल्लया टूट गईं। यात्रियो का समुदाय, जो म्नानार्थ ग्रा रहा था, रुक न सका क्यों कि उन्हें क्या मालूम था कि विल्लया टूटने वाली हैं। इसमें लगभग ८०-६० व्यक्ति कुचलकर मर गए। इस दुर्घटना को देखकर महाराजजी को वडा दु व हुग्रा ग्रीर वडी उदासीनता तथा वैराग्य की भावना हृदय में उत्पन्न होगई ग्रीर उत्तराखण्ड (हिमालय) में जाने का दृढ सकरप कर लिया।

वृद्ध सन्त के उपदेश-कुम्भ का स्नान करने के पश्चात् श्री महाराजजी सप्त-सरोवर पर सन्तो तथा महात्मात्रों के दर्जनार्थ गए। गगा के किनारे तीन मील के फामले पर एक वहत वृद्ध सन्त के दर्शन हए। ये भिक्षा लाकर गगाजी मे घो रहे थे जिनमें इसका स्वाद, रस नथा रिनम्धता निकल जाए। ये सन्त महान् त्यागी ग्रीर उत्कट वैराग्य सम्पन्न थे। जब ये भोजन करने लगे तब महाराजजी श्रपने पास मे कुछ खाद्य पदार्थ इनको भेट करने लगे। उन्होने इसे स्वीकार नही किया क्योकि उसमे ऋत्यधिक घृत था। उनसे वार्नालाप करते हुए योगीराजजी ने पूछा, "श्रापको वैराग्य हुए कितने वर्ष होगए हैं ?'' उन्होने कहा, "मुक्ते साधु वने लगभग साठ वर्ष हो गए है। " महाराजजी ने उनसे अपने लम्बे जीवन की विशेषताए वताने की प्रार्थना की जिससे उन्हें ग्रयने जीवन मे चरितार्थ किया जा सके। महात्माजी ने हसते हए कहा, "में क्या अनुकरणीय वात वताऊ वेटा । अनेक यत्न तथा उपाय और साधन करने पर भी में ग्राज तक स्मृति ग्रीर सस्कारो का ग्रभाव नहीं कर पाया हू। इस जीर्ण-गीर्ण वृद्धावस्था मे भी पत्नी के सुगो का स्मरण हो आता है। आज उसकी मृत्यु को ६५ वर्ष होगए है। यब कुछ त्याग दिया। वैराग्यवान् भी वन गया हू परन्तु पत्नी का अनुराग अभी नहीं गया है। स्मृति अनुरागपूर्वक ही होती है। अपने जीवन को विकारता ह। जिस उद्देश्य से गृह-त्याग किया था वह अभी तक पूर्ण नही हुआ है। परम वैराग्य की स्थिति अभी भो प्राप्त नहीं हुई है। तुम बहुत अच्छे हो जो विवाह नहीं किया। मनुष्य सब बबनों से मुक्त हो जाता है परन्तु विवाह के बधन से मुक्त होना ग्रममय भने ही न हो किन्तु ग्रत्यन्त कठिन ग्रयव्य है। "महाराजजी ने महात्माजी के चरण पकडकर निवेदन किया, "महाराज । ग्रापने मेरे लिए बडे उपदेश की बात कही है। इसको स्मरण करके कभी भूलकर भी विवाह की इच्छा न होगी। श्रापको रुपयो की श्रावञ्यकता हो तो मै श्रापके लिए ला दू।" इस पर महात्माजी ने कहा, "म रुपये को गन ५० वर्ष से स्पर्भ भी नहीं करता। मुक्ते वस्त्रों की भी श्रावश्यकता नहीं है। गर्म कपटे में पहिनता नहीं हू श्रीर मेरे पास खद्दर की दो चादरे है। भ्रभी ४-५ सान भ्रीर चल जाएगी।" महाराजजी ने उन्हे प्रणाम किया भ्रीर ग्रंगने निवास-स्थान पर ग्रागए।

# उत्तरकाशी (हिमालय) मे पुनः निवास

हरिद्वार का कुम्भ समान होने पर श्री महाराजजी देहरादून तथा मसूरी होते हुए उत्तरकाशी पहुच गए। उम बार श्राप पजाबी क्षेत्र मे ठहरे। प० जगतरामजी यहा के प्रवधक थे। उनकी मन्तों के प्रति बडी श्रद्धा श्रीर भिक्त थी। इन्होंने महाराजजी को निवासार्थ एक कमरा दे दिया। कुछ दिनों के पञ्चात् स्वामी पचानन्दजी जो इलाहाबाद में कोट दयाराम भूमी के गठन्त थे, वहा श्रागए। ये महाराजजी के वरं मित्र थे। जब ये प्रयाग में कुम्भ तथा श्रवं कुम्भी पर गए थे तब इन्हीं के श्राश्रम में

ठहरे थे। इन दोनो का पारस्परिक वडा प्रेमभाव था। ये भी पजावी क्षेत्र में ही ठहरे थे। यहा पर कुछ दिवस ठहरने के पश्चात् इन्होने गगोत्री ग्रोंर गोमुख जाने का विचार कर लिया। महाराजजी इनको विदा करने के लिए कुछ दूर तक उनके साथ गए। उत्तरकाजी के स्कूल के पास तक इन्हें पहुंचा कर जब लीटने लगे तव पचानन्दजी से कहा, "चित्त तो मेरा भी उघर जाने के लिए कर रहा है।" पचानन्दजी ने उनमें कहा, "श्वाप नर्म-नर्म घास पर चहलकदमी करने, मुख्यूवंक जीवन व्यतीत करने वाले सुकुमार साधु है। ग्रापसे यह कठिन यात्रा न हो सकेगी।" महाराजजी ने इसका उत्तर दिया कि "ग्राप मुक्ते विलकुल सुकुमार न समके। में कुमुम के समान कोमल तथा पत्यर के समान कठोर हू। मैं कठिननम यात्रा भी कर नकता हू। में दमने पूर्व दो बार गोमुख की यात्रा कर चुका हू। कैलाज ग्रीर मानमरोवर की यात्रा कर चुका हू। यह यात्रा कितनी कठिन है इसकी ग्राप कल्पना भी नही कर सकते। मेरे लिए गोमुख-यात्रा एक ग्रत्यन्त साधारण-सी वात है। इनना कह चुकने के बाद उन्होंने ग्रपने कपड़े के सफेद जूते, काश्मीरी गर्म चादर ग्रयवा गर्म घुस्मा क्षेत्र ने लाने के लिए मैनेजर को ग्रादेश दिया। सब हसने लगे क्योंकि इम बात पर विश्वाम नही था कि महाराजजी गोमुख जा सकेगे किन्तु महाराजजी ने ग्रपना धुम्मा कथे पर रग्या ग्रीर चल दिए। सबसे कह दिया कि ग्राज से सानवे दिन यहा लीट ग्राङगा।

गोमुख की ७ दिन मे यात्रा--महाराजजी, स्वामी पचानन्दजी तथा एक ग्रन्य ग्रवधृतजी ने गोमुख के लिए प्रस्थान किया । पहिले दिन भटवाडी पहुचे । दुसरे दिन भाला, ग्रौर तीसरे दिन ग्रवधूतजी नो ग्रागे चलने मे ग्रममर्थ होगए ग्रत वही रह गए परन्तु महाराजजी श्रीर पचानन्दजी सायकाल ४ वजे गगोत्री पहुच गए। यहा ने चौथे दिन प्रात प्रस्थान करके ४ वजे सायकाल गोमुख के पान पहुच गए। वहा पर प्रात -काल पूर्णिमा का स्नान किया । गोमुख पहुच कर स्नानोपरान्त बुछ जल-पान किया ग्रीर वापस चल दिए। लगभग दो बजे गगोत्री पहुच गए। दूसरा स्नान गगोत्री मे लगभग ग्रढाई वजे किया श्रौर स्वामी कृष्णाश्रम जी के पास चाय-पान किया। महन्त पचानन्दजी ने महाराजजी की वडी प्रशसा की ग्रीर उनके मामने ग्रपनी पराजय स्वीकार की। योगीराजजी ने वीर पुरुषों के समान यह यात्रा की। जब कभी थोडी-सी भी चढाई ग्रा जाती थी तो पचानन्दजी का दम फूलने लगता था। ग्रव उनमें गगोत्री से म्रागे चलने की क्षमता नही रही, इसलिए गगोत्री मे ही ठहरना पडा। ये पाचवें दिन गगनाणी पहुच गए ग्रीर वहा तप्त कुण्ड पर ठहरे। २= मील की यात्रा की थी श्रत थकान श्रधिक होगई थी। तप्त कुण्ड में स्नान करने से थकान दूर हुई। रात्रि को यही विश्राम किया। दूसरे दिन यहाँ से प्रस्थान करके मनेरी जाकर ठहरे। सानवे दिन वहा से प्रात ५ वजे चल कर ६ वजे उत्तरकाजी पहुच गए। जगतरामजी तथा अन्य परिचितो को वडा आश्चर्य हुआ। महाराजजी को उत्तरकाशी मे निवास करना ग्रधिक प्रिय था, इसलिए यहा कुछ दिन ग्रार ठहरे।

जालधर तथा होशियारपुर गमन—ग्राध्विन मास में यहा से जालघर के लिए प्रस्थान किया ग्रीर जालधर पहुच गए। वहा पर डाक्टर नारायणिसहजी के पास कुछ दिवस तक ठहरे ग्रीर इसके पश्चात् होशियारपुर में डाक्टर मोतीसिहजी के पास निवास किया। इस वर्ष सर्दियों में विजवाड़े के चौक के पास इनकी वगीची में ठहरे। यहा पर कुछ मारा का मीन व्रत किया। भोजनादि की सब व्यवस्था डाक्टर मोती-सिंह ने ठीक-ठीक कर दी थी।

फाइमीर गमन—सदैव की भानि महाराजजी ग्रीष्म-ऋतु में काञ्मीर चले गए। इस बार मुपती बाग में न ठहर कर बैरीनाग के चरमें पर ठहरे। कुछ दिनों के परचात् मेठ तुलमीराम, इनकी धमंग्रती ग्रीर उनकी पुत्री जनककुमारी वहा ग्रागई। इनके निवास का प्रवध जगलात के डाक वगले में कर दिया गया। महाराजजी डाक वगले में मेठजी ग्रीर उनकी पत्नी ग्रीर पुत्री को ग्रभ्यास करवाने के लिए जाया करते थे। माता मनसादेवीजी तीन धण्टे तक शून्य समाधि लगाने लग गई थी। सेठजी तथा उनकी पुत्री केवल दो घटे तक ही बैठते थे। ये सब लगभग तीन मास तक महाराजजी के पास रहे। योगीराजजी नित्यप्रति ग्रपनी कुटिया में उन्हें कथा सुनाया करते थे। कई-एक ब्राह्मण भी कथा नुनने के लिए ग्रा जाया करते थे। सेठानीजी तीन या चार घटे की समाधि लगानी थी, जनककुमारी मत्रजाप करती थी तथा सेठजी विज्ञान के त्रम ने योग गीगते थे। यह सन् १६३६ की बात है। इस वर्ष द्वितीय महायुद्ध प्रारभ हुग्रा था। दशहरे के ग्रवसर पर महाराजजी तथा तुलमीरामजी प० गोपीनाथजी के पास श्रीनगर में कनिकदल में ठहरे। वहा उन्होंने प्रदर्शनी देखी ग्रीर चार दिन तक पटिनजी के ग्रिनिथ रह कर ग्रमृतसर के लिए प्रम्थान कर दिया।

#### श्रमृतसर मे निवास

महाराजजी दीवाली से एक मप्ताह पूर्व अमृतसर पहुच गए और वहा पर मोनीरामजी की बगीची में निवास किया। इस वर्ष पिंडत अगस्तमुनि तथा भाग्य-वन्नीजी श्री महाराजजी के दर्शन करने के लिए आए। पिंडतजी प्राय कोटली मीर-पुर में उपदेश द्वारा प्रचार किया करते थे। ये बी० ए० और शास्त्री पास थे। कोटली नथा मीरगुर में मेहना सावणमलदत्त से महाराजजी की प्रशसा सुन कर और उससे प्रभावित होकर ये दोनो महाराजजी से मिलने आए थे। इसके पश्चात् पिंडतजी यदा-कदा उनमें मिलने आते रहे और योग साधना में भी सिम्मिलित होते रहे। धीरे-धीरे इनकी महाराजजी के प्रति अत्यन्त श्रद्धा और भिवत होगई और वे इनमें गुरु-भावना रखने लग गए। श्रीमनी भाग्यवन्तीजी गुरुचरणदत्तजी के पास ठहरी थी। महाराजजी ने ही उनकी सब व्यवस्था वहा करवा दी थी। महाराजजी ने मौनव्रत धारण किया हुआ था। ये केवल पूणिमा और अमावस्या के दिन मीनव्रत तोडते थे। उन दिनो अपनी गुटिया पर ही उपदेश दिया करने थे। श्रीमती भाग्यवन्तीजी श्री गुरुचरणदत्तजी के साथ ही वहा पर उपदेश श्रवण करने के लिए आ जाया करती थी। इन्हें योग-साधना का उपदेश देकर महाराजजी ने हिन्द्वार जाकर तपोमय जीवन व्यतीत करने का आदेश दिया।

श्रववृत बुद्धिप्रकाशजी का उत्थान श्रोर पतन—उत्थान—मोतीरामजी की वगीची के सामने यन्त बुद्धिप्रकाशजी श्रवधूत रहा करते थे। ये उदासी सन्त थे। यहा पर उनका श्रपना वगला श्रीर वगीचा था। महाराजजी भी इनकी वगीची मे श्रपने निवास के लिए घाम की एक पर्णकुटि वनाकर तपस्या करते रहे थे, इसलिए इनके साथ योगीराजजी का वडा रनेह था। यन बुद्धिप्रकाशजी ज्येष्ठ तथा श्रापाढ मास मे २१ वृतिया तथा करते थे। उस तथ की समाण्य पर एक वडा उत्सव मनाते थे श्रीर

भण्डारा किया करते थे। ये वडे तपस्वी तथा त्यागशील सन्त थे। उत्सव के समय महाराजजी को उपदेश देने के लिए बुलाया करते थे। सहस्र नर-नारी इस उत्सव के अवसर पर आते थे। इनके शिष्यों की सख्या लगभग १५ थी। इनकी आयु लगभग ६० वर्ष की होगी। अमृतसर में इनकी वडी मान-प्रतिष्ठा थी।

पतन—सन्त वुद्धिप्रकाशजी जैसे प्रतिष्ठित महात्मा के पतन की कभी कोई स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकता था। किन्तु "विनाशकाले विपरीतवृद्धि", जब किसी व्यक्ति के पतन का समय श्राता है तो उसकी बुद्धि श्रीर विवेक सब नष्ट हो जाता है। वह श्रेय-मार्ग का परित्याग करके प्रेय के गर्त में गिर जाता है। उस समय उसे अपनी कीर्ति तथा मान और प्रतिष्ठा का विलकुल ध्यान नही रहता। उसके पतन की एक शृखला-सी वध जाती है। जब एक वार मर्यादा का उल्लंघन कर दिया जाता है, ग्रथवा एक वार अनुशासनहीनता आ जाती है, तब यह नही कहा जा सकता कि इस मर्यादा तथा अनुगासनहीनता का अन्त कहा होगा। इसीलिए नीतिविगारदो ने कहा है "विवेकपरिभ्रष्टाना भवति विनिपात शतमुख ।" यह कथन सन्त वृद्धि-प्रकाशजी के ऊपर पूरा-पूरा घटता है। इनके पतन की कहानी वडी दु खद है। उसको लिखते हुए भी लज्जा त्राती है। पाठकों को मर्यादा-पालन की शिक्षा देने के लिए इसका लिखना भी उपयुक्त मालूम होता है। सन्त कवीर कहा करते थे कि शूरवीर रणागन मे जाकर हाथ मे तलवार लेकर शत्रु के साथ युद्ध करता है। थोडी ही देर मे वह रणभूमि मे युद्ध करता हुग्रा या तो शत्रु को मार देता है या स्वय मारा जाता है। सती को भी अपने पतिदेव के साथ सती होने मे एक-ग्राध घण्टा ही लगता है। किन्तु सन्त प्रतिपल ग्रपनी इन्द्रियो, मन, वृद्धि, वित्त, कपायो, कुवासनाग्रो ग्रीर विविध वृत्तियो से ग्रहनिश्र जूभता रहता है। उसे वडा सजग ग्रीर सतर्क रहना पडता है। इस प्रकार से आजीवन इनके साथ युद्ध चलता रहता है। थोडी-सी ग्रसावधानी उसे म्रध्यात्म, तपस्या, त्याग, विवेक, वैराग्य के उच्च शिखर से गिराकर रसातल मे पहुचा देती है। यही बात सन्त वृद्धिप्रकाशजी के साथ हुई। गुजरावाले की एक धनाढ्य विधवा इनके सत्सग मे आया करती थी। धीरे-धीरे एक दूसरे के प्रति आकर्पण उत्पन्न हुआ। सन्त अपने कर्तव्य-पथ से विचलित होगया। महात्माग्रो की परम्पराग्रो, मर्यादास्रो तथा स्रनुशासन को भूल गया। शास्त्रशिक्षा तथा गुरुदीक्षा को ताक पर रख दिया। विवेक खो दिया। बुद्धि भ्रष्ट होगई। मान ग्रीर प्रतिष्ठा का सब ध्यान जाता रहा। सन्तो ग्रीर महात्माग्रों के सब उपदेश पानी की तरह वह गए। महाराजजी ने उन्हें एकान्त में लेजाकर कई वार समकाया ग्रीर इस स्त्री की ग्रोर से उनका मन फेरने का प्रयत्न किया। मान तथा प्रतिष्ठा पर लाछन लगाने से वचाने के लिए उपदेश दिए। लोक-मर्यादा की रक्षा की दुहाई दी। लोकापवाद की वुराइया वताई पर उन्हें एक भी वात समभ में न आई। आती भी कैसे । क्योंकि "कामातुराणा न भय न लज्जा।" अन्ततोगत्वा इस सन्त ने जटाए मुडवा दी, सन्तो के वस्त्र उतार दिए, अपना नाम वदल लिया और गुजरावाले की उस स्त्री के साथ विवाह कर लिया। श्री महाराजजी को बडी घृणा उत्पन्न हुई। सन्तो की पावन परम्परा को इस दुराचार से बडी ठेस पहुची। पतित सन्त की सारे नगर मे सर्वत्र निन्दा होने लगी। महाराजजी का चित्त भी श्रब श्रमृतसर से उपराम होगया। श्रमृतसर मे यह मीन व्रत उनका

ग्रान्तिम था। ग्रव उन्होंने यहा निवास करने का सर्वथा पित्याग कर दिया। बुद्धि-प्रकाशजी को बहुत फटकारा ग्रांर कहा, "सन्तजी, ग्राप बुद्धिप्रकाश नही ग्रपितु बुद्ध-प्रकाश है। ग्रापने सन्त मत्त पर बटा घट्या लगाया है। ग्रापके दुराचार से हमें भी बटी लज्जा ग्रा रही है। हमारा यहा रहना ही ग्रापने कठिन कर दिया है। ग्रापने ग्रामी पूर्यनावश सोने के बदले पीतल खरीदा है। ग्रापको सब लोग घृणा की दृष्टि ने देयते हैं। ग्राय बटे ग्रामानित हो रहे हैं। इगमे तो नहर में डूबकर मर जाना उत्तम है। ग्रव ग्रापने यह भूमि पापयुक्त कर दी है ग्रत हम दसे सदा के लिए छोड रहे हैं।" ये ग्राना मीनव्रत समाप्त करके २-३ दिन तक नगर में रहे।

काश्मीर प्रस्थान--यहा ने पण्टित गोपीनायजी का तवादला वारहमूले के पान न्यालकोट में होगया था ग्रत उन्होंने महाराजजी से वही चलने के लिए निवेदन किया।

देरी साह्य मे निवास ग्रीर चमत्कार—प० गोपीनाय ने महाराजजी के निवास ग्रीर भोजनादि की सब व्यवस्था कर दी। पटिनजी ने महाराजजी से कहा, ''स्याल-कोट में देरो साहब नामक एक वड़ा एकान्त स्थान है। यहा एक सुन्दर चश्मा भी है। यदि आप यहा ठहरना पमन्द करे तो आपका वहा पर प्रवन्ध कर दूँ। यदि वहा निवास पसन्द न हो तो फिर एक नम्बरदार के गकान मे कर दू। यह भी स्थान वडा एकान्त जीर जान्त है। महाराजजी ने दोनो स्थान देखने के पश्चात् अपना निर्णय देने की उन्छा प्रसट की। दोनो स्थानो का निरीक्षण कर चुकने के पश्चात् महाराजजी ने देरी साहव मे निवास करना पसन्द किया । तम्बरदार करतारसिंह ने इन्हें ग्रपने पास ठहराने का बहुत आग्रह किया किन्तु महाराजजी ने उस प्रस्ताव को स्वीकार नही किया वयोकि उनकी युवनी पत्नी घर में श्रकेली रहती थी। इस भाव को नम्बरदार से प्रकट भी किया किन्तु तब भी उसने हठ नहीं छोटा ग्रीर कहा, "महाराजजी, मेरी पत्नी नो ग्रापकी पुत्रो के समान है। ग्रापको यहाँ रहने मे कोई एतराज नही होना चाहिए।" महाराजजी ने उस बात को अस्वीकृत करते हुए कहा, "तुम व्यर्थका हठ मत करो, मैं तुम्हारे मकान मे नही ठहर सकता। सुनो गाँग्व वया ग्रादेश करता है। 'मात्रा स्वस्ना दुहित्रा या न विवियनायनो भवेत् । वलवानिन्द्रियग्रामो विद्वासमप्यपकर्पति । त्रथित् माता, यहिन, पुत्री यदि युवती हो तो उनके पास एकान्त में कभी न बैठे क्योंकि इन्द्रियों बलवती है। सर्वजारत्रपारगत व्यक्ति के भी उनके वजीभूत हो जाने की सभावना रहती है।" अरतार्रामह यह बात सुनकर मीन रह गया। थोटा ठहर कर पुन निवेदन ितया, "महाराजजी, ग्रापका देरी साहव रहना तो उचित न होगा । वहाँ कोई कभी रहता ही नहीं। एक बार एक मन्त बहा जाकर रहने लगे थे। किसी भूत या प्रेत ने उनके मह पर उनने चाटे मारे कि वह वेचारा मन्त उस पीटा से मृत्यु को प्राप्त होगया, नव ने ग्राज नक कभी कोई भी वहां नहीं रहा। उसलिए मेरे विचार में तो ग्रापको वहा निवास नही अरना चाहिए। वहां तो वडा पुण्यात्मा महापुरुप ही निवास कर साता है। कोई साधारण व्यक्ति वहा नहीं रह मकता। श्राप मेरे मकान में ही रहिए। भ प्रानी पत्नी को किसी दूसरे स्थान पर प्रवय करके वहा पहुचा ग्राता हू । अभिमहा-राजजी ने हुमते हुए कहा, "वया ग्राप हमे मामूली ग्रादमी ही समक्षते हैं वहुत वडा पृण्यात्मा ग्रीर देवपुरुष नहीं समक्षते ?" करतारिसह ने हाथ जोड कर विनम्रता से कहा, "जब तक ग्रापका कोई चमत्कार न देख लिया जाए तव तक ग्रापको देवपुरुष कैसे माना जा सकता है ?" महाराजजी ने देरी साहव मे ही ग्रपने निवास का प्रवध करने के लिए ग्रादेश दिया। करतारिसह ने इनके निवास ग्रीर भोजनादि की सव व्यवस्था देरी साहव मे करवा दी।

देरी साहब मे निर्भय होकर निवास ग्रोर कुटिया का जीर्णोद्धार—काश्मीर रियासत मे वारहमूला तहसील में स्थालकोट नाम का एक ग्राम था। इसकी जनसंख्या प्राय सारी सिक्खों की थी किन्तु ये लोग हिन्दू धर्म पर विश्वास करते थे। श्री गुरु गोविन्दिसहजी के समय में एक सन्त रोचासिह यहा पर तपश्चर्या किया करते थे। ये सन्त पढे लिखे थे ग्रीर वडे ईश्वरभक्त थे। गुरु गोविन्दिसह ने इनसे प्रार्थना की कि "देश पर ग्रापित के वादल मडरा रहे है। यवन देश को पादाकान्त करते जा रहे है। श्रत ग्राप देश की सेवा मे मेरी सहायता करे। तलवार हाथ मे लेकर मुसलमानों से युद्ध करने के लिए मैदान मे उतरे ग्रीर देश की यवनो से रक्षा करें। इस समय यही सबसे उत्तम ईश्वरभिनत है।" ये बाते सुन कर सन्त खडे होगए ग्रीर हाथ मे तलवार लेकर गुरु गोविन्दसिंह के साथ चल दिए। उन्होंने उस समय देश श्रीर धर्म की रक्षा मे सहयोग देना अपना परम कर्त्तव्य समभा। यह इन्ही सन्त महाराजजी की कुटिया थी। देवदार की लकडी की वनी हुई थी और सैकडो वर्प पुरानी थी। उसी समय से सन्तो के नाम से एक गाव जागीर रूप में मिला हुआ है और परम्परा से निर्मल सन्तों की गहीं के ग्रधिकार में चला ग्रारहा है। इनकी गद्दी पुछ में है। कुटिया की रक्षा के लिए ऊपर एक छज्जा-सा वना हुग्रा है। महाराजजी सायकाल के पञ्चात् इस कुटिया मे पधारे थे। इसमे इनके लिए एक चारपाई विछा दी गई थी। सामान विधिपूर्वक जमा दिया गया था। लालटेन जलाकर रख दी गई थी। रात्रि के दस वजे तक महा-राजजी ध्यान मे वैठे रहे ग्रौर १० वजे से २ वजे तक इन्होने शयन किया। दो वजे उठकर पुन ध्यान मे बैठ गए ग्रौर ग्राठ वजे तक बैठे रहे। ग्राम के लोग कुटिया के सामने आकर एकत्रित होगए, यह देखने के लिए कि सन्त इसमे सुरक्षित तो है। कही किसी भूत या प्रेत ने इनकी हत्या तो नहीं कर दी। प्रात काल जब करतारसिंह दूव लेकर ग्राए तो निवेदन किया, "महाराजजी, हमे तो रात भर नीद नही ग्राई। यही चिन्ता लगी रही कि कही भूत-प्रेतों ने ग्राकर ग्रापको तग न किया हो ग्रीर मार-पीट न की हो।" महाराजजी ने मुस्कराते हुए कहा, "हमने सब भूत श्रीर प्रेत यहा से भगा दिए हैं। हम तो यहा पर वड सुखपूर्वक सोए। हमे किसी ने यहा तग नही किया। हा, एक श्रादेश श्रवश्य मिला श्रीर वह यह कि इस कुटिया का जीर्णोद्धार होना अत्यन्त ग्रावश्यक है। ग्राप हमे कुछ गेन्तिया, फावडे ग्रीर टोकरिया ग्रादि मगवा दीजिए। कुटिया के सामने एक वहुत वडा चबूतरा वनाने का विचार है। जो लोग यहा पर माथा टेकने स्राया करेंगे उनसे यहा मिट्टी डलवाई जाया करेगी।" करतारिसह ने महा-राजजी के स्रादेश का पालन किया स्रोर सब सामान मगवा दिया। महाराजजी ने दो कुली इस काम के लिए मगवा लिए ग्रौर स्वय भी काम करने लगे। जब यह समाचार गाव मे पहुचा तो वहुत से लोग वहा पर दर्शनार्थ ग्रागए ग्रीर काम करने लगे। सन्त रोचासिंह की कुटिया को माताए लीपने के लिए आया करती थी। अनेक वर्षों से लिपाई होते-होते कुटिया के फर्ज का कही पता भी नहीं चल रहा था और इस लिपाई से जमीन इतनी ऊची होगई थी कि कही खडे रहने को भी स्थान नहीं यचा था।

श्राक्चयंजनक प्रसाद की प्राप्ति-एक दिन ४०-५० पुरुप सेवा के लिए श्राए। महाराजजी ने कुटिया के फर्ज को स्वय खोदना प्रारम्भ कर दिया। लोग डर के कारण हाथ नहीं लगाते थे परन्तु खडे हुए तमाशा देख रहे थे। कुटिया लगभग ७-८ फीट लम्बी तथा चौडी थी। जब फर्श दो-तीन फीट खोदा जा चुका तो ग्रन्दर कुटिया के फर्ज के वीच मे एक ४-५ इच लम्वा-चीडा खुड्ड-सा निकला। इसमे ५ कागजी वादाम रखे हुए थे। यहा किसी चूहे इत्यादि का न विल था ग्रीर न ही विल का कोई मार्ग ही दिखाई देता था। इस खुड्ड का सम्वन्ध वाहर से तो था नही। यह कुटिया के बीच में कैसे वन गई ग्रीर इसमें वादाम कहा से ग्राए, यह बात किसी की समभ मे नही ग्राई। महाराजजी से वहा पर एकत्रित जनता ने कहा कि ये वादाम सन्त रोचासिंह का प्रमाद समभना चाहिए, क्योंकि हम सब इस पवित्र स्थान का जीर्णोद्धार कर रहे है। महाराजजी ने एक मन चीनी मगवाई और छिलके सहित इन वादामों को पीस कर इसमें मिला दिया। इसमें से प्रसाद रूप में थोडा-थोडा सबको बाट दिया गया स्रोर शेप भविष्य मे वितरित करने के लिए रख दिया गया। इस कार्य तथा प्रमाद की सारे काश्मीर मे प्रमिद्धि होगई। सभी लोग सेवा-कार्य तथा दर्शनार्थ ग्राने लगे। कोई फल लेकर, कोई दूध तथा कोई दही, घी, चावल ग्रादि ग्रीर कोई चीनी, सब्जी ग्रादि लेकर ग्राते थे। सारा दिन मेला-सा लगा रहता था ग्रीर सेवा-कार्य वरावर चलता रहता था। माताए भोजन वनाने तथा सेवा करने ग्राया करती थी। दिन भर प्व रीनक लगी रहती थी। थोडे ही दिनो मे वडा भारी चवूतरा वन कर तैयार होगया। जब पुछ के महन्तजी को देरी साहव मे ब्रह्मचारी सन्तजी के ग्राने का तया कुटिया के जीर्णोद्धार का पता चला तव ये भी महाराजजी के दर्शनार्थ ग्राए ग्रीर सेवा वताने के लिए निवेदन किया। महाराजजी ने इनसे कहा, "ग्रापको इस स्थान के नाम मे जो एक गाव जागीर मे मिला हुआ है उससे वहुत आमदनी होती है, किन्तु ग्रापने इस स्थान के लिए कभी एक पैसा व्यय नही किया।" महन्त ने कहा, "महाराजजी । हमारी तो हिम्मत ही इस स्थान पर ग्राने की कभी नही होती। केवल कभी-कभी माथा टेकने के लिए ग्राते है ग्रीर इसके पश्चात् तुरन्त चले जाते है। यहा कुछ करने या ठहरने का साहस ही नहीं होता । अब आप पंधारे है और यह साहम किया है इसलिए ग्रव ग्रापकी जो ग्राज्ञा होगी वैसा किया जाएगा।" महाराजजी ने उन्हे एक पाच या छ कमरो की धर्मशाला बनाने का ग्रादेश दिया जिससे सन्त-महात्मा यहा निवास कर सके ग्रीर गृहस्थी भी कभी-कभी श्राकर ठहर सके ग्रीर कहा कि स्थाना-भाव के कारण में भी वाहिर डेरा लगाकर जैसे-तैसे यहा पर रहता हू। महन्तजी महा-राजजी के व्यक्तित्व, परिश्रम, साहस, वीरता तथा सेवा-कार्य से वडे प्रभावित हुए ग्रीर तुरन्त धर्मशाला के निर्माण का कार्य प्रारम्भ करवा दिया। समीप ही एक चश्मा था, उसको भी मरम्गत करवा कर ठीक वनवा दिया। अब देरी साहव एक अत्यन्त सुन्दर तथा मुखप्रद स्थान वन गया। ग्रव इसने एक तीर्थ स्थान का रूप धारण कर लिया ग्रीर दूर-दूर से लोग इस स्थान के दर्शन करने के लिए ग्राने लगे। महाराजजी के रावलिपडी के कई भक्त यहा पर श्रभ्यास करने के लिए श्रागए। वैद्य धर्मचन्द, योगी अमरनाय, उनकी वर्मपत्नी तथा पुत्री तथा और भी कई सन्त आकर उपस्थित होगए। सरदार करतारिसह महाराजजी के अनन्य भक्त बन गए थे। इनके पास फलो के कई वगीचे थे। फलो की पेटिया भर-भरकर महाराजजी के लिए भेजते थे। वाहर से आए हुए भक्त फल खा-खाकर ऊव गए थे। ब्रह्मचारीजी भक्नो को फल और वादाम मिथिन चीनी दिया करते थे।

नम्बरदार करतारसिंह को पुत्रोत्पत्ति का वरदान् करतारसिंह नि सन्तान थे। इसीलिए वे वडे चिन्तित रहते थे। एक दिन ग्राकर वे महाराजजी के चरणो पर गिर पड़े ग्रौरचरण पकडकर जोर-जोर से रोने लगे ग्रौर निवेदन किया कि "मैंने ग्रापके देवत्व और महापुरुपत्व ग्रीर महानता को प्रत्यक्षरूप मे देख लिया है। मैं नि सन्तान हू, जब तक म्राप मुक्ते पुत्रवान् होने का म्राणीर्वाद न देगे में म्रापके चरण न छोड गा।" जब इनको चरणों मे पड़े हुए बहुन देर होगई तब महाराजजी ने कहा, "ग्रच्छा, उठो, कुछ उपाय करते है। रोग्रों मन, चिन्ता भी मत करो, भगवान ग्राप पर दया करेंगे।" महाराजजी ने दोनो पित-पत्नी को ब्रह्मचर्य पालन के लिए कहा श्रीर दो मास में उनके मानसिक प्रयोग से करनार्रासह की घमंपत्नी गर्भवनी होगई ग्रीर दस मास वाद वह पुत्रवती होगई। जव यह वालक डेढ साल का हुआ तो एक वार उसे दस्त लग गए। एक सिक्ख सन्त ने इन्हें रोकने के लिए अफीम कुछ अधिक मात्रा में दे दी जिससे उसकी मृत्यु होगई। मनुष्य कुछ सोचता है ग्रौर विधाता के मन मे कुछ ग्रौर ही होता है। लगभग ५० साल की ग्रायु मे करतारिसह के घर महाराजजी के ग्रागीविद से वालक ने जन्म लिया था किन्तु उनके भाग्य मे सन्तान का सुख नही था ग्रौर एक सन्त के हाथ से उसकी मृत्यु हुई। एक सन्त के ग्रागीर्वाद से जन्म हुग्रा ग्रौर दूसरे के हाथ से मृत्यु। महाराजजी यहा ग्रक्तूवर मास तक रहे। सन्त रोचासिंह के स्थान के जीर्णोद्धार तथा करतारिसह के पुत्रोत्पत्ति के कारण इनकी प्रसिद्धि सारे काश्मीर मे होगई थी। सभी इनकी भूरि-भूरि प्रशसा करते थे और दर्शनार्थ आने वालो का एक वडा मेला-सा लगा रहता था। सैकडो की सख्या मे नर-नारी अपनी कामनाओ को लेकर आते थे और महाराजजी के आशीर्वाद से उनकी मनोकामनाए सिद्ध हो जाया करती थी।

भ्रमृतसर गमन—इस वार दीपावली के ग्रवसर पर रावलिपडी होते हुए महाराजजी श्रमृतसर पहुचे। ग्रवकी वार वावू मुलखराजजी के पास ब्रह्मनगर में निवास किया। यहा पर केवल एक मास तक ही रहे। मोतीरामजी की वगीची में तब से रहना वन्द कर दिया था जब से बुद्धिप्रकाणजी विवेकहीनता के कारण पनन के गहन गर्त में गिरे थे। इसीलिए ग्रवकी वार मुलखराजजी की कोठी में निवास किया था। वहा पर एक मास तक वरावर नित्यप्रति उपनिपदो की कथा करते रहे। सकडो नर-नारी इनके उपदेशामृत का पान करने ग्राते थे। ग्रमृतसर में केवल एक मास रहे। इसके पश्चात् हरिद्वार चले गए। वहा पर मोहन ग्राश्रम में निवास किया। यहा ग्राकर तीन मास का मौनव्रत किया ग्रीर दो मास तक ग्रभ्यासी शिष्यो को श्रभ्यास करवाया। ग्रभ्यास काल में बहुत से साधको ने लाभ उठाया। वैशाखी के कुछ दिन पश्चात् काण्मीर के लिए प्रस्थान किया ग्रीर जालन्धर, होशियार-पुर, ग्रमृतसर तथा रावलिपडी होते हुए श्रीनगर पहुच गए।

#### श्रीनगर निवास

यहा पर पूर्ववत् पण्डित गोपीनायजी के मकान पर ठहरे। इन दिनो इनके भाई विञ्वनाय की पुत्री गोरी का विवाह था। केवल तीन-चार दिन ही जेप थे। महाराजजी को इसकी कोई सूचना नहीं थी। ये विना सूचना दिए ही उनके मकान पर पहुच गए।

प० गोपोनाथ विश्वनाथ के गृह का त्याग—सदैव की भाति ग्रवकी वार महाराजजी के पथारने पर परिवार को प्रसन्नता नहीं हुई क्योंकि वरान वालों ने मामिप भोजन के लिए वडा भ्राग्रह किया था ग्रीर ये दोनों भाई महाराजजी के सामने यह वृष्टना करना नहीं चाहते थे। प्रव ये वडी चिन्ता में पड गए, किकर्त्तव्यविमूढ होगए। वे महाराजजी को नाराज करना नही चाहते थे। गत २० वर्ष मे इनका वरद हाथ उनके सिर पर रहा था। इनके प्रति वडी श्रद्धा ग्रौर भिकत थी। इनके साथ बहुत पुराना प्रेम था। ये सदैव ग्राकर इनके पास ही ठहरा करते थे। ग्रव इनसे कही ग्रन्यत्र ठहरने के लिए निवेदन कैसे किया जा सकता था। इधर लडके वाले मामाहार के लिए हठ कर रहे थे। महाराजजी से किसी प्रकार का निवेदन करने का इन का साहस नहीं होता था। सारा परिवार चिन्ताग्रस्त था। प० विक्वनाथजी के एक मित्र थे। ये उाक्टर थे। ये महाराजजी के भी परम भक्त थे। इन्होने महा-राजजी से वस्तुस्थिति निवेदन करने का साहस किया ग्रीर इस जटिल समस्या को हल करने की प्रार्थना की। महाराजजी ने लडके वालो को जाकर समभाने की इच्छा प्रकट की किन्तु कन्या-पक्ष के प्राय सभी लोग वर-पक्ष वालो को समभा-समभाकर थक गए थे किन्तु वे टस से मस नही हुए और अपनी वात पर अडे रहे। यहा तक कि ये इस वात पर सम्बन्ध-विच्छेद करने पर भी उतारू होगए। महाराजजी ने आदेश दिया कि मेरे मामने इस मकान में मासाहार नहीं हो सकता श्रीर यदि में चला जाऊगा तो फिर कभी इस घर मे पैर न रखूगा श्रीर यदि में इस समय घर मे रहूगा तो कभी मास पकने ग्रथवा वकरे कटने नहीं दूगा। महाराजजी के वचन सुनकर सारे परिवार मे मन्नाटा-सा छा गया। सभी चिन्ताग्रस्त होगए। वडी विपम स्थिति उत्पन्न होगई। खुशी के स्थान पर गमी-सी छा गई। वहुत सोच-विचार के पश्चात महाराजजी ने गोवीनाथजी से हारवन जाने की अपनी इच्छा प्रकट की। इनके विचार को मुनकर पण्डिनजी व्याकुल होगए ग्रीर रुदन करने लगे। हाथ जोडकर विनीतभाव से कहा, "महाराजजी । मैं भाई का परित्याग कर सकता हू, लडकी के विवाह को म्यगित कर सकता हू, किन्तु ग्रापका वियोग मेरे लिए ग्रसहा है। मै ग्रापकी नाराजगी की कभी कल्पना भी नहीं कर सकता। ग्राप न जाइए। यही रहिए, में ग्रभी विवाह रोक देता हू।" महाराजजी ने इन्हें बहुत समभाया और कहा, "भाई-भाई मे किसी प्रकार का मनोमालिन्य नहीं होना चाहिए। आप सहोदर है। एक ही मकान में रहते है। ग्राप दोनो एक-दूसरे के सुख ग्रीर दुख के साथी हैं। ग्रन इस प्रकार की कोई वात करने की आवश्यकता नहीं। कन्या युवती है। कठिनाई में योग्य वर ग्रीर घर प्राप्त हुग्रा है, ग्रत विवाह स्थगित करने की भी कोई ग्रावश्यकता नहीं। हम तो साधु है। रमते राम है। कभी-कभी ग्रापके पास त्रा जाने है। हमारे लिए श्राप प्रपने सहोदर भाई से व्यवहार का परित्याग मत करे।

हमें इस वात की वडी लज्जा है कि इस वीस साल के सम्पर्क में मैं ग्राप लोगों के जीवन मे परिवर्तन न कर सका। ग्रत ग्रव मेरा यहा से चले जाना ही उचित है। ग्रव तक तो कभी यह नहीं हुम्रा कि म्रापने मेरी उपस्थिति में घर में मासाहार बनाया हो या म्रापने इस प्रकार का म्राहार कभी किया हो।" म्रागामी दिवस महाराजजी चलने के लिए तैयार होगए। सारा परिवार रुदन करने लगा। गोपीनाथजी वडे जोर-जोर से रोने लगे। रोते-रोते सिस्किया लेने लगे। श्रवकी वार महाराजजी इनके मुपनी वाग मे भी नहीं गए। हारवन जाकर प॰ दीनानाथजी की कोठी पर ठहरे। इस कोठी के पास ही कुछ ऊपर पहाड पर एक मुसलमान का मकान २० वर्ष के लिए किराए पर ने लिया। हारवन भील से एक छोटी-सी नहर निकलनी है। उसी के किनारे पर यह मकान स्रभी नया ही बनाया गया था। इसी समय इनके भक्त लाला भगवानदास, उनके पौत्र तथा पुत्रवधू आजावती आ गए। इनको इस किराए के मकान मे ठहरा दिया गया। त्राज्ञावती छोटी उमर मे ही विधवा होगई थी। इसकी महाराजजी के प्रति वडी श्रद्धा ग्रीर भिवत थी ग्रीर योग मे वडी निष्ठा थी। कई घण्टे नित्यप्रति ग्रभ्यास किया करती थी। हरिद्वार मे जब साधना-शिविर लगता था तो यह अपने पारि-वारिक सदस्यों के साथ ग्राया करती थी। यह परिवार दो मास तक महाराजजी का उपदेशामृत पान करके वापस चला गया । वात्रव्रह्मचारी लथ्मणज् योगीराजजी के परम मित्र थे। ये वडे विद्वान् सन्त थे। इन्होंने तीन मील की दूरी पर अपनी कोठी वनवा ली थी और इसी में निवास करते थे। इन दोनों में प्राय यध्यातम विज्ञान के विषय मे विचारविमर्श हुग्रा करता था। दोनो का परस्पर बहुत स्नेह था। दोनो एक ही पथ के पथिक थे। प० महानन्द, प० शिवजी गडयानी तथा प० राधाकृष्ण टिक्कू महाराजजी के ग्रनन्य भक्त थे। कई-कई दिन तक इनके उप-देशो को श्रवण किया करते थे। प० राधाकृष्ण प० गोपीनाथ के साले थे। हारवन याते समय महाराजजी प्राय इनके मकान पर ठहरा करते थे। ये इनसे वहुत प्यार करते थे। पण्डितजी ही इनके लिए ऊनी ग्रथवा पणमीने का कपडा खरीटकर दिया करते थे। महाराजजी ने इन्हें लाला देवीदासजी ग्रमृतसरवालों का काव्मीर के व्या-पार मे हिस्सेदार वनवा दिया था।

प० द्वारिकानाथजी को प्रसाद—दरवाग के पिडत द्वारिकानाथजी, केंगवन्ताथजी के लघुभाता थे। जब ये स्कूल में पढते थे तब महाराजजी के उपदेश श्रवण करने के लिए श्राया करते थे। दशम कक्षा पास करके इन्होंने ग्रव्ययन छोड दिया था। महाराजजी के सत्सग में प्राय श्राया करते थे। इनके श्रादेश से ही इन्होंने कृषि प्रशिक्षण केन्द्र पर जाकर दो साल तक कृषि विद्या पढी थी। एक दिन जब ये परीक्षा में सफलता लाभ करके इनके चरण स्पर्श करने ग्राए तो महाराजजी ने इन्हे १००) प्रसाद रूप में देकर ग्राशीर्वाद दिया ग्रीर कहा, "जाग्रो, इस रुपये से व्यापार प्रार्भ करो, सफलता लाभ करो, वढो, फूलो श्रीर फलो ।" महात्माग्रो के ग्राशीर्वाद सदैव 'सद्य फलानि' होते है। वे शीघ्र फलीभूत हो जाते हे। द्वारिकानाथ ने महाराजजी से ग्राशीर्वाद के रूप में प्राप्त १००) से व्यापार किया ग्रीर इसमें ६००) का लाभ हुग्रा। दूसरे वर्ष इस ६००) से ३०००) उपार्जन किया। धीरे-धीरे वीस-पच्चीस हजार रुपये की वार्षिक ग्राय होने लगी। महाराजजी की इस कृपा ग्रीर ग्राशीर्वाद

को वे कभी नहीं भूले। सदैव इनके ऋणी रहे श्रीर इनका गुण-गान करते रहते हैं। इस समय वे कई सेवो के बागों के स्वामी हैं। एक वडा विस्तृत सीड फार्म है। इनके पास लाखो की सम्पत्ति है। महाराजजी की सेवा मे प्रतिवर्ष ग्रपने वागो के मेवे ग्रीर फल भेजा करते है।

पहलगाव मे साधना शिविर--सितम्वर मास के प्रारम्भ मे श्री महाराजजी पहलगाव पवारे । श्री जयकृष्णजी नन्दा महकमा जगलात के वडे श्रफसर थे । महा-राजजी के वडे श्रद्धालु भक्त थे। इन्होने योगीराजजी से पहलगाव पवार कर योग प्रशिक्षण के लिए निवेदन किया था ग्रीर निवासादि की सव व्यवस्था का उत्तर-दायित्व ग्रपने ऊपर ले लिया था। जयकृष्णजी की घर्मपत्नी पजाव के प्रसिद्ध महात्मा हसराजजी की सुपुत्री थी। श्रमृतसर के लाला श्रीकृष्ण खन्ना महाराजजी के श्रन्त्य भक्तों में में थे। ये महाराजजी को १००) मासिक इनके व्यय के लिए भेजा करते थे। कोटली मीरपुर की श्रीमती भाग्यवन्ती महाराजजी की शिष्या थी। इस प्रकार से ये सव तथा श्रन्य कर्ड सज्जन सपरिवार इस योग प्रशिक्षण में सम्मिलित हुए। महाराजजी के निवास का प्रवन्य जगलात के महकमे के डाक-वगले मे किया गया था। महाराजजी प्रात चार से छ तक और सायकाल सात में साढे ब्राठ वजे तक ध्यानाभ्यास करवाते थे तथा प्रात काल ग्राठ से नी तक ग्रामन ग्रौर प्राणायाम सिखाते थे। पहिली श्रवतूवर तक यह कार्यक्रम चलता रहा। प्राय सभी श्रभ्यासियो की प्रगति सन्तोपप्रद थी ग्रीर सभी वडे सन्तुट थे।

श्रीनगर मे गुरुसहायमल की कोठी पर कथा--महाराजजी जब पहलगाव से वापस श्रीनगर पदारे तव अपने अनन्य भक्त लाला गुरुसहायमलजी की कोठी पर निवास किया। इनके सारे परिवार की महाराजजी के प्रति अनन्य श्रद्धा और भिवत थी। उनकी कोठी पर योगीराजजी नित्यप्रति सायकाल ३ वजे से ४ वजे तक कथा किया करते थे। इन दिनो महाराजजी के भक्त देवीदासजी तथा ग्रन्य कई भक्त ग्रमृतसर मे श्रीनगर ग्राए हुए थे। महाराजजी यहा १५ दिन ठहरे ग्रीर १५ दिन तक कथा की । सैकडो नर-नारियो ने इस कथा से लाभ उठाया ।

श्रमृतसर गमन--इसके पश्चात् महाराजजी देवीदासजी की मोटर गाडी में उनके साथ ग्रमृतमर पथारे। यहा पर वावू मुलखराज की कोठी पर नित्यप्रति इनकी कया होती थी। सभी भक्त श्रीर श्रध्यात्म में रुचि रखने वाले सैकडो नर-नारी इसमे सम्मिलित होते थे ग्रीर लाभ उठाते थे। यहा पर भी महाराजजी ने योग प्रशिक्षण का कार्यक्रम रखा था। प्रात साय दोनो समय योग साधना करवाते थे। एक मास तक यह कार्यक्रम चलता रहा। श्री महाराजजी ने भ्रमृतसर मे रहकर बहुत वर्षों तक तपय्चर्या ग्रीर योग-साधना की थी। यहा पर हजारों ही स्त्री-पुरुष इनके भक्त थे।

लाला श्रीकृष्ण को टैक्स से मुक्त करवाना—ग्रमृतसर मे एक दिन महाराजजी के परम् भक्त श्रीकृष्ण ने ग्राकर इनके चरण पकड लिए ग्रीर निवेदन किया, "मुफे इन्कम-टैक्स के अफसर बहुत तग कर रहे हैं। अन्यायपूर्ण ढग से मुक्त पर एक भारी रकम टैक्स की लगा दी गई है। आप मेरी रक्षा की जिए। आप ही मुक्ते इससे बचा सकते हैं। अपने शिष्य पर अन्याय होते हुए तथा उसे सकट मे पड़ा देखकर महाराजजी को बड़ी दया आई। अफसर के ऊपर महाराजजी ने अपने मनोबल का प्रभाव डाला ग्रीर उसने श्रीकृष्ण के पक्ष मे ग्रपना निर्णय दे दिया। इस प्रकार से ग्रपने भक्त को सकट से मुक्त किया। जब मुनीम हसता हुग्रा लालाजी के पाम ग्राया ग्रीर ग्रफसर के रुख की प्रश्नसा करने लगा ग्रीर उनके पक्ष मे फैसला देने की वात करने लगा तब उन्होंने कहा, "ग्ररे, फैसला देने वाले तो ऊपर छत पर समाधिस्थ होकर वैठे हैं। ग्राग्रो, उनके पास जाकर क्षमा-याचना करे। हमने ग्राज उनको बहुत कष्ट दिया है।" लालाजी, उनका मुनीम तथा ग्रन्य कार्यकर्ता सभी जाकर महाराजजी के चरणो मे पड गए। समाधि से ब्युत्थान होने पर मुनीम ने सारा समाचार महाराजजी में निवेदन किया। इस दिन से लालाजी की महाराजजी के प्रति श्रद्धा ग्रीर भिक्त ग्रीर भी ग्रिविक वढ गई ग्रीर वे इन्हें भगवान के तुल्य समभने लग गए।

हरिद्वार मे पातजलाश्रम मे काष्ठ मौन--एक मास तक अमृतसर मे वहा की तृषार्त जनेना को ग्रपनी ग्रध्यात्म-सुधा का पान कराकर श्री महाराजजी मोहनाश्रम पद्यार गए। मोहनाश्रम के पास ही स्वामी तेजानन्द का पातजलाश्रम है। यह अधिक एकान्त था, इसमें निवास करके एक साल का मीनव्रत करने का विचार किया। इस ग्राश्रम के सरक्षक स्वामी ग्रमरनाथजी थे। १० रु० मासिक किराए पर इमे ले लिया गया और महाराजजी के लिए फलादि लाने का कार्य भी उन्हीं के सुपूर्व कर दिया गया। योगीराजजी ने नमक, चीनी तथा अन्न का परित्याग कर दिया या। ये केवल ग्रमावस्या ग्रीर पूर्णिमा पर ही ग्रपना मीनव्रत खोलते थे। इन दिनो मलेरिया का वडा प्रकोप रहता था किन्तु लोगो ने इन्हे विश्वास दिला दिया था कि ग्रन्न, मीठा ग्रीर नमक न खाने वाले को मलेरिया ज्वर नहीं होता। एक वर्ष तक हरिद्वार मे रहकर ही इस व्रत को पूरा करने का निज्वय कर लिया, किन्तु स्वामी ग्रमरनाथजी को कुछ मास के लिए हरिद्वार से वाहर कही अन्यत्र कार्यवयात् जाना था अत वे महाराजजी की मौनकाल मे पूरी सेवा नहीं कर सकते थे। स्वामी विशुद्धानन्दजी की सम्मति थी कि एक वर्ष का मीन इस साल न करके आगामी साल किया जाए। इसालेए महाराजजी ने एक वर्ष का मीनव्रत स्थगित कर दिया और केवल ४ मास का काष्ठ मौनवत घारण किया। नियत समय पर मौनवत को समाप्त करके दो मास तक साधना शिविर लगाया । वहुत से अभ्यासी इसमे सम्मिलित हुए और प्राय सभी इससे लाभान्वित हुए। ज्येष्ठ मास मे गगोत्री जाने का विचार कर लिया।

#### गगोत्री निवास श्रीर अन्नक्षेत्र का शारम्भ

ज्येष्ठ मास मे गगोत्री के लिए प्रस्थान किया ग्रौर मसूरी होते हुए उत्तर-काशी पधारे। एक सप्ताह तक यही विराज कर फिर गगोत्री चले गए। इस समय महाराजजी के पास ग्रपने निजी व्यय के ग्रितिरक्त १४०० रु० दानार्थ थे। साधु-महात्माग्रो के हितार्थ इस धनराशि के व्यय करने के विषय में स्थानीय सन्तो से विचार-विनिमय करने के पश्चात् यह निश्चय किया गया कि एक ग्रन्नक्षेत्र खोला जाए। काली कम्वली वाला तथा पजावी क्षेत्र तीन मास चलने के पश्चात् वन्द हो जाते थे। इसके बाद लगभग डेढ-दो मास तक कोई भी ग्रन्नक्षेत्र यहा नहीं रहता। इससे वहुत से सन्तो को श्रावण मास में ही नीचे गर्मी में ही उतर जाना पड़ता है। ग्रनेक सन्त उत्तरकाशी जाकर रोगग्रस्त हो जाते हैं, ग्रत ग्रन्नक्षेत्र खोलना उपयुक्त समभा गया। सवकी सम्मित सुनने के पश्चात् महाराजजी ने कहा, "हमसे यह प्रवन्ध न हो सकेगा। हम तो केवल रुपया दे सकते हैं।" इस पर दयालमुनिजी ने तुरन्त सारी व्यवस्था का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया और कहा, "लगभग २५-३० सन्त भाजन करेगे। सारी याद्य-सामग्री प्रारम्भ में क्य कर ली जाएगी। जब दोनो क्षेत्र बन्द हो जाएगे तो सन्त-महात्मा स्वय ही मिलकर भोजन बना लिया करेगे। किसी सेवक की भी आवस्य कता न होगी। हममें से कई सन्त ऐसे हैं जो बड़ी प्रमन्तना से इस कार्य को करेंगे।" महाराजजी ने दयालमुनिजी की बात को सहर्ष स्वीकार कर लिया। आटा, चावल, दालें, घी, मनाले आदि सब सामान दयालजी ने खरीद कर रख लिया।

गगोत्री में कृटियास्रो का स्रत्यन्त स्रगाव था। महाराजजी के लिए दयालजी, गगामुनिजी, प्रह्मचारी प्रयोधानन्दजी ग्रीर रघुनायजी ने दो दिन मे ही भोजपत्र की कृटिया बनाकर नैयार कर दी। योगीराजजी की सेवा के लिए उत्तरकाशी का राम-गोविन्द नामक ब्राह्मण नियन था । यह उनके लिए भोजन बनाया करता था । गगोत्री नीनप्रधान प्रदेश है अन यहा पर दाल तीन-चार घण्टे मे गलती है, इसलिए यह प्रवम ही अवसर था जब महाराजजी ने भोजन बनाने के लिए सेवक साथ रखा था। अन्यया व रवय-पावी थे। अपना समस्त कार्य स्वय करते थे। पूर्णरूपेण स्वावलम्बी ये । महाराजजी के लिए भोजपत्र की कुटिया स्वामी प्रज्ञानाथजी के रथान पर बनाई गई थी वयोकि यह भूमि समतल थी। पास ही जानकीदास नामक एक वैरागी सन्त रहता या । यह अत्यन्त नेवापिय था । महाराजजी का सेवक यहा के शीत को सहन नही तर सता, बहुत बबरा गया ब्रीर बीमार भी होगया । उत्तरकाशी वापस जाने के लिए म्राग्रह जनने लगा। उसकी बीमारी का कारण यहा का शीत नही था। यह रात्रि हो ग्राने जिल भोजन नो बनाना नही था। धी ग्रीर चीनी चुरा कर पाया करता था। यहा पर हिगालय की ऊनाई १०१४० फीट है। ऊने पहाडो पर घी ग्रीर चीनी यदि ग्रधिक मात्रा में साए जाए तो पचते नहीं ग्रीर श्रनेक व्याधिया उत्पन्न हो जानी है। सन्त जानकीदासजी ने महाराजजी से निवेदन किया, "नौकर को उसकी वृत्ति देकर ग्राप विदा कर दीजिए। में श्रापकी सब सेवा करगा। ग्राप मुने सेवा ना अवसर प्रदान करें। में आपके सेवक की अपेक्षा भी आपको अधिक स्रोराम दृगा स्रोर पुछ दिनो मे स्राप सेवक को भूल जाएगे।" महाराजजी ने सेवक को बेतर दिगर विदा कर दिया और मन्त जानकीदास ने सब मेवा-कार्य सम्भाल निया। य प्रपनी घृनी पर ही जल गर्म करके महाराजजी को स्नानादि के लिए दे िया गरते थे और धनी पर ही बहुत स्वादिष्ट भोजन तैयार करके विलाते थे। इन्ही दिनो क्षेत्र भी महाराजजी की ग्रोर से चालू होगया ग्रीर तीन-चार सन्त प्रमात कार्य करने लग गए। स्वामी तपीवन, कृष्णाश्रम श्रीर प्रज्ञानायजी से महा-राजजी का विशेष परिचय था ग्रीर ये प्राय एक-दूसरे के स्थान पर परस्पर मिलने जुनने के लिए जाया करते थे। ये सभी वडे विद्वान् थे। डेढ मास तक क्षेत्र चला ग्रीर उसका व्यय ६०० रु० हुग्रा। श्री दयालजी ने महाराजजी से निवेदन किया कि यदि ३०० रु० प्रतिवर्ष दे दिया जाया करे तो प्रतिवर्ष डेढ महीने के लिए क्षेत्र चल सफता है। घी की कोई स्रावश्यकता नहीं है। केवल श्रन्त ही पर्याप्त रहेगा। इस बात को महाराजजी ने रवीकार कर लिया। जो सन्त क्षेत्र में भोजन नहीं करते थे उन्हें नकट रपया दे दिया गया।

धरालो मे महर्षि स्वामी दयानन्दजी की गुफा के दर्शन—क्षेत्र नमाप्त करके महाराजजी, जो सन्त उनके साथ जाना चाहते थे सवको लेकर घराली गए। मंक्रान्ति के अवसर पर यहा पर सेलकू नाम का वडा मेला हुआ करना है। यहा पर सन्तो की म्रनेक कुटियाए थी। यहा के क्षत्रिय वडे ग्रातिथ्य प्रिय है। सन्तो व महात्माग्रो, साधुम्रो स्रीर सन्यासियो का वडा ग्रातिथ्य करते हैं। यहा पर महाराजजी छ दिन तक विराज । ठाकुर नारायणसिंह इनके दर्शन करने के लिए श्राए श्रीर निवेदन किया, "महा-राजजी । हमारे गाव पर साधु-सन्तो की सदैव से वडी कृपा रही है। हमे उनकी सेवा श्रीर सत्सग का सीभाग्य प्राय मिलता रहता है। मेरे पिताजी मुनाया करने थे कि घराली से श्राधा मील की दूरी पर एक गुफा है जिसमे कई मान तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज विराजे थे। वे वडे विद्वान् नया प्रतिभासम्पन्न सन्यासी थे। वेदो के प्रकाण्ड पर्डित थे। नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे। महान् योगी थे। ब्रह्मनिष्ठ थे। तत्कालीन भारत के उद्घारक थे। वडे भारी समाज-सुघारक थे। उन्होने भारत के धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक पतन के मुवार का प्रयत्न किया ग्रीर ग्रपने कार्यक्रम को स्थायी रूप देने के लिए आर्यसमाज की न्यापना की। मेरे पिनाजी इनके लिए दोपहर के समय भोजन और रात्रि के समय दूध ने जाया करते थे। इनकी स्वामीजी महाराज के प्रति वडी श्रद्धा और भिवन थी।" महाराजजी ने श्रद्धापूर्वक स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज की गुफा के दर्शन किए। कई वर्ष की बात है, एक बार घराली मे वडे जोर की वाढ ग्राई थी ग्रीर ग्राम के एक वडे हिम्से तथा कुटियाग्री को वहाकर लेगई थी। तबसे सन्तो का निवास यहा छट-मा गया है। इसके पूर्व यहा के निवासी सुखी और सम्पन्न थे। सन्तो-महात्माओं का आशीर्वाद सदैव मिनतों रहता था। यहा के कुछ लोगो ने मिलकर महाराजजी से एक अवधून मन्त के चरित्र के सम्बन्ध में कुछ शिकायत की और कहा कि, "ग्राप इन मन्नजी की मदाचार के नियमी का पालन करने के लिए समभा दे और कह दें कि ये ग्राम में भिक्षा के लिए न जाया करें। हम स्वय इनके लिए भोजन इनके निवास स्थान पर भिजवा दिया करेंगे।" श्री महाराजजी ने सन्तजी की वहुत भत्मेंना की ग्रार उन्हें सन्यासी के कत्तंत्र्य का दिग्दर्शन करवाया ।

सन्तो का न्यायालय—महाराजजी ने इस अवधून को दयालजी और ब्रह्मचारी महावीर के द्वारा अपने पास बुलाया। ये स्वय एक ऊचे चवूनरे पर बैठे थे। जब उनको बुलाया गया तो सैकडो की सख्या में नर-नारी तथा बच्चे उनको देगने के लिए खड़े होगए। वे सब चिल्लाकर कहने लगे, "यहा पर योगियों का एक न्यायालय खुला है।" महाराजजी ने चवूतरे पर ऊचे बैठे हुए अपराधी सन्त से पूछा कि तुमने ग्राम में अमुक लड़की से अनुचित व्यवहार क्यों किया था? अवधूत ने कहा, "में तो इमें अपनी माना समभता हू और जो कुछ किया इसी भावना से किया था।" महाराजजी ने जोर से चिल्लाकर कहा, "यदि तुममें उसके प्रति मातृ-भावना थी तो तुम्हे उसके चरण पकड़ने चाहिए थे। तुम्हारे कुकमें से यह सिद्ध होता है कि तुम दुराचारी हो। तुम साधु-समाज को बदनाम कर रहे हो। तुम साधुओं में रहने के योग्य नहीं हो। तुम्ह अपने आक्षम की भी लाज नहीं है।" ब्रह्मचारी महावीर एक बहुत वड़ा डण्डा उठा लाए और इसमें उस अपराधी अवधूत की खूब मरम्मत की। इस मार-पीट के पश्चात् उसके हाथ में

गगाजल देकर प्रतिज्ञा करवाई कि ग्राज से वह कभी किसी के साथ दुर्व्यवहार नहीं करेगा। सब देवियों को प्रयनी माता, पुत्री ग्रीर वहिन समभेगा।

घराली में सेलकू के मेले पर ग्रामवासी दिल्लये जलाकर सब इकट्ठे होकर मिदर में दर्जन करने जाते हैं, गगाजल पान करते हैं श्रीर दर्जन श्रीर पूजा करके ग्राम में ग्राते हैं श्रीर एक मिदर के सामने गोलाकार बनाकर नृत्य करते हैं। गीत गाते हैं। नृत्य के साय-साथ टोल तथा बाजा भी बजाया जाता है। ग्राम के सभी लोग इसमें भाग निते हैं श्रीर दूर-दूर में भी लोग इसे देखने के लिए ग्राते हैं।

श्रमृतसर में योग प्रशिक्षण—महाराजजी श्रपनी सन्त-मण्डली के साथ उत्तर-काशी पथार गए श्रीर वहा पर कुछ दिवस तक ठहर कर हिरद्वार के लिए प्रस्थान कर दिया। यहा पर उनके परम भवन तथा शिष्य गुरुचरणदत्त के कई पत्र श्राए कि श्राप श्रमृतसर पथारे। यहां के मय लोग तो वहां साधना के लिए जा नहीं सकते। उनीं ए यहां पर भी दों मास का गमय साधनाभ्याम का रखने की छपा की जाए। निर्माणिक का सब प्रवन्य मुललराजजी की कोठी पर हो जाएगा। महाराजजी ने उनके श्रमुरोध मीर ग्रायह के कारण श्रमृतसर पथारना स्वीकार कर लिया। वहां पधार कर महाराजजी ने पान ४ बजे से ६ बजे तक तथा साय ७ से ६ बजे तक का गमय योग प्रशिक्षण के लिए नियन किया श्रीर श्रमराह्म में तीन से साढे चार बजे तक यथा हुआ करनी थी। उन कथा से श्रमृतसर की जनना ने बडा लाभ उठाया श्रीर श्रभानियों की नागना में प्रगति भी ऊची रही।

हिन्दार में निवास तथा मीन व्रत—दो मास के पञ्चात् महाराजजी श्रमृतसर में यापन हिन्दार पयार गए। यहा पर मोहनाश्रम में निवास किया। ४ मास का मीन यन घारण तिया और उनकी समाप्ति पर दो मास के लिए योग प्रशिक्षण किया।

गगोती गमन--हिरहार मे योग प्रशिक्षण के उपरान्त महाराजजी उत्तरकाशी होते हुए गरीवी पवारे। वहा पर स्वामी प्रज्ञानायजी की कुटिया मे निवास किया। ये कार्रमीर चले गए और वहा पर हारवन में महाराजजी की कुटिया में ठहरे। इन्होंने प्रजानायणी को ५० क० काम्मीर जाने के लिए दिए और इन्होंने वहा के लिए प्रस्थान एर दिया। प्रज्ञानायजी की कुटिया में पटमल बहुत ये प्रत महाराजजी को ग्रानं लिए पुन भोजपत की कृटिया बनवानी पटी। दयालजी ने दो चार दिन मे ही वनवाकर नैयार करवा दी। योगीराजजी ने एक बार स्वामी कृष्णाश्रमजी श्रवधूत से यटे दु मो होकर कहा, "ग्राप हिमालय निवासी बहुत बड़े महात्मा है। ग्रापका सेवार्थ श्रुपने पास एक शिष्या को रसना उचित-सा प्रतीत नही होता। श्राप त्यागी तथा वैरागी अपवृत है। आपका आचरण वटा शुद्ध और पवित्र है। उसमे कोई सन्देह नही है। ग्रापकी इसके प्रति बड़ी शुद्ध भावना है ग्रीर ग्राप उसे पुत्रीवत् ही समभते है। किन्तु यह नोक-मर्यादा ग्रीर शास्त्र के विरुद्ध है। लोकविरुद्ध ग्राचरण करने से व्यर्थ में ही अपवाद होता है। समाज पर उसका अच्छा प्रभाव नही पटता है। यदि आपको नेवा के लिए ही उसकी आवश्यकता है तो मे आपको एक नौकर रख देता हू। उसका वृतन भी में ही प्रतिमाम चुका दिया करेगा। यदि यह आपको पसन्द न हो तो में आपकी सवा के तिए एक साबु नियन कर देना हु।" उस पर भगवत्स्वरूपा देवी जो स्वामी गृणाश्रमजी के पास रहती थी योगी, "बदि महाराजजी मुक्ते अपनी सेवा से विचत

करेंगे तो मे गगा मे डूवकर मर जाऊगी।" इस पर अवधूतजी ने महाराजजी को लिख कर समभाया (क्योंकि यह सदा से मीन ही रहते थे) कि इसको पहिले भी कई सन्त-महात्याग्रो ने समभाया है। ब्रह्मचारी शहनशाह ने इसको यहा से हटाने के लिए कई दिन की भूख हडताल भी की थी किन्तु यह देवी तव भी न मानी थी। ग्रपनी जिद पर ग्रडी रही थी। ग्रयने माथे पर जोर से हाथ मारकर इन्होने पुन कहा कि "मेरा कर्म-भोग ही ऐसा है। तव ही तो इस प्रकार का साधन वन गया। अव तो मुभे ऐसा मालूम होता है कि या तो यह मरे तब मेरा पीछा छूटे या मैं मरू तव काम वने। मुभे सेवा की जरूरत है। विना वेतन के यह सेवक मिला हुआ है। आप भी इसे ऐसा ही समके।" महाराजजी इन सब वातों को सुनकर मौन होगए। कर भी क्या सकते थे। समभाना मात्र ही इनका कर्त्तव्य था। स्वामी प्रज्ञानाथ ग्रीर स्वामी तपीवन ग्रच्छे विद्वान् तपस्वी थे। त्यागी ग्रौर वैराग्यवान थे। इन्होने कई ग्रथो की रचना भी की थी। गगोत्री मे अन्य भी कई उत्तम सन्त थे। अव्यात्मज्ञान प्राप्ति श्रीर सिद्धि के लिए हिमालय से श्रें उठ ग्रौर कोई स्थान नहीं है, ग्रत श्री महाराजजी ने ग्रव हिमालय मे निवास करने का निश्चय कर लिया। गगोत्री निवास में कई प्रकार की कठिनाइया है। फल तथा ताजी सन्जी यहा प्राप्य नही है। केवल ग्राटा, दाल, चावल, घुतादि ही मिलते हैं। वाल बढ़ जाए तो यहा नाई नही श्रीर कपड़े फट जाएँ तो दर्जी नही, जूता फट जाए तो मोची नहीं, वीमार हो जाए तो डाक्टर नहीं, यहा तक कि यदि मर जाए तो कफन भी नहीं। डाकखाना ग्रीर तारघर नहीं। यदि ५० रु० से ग्रधिक कभी मनिम्रार्डर म्राए तो उसे लेने के लिए यहा से ५६ मील दूर उत्तरकाशी जाना पडता था। १४-२० दिन मे यहा डाक ग्राती थी। यहा की इस प्रकार की विविध कठिनाइयो का ध्यान करके वद्रीनाथ निवास करने का विचार हुन्ना क्योकि वहा पर सभी प्रकार की सुविधाए थी।

गोमुख निवास-श्री महाराजजी ने दयालजी ग्रीर एक नवयुवक सन्त परमा-नन्द अवयूत को साथ लेकर गोमुख के लिए प्रस्थान किया। १५-२० दिन के लिए खाद्य-सामग्री एक कुली से उठवाकर चल दिए। गोमुख गगोत्री से केवल १०-१२ मील की दूरी पर हैं। एक दिन चीडवासा घर्मजाला में ठहरे। दूसरे दिन गोमुख से इधर एक गुफा मे श्रासन लगाया। यहा पर जलाने की लकडी वडी श्रासानी से मिल जाती है। जलस्रोत भी समीय है। भ्रमण करते-करते गोमुख स्नानार्थ भी चले जाते थे। पजाव कागडा के गद्दी लोग इघर वकरिया चराने ग्राया करते थे इसलिए इनसे दूध ग्रासानी से मिल जाया करता था। ये लोग दूध के दाम इनसे नहीं लेते थे। श्रद्धा श्रीर भित्तपूर्वक विना दाम ही ये लोग जितना चाहते उतना दूध ले लिया करते थे। तीनो नित्यप्रति गोमुख स्नान के लिए जाते थे। जब कभी वर्षा होती थी तो स्नान स्रोत पर ही कर लेते थे। गगाजल प्रत्यन्त जीतल था। गोता लगाते समय गरीर में पीड़ा होने लगती थी। सूर्य मे तपी हुई रेत मे लेटने से ग्रथवा गर्म रेत गरीर पर डालने से यह दर्द मिट जाता था। यहां पर गगाजी के ऊपर लगभग १०० फीट मोटी वर्फ की तह जमी हुई थी। ग्रनेक वर्षों से जमकर यह वर्फ इतनी कठोर होगई थी कि कुरहाडी से काटने पर भी नहीं कटती थी। वर्फ की यह तह कई फर्लाग चौडी थी। इसका विस्तार एक ग्रोर वद्रीनाथ तथा दूसरी ग्रोर केदारनाथ तक था।

वद्रीनाथ यहा से २५ मील है ग्रीर केदारनाथ २० मील है। यह एक वडा भारी ग्लेशियर है। बद्रीनाथ ग्रीर केदारनाथ के बीच बीस हजार फीट से लकर तेईस हजार फीट तक के वहे विद्याल पर्वत हैं। ये सभी वर्फ से ग्राच्छादित हैं। गोमुख के पास ही चीपम्भा नामक एक विज्ञाल पर्वत है। एक ग्रीर शिवलिंग पर्वत है जिसकी गोलाई शिवलिंग के समान है। यह सदा हिमाच्छादित रहता है। जिन्होंने कभी गोमुख की यात्रा नहीं की उन लोगों का ऐसा श्रमुमान होता है कि गोमुख पत्थर का बना हुग्रा होगा जिनके मुह में से गगाजी निकल रही होगी। यह घारणा भ्रममूलक है। गोमुग्र से उननी मोटी जल की घारा निकलती है कि यदि हाथी भी उसको पार करना चाहे तो नुरन्त उसके प्रवल वेग में वह जाए। वर्फ के पहाड के नीचे से गगा निकलती है। महाराजजी १५ दियम तक गोमुग में निवास करके लीट ग्राए। गगोत्री में ग्रव ग्रत्यिक शीन होगया था ग्रन विजयादशमी के पञ्चात् उत्तरकाशी प्रधार गए।

हरिहार मे पानजलाश्रम मे एक वर्ष का मीन व्रत--उत्तरकाशी मे पजावी क्षेत्र मे एक मास तक निवास किया। इसके पत्चात् हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया। वहा पर मोत्न ग्राश्रम में ठहरे। यहा पर स्वामी विशुद्धानन्दजी का ग्राश्रम के प्रविका के नाथ कुँठ भगटा-ना चल रहा था । उससे ग्राश्रम का वातावरण कुछ विक्षुच्ध-सा हो रहा था। उनिलए महाराजजी पातजलाश्रम मे चले गए श्रीर एक वर्ष तक मौन यन रमने या निरुचय कर लिया। यमरनायजी को १० ६० मासिक देकर उनके हारा फत, सब्जी, दूध यादि वाजार से मगवाने की व्यवस्था कर ली। श्रमरनाथजी न्यामी नेजनायजी योगी के पोते चेले थे। ग्रयीन् वे जिप्य के शिप्य थे। ग्राश्रम की सब व्यवस्था उन्हीं के हाथ में थी। महाराजजी ने नमक, मीठा, ग्रन्नादि सब त्याग दिया या। केवल फल, सब्जी और दूब ही लेते थे। उन्होंने कार्तिक पूर्णिमा को ब्रत प्रारभ िया। एर माम तक गुविधानुसार मीनव्रत, नमक, चीनी तथा ब्रन्न के विना भोजन ठीर-ठाक चनना रहा किना उसके पश्चात् हृदय मे कुछ वेदना-सी रहने लगी। कई उपचार किए गए किन्तु दर्दे में किसी प्रकार भी कर्मी नहीं हुई। ग्योरह मास तक हन्पीडा बराबर कष्ट देती रही। उसका कारण नमक श्रीर चीनी न खाना था। जय उन्होंने साना प्रारम्भ किया तो दो-तीन दिन में ही दर्द जाता रहा । इसके लिए कीई उपचार नहीं किया गया था। महाराजजी नित्यप्रति सायकाल को ५ वजे के पञ्चात् गगा के किनारे सप्तसरोवर की छोर अमणार्थ जाया करते थे।

ग्वामी ग्रमरनाथजी ग्रिशिक्षित थे। उनका स्वभाव कोघी ग्रीर चिडचिडा था। लोभी भी थे। महाराजजी श्रपने काम के लिए १० ६० मासिक तो इन्हें देते ही थे। उसमें वृद्धि करने के लिए यह वार-वार इन्हें तग करते थे। कभी-कभी फल श्रीर सर्व्जी ठीक न लाते थे। कभी-कभी दूध में गडबड कर देते थे। महाराजजी ने उन्हें कई वार समस्ताया कि व्रत की समाष्ति पर कपए वढा दिए जाएगे क्योंकि उस समय उनके पास रूपया कम था। उनको महाराजजी की वात पर विश्वास नहीं होता था। ये उनसे बडे परेशान से होगए थे श्रम मोहन श्राश्रम में निवास के लिए विचार कर रहे थे।

विधि का विधान—उन्ही दिनो चोरो का गिरोह यात्रियो के रूप मे पातजला-त्रम मे आफर ठहर गया। उनमे ५-६ युवक तथा एक स्त्री थी। युवक २५ से ३५ साल की आयु के होगे। ये सभी वडे वलवान थे। गरीर सब का गठा हुआ था और ये नित्य कसरत किया करते थे। युवती की आयु लगभग ३५ वर्ष की होगी। यह गीर वर्ण थी। गरीर सुडौल था। वडी फुर्तीली थी ग्रीर सलवार पहनती थी। इन सव ने स्वामी अमरनाथजी को अपना गुरु वना लिया। स्वामीजी को अपने साथ ही भोजन करवाने लगे। महाराजजी जब भ्रमणार्थ जाते थे तो इनमें से एक-दो इनके पीछे-पीछे जाते थे। मीनवत था इसलिए महाराराजजी ग्रपना मुह ढक कर वाहर जाया करते थे। किसी को देखते न थे। एक घण्टा तक सैर करके लीट आते थे। इन लोगो ने महाराजजी के वोलने के दिन का पता स्वामीजी से लगा लिया था। चाल-ढाल, रहन-सहन तथा व्यवहार से यह पता चलता था कि वह स्त्री इन सवका नेतृत्व कर रही हो। ये सभी उसके आदेश का पालन करते थे। महाराजजी का कमरा दूसरी मजिल पर था ग्रीर भ्रमरनायजी इनसे कुछ थोडी-सी दूर रहते थे। जिवरात्रि के दिन इन चोरो ने दही और पराठे खाए। ग्रमरनाथजी के दही में इन्होने कोई ऐसी चीज मिला दी जिससे उन्हें खाते ही नीद ग्राने लगी श्रीर श्रपने कमरे मे जाकर सो गए। इनमे से एक श्रपने को इनका वडा भक्त दर्जाना था। वह इनके कमरे में ही सोया करता था। ग्रमर्नाथजी नने में दो दिन तक सोते ही रहे। इन चोरो ने शिवरात्रि की रात्रि में लालटैन जलाकर इनके कमरो के ताले तोडे और लगभग तीन हजार का सामान चुरा कर ले गए। महाराजजी ने समभा कि लालटैने जल रही है, ये लोग शिवरात्रि का उत्सव मना रहे हैं, इसीलिए ग्राज ये सोए नहीं हैं। महाराजजी ने यज्ञादि करके दूसरे दिन वृत की समाप्ति की ग्रीर ग्रमरनाथजी से मिलने के लिए गए। ये नीद मे चारपाई से गिर पड़े होगे ग्रत जमीन पर ही मो रहे थे। इन्होने स्वामीजी को जोर से भक्तभोरा, तव कही ये होश मे ग्राए। महा-राजजी ने इनसे पूछा, "ग्रापको क्या होगया है ? ग्राप ग्रभी तक निद्राभिभूत है। ग्रापके सामने के कमरे में सारी रात लालटेन जलती रही है। ग्रापके भक्त सब कहा चले गए? कही दिखाई नहीं देते। ग्रापके सारे दरवाजे खुले पड़े हैं। ग्रापके भक्त उनकी गति-विधि से अच्छे आदमी नहीं मालूम होते थे। जब मैं भ्रमण के लिए जाता था तव उनमें से कोई न कोई मेरे पीछे लग जाया करता था। उनमें से एक युवक फल लेकर ऊपर चढा तो मेरे कमरे मे इधर-उधर भाक रहा था। ग्राप उठो ग्रीर देखो, ग्रापका सामान तथा कपडे सव इतस्तत विखरे पडे हैं। मैं तो यह समभना रहा कि ग्राप शिवरात्रि का जागरण कर रहे है।" ग्रमरनाथजी वडी कठिनाई से ग्राखे मसलते हुए उठे और जब अपना सामान उन्हें नही दिखाई दिया तो वेहोग होकर घडाम से भूमि पर गिर गए। उनके मुह पर जल के छीटे मार कर जैसे-तैसे उन्हे होश मे लाया गया। महाराजजी के चरण पकडकर उन्होंने कहा, "ग्रापसे रुपये ऐठने के लिए मैंने श्रापको वहुत सताया श्रीर दु ख दिया। श्राप श्रेष्ठ कार्य मे लगे हुए थे। परमात्मा की भिकत में निरत थे। मैं पापात्मा ग्रापको व्यर्थ ही परेगान करता रहा। यह उसीका दण्ड है। वे मुभे अपना गुरु वनाकर मेरा सव कुछ लूट कर ले गए।" महाराजजी ने कहा, "गुरु की सम्पत्ति पर तो जिज्यों का अधिकार होता ही है। वे तो चोर थे। ग्रापका सामान चुराकर ले गए। ग्रापने सोचे-विचारे विना ही उन्हें ग्रपना शिष्य वना लिया। गुरु-मत्र दे दिया तव तो वे ग्रापकी सम्पत्ति के ग्रिधिकारी वनकर ही ग्रापका सामान लें गए। जिस प्रकार ग्राप ग्रपने गुरु तथा दादा-गुरु की सम्पत्ति के मालिक

वने वैठे हैं इसी प्रकार से वे भी अपने गुरु का सामान ले गए। क्या आपको यह नीति वचन स्मरण नहीं कि 'ग्रज्ञातकुलगीलस्य वासो देयो न कस्यचित्।' ग्रव ग्राप उठ कर पता लगात्रो कि श्रापका क्या-क्या सामान वे चीर चुरा कर ले गए है।" सब कुछ देखकर ग्रमरनाथजी को पता चला कि लगभग चार हजार की चोरी हुई है। इन चोरो ने मदिर की मूर्ति के सोने तथा चादी के ग्राभूपण ग्रीर वर्तनादि भी चुरा लिए थे। ये लीग सभी कुछ चुरा कर ले गए। श्रमरनायजी को इसका वडा धक्का लगा ग्रीर उनकी जवान सूखने लगी तथा सिर मे चक्कर ग्राने लगे। महाराजजी ने इन्हें गर्म दूध में घृत डालकर पिलाया ग्रीर लिटा दिया ग्रीर उनको ५० रु० ग्रपने लिए ग्रावश्यक सामान खरीदने के लिए दिए ग्रार ग्रमावस्या की रात्रि के १० वजे से मौन धारण कर लिया। अब अमरनाथजी ने महाराजजी को तग करना छोड दिया ग्रीर भिवतभाव से उनकी सेवा करने लग गए। ग्रव महाराजजी का मीन वृत निर्विष्नतापूर्वक चलने लगा। ग्रीष्म ऋतु के ग्रागमन पर महाराजजी ने नीचे की मजिल में रहेना प्रारंभ कर दिया। यह मकान वहुत जीर्ण-जीर्ण सा था, इसलिए इसमें विच्छू वहुत थे। ग्रमरनायजी भी पुन पूर्ववत् ही परेशान करने लग गए थे। ग्रत श्रव ये मोहन याथम मे चले गए। मूर्ख मित्र की ग्रेपेक्षा विद्वान् गत्रु कही ग्रधिक ग्रच्छा है। ग्रमरनाथजी भी ऐसे मूर्खों में से थे। ग्राब्विन पूर्णिमा को महाराजजी भी मोहन ग्राश्रम पथारे ग्रीर वहाँ जाकर मलेरिया ज्वर से पीडित होगए। प्रतिदिन १०४-१०५ डिग्री ज्वर हो जाता था। इतने दुर्वल होगए कि ग्रपने लिए दूध भी गर्म नही कर सकते थे। नौकर ही दूध गर्म करके उनके कमरे मे रख जाता था। आश्रम के प्रवधक स्वामी सच्चिदानन्दंजी ने महाराजजी को ज्वरपीडित देखकर तुरन्त होम्यो-पैथिक डाक्टर को बुलाया ग्रीर ऐसी ग्रीपिंघ देने के लिए कहा जिससे इनका ज्वर शीघ्र उतर जाए ग्रीर इनके मीन व्रत मे किसी प्रकार का विष्न उपस्थित न हो। डाक्टर ने तेज दवाई देकर ज्वर तो उतार दिया किन्तु सारे गरीर मे खुजली चलने लगी। १३ दिन तक मलेरिये से पीडित रहे और ग्रव खुजली ने ग्रा घरा। इसकी वेदना ज्वर से भी ग्रधिक थी। डाक्टर के उपचार से यह भी ठीक होगई किन्तु ज्वर पुन ग्राने लगा। जव जबर उनरे तो पुजली होने लग जाती थी ग्रीर जब खुजली मिट जाती थी तो ज्वर घेर लेता था। इसी प्रकार १५ दिन तक कष्ट पाते रहे। लगभग डेढ महीने तक ज्वर रहा । शरीर शक्तिहीन तथा दुर्वल होगया । जैसे-तैसे मौन का एक वर्ष समाप्त हुग्रा। मार्गशीर्प की पूर्णिमा को व्रत की समाप्ति की। जब लाला शिवसहाय-मलजी की पुत्री गीरा देवी को इनकी वीमारी का पता चला तो वह इनकी सेवा के लिए ग्रा गई। लगभग २३ वर्ष तक गौरा देवी के पिताजी ने महाराजजी के व्यय का भार वहन किया था इसलिए ये इन्हे अपनी वहिन के समान ही समभते थे। दोनो मे परस्पर विहन भाई जैसा ही प्रेम था। गौरा देवी ने महाराजजी से ग्रमृतसर चलने श्रीर वही पर मीन की समाप्ति-रूप यज्ञ ग्रादि करने के लिए वहुत ग्राग्रह किया ग्रत ग्रम्तसर पद्यार गए भ्रीर वही पर यज्ञ करने का निश्चय कर लिया। वम्बई वाले तुर्लंसीरामजी ने ५०० रुपया यज्ञार्थ भेज दिया था ग्रीर कुछ रुपया महाराजजी के पास इसके लिए था। ये अमृतसर् में मुल्खराजजी की कोठी पर विराजे। लाला शिवसहायमलजी अपने स्वर्गवास होने से पूर्व ही अपनी वसीयत मे, जो उन्होने अपनी पुत्री गीरा देवी के हक मे की थी, लिख गए थे कि महाराजजी को गत २३ वर्ष से जो

व्यय के लिए रुपया दिया जा रहा है वह आजीवन नियमानुसार इन्हें मिलता रहे। गौरा देवी वरावर अपने पिता की आज्ञा और वसीयत के अनुसार रुपया देती रही किन्तु महाराजजी ने गौरा देवी के पित के स्वर्गवास होने के कारण यह रुपया लेना बन्द कर दिया था। लाला श्रीकृष्ण खन्ना ने अब २०० रु० मासिक इन्हें देना प्रारम्भ कर दिया किन्तु महाराजजी ने केवल १०० रु० मासिक लेना ही स्वीकार किया।

श्री महाराजजी ने व्रत समाप्ति के उपलक्ष में एक वृहद् यज्ञ किया श्रांर इसकी समाप्ति पर एक वहुत वडा भण्डारा किया। यह उत्सव वडी धूमवाम से मनाया गया। यज्ञ के पश्चात् दो मास के लिए सत्सग श्रीर योगाभ्यास करवाया गया। महाराजजी इसके वाद पुन हरिद्वार पधारे श्रीर मोहन श्राश्रम में निवास किया। वहा पर योग-साधना का शिविर लगाया गया। वहुत से श्रभ्यासी इसमें सिम्मिलित हुए श्रीर लाभ उठाया। महाराजजी कई वर्ष पूर्व हिमालय-निवास का निश्चय कर चुके थे। गगोत्री श्रीर वद्रीनाथ में से कौन-सा स्थान उत्तम रहेगा श्रभी इसका निश्चय नहीं हो सका था। गगोत्री में तो उन्होंने कई वर्ष तक निवाम किया था। वद्रीनाथ भी गए तो कई वार थे किन्तु यात्रा के उद्देश्य से गए थे, वहा रहने के उद्देश्य से नहीं, ग्रत ग्रव वहा निवास करने की दृष्टि से उसे देखने के लिए जाना चाहते थे।

#### बद्रीनाथ मे पाच मास तक निवास

नरोत्तमसिंह सेवक को साथ लेकर महाराजजी हरिद्वार होते हुए वद्रीनाथ पधारे। वहा पर पजावी क्षेत्र मे ठहरे। यह स्थान ग्रलखनन्दा के किनारे पर था श्रीर एकान्त तथा शान्त था। पण्डित जगतरामजी, जो पहले उत्तरकाशी के क्षेत्र के मैनेजर थे, म्राजकल वद्रीनाथ के पजावी क्षेत्र के मैनेजर थे। महाराजजी के वटे भक्त थे ग्रत इनके लिए सभी प्रकार की सुविघा कर दी थी। महाराजजी ग्रपना ग्रभ्यासादि का कार्यकम वनाकर यहा ग्रानन्दपूर्वक रहने लगे। इन्ही दिनो स्वामी दयालमुनि अपने ५-६ सन्तो को साथ लेकर गोमुख से बद्रीनाथ आ गए। गोमुख से बद्रीनाथ श्राने का मार्ग वडा दुर्गम है। वीस हजार फीट की ऊचाई से ग्राना पडता है। इनके दो-तीन साथियो को वर्फ की चमक के कारण दीखना बन्द होगया था। इनके साथ ब्रह्मचारी महावीर, सन्त गुरुदेवदास, अवधूत परमानन्द, स्वामी कैलाजानन्द, ब्रह्मचारी प्रवोधानन्द श्रौर गगामुनि थे। दलीपसिह नामक कुली भी साथ था। ये सभी गगीत्री से आए थे और सभी विरक्त थे। सर्वप्रथम ये ही विरक्त साधु इस मार्ग से आए थे। यह इन्ही की खोज थी। इनके पश्चात् तो यह मार्ग जुल-सा गया और अन्य यात्री भी इसी मार्ग से आने लग गए थे। सेठ तुलसीरामजी ने साधु-सन्यासियो के ऊपर ग्रावश्यकतानुसार व्यय करने के लिए महाराजजी के पास १५०० रु० भेजे। इन्होने जगतरामजी को बुलाकर कहा, "सायकाल ५ वजे बद्रीनाथ के सब साधुग्रो को चाय-पान करवा दिया करो, जो व्यय होगा मै चुका दिया करुगा। जब पजाबी क्षेत्र बन्द हो जाएगा तव सवको भोजन भी करवा दिया करना, इसका व्यय भी मैं दूगा।" चार मास तक चाय का क्षेत्र चला ग्रौर दो मास तक ग्रन्न का। सेठजी को इससे सूचित कर दिया गया। इस पर इन्होने महाराजजी को लिखा कि ग्रावश्यकता-नुसार यदि ग्रधिक रुपया चाहिए तो लिखने पर तुरन्त भेज दिया जाया करेगा। ये

मेठ महाराजजी के अनन्य भक्त थे श्रीर इनके प्रति उनकी श्रदूट श्रद्धा थी, इसीलिए वडी उदारता से इन्हे रुपये भेजते थे। इनका तथा इनकी धर्मपत्नी का यह विश्वास होगया या कि वे महाराजजो की कृपा से ही ऐश्वर्य का उपभोग कर रहे हैं। जो कुछ उनके पास है सब उन्ही की कृपा के फलस्वरूप है । सेठजी इन्हें ग्रपना गुरु मानते थे ग्रीर दान-पुण्य के निए तथा उनके निजी खर्च के लिए वडी उदारता से धन देते थे। सेठजी के परिवार मे राघास्वामियो का ग्राना-जाना प्रारम्भ होगया था। इनके दो लडके उनके जिप्य भी वन गए थे। इनकी लडकी राधास्वामी के निष्यों के घर न्याही गई थी। यह अब नक आपको गुरु मानती थी किन्तु अब उसने भी राधास्वामी मत की दीक्षा ने ली यो। वे कहते है कि गुरु के बिना मनुष्य की सद्गति नही हो सकती। सेठजी ने कहा "कि अब मुक्ते और मेरी पत्नी को भी प्रभावित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। हमारा नारा परिवार सनातनधर्मावलम्बी था किन्तु श्रव वह बीरे-धीरे राधास्वामी मत में प्रविष्ट होता जा रहा है। जब तक ग्राप मुक्ते ग्रौर मेरी पतनी को विधिवत् मत्र दीता देकर जिप्य नहीं बना लेगे तब तक मेरा कल्याण नहीं हो सकता। यदि ग्राप मुक्त पर कृपा नहीं करोगे तो मुक्ते ये लोग बलपूर्वक अपना शिष्य बना लेगे।" महा-राजजी ने उन्हें मूनिन कर दियाँ कि हमारे हरिद्वार ग्राने पर ग्रापकी इच्छा की पूर्ति कर दी जाएगी। उन्हें गायती पुरदचरण करने की ग्राज्ञा दी। दीक्षा से पूर्व यह ग्राव-क्यक है उसके साथ ही कुछ ध्यान-साघना भी करनी होगी। दीवाली पर हमारा विचार विशेष मौनव्रत धारण करने ग्रीर ध्यान का ग्रभ्यास करने का है। इस व्रत ने पूर्व ग्राप हमे मिलना, ग्रापको मत्रदीक्षा दे दी जाएगी। वैसाखी पर ग्रापको दीक्षा दे दृगा । उससे एक सप्ताह पूर्व ग्राप ग्रा जाना । इस ग्रवसर पर ग्रापको विशेष वत, नियम, नयमादि करना होगा। मानाजी को भी साथ ने त्राना। इस परिवार का महाराजनी पर बडा विष्वाम श्रीर भरोसा था। सेठ तुलसीरामजी का जन्म एक माघारण से परिवार में हुम्रा था म्रीर उन्नति करते-करते ये म्राज करोड़ी में खेल रहे हैं। यरे ऐव्वयंशाली नथा सम्पन्न है। खूब कारोबार चल रहा है। यह सब महा-राजजी की कृपा का ही परिणाम है। ऐसा उनका विश्वास था।

# पातजल श्राश्रम मे निवास

महाराजजी दशहरा तक बद्दीनाथ मे ही रहे। चारो ग्रीर नई वर्फ से पर्वत ग्राच्छादित होगए थे। जीत मे बहुत वृद्धि होगई थी। महाराजजी, जगतराम तथा नेवक ग्रादि सबने बद्दीनाथ मे प्रस्थान किया ग्रीर शने - शने कई दिन मे हरिद्वार पहुच गए। यहा पर पातजल ग्राथम मे निवास किया क्योंकि ग्रमरनाथजी ग्रव कही ग्रन्यत्र चले गए थे। दीवाली के पश्चात् मेठ तुलसीरामजी तथा उनकी धर्मपत्नी दोनो श्री वहा ग्रा गए। महाराजजी ने तुलसीरामजी से कहा, "यदि ग्राप दोनो ही मेरा शित्यत्व ग्वीकार करेंगे तो ग्रापके पारम्परिक सम्बन्ध मे परिवर्तन होना ग्रनिवार्य हो शित्यत्व ग्वीकार करेंगे तो ग्रापके पारम्परिक सम्बन्ध मे परिवर्तन होना ग्रनिवार्य हो शाएगा। तब ग्राप दोनो बहिन-भाई हो जाएगे। जैसे एक पिता की सन्तान परस्पर जाएगा। तब ग्राप दोनो बहिन-भाई हो जाएगे। जैसे एक पिता की सन्तान परस्पर मय बहिन-भाई कहलाते है उमी प्रकार एक गुरु के शिष्य भी बहिन-भाई हो होते सब बहिन-भाई कहलाते है उमी प्रकार एक गुरु के शिष्य भी बहिन-भाई हो होते है। गठजी को महाराजजी की बात पर बडा ग्राइचर्य हुग्रा क्योंकि ग्रन्य साधु महा-है। गठजी को महाराजजी की बात पर वडा ग्राइचर्य हुग्रा क्योंकि ग्रन्य साधु महा-है। गठजी को उन्हे समभाया कि जो ऐसा करते है वे शास्त्रविधि का उल्लंघन करते है। योगीराजजी ने उन्हे समभाया कि जो ऐसा करते है वे शास्त्रविधि का उल्लंघन करते है।

इनमें से बहुतों को तो इसका ज्ञान ही नहीं होगा ग्रीर बहुत से वित्तेपणा तथा लोकेपणा के वशीभूत होकर ऐसा करते हैं जो उचित नहीं है। व्रत वडा कठिन है। यदि ग्राप दोनों ब्रह्मचर्य का विधिपूर्वक पालन कर सके तब तो हम दोनों को दीक्षा दें सकते हैं, ग्रन्थथा हम ग्राप दोनों में से एक को ही दीक्षा देंगे। सेठजी तो गत कई वर्षों से पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन कर रहे थे। बड़े सथम ग्रीर नियम से रहते थे। किन्तु महाराजजी से इन्होंने निवेदन किया, "हम नियम, मयम, व्रत ग्रीर ब्रह्मचर्य पूर्वक ही रहते है, किन्तु महाराजजी । मेरे लिए मनसादेवी को पत्नी के स्थान पर वहन पुकारना वडा कठिन है।" माता मनसादेवी की प्रार्थना पर महाराजजी ने सेठजी को ही मत्र-दीक्षा देना स्वीकार किया। वे दीक्षा लिए विना भी कुछ न कुछ लाभ उठा ही रही थी। पति-पत्नी दोनो साथ ही महाराजजी के पाम आते थे। दोनो को ये साथ ही उपदेश देते थे। साधना-ग्रभ्याम भी दोनो साथ-साथ ही करते थे। वे विविवत् दीक्षा लिए विना भी सदा से ही महाराजजी मे गुरु-भावना रखनी थी ग्रीर उनकी ग्रनन्य भक्ता थी। महाराजजी ने सेठजी को तीन दिन ग्रपने पास रखकर पूरश्चरण की सब विधि वता दी तथा अन्यान्य कई साथनो का अनुष्ठानादि समझा दिया। इसी प्रकार माता मनसा देवी को भी यथायोग्य साधन बनाया। इसके पञ्चात् ये लोग वम्वई चले गए ग्रीर पुन वैसाली मे एक सप्ताह पूर्व ही हरिद्वार ग्रा गए। पूर्वा वताई हुई विधि के अनुसार यहा आकर व्रत इत्यादि किया। दीक्षा के लिए सब
अवश्यक सामग्री मगवा ली। महाराजजी का मीनव्रत वैसाखी वाले दिन प्रात समाप्त होगया।

सेठ तुलसीराम को मत्र-दीक्षा--महाराजजी के मीनवत रखने से पूर्व ही सेठजी ने उपवास तथा ग्रन्य जो तैयारी करने का ग्रादेश हुग्रा था सव कर लिया। ब्राह्मणो को बुलाकर तीन-चार घण्टे तक यज्ञ किया। इसके पश्चात् उपनयन सस्कार किया गया। एक घण्टा तक सेठजी को उपदेश देकर स० २००३ मे वैशाख मास की सकान्ति को शास्त्रविधि के अनुसार मत्र-दीक्षा दी गई और महाराजजी ने उन्हे अपना शिष्य स्वीकार कर लिया । तत्पश्चात् ब्राह्मणो ग्रौर साधुग्रो को भण्डारा दिया गया ग्रौर इनमे दान-दक्षिणा भी वितरित की गई। माता मनसादेवी को भी उपदेश दिया गया। विविध प्रकार की साधनाये उन्हें समक्ताई। दोनो को ग्रात्मविज्ञान प्राप्ति के सूक्ष्म रहस्यो को समकाया गया। सर्वे कार्य निर्विष्नतापूर्वक समाप्त हुग्रा। गुरु-दीक्षा मिलने पर दोनो पति-पत्नी ने ग्रपने को वडा कृतकृत्य समभा। ये करोडों के इस समय स्वामी थे। घर-गृहस्थी की कोई चिन्ता नही थी ग्रत दीक्षा के पञ्चात् इन दोनो ने हरिद्वार मे ही निवास करने का निञ्चय किया। ये कुछ दिन तक तो महाराजजी की सेवा मे रहे ग्रौर इसके पश्चात् वापस वम्बई चले गए। योगीराजजी ने सर्वप्रथम सेठ तुलसीराम को ही विधिपूर्वक जिष्य वनाकर दीक्षा दी थी। इसका मुख्योद्देश्य था इनको राधास्वामी वनने से वचाना ।

हरिद्वार मे योग प्रशिक्षण--सेठजी के वस्वई चले जाने के पञ्चात् महाराजजी ने योगाभ्यास करवाया । जिस प्रकार से विद्यालयो, महाविद्यालयो तथा विश्वविद्यालयो मे लौकिंक विद्या की प्राप्ति के लिए कक्षाये लगाई जाती है और विद्यार्थी विविध लौकिक विपयो का ज्ञान प्राप्त करते हैं, इसी प्रकार की कक्षाग्रों का श्री महाराजजी ने

पराविद्या, पारमाधिक विद्या के उपार्जन के लिए प्रारम किया। योग-साधना के लिए विधिवन् कथाये नगती थी श्रीर साधकों को उनकी योग्यता, परिश्रम श्रीर साधना के अनुरुप योग नियाया जाना था। योग-विद्या श्रत्यन्त प्राचीन विद्या है। श्राज से हजारों वर्ष पूर्व ने हो योग की पायन परस्परा भारत में चली श्रा रही है। किन्तु तब इस विद्या में पारगत महायोगी श्राने योग्य शिष्यों को ही योग सिखाया करते थे। जिसमें उन गृत विद्या को प्राप्ति के निए पात्रता पाते थे उसी को उस विद्या का दान देते थे। चारमित्रान नया ब्रह्मविज्ञान की प्राप्ति के लिए एक ही जनम नहीं कई-कई जनम तक प्रशास करना पड़ना या। योग प्रशिद्यण विद्यानयों की 'योगनिकेतन' के नाम ने स्थापना तका, उनमें योग की कक्षाये नगाकर योग माधन की शिक्षा देना श्री महाराज्यों का याना ही श्रनुस्थान है। यह इनके श्रभ्यासियों ने योग शिक्षा प्राप्त की है। इनमें ये पत्री महान् योगी वनकर भने ही च निकले हो किन्तु मार्ग-दर्शन सबको वर्गनित का ये पत्री हो। हथा है। श्रप्ती-श्रपनी नाधना, श्रभ्यास, तप, श्राणायाम श्रीर वैराग्य के चनुस्य गर्मों लाभ उठाया है। श्रभ्यासियों को उनकी योग्यता के श्रनुस्य उपाधियां भी श्रान की गर्में हो। गर्मियां भी श्रान की गर्में हो।

#### बद्रीनाथ गमन

कोरक मास के प्रारंग में जी महाराजजी बद्रीनाथ पंधार गए। वहां पर पंजाबी क्षेत्र में निराम रिया। यही ऐसा स्थान या जो एकान्त श्रीर शान्त था तथा स्रावादी में दूर था। पदीना र में मने के मुग के माधन प्राप्त थे। यहा पर डाक तथा तार घर 🗦 । तर प्राप्ता प्रत्यताल है । नोई तथा घोबी ग्रासानी ने मिल जाते है। कपड़े तथा साध सामगी की गई दुवाने है। द्य श्रामानी में गिल जाता है। साग तथा घी की भी गई गुनानें है। भूमण करने के लिए समतल भूमि है। जहा ये सुख साधन है पहा मापरों के लिए अनेक कार भी है। यहां पर लगभग एक लाख यात्री प्रतिवर्ष गाया करने काने है। याता के नगय बहुत भीउ-भाद रहती है जिससे साधना मे ब्रनि-सार्य रात्र ने विषय उपस्थित हो जाता है। यद्रीनाथ के पास ही दो-तीन शराब की चीकिया थी । यह भी एक बड़ो भारी विघ्न था । इसके अतिरिवेत आसपास के ग्रामी के बरे-परे बन्ने तथा नित्रवा लक्की टोने के निमित्त सैकड़ों की सरया में क्षेत्र के मामने ने छाते जाने रहते थे। उनका शोरगुन भी योगाभ्यास मे वडा वाधक था। यदीनाय में प्रद्रम जाति की नित्रमा नृत्य करने तथा गाने-वजाने के लिए प्राती थी प्रीट राई-राई दिन नक देरे लगाकर यह कार्य करनी थी। एक दिन यहा के एक धनाट्य ब्राह्मण बाहरताल ने महाराजजी की कुटिया के सामने रात्रि के समय इनका फर्ट चुण्डे तार तृत्य तथा गायन करवाया । उनकी कोठी पजाबी क्षेत्र के पास ही थी । यह क्षेत्र भी उने री भूमि के पान ही बना हुया था। उनके पिता ने यह भूमि दान में दी थी। उस रापि को महाराजजी को बँडा विधोप हुआ। श्रावण और भाद्रपद में गता पर हुए मंतरिया का प्रक्रोप हो जाता है और पेट भी राराव हो जाया करता है।

यहा पर निवयों में बाढ या जाने, ग्लेशियर के ट्टकर नदी में गिर जाने तथा यनिवृष्टि अथवा साधारण में कुछ अधिक वर्षा हो जाने के कारण से भी कभी-कभी छोटे-छोटे पर्वत-पण्टों के गिरने से मार्गी का अवस्द्व हो जाना आदि कठिनाड्या उपस्थित हो जाती है। एक दिन महाराजजी कचन-गगा के किनारे भ्रमणार्थ गए। तव इसमें ग्लेशियर के टूटकर ग्रा पड़ने से इतने वेग से पानी ग्राया कि इसमें ६०-७० ग्रनाज से लदी हुई वकरिया और १४-२० यात्री डूव गए। इस घटना को देखकर महाराजजी के चित्त में वड़ा विक्षोभ हुग्रा। इनके गवों को निकालने ग्रौर जो घायल होगए थे उन्हें ग्रस्पताल में भिजवाने के लिए महाराजजी को वड़ी दौड्यूप करनी पड़ी।

ग्रामो की स्त्रिया यहा पर प्राय लकडिया ढोने का काम करती है। ये ग्रिथिक-तर स्वेच्छाचारी वन जाती हैं जिसके परिणामस्वरूप दुराचारिणी वन जाती है। एक दिन एक वृद्धा स्त्री एक युवती तथा सुन्दरी लडकी को लेकर महाराजजी के पास ग्राई। उसकी चेष्टाग्रो, हाव-भाव तथा वोलचाल से वह कुछ पतित सी मालूम होती थी। इन्होने जगतरामजी को इन दोनो को क्षेत्र से वाहर निकालने का ग्रादेश दिया। उन्होने ग्रीर नौकरों को वुलाया ग्रीर इनको क्षेत्र मे वाहर निकाल दिया।

सहाराजजी के भक्त भगवानदासजी की पुत्रवधू का देहान्त—भगवानदासजी ग्रंपनी पत्नी ग्रौर पुत्रवधू ग्राज्ञावनी के साथ महाराजजी के पास रहने के लिए ग्राना वाहते थे। योगीराजजी ने इन्हें पत्र द्वारा न ग्राने का ग्रादेश दिया क्यों कि वर्षा ऋतु में पहाडों की यात्रा स्वास्थ्यकर नहीं होनी, किन्तु दुर्भाग्यवश यह पत्र इन्हें नहीं मिला ग्रीर ये वहां से चल दिए। ग्राज्ञावनी को मार्ग में ही विसूचिका (हैजा) होगई ग्रीर उसका मार्ग में ही स्वर्गवास होगया। भगवानदासजी को ग्रत्यन्त दु ख हुग्रा। परदेश में उस देवी के शव को उठानेवाला भी कोई नहीं मिला। गढवाल के लोग हैजे से वहुत भयभीत रहते हैं। हैजे के रोगी के पास तक भी ये लोग नहीं ग्राते। लालाजी वद्रीनाथ भी नहीं पहुच पाए ग्रौर इम ग्रसामियक दुर्घटना के कारण मार्ग से ही पीछे लौट गए।

गगोत्री निवास का निश्चय—उपरिलिखिन विविध कारणो से महाराजजी का चित्त वद्रीनाथ मे निवास करने से कुछ उपराम-सा होगया था। इन्होंने यहा की अपेक्षा गगोत्री निवास को ही अधिक उपयुक्त समभा। यहा पर जीवन के लिए सभी सुविधाए थी किन्तु अभ्यास तथा साधना के लिए यहा पर कई विघ्न थे। गगोत्री मे जीवन को लौकिक दृष्टि से सुखी बनाने के साधन तो न थे किन्तु वहा पर ध्यान तथा समाधि मे इस प्रकार के विघ्न उपस्थित होने की सभावना नहीं थी। इसलिए महाराजजी ने दयालजी को अपने लिए गगोत्री मे एक कुटिया तथा एक रसोई तैयार करने का आदेश दिया। इन दोनों के बनाने का अनुमानित व्यय १२०० ६० आका गया। महाराजजी ने दयालजी के पास तुरन्त १००० ६० भिजवा दिया और जेप २०० ६० फिर भेजने के लिए उन्हें लिख दिया। इधर इन्होंने सेठ तुलसीरामजी को रुपया भेजने के लिए पत्र लिख दिया। गढवाल के इलाके मे साधु-महात्माओं को रुपये तथा वस्त्रादि से सहायता करने की प्रथा कम है। यदि कोई साधु भिक्षा मागने चला जाए तो जनन अवश्य देते हैं।

बद्रीनाथ के मदिर की स्थिति—इस मदिर की स्थिति गत कई वर्षों से अव अच्छी थी। जब से सरकार का नियत्रण इसकी आय पर हुआ था तबसे इसकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी होगई थी। कई मकान तथा धर्मगालाए भी वन गई थी। इसकी आमदिन अव लगभग एक लाख होगई थी। यहा के मदिर में मूर्ति बैठी हुई है, अन्य मदिरों के समान खडी हुई नहीं है। बद्रीनाथ में बहुत बडा मैदान है।

इसमें विविध प्रकार के फूल तो होते हैं किन्तु वृक्ष नहीं । बद्रीनाथ में ऋषिगगा के किनारे प्रत्यक्रमन बहुत होना है । माणागाव में व्यास-गुफा बड़ी प्रसिद्ध है । यही पर व्यासजी ने पुराणों की रचना की थी । यहां पूर ऋषि-मुनियों के नाम से कई गुफाए प्रिमिद्ध है। महाराजजी के पास प्राय नित्य ही साधु-सन्त मिलने के लिए ग्राते रहते थे। एक नाता-सा बया रहना था। उनमें श्रवधृत परमानन्दजी मुख्य थे। इस वर्ष भी महाराजजी ने १६०० ग० देकर पजाबी क्षेत्र में श्रपनी श्रोर से चाय का क्षेत्र चलवाया था और दो मान के लगभग अन्त का।

## हरिद्वार प्रस्थान

विजयादशमी के उपरान्त महाराजजी ने हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया। मास-पास के पर्व में पर नई बर्फ पड़ने लग गई थी भीर शीत का आधिक्य होगया पा। उस वर्ष गुछ दिन के लिए गुजराती धर्मशाला में निवास किया। सेठ तुलसी-रामजी भी यही पर ठहरे हुए थे। उनके भ्राग्रह में ही महाराजजी उस धर्मणाला में ठहरे थे। यहा पर उन्होंने १५ दिन तक कथा की जिसमे जनता ने बड़ा लाभ उठाया। उसके यनन्तर ने मोहन आश्रम पधार गए। वहा जाकर तीन मास तक मीनव्रत रक्खा स्रीर इसके परवान् को मास तक योग प्रशिक्षण किया जिसमे साथको की सन्तोपजनक प्रगति हुई।

ब्रह्मवादिनी धमंदेवी से वेदान्त पर वादिववाद—एक दिन कुछ सत्सगी यण्डापर के पास हर-की-पीठी पर महाराजजी का उपदेश सुन रहे थे। उस समय एक मित्रा यहा पर आई। ये दिव्यगुणविभूपिता, ब्रह्मनिष्ठा तथा ब्रह्मवादिनी की। गोजन्य की प्रतिमा थी। उनके स्वभाव की सरलता, उनकी वाणी का माधुर्य तया उनके नेवानाव में यदा श्राक्षण था। ये श्रमृतसर निवासी लाला कर्मचन्दजी की गुपुत्री थी। लाताजी महाराजजी के गुपरिचिनों में से थे। उस देवी का नाम श्रीमनी धर्मदेवी था। ये धर्म बहन के नाम में प्रसिद्ध है। 'ब्रह्म मत्य जगन्मिथ्या' में इनका दृह विद्याग था। धर्म बहन का जैसा नाम था वैसे ही उनमें गुण थे। इनका वैशाय बड़ा उनकर नथा प्रयत्न था। श्रपने घर के मुख तथा श्राराम को लात मार कर हिन्दार में एकान्त तथा शान्त स्थान में रहना प्रारम्भ कर दिया था। ससार का कीर्ट प्रतोभन उन्हें आकृषित न कर सका श्रीर ये सदैव श्रपने निश्चित पथ पर श्रटल श्रीर स्विर रही। इनका जीवन बडा तपब्चर्यामय, त्यागमय श्रीर सयममय है। श्राप तप फ्रीर त्याग की साक्षान् मूर्ति है। महाराजजी में उनका बहुत पुराना परिचय था। जिन दिनों महाराजजी बंडी नहर के किनारे मीनवृत किया करते थे उन्ही दिनों में इनसे परिचय हुम्रा था। महाराजजी की सार्य भ्रीर योग मे वडी निष्ठा थी। अपने उपदेश में उन्होंने समाधि के विषय में बहुत ऊचे दर्जे का स्वानुभवजन्य विज्ञान का विस्तृत वणन किया था। इस उपदेश की समाध्ति पर धर्म बहुन ने महाराजजी से जिल्लामा रूप में कई प्रश्न किए —

धमं बहन-तया महाराजजी, श्राप हमारी भी समाधि लगवा सकते है ?

महाराजजी- नहीं।

धर्म बहन--ययो नहीं ?

महाराजजी—जब ग्रापके विचार में ब्रह्म के ग्रतिरिक्त ग्रीर कुछ है ही नहीं तो समाधि किस की लगवाए ? ब्रह्म तो स्वय समाधि रूप है। समाधि का विषय या लक्ष्य क्या होगा जब दूसरा कोई पदार्थ ही नहीं है। जब तक भेद स्वीकार नहीं किया जाएगा तब तक समाधि नहीं लग सकती। ग्रभेद में ध्याता, ध्यान ग्रीर ध्येय सिद्ध नहीं होते। समाधि में ध्याता, ध्यान ग्रीर ध्येय वने रहते हैं।

धर्म बहन-व्यवहार मे तो भेद रहता ही है।

महाराजजी—जब ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं तब व्यवहार किससे और कौन करेगा। अत व्यवहार भी सिद्ध नहीं होता। यदि व्यवहार माना जाएगा तब व्यवहार का कर्ता भी मानना पड़ेगा। जो कर्ता होगा उसको भोक्ना भी स्वीकार करना पड़ेगा। ब्रह्म में कर्तृत्व और भोक्तृत्व धर्म सिद्ध नहीं होते। जिसमें कर्तृत्व और भोक्तृत्व धर्म होगे उसका बध और मोक्ष भी अनिवार्य है। इसलिए एक दूसरा पदार्थ मानना पड़ेगा। इसी को हम जीवान्मा कहने है। यह ब्रह्म से भिन्न है।

धर्म वहन—जीव को तो हम भी मानते हैं। महाराजजी—जीव कहा से ग्राया <sup>२</sup>

धर्म बहन-जब अशुद्ध अविद्या के साथ ब्रह्म का सम्बन्ध होता है नव वह जीव मजा को प्राप्त होता है।

महाराजजी—ग्रशुद्ध ग्रविद्या कहा से ग्राई ?

धर्म वहन—षट्पदार्थ ग्रनादि ग्रीर सान्त है। उनमे जीव ग्रीर ग्रविद्या भी सम्मिलित है।
महाराजजी—िफर तो ग्रापने जो एकत्व ब्रह्म की प्रतिज्ञा की थी वह ग्रव न रही।
ग्रनादि ग्रीर सान्त की प्रतिज्ञा भी स्थिर नही रह सकती ग्रीर पदार्थ भी
सिद्ध नही हो सकते। जिसका ग्रादि नही उसका ग्रन्त भी नही हो सकता।
जो उत्पन्न होता है वही विनाग भाव को प्राप्त होता है। ग्रन कोई पदार्थ
ग्रनादि सान्त नही हो सकता। ग्रनादि को नित्य ग्रवस्य मानना पडेगा।

धर्म वहन-हम व्यवहार मे इसकी सत्ता मानते है।

महाराजजी — जब ग्रापके सिद्धान्त मे व्यवहार ही मिथ्या ग्रीर ग्रसत्य है तो इसकी सत्ता कैसे सिद्ध हो सकती है क्योंकि ब्रह्म के सिवाय ग्रीर कुछ ग्रापके सिद्धात में है ही नहीं?

धर्म वहन —हम अविद्या को अनादि, सान्त और अनिर्वचनीय मानकर इसके दो विभाग मानते हैं—एक शुद्ध तथा दूसरा अशुद्ध । जब शुद्ध अविद्या (अथवा माया) का ब्रह्म के साथ सम्बन्ध होता है तब वह ईश्वर-भाव को प्राप्त होता है ग्रीर जब अशुद्ध अविद्या या माया के साथ सम्बन्ध होता है तब वह जीव-भाव को प्राप्त होता है।

महाराजजी—स्रविद्या और ब्रह्म के सम्बन्ध का हेतु क्या है ? कर्म, ग्रीर कर्म का हेतु सस्कार, ग्रीर सस्कार का हेतु वृत्ति, ग्रीर वृत्ति का हेतु ग्रविद्या ग्रथवा माया। इस स्रविद्या के सम्बन्ध से ब्रह्म वधभाव को प्राप्त हुग्रा। ग्रपने वास्तविक स्वरूप को छोडकर ईश्वर ग्रीर जीवत्व भावापन्त हुग्रा। इस प्रकार इसमे कोई ग्रन्तर नहीं रहना। केवल चड़े-छोटे का ही ग्रन्तर रहा श्रीरतीनों वद्ध होगए। ब्रह्म, ईंटवर तथा जीव तीनों मयोग से वद्ध हुए। जैसे जीव का वध श्रीर मोक्ष होता है वैमे ही ब्रह्म का भी। इस प्रकार से ये दोनों ही समान हुए। जब श्राप ब्रह्म को नित्य, युद्ध, युद्ध, मुक्तस्वभाव, निराकार, निरवयव, निष्क्रिय मानती है नव कोई श्रापत्ति उपस्थित नहीं होती श्रीर बद्धादि धर्म जीव को मान ले नव यथ श्रीर मोक्ष दोनों सिद्ध हो जाते हैं।

धर्म यहन-हम तो इस यथ को भी स्वप्नवत् मानती है। जिस प्रकार स्वप्न के सव पदार्थ और व्यापार मिथ्या होते हैं उसी प्रकार जगत् भी मिथ्या है।

महाराजजी-वहुत ने नवप्त सत्य भी होते है ग्रीर ग्रसत्य भी। यह ग्रावश्यक नहीं कि सभी स्वप्त मिथ्या ही हो। देखे या मुने पदार्थी की या इन्द्रियों से भी भोगे हुए नुग-दु गात्मक पदार्थों की स्मृति ही स्वान है। उस पूर्वानुभूत का स्मरण कारण श्रीर सुदम शरीर के द्वारा होता है । कभी-कभी स्थूलेन्द्रिया भी श्रपना व्यापार प्रारम्भ कर देनी है-जमें रचन में वाते करने नगना, हाथ को उठाकर थपाड मारता, रवप्त में बीर्यगात हो जाना, करवट लेना, उठकर चल देना, श्रादि। मुध्य गरीर स्रीर सुध्मेन्द्रिया तो स्रपना व्यापार करती ही है। जैसे जाम्रतावस्था ग्रन्त करण की है ऐसे ही स्वानावस्था भी ग्रन्त करण की है। जाग्रत में भी अनेक कर्म मित्या या गलत होते हैं। यदि ये कर्म व्यापार स्वप्त मे हो जाए तो ग्राप केवल उन्हीं को मिथ्या क्यों कहती है ? ये दोनो ही ग्रवस्थाए ग्रन्त करण की है। दोनो ही नत्य है ग्रीर दोनो ही मिथ्या है। इसलिए जगत भी कारण-न्पेण नत्व है स्रीर कार्यम्पेण स्रनित्य है। यदि स्राप जगत को मिथ्या कहेगी नय नो ग्राप जो कुछ कह रही है वह भी मत्य कैसे हो सकता है ? ग्रत स्वप्न ना दुण्टान्न देना ठीक नही, यह ग्रमगत है ग्रीर दृष्टान्ताभास है। यदि ग्राप प्रहा के अतिरिवत अन्य कुछ नहीं मानती तब समाधि की बाते करना, नित्य भ्राहार-व्यवहार करना, मोल के लिए साधना करना, सब निर्देशक हो जाएगे। परन्तु मोध गा तथा श्रत्यन्त दु यनिवृत्ति का उपाय तो श्राप नित्यप्रति करती नो गयार नित्य ही प्रतीन होना है तथा दु खनिवृत्ति का उपाय रहती हो। इससे भी नत्य ही है। अन आपका अहैतवाद केवल वाणी का विलासमात्र ही रह जाना है। इस ग्रहितवाद की म्राति का परित्याग करके ग्रीर भेदवाद को न्यीकार करके नमाधि के साधनों में प्रवृत्त हो जाग्रो, तब ही श्रात्मसाक्षात्कार होकर परम वैराग्व द्वारा स्वरूप में स्थिति होगी श्रीर मोक्ष प्राप्त हो सकेगा। ग्रन भाग उस व्यर्थ के हठ ग्रीर दुराग्रह को छोटकर समाधि द्वारा ग्रात्मविज्ञान प्राप्त गरे। एक योग ही एसा मार्ग है जिसके द्वारा हस्तामलक के समान प्रत्यक्ष विज्ञानपूर्वक ग्रात्मसाकारकार किया जा सकता है। यदि ग्रापकी इच्छा हो नो कुछ काल हमारे नान्तिध्य मे रहकर सत्सग श्रीर श्रभ्यास द्वारा, यम-नियमो का विविवत् पालन करते हुए श्रात्मविज्ञान तथा ब्रह्मविज्ञान के सूक्ष्म रहरयों को समाधि द्वारा स्वय अनुभव करें। सम्प्रज्ञात समाधि द्वारा प्रकृति-पुरुपविवेक ग्रीर ग्रमम्प्रज्ञान समाचि द्वारा परम वैराग्य ग्रीर सर्व सस्कारो का ग्रयवा वृत्तियो का निरोध होकर ब्रह्म में स्थिति लाभ होगी।

महाराजजी ने जब घर्म वहन के सब प्रश्नो के विद्वत्तापूर्ण ढग से युक्तियुक्त उत्तर दे दिए ग्रीर वे उनसे सन्तुष्ट होगई तब वे इनकी चरणशरण होगई ग्रीर कई वर्ष के सत्सग ग्रीर ग्रभ्यास से समाधि द्वारा ग्रात्मसाक्षात्कार प्राप्त किया।

#### वद्रीनाथ गमन

श्री महाराजजी कुछ मास तक हरिद्वार में निवास करके बद्रीनाथ पथार गए क्यों कि श्री दयालमुनिजी ने इन्हें सूचित किया था कि कुटिया का सामान तैयार हो रहा है, ग्रागामी वर्ष तक वन जाएगी ग्रीर निवास योग्य हो जाएगी। बद्रीनाथ में महाराजजी के ठहरने ग्रीर भोजनादि की सव व्यवस्था जगतरामजी ने पजाबी क्षेत्र में कर दी। महाराजजी ने इन्हें गतवर्ष की भाति सन्तों के लिए चाय तथा भोजन का प्रवन्य करने का ग्रादेश दिया। यह भी ग्रावेश दिया कि ग्रत्यन्त ग्राव्यक कार्य उपस्थित होने पर ही उनसे मिला या वात की जाए, ग्रन्यया नहीं, ग्रांर ग्रन्य ग्राग्नुक महानुमावों को भी यह ग्रादेश सुना देने के लिए ग्राज्ञा प्रदान की। यहा का दगहरा करके महाराजजी ने हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया।

### हरिद्वार मे मोहन आश्रम निवास

महाराजजी ने मोहन ग्राथम मे निवास किया। इनके परम भक्त ग्रीर शिष्य सेठ तुलसीरामजी सपत्नीक हरिद्वार मे ग्राए हुए थे। माता मनसादेवीजी ग्रत्यिक रोगी थी ग्रत महाराजजी ने उन्हें मोहन ग्राथम में लाने का ग्रादेव दिया ग्रीर मोहन ग्राथम में ही एक कोठी में उनके निवासादि का सब प्रवन्थ कर दिया। माता मनसादेवी ने महाराजजी से करबढ़ प्रार्थना की, "महाराजजी । मेरा वचना तो ग्रव कठिन है। मेरी केवल एक ग्रिमलापा गेप रहती है जो मुक्ते पूर्ण होती नजर नहीं ग्राती। मेरा छोटा वेटा ग्रोमप्रकाश ग्रभी कुग्रारा है। यदि में उनका विवाह कर पाती तो उत्तम रहता। मेरी हार्दिकेच्छा है कि मेरे पास ग्रपना जो कुछ वन्त्र ग्रीर ग्राभूपण तथा रुपया है वह सब मैं ग्रोमप्रकाश ग्रीर उसकी वह को ग्रपने हाथों ने दे जाती। यदि ग्राप मुक्ते एक वर्ष ग्रीर जीवनदान दे सके तो मेरी यह ग्रन्तिम ग्रीमलापा पूर्ण हो सकती है। ग्राप योगी है, महात्मा है, वालबह्मचारी हे। ग्राप निनयों के भण्डार है। ग्राप मेरे पति के ग्रीर मेरे गुरु हैं। ग्रापके ग्रिनिरक्त ग्रन्य कोई मेरी इस ग्रीनलापा को पूर्ण नहीं कर सकता। यदि ग्राप मुक्त पर दया-दृष्टि करे तो मेरी प्राण रक्षा हो सकती है।"

मनसादेवी को जीवनदान—मनसादेवी ने सिसकिया भर कर रुदन करते हुए महाराजजी से जो प्रार्थना की थी उससे वे द्रवीभूत होनए ग्रांर उन्हें कहा, "माताजी, ग्रापको एक नहीं हम चार साल जीवन के ग्रीर प्रदान करने हैं।" सेठजी भी पास ही वैठे ये सव बाते सुन रहे थे। महाराजजी कुर्सी से उठकर खंडे होनए ग्रीर ग्रपने दोनो हाथ जोडकर भगवान् से प्रार्थना की ग्रीर फिर मनोवल द्वारा मानसिक प्रयोग करते हुए माता से कहा," देखो, ग्रभी थोडी देर मे तुम्हारी पसली ग्रीर हृदय की वेदना गान्त होकर सदा के लिए दूर हो जाएगी।" फिर इनके हृदय पर हाथ रखकर कहा, "ग्रभी ग्रापकी वेदनाए सदा के लिए गान्त होती है।" इन गद्दों के साथ ही मनसादेवी के हृदय ग्रीर पसली का दर्द जाता रहा ग्रीर ज्वर भी टूट गया। वे ग्रपने को ग्रारोग्य

ग्रम्भव करने लगी। उनमे कई दिन से विस्तर पर से उठने तक की शक्ति नहीं थी किन्तू ग्रव इन्होने चारपाई पर से उठकर श्री महाराजजी के चरण पकड लिए श्रीर श्रपने ग्रासुग्रो से उनके चरण भिगो दिए ग्रीर कहा, "महाराजजी, ग्राज ही मैने ग्रापके योग-वल का पूर्ण परिचय पाया है। ग्राज ही पता चला है कि ग्रापमे कितनी अलीकिक वितिया हैं। आप कितने महान है। आप सर्वशक्तिमान है। मुक्त मरी हुई को प्रापने पुन जीवन प्रदान किया है। मुक्ते मृत्यु के मुह से स्रापने निकाला है। मैं जन्म-जन्मान्तरो तक भी ग्रापके इस महान् ऋण से उऋ ण नही हो सकती। ग्रापके इस ग्रद्भुत चमत्कार को नहीं भूल सकती। ग्रापके इस महान् उपकार की रेखा सदेव मेरे हृत्यटल पर खिची रहेगी। महाराजजी, ग्राप मानव नहीं ग्राप देवता हो, मनुष्य नहीं भगवान् हो।" चार-पाच दिन मे ये वम्बई जाने के योग्य होगई। महाराजजी मीन वर्त बारण करने वाले थे श्रत उन्हें वम्बई जाने का ग्रादेश दिया। महाराजजी ने इनके चले जाने के पश्चात् ३ मास के लिए मौन किया और पूर्ववत् दो मास के लिए साधको को साधनाभ्यास करवाया । स० १६०४ के माप मार्स की पूर्णिमा को मीन व्रत की समाप्ति हुई ग्रौर सन्तो-महात्माग्रो को भण्डारा दिया। यह महाराजजी का ग्रन्तिम मीन था। ग्रव इन्होने यह निश्चय कर निया था कि भविष्य मे मीन व्रत नहीं किया जाएगा। जो विज्ञान गुरुदेवजी ने प्राप्त किया है उसे योग के जिज्ञासुयों को प्रदान किया जाएगा। स्रौर सारा समय लोक-करवाण के ऋषण किया जाएगा। इस विज्ञान-दान के द्वारा जिस प्रकार गुरुजनो ने मुक्त पर उपकार किया है, मेरा कत्याण किया है, उसी प्रकार मैं भी योग का प्रशिक्षण करके इसके प्रसार और प्रचार के द्वारा विश्व का कल्याण करूगा। योग प्रशिक्षण मे छोटे-वडे का विचार नही रखा जाएगा। सव वर्ण ग्रीर जाति के योग जिज्ञामुग्रो के लिए महाराजजी का द्वार सदैव खुला रहता है। इनके विशाल हृदय मे ऊच-नीच, राजा-रक, ग्रमीर-गरीव, शिक्षित-प्रशिक्षितादि सबके लिए समान भाव है। महाराजजी ने यह घोपणा की थी कि मै नि स्वार्थ भाव से, सच्चे हृदय श्रीर वात्सत्य भाव से प्रध्यात्म-ज्ञान को जिज्ञासुग्रो को प्रदान करूगा। ग्रभ्यास की समाप्ति पर महाराजजी ने सभी ग्रभ्यासियों को उपदेश दिया था, उसीमे उपरोक्त घोषणा की गई थी। अभ्यास की समाप्ति पर सभी साधको ने यथास्थान प्रस्थान किया किन्तु महाराजजी के परम भक्त गुरुवरणदत्तजी के भाई रामलाल तथा उनके परिवार की देविया प्रभी यही ठहरी हुई थी। ये सव महाराजजी के बद्रीनाथ पवारने तक टनके पास ही रहने के इच्छुक थे।

श्री महाराजजी की पाच दिन की समाधि—महाराजजी वस्ति इत्यादि पट् कर्म के द्वारा गृद्धि करके, दो दिन तक गरीर के भीतर की शुद्धि करके तथा दो दिन तक उपवास करके ग्रपनी कुटिया के सब द्वार वन्द करके समाधिस्य होगए। यह समाधि १ दिन के लिए थी। पूणिमा को १० वजे व्युत्थान का निञ्चय किया था। जो १ दिवया ग्रभी ग्राश्रम मे ग्राग्रहपूर्वक ठहरी हुई थी वे महाराजजी की कुटिया के चक काटती रही ग्रीर जब न तो ये बोले ग्रीर न समाधि से उठे तब वे बडी निराग हुई। रवामी सोमतीर्थजी महाराजजी की कुटिया के नीचे ही रहते थे। उन्होंने इन देवियों को समक्ताया कि योगीराज इसी प्रकार से कई-कई दिन के लिए समाधिस्थ

हो जाया करते है ग्रौर ग्रवधि समाप्त होने से पूर्व कभी व्युत्थान नही करते, ग्रत ग्राप लोग जाग्रो, व्यर्थ ही ग्रपना समय नष्ट मत करो। जब महाराजजी तीन दिन तक भी न उठे तव वहा जितने भी भक्त थे सव निज-निज स्थान पर चले गए। इस बार महाराजजी १२० घण्टे के लिए समाधिस्थ हुए थे। पूर्णिमा के दिन जब १२ वजे दरवाजा खोला गया तब स्वामी विशुद्धानन्दजी इनसे मिलने के लिए ग्राए ग्रीर पूछा, "कैसी स्थिति है है ग्राप हम सबको सूर्चित किए विना ही भीतर समाधि में बैठ गए। हम सब तो बड़े चिन्तित हो रहे थे।" स्वामीजी ने रामलालजी ग्रीर उनके परिवार का सर्व वृत्त सुनाया । महाराजजी ने कहा, "ग्रन्न जल छोडे ग्राज ७ दिन होगए है, एक पाव दूध मगवा दो ।" स्वामीजी को यह सुनकर वडा ग्राश्चर्य हुग्रा क्योंकि महाराजजी का मुख पूर्ववत् कान्तिमान श्रीर तेजस्वी था। स्वामी सोमतीर्थजी दिन मे कई-कई वार इन्हें देखने जाते थे। महाराजजी ने समाधि से व्युत्थान का दिन श्रीर समय नहीं बनाया था, इसलिए सभी वडे परेगान थे। महाराजजी ने दिन ग्रौर समय इसलिए नही वताया था कि जिससे रामलालजी तथा ग्रन्य स्त्रिया सव वहा से चले जाए। यदि उनको पता चल जाता तो वे ५ दिन वही बैठे रहते क्योकि वे दर्शन किए विना जाना नही चाहते थे। स्वामी विशुद्धानन्दजी ग्रीर स्वामी सोमतीर्थजी बडे विद्वान् योगी थे, इसीलिए महाराजजी से वडा स्नेह करते थे। ये दोनो महाराजजी से ग्रायु ग्रौर ग्राश्रम दोनो में ही वडे थे। ये कई-कई दिन तक समाधिस्य होने से वडे प्रभावित थे। ये भी कई-कई मास तक मोहन ग्राश्रम मे निवास किया करते थे। इनके भी भक्त ग्रौर ग्रभ्यासी वहा ग्राया करते थे। महाराजजी ने दो छटाक दूध मे दो छटाक पानी मिला कर पीया । इसके पञ्चात् न्योलि-त्रिया करके शौचादि से निवृत्त हुए। शौच कृष्ण वर्ण था। वस्ति ग्रीर वजरौली किया द्वारा मल-मूत्र निकाल कर ही समाधिस्य हुए थे, किन्तु फिर भी कुछ न कुछ मल श्रान्तों में श्रवश्य रह जाता है श्रीर जव तक ठीक-ठीक समाधि नहीं लगती है तव तक ये पाचन-कार्य करती ही रहती है, ग्रत भीतर का मल दग्ध होकर काला सा हो जाता है ग्रीर पेशाव भी पीत ग्रीर रक्त वर्ण का हो जाया करता है। यदि समाधि से व्युत्थान होने के पश्चात् भी योगी को मल-मूत्र त्याग करने की इच्छा न हो तव बस्ति ग्रीर बजरौली के द्वारा इन्हें वाहिर् निकालना चाहिए। इस समाधि के कुछ समय पश्चात जो चित्र श्री राजयोगाचार्य वालब्रह्मचारी व्यासदेव जी महाराज का लिया गया था वह सामने है।

### बद्रीनाथ गमन

पाच दिन की समाधि के छ-सात दिन पश्चात् महाराजजी ने वद्रीनाथ के लिए प्रस्थान किया। वहा जाकर पूर्ववत् पजावी क्षेत्र मे निवास किया। यह सन् १६४७ का साल था। १५ ग्रगस्त १६४७ को भारत स्वतन्त्र हुग्रा था। किन्तु ब्रिटिश सरकार भारत को शक्तिशाली देखना नहीं चाहती थी, इस देश का सदा के लिए त्याग करते समय देश का विभाजन करके इसे ग्रत्यन्त शक्तिहीन बना गई थी। इसलिए देश के स्वतन्त्र होते ही कई विकट समस्याए शासको के समक्ष उपस्थित होगई। शासनसूत्र हाथ में लेते ही इनको मुलभाने का प्रश्न उपस्थित हुग्रा। विभाजन के परिणामस्वरूप देश में रुधिर की नदिया वह निकली। लाखो व्यक्ति दर से



राजयांगाचार्य वालब्रह्मचारी श्री व्यामदेवजी महाराज (पांच दिन की समाधि के पश्चान)

वेदर हुए। लाखों माताओं की गोद से उनके लाल, उनके जिगर के टुकड़े छीन लिए गए। लाखों वच्चों की हत्याएं उनके माता-पिताओं के सामने नृशंसतापूर्ण ढंग से की गईं। लाखों सुहागिनों के भाल के विन्दु धुल गए। वच्चे अनाथ होगए। लाखों स्त्रियों के सतीत्व का अपहरण किया गया। करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट-अष्ट होगई। सर्वत्र विनाश और नरसंहार दिखाई दे रहा था। उन दिनों का स्मरण आज भी आतुर और व्याकुल कर देता है। महाराजजी इन दुर्घटनाओं के कारण बद्रीनाथ में उदासीन-से ही रहे और सितम्बर मास में ही वहां से हरिद्वार चले गए।

## हरिद्वार के लिए प्रस्थान

इस समय हरिद्वार में दुःखित, पीड़ित और ग्रत्याचारों से भयभीत शरणार्थियों की वड़ी भीड़ थी। सब ग्राश्रम ग्रौर मकान इनके लिए सरकार ने ले लिए थे। इनके पुनर्वास की वड़ी भारी समस्या थी। इनके ऊपर जो ग्रत्याचार किए गए थे उनको सुनकर पापाण भी द्रवित हो रहे थे। महाराजजी के सहस्रों भक्तों ने नाना प्रकार की दुःखद घटनाएं सुनाई। योगीराजजी ने वस्त्र तथा धन वितरण करके इनकी वहुत सहायता की।

## शरणाथियों की सहायता

महाराजजी वड़े दयालु ग्रौर उदार हैं। ग्रातीं की ग्रातिहरण, पीड़ितों की पीड़ा के अपहरण, दु: खियों के दु: खहरण और असहायों की सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इन्होंने विस्थापितों की सेवा और सहायतार्थ पंजाव जाने का निश्चय किया। सर्वेप्रथम ये जालंधर पधारे। वहां पर डाक्टर नारायणसिंह के पास ठहरे। यहां कुछ दिन रहकर होशियारपुर चले गए। वहां पर सभी पीड़ित परिचितों को सान्त्वना देते तथा धीरज वंधाते रहे। इसके पश्चात् पुनः जालंधर ग्रागए ग्रौर यहां से डाक्टर नारायणसिंह की मोटरकार में ग्रमृतसर पधारे। मार्ग में जो दु:खद दृश्य देखा उसे देखकर वे प्रकम्पित होगए। रेल की पटरी के किनारे लाखों शव दवे पड़े हुए थे। मुसलमानों का एक वड़ा भारी काफ़िला पाकिस्तान जा रहा था। ग्रागे तथा पीछे वड़े-वड़े टैंक उनकी रक्षार्थ जा रहे थे। ग्रावालवृद्ध सभी दुः बी थे ग्रौर रुदन कर रहे थे। एक वृद्धा मुसलमान माता को कहते हुए सुना, ''जिन्हा, ग्रल्ला तुम्हारा नाश करे। तैने पाकिस्तान वनाकर हमें वर्वाद किया है। ऐ खुदा, क्या ही अच्छा होता तू इस जिन्हा को पहले से ही नेस्तनावूद कर देता जिससे करोड़ों मनुष्य वरवादी से तो वच जाते।" डाक्टर विद्यावती ग्रौर नारायणसिंह महाराजजी के साथ थे। ग्रमृतसर केवल ५५ मील की ही दूरी पर था, तो भी प्रातः द वजे चल कर कहीं सायंकाल ग्रमृतसर पहुंच पाए। वहां जाकर गुरुचरणदत्त की कोठी पर ठहरे। सब भक्तों ने ग्रमृतसर में जो-जो दुर्घटनाएं हुई थीं उन सबका दुःखद वृत्त सुनाया । सारा नगर नष्ट-भ्रष्ट होगया था । मलवे के ढेर लगे हुए थे । मकान खण्डहर होगए थे। वाजार वरवाद होगए थे। महाराजजी के कई भक्तों ग्रौर परि-चितों की वड़ी-वड़ी कोठियां जला दी गई थीं। हिन्दू ग्रौर मुसलमान दोनों के मकान नष्ट-भ्रष्ट होगए थे। महाराजजी ने वस्त्र ग्रौर धन से पीड़ितों की सहायता की। जहां जाते वहीं लोगों को सान्त्वना देते तथा ढाढस बंघाते । मनुष्य जव राक्षस का

रूप धारण कर लेता है तव वह अपना विवेक खो देता है और उसको पाप-पुण्य तथा धर्म-अधर्म का विवेक नहीं रहता। प्रत्येक कुकर्म करने के लिए कटिवद्ध हो जाता है। पाकिस्तान और पूर्वी पजाब में जो अत्याचार हुए थे उनको मुनकर लज्जा को भी लज्जा आती है और शर्म से अपना मुह छिपा लेती है। महाराजजी श्रीकृष्ण के मकान को देखने के लिए गए। इसे मुसलमानों ने भूमिसात कर दिया था। महाराजजी के १५०० रु० की कीमत के चादी के वर्तन लाला शिवसहायमल के मकान में रखे थे। इन्होंने ये सब श्रीकृष्णजी को दे दिए। ये लगभग २० दिन तक पजाब में रहे और फिर हवाई जहाज द्वारा वम्बई पधारे और मेरीन ड्राईव पर लाला तुलसी-रामजी के पास ठहरे।

# सन् १६४८ मे भक्तो के कष्ट का निवारण

सेठजी के मकान पर महाराजजी सायकाल ५ वजे से ६ वजे तक उपनिपदो की कथा करते थे। सैकडो नर-नारी कथामृत का पान करने के लिए ग्राते थे। सेठजी के ऊपर इन्कमटैक्स का एक मामला चल रहा था। इनके ऐय्वर्य, धन तथा सम्पत्ति के कारण बहुत से लोग इनसे ईर्ष्या करते थे। इन्ही मे से किसी ने उनकी भूठी शिकायत कर दी थाँ। इनके ऊपर कई लाख रुपया जुमीना कर दिया गया था। माता मनमा देवी ने कहा, "महाराजजी । श्रापके भक्तो पर वटी भारी श्रापत्ति श्राई हुई है। श्राप ही इनके सकट का निवारण कर सकते हो। उधर ग्रोमप्रकाश की शादी की निथि निश्चित हो चुकी है। विवाह मे थोडे ही दिन गेप है। ऐसी स्थित मे विवाह भी ग्रसम्भव सा ही प्रतीत होता है। ग्राप ही इन वच्चो की लाज रखोगे।" मनमादेवी की ग्राप्तो मे ग्रांसू देखकर महाराज्जी को दया ग्रा गई। इन्होंने सेठजी के पुत्र हरिकिशनदास को बुलाया श्रीर इन्कमटैक्स के उन श्रफसरो को दिग्वाने के लिए कहा जिनके पान इनका मामला था। वडा अफसर सैर करने जाया करता था, उसे तो महाराजजी को वहा दिखा दिया गया। हरिकिशनदास और महाराजजी दोनो मोटर-कार मे गए थे। उस अफसर को देखकर इन्होने मोटर की गति मन्द कर दी श्रीर महाराजजी ने श्रपनी दिव्य दृष्टि उस श्रफसर पर डाली। वह हरिकिशनदासजी से कभी बोलना नही था। वडा दम्भी ग्रीर कठोर प्रकृति का था। किन्तु महाराजजी की दिव्य दृष्टि पडते ही वह वडे नम्रभाव से उनके साथ वाते करने लगा ग्रीर पूछा कि ये महात्मा कौन है। हरिकिशन ने कहा, "श्री महाराजजी हमारे गुरु है। ये हिमालय से श्राए हैं। इनकी हमारे ऊपर वड़ी दया है।" इस अवसर मे महाराजजी ने श्रपने मनोवल से शक्तिपात करके इनको प्रभावित किया ग्रीर इन्हे वड़ा सरल तथा कोमल बना दिया। अफसर ने हरिकिशनदास से कहा, "आप आज मुक्ते मिलना। आपके मामले पर विचार किया जाएगा ग्रीर वास्तविक स्थिति को समभने का प्रयतन किया जाएगा।" हरिकिशनदास ने महाराजजी से कहा, "ग्राज ग्रपने जीवन मे ये प्रथम वार इतने विनम्न और कोमल हुए है। अव आपकी कृपा से कार्यसिद्धि की एक किरण सी दिखाई देने लगी है।" दोनो मकान पर वापिस ग्रागए। छोटे ग्रफसर को देखने के लिए महाराज्जी और अमीरचन्द दफ्तर मे गए। वहा कुछ वातचीत करने लग गए श्रीर महाराजजी ने इसे देख लिया ग्रीर तुरन्त ग्रपनी दिव्य दृष्टि उस पर डाली। सायकाल को विदित हुग्रा कि इस छोटे ग्रफसर को ज्वर हो गया है। इसके दो दिन

पञ्चान् यह मियादी ज्वर मे परिवर्तित हो गया । महाराजजी ने हरिकिशनदास को अपना मामला किसी अनुकूल अफसर के पास ले जाने की सलाह दी । ये अपने केस को किमी अन्य छोटे अफसर के पास ले गए । इनके देहली वाले आडिटर आए हुए ये । इन्होंने मारे कागज देगे और इनकी सहायता की । उधर वहे अफसर खरवन्दा साहिव इनके कुछ परिचित निकल आए । कुछ दिनों के परिश्रम से कार्य में सफलता लाभ हुई । वहुत थोडा-सा उचित टैक्स लगाकर केस खत्म कर दिया गया ।

जहा पर श्रोमप्रकाश के विवाह की वातचीत चल रही थी वह भी महाराजजी के एक भक्त की लड़की थी। श्राज्ञावती ने इसी लड़की के विवाह सम्वन्थ मे महराजजी मे कई वार निवेदन किया था कि इसका सम्वन्थ श्रोमप्रकाश के साथ करवाने की कृपा की जाए। महाराजजी ने यहा पर एक मास तक निवास किया श्रीर जनता को श्रपने उपदेशों से लाभ पहुचाया।

टैनम के भगड़े से मुक्त हो जाने के कारण यह सारा परिवार वटा प्रसन्न था। श्री महाराजजी ने अपने योगवल तथा मनोवल से अपने अनेक भक्तो के कण्टो का निवारण किया है। आपको विविध प्रकार की सिद्धिया प्राप्त थी किन्तु आपने कभी उनका चमत्कार दियाकर जनता को आकर्षित करने की स्वप्न में भी इच्छा नहीं की। कभी-कभी जब वे अपने भक्तों को सकट तथा विपत्ति में देखकर द्रवीभूत हो जाते थे तब अपने मनोवल में और अपनी शक्ति के प्रयोग से उन्हें विपत्ति से मुक्त करने और उनके नकट के मोचन करने का कई बार प्रयत्न अवश्य किया है। सिद्धियों के प्रदर्शन में उनका विश्वास नहीं था। ये उन्हें योग में वाधक और वडा विष्न समभते थे।

महाराजजी कुम्भ के मेले पर प्रयाग मे कुछ दिन पूर्व ही जाना चाहते थे किन्तु माना मनसादेवी ने उनके माथ जाने का वडा आग्रह किया और वहा रुकने के लिए बार-बार प्रार्थना की। उन्होंने उन्हें समभाया और कहा कि आप सब हमारे पीछे आउएगा। हमारा वहा कुम्भ में पूर्व पहुचना आवश्यक है। महाराजजी ने वम्बई में एक माम तक उपदेश किया था। उसमें उनकी प्रसिद्ध सर्वत्र चन्द्रिका के समान व्याप्त होगई थी और मूर्य के समान उन्होंने सैकडो मनुष्यों के अज्ञानाधकार का विनाश किया था। उसमें लोगों में परिचय भी बहुत होगया था। जब महाराजजी ने वम्बई में प्रम्थान किया तब एक भारी जन-समूह ने बड़े सम्मानपूर्वक विदाई दी। पचासों नर-नारी भेट-पूजा देने के उच्छुक थे किन्तु महाराजजी ने कथा समाप्ति पर ही जब किसी प्रकार की भेंट स्वीकार नहीं की थी तो इस समय भी इन भेंटों को स्वीकार नहीं किया।

# प्रयागराज के कुम्भ पर दो मास का निवास

श्री महाराजजी वम्बई से प्रम्थान करके प्रयागराज पधारे। त्रिवेणी के किनारे पर कोट वावा दयाराम में कई गुफाए थी। यह स्थान वडा रमणीय था। गगा श्रीर यमुना के दर्गन होते रहते थे। यह स्थान एक ऊची पहाडी पर स्थित है। सारा मेला यहा से दृष्टिगोचर होता था। ऊचाई पर होने के कारण बहुत-सी सीढिया चढकर टम म्थान पर पहुचा जा सकता था। महाराजजी श्रपने मित्र पचानन्द के पास जाकर ठहर गए। दन्हें ऊपर की मजिल पर एक कमरे में ठहराया गया। यहा पर जब इन्हें

नवयुग के निर्माता विश्ववद्य बापू महात्मा गाधी के ग्रसामयिक निधन का दु खद समाचार मिला तब महाराजजी को बड़ा ग्राघात-सा हुग्रा ग्रीर इन्होने एक दिन का उपवास किया। भारतीयों के हाथ में शासनसूत्र ग्रभी ग्राया ही था इसलिए इनसे मार्गदर्शन प्राप्त करने की देश को ग्रभी बहुत ग्रावश्यकता थी। ये भारत की स्वतत्रना के प्राण थे ग्रीर ये ही भारत के स्वातत्र्य सग्राम के महासेनानी थे। यदि भगवान् इन्हें कुछ वर्ष ग्रीर जीवनदान देते तो भारत की कायापलट हो जाती। भारत की ग्राज जो दयनीय दुर्दशा हो रही है वह कभी न होती ग्रीर वह उन्नित के उच्चतर शिखर पर होता, किन्तु हमारे मन कुछ ग्रीर थी विधिना के मन ग्रीर। विधि के विधान को समस्त देश के दु खित दिलों ने नतमस्तक होकर स्वीकार किया।

कोट बाबा दयाराम मे निवास-इस स्थान पर महाराजजी पहले भी स्वामी पूर्णानन्दजी के जीवनकाल में, कई वार कुभ ग्रौर ग्रर्धकुभी के ग्रवसरो पर निवास कर चुके थे। स्वामी पचानन्दजी से वहुत पुराना परिचय या ग्रत इस स्थान पर इनके पास विराजे। महाराजजी के अनन्य भक्त अमृतसर के सेठ देवीदास प्रयाग में क्षेत्र खोलने के लिए आए हुए थे। इनके परम सेवक सेठ तुलसीराम भी सपरिवार इस ग्रवसर पर ग्राए हुए थें। ग्रन्य भक्त भी यहा कुभ पर ग्राए थे। इस ग्रवसर पर सेठ तुलसीराम ने श्रपने पुत्र ग्रोमप्रकाश का यज्ञोपवीत सस्कार महाराजजी से करवाया तथा उसे मत्रदीक्षा दिलवाकर इनका शिष्य वनवाया । वम्वई निवासी लाला देवकी-नन्दन की पत्नी ने बद्धाजलि होकर महाराजजी से निवेदन किया, "अव तो भ्रोमप्रकाण म्रापका शिष्य वन गया है इसलिए में म्रपनी भतीजी विमला का विवाह उससे करवाना चाहती हू। ग्राप इसमे मेरी सहायता करे। ग्राप ही इस कार्य को करवा सकते है।" सेठ देवकीनन्दन की पत्नी का नाम ग्राज्ञावती था ग्रीर वह महाराजजी की वडी भक्ता थी। महाराजजी ने सेठ तुलसीराम तथा उनकी पत्नी माता मनसादेवी को स्रोमप्रकाश का विवाह विमला से करने का ग्रादेश दिया ग्रीर दोनो ने वम्बई जाकर श्राज्ञा का पालन करने का वचन दिया। श्राज्ञावती वडी दानशीला महिला थी। महाराजजी ने गगोत्री में निवास करने का निश्चय कर लिया था ग्रौर वहीं पर एक कुटिया भी अपने लिए वनवा ली थी। आज्ञावती ने अपनी ओर से ४-५ हजार रुपया ,लगवाकर २-४ कुटिया वनवाने के लिए इनसे निवेदन किया ग्रीर वम्बई जोकर रुपया भिजवा देने का वायदा किया। इनके पित का स्वर्गवास होगया था। इसके एक लडका तथा एक लडकी थी।

पचानन्द महाराजजी से वडा प्रेम करते थे। इनके जिष्य महावीर तथा अन्य भक्त इनकी वडी सेवा करते थे। इनमे महावीर तथा उमादेवी विशेष रूप से इनके सुख ग्रीर सुविधा का ध्यान रखते थे। लाला देवीदासजी लगभग दो मास तक यहा रहे। इनकी भजन ग्रीर ग्रभ्यास में बडी निष्ठा थी ग्रीर साधना के समय को ये कभी भी नहीं चूकते थे। महाराजजी लगभग ढाई महीने तक यहा विराजे। इसके पश्चात् ये तथा सेठजी सपरिवार वृन्दावन पधार गए। वहा पर एक धर्मजाला में विराजे। सेठजी का परिवार भी यही ठहरा। यहा विराजकर गोवर्धन पर्वत, नन्दगाव ग्रीर वरसाने की यात्रा की, होलिकोत्सव देखा ग्रीर वृन्दावन के सब मिदरों के दर्शन किए। महाराजजी यहा पर भी एक धण्टा प्रतिदिन कथा किया करते थे। सैकडो यात्रीगण

तथा स्थानीय नर-नारी इनके कथामृत का पान करते थे। एक दिन माता मनसादेवी ने महाराजजी से निवेदन किया, "महाराजजी! हमारे पास जो कुछ भी सम्पत्ति है वह सब ग्रापके ही ग्राशीवाद से प्राप्त हुई है, ग्रतः ग्रापसे प्रार्थना है कि ग्राप भी इसमें से कुछ मासिक खर्च ले लिया करें। यदि ग्राप स्वीकार करेंगे तो हम ग्रापका वड़ा उपकार समभेंगे और इस परिवार पर ग्रापकी वड़ी कृपा होगी।" महाराजजी ने इनकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की क्योंकि ग्रमृतसरवाले लाला श्रीकृष्ण खन्ना इन्हें १००) मासिक दे रहे थे। इसीसे इनका सारा खर्चा चल जाता था ग्रीर ग्रिविक रुपये की इन्हें ग्रावश्यकता न थी। यह देवी ग्राग्रह करती रही ग्रौर पुनः कहा, "वहां से रुपया लेते हुए ग्रापको कई वर्ष होगए हैं। ग्रव हमें भी सेवा का ग्रवसर देने की कृपा करें। वहां से ग्राप खर्चा लेना ग्रंब वन्द कर दें।" महाराजजी ऐसा करना नहीं चाहते थे क्योंकि यदि उनसे रुपया लेना वन्द कर दिया जाता तो लाला श्रीकृष्ण को दुःख होता। इन्होंने माताजी से कहा, "उनका रुपया न लेने से उनको रंज होगा।" इस पर मानाजी ने भट उत्तर दिया, "महात्मा किसी के वंधन में नहीं हैं। उन्हें बुरा क्यों मानना चाहिए ? ग्राप जिसे चाहें उसीको खर्च भेजने के लिए ग्राजा दे सकते हैं।" महाराजजी ने कहा, "हम लालाजी को समकाएंगे। यदि वे प्रसन्नता-पूर्वक हमारी वात मान गए तव हम उनसे रुपया लेना वन्द कर देंगे ग्रौर ग्रापसे ले लिया करेंगे। क्या ग्रापने इस विपय में सेठजी से पूछ भी लिया है?" मनसादेवीजी ने उत्तर दिया, "मुफ्ते उनसे पूछने की क्या ग्रावश्यकता है ? मुफ्ते ग्रपने निजी व्यय के लिए वहुत रुपया मिलता है। मैं तो उसे खर्च भी नहीं कर सकती। मैं ग्रपने खर्च में से त्रापको प्रतिमास रुपया भेजा करूंगी। मुभे ६०० रु० मासिक मिलता है। इसमें से २०० रु० मासिक में ग्रापके लिए भेजा करूंगी।" महाराजजी ने केवल १०० रु० मासिक लेना स्वीकार किया क्योंकि उन दिनों इसी में सब खर्चा चल जाता था।

#### स्वगश्रिम निवास

होली के वाद महाराजजी स्वर्गाश्रम पघारे। यहां पर दो मास के लिए योग प्रिज्ञिक्षण प्रारम्भ कर दिया। ज्ञीतकाल में स्वर्गाश्रम प्रायः खाली रहता था और यह समय ग्रभ्यास के लिए उपयुक्त भी था। इन दिनों ग्रभ्यासियों के निवास के लिए वहुत कमरे सुलभ हो जाया करते थे। प्रातः ४ से ६ वजे तक ग्रौर सायंकाल साढ़े छः से साढ़े ग्राठ वजे तक ग्रभ्यास की कक्षाएं लगाई जाती थीं। ग्रभ्यास के ग्रतिरिक्त प्रातः द से ६ तक ग्रासन ग्रौर प्राणायाम भी सिखाये जाते थे। ग्रपराह्न में ३ से ४ वजे तक नित्य उपनिपदों की कथा हुग्रा करती थी। वहुत ग्रभ्यासी प्रज्ञिक्षण कक्षा में प्रविष्ट हुए। स्वर्गाश्रम में जो यात्री ग्राते थे वे सभी प्रायः ग्रभ्यास करने के लिए ग्राते थे।

ज्येष्ठ के प्रारम्भ में महाराजजी ने उत्तरकाजी के लिए प्रस्थान किया। टिहरी तक तो वस में पथारे और इसके वाद पैदल-यात्रा प्रारम्भ की। मार्ग में नगूणा पड़ाव पर सावित्री, धर्मवती ऋदि कई देवियां उत्तरकाजी जाती हुई मिलीं। यहां से सब इकट्ठे उत्तरकाजी गए और वहां पहुंचकर पंजावी क्षेत्र में ही सब ठहर गए। महाराजजी केवल एक सप्ताह उत्तरकाजी में विराजे और इसके पश्चात् ५ मास गंगोत्री में निवास करने का निज्वय करके वहां के लिए प्रस्थान कर दिया।

# सन् १९४८ मे गंगोत्री मे योग-निकेतन की स्थापना

श्री महाराजजी के गगोत्री पधारने से पूर्व ही स्वामी दयालमुनि ने उनके लिए कृटिया तथा रसोई इत्यादि बनवाकर तैयार करवा दी थी। सन् १९४८ मे श्रापाढ पूर्णिमा के शुभ ग्रवसर पर योग-निकेतन का उद्घाटन किया गया। विधिपूर्वक पूजादि करवाई गई ग्रीर ग्राश्रम मे प्रवेश किया गया । इस शुभ ग्रवसर पर साघु-महात्माग्रो ग्रीर ब्राह्मणो को भोजन करवाया गया। ग्रव तक महाराजजी की ग्रोर से साध्यो के लिए क्षेत्र की व्यवस्था स्वामी प्रज्ञानाथजी के स्थान पर की जाती थी। ग्रव यह व्यवस्था वहा पर रखना उचित नही समभा गया। योग-निकेतन मे ही इसकी व्यवस्था करने पर विचार किया गया जिससे प्रज्ञानाथजी को ग्रौर ग्रधिक कष्ट न हो। ग्राज्ञावती ने ४-५ हजार रुपया कुटियाग्रो के वनाने के लिए महाराजजी को देने का वचन दिया था। इन्होने दयालमुनिजी को एक वडी रसोई, एक उनके लिए कुटिया तथा एक ग्रीपधालय बनवाने के लिए ग्रादेश दिया। स्वामीजी वैद्यक जानते थे इसलिए इन्होने रोगियो के उपचार की स्वीकृति दे दी। गगोत्री से लेकर उत्तरकाशी तक म्रर्थात् ५६ मील तक कही कोई वैद्य म्रथवा डाक्टर न था। न कोई म्रीपधालय था ग्रीर न ग्रस्पताल। इसलिए लोग वडे दु खी थे। सैकडो लोग उपचार के ग्रभाव मे मृत्यु का ग्रास वन जाते थे, जिनमे वालको की सख्या ग्रधिक होती थी। इससे स्थानीय निर्धन जनता ग्रोर यात्रियो को सुविधा हो जाएगी ग्रीर एक वडे कष्ट का निवारण हो जाएगा। महाराजजी ने मुनिजी से मुस्कुराते हुए कहा, "ग्राप ग्रीप-धोपचार द्वारा जनता का कल्याण करना ग्रीर हम योग द्वारा करेंगे। योग द्वारा शारीरिक ग्रौर मानसिक दु खो की निवृत्ति करना ही हमारा उद्देश्य है।" इन्ही दिनो यहा पर डिप्टी साहिब तथा रेजर साहिब ग्राए हुए थे। इनसे भूमि के लिए निवेदन किया गया। इन्होने भट ग्राज्ञा देदी कि जितनी भी जमीन की ग्रावव्यकता हो उतनी ली जा सकती है। इसको घेर कर इसका एक वडा ग्रहाता वना दिया गया ग्रीर इसके भीतर कुटियाग्रो का निर्माण प्रारम्भ होगया। सर्वप्रथम ग्रीपिधयो के लिए दान श्रीमती धर्मवतीजी ने ५०० रुपया दिया। वहिन धर्मवतीजी से पाठक सुपरिचित हैं। इन्होने योगविषयक कई जिज्ञासाए महाराजजी से की थी ग्रीर वडे पाँडित्यपूर्ण ढंग से ग्रहैतवाद की पुष्टि की थी। इन्हीं धर्म वहिन के रुपये से ग्रीपधालय की स्थापना की गई थी।

यहा पर विजयादशमी करने के पश्चात् श्री महाराजजी ने उत्तरकाशी के लिए प्रस्थान किया। उत्तरकाशी में कुछ दिन तक निवास किया। इसके पश्चात् स्वर्गान्श्रम पधार गए। दीवाली के पश्चात् चार मास के लिए साधना शिविर प्रारम्भ कर दिया। १५ नवम्बर से १५ मार्च तक का कार्यक्रम वनाया गया। इस ग्रभ्यास प्रशिक्षण में कई नर-नारियों ने भाग लिया जिनमें इनके नाम विशेष उल्लेख के योग्य है —सेठ तुलसीराम सपत्नीक, जयिकशन सपत्नीक, गुरुचरणदत्त सपत्नीक, योगेन्द्रपाल सपत्नीक तथा श्रीमती भाग्यवन्ती ध्यान तथा ग्रभ्यास में सम्मिलित हुग्रा करते थे।

उत्तरकाशी के लिए प्रस्थान—स्वर्गाश्रम का साधना शिविर समाप्त करके श्री महाराजजी ने उत्तरकाशी के लिए प्रस्थान किया । श्रीमती धर्मदेवीजी ने महाराजजी के साथ ही उत्तरकाशी जाने के लिए प्रार्थना की क्योंकि ये भी वहां जाना चाहनी थी किन्तु कोई उपयुक्त साथ इन्हें नहीं मिल रहा था। इन्होंने स्वीकृति दे दी। धमंदेवीजी के साथ श्रन्य भी कई महिलाए थी। नगूणा तक तो ये सव श्रकेली ही गई किन्तु उनके श्रांगे महाराजजी के साथ गईं। नगूणा श्राकर धमंदेवीजी के कान में ग्रत्यन्त पीठा होने लगी। महाराजजी ने एक श्रांपध कान में डालने के लिए दी श्रोर शिर पर कपटा बधवा दिया। इससे उन्हें शीघ्र श्राराम होगया। सारा मार्ग पैदल चलना था। देविया धीरे-धीरे चल रही थी श्रत महाराजजी द्रुतगित से चल कर उनमें पूर्व हो उत्तरकाशी पहुच गए। ये सब तो महाराजजी को पजाबी क्षेत्र में श्राकर मिली। योगीराजजी उत्तरकाशी में १५ दिवस तक विराजे। इन दिनो धमं- चनी नथा गाविशी को प्राणायाम, ध्यान श्रीर समाधि की विवि श्रीर लाभ बताए। ये दोनो ही श्रभ्याम किया करनी थी।

गगोत्री प्रस्थान-१५ दिन के पश्चात् महाराजजी ने गगोत्री के लिए प्रस्थान किया। एक महीने तक उत्तरकाशी मे रह कर धर्मवतीजी भी निवासार्थ गगोत्री पहुन गई। योग-निकेतन ग्रमी वन ही रहा था ग्रत इसमे तो स्थानाभाव था। यहा पर उनके ठहरने के लिए कोई स्थान न था। स्वामी दयालमुनिजी ने इनके नियास की व्यवस्था भूमानन्द पण्डे के मकान पर कर दी। ये कभी-कभी महाराजजी के नत्यन में उपस्थित होती थी। ये तीन मास तक यहा रही ग्रीर इसके बाद भाद्र-पद मे वापिम उत्तरकाओं चली गई। ये ५०००० तो ग्रीपिंघयों के लिए पहिले दे ही नु ही थी, अब १००० ह० और एक कुटिया के निर्माण के लिए प्रदान किया। महा-राजजी स्वामी तपोवन के साथ योग तथा वेदान्त के विषय में वातचीत किया करते थे। भ्रमणार्थ दोनो उकट्ठे जाते थे। ५ महीने तक गगोत्री मे निवास करके विजया-दशमी के पत्रवात् श्री महाराजजी उत्तरकाणी पधारे श्रीर वहा पजाबी क्षेत्र मे निवास किया। उन्हीं दिनो नृष्टिकेश के पजाबी क्षेत्र के प्रवधक लाला लक्ष्मणदासजी भी उत्तरकाणी आए हुए थे। उनका महाराजजी से वड़ा स्नेह था क्योंकि ये अमृतसर के नियामी थे। वहाँ नहर पर ये प्राय महाराजजी से मिलने श्राया करते थे। ये दोनो साय ही उत्तरकाशी में ऋषिकेश पधारे थे। महाराजजी ने स्वर्गाश्रम पधार कर साधना शिविर की तैयारी की श्रीर १५ नवम्बर से साधना प्रारम्भ करवा दी।

महात्मा ग्रानन्दस्वामीजी की श्री महाराजजी के प्रति भिक्त—महात्मा गुश्शाल्यन्द जी के नाम तथा कामो से सभी पाठक मुपरिचित है। इनमे नेतृत्व की भावना महज थी। ग्रायंसमाज के प्रति उनकी महान् सेवाए है। पाकिस्तान वनने के पश्चात् इनमे तीव्र वैराग्य की भावना का उदय हो ग्राया था। इन्होंने लाहीर में तथा ग्रन्यत्र भी १५ ग्राग्यत के वाद का भीषण नरसहार, ग्राग्नकाण्ड, ग्रात्याचार, मितयों के सतीत्व का ग्रपहरण, लाखों मुहागिनों के मुहाग के चिन्हों का ग्रत्याचार, मितयों के सतीत्व का ग्रपहरण, लाखों मुहागिनों के मुहाग के चिन्हों का हरण, लागों विभवाग्रों का करण कन्दन, करोडों मनुष्यों की सम्पत्ति का नाश, गगन-हरण, लागों विभवाग्रों का करण कन्दन, करोडों मनुष्यों की सम्पत्ति का नाश, गगन-हरण, लागों विभवाग्रों ग्रीर प्रासादों का विनाश ग्रीर सभ्यता तथा सस्कृति के चिन्हों के हाम का नग्न नृत्य ग्रपनी ग्रापों में देखा था। यह इनके वैराग्य का मुख्य कारण था। उनके ६ पुत्र तथा २ पुत्रिया है। ये हिन्दी तथा उर्दू मिलाप के प्रधान सपादक था। उनके ६ पुत्र तथा २ पुत्रिया है। ये हिन्दी तथा उर्दू मिलाप के प्रधान सपादक थे। प्रेम उनका ग्रपना था। मुख के सभी साधन, धन-सम्पत्ति, समृद्धि, ऐश्वर्य सभी के

ये स्वामी थे। ससार की ग्रनित्यता को देखकर इन्होने सन्यासाश्रम मे प्रवेग किया। वैसे वह वर्षों से गृहस्थी होकर भी वानप्रस्थियों के समान जीवन व्यतीत कर रहे थे। पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। अपना सब कार्य अपने सुयोग्य पुत्रों को सौप दिया था। ग्रयने परिवार को सूचित किए विना ही इन्होने यमुनानगर मे जाकर स्वामी ग्रात्मानन्दजी से यन्यास ले लिया। सन्यास ग्रहण के समय इनकी पत्नी तथा पुत्रो ग्रौर पुत्रियो को इस वात का पता लगा। सस्कार की समाप्ति के पूर्व सारा परिवार यमुनानगर पहुच गया था। इनकी वर्मपत्नी मेलादेवी वडी दु खी हुई। ये इसी क्षण से अपने को अनाथ असहाय समभकर रुदन करने लगी। पहले लाहार मे सव घन तथा सम्पत्ति लुट गई थो। वडी कठिनाई से प्राण वचाकर परिवार वहा से भागा। जैमे-तैसे फिर से सारा कारोवार देहली मे प्रारम्भ किया। जाति तथा मुख से जीवन व्यतीत होने लगा तो इनके पतिदेव ने मन्यास ले लिया। ये सर्वा-विक चिन्तित रहती थी। इसी समय श्रीमती भाग्यवन्तीजी इनके पास ग्राई ग्रीर कहा, "ग्राप मेरे साथ पूज्यपाद ब्रह्मचारी व्यासदेवजी के पास चलो । ग्राजकल उनका योगसावना शिविर लगा हुग्रा है । वहा जाकर ग्रापको ग्रवव्य शांति लाभ होगी ग्रीर सब चिन्ताए दूर हो जाएगी ।" भाग्यवन्तीजी माता मेलादेवी को लेकर स्वर्गाश्रम पहुच गई । महाराजजी ने इनके साथ वहुत अच्छा व्यवहार किया । विविध प्रकार से समभाकर इनको सान्त्वना दी ग्रौर घीरज वयाया। इनके खान-पानादि की व्यवस्था अपने पास कर दी। इनके निवास के लिए एक कमरा अपनी कोठी मे ही दे दिया और उनकी सेवा के लिए एक नौकर तैनान कर दिया। इन्हे वडे स्नेह तथा वात्सल्य से अभ्यास करवाना प्रारम्भ कर दिया। नित्यप्रति नाना प्रकार के वैराग्यजनक उपदेश इन्हें दिया करते थे। एक मप्ताह के भीतर ही माताजी की स्थिति अभ्यास मे ऐसी होगई जैसी कई-कई वर्ष के अभ्यासियों की भी नहीं हुई थी। व्रह्मरध्न मे दिव्य प्रकाश उत्पन्न होकर नाना प्रकार के पदार्थों के दर्शन करवाने नग गया था। लगभग दो-तीन घटे का ग्रासन स्थिर होगया था। थोडे ही दिनो मे ये सर्व चिन्ताओं से मुक्त हो गई और अपने को स्वस्थ और प्रसन्न-सी अनुभव करने लगी। अभ्यासकाल में इन्हें विशेष ग्रानन्द की ग्रनुभूति होनी प्रारम्भ होगई थी। महाराजजी की विशेष दयादृष्टि का ही यह परिणाम था। माताजी स्वस्थ होगई। इनके सव रोग तथा शोक दूर होगए। अब पतिदेव के सन्यास लेने का सव दु ख और सन्ताप जाता रहा। इनकी इस अभूतपूर्व ग्राव्यात्मिक स्थिति को देखकर मभी अभ्यासी आव्चर्यचिकत होकर दान्तों तलें अगुली दवाते थे। एक मास के पश्चात् माताजी ने अपने पुत्रो-पुत्रियो तथा पुत्रवयुत्रों को सूचित किया कि "मुभे इस सुख-वाम मे पहुचकर एक विशेष ग्रानन्द का ग्रनुभव हुग्रा है। ऐसा ग्रानन्द ग्राज तक कभी ग्रनुभव नहीं हुग्रा। इस ग्रलौकिक ग्रानन्द का वर्णन लेखनी से नहीं किया जा सकता। मुक्ते एक ग्रहिनीय दिव्यवक्ति लाभ हुई है जिसमे मेरे ग्रदर के कपाट खुल गए हैं ग्रीर मुक्ते ग्रलीकिक वाति प्राप्त होगई है।" इनके पत्रो को पढ़कर इनका ग्रपना परिवार तथा दूर ग्रौर समीप के सभी सम्बन्धी स्वर्गाश्रम मे ग्राए ग्रौर सवने ग्रभ्याम की कक्षाग्रो में बैठकर ग्रभ्यास प्रारम्भ कर दिया । इनके पुत्र रणवीर ग्रीर पुत्रवधू गीला, ग्रोमप्रकाग ग्रौर इनकी पत्नी गान्ता, इनके दामाद नारायणदास ग्रीर पुत्री सावित्री ग्रादि सभी योगसाघना मे प्रवृत्त होगए। सवने ग्रच्छी प्रगति की ग्रोर मुखलाभ

किया। माताजी ने अपने पितदेव को, जिन्होंने कुछ मास पूर्व ही सन्यास वारण करके अपना नाम महात्मा आनन्दस्वामी रम लिया था, एक पत्र लिखा। वे उस समय देहरा- दून में तपोवन में मानत्रत धारण करके तप और साधना में लगे हुए थे। यह पत्र वही पर उनके पास भेजा गया था। पत्र निम्न प्रकार से लिखा गया था —

पूजापाद श्री १०= प्रात स्मरणीय स्वामीजी महाराज,

सादर चरण स्पर्श !

कुछ मास हुए, ग्राप मुक्ते सान्द्रान्धकार मे धकेल ग्रीर मुक्ते ग्रसहाय बनाकर चतु गए थे। जिस श्रय-मार्ग का श्रवलम्बन श्रापने स्वय किया था उसी पर ग्रापको मुभे भी श्रपने साथ ने चलना चाहिए या । मेरा कत्याण भी उसी मार्ग की पथिक बनने में था । परन्तु मुभे रोद ई कि स्रापने स्रपने कर्त्तव्य का पालन नही किया स्रीर मुभे प्रेय-मार्ग के प्रत्येपूर में फेककर ग्रीर गृह-त्याग कर सन्यास धारण करने चले गएँ। श्रापके प्रत्यान के पश्चान् मुभ्रे यह निश्चय हुन्ना कि समार ग्रनित्य है, सारे सम्बन्ध न्यार्यपूर्ण है, गोर्ट प्रपना नहीं है, उसलिए इस ससार से नेह करना ब्रात्मवचना है। भातयत्यात भगयान पनिनपावन है, पाषियों के परित्राना है, ग्रमहायों के सहाय, निराक्षितो है आश्रय, निर्धनो के घन तथा अनाथों के नाथ है। उसी सर्वशक्तिमान की कुना से मुभे टिब्यालोक प्राप्त हुया है। उसको प्राप्त करके मै अबकार के गर्त से बाहर निरान आई हू। अब में पूर्ण प्रकाश से हूं, आनन्द और शान्ति का अनुभव वर रही हू। श्रापके नन्यास नेकर सुके छोटकर चने जाने पर मुक्ते महान् दुव त्रमा भा । स्रापक चन्त्र जाने के बाद मुँके चहु स्रोर स्रथकार ही स्रथकार दृष्टिगोचर होता या । मुक्ते ब्राना भविष्य ब्रिनिश्चयात्मक मालूम होता था ब्रीर ब्रधकार के गर्भ मे प्रविष्ट ह्या या प्रतीत हो रहा था। जिस मेरे जीवनसाथी ने विवाह के ग्रवसर पर मनेक प्रतिवाए की यी भीर जिनकी सर्वागिनी बनकर मैने सासारिक दु ख तथा मुख का उपभोग किया था वे अलीकिक मुख और शान्ति की खोज मे मुभे छोडकर चर्च गए। जिस अमृत्य वस्तु की खोज मे आप अपनी पत्नी, पुत्र और पुत्रियों का पिन्यांग फरफे, लीकिक फेटवर्य को लात मारकर चले गए है, वह अलीकिक विभूति, बर परम झान्ति तथा वह ग्रहितीय श्रानन्द महानात्मा नैष्ठिक ब्रह्मचारी पूज्य ध्यानदेवजी महाराज की शिप्या बनकर प्राप्त हुन्ना है। वह गान्ति तथा स्नानन्द वर्णनानीन है। न वाणी उसे कह सकती है और न नेखनी लिख सकती है। इनका सत्सग होने के बाद से स्नापके गृह-त्याग स्त्रीर सन्यास धारण करने का दुख तथा मांक जाता रहा। ग्रव मुक्ते उसमें हुए हो रहा है। ग्रव मेरी सब ग्रातुरता, व्याकुलता तथा परेवानी जाती रही है। में श्रव पूर्ण वान्ति का श्रनुभव कर रही हू। मेरी श्रापसे प्रार्थना है कि ग्राप भी यहा प्राए ग्रीर श्री महाराजजी में इस प्रलीकिक दिव्य ज्ञान को प्राप्त करके पूर्ण मुख, बान्ति श्रीर ग्रानन्द का अनुभव करे। श्रापके श्रेय पथ मे यह विव्यालीक गहायक होगा ग्रीर श्रापको श्रात्म-ज्ञान नाभ होगा। इसे प्राप्त करके श्राप जनकृत्य हो जाएंगे। यह दिव्य ज्ञान जन्म-जन्मान्तरो के ग्रावागमन ग्रीर सर्वे दु ख निवृत्ति का साधन होगा। ग्राप मेरे जीवनसाथी थे ग्रीर ग्रापने मुक्त पर ग्रनेक उपकार किए है, उन सबका स्मरण करके में श्रापको सच्चे श्रात्म-ज्ञान श्रीर बहा-ज्ञान की प्राप्ति के पथ पर चलने की प्रेरणा करती हू। ग्राप ग्रपने ग्रमूरय जीवन को सार्थक वनाने के लिए पूज्य महाराजजी के चरणों में उपस्थित हो। यहा आकर आपके उद्देश्य की पूर्ति होगी और आपका मानवजीवन सफल हो जाएगा।

श्रापकी चरणसेविका मेला देवी

इस पत्र को पढ़ते ही श्री ग्रानन्दस्वामी सरस्वती जी महाराज की ग्रात्मविज्ञान की जिज्ञासा ग्रत्यन्त प्रवल हो उठी। श्री महाराजजी का ४ मास का योगाभ्याम का विविर समाप्त हो चुका था। श्री ग्रानन्दस्वामीजी महाराज स्वर्गाश्रम श्री महाराजजी के दर्जनार्थ ग्राए। योगीराजजी ने उन्हें गगोत्री पचारने का ग्रादेश दिया। ग्रानन्दस्वामी-जी उस समय तो दर्जन करके चले गए ग्रीर निब्चित निथि पर ऋषिकेश पहुच गए। महाराजजी स्वामीजी को तथा अपने सेवक को साथ लेकर गगोत्री के लिए रवाना हुए। टिहरी तक तो वस मे गए। इसके पञ्चात् सारी यात्रा पैटल करनी थी। तीन दिन में उत्तरकाशी पहुच गए । यहा पर ८-१० दिन तक पजाबी क्षेत्र मे निवास किया। तत्पञ्चात् उत्तरकांशी से मजदूर साथ लेकर ४ दिन मे गगोत्री पहुच गए। तीन-चार दिन में मार्ग की यकान दूर होगई। महात्मा ग्रानन्दस्वामी को महा-राजजी ने स्थानीय सब महात्माय्रो के दर्शन करवाए । स्वामीजी महाराज बहुन वर्षों से सावना कर रहे थे। गम, दम, नितिक्षा तथा उपरित रूप नाधन-चतुप्टय-सम्पन्न थे। कई वर्णों से यम ग्रीर नियमों का ग्रक्षरण पालन कर रहे थे। ग्रासन भी ३-४ घण्टे का सिद्ध हो चुका था। वहुत पुराने अभ्यासी थे। इन्होने केवल प्रदिन में ही आत्म-ज्ञान प्राप्त कर लिया। थी महाराजजी का मनोवल भी इन दिनो वहुत वृद्धि पर था और स्वामीजी के प्रति इनका अत्यन्त वात्सल्य भाव था। स्वामीजी आर्य-समाज के वड़े स्तम्भो में से हैं, अत महाराजजी ने वड़े परिश्रम से इन्हें शीघ्र ही म्रात्मज्ञान करवा दिया। योगीराजजी को यह विश्वास या कि यदि इन्हे म्रात्मज्ञान करवा दिया जाएगा नो इनके द्वारा लाखों का उपकार और कल्याण होगा क्योंकि ये उपदेष्टा ग्रौर परिव्राजक है।

# श्री श्रानन्दस्वामीजी को श्रात्मसाक्षात्कार

श्री स्वामीजी महाराज योगीराजजी के प्रथम जिप्य है जिनको इन्होंने ग्रपनी सारी श्रात्मजित लगाकर जीन्नातिजीन्न ग्रात्मविज्ञान प्राप्त करवाया ग्रीर श्रात्म-साक्षात्कार करवाया। इनको प्रात काल ग्राठ वजे उपस्थित होने का ग्रादेण दिया गया था। इसी के ग्रनुसार नियत समय पर ये उपस्थित होगए। योगीराजजी ने इन्हें सिद्धासन लगा कर दो घण्टे तक बैठने के लिए ग्राज्ञा की। त्राटक करवाया ग्रीर फिर अन्तर्ध्यान होने के पञ्चात् नेत्र वन्द करके ब्रह्मरश्र में ध्यान को ले जाने का ग्रादेश दिया ग्रीर समक्षाया कि "ब्रह्मरश्र में ध्यान करने से एक महती दिव्य ज्योति प्रकट होगी इसको देखकर घवराने तथा भयभीन होने की ग्रावश्यकता नही है। इस दिव्य ज्योति को स्थिर करने का प्रयत्न करना। इस पर ग्रपना ग्राधिकार जमाने की कोशिश करना ग्रीर फिर इसे मूलाधार की ग्रोर फेकना। इस दिव्य ज्योति का रग विद्युत के समान होगा। इसके सयोग से मूलाधार में रक्तवर्ण ग्रथवा पीतवर्ण ग्रथवा ज्वेतवर्ण की एक ग्रीर विजेय ज्योति प्रकट होगी जो भीतर में ग्रापके सारे गरीर को

प्रकाशित कर देगी। इसके द्वारा आप अपने सारे स्थूल गरीर को अन्दर से देख सर्नेंगे। जिस प्रकार से टाक्टर गरीर को चीर-फाडकर भीतर से नस, नाडी, ग्रस्थि, मज्जा स्रादि को देख नेता है उसी प्रकार से स्राप इस ज्योति के द्वारा सब कुछ स्थूल शरीर मे देख सकेंगे। शरीर के भीतर ग्रापको सब चीजे प्रत्यक्ष दिखाई देंगी ग्रीर ग्रापको उन गरीर का वास्तविक ज्ञान हो जाएगा जिससे मनुष्य का भारी ममत्व होता है।" स्वामीजी ने जब बाटक के पण्चात् ब्रह्मरश्च मे प्रवेश किया तब महती दिव्य ज्योति प्रकट हुई। उस दिव्य ज्योति का स्वामीजी को प्रवल धक्का लगा और वे २-३ फीट ऊचे उठेकर भूमि पर गिर गए। ऊचे उठते समय तथा नीचे गिरते समय इनका ग्रासन यथायत् वया हुत्रा था । चोट तो किसी प्रकार की नहीं लगी किन्तु त्राखे खुल गईं। महाराजजी ने पूछा, "क्या हुग्रा ?" स्वामीजी ने कहा, "ग्रापकी ग्रोर से एक दिव्य ज्योति ने मेरे अन्दर प्रवेश किया। उसमे वटी शक्ति ग्रीर वल था। उसे मैं सहन न कर सका अत उसने मुक्ते उठाकर फेंक दिया। मुक्ते चोट विलकुल नहीं लगी और मेरा ग्रीर मुक्ते बहुत हलका प्रतीत हो रहा है।" महाराजजी ने आजा दी, ''नावधान हो रूर बैठो । उस बार थोडी शक्ति का प्रयोग किया जाएगा ।'' श्री म्रानन्द न्यामीजी पूर्ववत् न्थिर होकर वैठ गए । सर्वप्रथम ब्रह्मरश्च मे मन्द-मन्द ज्योति प्रकट हुई ग्रीर शर्ने -शर्ने तेज होती गई। इसे मुलाधार मे प्रवेश करके सारे शरीर का माक्षात्कार किया । दूसरे दिन के अभ्यास में सारे चक्रो का प्रत्यक्षीकरण हुन्ना । तीसरे दिन के अभ्यान में प्राणविज्ञान, इसकी गति, विधि, व्यापार और १० स्थानी में इसके कार्य, रग, नप उत्यादि को प्रत्यक्षमपेण देया । चौथे दिन के श्रभ्यास से ब्रह्म-रश्च की दिव्य ज्योनियो श्रीर सूक्ष्म शरीर में मनोमय कीप का साक्षात्कार किया। पाचवे दिन मुक्षम भूतो (पच तन्मात्राग्रो) ग्रीर स्थूल भूतो का प्रत्यक्ष किया। इनके नय कार्य-कारणो ग्रीर व्यापारो को देखा । छठे दिन ब्रह्मरश्र मे विज्ञानमय कोष का प्रत्यक्ष विज्ञान ग्रीर उसका मनोमय कोष से प्रत्यक्षीकरण, ग्रीर ज्ञान तथा कर्म इन्द्रियो के कारण तथा कार्य को प्रत्यक्ष रूप से देखा । सातवें दिन श्रानन्दमय कोप मे प्रवेश करके सूक्ष्म प्राण, ग्रहकार ग्रीर चित्त के कार्यों का तथा स्वरूपो का साक्षात्कार किया। अगठवें दिन कारणरूप प्रकृति ग्रीर चित्त मे ग्रात्मा के स्वरूप को दिखाया गया और ऋपने स्वरूप में स्थिति करवाकर कई घण्टे की समाधि में स्थिर किया। कई घण्टे की समाधि ने उठने के पव्चात् श्री स्वामीजी ने महाराजजी के चरणार-विन्दों को रपर्श करके कहा, "महाराजजी । श्रापकी श्रपार कृपा से श्राज मैं कृतकृत्य होगया । श्रापन जन्म-जन्मान्तरों की मेरी श्रव्यात्मिषपासा को शान्त कर दिया । ग्राज मेरी उच्छा पूर्ण हुई है। ग्राज मैने इस मानवजीवन को सफल समभा है। जिस उद्देश्य मे गृह-त्यागं करके सन्यास घारण किया था वह ग्राज प्राप्त हुग्रा है। वास्तव में मुक्ते ग्राज ही यह बात समक में भाई है कि मेरा यथार्थ स्वरूप क्या है। मैं कव मे रम स्वरूप-स्थिति के लिए भटक रहा था। ग्राज ग्रात्मदर्शन पाकर इधर-उधर भटकता ज्ञान्त होगया । ग्राप कृपा करके इतना ग्राजीर्वाद मुक्ते ग्रौर दीजिए कि यह विज्ञान स्थायी हो जाए।" महाराजुजी ने कहा, "कुछ काल के श्रभ्यास के पश्चात् यह दृहभूमि हो जाएगा। श्रव परमवैराग्य श्रवशेष है जो श्रापको स्वय करना होगा। श्रमी श्रापको श्राया विज्ञान ही प्रदान किया गया है। श्रभी श्राप इतने के ही श्रधिकारी है। जब ग्रापका यह विज्ञान दृढभूमि हो जाएगा तब ग्रापको ब्रह्म-विज्ञान प्रदान किया

जाएगा। जब यह विज्ञान दृढभूमि हो जाए तब इसे उचित श्रधिकारी को ही प्रदान करना, किसी ग्रन्य को नही।" इस पर स्वामीजी ने निवेदन किया, "महाराजजी। म्रापको तो म्रापके पूज्य गुरुदेवजी ने केवल १७ घण्टे की समाधि में ही दोनो विज्ञान प्रदान कर दिए थे।" महाराजजी ने कहा, 'हमारे श्रीर श्रापके जीवन मे वहुत श्रन्तर है। हम वालब्रह्मचारी है ग्रौर सारा जीवन इसी योग-साघना मे लगाया है। हमारे कई पूर्वजन्मो का यह प्रयत्न है। इस जीवन मे भी वहुत तप, त्याग, वैराग्यपूर्वक व्रह्मचर्य धारण करके ग्रनेक साधनाए की है। ग्रापने ग्रपनी गक्तियों का गृहस्थाश्रम मे व्यय कर दिया है। इसलिए ग्रापकी ग्रीर हमारी तुलना नही हो सकती। ग्रापको भी ग्राठ दिन मे १६ घन्टे मे साधना करवाकर स्वरूप का साक्षात्कार करवाया गया है। ब्रह्मविज्ञान इसके दृढभूमि होने पर जब अवसर आएगा और आप अधिकारी वन जाएगे तब प्रदान किया जाएगा।" स्वामीजी महाराज ५ मास तक गगोत्री ठहरे ग्रीर प्राप्त ग्रात्मिवज्ञान को दृढभूभि करते रहे। स्वामीजी ने गुरुदीक्षा प्राप्त करने के उप-लक्ष्य मे पाच सौ रुपया महाराजजी को भेट करना चाहा किन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किया क्यों कि उन्होंने किसी साधु या सन्यासी से भेट न लेने की प्रतिज्ञा ले रुकी थी। जिस समय दोनो मे इस प्रकार का विवाद चल रहा था उसी समय स्वामी दयाल-मुनिजी वहा ग्रागए ग्रौर कहा कि इस विवाद को मिटाने के लिए यह ५०० रु० मुझे दें दिया जाए जिससे योग-निकेतन में स्वामीजी के लिए एक कुटिया बना दी जाएगी। दोनो इस वात पर सहमत होगए। थोडे ही दिनो मे यह कुटिया वनकर तैयार हो गई। उस पर स्वामीजी महाराज का नाम लिखा गया ग्रीर वह ग्रानन्ट कुटी के नाम से प्रसिद्ध है।

### १६५१ मे तपोवन मे साधना-शिविर

ग्रक्तूवर मास मे महाराजजी ग्रीर स्वामीजी ने उत्तरकाशी के लिए प्रस्थान किया ग्रीर वहा पर पजावी क्षेत्र मे ठहरे। स्वामीजी महाराज ने योगीराजजी से निवेदन किया, "ग्राप इस वार दो मास के लिए साधना-शिविर देहरादून स्थित तपोवन में लगाने की कुपा करे।" महाराजजी ने दिसम्बर तथा जनवरी मास में तपोवन में साधना-शिविर लगाने की स्वीकृति दे दी। ग्रानन्दस्वामीजी महाराज ने तपोवन पधार कर साधना-शिविर की सारी व्यवस्था कर दी ग्रीर सव पत्रों में इस विषय की सूचना निकलवा दी ग्रीर सर्वत्र घोपणा करवा दी। श्री महाराजजी नवम्बर के ग्रन्त में देहरादून पधार गए। यहा पर वावू दौलतरामजी के पास २-४ दिन ठहरकर तपोवन पधारे।

श्री श्रानन्दस्वामीजी ने गगोत्री से कई लेख पत्रो तथा पित्रकाश्रो में लिखकर भेजे थे। इनमें गगोत्री तथा यहां के सन्तों की मिहमा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया था। महाराजजी से विज्ञान प्राप्ति के विषय में भी कई लेख श्रापने प्रकाशित करवाए थे। इससे लोगों में योग श्रौर श्रात्म-विज्ञान के प्रति रुचि जागृत हुई। इसलिए तपोवन में योगाभ्यास के लिए सैंकडों की सख्या में लोग श्राए। यहा पर साधकों के निवास तथा भोजन की व्यवस्था वहुत अच्छे ढग पर की गई थी। श्रीमती धर्मदेवी तथा श्रीमती भाग्यवन्ती तपोवन में दर्शनार्थ श्राई श्रौर निवेदन किया, "महाराजजी । श्रानन्द स्वामीजी ने श्रपने व्याख्यान में कहा था, 'महाराजजी ने मुक्ते तो कृतकृत्य कर दिया

है। मेरा कल्याण होगया है। मैं उनका वडा ऋणी हू। उन्होने भ्रात्म-विज्ञान प्रदान करके मुभपर महान उपकार किया है।' श्रापने हर की पौडी पर वचन दिया था कि श्रापकी समाधि लगवाकर श्रापको श्रात्म-विज्ञान करवा देगे, पर श्रभी तक श्रापने कृपा नहीं की।" महाराजजी ने फरमाया, "स्वर्गाश्रम मे दो मास का साधना-ि विर लगेगा। वहा पर आपकी इच्छा की पूर्ति की जाएगी।" तपोवन मे योग प्रशिक्षण के सम्बन्ध में प्रात ४ वजे से ही कक्षाएँ प्रारभ होती थी। पहली कक्षा दो घण्टे तक लगती थी। इसके पश्चात् ढाई घण्टे की कक्षा ग्रीर फिर एक-दो घण्टे की कक्षा लगती थी। इस प्रकार से प्रात चार से साढे दस वजे तक योग प्रशिक्षण कार्य होता था। भिन्न-भिन्न ग्रन्यात्म स्तर के लोगो के लिए ग्रलग-ग्रलग कक्षाए लगाई जाती थी। भारतवर्ष के योग सम्बन्धी साहित्य में कही पर भी इस प्रकार से योग सिखाने की पद्धति का उल्लेख नहीं है। यह नवीन प्रणाली है। यह महाराजजी के अपने ही दिमाग की सूभ है। नया ग्राविष्कार है। नवीन ग्रनुसधान है। इस पद्धति से ग्राध्यात्मिक पथ के पथिको को महान लाभ हुमा है। जो म्रम्यासी म्रीर साधक जिस स्तर पर होता था उसे उसी स्तर के साधकों के साथ वैठकर साधना करनी होती थी। साधनाभ्यास के कई वर्ग वने हुए थे। जो जिस वर्ग के योग्य होता था उसे उसी वर्ग के साथ योग की शिक्षा दी जाती थी। तपीवन मे बहुत से साधक ठहरे हुए थे। देहरादून से भी प्रतिदिन श्रभ्यामार्थी ग्राते थे। प्रति रविवार को मायकाल महाराजजी को दो घण्टे तक व्याख्यान होता था । हजारो नर-नारी इस उपदेशामृत का पान करने के लिए दूर-दूर से आते थे। एक दिन एक विद्वान् डाक्टर ने महाराजजी से पूछा, "क्या आप अपने श्रोताओ को मैस्मराईज कर देते हैं ? लोग नितान्त ज्ञान्त होकर ग्रापके उपदेशो का श्रवण करते है। उनके सास लेने तक की भी ग्रावाज मुनाई नहीं देती।" महाराजजी ने कहा, "मैं तो मैस्मरिजम जानता नहीं। हा, मेरे योगवल से प्रभावित होते हो तो यह दूसरी वात है।" इन दिनो महाराजजी के भाषण प्राय अष्टाङ्ग योग पर हुआ करते थे।

रायसाहिव विश्वेश्वरनायदत्तजी को आरोग्य-दान—देहरादून से श्रीमती शीलादेवीजी दर्शनार्थ आर्ड । इन्होंने महाराजजी के योग तथा मानसिक शक्ति के विषय में वडी प्रसिद्धि मुनी थी। नगर में सभी लोग इनके भाषणों की भूरि-भूरि प्रशसा करते थे। इससे प्रमावित होकर इन्होंने महाराजजी से प्रार्थना की, "महाराजजी। मेरे पितदेव आपके दर्शनार्थ आना चाहते है।" महाराजजी ने कहा, "पूछने की क्या आवश्यकता है वे जय चाहे आ सकते हैं।" इस पर शीलादेवी ने कहा, "यहा आने में चढाई चढनी पटती है। वे वडे शक्तिहीन होगए हैं। चिरकाल से वीमार है। घोडे पर भी उनकी चढने की हिम्मत नहीं होती, वरना घोडे पर ही आ जाते।" महाराजजी ने वावा गुरमुखिंसहजी से कहकर डाण्डी का प्रवध करवा दिया। शीलादेवी के पित का नाम विश्वेश्वरनायदत्त था। भारत सरकार में नौकरी करते थे। १६००६० वेतन पाते थे। राज्य-सेवा से निवृत्त होकर वीमार रहने लग गए थे। अत्यन्त दुर्वल होगए थे। अनेक उपचार करवाए किन्तु किसी से भी लाभ नहीं हुआ। महाराजजी की प्रशसा मुनी थी कि वे वडे सिद्ध पुरुप है, हिमालय के योगी हैं। गगोत्री से आए हैं। इनके आशीर्वाद से ही भयकर रोगो के रोगी भी ठीक हो जाते है। इसलिए इनके मन में इनसे आशीर्वाद प्राप्त करने की इच्छा हुई। इसी भावना से महाराजजी के में भी इनसे आशीर्वाद प्राप्त करने की इच्छा हुई। इसी भावना से महाराजजी के

दर्शन की उत्कट ग्रभिलापा उत्पन्न होगई। महाराजजी ने डाण्डी भेजकर दत्तजी को बुलवा लिया। इन्होने स्राकर ग्रत्यन्त श्रद्धा ग्रीर भिवत से प्रणाम किया ग्रीर हाथ जोडकर प्रार्थना की कि "मैं भ्रापकी योग-साधना की कक्षा मे प्रवेश पाना चाहता हू।" वास्तव मे इनकी इच्छा ग्रारोग्य लाभ करने की थी। योग-साधना को तो केवल निमित्त वनाना चाहते थे। इससे एक पन्य दो काज हो जाते थे, ऋर्यात् योग-साधना भी करते और ग्रारोग्यता का भी लाभ हो जाता । महाराजजी ने ग्राज्ञा प्रदान कर दी ग्रौर वावा गुरमुखसिंह से डाण्डो के लिए चार ग्रादिमयो का भी प्रवध करवा दिया। कोमलता, द्यालुता और सहानुभूति साधु-महात्माश्रो के सहज गुण होते है, इसलिए दत्तजी को महाराजजी ने वडे स्नेह, प्यार तथा वात्सल्यभाव से ग्रपनाया । धीरे-धीरे दत्तजी की योगसाधना मे ग्रच्छी प्रगति होने लगी ग्रौर स्वास्थ्य भी सुधरने लगा। गरीर मे शक्ति ग्राने लगी। पाच-सात दिन वाद उन्होने महाराजजी से निवेदन किया कि ग्रव उन्हें पालकी की ग्रावश्यकता नहीं क्योंकि ग्रव वे घोडे पर सवार होकर ग्राने में सक्षम होगए थे। थोडे दिनों में ये पैदल ग्राने में भी समर्थ होगए। यह सब महाराजजी की कृपा का परिणाम था। इन्होने ग्रपने योग-वल से इनमे गिवत का सचार किया ग्रौर इन्हे नीरोग कर दिया। शारीरिक उन्नति के साथ-साथ साधना मे भी उन्नति हुई। म्रव म्रभ्यास मे इनकी कुण्डलिनी शक्ति जागृत होकर गरीर म्रीर चक्र विज्ञान म्रीर प्राण विज्ञान होगया था। महाराजजी के प्रति वे सदैव अपनी कृतज्ञता प्रकट करते थे ग्रौर इनके प्रति बडी श्रद्धा ग्रौर भिक्त होगई थी। वे इस वात को खूव समभते थे कि महाराजजी की कृपा से ही वे स्वस्थ हुए है ग्रीर इन्होने ही जीवन-दान दिया है, ग्रत इन्हीके चरणो मे रह कर शेप जीवन व्यतीत करने का निञ्चय कर लिया।

ब्रह्मचारी जगन्नाथजी का आगमन—इन्ही दिनो मे ब्रह्मचारी जगन्नाथजी कई वर्षों के पश्चात् पुन साधना मे आए और दो मास यहा साधना की। इन्होंने ब्रह्मरध्न विज्ञान मे विशेष सफलता लाभ की और महाराजजी के चरणों में रह कर ही अपना कल्याण समभा। अपना यह निश्चय करके महाराजजी के प्रत्येक चार मास के शिविर में आना प्रारम्भ कर दिया और कई वर्ष की कठिन साधना के पश्चात् आत्मविज्ञान में विशेष सफलता प्राप्त की।

कैंप्टेन जगन्नाथजी का ग्रागमन—कैंप्टेन श्री जगन्नाथजी सेवा से निवृत्त होकर सीधे तपोवन के शिविर में पहुंचे श्रीर महाराजजी से हाथ जोड़ कर प्रार्थना की, "मेरी धर्मपत्नी का स्वर्गवास होगया है। पुत्र ग्रीर पुत्रियों के विवाह कर दिए हैं। सब ग्रपने-ग्रपने स्थान पर सुखी है, इसलिए परिवार का मुक्ते कोई वधन नहीं है। सुक्ते पेन्जन मिलती हैं इसलिए निर्वाह की भी कोई चिन्ता नहीं हैं। ग्रापके दर्शन कर मैं ग्रपने को बड़ा गौरवान्वित समक्तता हू। ग्रव मैं ग्रापके श्रीचरणों में निवास करके योग द्वारा ग्रात्मविज्ञान प्राप्त करना चाहता हू। मैं कई वर्षों से किसी योग्य ग्रीर विद्वान् योगी की तलाश में था। ग्राज ग्राप जैसे महान् योगी ससार में दुर्लभ है। मेरे किसी पुण्यकर्म के विपाक से ग्राज ग्रापके दर्शन हुए है। मैं ग्रव ग्रापके श्रीचरणों में ग्रपने को समर्पित करता हू ग्रीर इसी में ग्रपना कल्याण समक्तता हू।" श्री महाराजजी ने इन्हें ग्राज्ञा प्रदान की। इन्होंने भी कई वर्ष की कठिन साधना के उपरान्त ग्रात्म-विज्ञान लाभ किया।

तय पूत महात्मा प्रभु ग्राश्रितजो का ग्रागमन—इसी ग्रवसर पर महात्मा प्रभु ग्राधितजी (भूतपूर्व महातमा टेकचन्दजी) तपीवन ग्राए। इन्होने महाराजजी के दर्शन रवर्गाश्रम में किए थे। ये वड़े ग्रच्छे लेखक है ग्रीर कई ग्रथो के लेखक है। निय, पजाव नथा अन्य प्रान्तो मे यज्ञ तथा गायत्री जाप के विशेष प्रचार तथा उपदेश हारा जनता का बटा कत्वाण किया है। गृहस्थाश्रम के पश्चात् कई वर्ष तक यानप्रस्थायम मे रहे। अनेक वार मीन तथा प्रन्य कठिन साधनाम्रो द्वारा म्रनेक निह्निया प्राप्त कर ली भी। उनकी वाणी श्रीर व्यक्तित्व मे विशेप श्राकर्पण था, उसलिए उनके हजारो जिप्य तथा जिप्याए थी। हजारो साधक ग्रीर साधिकाए इनके पास भिन का सन्देश तथा उपदेश लेने आते थे। कुछ वर्ष तक वानप्रस्थाश्रम मे रह यार इन्होंने आर्य जाति की नेवा और प्रचार का बहुत काम किया। यज्ञमय जीवन का नदेन देश के कोने-कोने में पहुंचाने के लिए इन्होंने कई ऐसे योग्य शिष्य तैयार किए जिन्होंने प्रपना सारा जीवन उस महान् कार्य में लगाने का निञ्चय किया है। जब उन ही वैराग्य भावना ने उत्कट रूप घोरेण कर लिया तब इन्होंने सन्यास घारेण िया और अपना नाम प्रम् याश्रित रख कर अपना शेप सपूर्ण जीवन सर्वशक्तिमान परमाहमा के अर्पण कर दिया। उन्होंने भी साप्टाग दण्डवत करके महाराजजी से योग-नाधना की रत्रीकृति मागी। योगीराजजी उनकी भक्ति श्रीर तप तथा प्रचार कार्य से बड़े प्रसन्त ये छा। तुरन्त उनको न्वीकृति दे दी । उन्होने तीन वर्ष तक साधना-निविरो में महाराजजी के पास योग-साधन हारा ख्रात्म-विज्ञान प्राप्त किया ख्रीर इस प्राप्ति से अपने को कृतकृत्य समभा। महाराजजी के सब शिष्यों में अत्यन्त विनम्र है। उनकी उन्दर ग्रीर गुरु में ग्रनन्य भिन्त है। जय ग्राते हैं तभी महाराजजी के सीनरणों में ही बैठने है, कभी उच्चानन पर नहीं बैठते। दिन हो ग्रथवा रात, जब भी अपने गुनदेव के पान आने हैं जूने बहुत हूर खोल कर दण्डवत करके विनयावनत हो रहर पर रहते हैं, आजा मिलने पर नीने बैठ जाते हैं। रात्रि को प्रणाम ग्रीर दर्शन के बिना कभी नहीं मोते। जब कभी महाराजजी के पास रहने का अवसर आता तो नित्यप्रति राप्ति को उनके चरण दवाने के लिए प्राते । महाराजजी के बार-बार निपेध करने पर भी अपने उस कर्नव्य से च्युत नहीं होते थे। एक बार ये योगीराजजी के पास उत्तरकाशी में निया। कर रहे थे। ये ब्रायु में उनसे बड़े है किन्तु इनके सामने सदैव स्नान को बालक ही समभते है। वहा पर नित्य ही रात्रि मे स्रपने गुरुदेव के नरण दयाने के निए जाने थे। एक दिन महाराजजी ने उनसे कहा, "देखों। ग्राप मेरी वात मानो, श्राम मेरे पैर दवाने का कष्ट मन किया करो। मै बहुत बूढा नही है, कम कोर भी नहीं है। आयु में आपसे छोटा हूं। किसी प्रकार की यकावट भी मुने नही होती। प्रत्याप यह कष्ट मत किया करो।" इसी विचार से महाराजजी ने ग्रापना हार ६ वजे से पूर्व ही बन्द कर दिया। जब महात्माजी नित्यप्रति की भाति महाराजजी के चरण दवाने आए तो दरवाजा वन्द देखकर वही खडे होगए। नी कर ने कहा, "महाराजजी स्रापको चरण दवाने का कष्ट नहीं देना चाहते, इसीलिए ग्राज दरवाजा जन्दी वन्द कर दिया है।" यह सुनकर महात्माजी को वडा दु ख हुग्रा श्रीर महाराजजी के किवाड़ी की चीखट को ही गुरुदेव के चरणकमल समस्कर पूरा एक पण्टा तक दवात रहे। प्रात काल योगीराजजी के सेवक विजय ने महात्माजी का नव समाचार उन्हें निवेदन किया। जब ये महाराजजी को प्रात नमस्कार करने ग्राए तव इन्होने पूछा, "ग्राप गत रात्रि एक घण्टा तक दरवाजे को ही दवाते रहे।"
महात्माजी ने वडा मुन्दर उत्तर दिया, "ग्रापने इन श्रीचरणो की सेवा से मुभे विचत
कर दिया था ग्रत मै ग्रापके चरणो की भावना रखकर दरवाजे को ही दवाता रहा।"
महाराजजी ने इनके सामने ग्रपनी पराजय स्वीकार की ग्रीर वे जो चाहते थे उन्हें
करने दिया। महात्माजी के शिष्य भी इनकी गुरु के प्रति ग्रन्य श्रद्धा ग्रीर भिक्त तथा
सेवाभाव को देख कर वडे विनम्र होगए थे ग्रीर गुरु के प्रति ग्रटल भिक्त रखते थे।

ठाकुरदत्तजी वैद्य का सपत्नीक शिविरागमन—श्री ठाकुरदत्त वैद्य तथा इनकी धर्मपत्नी तपीवन के साधना-शिविर में नित्य ग्राते थे ग्रौर सारे कार्यक्रम में भाग लेते थे। इन दोनों ने इस शिविर से बहुत लाभ उठाया। इनकी पत्नी श्रीमती पूर्णा देवी बडी श्रद्धालु, भिवत ग्रौर निष्ठा युक्त देवी थी। इनकी ग्रभ्यास में बडी ऊची स्थिति होगई थी। इनको नाना प्रकार के चमत्कारों का ग्रनुभव होने लगा था ग्रौर वहुत देर तक इनकी समाधि लग जाया करती थी। महाराजजी इन वैद्या की कोठी पर प्राय ठहरा करते थे।

सेठ भव्वालालजी सर्राफ की ग्रनन्य भिवत—देहरादून के सेठ भव्वालालजी सर्राफ महाराजजी के ग्रनन्य भक्त बन गए थे। कई वर्ष तक इन्होने सावना-जिविरों में ग्रभ्यास करके वहुत ऊची ग्रवस्था प्राप्त कर ली थी। महाराजजी के पास उत्तर-काशी तथा गगोत्री जाकर भी साधना करते रहे थे।

श्रन्यान्य भवत—चौधरी जयरामिसह ग्रौर इनका सब परिवार दो वर्ष तक महाराजजी के साधना-जिविर में तपोवन मे ग्राते रहे। वडी लगन के साथ ग्रभ्यास करके ग्रन्छी प्रगति कर ली थी।

वलदेविमत्र वहल और इनकी पत्नी सुमित्रा भी महाराजजी के योग-शिविर मे कई वर्ष तक साधना करते रहे। उपरोक्त महानुभावो के ग्रतिरिक्त देहरादून के प्राय सभी गण्य-मान्य ग्रीर प्रतिष्ठित महानुभाव साधना-शिविरो से लाभ उठाते रहे।

वावा गुरमुर्खासहजी की भिवत—वावा गुरमुखिसहजी की दानिप्रयता अनुकर-णीय है। आपने ही लाखो रुपया लगाकर तपोवन का निर्माण किया था। इनकी महा-राजजी के प्रति अनन्य श्रद्धा और भिक्त थी। गायत्री को वे अपना प्राण समझते थे। नित्यप्रति इस महामत्र का जाप करते थे और ध्यान किया करते थे। अभ्यासकाल मे इन्हें अनेक सिद्धों के दर्शन होते थे और ये प्राय उनके भाषण सुना करते थे।

शिविर समाप्ति—दो मास तक न केवल देहरादून की जनता ने ही साधना-शिविर से लाभ उठाया, अपने ग्राध्यात्मिक स्तर को ऊचा किया ग्रीर योग मे प्रगति की, किन्तु सेकडो नर-नारी अन्य नगरो से भी यहा इस शिविर मे सम्मिलित हुए ग्रीर अपने जीवन को उन्नत किया। जनता मे योग के प्रति ग्रिभिरुचि जागृत हुई ग्रीर जहा भी ये लोग गए वही पर योग तथा साधना-शिविर के सन्देश को पहुचाया।

इस साधना-शिविर का समाप्ति-समारोह वडी धूमधाम से मनाया गया। श्री महात्मा ग्रानन्दस्वामीजी ने तथा बाबा गुरमुखसिंहजी ने शिविर-समाप्ति के उपलक्ष्य मे एक वृहद् यज्ञ तथा उत्सव की भारी योजना बनाई। कई प्रख्यात प्रकाड पण्डितों को इस ग्रवसर पर व्याख्यान देने के लिए विशेष रूप से ग्रामित्रत किया गया। वृहद्-पत्त—यज्ञ के लिए विधिपूर्वक एक वहुत वडी वेदी को मदिर के रूप में निर्माण किया गया तथा पत्रो और पुष्पो से सुसज्जित किया गया। इसके चारो श्रोर चार मार्ग वनाए गए थे। कर्मकाण्ड के घुरघर विद्वानों ने इस यज्ञ को निष्पन्न किया था। इस यज्ञ में इतना ग्राकर्पण, रोचकता और माधुर्य था कि सैकडों की सख्या में नर-नारी इस यज्ञ में सम्मिलित हुए। कई घण्टे तक जनता ने इस यज्ञ का मुखलाभ किया। पूर्णांहुति का दृष्य वास्तव में दर्जनीय था।

वृहद्-सभा का श्रायोजन—ग्रागन्तुक महानुभावों के वैठने की व्यवस्था वहें उत्तम हग में की गई थी। लगभग २०-२५ हजार नर-नारी इसमें उपस्थित हुए थे। इतनी वडी सभा में व्यवस्था ग्रीर ग्रनुशासन वनाए रखना कोई ग्रासान काम न था, किन्तु महात्मा ग्रानन्दस्वामीजी के प्रभाव से सब प्रवन्ध बहुत उत्तम रहा ग्रीर जनता ने शान्तिपूर्वक ग्रपना पूर्ण सहयोग दिया।

प्रवन्धको ने सर्वमम्मित से पूज्य महाराजजी को ही सभा का अध्यक्ष बनाना स्वीकार किया। इनसे योग्य इस सभा के सभापितत्व के लिए और हो ही कीन सकता था! स्वामीजी नथा बाबा गुरमुखिसह के बहुत आग्रह करने पर महाराजजी ने इस पद को ग्रहण किया।

सभा मे अनेक सारगिमत भाषणों में महाराजजी की भूरि-भूरि प्रशसा की गर्छ। इस शिविर से देहरादून की जनता में ही नहीं किन्तु दूर-दूर के लोगों में भी योग के प्रति अभिरुचि जागृत हुई। इस समारोह की प्रवन्ध-समिति ने महाराजजी के चरणों में हार्दिक धन्यवाद अपण किया। इसके पश्चात् योगीराजजी ने अध्यक्षीय भाषण दिया और यज्ञ, उत्सव तथा अभ्यास में आने वाल सव स्त्री-पुरुषों को धन्य-वाद देते हुए कहा

यह ग्राश्रम ग्राप सबका वडा ग्रनुगृहीत है। ग्रापने इन तीनो कार्यों में ग्राकर इसकी जोभा को बढाया है। ग्राप लोगो ने ग्रभ्यास, सत्सग ग्रीर यज्ञ से लाभ उठा-कर ग्रपने जीवनों को पिवत्र बनाया है। दो मास तक यहा निवास करते हुए मैंने मैं कडो स्त्री-पुरुषों को सत्सग ग्रीर ग्रभ्यास से जीवन में ग्राध्यात्मिक भावना को जगाकर ग्रात्ममाक्षात्कार के पथ पर चलाकर ज्ञान्ति ग्रीर ग्रानन्द को उपलब्ध करवाया है। यहा की जनता में योगसाधन के लिए बडी भारी रुचि, श्रद्धा, भिवत ग्रीर प्रेम देखकर हमें बडी प्रसन्तता हुई है। ५-६ मील से ग्रभ्यासी लोग नित्य चलकर ग्राते थे। इससे स्पष्ट है कि ग्राप लोगों में तत्त्व-ज्ञान की जिज्ञासा है। ग्राप में कड़यों ने तत्त्व-ज्ञान की प्राप्ति में विशेष उन्नित की है। यह बडे हुप की बात है। इस ग्रुग में योग ही ऐसा मुगम, सरल ग्रीर मुवोध मार्ग है जिस पर चलकर बहुत जीव्र एक ही जन्म में ग्रात्म-ज्ञान ग्रीर बह्य-ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। तत्त्व-ज्ञान प्राप्ति के लिए हमने जो ध्यान तथा समाधि के उपाय ग्रीर साधन इन दो मासो में बताए है उन पर ग्रापको ग्रनुष्ठान करना चाहिए। इस मानव जीवन के दो भाग है। यदि हमारी ग्राग्रु सी वर्ष की हो तो ५० वर्ष तक लोकसग्रह ग्रीर शेप ५० वर्ष तत्त्वज्ञान ग्रीर मोक्षप्राप्ति करनी चाहिए। सारा जीवन ही लोकसग्रह में लगे रहना तत्त्वज्ञान ग्रीर मोक्षप्राप्ति करनी चाहिए। सारा जीवन ही लोकसग्रह में लगे रहना कोई बुद्धिमत्ता की वात नहीं है। यह तो पगुपक्षी भी सारा जीवन करते रहते है। मनुष्य जीवन की विशेषता इसी में है कि ग्रध्यात्म-ज्ञान प्राप्त करके ग्रपने स्वरूप को मनुष्य जीवन की विशेषता इसी में है कि ग्रध्यात्म-ज्ञान प्राप्त करके ग्रपने स्वरूप को मनुष्य जीवन की विशेषता इसी में है कि ग्रध्यात्म-ज्ञान प्राप्त करके ग्रपने स्वरूप को मनुष्य जीवन की विशेषता इसी में है कि ग्रध्यात्म-ज्ञान प्राप्त करके ग्रपने स्वरूप को मनुष्य जीवन की विशेषता इसी में है कि ग्रध्यात्म-ज्ञान प्राप्त करके ग्रपने स्वरूप को मनुष्य जीवन की विशेषता इसी में है कि ग्रध्यात्म-ज्ञान प्राप्त करके ग्रपने स्वरूप को मनुष्य जीवन की विशेषता इसी में है कि ग्रध्यात्म-ज्ञान प्राप्त करके ग्रपने स्वरूप को मनुष्य जीवन की विशेषता इसी में है कि ग्रध्यात्म-ज्ञान प्राप्त करके ग्रपने स्वरूप करके ग्रपने स्वरूप की स्वरूप का नित्र स्वरूप के लोक सम्यूप के लोक

समभे। दो मास तक इस लोक तथा परलोक के सुधार के ही सव साघन वतलाए गए हैं। जिन साघनों के द्वारा पशु से मनुष्य और मनुष्य से प्राणी देवता वन सकता है। इसका सबसे बड़ा साघन अष्टाङ्ग योग है। जिसको ससार के दु खो से मुक्त होने की चाह है उसे इन सभी साधनों को अपनाना चाहिए। इनके द्वारा ही तत्त्व-ज्ञान और वैराग्य होकर परम शान्ति और श्रानन्द प्राप्त हो सकता है। में आशा करता हू कि आप लोग इस योग-पथ पर चलकर इस मानव जीवन के यथार्थ उद्देष्य को अवश्य पूरा करेंगे और सर्व दु खो से मुक्त होगे।

ग्राप लोगों के लाभ के लिए वैदिक ग्राश्रम ने ग्रापकी वहुत सेवा की है। ग्रपना समय ग्रोर शक्ति तथा धन लगाकर साधकों ग्रीर दर्शनायियों तथा सत्सग में ग्राने वाले सज्जनों को सभी प्रकार की सुविधाए प्रदान की है, ग्रत इस साधना-शिविर के प्रवन्धक सबसे ग्रधिक धन्यवाद के पात्र है। ग्राप लोग जो इतना कप्ट उठाकर यहा ग्राए हैं, ग्राप भी धन्यवाद के पात्र है।

उत्सव समाप्त होने के परचात् पण्डित ठाकुरदत्तजी वैद्य श्री महाराजजी को राजपुर रोड पर स्थित ग्रपनी कोठी पर लेगए। इस कोठी पर एक सप्ताह साघना- शिविर रखने ग्रीर उपदेशामृत का पान कराने के लिए सैकडो व्यक्तियों ने प्रार्थना की। देहरादून की जनता योगीराजजी के उपदेशों से वडी प्रभावित हुई थी। लोगों के ग्रत्यधिक श्रनुरोध, श्रनुनय तथा विनय करने पर महाराजजी ने दस दिन का शिविर 'श्रमृतधारा' पर लगाना स्वीकार कर लिया। प्रतिदिन प्राय एक सौ से ग्रधिक नरनारी इस योग साधन में सम्मिलित होते थे। सायकाल ३ से ५ वजे तक महाराज का उपदेश होता था। सैकडो लोग इस उपदेशामृत का पान करने के लिए नित्य ग्राते थे।

ग्रढाई मास तक देहरादून मे ग्रमृत की वर्षा करके ग्रीर श्रध्यात्म की गगा वहा कर श्री महाराजजी ऋषिकेश पधारे। हजारो लोगो ने वडी श्रद्धा से ग्रीर भिक्त-पूर्वक योगीराज को विदाई दी। यहा पघारकर महाराजजी ने दो मास का साधना-शिविर लगाया। यहा पर भी देहरादून के ग्रभ्यासी साधनार्थ ग्राए। इनमे विशेष उल्लेखनीय श्री उवराय ग्रीर इनकी धर्मपत्नी है।

श्री महाराजजी के मनोबल का प्रभाव—श्री चौधरी जयरामिसह उवराय, तथा इनकी धर्मपत्नी की महाराज में वडी भिक्त और श्रद्धा थी। ये देहरादून के साधना-शिविर में आते थे। ये इस समय में वडे सकट में थे। इनके ऊपर दो मुकद्दमें थे—एक देहरादून की श्रदालत में श्रीर दूसरा इलाहावाद की हाईकोर्ट में। इन मुकद्दमों में इनकी हार हो जाना इनके श्रिकंचन हो जाने के समान ही था। ग्रत इन्होंने महाराजजी से सहायता के लिए प्रार्थना की। इस परिवार की ग्रत्यधिक श्रद्धा श्रीर भिक्त देख कर महाराजजी को इस परिवार पर वडी दया श्राई। महाराजजी ने उबरायजी से कहा कि मुक्ते शहर में ले जाकर जज साहिव को दिखा दो। उवरायजी तागे में विठाकर जज की कोठी के सामने ले गए, जब उसने कचहरी में जाना था। इनको देखकर वापिस तपोवन में श्रागए। दो दिन पश्चात् मुकद्दमें की तारीख थी। महाराजजी ने प्रात का दूध भी न पिया श्रीर जज पर प्रयोग करने की तैयारी करने लगे। दस बजे श्रदालत में मुकद्दमा पेश होना था। महाराजजी ने मुकद्दमें के दिन, पास एक जगल में बैठकर ग्रपने मनोवल से जज को प्रभावित करके चौधरी जयरामिसह

जी के अनुकूल बना दिया। इसके परिणामस्वरूप मुकद्मे का फैसला जयरामसिंह जी के अनुकूल होगया। दूसरा मुकद्मा इलाहाबाद मे था। वहा के जज की फोटो मगवाकर प्रयोग किया था।

महाराजजी ने अपने मनोवल से चीवरी जयरामिसह के दूसरे मुकद्देम का, जो उलाहाबाद की हाईकोर्ट मे था, फैसला भी इनके अनुकूल करवा दिया। मुकद्दमे के फैसले के दिन महाराजजी ने कई घण्टे तक मीन रखा और दोपहर का भोजन भी नहीं किया जिसमे शक्ति-पान का कार्य सूचार रूप से हो सके। इस मुकहमें में विजय उसी शिवनपात का परिणाम था। उन दोनो मुकहमो मे विजय के कारण इस परिवार की श्रीमहाराजजी मे अनन्य श्रद्धा श्रीर भिवत मे श्रीर भी वृद्धि होगई। इस परिवार ने महाराजजी की ग्राज्ञा का ग्रक्षरण पालन करना प्रारम्भ कर दिया। अब ये अपना अधिक समय अभ्याम तथा मत्मग में ही व्यतीत करने लगे। उवराय की पत्नी कृष्णा की महाराज के प्रति ग्रगांव श्रद्धा थी। वह इन्हें कृष्ण भगवान के समान समभती थी। इस श्रद्धा ग्रीर विश्वास के कारण इसे ग्रभ्यास मे विशेष सफलता प्राप्त होने नगी। यह प्रन्य लोको की वाते करने लगी। भविष्यवाणी भी करती थी श्रीर ग्रपने को भगवान के ग्रत्यन्त समीप समभनी थी। इसके पति उवराय इसकी ग्रभ्यास मे ग्रामानीत प्रगति देसकर ग्रत्यन्त प्रभावित हुए ग्रीर इन्होने भी स्वर्गाधम मे अभ्यानाथं आना प्रारम्भ कर दिया। श्री नारायणदासजी कपूर, इनकी धर्मपत्नी नावित्रीदेवी, गाना मेलादेवी, शान्ता, ग्रीर शीला भी साधना शिविर मे सम्मिलित होने के लिए देहली ने आगए। अमृतसर मे लाला गुरुचरणदत्त, इनकी घर्मपत्नी तथा परिवार के अन्य सदस्य देविया और सज्जन भी इस अवसर पर आए।

सरलादेवी का शिविर में ग्राना—ग्रमृतसर निवासिनी श्रीमती सरलादेवी की महाराजजी के प्रति अनन्य श्रद्धा ग्रीर भिवत थी। ये महाराजजी के श्रीचरणों में वेठकर कर्ठ वार ग्रभ्याय कर चुकी थी। इनकी ६-७ घण्टे तक गृत्य समाधि लग जाया करती थी ग्रीर ७ मिनिट तक कुभक प्राणायाम करने का ग्रभ्यास था। युवावस्था में ही उनके पितदेव का स्वगंवाय होगया था। इनके एक पुत्र था। ये रात दिन पितिवियोग में करने किया करती थी। उनकी माता इन्हें ग्रमृतसर में बाबू मुलखराजजी की कोठी पर महाराजजी के दर्गनार्थ लाई थी जिसमें उनके शान्तिदायक उपदेश से उमें ग्रानि-नाभ हो। श्रीमहाराजजी के मत्सग से थोडे ही दिनों में इस देवी के जीवन में एक महान् परिवर्तन होगया। इसने योग-पथ पर चलना प्रारम्भ कर दिया। अब यह गोक, चिन्ता तथा हु स में विमुक्त होगई। इसने ग्रव ग्रपने को प्रभु-चरणों में सम्पित कर दिया ग्रीर दिन रात इन्ही की भिवत में निरत रहती थी। जब स्वर्गाश्यम श्रीमहाराजजी साधना-गिविर लगाते थे तब यह लाला गुरुचरणदत्तजी के साथ वरावर साधना-गिविर में ग्राती रहती थी। यह बहुत ऊची ग्राध्यात्मिक स्थिति में पहुच गई थी। उनके सास ग्रीर ससुर ग्रमेरिका में रहते थे। कुछ वर्ष के परचात् ये लोग उन्हें ग्रीर इनके पुत्र जगदीश को भी ग्रमेरिका ले गए।

# महाराजजी के योग-वल का चमत्कार

जिन दिनो रवगिश्रम मे साधना-णिविर चल रहा था उन दिनो महाराजजी के पाम रणवीरजी, मुर्य सपादक 'मिलाप', का तार श्राया। इसमे लिखा था कि

उनका भाई युद्धवीर बीमार है ग्रीर उसकी ग्रवस्था वडी चिन्ताजनक है। मैं उसके पास हवाई जहाज से हैदराबाद जा रहा हू। मैं श्रापका परमभक्त श्रीर श्रापका प्रिय शिष्य हू अत विनम्र प्रार्थना है कि श्राप इस महती विपत्ति से मेरे भाई की रक्षा करे। इसे ग्रपना ग्राशीर्वाद दे जिससे यह शीघ्र ही रोगमुक्त होजाए। इस तार को पढकर रणवीर की माताजी, उनकी वहिन ग्रीर वहनोई वहुत घवरा गए ग्रीर चिन्ता-तुर हुए। महाराजजी ने कहा, मैंने युद्धवीर को कभी देखा नही। उसके रग-रूप तथा म्राकृति से परिचित नही। म्रत प्रयोग करने मे वडी कठिनाई होगी। इसलिए नारायणदास कपूर को अपने सामने वैठने का आदेश दिया क्यों कि ये युद्धवीर की म्राकृति भीर रग-रूप से परिचित थे। इन्हे युद्धवीर की म्राकृति का ध्यान करने की ग्राज्ञा दी, ग्रौर उनके ऊपर ग्रपनी मानसिक गक्ति का प्रयोग किया। यह गक्ति ग्रापके द्वारा युद्धवीर पर प्रभाव डालेगी । कपूर साहिव को विठाकर महाराजेजी स्वय खडे होकर शक्ति का प्रयोग करने लगे। यह दिन के दस वजे की वात है। आधा घटा इस प्रयोग के लिए रखा गया। कपूर साहिव के द्वारा महाराजजी ने अपनी शक्ति को युद्धवीर के पास प्रेषित किया। जब महाराजजी ने प्रयोग करना प्रारम्भ किया तब सर्वप्रथम ध्यान मे एक कमरा ग्राया, फिर उसमे एक पलग दृष्टिगोचर हुग्रा ग्रीर तत्पश्चात् एक शुभ्र चादर ग्रोढकर लेटा हुग्रा युद्धवीर दिखाई दिया । इनके पास इनकी पत्नी सीता तथा एक सेवक भी वैठा हुग्रा नज़र ग्राया। ग्रव महाराजजी को युद्धवीर की ग्राकृति, रग-रूपादि सव दिखाई देने लगा। युद्धवीर विलकुल ग्रचेत था। योगीराजजी के शक्ति-प्रयोग से इसके शरीर मे कुछ चेतना-सी ग्राई ग्रीर शरीर मे चेष्टा होने लगी। इन्हे लगभग २० मिनिट मे होश ग्रागया। सकत द्वारा बैठने की इच्छा प्रकट की। पलग पर तिकए के सहारे से इन्हे विठा दिया गया। महाराजजी ने कपूर साहिव से कहा कि युद्धवीर श्रव ठीक है। तार देकर इसका पता लगा लो । ऐक्सप्रेस तार देकर पूछने पर विदित हुग्रा कि ग्रव वे स्वस्थ है। रणवीरजी ११ वजे हवाई जहाज से हैदरावाद पहुचे। युद्धवीर को चारपाई पर वैठा देख वे बंडे स्राश्चर्यान्वित होकर कहने लगे कि मुभे तो तुम्हारी वीमारी का तार मिला था ग्रीर मुभे शीघ्र बुलाया गया था। कुँछ घण्टे पहिले तुम्हारी शारीरिकावस्था चिन्ताजनक थी। इतनी जल्दी तुम ठीक भी होगए। तुम्हारा तार पढकर मेरे तो होश गुम होगए श्रीर मैं श्रातुर श्रीर व्याकुल होगया था। सीता ने वताया कि १० बर्जे रोगी की अवस्था ठीक ऐसी ही थी जैसी आपको तार में लिखी गई थी। बड़े ग्राश्चर्य की वात है, प्रभु की यह ग्रपार कुपा है कि एक घण्टे के भीतर ही इनकी दशा सुधर गई, होश में ग्रागए ग्रीर उठकर बैठ गए। ग्रीपधोपचार में भी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया गया । वेहोशी दूर होगई, ग्रपने ग्राप करवट बदली और खाना मागने लगे। यह उस सर्वशक्तिमान को एक अलौकिक चमत्कार है। रणवीरजी ने महाराजजी को जो तार दिया था उसका सब समाचार सीता को सुनाया। उन्हे पूर्ण विश्वास था कि उनका भाई योगीराजजी के गक्ति-प्रयोग से स्वस्थ हुँग्रा है। इन्होने सीता से कहा, "इसको स्वास्थ्य प्रदान करने वाले तो योगाश्रम मे विराज रहे है। उनकी हमारे परिवार पर विशेष कृपा है।" इन्होने महाराजजी को तार द्वारा रणवीर की पहुच ग्रौर उनके ग्राशीर्वाद से स्वास्थ्य लाभ की सूचना दी। कपूर साहिब ने भी रणवीरजी को युद्धवीर के ऊपर महाराजजी के शक्ति-प्रयोग करने की सूचना

तार द्वारा दी। ग्रव रणवीरजी ने महाराजजी को हैदरावाद से निम्नलिखित पत्र लिखा:—"पूज्य गुरुदेव! में ग्राज प्रत्यक्ष रूप में ग्रापकी ग्रतुल महान शिक्त को देखकर ग्रत्यन्त ग्राश्चर्यान्वित हूं। युद्धवीर कई दिन से वेहोश पड़ा था ग्रीर वह मरणासन्न हो रहा था। वह २-३ घण्टे के ग्रन्दर घूमने-फिरने के योग्य होगया है। में ग्रापकी इस महती दया का ग्रत्यन्त ग्राभारी हूं। ग्रापका यह उपकार सदैव मेरे हत्पटल पर ग्रंकित रहेगा। ग्रापके इस महान ऋण से में जन्म-जन्मान्तरों तक भी उर्ऋण नहीं हो सकता। किन शब्दों में में ग्रापके प्रति ग्रपनी कृतज्ञता प्रकट कर्छ! न में इसे वाणी से ग्रापके समक्ष कह सकता हूं ग्रीर न लेखनी से लिख सकता हूं। ह्वय ग्रापके प्रति कृतज्ञता के भावों से भरा हुग्रा है किन्तु भाषा इन्हें व्यक्त करने में ग्रसमर्थ है। ग्रापने मेरे भाई को जीवन-दान दिया है इसके लिए मेरा सारा परिवार ग्रापका सदा ऋणी रहेगा। युद्धवीर ग्रव पूर्ण स्वस्थ है, इसलिए मैं कल देहली वापिस जा रहा हूं।"

श्रीमती धर्मवती को कोष साक्षात्कार —श्रीमती धर्मवती तथा भाग्यवन्तीजी भी स्वर्गाश्रम में दो मास के साधना-शिविर में सिम्मिलित हुईं। धर्मवतीजी पर अभी वेदान्त ग्रंथों के ग्रध्ययन का वड़ा प्रभाव था। इन्होंने विशेष प्रयत्न के साथ विचार-सागर, योगविशष्ठ, ग्रहतिसिद्धि, वृत्तिप्रभाकर, वेदान्तदर्शन तथा उपनिषदादि ग्रंथों को गुरुमुख से ग्रध्ययन किया था। श्री महाराजजी ने इस प्रकार से साधना का कम बताया जिससे इनकी कई-कई घण्टे की निर्विकल्पावस्था हो जाती थी। इस वर्ष इनको कुण्डिलिनी जागरण, पट् चक वेधन, प्राण-विज्ञान ग्रीर ब्रह्मरंघ्र में सूक्ष्म शरीर का व्यापार ग्रीर विज्ञान का साक्षात्कार करवाया गया। धर्मवती ने महाराजजी से निवेदन किया, "इन ग्रनात्म पदार्थों के दर्शन से क्या लाभ होगा?" महाराजजी ने कहा, "ये वुद्धि को सूक्ष्म करने के साधन हैं। इन ग्रनात्म पदार्थों में ही ग्रात्मा का ग्रनुभव होगा। ऋतम्भरा प्रज्ञा का प्रादुर्भाव होगा ग्रीर इसके द्वारा ग्रात्म साक्षात्-कार लाभ होगा। जो हम वताते हैं, ग्राप इसे श्रद्धा, विश्वास ग्रीर धर्य के साथ करती रहो। जव कमपूर्वक विज्ञान द्वारा ग्रापकी ग्रपने स्वरूप में स्थिति हो जाएगी तव ग्राप समभेंगी कि ग्रात्मा एक है या ग्रनेक, ग्रीर ग्राप ब्रह्म से भिन्न हैं या ग्रिनिन।"

श्रीमती भाग्यवन्तीजी को कोष-विज्ञान—श्रीमती भाग्यवन्तीजी को योग में वड़ी हिच थी। साधना-शिविरों में प्रायः भाग लेती थीं। महाराजजी ने जब योग प्रशिक्षण का कार्य प्रारम्भ किया था तो सर्वप्रथम शिविर मोहन ग्राश्रम में लगाया था। इस शिविर में भाग्यवन्तीजी ने ग्रभ्यास किया था। इनकी योगीराजजी में ग्रटूट श्रद्धा तथा ग्रनन्य भिक्त थी। ये वड़े परिश्रमपूर्वक योग-साधना करती थीं। इन्होंने भी ग्रन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय कोपों का साक्षात्कार किया ग्रौर सदैव इस विज्ञान को दृढ़भूमि करने का प्रयत्न किया।

इस वर्ष साधना-शिविर में चालीस ग्रभ्यासियों ने भाग लिया। प्रायः सभी ने सन्तोषप्रद प्रगति दिखाई ग्रौर ग्रपने ग्राध्यात्मिक स्तर को उन्नत करने में सफल हुए। पूर्ववत् इस शिविर की समाप्ति पर भी एक वृहद् प्रीतिभोज किया गया। इसके पश्चात् सव ग्रभ्यासियों को विदा कर दिया गया।

### हरिद्वार मे निवास

इस वार हरिद्वार में कुभ का मेला होने वाला था। इसके लिए वडी तैयारी की जा रही थी। सेठ तुलसीरामजी वम्बईवाले इम अवसर पर हरिद्वार आए हुए थे। वे स्वर्गाश्रम से महाराजजी को अपनी मोटरकार में हरिद्वार में अपने मकान पर ले गए और यहा ठहर कर लोगों को कथामृत पान करवाने के लिए निवेदन किया। महाराजजी प्रतिदिन दो घण्टे कथा किया करते थे। कुभ के कारण यात्री वहुन आए हुए थे, इसलिए कथा में सैं कडो नर-नारी एकत्रिन होते थे और इनके उपदेशामृत का पान करके अपने को घन्य मानते थे। इसी वीव में नारायणदानजी कपूर हरिद्वार में आए और श्रोमहाराजजी को कार में देहली ले गए। ये और रणवीरजी वी व्लाक कनाट प्लेस में निवास करते थे। महाराजजी ने हसते हुए रणवीरजी में कहा, "अव तो आपके परिवार में सन्यास लेने की परम्परा चल पडी है। आप भी समय आने पर अपने पूज्य पिताजी का अनुकरण करना।" रणवीर ने खुग होकर कहा, "अवव्य महाराज, आप मुफ्ते ऐसा आजीर्वाद दे।" योगीराजजी ने उनके लिए प्रायंना करने का वचन दिया और कहा, "भगवान् आपका सदैव मगल करे।" रणवीरजी महाराजजी को अपनी कार में हरिद्वार छोड आए। यहा आकर सेठजी के मकान पर इन्होंने दस दिन तक कथा की।

इस वार माता मेलादेवी और भाग्यवन्तीजी ने महाराजजी से गगोत्री जाने की इच्छा प्रकट की। इन्होने ग्राजा प्रदान कर दी। श्री ग्रानन्दस्वामीजी ने भी जून मास मे वहा जाने के लिए महाराजजी से निवेदन किया। इन्होने स्वामीजी को माता मेलादेवी और भाग्यवन्तीजी को भी साथ लाने की ग्राजा दी।

### गंगोत्री प्रस्थान

कुभ के कारण हरिद्वार में वहुत भीडभाड थी। संठ तुलसीराम के मकान में भी उनके अपने इप्टमित्र और परिचत लोग तथा महाराजजी के श्रद्धालु भक्तों के ठहरने के कारण वहुत भीड थी। नगर में हेजे का प्रकोप होगया। श्री महाराजजी के ऊपर भी इसका कुछ प्रभाव हुआ किन्तु ठीक समय पर उपचार हो जाने के कारण रोग का गीघ्र ही निवारण होगया। कुभ के पञ्चात् महाराजजी पुन स्वर्गाश्रम चले गए और वहा पर १०-१५ दिन तक निवास किया और इसके पञ्चात् उत्तरकाणी के लिए प्रस्थान किया। यहा पर केवल पाच-सात दिन के लिए प्रजावी क्षेत्र में ठहर कर गगोत्री प्धारे।

सेठ रमणलाल तथा केशवलाल का गंगोत्री मे स्नागमन—सेठ रमणलाल ग्रीर केगवलाल अपने डब्ट-मित्रो सिहत गगोत्री आए। इनके साथ सेठ रमणलाल लत्लू-भाई ग्रीर सेठ भोगीलाल चालाभाई गाहजी ग्रहमदावादवाले भी आए। ये सव महाराजजी के दर्गनार्थ आए ग्रीर योग-निकतन को देखकर वडे प्रसन्न हुए। सेठ रमणलाल ने अपने निवास के लिए योग-निकतन मे एक कुटिया के लिए प्रार्थना की। महाराजजी ने इस प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार किया। ये अकेले अपने सेवक के साथ यहा पर तीन-चार मास तक ठहरे। रमणलाल लल्लूभाई ग्रीर भोगीलाल दोनो ने मिलकर ३००६० सालाना साघु-महात्माग्रो को भोजन करवाने के लिए देने का वचन

दिया। वारह साल से वरावर वे इस कार्य के लिए यह वनराशि भेज रहे हैं। सेठ रमणलाल ने ४००० रु० दो वड़ी कुटियाएं वनाने के लिए श्री महाराजजी की सेवा में भेंट किया। सेठजी दयालमुनिजी के सुपरिचित थे। इन्होंने सेठजी को विश्वास दिलाया कि ग्रापके यहां निवास काल में ही ये कुटियाएं वनकर तैयार हो जाएंगी। सेठजी ने प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में गंगोत्री ग्राने का निश्चय कर लिया। इनकी सन्तों तथा साधुग्रों के प्रति बड़ी श्रद्धा थी, विशेषकर हिमालय के सन्तों के प्रति तो इनकी ग्रत्यविक भिक्त थी। स्वामी तपोवनजी तथा स्वामी कुष्णाश्यमजी को उनके व्यय के लिए प्रतिवर्ष रुपया कई वर्षों से भेज रहे थे।

सेठ रमणलाल को जीवन-दान--सेठजी को कई ज्योतिपियों ने वताया था कि ग्रागामी वर्ष उनकी मृत्यु का योग है। वे स्वयं भी ज्योतिपी थे। उनके हिसाव से भी मृत्यु का योग वैठता था। उन्होंने महाराजजी से उपरोक्त वात निवेदन की भीर गंगीत्री में ही शरीर छोड़ने की इच्छा प्रकट की। महाराजजी ने उन्हें समभाया कि इसमें चिन्ता की क्या वात है। एक न एक दिन तो इस संसार से विदा होना ही है। यदि १०-२० साल ग्रीर जीवित रह जाएंगे तो भी यही प्रश्न उठेगा। जो वात ग्रवश्यम्भावी है उसके लिए चिन्ता करना बुद्धिमानों का काम नहीं है। सेठजी ने निवेदन किया, "कई वार आप जैसे सन्तों के उपदेशों में यह भी सुना है कि महात्मा लोग कभी-कभी ग्रायु में वृद्धि करके लोगों को जीवन-दान किया करते हैं।" महोराजजी ने सेठजी को ग्रॉगामी वर्ष गंगोत्री ग्राकर इनके पास निवास करने की ग्राजा दी ग्रीर मृत्युयोग का निवारण करने का उन्हें विश्वास दिलाया ग्रीर कहा, "ग्रापको ग्रागामी वर्ष मरने नहीं दिया जाएगा। ग्राप निश्चिन्त रहें।" भगवान् की ऐसी कृपा हुई कि सेठजी का मृत्यु का योग टल गया और १२ वर्ष से वे जीवित हैं। इन सेठजी की अपने जीवनदाता के प्रति वड़ी श्रद्धा और भिक्त होगई और इन्होंने गंगोत्री में २०००० रु० दान किए। चार मास तक ये योग-निकेतन में ठहरे थे। इन चार मास में प्रत्येक पर्व पर इन्होंने यहां के सभी सन्तों, संन्यासियों ग्रौर सायुग्रों के लिए पक्का भण्डारा करवाया। लकड़ी के दो पुल वनवाए—एक गंगा पर ग्रौर दूसरा केदार गंगा पर । योग-निकेतन में चार हजार रुपया लगाकर दो वड़ी-वड़ी कुटियाएं वनवाई। सव सन्तों को कम्वल और चादरें वितरित की। प्रथम वर्ष २००० रुपया दान दिया तथा दूसरे वर्ष १४००० रु०। सेठजी वड़े ईव्वरभक्त ग्रौर उदार दान-शील हैं। प्रात:काल ४ वजे से ११ वजे तक पूजा-पाठ में लगे रहते थे। ११ से १२ वजे तक नियमानुसार नित्य महाराजजी के पास ग्राते थे। महाराजजी के पास वैठ-कर ध्यान करते थे। एक घण्टा तक निर्विकल्प-सी अवस्था होकर समाधि लग जाया करती थी और ग्रानन्द की ग्रनुभूति होती थी। इन्होंने १५०० रु० व्यय करके योग-निकेतन के लिए एक छोटी-सी नहर निकलवाई थी। तीन वर्ष तक ये गंगोत्री में रहे ग्रीर तीनों वर्ष हजारों रुपया दान में दिया। ग्रपनी मिल में से चौथा भाग ये पहिले दान में दिया करते थे, फिर उसकी ग्राय में से भी चौथा भाग देने लग गए थे। ये वड़ी उदारता से दान देते थे। इनके द्वार से कोई याचक कभी भी खाली नहीं गया।

श्री ग्रानन्दस्वामीजी की गुरुभित्त-श्री ग्रानन्दस्वामीजी, माता मेलादेवीजी तथा भाग्यवन्तीजी गंगोत्री में ग्रभ्यासार्थ ग्राए। इनकी महाराजजी के प्रति ग्रनन्य

भित थी। वास्तव मे महानात्माग्रो मे तदनुरूप ही महान गुण होते है। योग-निकेतन में काम करने के लिए एक-दो सेवक सदा ही रहते हैं, किन्तु गुरुदेव की सेवा के लिए स्वामीजी गगाजी से नित्यप्रति दो-तीन घडें जल के महाराजजी की रसोई के लिए लाते थे। इन्हे गगोत्री-वास वडा पसन्द था। कई वर्ष ग्रीष्म-ऋतु मे ग्राकर निवास करते रहे और इस समय को आत्म-विज्ञान के दृढ करने मे लगाते रहे। यही पर श्रापने दो ग्रथो की रचना भी की। महाराजजी नै ग्रयने प्रयत्न से इस साल गंगोत्री मे एक डाकखाना भी खुलवा दिया था। ग्रानन्दस्वामीजी को उत्तरकाशी मे निवास के लिए कोई उपयुक्त स्थान नहीं मिलता था अत महाराजजी से एक योग-निकेतन वहा पर भी बनाने के लिए प्रार्थना की जिससे वहा निवास के कष्ट का निवारण हो सके। ग्रानन्दस्वामीजी तथा दयालमुनिजी रोगियो को ग्रीपथ देने का कार्य करते थे। उत्तरकाशी से भी रोगी उपचार के लिए योग-निकेतन मे स्राते थे। इसके स्रति-रिक्त कोई ग्रीषधालय उत्तरकाशी से यहा तक नही था। इस ग्रीपधालय से लोगो का वडा कल्याण-साधन होता था। भाइपद ग्रीर ग्राहिवन मास मे स्थानीय साध-महात्माम्रो के लिए क्षेत्र चलता था। पाच मास तक चाय का क्षेत्र भी चलता था। सेठजी, म्रानन्दस्वामीजी, माता मेलादेवीजी तथा भाग्यवन्तीजी ने सितम्बर मास के प्रारम्भ मे गगोत्री से प्रस्थान किया। महाराजजी ने गगोत्री से ग्रक्तूबर मास मे प्रस्थान किया। उत्तरकाशी आकर पजावी क्षेत्र मे निवास किया। इसके समीप ही एक वडा भूभाग खाली पडा हुग्रा था। इन्होने पजावी क्षेत्र के प्रवन्धक इन्द्रदत्त से इस भूमि को खरीदने के लिए कहा। इन दिनों भूमि के भाव वड़े सस्ते थे। इन्द्रदत्तजी से महा-राजजी ने कहा कि अाप जमीन के लिए वातचीत करें, जब सीदा तय हो जाए तो मुभे स्वर्गाश्रम मे पत्र लिख देना, मैं रुपया भिजवा दूगा। ये एक मास तक उत्तर-कांशी ठहरकर स्वगाश्रम पधारे।

# माता मनसादेवीजी का भूमि खरीदने श्रीर कुटिया निर्माणहेतु दान

जब माता मनसादेवी को महाराजजी के ग्रपनी कुटिया के लिए जमीन खरीदने के विषय में पता चला तो उसने इन्हें लिखा कि भूमि खरीदने ग्रोर कुटिया के निर्माण में जो रुपया खर्च होगा वह सब में दूगी। इन्होने १६०० रु० भूमि खरीदने ग्रीर ६००० रु० मकान बनाने के लिए प्रदान किया। इन दिनो महाराजजी के निजी व्यय के लिए भी सारा खर्चा ये ही माताजी देती थी। सन् १९५२ में उत्तर-काशी में योग-निकेतन के लिए भूमि खरीदी गई।

# तपोवन मे पुनः साधना-शिविर

सन् १६५२ मे श्री ग्रानन्दस्वामीजी ने गगोत्री मे महाराजजी से पुन तपी-वन में साधना-शिविर लगाने की प्रार्थना की क्योंकि प्रथम शिविर से देहरादून की जनता मे योग के प्रति ग्रत्यधिक रुचि जागृत होगई थी ग्रौर इसका वडा प्रभाव पडा था। सैंकडो व्यक्तियों ने ग्रभ्यास से महान् लाभ उठाया था ग्रौर हजारों ने महा-राजजी के उपदेशामृत का पान करके ग्रपने जीवन को ऊचा उठाया था। महाराजजी ने १५ नवम्बर से १५ जनवरी तक साधना-शिविर तपोवन मे लगाने की स्वीकृति दे दी। ये १० नवम्बर को तपोवन पधारे ग्रौर गत वर्ष की भाति ऊपर वाली कृटिया

में विराजे। स्वामीजी महाराज ने शिविर के लिए समुचित व्यवस्था कर दी थी। 'मिलाप' के सम्पादक श्री रणवीरजी ने महाराजजी के कई सहस्र फोटो खिचवाकर ग्रयने दैनिक 'मिलाप' के द्वारा जनता में वितरित किए। ग्रयने पत्र में महाराजजी के जीवन, योग, ग्राव्यात्मिक शक्ति ग्रौर मनोवल के विषय में लेख भी लिखे। पूर्ववत् सैंकड़ों पुरुप ग्रौर स्त्रियां वड़े चाव ग्रौर उमंग के साथ शिविर में ग्रभ्यासार्थ समिन-लित होने के लिए एकत्रित होगए। अभ्यास का कार्यक्रम निम्न प्रकार से था। योग प्रशिक्षणार्थियों का वर्गीकरण किया गया। इन सवको चार कक्षाग्रों में विभक्त किया गया। सर्वोत्तम कक्षा के योग्य केवल थोड़े ही ग्रभ्यासी थे। इनकी कक्षा प्रातः ४ से ६ वजे तक लगती थी। इस कक्षा में उच्च-स्तर पर योग साधना करवाई जाती थी। दूसरी कक्षा तपोवन के निवासियों की थी। यह कक्षा ६ से ८ वजे तक लगती थी । तीसरी कक्षा में नगर के ग्राप्यात्मिक मुख्य-मुख्य लोगों को प्रविष्ट किया गया था। इस कक्षा का समय द से ६ वजे तक था। चतुर्थ वर्ग नगर के साधारण स्तर के लोगों के लिए था। यह कक्षा धूप में साल वृक्षों के नीचे मैदान में लगाई जाती थी। दस से साढ़ ग्यारह वजे तक महाराजजी को लोग मिलने के लिए ग्राया करते थे। डेढ़ वजे भोजन करके महाराजजी ३ वजे तक विश्वाम करते थे। ३ से ५ वजे तक का समय दर्शनार्थियों को दिया जाता था। ५ से ६ बजे तक महाराजजी भ्रमणार्थ चले जाते थे। मिलने वालों का तांता भ्रमण में भी लगा रहता था। योगीराजजी का चरित्र, अध्यातम, योग तथा मनोवल ग्रौर व्यक्तित्व इतना ऊंचा ग्रौर ग्राकर्षक था कि सभी लोग इनके पुण्य दर्शन का लाभ उठाना चाहते थे, ग्रतः प्रायः सारा दिन ही भीड़ लगी रहती थी। रात्रि को ६ से ६ वजे तक दो योग प्रशिक्षण की कक्षाग्रों को योग सिखाते थे। कुटिया के वरांडे में २०-२५ ग्रभ्यासियों से ग्रधिक नहीं बैठ सकते थे । जो शेष रह जाते थे उनकी कक्षाएं इस समय लगाई जाती थीं । प्रत्येक रविवार को ग्रनध्याय रखा जाता था। २ से ४ वजे तक ग्रव्टाङ्ग योग पर श्री महाराजजी का वड़ा सारगिंत भाषण होता था। भाषण सदैव ग्रत्यन्त गहन विषय पर होता था। लगभग डेढ़ हजार नर-नारी व्याख्यान सुनने के लिए आते थे और इस वचनामृत का पान कर चुकने के बाद प्रेय मार्ग से हटकर श्रेय मार्ग के पथिक वनने का प्रयत्न करते थे। गत वर्ष के समान प्रमुख अभ्यासी ये थे:--महात्मा प्रभु आश्रितजी, ब्रह्मचारी जगन्नाथजी, रायसाहिव वी० एन० दत्तजी, कैप्टेन जगन्नाथजी, पं० ठाकुर-दत्तजी श्रमृतधारावाले, वलदेविमत्रजी सपत्नीक, वावा गुरमुखसिंहजी, हंसराज कुंदरा, दीवानचन्द, व्रजलाल, हरप्रकाशजी, गुरुदित्तामल, भरतसिंह, ज्ञानचन्द, रामावतारजी, प्रकाशचन्द्र, श्रीराम, रामिकशन, ग्रानन्दपाल, ग्रानन्दलाल, हरिराम, विश्वनदासजी, रामकृष्णजी, सेठ भव्वालालजी, गोकुलनाथजी, मोतीरामजी, शान्ति-स्वरूपजी, सत्यदेवजी, शान्तानन्दजी, जगन्नाथजी फिरोजपुरवाले, व्रजविहारी, राम-लाल नारंग, भीमसेनजी, ठाकुर वनमाली कृष्णजी, ज्योतिप्रसादजी, हेमराजजी, ईश्वरदासजी, हरजसराय, कन्हैयालालजी, दीनानाथदत्तजी, मुरारीलाल, इन्द्रसेनजी, वनारसीदास, रामचन्द्र, विमलचन्द, रामदित्तामल, हरदत्तामल, संसारचन्द ग्रौर भोला-नाथ ग्रादि । इनके परिवारों की देवियां भी ग्रभ्यासार्थ ग्राती थीं । एक सौ से ग्रधिक संख्या स्त्री ग्रौर पुरुषों की योगसाधना शिविर में प्रविष्ट की गई थी। प्रवेशार्थियों की संख्या तो वहत थी किन्तु व्यवस्था के ग्रभाव के कारण सवको प्रवेश देना ग्रसंभव

था। श्री महाराजजी के समान उदारचेता तथा परोपकारी महात्मा ससार में वहुत कम है। ये जनता के कल्याणार्थ प्रात तीन वजे से साढे ग्यारह वजे तक ग्रीर रात्रि को ६ से ६ बजे तक नित्यप्रति ग्रपना समय देते थे। दर्जनार्थियो को समय इससे ग्रितिरक्त दिया जाता था। रात्रि को दस से साढे दस वजे तक महात्मा प्रभु ग्राश्रितजी महाराजजी के सिर में वादाम रोगन की मालिश किया करते थे।

नारायणदास कपूर के पिता को ग्रारोग्यता प्रदान—नारायणदास कपूर के पिता चिरकाल से वीमार थे। ग्रत्यन्त कृश ग्रीर दुर्वल होगए थे। ग्रितहीनता के कारण उनसे चला-फिरा नही जाता था। कोई उठाए तो उठते थे ग्रीर कोई लिटाए तो लेटते थे। पारिवारिक जन सेवा करते-करते थक गए थे। ग्रनेकोपचार किए किन्तु उनका रोग न मिटा। नारायणदास देहली से देहरादून श्री महाराजजी से ग्रपने पिता की नीरोगता के लिए प्रार्थना करने के लिए ग्राए। महाराजजी ने उनकी फोटो देखकर फरमाया "कुछ दिन तक प्रयोग करेगे। विलकुल तो रोग-मुक्त नही हो सकते। चलने-फिरने के योग्य हो जाएगे ग्रीर कुछ वर्ष ग्रीर जीवन धारण करेंगे।" श्री कपूर महाराजजी के परमभक्त ग्रीर प्रधान गिष्यों में से थे। महाराजजी के प्रति इनकी ग्रनन्य श्रद्धा ग्रीर भित्त थी। ये सदैव तन, मन तथा धन से इनकी सेवा करते थे। श्री महाराजजी ने चार दिन तक ग्रपनी शिक्त का प्रयोग करके कपूरजी के पिताजी को स्वस्थ कर दिया ग्रीर ये ५-६ साल तक जीवित रहे।

बाबा गुरमुर्खासहजी की रोग-मुक्ति—श्री वावा गुरमुखिसहजी ग्रावञ्यक कार्य वश ३-४ दिन के लिए देहली चले गए थे। वहा जाकर ज्वर पीडित होगए ग्रीर पेशाव विलकुल वन्द होगया। कई प्रकार के उपचार किए गए। किन्तु इन्हे ग्राराम नही हुग्रा। इनकी स्थित वडी चिन्ताजनक होगई। ग्रास-पास के सभी लोग, सम्बन्धी ग्रीर परिवार के सदस्य श्रातुर ग्रीर व्याकुल हो उठे। क्या किया जाए यह किसी की समभ मे नहीं ग्राता था। सभी किकर्तव्यविमूढ हो रहे थे। पारिवारिक जनो ने इसकी मूचना तार द्वारा महाराजजी के पास भेजी ग्रीर ग्रागीवाद के लिए प्रार्थना की। महाराजजी तार पढकर वहीं शान्त भाव से वैठ गए। ग्रपनी दिव्य-दृष्टि को वावाजी के ऊपर फेका ग्रीर मानसिक प्रयोग करना प्रारभ किया। वावाजी को उसी समय ग्राराम होना श्रारम होगया। ज्वर जाता रहा ग्रीर पेशाव ग्राने लग गया।

शिविर समाप्ति का समारोह—महाराजजी ने इस उत्सव के सभापित के ग्रासन को ग्रलकृत किया। ग्रानन्दस्वामीजी तथा ग्रन्य महापुरुषो के भाषण हुए जिनमे महा-राजजी की भूरि-भूरि प्रशसा की गई ग्रौर इन्हे मानपत्र भेट किया गया जो निम्न प्रकार से है —

**≈**5

नम शान्ताय तेजसे

श्रद्धेय श्री सकलशास्त्रपारगत निखिलयोगरहस्योत्तारणसुगसेतु
करतलामलकीकृतात्मज्ञानतत्त्व
वालत्रह्मचारी योगीराज श्री १०८ व्यासदेवजी महाराज के
पिवत्र चरणारिवन्दो मे सादर समिपत

ग्रभिनन्दन-पत्रम्

#### महाराज 1

हमारे ज्ञानकोप मे वे शव्द नहीं जिनसे हम ग्रापकी गुण-स्तुति कर सकें।
गगोत्री के चित्ताकर्पक दृश्य तथा जलवायुमण्डल से श्रापको देहरादून तपोवनीय
भूमि मे यत्रिप श्राकर्पण-माधन न भी हो तदिप 'जायन्ते विरला लोके जलदा इव
नज्जना ' उस उपिन को चिरतार्थ करने वाला ग्रापका स्वाभाविक गुण भक्त साधक
मण्डली को कृतार्थ करने के लिए विवय कर देता है। यह हमे पूर्ण विश्वास है। ग्रापने
ग्रपनी ग्रपार ग्रमुक्तम्पा मे इतना कष्ट उठाकर जो यहा गतवर्ष की भाति पधारकर
योगाभ्यास-जिज्ञामु जनता को प्रवचन तथा प्रयोगात्मक शिक्षा द्वारा श्रमुगृहीत किया
है, उम उनके लिए निनान्त ग्राभारी है। वर्षों से उस गान्ति गवेपणा मे भटकते हुए
ग्रिधिकारी पात्रों को उनने सकुचित समय मे वटी मुगमता मे राजयोग मार्ग पर ले
जाना, यह गुण ग्रापके ग्रितिस्वत ग्रन्थत नहीं पाया। इसका प्रधान कारण हमको
यह प्रतीत होना है कि जहा ग्राप ग्राध्यात्मिक शिक्षा के प्रकाण्ड पण्डित है, वहा लिप्सा,
नेता-मुक्ष्या, प्रतारणादि दैन्यों पर पूर्ण विजय प्राप्ति भी है। ग्राज हमने यह प्रत्यक्ष
ग्रम्भव गरके देख लिया है कि ग्रच्छे क्षेत्रों में बीज सब ससार वो सकता है, पर
यहा तो ग्रनेक जनर क्षेत्रों को उवंरा बनाकर स्थायी रूप प्रदान कर दिया गया है।

यित्वर । उपर्युत्त महत्वपूर्ण योग्यताग्रो के ग्रतिरिक्त ग्रापके सौजन्य, निरिभगानिता, रपष्टभाषिता तथा गरलतादि गुणो पर जनता मुग्ध है, इसमे रचक मात्र
भी ग्रत्युत्ति नहीं है। वैदिक माधनाश्रम की प्रयन्धन्यूनता के होते हुए भी ग्रापके
इस पर श्यान न देते हुए जो कृपा की है, इसके लिए कमेटी ग्रापकी ग्रतिकृतज्ञ है।
गापके ग्रामीर्वाद ने तम पूर्ण ग्रामा है कि वे भी घ्र ही ठीक हो जाएगी। ग्राज तक
नगभग दो भी नाधकों ने जो उस ग्राध्यम में ग्राध्यात्मिक ग्रान्ति प्राप्त की है उसके
मूल व निमिन रारण ग्राप ही है। हमें यह श्रेय कभी प्राप्त नहीं होता यदि ग्रापका
श्यान उस ग्रोर न होता। चलते-िकरते जहां कही हम देखते हैं ग्रापकी प्रभसा के
भीत मनाई देने है।

भगवन् । पही-नियो जनना प्राय प्रेय मार्ग व नास्तिकता की श्रोर श्राकुण्ट रहनी है। उनमें श्राध्यातिमध्याद की धारा प्रवाहित करके नए युग का प्रारम्भ करना श्राप मरीने श्रयण्य प्रतानारों के श्रितिस्वत श्रन्यत्र श्रसभव ही था। इस वर्ष गत वर्ष की श्रपेक्षा श्रध्यात्म ज्ञान के पिपामु जिज्ञासुत्रों की श्रिधिक लाभ प्राप्त हुशा है। उनके जिए हम श्रापक साथ वधाई के पात्र है कि श्राश्रम को श्रापकी छत्रछाया का परम महान श्रेय प्राप्त है। उन ग्रन्तर्यामी से करबद्ध प्रार्थना है कि इस परम पवित्र साधना प्रनार के लिए श्रापकों महस्य वर्षों तक दीर्घ जीवन प्रदान करे। श्रन्त में यह निवेदन करने है कि उसी प्रकार भविष्य से भी श्राप कृषा करते रहें।

श्रो३म् शम्

देहरादूत २८-१२-५२ हम है ग्रापके नितान्त कृतज्ञ एव उपकृत वैदिक साधनाश्रम (तपोवन) के समिति सदस्य

#### स्वर्गाश्रम मे शिविर

उत्सव की समाप्ति पर महाराजजी चौधरी जयरामिंसह की कोठी पर पधार गए ग्रीर वहा तीन-चार दिन ठहरकर स्वर्गाश्रम पधारे। वहा जाकर दो मास के लिए साधना-शिविर प्रारम्भ कर दिया। महात्मा प्रभु ग्राश्रितजी ग्रपने शिष्य ग्राचार्य सत्य-भूषणादि को साथ लेकर इस शिविर में भी सम्मिलित हुए। ग्रापके कई एक व्रत वहुत कठिन थे। वे गाय का ही दूध पीते थे ग्रीर इसीका घी खाते थे। जिनके घरों में यज्ञ नहीं होता था उनके घरों में भोजन नहीं करते थे। नारदमुनि का भी यहीं नियम था। वे भी जिस घर से यज्ञ का धूग्रा नहीं निकलता था उसके घर में कभी भोजन नहीं करते थे। महात्माजी ने गायत्री मन्त्र, जाप ग्रीर पच महायज्ञों का वहुत प्रचार किया है। ये ब्रह्मिन्ठ, तपोपूत, मान-ग्रपमान, हर्प-शोक, हानि-लाभ, जय-पराजय ग्रादि इन्हों से ग्रतीत, सेवापरायण, गुरुभिवतिनिष्णात ग्रत्यन्त ग्रपरिग्रहीं तथा सरलस्वभाव ग्रीर उच्चकोटि के महात्मा है। ग्रापने ४६ ग्रथों की रचना की है।

एक दिन महाराजजी ने महात्माजी से कहा कि आप महाराजा पटियाला के समान चमत्कारपूर्वक विज्ञान प्राप्त करना चाहते है या दृढ ग्रीर स्थायी। महात्माजी ने कहा, "मुक्ते तो इसका ज्ञान ही नहीं कि चमत्कारी विज्ञान कैसा होता है तथा दृढ श्रीर स्थायी कैसा होता है।" महाराजजी ने सारी वात वताई। एक वार महाराजा पटियाला इगलैंड गए श्रीर एक दिन सम्राट् जार्ज पचम की वडी प्रशंसा करने लगे कि 'ग्रापके राज्य मे कभी सूर्यास्त नही होता। ग्राप ससार मे सबसे ग्रधिक वैभवसम्पन्न है। मैं आपका राजकोष देखना चाहता हू जिससे में अनुमान लगा सकू कि आपके पास कितनी धन-सम्पत्ति है।" सम्राट्ने कहा, "मैं पालियामेट की ग्राज्ञा के विना ऐसा नहीं कर सकता।" महाराजा पटियाला के बहुत ग्राग्रह करने पर सम्राट्ने पालिया-मेट से ग्राज्ञा प्राप्त कर ली। पालियामेट ने इस शत पर स्वीकृति दी कि महाराजा को श्राखे बाधकर कोष के भीतर ले जाया जाए ग्रीर ग्राखे वाघकर ही वाहिर लाया जाए जिससे उन्हें मार्ग का पता न लग सके। महाराजा पटियाला ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया। पटियाला नरेश जब भीतर प्रवेश करने लगे तब उनकी स्राखे बाघ दी गई श्रीर जब वे भीतर प्रविष्ट होगए तव खोल दी गई। वे इगलैंड के राजकोष को देख-कर आश्चर्यचिकत होगए। बड़े-बड़े कमरे बने हुए थे। किसी में सोने की ईटे भरी हुई थी श्रौर किसी में चादी की, तथा किसी में हीरे, जवाहिरात, मोती, पन्ने तथा नीलम भरे हुए थे। जब वे सब कुछ देख चुके तव उनकी ग्राखे वाधकर गाडी मे विठाकर दूर एक वाजार मे उतार दिया। पटियाला नरेश वहा ग्राश्चर्यस्तिभत से होकर खडे रहे। उन्हें ऐसा मालूम हुग्रा मानो उन्होंने कोई स्वप्न देखा हो। इस सव मामले की यथार्थता पर उन्हें विश्वास नहीं होता था। उन्हें ऐसे लगता था मानो उन्हें किसी ने मैंस्मराईज किया हो। इस पर महात्माजी ने महाराजजी के चरण पकड लिए ग्रौर निवेदन किया, "महाराजजी, मैं तो दृढ, स्थायी ग्रौर निर्भ्रान्त विज्ञान द्वारा ग्रात्म-दर्शन करना चाहता हू।" महाराजजी ने उन्हें समभाया कि ग्राप धर्य तथा ग्रान्ति-पूर्वक ग्रम्यास करते जाइए, कुछ वर्षों मे दृढ, स्थायी, ग्रौर निर्भ्रान्त विज्ञान प्राप्त हो जाएगा। महात्माजी ने पुन निवेदन किया, "मैं तो इस जीवन को ग्रापके श्रीचरणों में समर्पण कर चुका हू। जब ग्रापकी इच्छा हो तब प्रदान करना।" श्री वी० एन०

दत्तजी श्रत्यन्त श्रद्धा श्रीर भिक्त से श्रभ्यास में लगे हुए थे। महाराजजी की सेवा ग्रन्न, धन, वस्त्रादि से करने के वहें इच्छुक थे। किन्तु महाराजजी इसे स्वीकार नहीं करते थे क्यों कि इनको ग्रपने सारे व्यय के लिए रुपया ग्रन्यत्र से प्राप्त हो रहा था। जब दत्तजी ने बहुन श्राग्रह किया तो समय श्राने पर लेने के लिए कह दिया। दत्तजी थोडे समय के ग्रभ्यास में ही स्थूल तथा मूक्ष्म गरीर के सभी पदार्थों का विज्ञान प्राप्त करके कारण गरीर में प्रवेश करने लग गए थे। इसी प्रकार जगन्नाथजी ब्रह्मचारी, कैप्टेन जगन्नाथजी भी बहुत शीद्रा इस विज्ञान को प्राप्त करके विज्ञानमय कोप में पहुच गए थे। कई वर्ष तक ग्रभ्यास करके इन्होंने इस विज्ञान को दृढभूमि किया। ब्रह्मचारी ग्रगस्तमुनिजी प्राय मीन ही रहते थे। कई-कई मास का श्राकार मीन ग्रीर काप्ठ मीन धारण करके, नमक ग्रीर मीठे का परित्याग करके कठिन तप हारा प्राप्त विज्ञान को दृढभूमि करने में सलग्न रहते थे।

श्रीमनी शान्ता, शीलादेवी, माता मेलादेवी, श्रोमप्रकाशजी श्रीर रणवीरजी, नारायणदासजी, गुरुचरणदत्त तथा किशनचन्द इत्यादि वहुत से श्रभ्यासी श्राए हुए थे। सवने श्रभ्यास में मन्तोपप्रद उन्नित की। शिविर की समाप्ति प्रीतिभोज श्रीर महाराजश्री के उपदेश में की गई।

एक श्राक्चर्यजनक घटना-श्री महाराजजी ने शिविर समाप्ति के पश्चात् एक मास तक स्वर्गाश्रम मे ग्रीर निवास करने का विचार किया। जब महाराजजी के गगोत्री जाने मे केवल ग्राठ-दस दिन ही शेप थे तव उवराय ग्रीर उनकी धर्मपत्नी कृष्णादेवीजी तथा इनका लघु पुत्र महाराजजी के दर्शनार्थ ग्राए ग्रीर गगोत्री जाने से पूर्वदो-चार दिन के लिए देहरादून पधारने के लिए निवेदन किया, किन्तु इन्होने स्वीकृति नहीं दी। इससे उनको वडी निराणा हुई। जब महाराजजी प्रात साय ग्रभ्यास के लिए वैठते तो ये दोनो भी इनके साथ बैठ जाते। एक दिन महाराजजी ग्रोर उवरायजी एक घटा अभ्यास करके उठ गए किन्तु कृष्णादेवीजी सात वजे से लेकर साढे दस वजे तक ध्याना-वस्था मे निञ्चेष्ट समाविस्थावस्था मे वैठी रही। उवरायजी ने वडी कठिनाई से उठाया। इन्होने न दूध पीया श्रीर न कुछ खाया, ग्रपने पलग पर जाकर लेट गईं। ये वडी उदासीन सी ग्रवस्था मे थी। प्रात कॉल ग्रप्ने पित के साथ ग्रभ्यास मे नहीं ग्राई । जब महा-राजजी ग्रीर उवराय ग्रभ्यास मे वैठे हुए थे तव कृष्णा चारपाई पर लेटे-लेटे ही जोर से चिल्ला कर कहने लगी, "हे मेरे भगवान्, हे मेरे कृष्ण, तू कहा चला गया है ? हे कृष्ण भगवान्, तू मुक्ते छोडकर कहा चला गया है ?" अनेक नामो से सवोधन करके भगवान् को पुकारने लगी। उवराय ने ग्रासन विछा कर इसे विठा दिया। वह बहुत देर तक इस ग्रासन पर बैठी रही, फिर वह उठकर जगल की श्रोर चल दी श्रीर वहां पर एक वृक्ष के नीचे समाधिस्थ होकर बैठ गई। जब बहुत देर तक उसका पता नहीं चला तव उवराय, उनका लडका ग्रीर महाराजजी उसे वन मे ढूढने के लिए चल दिए। उसे एक वृक्ष के नीचे समाधिस्थावस्था मे वैठे पाया। उबराय ने इसे हाथ पकडकर उठाया। वह उठ तो गई किन्तु ग्राखे नही खोली। वे वलपूर्वक घीरे से ग्रपने साथ कमरे मे ले श्राए किन्तु तव भी उसने ग्राखें नही खोली । उसको चटाई पर लिटा दिया। इसे होश में लाने के लिए महाराजजी ने वडा यत्न किया किन्तु उसने श्राग्वें नहीं पोली। कभी-कभी भगवान् कृष्ण को जोर-जोर से पुकारने लगती थी।

कृष्णा की एक सहेली भी इन दिनो ग्राई हुई थी। कृष्णा के पति वडे चिन्तित थे। कृष्णा की सहेली ने इन सब से कहा, "ग्राप घवराए नहीं। मेरा सारा जीवन साधु-महात्मात्रों के सत्सग में ही व्यतीत हुआ है। आप स्त्रियों को नहीं जानते। मने वहुत देखी है। यह स्वय ही ठीक हो जाएगी। "भोजन परोसा गया। महाराजजी और उबराय खाने लगे। कृष्णा ने महाराजजी की थाली मे से कुछ भाग उठाकर उवराय की थाली मे रखकर कहा, "यह प्रसाद है, इसे खाग्रो। इनके प्रसाद से ग्रापका कल्याण हो जाएगा। मेरे समान समाधि लग जाएगी श्रीर साक्षात् भगवान् के दर्शन हो जाएगे ।" कृष्णा को भोजन करने के लिए बाध्य किया गया । चार-पाच ग्रास वाने के पश्चात् पुन इसने अपनी आखे वन्द कर ली। जैसे-तैसे फिर उसकी आग्ने खुलवाई गईं और भोजन के लिए कहा गया तो कुछ भोजन कर लिया। महाराजजी ने इसकी बाह्य वृत्ति करवाने के लिए इसे वर्तन साफ करने का ग्रादेश दिया। कुछ देर नक नो उसने वर्तन साफ किए और फिर वर्तन छोडकर अपने मुह को ही राख से रगडने लगी। महाराजजी क्रुप्णा की इस प्रकार की स्थिति देखकर बड़े चिन्तित हुए। वह ग्रत्यन्त श्रद्धालु तथा भावुक थी। इसके दिल ग्रीर दिमाग पर भावुकता का ग्रधिक प्रभाव पड गया था। इसी भावावेश के कारण इसे अपनी मुधवुध नही रही थी। ग्रधिक भावावेश मे ग्राकर भवत कुछ उन्मत्तो जैसा ग्रीर ज्ञानियो जैसा व्यवहार करने लग जाया करते है। ग्रमृतसर में मैंने इस प्रकार का ग्राचरण करते हुए कई भवती को देखा है। अब कृष्णा को महाराजजी के कमरे मे लाया गया। उवराय ने महाराज-जी को इसके ऊपर कुछ प्रयोग करने के लिए निवेदन किया। ग्रव तक इसने ग्रावे नहीं खोली थी। उबराय उठाए तो उठ जाती थी, विठाए तो बैठ जाती थी, विटाए तो लेट जाती थी, श्रीर यदि पकडकर चलाए तो ग्रस्तव्यस्त पग घरनी हुई वेहोनी की हालत मे चलती थी। कभी-कभी भगवान् कृष्ण का नाम लेकर पुकारती थी यीर कभी रुदन करने लग जाती थी। जिस प्रकार भवन भगवान् के विरह मे रोने लगना है इसी प्रकार से यह रो रही थी। कभी यह स्तव्ध हो जाती थी ग्रीर कभी इसके शरीर मे रोमाच हो जाता था। कभी-कभी आखे वन्द करके चलने लगती थी। कभी झून्य सी हो जाती यी। अनेक प्रकार के सात्विक भाव-विकार उत्पन्न हो रहे थे। कृष्णा की दरी पर लिटा दिया और महाराजजी ने इस पर प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया। कृटणा अब होश मे आगई और स्वय ही उठकर बैठ गई ग्रीर कहा, "नेव बन्द करके मैं न जाने किस लोक मे चली गई थी। वह श्रीकृष्ण भगवान् का गोलोक था। वहा मैंने जो ग्रानन्द पाया उसे कैसे वर्णन करू। " इतनी वात कहकर वह धाराप्रवाह से वडे अचे विज्ञान का वर्णन करने लगी। लगभग डेढ घण्टे तक व्याख्यान देती रही। ग्रनेक प्रकार के विज्ञानो का कथन किया। पूछने पर विदित हुग्रा कि इसने पहिले कभी भाषण नहीं दिया। आज इस प्रकार का भाषण देने का इसका प्रथम अवसर था। १५ वर्ष इसका विवाह हुए होगए, कभी इसने कोई भाषण नही दिया ग्रीर न इसमे इतनी योग्यता ही है। कृष्णा ने ग्रपने पति के पूर्व जन्म के दो सम्बन्ध बताए। श्री ग्रानन्दस्वामीजी का पूर्व जन्म मे ग्रपने साथ सम्बन्ध वताया। महाराजजी के साथ भी पूर्व जन्म के सम्बन्ध बताए और कहा कि ग्राप कई जन्म से मेरे गुरु चले ग्रारहे है और मैं श्रापकी शिष्या। महाराजजी, उवराय तथा उनका पुत्र कृष्णा के भाषण को मूकवत् सुनते रहे। लगभग एक घण्टा तक व्याख्यान देकर वह चुप होगई। जव

वह भाषण दे रही थी तब उसके मुखमण्डल पर तेज टपक रहा था, कण्ठ सुरीला होगया था, वाणी मे माधुर्य ग्रागया था, भाषा प्रभाववाली थी। ऐसा प्रतीत होता था मानो साक्षात् सरस्वती उपदेश दे रही हो। भाषण के उपरान्त वह महाराजजी के चरण पकडकर रोने लगी ग्रीर कहा, "मेरे पूज्य गुरुदेव । श्रापने मुक्ते क्या-क्या दिखा दिया । में तो इस योग्य न थी। मुक्त पापिष्ठा पर ग्रापने ग्रपार कृपा की है। मै त्रापका ऋण कभी नहीं चुका सकती ।" महाराजजी ने कहा, "तुम्हारा पुत्र तुम्हारी इस प्रकार की अवस्था देखकर बहुत घवरा गया है। इसे प्यार करो, सान्त्वना दो, रनेह ग्रीर प्यार से इसे श्रपनी गोद में विठाग्रो।" कृष्णा ने कहा, "मेरे पित ग्रीर पुत्र के सब सम्बन्ध समाप्त होगए हैं। मेरे सब बधन कट गए हैं। ग्रव में घर नहीं जाऊगी। हिमालय में गमन करगी।" उबरायजी से कहा, "यदि ग्राप चाहे तो में श्रापका विवाह श्रपनी छोटी बहिन से करवा सकती हू। मेरा श्रापसे पति ग्रीर पत्नी का सम्बन्ध समाप्त होगया है। अब में हिमालय में जाकर अपने प्यारे भगवान् की भिवत में अपना शेष जीवन व्यतीन करगी।" इतना कहकर वह वडे जोर से रोने लगी। उसने अपने पितदेव के साथ जाने से विलकुल इन्कार कर दिया और पुन भगवान् को उसके अनेक नामों से पुकार-पुकारकर रूदन करने लगी। बहुत देर तक राधा के समान भगवान् के विरह में विलाप करती रही। उवरायजी स्वामी शिवानन्द-ग्राश्रम ने डाक्टर को बुला कर लाए । डाक्टर ने कृष्णा के सारे बरीर का भली प्रकार से निरोक्षण किया । कोई शारीरिक कष्ट उसे न था । इन्होने महाराजजी से पूरा वृत्त कृष्णा का निवेदन किया ग्रीर कहा "िक इन देवियो की ग्राप कीर्तन, भजन तथा जाप ही निप्पाया करे। इनका हृदय कोमल होता है। इन पर ग्रापके मनोवल का प्रभाव श्रिधिक पट गया है। उसे ये महन नहीं कर सकी है।" कृष्णा डाक्टर से बहुत नाराज हुई ग्रीर उसे वहाँ से चले जाने को कहा क्योंकि उसे केवल महाराजजी में ही विश्वास या ग्रीर यह उन्हें ही श्रपना टाक्टर समभती थी । उसका उपचार उन्हीके पास था, अन्य किसी के पास नहीं। इसने आधा घण्टे तक महाराजजी के समक्षे डाक्टर को अग्रेजी मे उपदेश दिया। उसे विश्वास था कि टाक्टर योग ग्रीर समाधि के विषय में कुछ नहीं जानता। योग सीखने का रित्रयों को पूर्ण ग्रधिकार है। वे इसकी बीघ्र ही अधिकारिणी बन जाती है। देविया पुरुषो की ग्रेषेक्षा समाधि के रहस्य ग्रीर तत्त्व को ग्रधिक समभती है क्योंकि उनका हृदय निष्पाप, कोमल, सरल ग्रीर सात्विक होता है। उनका समार बहुत छोटा होता है ग्रत इनके मन मे सकल्प ग्रीर विकल्प कम उत्पन्न होने है। इसलिए बीघ्र ही समाधि में स्थिति हो जाती है। इसी प्रकार का उपदेश बहुत देर तक देती रही। डाक्टर ये सब बाते सुनकर लज्जित-सा हो रहा था ग्रीर उवराय श्राय्चर्य में दूवा जाता था क्यों कि उसने कृष्णा को कभी ऐसी श्रु ग्रग्रेजी वोनते नही मुना था। ग्राज प्रथम वार ही उन्होने इस प्रकार घारावाहा ग्रंग्रेजी बोलते मुना या। उबराय ने डाक्टर से कृष्णा के व्यवहार के लिए क्षमा-याचना की । उसका दिमाग ठीक नही था, इसीलिए जो उसके मन मे श्राया वकती चली गई। टाक्टर ने कहा, "उनको बारीरिक रोग नहीं है। इन्हें किसी प्रकार की द्याई की ब्रावस्थकता नहीं है। महाराजजी ही इन्हें ठीक कर सकते हैं।" ये योगी-राजजी के मुपरिचित थे यत उवरायजी से फीस नहीं ली। डाक्टर के चले जाने के पद्यान् कृटणा पुन प्रन्तर्मुख होगई। सायकाल होगई थी, महाराजजी ग्रीर उवराय-

जी सध्या करने के लिए बैठ गए ग्रौर दो घण्टे तक ध्यानस्थ रहे। महाराजजी ने कृष्णा को पुन होग मे लाने के लिए प्रयोग किया। रात्रि के लगभग १० वजे इसे होश ग्राई। इसने उबरायजी को ग्रपने शरीर पर हाथ नहीं लगाने दिया क्यों कि वह समभती थी कि वह ग्रभी देवलोक से ग्राई है ग्रत उसका शरीर शुद्ध ग्रौर पिवत्र है। उसके पितदेव के स्पर्श से वह ग्रपवित्र हो जाएगी। महाराजजी ने इसे कुछ दूध ग्रौर मिठाई खाने के लिए दी ग्रौर उसे सोने के लिए ग्रादेश दिया। वह रात मे भली प्रकार सोई, प्रात उठी तो महाराजजी ने उसे ग्रपने घर जाने की ग्राज्ञा दी। देहरादून जाकर पुन वह पूर्ववत् होगई। वह पुन पूर्ववत् भगवान को पुकार-पुकारकर ग्रचेत होगई। पारिवारिक जन सभी इससे वडे परेशान होगए। कुछ दिनो वाद उवरायजी इसे देहरादून से दिल्ली इसके माता-पिता के पास लेगए। वहा लेजाने का उद्देश्य इसका मन-बहलाव था। वहा जाकर भी इसकी वृत्ति ग्रन्तर्मुखी रही। किन्तु वहा पर कुछ दिन रहने के पश्चात् इसकी स्थित ठीक होगई। इस प्रकार की ग्रन्तर्मुखी वृत्ति कृष्णा की न कभी हुई थी ग्रौर न भविष्य मे होने की सम्भावना थी।

#### गंगोत्री प्रस्थान

श्रवकी वार महाराजजी ने मसूरी होते हुए उत्तरकाशी जाने का विचार किया था। प० ठाकुरदत्त वैद्य की मसूरी में कई कोठिया थी। एक कोठी की चावी उनसे लें ली। कृष्णा के मकान पर उसका हाल पूछने गए, किन्तु वहा नौकर के श्रतिरिक्त कोई नहीं था। उसीसे सब समाचार विदित हुग्रा। महाराजजी १५ दिन तक मसूरी विराजे। यहा पर भी इनके कई भक्त थे जो नित्य सत्सग में श्राते रहे। इसके पश्चात् ये घनौटी, कानाताल, नन्दालगाव तथा घरासू होते हुए उत्तरकाशी पधारे। वहा पर एक सप्ताह पजाबी क्षेत्र में ठहरकर गगोत्री प्रस्थान किया।

इस वर्ष गगोत्री मे श्री ग्रानन्दस्वामी सरस्वतीजी तथा सेठ रमणलालजी भी ग्राए हुए थे। उत्तरकाशी मे योगनिकेतन के लिए जो भूमि खरीदी गई थी उस पर कुटिया बनाने के लिए महाराजजी ने दयालमुनिजी को ग्रादेश दिया कि इस साल शीतकाल मे लकडी ग्रीर पत्थर का प्रबन्ध किया जाना चाहिए। दो कमरे नीचे तथा दो ऊपर ग्रीर चारो के ग्रागे बराण्डे बनाने का निश्चय किया गया। इसके लिए माता मनसादेवी ने ६००० रु० प्रदान किया। ग्राम्त के ग्रन्त मे स्वामीजी ग्रीर सेठजी उत्तरकाशी चले गए ग्रीर महाराजजी ग्रक्तूबर में पधारे। ये पजाव सिंघ क्षेत्र मे ठहरे। इस वर्ष भी स्वमीजी ने महाराजजी से तपोवन मे साधना-शिविर लगाने के लिए निवेदन किया, किन्तु इन्होने इस साल के लिए इन्कार कर दिया। एक मास उत्तरकाशी मे निवास करके महाराजजी स्वर्गाश्रम पधारे।

# स्वगिश्रम साधना-शिविर

१५ नवम्बर से साधना-शिविर चालू कर दिया गया। ग्रभ्यास मे जिन साधकों ने भाग लिया उनमें से मुख्य ये थे — महात्मा प्रभु ग्राश्रितजी, ब्रह्मचारी जगन्नाथजी, वी० एन० दत्तजी, कैंप्टेन जगन्नाथजी, सेठ रामिकशोरजी वरेलीवाले, ब्रह्मचारी ग्रगस्त्यमुनि, श्री गुरुचरणदत्तजी, श्रीमती धर्मवती, सरलादेवी, भाग्यवन्ती, माता मेलादेवी, इनकी पुत्रवधू शीला ग्रीर शान्ता, सेठ तुलसीराम ग्रीर इनकी धर्मपत्नी माता

मनमादेवी, इनके पुत्र हरिकिशनदास ग्रीर ग्रमीरचन्द, नारायणदास कपूर ग्रीर इनकी पत्नी, योगेन्द्रपाल तथा इनकी धर्मपत्नी, वैद्य कृष्णदयालजी, जयकिशनजी सपत्नीक, शान्ता शास्त्री, वलदेविमत्र ग्रीर इनकी पत्नी सुमित्राजी। प्रात ४ वजे से ७ वजे तक दो योग शिक्षण की कक्षाए लगाई जाती थी। सायकाल ६ वजे से ६ वजे नक दोनो कक्षात्रों को निम्मलित ग्रभ्यास करवाया जाता था। प्रात ५ से ६ वर्ज तक स्रासन, प्राणायामादि मिखाया जाता था। महाराजजी जिस व्यक्ति को व्यान काल मे विशेष श्रभ्यास करवाना चाहते थे उसका नाम लेकर पुकारा करते थे। जिसका नाम निया जाता था वह मावधान हो जाता था। तव ये जैसा आदेश देते थे वैसा ही अभ्यासी को करना होता था। नित्यप्रति अभ्यासियो को क्रमपूर्वक विज्ञान कर-वाने थे। जो ग्रभ्यामी जिस प्रकार की प्रार्थना ग्रभ्यास के सम्वन्ध मे करता था ये वैसा ही विज्ञान का श्रभ्यास उसे करवा देते थे। सबके मन समाहित रहते थे। उच्छानुमार सबको विज्ञान प्राप्त हो जाना था। सभी साधक सन्तुष्टेथे। सबकी उन्नित् हो रही थी। उन सबमे महाराजजी का मनोवल काम कर रहा था। ये जिसको जो ज्ञान करवाना चाहते थे वह हो जाता था। सब साघको के पास एक-एक डायरी थी। सभी अपने-अपने अनुभव इसमे लिखते जाते थे। एक दिन महाराज-जी ने सब अध्यासियों को निद्रा का ध्यान करने का आदेश दिया। उस दिन अन्य किसी विज्ञान का ध्यान न करके केवल निद्रा के स्वरूप का ही घ्यान करना था। यह कैमे और कव आती है, उस समय मन, बुद्धि और इन्द्रियों की कैसी अवस्था होती है, उत्यादि विज्ञान प्राप्त करके निद्रा के स्वरूप मे ही स्थिर हो जाने का भ्रादेश था। गभी अभ्यामी निद्रा के रवरूप में स्थिर होगए अर्थात् सब साधना मदिर में ही सो गए। कभी-कभी सभी माधक केवल सकल्प-विकत्पों के अभाव करने का ही अभ्यास करने थे। किसी प्रकार के सस्कार अथवा विचार का प्रवेश मन और बुद्धि में नहीं होंने देने थे। शरीर श्रीर श्रन्त करण को विलकुल शून्य बना देते थे। विचार श्रीर वृनियों में रहित होकर सबके शरीर ग्रीर ग्रन्त करण जडवत् हो जाते थे। किसी को कुछ भी ज्ञान नहीं रहना था। जो ग्रभ्यासी मूर्ति में विश्वास करते थे वे जिस देवता या भगवान के अवनार श्री कृष्णचन्द्रजी, विष्णुभगवानादि जिसके भी दिव्य रूप में दर्गन करना चाहते थे उनके मामने उसी देवता की मूर्ति श्राकाण में सामने श्राकर पटी हो जाती थी श्रीर वे श्रपनी उच्छानुसार जब तक चाहते थे दर्शन करते रहते थे। उन माधको मे महात्मा प्रभु ग्राश्रितजी, ब्रह्मचारी जगन्नायजी, बी० एन० दत्तजी, कैंद्रेन जगन्नाथजी, रोमिकियोरजी, सेठ तुनसीरामजी, एन० डी० कपूर और श्रीमती धमंबनीजी हटय प्रदेश के पदार्थों का साक्षात्कार कर रहे थे ग्रीर वेष ग्रम्यासी ब्रह्म-रश्च के पटार्थों का, ग्रन्नमय तथा प्राणमय कोषों का ग्रभ्यास कर रहे थे। इन सव विज्ञानों का वर्णन महाराजजी ने ग्रपने ग्रन्थो 'ग्रात्म विज्ञान' 'वहिरग योग' तथा 'ब्रह्म विज्ञान' मे किया है। वहा पर देग्ये। ये तीन ग्रन्थ तीन ग्रमूल्य निधिया है जिनकी रचना विश्व-कत्याण के लिए की गई है।

इन्द्रा की रोगमुक्ति—इन्द्रा एन० डी० कपूर की कनिष्ठा भगिनी है। सारे परिवार का उससे बड़ा प्यार था। वह लगभग डेढ साल से बीमार थी। उसके पाव मे ग्रत्यिक पीटा रहती थी। विलकुल चल-फिर नही सकती थी। दिन-रात पलग पर पडी रहती थी। ग्रनेक उपचार किए गए किन्तु बेचारी को ग्राराम नहीं हुग्रा। उसकी ससुराल पक्ष के लोग उस के पितदेव का दूसरा विवाह करने के लिए समुद्यत होगए थे। श्री कपूर बड़े चिन्तित थे। एक दिन ग्रत्यन्त दु खित होकर महाराजजी से ग्रपनी व्यथा सुनाई ग्रीर ग्रपने मानसिक वल प्रयोग द्वारा उसे स्वास्थ्य प्रदान करने के लिए महाराजजी से निवेदन किया। इनकी मानसिक शक्ति इन दिनो वडी प्रवल थी। जिस कार्य को वे करना चाहते थे वह ग्रवश्य पूरा हो जाता था, जवतक वह पूर्ण नहीं होता था इन्हे चैन नहीं पडती थी। उसी पदार्थ का रूप-सा वन जाते थे। इसके साथ ही इनकी निश्चयात्मिका बुद्धि भी वडी वलवती थी। जिस वात का निर्णय कर लेते थे उसे पूरा करके ही छोडते। दृढनिश्चयी मनुष्य सदा सफलता लाभ करता है। महाराजजी पूर्ण दृढनिश्चयी थे, इसीलिए सफलता देवी सदा उनके सामने हाथ वाघे खडी रहती थी। एन० डी० कपूर की करुणाजनक प्रार्थना को सुनकर महाराजजी द्रवीभूत होगए ग्रीर कुछ काल ध्यानावस्थित होने के उपरान्त कहा, "वेटी स्वस्थ हो जाएगी, उसका रोग जाता रहेगा। ग्राप चिन्ता न करे। किन्तु डेढ-दो वर्ष मे चलने-फिरने के योग्य होगी।" महाराजजी ने इन्द्रा की फोटो मगवाकर उस पर प्रयोग करना प्रारभ कर दिया ग्रीर वह डेढ साल मे पूर्ण स्वस्थ होगई ग्रीर ग्रपने पतिदेव भीमसेन के साथ योगीराजजी के दर्शन करने के लिए स्वर्गाश्रम गई।

सुमित्रा को वरदान- महाराजजी महान् योगी है, सिद्ध पुरुष है, कई प्रकार की सिद्धिया इन्हे प्राप्त हैं। मनोवल इनका ग्रपूर्व है। दयालुता तथा उदारता अपार है। बात की बात में रोगियों को रोगमुक्त कर देते हैं। दुं खियों के दुख को एक क्षण मे दूर करते है तथा पतितो का परित्राण करते है। सकटो के निवारक श्रौर पापियों के उद्घारक हैं। निर्धनों को धनवान, निर्वलों को वलवान तथा नि सन्तानों को पुत्रवान बना देना श्रापके बाए हाथ का खेल हैं। हजारों श्रादिमयों को विविध प्रकार के सकटो से स्रापने मुक्त करके उनके जीवनो को सुखी वनाया है। सुमित्रादेवी महाराज की शिष्या तथा भक्ता है। तीन-चार साल से अभ्यास करने श्राती है। इसके पतिदेव श्राध्यात्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति नहीं है। इसी देवी की प्रेरणा से उनकी इस ओर रुचि हुई है। वे भी प्रतिवर्ष साधना शिविर मे सम्मिलित होते है। सन्तान के स्रभाव के कारण दोनो चिन्तित स्रौर दु खी रहते थे। एक दिन सुमित्रादेवी ने इस सम्बन्ध मे महाराजजी से प्रार्थना की। महाराजजी ईश्वर-भितत में इसकी रुचि देखकर प्रसन्न थे। वे नही चाहते थे कि यह कीचड़ में फसे। सन्तान की ममता मे एक बार फसकर फिर उससे वाहिर निकलना वड़ा कठिन हो जाता है। सारा जीवन सन्तान के पालन, पोषण, शिक्षण, त्राजीविका, विवाहादि मे ही व्यतीत सारा जावन सन्तान क पालन, पाषण, शिक्षण, आजाविका, विवाह । द होने उसे बहुत हो जाता है। इस अअट से मनुष्य कभी मुक्त नहीं हो सकता। इन्होंने उसे बहुत समआया किन्तु उसमें बड़ी प्रवल पुत्रेषणा थी। उसने स्वय भी दुवारा आशीर्वाद के लिए निवेदन किया और अपनी सुपरिचित देवी शान्ता से भी निवेदन करवाया। महाराजजी ने सुमित्रा से पूछा, "एक और सन्तान की ममता तथा दूसरी और योग द्वारा आत्म-साक्षात्कार, इन दोनों में से तुम किसे पसन्द करती हो?" सुमित्रा ने पुन निवेदन किया, "महाराजजी, हम गृहस्थी है, बालवच्चों के बिना घर सूना और वन के समान लगता है। मातृऋण को पूरा करना भी एक महान कर्त्तव्य है। सन्तान

के बिना गृहस्थाश्रम का उद्देश्य भी पूरा नहीं होता। बानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करने के पश्चान् ज्ञान, ध्यान, योग, तप तथा जापादि किए जा सकते हैं। गृहस्थाश्रम में तो सन्तान होनी ही चाहिए।" उसके आग्रह को देखकर महाराजजी ने एक पत्र अपने भपन वैत्र धमनन्द्र को मुमिया के उपचार के लिए लिख दिया जिसमें इसके मन्तानी-दानि हो नके। मुमिया यह जानकर बडी होपत हुई। उसने समका अब सब चिन्नाए चली जाएगी। महाराजजी का बरदान प्राप्त होगया। सब आशाए पूर्ण होगई। उनका आशीर्वाद अवस्य सफत होगा। पत्र को लेकर बैद्यजी के पास अमृतसर गई। उपचार हुआ और उसने एक कन्या को जन्म दिया। उसका नाम प्रमिला रखा और मुमिया उस बच्ची वो लेकर अपने पत्त बलदेवसित के साथ स्वर्गाश्रम में श्री महाराजकी के चरण स्पर्ण गरने के लिए गई। सन्तान तो उत्पत्न होगई किन्तु ईव्वर-भिवत में यिनत रह गई। अमृत्य होरे के स्थान पर काच मिण खरीद ली।

## गगोत्री के तिए प्रस्थान

चार मान का साधना-शिविर समाप्त करके महाराजजी ने एक मास तक न्वर्गाक्षम में नियास किया और तत्पश्चात् गगोत्री के लिए प्रस्थान किया। मार्ग मे कुछ दिन तक उत्तरकार्या में ठहरे और फिर गगोशी पथारे। महाराजजी का योग निकेदन रत्रामी द्यालमुनिजी के परिश्रम ने बनकर तैयार होगया था । कुटियाए एक इसरी ने उठ फासते पर बनाई गई थी जिससे ध्यान और जाप में किसी प्रकार की बाजा उपस्थित न हो । इसमे बारह कृटियाए, चार रसोब्या, एक श्रीपधालय, तीन रनानपर तथा चार बौचातय बनाएँगए। कृटियाश्रो के सामने श्रच्छा बटा सहन है। झारादि न स पूर लगाने के तिए पर्याप्त भूमि याली छोट दी गई है। यह योग जिया का प्रशिक्षणालय अयया योग-साधना बेन्द्रे उन पूज्य गुरुदेव की स्मृति मे बनाया गया था जिनमें हम्सिल में १७ घण्टं में सम्पूर्ण ग्रात्म-विज्ञान तथा ब्रह्म-विज्ञान की प्राप्ति हुई थी। प्रशिक्षणानय के ग्रभाव में योग-प्रशिक्षण का कार्य मुचारुहपेण चारता ग्रेस स्व था। इस महान वार्य के तिए एक निजी भवन की परमावश्यकता थीं। उत्तरकाणी में योग-निज्यन के लिए भूमि परीद ली गई थी और उस पर भवन निर्माण प्रारम्भ होगया या । ऋषिकेश में मीनी की रेती पर एक ऊची पहाडी पर भवन निर्माण हो रहा है। योग-प्रशिक्षणातयों की स्थापना पूज्य महाराजजी की विस्व को एक अपूर्व देन है। उन प्रशिक्षणालयों से संकटो व्यक्ति प्रतिवर्ष लाग उठा रहे हैं, त्रीवन के तथ्य मां प्राप्त करने के लिए मार्ग दर्शन प्राप्त कर रहे हैं।

गगीशी के बीग निकेतन के निर्माण में महाराजजी ने ३०००० रुपया व्यय जिया। यह निकेतन एकान्त और शान्त स्थान पर भागीरथी के तह पर बनाया गया है। १६७३ में यह खालम बनकर नैयार हागया था। यहा के बातावरण में आध्या- निक्ता के परमाणु खोतप्रीत है। हजारी वर्षों से उस पुण्यभूमि पर ऋषि-मुनियो, साधु-गन्तो, योगिया और अस्तो ने इस भूभाग में रहवर अध्यात्म चिन्तन करके बन्वार्णीयगम किया है। गगन मण्डल में परिपूर्ण उनकी विचारधाराए आज भी सापनी तथा अस्यासियों को अध्यात्म-पथ पर चलने की प्रेरणाए प्रदान करती है और अध्यात्म का मार्ग जो 'क्रिय धारा निजिता हुरत्यया' है वह सुगम्य, सुबोव और प्रधान हो जाता है। इस बालम में निवास करने वाले साथक प्रतिपत्न परमात्मा के

सान्निध्य का अनुभव करते हैं। श्री अरिवन्द के गव्दो मे वे सदैव उसके साहचर्य मे निवास करते है।

#### स्वगिश्रम गमन

दशहरे के पश्चात् महाराजजी उत्तरकाशी पधार गए। वहा पर एक मास निवास करके स्वर्गाश्रम पधारे और वहा पर पूर्ववत् एक नवम्बर से साधना शिविर प्रारम कर दिया। इस वर्ष गगाजी के तट पर कानपुरवाली धर्मशाला मे साधना-शिविर का कार्यक्रम चालू किया गया। इसमे ग्रभ्यासियो की कक्षाए लगाने के लिए दो वहे-बहे कमरे थे। यह स्थान नितान्त एकान्त और शान्त था। ग्रभ्यासियो का भोजन बनाने के लिए महाराजजी ने इस वर्ष एक पृथक् सेवक का प्रवध कर दिया था। इस भोजनालय तथा भण्डार की व्यवस्था कैप्टन जगन्नाथजी के सपुर्द की गई। निर्धन सन्यासी, वानप्रस्थी तथा ब्रह्मचारी साधकों को नि शुल्क दूधादि दिया जाता था। शेष ग्रभ्यासी जो भोजन करते थे उनमें जो कुछ व्यय होता था समान रूप से वाट दिया जाता था।

दत्तजी की महाराज के प्रति अनन्य श्रद्धा और भिक्त थी। इन्होने एक दिन महाराजजी से निवेदन किया, "ग्रापने मेरी प्रार्थना पर कुछ ध्यान नहीं दिया। मैं ग्रापको निव्नास दिलाता हूं कि मेरे पास जो भी कुछ है वह धर्मपूर्वक ग्रर्जन किया हुग्रा है। ग्रापके चरणों में में ग्रयना तन, मन तथा धन ग्रपण कर चुका हूं। में ग्रापको ग्रयना ग्राराध्य देव मानता हूं। मैं ग्रापके कुल खर्चे का उत्तरदायित्व लेना चाहता हूं ग्रीर जीवनपर्यन्त ग्रापका भोजन, वस्त्र, सेवक, यात्रादि का सब खर्ची दूगा। ज्वसे मैंने ग्रापके श्रीचरणों का ग्राश्रय लिया है ग्राप मेरे गुरु ही नहीं पिता भी है। मेरे लड़के की पर्याप्त ग्राय है। उसको मुक्तसे रुपया लेने की ग्रावच्यकता नहीं है ग्रीर प्रनी के खर्च का ग्रलग प्रवन्य किया हुग्रा है। मुक्ते ४०० रु० मासिक पैन्जन मिलती है। मेरा खर्च हो जाने के पञ्चात् मेरे पास बहुत रुपया बच जाता है। इसके ग्रिति-रिक्त शूगर मिल में मेरे कई शेयर है। इनकी ग्राय को मैं ग्रापके चरणारिवन्द में ग्रिपण करना चाहता हू। माता मनसादेवी से जो ग्रापको रुपया मिल रहा है उसे ग्राप बन्द कर दे ग्रीर मुक्स लेने की कृपा करे।" इनकी बाते सुनकर महाराजजी ने कहा, "तुलसीरामजी ने मुभसे दीक्षा ली हैं। वे मेरे विधिपूर्वक शिष्य वने हैं। गुरु पर रुपया व्यय करना शिष्य का कर्त्तव्य हैं ग्रत में उनकी पत्नी को रुपया भेजने से किस प्रकार इन्कार करू ?" इस पर दत्तजी ने पुन निवेदन किया, "महाराजजी, ग्राप मुभे भी मत्र-दीक्षा देकर अपना शिष्य बना लीजिए। मैं तो जबसे ग्रापके चरणारिवन्दो मे उपस्थित हुम्रा हू तभी से म्रापको म्रपना गुरु मानता चला म्रा रहा हूं।" महा-राजजी ने कहा, "गुरु का शिष्य के प्रति महान कर्त्तव्य होता है। उसके कल्याण की चिन्ता करनी पडती है। उसके इस लोक तथा परलोक का पूरा ध्यान रखना पड़ता है। उसके हानि, लाभ, मुख, दु खादि की चिन्ता रखना गुरु का कर्त्तव्य होता है। जितना परिवार वढता है उतना ही वघन अधिक हो जाता है, यत आप इस विषय मे बहुत आग्रह न करे।" महाराजजी के उत्तर से दत्तजी वडे दु खी हुए। सदेव चिन्ता-ग्रस्त रहने लगे। अभ्यास की भी उन्नित रुक गई। पागली की सी चेण्टाए करने लगे। इनका स्वभाव वडा कोमल है। प्रकृति वडी ज्ञान्त है। किसी की निन्दा तथा चुगली

कभी नहीं करने । जहां महाराजजी को देखते वहीं उनका चरण स्पर्ध करते थे श्रीर उन्हें चपना जीयनदाता नमभने थे। महाराजजी ने कैप्टन जगन्नायजी की उनका ध्यान रतने का ग्रादेश दिया। उन दिनो दत्तेजी तथा कैंग्टन साहेब दोनो गया धर्मशाला में ही रहा करने थे। एक दिन दत्तजी ने रात्रि के साढे दस वजे महाराजजी का दरवाजा गटपटाया । महाराजजी ग्राए श्रीर पूछा, "ग्राप इस समय यहा क्यो ग्राए है ? यह मिलने का समय नहीं है।" जब महोराजजी को पता चला कि ये अपनी पुरानी प्रार्थना नेकर ग्राए है नेव उन्होंने उनसे कहा कि प्रात उस पर विचार किया जाएगा, धर्भा ग्राप जाग्रो । दूसरे दिन महाराजजी ने बटे स्नेह ग्रीर प्यार से इनको यसना पनमी पर दीक्षा देने के लिए कहा, और आदेश दिया कि परसो से यज प्रारम िया जाए। गायपी का जाप करो। ब्राह्मणों के द्वारा यज्ञ करवाया जाए श्रीर स्वय यरमान यने। एक माम नक वरावर पज होता रहा श्रीर वमन्त पचमी पर पूर्णाहुति हुई। इसी दिन उपनयन विधि नम्पन्न की गई। महाराजजी ने अपने सारगित उपदेश में गर और शिष्य के उत्तियों पर प्रकाश उत्ता। मंत्र-दीक्षा दी गई। इस प्रवसर पर रनाती ने पुन अपना नन, मन नया धन श्री महाराजजी के चरणों में समर्पित कर दिया। उन्होंने फिर त्ययां के लिए प्रार्थना की। महाराजजी ने केवल १२५ रुपये मानिक लेना स्वीतार किया। दलजी को १६५४ में दीवा दी गई थी, तभी से ये यह रपया महाराजकी भी भेट कर रहे है। उस अवसर पर दत्तजी ने कहा, "महाराजजी, मेर पिताजी का मेरे बारगाल मे ही स्वर्गवाम होगया था, ग्रत में पितृमुख से बचित रा। इमिनिए मेरी प्रावंना है हि आप प्रथम मेरे पिता है और फिर गुरुदेव।" इसी यपं महाराजनी ने दलकी गो पूर्णमपेण श्रातम-विज्ञान करवा दिया।

्य वर्षं महात्मा प्रभु स्नात्मित नावना शिविर मे सम्मिलित हुए थे। ये गर नार नार ने पातर नायना कर रहे थे। नपूर्ण रूप में इन्हें स्नात्म-साक्षात्कार होगरा या। इन्हें महाराजकी ने सन्य लोगों हो स्नात्म-विज्ञान प्रदान करने का स्रधिकार दे दिया।

श्री प्रतानारी जगन्नायजी, फैट्टन जगन्नायजी श्रीर रामिकशोरजी को भी विशेष रूप में पनकीपी ना साक्षातकार करवा कर श्रात्म-स्वरूप में स्थिति करवाई गई।

१५ मानं तो ८ माम के नाधना शिविर की नमाप्ति हुई। सबको प्रीति-भोजन करा कर रिप्त की गई। पूर्ववन महाराजजी शिविर के पश्चात् एक मास तक श्रीर रिजां कर किया में रिराज । उन्हीं दिनों नुनमीरामजी के मुपुत्र श्रमीरचन्दजी दर्शनार्थ श्राए। उन्होंने कुछ दिन नक एकान्त निवास करके महाराजजी के पास साधना की। थोड़े रिनों में ती उन्होंने बहुन झान प्राप्त कर लिया। जब ये जाने लगे तब महाराजजी कि निवेदन रिपा कि "में श्रापने कई वर्षों में प्रार्थना कर रहा हूं कि श्राप मेरी श्राधिक में निवेदन रिपा कि "में श्रापने श्रव नक प्रार्थना रवीकार नहीं की है। श्राप मुक्ते नेपा निवार कर किया गिता कि की गुपा करे।" महाराजजी को इनके माता-पिता बहुत रुपया २००० रुपये प्राप्त श्रमीरचन्दजी में रुपया नेना उचित नहीं समभा। जब इन्होंने बहुत श्री श्राप्त किया नव महाराजजी ने १००० रुपये वार्षिक लेना स्वीकार किया।

४ मई १८५५ में उत्तरकाशी में योग निकेतन का उद्घाटन-स्वगिश्रम में एक मान पक रहने के पश्चात् श्री महाराजजी उत्तरकाशी पधारे। यहा पर योग निकेतन का भवन निर्माण हो चुका था। ४ मई १६५५ को इसके उद्घाटन की व्यवस्था की गई। इस ग्रवसर पर सभी गण्य, मान्य तथा प्रतिष्ठित महानुभाव पधारे। उत्तरकाशी के सब सन्तो को भोजन खिलाया गया। वृहद् यज्ञ करवाया गया। सबको यथायोग्य दान-दक्षिणादि दी गई। नगर से जो महानुभाव पधारे थे उनका भी यथो-चित सम्मान किया गया ग्रीर मिष्टान्न वाटा गया। ग्राथम का उद्घाटन श्री ग्रानन्द-स्वामी सरस्वतीजी महाराज से करवाया गया। इस शुभावसर पर ब्रह्मचारी ग्रगस्त्य-मुनिजी, श्रीमती धर्मवती तथा श्रीमती भाग्यवन्तीजी भी ग्राई थी।

#### गगोत्री प्रस्थान

उत्तरकाशी के योग निकेतन के उद्घाटन के पञ्चात् महाराजजी गगोत्री पधारे। दो वर्ष से महाराजजी ने १५ जून से १५ सितम्बर तक ३ मास का साधना जिबिर यहा पर भी प्रारम्भ कर दिया था। जो अभ्यासी यहा पर आते थे उन्हें साधना करवाई जाती थी। इस वर्ष महाराजजी गगोत्री ४ मास तक रहे। श्री आनन्द स्वामीजी २ मास तक रह कर ही चले गए और अगस्त्यमुनिजी महाराजजी के साथ ही नीचे गए। योगीराजजी ४० दिन तक उत्तरकाशी विराजे। इसके पश्चात् ७ नवम्बर को स्वर्गाश्रम मे पधारे और साधना-शिविर की सब व्यवस्था करवाई। १५ नवम्बर से पूर्ववत् अभ्यास प्रारम्भ करवा दिया गया। इस वार लगभग ३० साधक अभ्यास के लिए आए थे।

# सेठ तुलसीरामजी को जीवन दान

दिसम्बर मास मे अमीरचन्दजी और हरिकृष्णदासजी के पत्र आए जिनमे स्चित किया गया था कि सेठ तुलसीरामजी दो मास से वहुत वीमार हैं। जबर वना रहता है, अत्यधिक अजीर्ण रहता है। वार-वार वमन होता है। प्राय वेहोगी की हालत में पड़े रहते है। ग्रपने गरीर का परित्याग करने के लिए उत्तरायण की प्रतीक्षा कर रहे है और इसके लिए दिन और तारीख भी नियत कर रखी है। इस अवसर पर गुरुदेव का पास होना अत्यन्त आवश्यक है, आप अवश्य पधारे। हमें मालूम है कि ऋषिकेश से नीचे न उतरने का ग्रापने एक नियम सा वना रखा है। भगवान् श्रीकृष्ण ने भी महाभारत के युद्ध मे शस्त्र न ग्रहण करने का नियम बनाया हुन्ना था परन्तु जब उनके शिष्य ग्रर्जुन के प्राण सकट में पड गए तब उन्होने भी ग्रपने प्रिय शिष्य ग्रर्जुन की रक्षार्थ ग्रपने सुदर्शन चक्र को उठा लिया था। महाराजजी से इन पत्रो का उत्तर न पाकर इन्होने ४-५ तार दिए। चिट्ठियो ग्रौरतारो को सब ग्रभ्या-सियों को सुनाकर महाराजजी ने उनकी सम्मति मागी और कहा, "सेठ तुलसीराम को गुरु-दीक्षा देते समय हमने सकट काल मे उनकी पूरी सहायता करने का वचन दिया था।" सभी अभ्यासियों ने एक स्वर से महाराजजी को बम्बई जाने की सम्मति दी ग्रौर कहा कि "हम सब ग्रापकी ग्रनुपस्थिति मे ग्रापकी फोटो के समक्ष बैठकर साधना करते रहेगे।" सेठ तुलसीरामजी की भी प्रवल इच्छा थी कि उत्तरायण प्रारम्भ होने पर एकादशी के दिन जब प्राण निकले उस दिन गुरुदेव का वरद हाथ उनके वक्षस्थल पर रहे और वे जिस लोक में चाहे वही उन्हें भेज दें।

उन दिनो दैनिक मिलाप के प्रधान सम्पादक श्री रणवीरजी भी एक मास के लिए अभ्यासार्थं स्वर्गात्रम मे आए हुए थे। यह भी महाराजजी के साथ वस्वई जाने के निए समुद्रत होगए। इन्होने मोचा कि ग्रभ्यास नही तो श्री महाराजजी का मत्मग नो रहेगा। यह दोनो स्वर्गाश्रम से हरिद्वार गए ग्रीर वहा सेठजी के मकान प्रानन्द निकेनन में ठहरे ग्रीर वहां से टेलीफोन करके सेठ तुलसीरामजी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा ग्रीर ग्रुपने पहुनने की भी सूचना दी। रात्रि के दस बजे रेलगाडी मे गनार हो कर दिरली पहले। वहा मे बम्बई हुवाई जहाज से जाने का विचार था किन्तु बडे दिनो की छुट्टिया होने के कारण उसमें स्थान नहीं मिल सका, अत रेलगाडी से जाने या निम्नय कर निया। रणवीरजी के सब पारिवारिक जन महाराजजी के उर्मनार्थ रदेशन पर उपस्थित हुए। महाराजजी के हिरद्वार से नीचे न उतरने के नियम रो तोटने पर नवको आञ्चर्य हो रहा था और अपने मन मे विचार कर रहे ने कि गेठ नुसमीराम पर उनकी विशेष कृषा होगी, तभी तो इस नियम को तोड़ा है। रणवीर भी न प्रपने उपस्थित पारिवारिक सदस्यों से कहा, "कई वर्षों के पश्चात् वडी फिटनार से गार्यालय से अप्रकाश प्राप्त हुया था। मोचा था, महाराजजी के चरणो में रहकर कीवन का कुछ सुधार कम्गा । एकान्त श्रीर शान्त वातावरण में रहने का घपसर लाभ होगा। परन्तु यह भाग्य मे नहीं था, ग्रत २-३ दिन में ही वापिस लौटना परा ग्रीर दिन्ली की ग्रपंक्षा श्रविक प्रवृत्ति के स्थान वस्वई में जा रहा हू। विधाता के नियमों का क्रिकों ज्ञान हूं। मनुष्य कुछ गोचता है ग्रीर विधाता कुछ ग्रीर। नच है, भेरे मन में कुछ श्रीर थीं विधाना के मन श्रीर।" दिल्ली से फर्स्ट क्लास की दो हिएट नेकर बम्बर्ट के लिए प्रत्थान किया । दो दिन मे बम्बई पहुचे । वहा पर सेठजी पा मारा परिवार फून मालाए लेकर महाराजजी के स्वागत के लिए स्टेशन पर श्राया रप्रा मा प्रीर उन्हें भेरीन ट्रार्टव पर प्रेमकुटी में ले गए। यही पर सेठजी बीमार थे। सरजी बेटोश थे, महाराजजी ने उनकी बेहोशी मिटाने के लिए बहुत जोर से आवाज लगाई। ये होन मे स्नाए तीर महाराजजी को देसकर रुदन करने लेंगे। वडी कठिनता में हाथ मोटार प्रणाम करने का प्रयत्न किया। उनकी लडकी ने उनके दोनो हाथ जीतार इनकी छानी पर रस दिए। बहुत देर तक सेठजी की आखो से अश्रुधारा प्रयादिय दोनी रही। महाराजजी ने ग्रपना रनेहिमिचित वरद हाथ सेठजी के शिर पर रसार गरा, 'मुझे पत्रों ग्रीर नारों द्वारा विदित हुआ है कि आप अपने शरीर की यब निकम्मा और निर्यंक समसकर ५-६ दिन में त्यागना चाहते है। आपने गुपनी सब सम्पत्ति नो अपने पुत्रो और पुत्रियों को बाट दी है। अब जाते समय अपने गुर को भेट में क्या दोने ? अब नो आपका गरीर ही आपके पास शेप हैं, आप इसे ही गुँग की भेंट कर दो।" महाराजजी ने पुष्पा मे गुगाजल मुगवाया ग्रीर सेठजी के हाथ में देगर सकत्य गत पटकर जल को छुउवाया श्रीर मेठजी से उनका शरीर ले लिया श्रीर नेठजी से कहा, "श्रव उस घरीर पर श्रापका कोई श्रधिकार नही रहा है। श्रव गर रमारा रो चका है। श्रव हम उसको जाने नहीं देगे, जब तक हमारी उच्छा होगी हो। ग्रंपने पान रुपेंगे।" परिवार के तथा ग्रन्य सव लोग महाराजजी के वचनो पर वडा माध्नयं कर रहे थे और साथ ही हिप्त भी हो रह थे। सेठजी से महाराजजी ने कहा, "एक सप्ताह में घरीर त्यागन की भावना ग्रव ग्रापको ग्रपने मन में से निकाल देनी नाहिए। श्रव यह शरीर हमारा हो नुका है। हम उसे कही जाने नही देगे।" सभी

महाराजजी की ग्राइचर्यजनक लीला को देखकर ग्रचिम्भत हो रहे थे। महाराजजी ने जितने लोग वहा उस कमरे मे थे सवको वाहिर जाने का ग्रादेश दिया क्यों कि ग्रव वे सेठजी पर अपने मनोवल का प्रयोग करने वाले थे। इन्होने सवको विश्वास दिलाया कि हम सेठजी को पूर्ण स्वस्थ करके वम्वर्ड से जाएगे। महाराजजी ने वरावर एक घण्टा तक प्रयोग किया और भगवान् से इनकी नीरोगता के लिए प्रार्थना की । इसके परिणामस्वरूप सेठजी ने ग्रपनी ग्राखें स्वय खोल ली ग्रीर कहा, 'मुके भूख लगी है।' खिचडी खाने की इच्छा प्रकट की। महाराजजी ने नर्स को बुलाया और नीघ्र खिचडी वनाने के लिए ग्रादेश दिया। जव खिनडी वनकर ग्रागई तव महाराजजी के ग्रादेश से नर्सों ने उन्हें तिकए के सहारे से विठा दिया ग्रीर सेठजी को स्वय महाराजजी ने ग्रयने हाथों से खिचडी खिलाई ग्रौर मुस्कराते हुए कहा, "ग्रव ये नवजात वालक हैं, इसलिए इन्हें खिचडी हम खिला रहे हैं। इनकी मृत्यु को हमने लौटा दिया है। ग्राज इनका नया ही जन्म समभना चाहिए।" यह देखकर सारा परिवार ग्राश्चर्य से स्तमित सा हो रहा था। महाराजजी ने स्वय अपने हाथ से खिचडी खिलाई। सेठजी वहुत देर तक बैठे रहे। वमन नही हुग्रा। ग्राज दो माम पश्चात् सेठजी ने ग्रन्न ग्रहण किया था। इसके पश्चात् सेठजी ३-४ घण्टे तक सोते रहे। रणवीरजी यह सव कुछ अपनी ग्राखों से देखकर वेडे ग्राश्चर्यान्वित हो रहे थे। महाराजजी के साथ भोजन करके ये ग्रपने भाई सर्वमित्र से मिलने चले गए ग्रीर सेठजी का परिवार ग्रपने-ग्रपने काम मे लग गया। इन्ही दिनो श्री ग्रानन्दस्वामीजी भी एक वर्ष तक ग्रफीका मे ग्रायंसमाज का प्रचार करके वापिस वम्बई ग्रागए थे। सायकाल ये महाराजजी से मिलने ग्राए। सेठजी अब कुछ-कुछ वाते भी करने लग गए थे। स्वामीजी ने सेठजी से कहा, "ग्रापकी महाराजजी ने वचा लिया है। अब ये आपको पूर्ण स्वस्थ करके जाएगे। अब आप विल्कुल निश्चिन्त हो जाए।" सेठजी की पाचन गिक्त ग्रव ठीक होगई। साधारण भोजन पचने लग गया। पलग पर वैठना प्रारम्भ कर दिया। महाराजजी दिन मे तीन वार ग्राधा-ग्राधा घण्टा सेठजी के ऊपर मानसिक प्रयोग करते थे। तीन चार दिन में ही ये स्वस्थ होगए।

प्रेमकुटी के नीचे एक सत्सग भवन था। स्वामी प्रेमपुरीजी इन दिनो यही निवास कर रहे थे। यहा इन्होंने एक फतैट मोल ले लिया था। स्वामी निर्मलजी भी प्रात काल यहा सत्सग किया करते थे। सेठ हरिकृष्णदास ने महाराजजी से निवेदन किया कि नीचे सत्सग भवन के सब सत्सगी ग्रापके दर्गन करना चाहते हैं। ग्राप नीचे पधारकर सबको दर्गन देने की कृपा करें। जब ये नीचे पधारकर मंच पर विराज तब हरिकृष्णदासजी ने महाराजजी के विषय मे निम्न प्रकार से कहा, "श्री योगाचार्य वालब्रह्मचारी व्यासदेवजी महाराज सर्व शास्त्रों के विद्वान् श्रीर योग मे पारंगत है। बहुत वर्षों तक गगोत्री हिमालय मे निवास करके यहा पधारे हैं। ग्राप ४ मास का साधना शिविर स्वर्गाश्रम मे लगाने के लिए गगोत्री (हिमालय उत्तराखण्ड) से शीतकाल मे ग्राया करते है। ये वहुत वर्षों से हरिहार से नीचे नही उतरते थे। ग्राप मेरे पूज्य पिताजी के गुरु हैं ग्रत हमारे सारे परिवार के ही गुरु हैं। मेरे पिताजी तथा हम सबने कई वार इनके चरणों मे बैठकर साधना की है। मेरे पिताजी को दीक्षा देते समय ग्रापने वचन दिया था कि यदि ग्रापके ऊपर कोई विशेष सकट उपस्थित

हो तो मुभे स्मरण कर लेना, में प्रापके सकट का निवारण करने पहुच जाऊगा। मेरे पिताजी के जीवन की श्राशा जाती रही थी। उन्होंने श्रपने प्राण-त्याग का दिन भी निश्चित कर लिया था। महाराजजी के वचन का स्मरण करके हम सब बहिन श्रीर भाउयों ने उन्हें पत्र श्रीर नार देकर बुलाया है। उन्हें यहा पवारे श्राज ४ दिन होगए है। ग्रापने श्रपनी विशेष कृपा में मेरे पिताजी को जीवन दान किया है। मेरी माताजी महाराजजी में यही वरदान मागा करनी थी कि मेरी मृत्यु मेरे पितदेव की मृत्यु से पूर्व हो। में मगार में विधवा होकर नहीं रहना चाहती। उस पितवता साध्वी देवी ने गत वर्ष परलोक गमन किया है। महाराजजी के योग श्रीर मनोवल तथा विविध प्रकार की सिद्धियों को श्रनेक बार देया है। हम श्रापके सदा कृतज रहेंगे श्रीर प्राण-धन में श्रापकी नेवा के लिए सदैव समुद्यत रहेंगे।" श्री हरिकृष्णदासजी के भाषण को गुनकर गभी श्रीतागण श्राय्चर्यपूर्ण नेवों में पूज्य महाराजजी के दर्शन कर रहे थे। उनके पद्यात् श्रन्य लोगों ने भी महाराजजी के प्रति प्रश्मात्मक, श्रद्धा श्रीर भितत पूर्ण भाषण दिए। उत्तके वाद सभा विस्तित होगई।

मेठ हरवसनालजी का समागम—मेठ हरवमनालजी मरवाह प्रेमकुटी में महाराजजी के प्रशंनां पंथारे। उन्होंने श्री म्रानन्दस्वामीजी महाराज से म्रापकी वहुत
प्रशंना गुनी थी। उनने प्रेरित होकर ये प्रेमकुटी में दर्जन करने के लिए म्राए थे। महाराजजी के महानद्यितत्व, योग तथा मनोवल, त्रह्मवर्चस्व तथा म्राध्यात्मिक धिक्त, तप
तथा त्याग, म्रोर उदारता तथा दयानुता से बहुत प्रभावित हुए। ये नित्य सान्ताकुज
ने महाराजजी के दर्जन करने के लिए म्राने थे। उन्हें नित्य ही अपनी कार में इघरउधर पूमने जाने के लिए प्रार्थना किया करते थे जिसमें ये उनके सान्निध्य से लाभ
उठा नके। ये म्रानी मनन्य श्रवा मीर भिवत महाराजजी के प्रति बढा रहे थे। इन्होंने
महाराजजी को तथा म्रानन्दस्वामी सरस्वतीजी को म्रान्त बढा रहे थे। इन्होंने
महाराजजी को तथा मानन्दस्वामी सरस्वतीजी को म्रान्त कोठी पर भोजनाथ
निमन्तित किया मौर बही पर महाराजजी का प्रवचन भी करवाया मीर इनसे
रवर्गाश्रम में मश्यासार्थ जाने के लिए निवेदन किया। महाराजजी के बम्बई में कई
भवन रहने थे, उन यव ने उन्हें भोजन के लिए निमन्तित किया। लाला शिवसहायमन की मुपुनी गीरादेवी के मुपुन मोहनलाल राजकुमार की कोठी पर भी पघारे।
महाराजनी म्रानी परमगवना शीमती म्राज्ञावतीजी को भी चर्चगेट पर मिलने पथारे।

महाराजजी को वस्वर्र पधारे ६ दिन हो चुके थे। सेठ तुलसीरामजी ने पूर्ण रवार्य लाग कर लिया था, उधर अभ्यासियों के स्वर्गाश्रम से तार श्रारहे थे, अत एनोंने संठजी से कहा कि "कल आपका मृत्यु योग समाप्त हो जाएगा, उसलिए हम पर्गो। यहा से चल जाएगे। अब आपके शरीर में किसी प्रकार का कोई रोग नहीं रहा है। केवल थोड़ी कमजोरी थेप रही है। यह भी पान-पान से शीघ जाती रहेगी यहार अमणार्थ जा सकेगे।" उसी बीच में महाराजजी के परम भक्त राम-जी लड़ा बलाल नया महाराजजी की शिष्या श्रीमती रम्भादेवी इनके दर्शनार्थ आए। रामजी अफीका में व्यापार करते थे। उनकी कोठी पास ही थी। इन्होंने श्राम-पाए। रामजी अफीका में व्यापार करते थे। उनकी कोठी पास ही थी। इन्होंने श्राम-पाए। रामजी अपने मकान पर उपदेश करवाया। तत्पश्चात् हरिकिशनदासजी तथा स्वामी निर्मलजी महाराजजी को सेर करवाने लेगए श्रीर श्रधेरी, थाना श्रादि स्थान दिलाए। महाराजजी श्रीर स्वामी निर्मलजी में लगभग दो घटे तक योग तथा स्थान दिलाए। महाराजजी श्रीर स्वामी निर्मलजी में लगभग दो घटे तक योग तथा

वेदान्त के लिए विचार-विमर्श होत्। रहा। एक दूसरे से परस्पर शका समाधान करते रहे। इन दोनो का ग्रापस मे बहुत पुराना परिचय था।

बम्बई से स्वर्गाश्रम के लिए प्रस्थान—ग्रमीरचन्दजी ने महाराजजी के लिए हवाई जहाज मे सीट रिजर्व करवा दी। रणवीरजी ४-५ दिन तक वम्बई रहकर वापिस चले गए थे। विदाई के ग्रवसर पर सेठ तुलसीरामजी ने साश्रु महाराजजी से ग्रवने पास शीघ्र बुला लेने के लिए निवेदन किया। ग्रप्रेल के प्रथम सप्ताह तक पूर्ण स्वास्थ्य लाभ होने के पश्चात् महाराजजी ने इन्हें हरिद्धार जाने के लिए कहा। इनके सव भक्त, सेवक ग्रौर सेविकाए महाराजजी को एरोड़ोम पर पहुचाने ग्राए। वड़े भारी समारोह ग्रौर सम्मान के साथ इन्हें विदा किया। वम्बई से साढ़े तीन घटे में महाराजजी दिल्ली पहुच गए। दिल्ली में रणवीरजी ग्रपने परिवार को साथ लेकर, नारायणदासजी कपूर ग्रौर उनका परिवार तथा महाराजजी के प्रमुख भक्त ग्रौर सेवक सपरिवार इनके स्वागत के लिए एरोड़ोम पर पहुचे। महाराजजी को दिल्ली में घुमाने के लिए लेगए थे। दिल्ली से प्रस्थान करके ये ऋपिकेश पहुच गए। स्वर्गाश्रम में सब ग्रभ्यासियों को ग्रपनी साधना में पूर्ववत् निरत देखकर महाराजजी वडे प्रसन्न हुए।

#### स्वर्गाश्रम मे साधना

महाराजजी ने यहा पधारकर पूर्ववत् अभ्यास और साधना प्रारम्भ करवा दी। इन्ही दिनो ब्रह्मचारी अगस्त्यमुनिजी भी कुछ दिनो के लिए अभ्यासार्थ वहा पर ग्रागए थे। मुनिजी को महाराजजी के सपर्क में ग्राए लगभग १५ साल होगए थे। जव ये सर्वप्रथम महाराजजी के पास ग्राए तभी इन्होंने ग्रपने भावी जीवन के लिए निश्चित कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए प्रार्थना की थी। ग्रीर यह भी पूछा था कि इन्हें किस मार्ग पर चलकर पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकती है। इनकी माता प्राय इन्हें विवाह के लिए आग्रह किया करती थी किन्तु ये सदा अपनी अनिच्छा प्रकट किया करते थे। महाराजजी ने इनकी माता को सममाने का वायदा किया ग्रौर इन्हें ग्राजनम व्रह्मचर्य-व्रत का पालन करने का ग्रादेश दिया, जिससे ये ग्रात्म-ज्ञान ग्रीर ब्रह्म-ज्ञान को प्राप्त कर सके। योग के द्वारा ही दोनो प्रकार का ज्ञान जीव्र प्राप्त किया जा सकता है। इसी पथ पर स्वय चलकर ग्रीरो को भी चलाने का प्रयत्न करना चाहिए। श्री महाराजजी की ग्राज्ञानुसार ग्रव ये किंटन तपक्चर्या के द्वारा योग-साधन करने के लिए कटिवद्ध होगए। कई-कई मास का मीन व्रत धारण किया। कभी-कभी तो ५-१० महीने तक मौन करते थे। नितान्त विरक्त भाव से रहते थे। विद्वान् तो थे ही, अत समय-समय पर अपने भाषणो और उपदेशो से जनता का कल्याण करने लगे। महाराजजी ने ब्रह्मचारी ग्रगस्त्यमुनिजी को ग्रादेश दिया कि द मास तक तो मौन रहकर अपने प्राप्त विज्ञान को वृढभूमि करते रहे श्रीर ४ मास तक साधको को अभ्यास करवाया करे। इसके पश्चात् महाराजजी की ब्राज्ञानुसार ये वडी श्रद्धापूर्वक इसी कार्य मे लग गए। ये अव अभ्यासाथियों को २ मास हरिद्वार मे तथा २ मास कश्मीर मे देने लगे। महात्मा प्रभु ग्राश्रितजी को भी इसी प्रकार का ग्रादेश महाराजजी ने दिया-४ मास मौन वृत और द मास प्रचार कार्य करने की श्राज्ञा प्रदान की।

श्री स्रानन्दस्वामीजी से कहा कि स्राप चलता-फिरता योग-साधना-शिविर लगाया करे। जहां कहीं भी एक दो सप्ताह ठहरने का अवसर प्राप्त हो वहीं साधना करवाना प्रारम्भ कर दिया करे। इन्हीं दिनों श्री दत्तजी, ब्रह्मचारी जगन्नाथजी तथा कैंप्टन जगन्नाथजी को भी नए अभ्यासार्थियों और साधकों को अभ्यास करवाने का स्रादेश दिया जिससे महाराजजी के पास कुछ काल साधना करने के वाद साधक अभ्यास के लिए स्राए और इन लोगों को साधना करवाने के विधि-विधान से भी परिचय हो जाए, जिसमें ये लोग उनकी अनुपस्थित में भी साधना-शिविर का सचालन विधिपूर्वक करते रहे। ये तीनो बारी-बारी में बीस-बीस दिन तक नवीन साधकों को साधना करवाया करते ये। कई-कई वर्ष तक अभ्यास करने के पश्चात् इन्होंने श्रात्म-विज्ञान प्राप्त किया था स्रत उस ऋण में उऋण होने का यही एकमात्र साधन था। स्रत दूसरों को स्रात्म-ज्ञान करवाना और विनयपूर्वक साधन करवाना इनका कर्त्तव्य था।

श्री हरवसलाल का शिविर मे प्रवेश—इस ग्रवसर पर मेठ हरवसलालजी मरवाह वम्बई मे फरवरी के दूसरे सप्ताह मे पथारे। ये २०-२५ दिन तक साधना- जिविर मे ग्रभ्याम करने के लिए ग्राए थे। महाराजजी ने ग्रपने मनोवल से ग्रभ्यास मे इनकी बहुन उन्नित करवाई। इनमे दिव्य ज्योति उत्पन्न होकर नाना प्रकार के पदार्थों को प्रशािशन गरने लगी। थोडे ही दिनों में इन्हें बहुत विज्ञान प्राप्त होगया। इन्हें बहा मन्तोप हुग्रा ग्रीर महाराजजी के प्रति उनकी ग्रगांध श्रद्धा ग्रीर भिवत उत्पन्न होगई।

श्री महाराजजी की उपदेशामृत वर्षा--१५ फरवरी को ग्रभ्यास की समाप्ति पर श्री महाराजजी ने ग्रपने सब शिष्यों को सम्बोधन करते हुए कहा, "इस युग मे लडके तथा लटकिया अपने माना-पिता की आजा का पालन नहीं करते है। किण्य और शिष्यात्रों मे गुरु-ग्राज्ञा-पालन का ग्रभाव है, ग्रीर न गुरुजनों के प्रति ग्रपना कुछ कर्त्तव्य ही गमभने हैं। उसलिए उन्हें साधना में सफलता नही प्राप्त होती है। वास्तव मे माना-पिना की सम्पत्ति ग्रीर गुरु-ज्ञान का वही पुत्र ग्रीर शिष्य ग्रियकारी हो सकता है जो उनके प्रति श्रद्धा ग्रीर भिवत रखे। उनकी सेवा-मुश्रूपा करे ग्रीर उनकी ग्राज्ञाग्री का पालन करे। जब भवत भगवान् की भिवत, प्रार्थना तथा उपासना ग्रनन्य भिवतभाव ने करता है तब भवतवत्मल भगवान् उस पर प्रसन्त होकर भुक्ति ग्रीर मुक्ति प्रदान करने हैं। भगवान् पुण्य कर्म, भिनत, श्रद्धा, साधना, उपासना, तप श्रीर त्यांग के बिना प्रमन्न नहीं होने, ग्रपना साक्षात्कार नहीं करवाते, कृपा नहीं करते ग्रीर मोक्ष प्रदान नहीं करने । यही नियम मानव समाज पर भी लागू होता है । इतिहास इसका साक्षी है। उन्द्र, विरोचन, उत्तद्ग, सत्यकाम, उपमन्यु श्रादि परम विद्वान् शिष्यो ने श्राचार्य कुल मे वर्षों तक रहकर गुरु-मेवा, तपब्चर्या श्रीर कठिनतम साधना के उपरान्त श्रात्म-विज्ञान प्राप्त किया था। गुरु सदैव ग्रात्म-ज्ञान के ग्रधिकारी को ही श्रात्म-ज्ञान प्रदान करने हैं। अनिधकारी कभी उसको प्राप्त नहीं कर सकता। जिस गुरुदेव से ब्रह्म-विज्ञान म्पी मर्वोत्तम निधि प्राप्त की जाती है उसके प्रति विषय का महान कर्त्तव्य है। जिस पूज्य गुरु से उपदेश ग्रहण करके भवसागर को पार किया जाता है, क्या उसके प्रति शिप्य का कुछ भी कर्तव्य नहीं है ? श्रात्म-विज्ञान तथा ब्रह्म-ज्ञान रूपी श्रमूल्य निधि को प्राप्त करने के लिए यदि ग्रपना सर्वस्व भी समर्पण करना पड़े तो भी यह सीदा यदा सम्ता है। साधन-चतुष्टय सम्पन्त होकर ही जिज्ञासु शिष्य ग्राचार्य कुल मे रहकर ज्ञान और वैराग्य को दृढ कर सकता है। ज्ञान और वैराग्य उस परलोक वाहन के दो पहिये है जिसमे बैठकर मोक्ष-धाम मे पहुचा जा सकता है। एक पहिये की गाडी लड़खड़ा कर खड़ हे में गिरा सकती है। वह कभी गन्तव्य पथ पर नही पहुचा सकती। इससे उद्देश्य तक कभी नही पहुचा जा सकता। जो साधक केवल ग्रात्म-विज्ञान को प्राप्त करके उसका ग्रभ्यास करते रहते है, जिनकी चित्तवृत्ति उपरामता को प्राप्त नही होती, जो सासारिकता से ऊपर नही उठते है और जिनको गम, दम, तितिक्षा के द्वारा परम वैराग्य नही हुग्रा है, वे कभी भी ग्रध्यात्म पथ पर चलने मे समर्थ नही हो सकते और नही कभी सफलता लाभ कर सकते है। इसलिए ग्रभ्यास के साथ वैराग्य का होना परम ग्रावश्यक है। ग्रत ग्राप लोग दोनो के लिए प्रयत्नशील रहे।"

शिष्यो को हार्दिक ग्राशीर्वाद देकर महाराजजी ने ग्रपना उपदेश समाप्त किया।

**ज्ञान्ति की विजय—**महाराजजी कानपुर वाली धर्मशाला मे साधना शिविर लगाते थे। इसमे शिविर लगाते ग्रभी दो वर्ष ही हुए थे। वैसाखी के पञ्चात् ये १५ या १६ अप्रैल को गगोत्री पधार जाया करते थे। अभ्यास के पञ्चात् महाराजजी प्राय-कुछ दिवस स्वर्गाश्रम मे विराजकर विश्राम किया करते थे । गीता भवन के प्रवधक श्री चिरजीलालजी इन दिनो कानपुर वाली धर्मशाला को स्वर्गाश्रम से माग लिया करते थे। इस वार इन्होने वैसाखी से पूर्व ही यह धर्मगाला खाली करने के लिए महा-राजजी को कहला भेजा। महाराजजी ने स्वर्गाश्रम के प्रवधक द्वारा १५ ग्रप्रैल को खाली कर देने के लिए कहला भेजा। परन्तु चिरजीलालजी इतने दिन तक रुकना नही चाहते थे। स्वर्गाश्रम के मैनेजर ने सेठ जयदयालजी को भी कहा। महाराजजी के गगोत्री जाने मे ग्रव केवल ८-१० दिन ही रह गए थे। जयदयालजी के पास ग्रभी कई मकान खाली थे। इनको कार्य में लिया जा सकता था किन्तु गीता भवन के प्रबंधक तथा सेठ साहव दोनो अपनी जिद पर अडे रहे। स्वागीथम के मैनेजर ने वड़े विनम्र भाव से पुन् सेठजी से कहा, "व्यासदेवजी वड़े विद्वान् योगी है, प्रतिप्ठित महापुरुष है, बहुत वर्षों से यहा निवास करके साधना शिविर लगाते है श्रीर योग प्रशिक्षण करते हैं। ग्रव इनके गंगोत्री पधारने मे केवल ८ दिन ही शेप रहते है। इनसे यह मकान खाली करवाना उचित नही है।" सेठजी ने उत्तर दिया, "हमने स्वर्गाश्रम से इस धर्मशाला को इस्तेमाल करने की लिखित ग्राजा प्राप्त की हुई है। हमारे सत्सगी इसमे ठहरेंगे।" इस पर मैनेजर ने पुन निवेदन किया, "ग्राप द दिन के लिए उन्हें अपनी और से ही रहने के लिए आजा प्रदान कर दे।" पर वे नही माने। महाराजजी चाहते तो इस मकान मे गगोत्री प्रस्थान करने तक रह सकते थे। उन्हें वलपूर्वक निकालने की हिम्मत तो किसी में हो नहीं सकती थी। किन्तु इन्होने पूर्ण जान्ति रखी ग्रीर ग्रपनी सरलता तथा साधुता का परित्याग नहीं किया। यदि इनमे व्यवहार कुशलता का अभाव है, यदि इनमे शिष्टता और सीजन्य नही है, तो इसके लिए हमे ग्रपने सौजन्य ग्रौर शिष्टता का त्याग नहीं करना चाहिए। वास्तव में हमें इनकी बुद्धि के अनौचित्य पर दया ग्रा रही थी। इन्होने स्वर्गाश्रम के प्रवधक के द्वारा कार्या-लय के ऊपर के उन कमरो को खाली करवा लिया जिनमें वे पहले विराजा करते थे। ग्रपना बिस्तर उठाकर वहा चले गए। ये नितान्त ग्रपरिग्रही थे। ग्रावश्यकता से ग्रधिक कोई सामान ग्रपने पास नही रखते थे, ग्रत धर्मशाला खाली करने मे कुछ भी विलम्ब

नहीं लगा। एक पत्र महाराजजी ने स्वर्गाश्रम के मत्री श्री गोस्वामी गणेशदत्तजी को उस दुर्व्यवहार और श्रीशाटना के विषय में लिखा और एक उपमत्री प० देवधरजी को। ये दोनों महाराजजी का बटा श्रादर और सम्मान करते थे श्रीर इनके प्रति इन दोनों को बठी श्रद्धा थी।

दूसरे वर्ष जब जयदयानजी को पता चला कि महाराजजी कानपुर वाली धर्मभाता में विराज रहे है तो ये इनकेदर्शनार्थ ग्राए। सभव है, श्री गणेशदत्तजी ग्रथवा पं० देवघरती ने उन्हें उनकी अशिष्टना के विषय में कुछ लिखा हो। महाराजजी ने नेठजी का सन्गार किया और कहा, "सेठजी, ग्रापने गत वर्ष ग्रच्छा कार्य नहीं किया। भापने मुक्ते धर्मभाना मे गन वर्ष एक सप्ताह भी रहने नही दिया और मुझे अपमानित करके निकाता, यप्रियापके पास अपने अतिथियों को ठहराने के लिए अन्य कई मकान थे। मेरा नो रममे फुछ विगटा नहीं, फिन्तु श्रापके लिए यह बटी लज्जा की बात है। श्रापने मुर्भ बट्टन ही नाधारण व्यक्ति सममा । में बहुत वर्षों से इस वर्मणाला से रहता मारता था। मापको मेरे साथ उस प्रकार का दुव्यवहार नही करना चाहिए था। मानवता में नीने गिरना नहीं चाहिए था। मैं चाहता तो इस प्रकार की कई धर्म-सालाए यना सकता था किन्तु भं और अधिक प्रवृत्ति मार्ग में कसना नहीं चाहता। मेरे पास भी सैरडो सायक प्रतिवर्ष केवल स्वर्गार्थम मे ही नहीं अपितु गेगोत्री और उत्तरकारी में भी आते हैं। में आपमें आयु, विद्वता, साधना तथा योग में ऊचा दर्जा रगरा है। मेरी मान श्रीर प्रतिष्ठा श्रापसे किसी प्रकार भी कम नही है। श्रापने श्रपने धनानिमान मे चारुर मेरा प्रपमान किया यह चापके लिए कोई शोभा की वात नही रें। मेरा गया विगाल, में तो साधु हूं। रगल-भगड़ा तथा विरोध करना श्रीर वल प्रकार करना भने उचिन नही समेका श्रीर ये सब बाते साधु के लिए श्रशोभनीय है, इसिंदिए भेने खपना विस्तर उठाया श्रीर श्रन्यत्र चला गया। श्रपनी मन शान्ति को रिनी नी प्रकार ने भग नहीं होने दिया और आप सबके साथ शान्तिपूर्वक व्यवहार तिया।" संटर्जी बट लिजन हुए ग्रीर महाराजजी की सब बाते चुपचाप सुनते रहे। क्रम्य में जब नेठजी जाने लगे नव योगीराजजी से हाथ जोडकर अपने अपराध की क्षमा मागी श्रीर रहा, "महाराजजी ! मेने श्रापके समान स्पष्टवक्ता श्रपने जीवन मे धाद तर नहीं देगा। अब कभी आपको मकान याली करने के लिए नहीं कहूगा। आप भंत ही इसमें जीवनपर्यन्त निवास करे।" महाराज्जी ने कहा, "मेठजी, यह श्रापकी गरानता है कि आप अपनी भूल को न्वीकार करते है और उस पर पञ्चाताप कर रहे है।" न्यामी जी को सादर प्रणाम करके सेठजी चले गए। इस दिन से चिरजीलाल महाराजी का बटा ग्रादर श्रीर सम्मान करने लगे ग्रीर ग्रासन तथा प्राणायाम सीखने के तिए प्रतिदिन महाराजजी के पास स्राना प्रारभ कर दिया।

तिचत्र घटना—नदा की भानि उस बार भी श्री महाराजजी ने १५ नवम्बर में १४ मानं नक साधना शिविर लगाया। गेठ हरवसलाल ने गत वर्ष अभ्यास में सतीप-प्रद प्रगिन की श्री, उसमें उत्साहित हो कर ये उस वर्ष भी साधना शिविर में अभ्यासार्थ प्राण्। प्रव भी उन्होंने अपने अभ्यास में स्व उन्नित कर ली श्री। इनकी आत्म-विज्ञान में उन्निन देगाक महाराजजी उन पर कुछ विशेष दयादृष्टि रसने लग गए। इससे बर्म्नी बाने रामिकशोरजी को बडा दु य-सा पैदा होगया और रोते हुए महाराजजी से निवेदन किया, "मैं ग्रापके पास इतने वर्षों से ग्रम्यास कर रहा हू। ये सेठ हरवसलाल दो वर्ष में ही मुक्स बहुत ग्रागे निकल गए हैं। ग्रापने मुक्ते इनकी ग्रपेक्षा बहुत
कम सिखाया है। इन पर ग्रापकी विशेष कृपा है। मुक्ते ग्रापने ग्रपनी दया का पात्र
ग्रभी पूर्ण रूप से नहीं बनाया है।" इन गव्दों के साथ वे फूट-फूट कर रदन करने
लगे। महाराजजी ने रामिकशोरजी को बहुत समक्ताया ग्रौर कहा, "हम तो सबको समान
भाव से ही बताते हैं, सबको समान रूप से उपदेश देते हैं ग्रौर समक्ताते हैं, किन्तु ज्ञान
की प्राप्त सबको ग्रपनी बुद्धि, योग्यता, पुरुषार्थ ग्रथवा भाग्य के ग्रनुसार होती है।
ग्रापका पुरुषार्थ निष्फल नहीं जाएगा। कुछ देर के पश्चात या कालान्तर में फल
ग्रवश्य ही प्राप्त होगा। ये पूर्वजन्म के योगभ्रष्ट हैं ग्रत इन्हें शोध्र सफलता हो रही
है। ग्राप वर्तमान में योग-साधन करने लगे हैं ग्रत ग्राप भी कुछ काल के ग्रभ्यास
से इनके समान हो जाएगे। ग्रभी कुछ प्रारब्ध कर्म फल-वाधक वने हुए है। इसे इस
दृष्टान्त से समक्तने का प्रयत्न करों —

एक दिन विष्णु भगवान् श्रौर लक्ष्मीजी वन मे विचरण कर रहे थे। लक्ष्मीजी ने कहा, 'महाराज, भगवान् के घर मे वडा श्रन्याय है। देखिए, सामने जो लकडहारा जारहा है, यह बेचारा वड परिश्रम से लकडी काटता है, स्रपना पसीना वहाता है, तव कही इसे दो ग्राने प्राप्त होते हैं। इसीसे ग्रपने परिवार का भरण ग्रौर पोषण करता है। दूसरी ग्रोर एक राजा है जो गद्दी-तिकियों पर वैठा रहता है। कोई परिश्रम नहीं करता, किन्तु सव प्रकार के सुखों ग्रौर ऐक्वर्यों का उपभोग करता है। विष्णु भगवान् ने इसका वडा सुन्दर उत्तर दिया, 'भगवान् तो सवकों समान रूप से ही देते हैं किन्तु लोग उसे ग्रपने-ग्रपने भाग्य के ग्रनुरूप ही प्राप्त करते हैं।' दूसरे दिन विष्णु भगवान् एक श्रमूल्य हीरा लकडहारे के मार्ग पर फेंक कर ग्रन्तध्यीन होगए। चलते-चलते उस लकडहारे के मन में एक वडा विचित्र विचार ग्राया कि वेचारे श्रन्थ न जाने कैसे मार्ग में चलते होगे। मैं ग्राखे वन्द करके चलू ग्रौर इसका ग्रनुभव करके देखू। वह ग्राखें वन्द करके चलने लगा। उसके पैर की ठोकर से हीरा दूर जा पडा श्रीर वह चलता रहा। ग्रागे जाकर ग्राखे खोलकर कहने लगा—भगवन् ! किसी को ग्रधा मत वनाना, ग्रधों को चलने में वडी कठिनाई होती है। ग्रव भगवान् ने लक्ष्मीजी से कहा, 'देवी। देखा, इसके भाग्य में हीरा प्राप्त करना नही था। हीरा इसके सामने श्राया किन्तु वह ठोकर मार कर चला गया। भगवान् ने तो इसके सामने लाकर रखा था पर उसके भाग्य में इसकी प्राप्त नही थी।''' यह दृष्टान्त सुनाने के पश्चात् महाराजजी ने कहा, हम तो सबको समान रूप से ही विद्या प्रदान करते हैं किन्तु दुर्भाग्य इसमें विक्षेप डाल देता है। इससे सेठ रामिकशोरजी को सन्तोप हो गया।

सेठ हरवसलालजी मरवाह ग्रपने ग्रभ्यास में किसी कारणविशेष से विघ्न जपस्थित हो जाने के कारण बड़े चिन्तित थे। ग्रत्यन्त परिश्रम करने पर भी साधना में पूर्व स्थिति नहीं ग्रासकी थी। महाराजजी ने कहा, यह विघ्न शीघ्र दूर नहीं होगा, ग्राप केवल मत्र जाप किया करो। सेठजी बम्बई पधार गए ग्रीर वहा जाकर ६ मास का मीन व्रत धारण करके गायत्री का पुरक्चरण प्रारंभ कर दिया।

हिमालय के योगी का चमत्कार—महाराजजी के शिष्य पडित ठाकुरदत्तजी वैद्य ग्रमृतधारावाले इस वर्ष बहुत रोगी होगए। ग्रनेक उपचार करने पर भी वे

जब स्वस्थ न हो सके त्व महाराजजी को अपने योगवल से रोग मुक्त करने के लिए निवेदन किया गया। वैद्यजी का पोता स्वर्गाश्रम से ग्रपनी कार में इन्हें ले ग्राया। सेठ हरवसलाल तथा नारायणदास कपूर भी इनके साथ आए क्योंकि ये दोनो लाहौर से ही वैद्यजी के पुराने सुपरिचित थे। पण्डितजी के पौत्र कार लेकर महाराजजी को लेने चले गए। योगीराजजी इनके साथ देहरादून पहुचे। पण्डितजी की पुत्री ने महा-राजजी का नाम लेकर इन्हें बड़े जोर से पुकारा। इन्होंने वड़ी देर के वाद होश मे म्राकर ग्रपनी माखे खोली ग्रीर साध्रु महाराजजी को निर्निमेष नेत्रो से देखते रहे। योगीराजजी ने कहा, "अब रोने और घवराने की आवश्यकता नही । अब मैं आगया हू ग्रीर ग्रापको शीघ्र ही नीरोग कर दूगा।" पारिवरिक जून इनके जीवन की ग्राशा छोड बैठे थे ग्रत इन्हे महाराजजी की वात का विश्वास ही नही होता था। महा-राजजी ने सबको कमरे से बाहर भेज दिया, मानसिक प्रयोग प्रारभ किया और भगवान् से प्रार्थना की । महाराजजी ने ग्राघा घण्टा तक प्रयोग किया । पण्डितजी ने कई दिनो से ग्रपने-ग्राप करवट नही वदली थी। इस प्रयोग के वाद इन्होंने स्वय करवट वदली ग्रीर ग्रपने मे प्रथम वार जिंत का ग्रनुभव किया। इस समय इनको वेदना भी कुछ न्यून होगई थी। महाराजजी ने वैद्यजी के लिए खिचडी वनाने का स्रादेश दिया। जब यह तैयार होकर कमरे मे लाई गई तो योगीराजजी ने वैद्यजी को पलग पर वैठकर खाने का भ्रादेश दिया। इन्हें तिकए के सहारे विठा दिया गया भीर इनकी पुत्री ने उन्हें खिचडी खिलाई। लगभग दो घटे में इनमें कुछ स्वस्थ से होने के चिन्ह दिखाई देने लगे। महाराजजी जय वापिस स्वर्गाश्रम प्यारने लगे तव हर तीसरे दिन वहा कार भेजने का ग्रादेश दिया जिससे प्रति तीसरे दिन वैद्यजी की स्वास्थ्य मे प्रगति को देखते रहे। स्वर्गाश्रम मे भी इनके स्वास्थ्य के लिए प्रयोग करते रहे। ये १५-२० दिन मे स्वस्थ होगए, केवल दुर्वलता ही शेप रह गई थी। ठीक २० दिन वाद ही वैद्यजी का जन्म-दिवस था। महाराजजी ने सव पारिवारिक जनो से कहा कि वैद्यजी इस ग्रवसर को स्वय वडी धूमधाम से मनाएगे। इस स्वास्थ्य-प्राप्ति से पूर्व पण्डितजी स्वामी सत्यानन्दजी महाराज को ग्रपना गुरु मानते थे, किन्तु इस चमत्कार को देखकर अब पूज्य महाराजजी को भी अपना गुरुदेव मानने लग गए। योगीराजजी ने अपने योगवल से वैद्यजी को जीवन-दान दिया था। इसी-लिए इनके प्रति पण्डितजी की वडी निष्ठा होगई थी। स्वास्थ्य-प्राप्ति पर वैद्यजी ने एक वृहद् यज्ञ का ग्रायोजन किया। स्वामी सत्यानन्दजी भी इस ग्रवसर पर पघारे। अपने सारे स्टाफ, कन्या गुरुकुल की छात्रायो तथा अपने सभी इप्ट मित्रो को आम-न्त्रित किया। वडी धूमधाम से यज्ञ को सम्पन्न किया गया। खूव दान-दक्षिणा दी गई।

## उत्तरकाशी-गंगोत्री प्रस्थान

साथना शिविर की समाप्ति पर एक मास तक स्वर्गाश्रम मे निवास करके महाराजजी उत्तरकाशी पद्यारे। इस बार कैंप्टन जगन्नाथजी भी इनके साथ ग्राए।

ग्रन्थ निर्माण करने का विचार—महाराजजी उत्तरकाशी मे सवा मास तक विराजे। कैंप्टन जगन्नाथजी ग्राश्रम के निर्माण कार्य मे वरावर सहयोग देते रहे। पूज्य महाराजजी जून मास के प्रारम्भ मे गगोत्री पधारे। सेवक विजय भी इनके साथ था। गगोत्री मे चार मास तक रहकर ये विज्ञान के प्रमुख विषयो पर विचार करके सक्षेप

मे लिखते रहे। गुरुदेव के सभी जिप्य विज्ञान को विधिपूर्वक लिपिवद्ध करके प्रकाणित करवाने के लिए वार-वार प्रार्थना कर रहे थे क्योंकि योगीराजजी का योग सम्बन्धी विशेष विज्ञान इनका स्वानुभव था। इस प्रकार का कम ग्रीर विज्ञान ग्रन्य ग्रथो मे कही भी उपलब्ध नही हैं। इसलिए इस विज्ञान को पुस्तकाकार मे लाना अत्यन्त आवश्यक था। जिस प्रकार दर्शनशास्त्र आज विश्व का प्रदर्शन कर रहे हैं, इसी प्रकार से पुस्तकाकार प्राप्त कर लेने पर ग्रापका विज्ञान विञ्व को लाभ पहुचा सकेगा। गुरुदेव के योग, ग्रात्म-विज्ञान तथा ब्रह्म-विज्ञान को विश्व के कोने-कोने में पहुचाने का एक-मात्र यही साधन है। सभी शिष्यों की प्रार्थना को स्वीकार करके पूज्य योगीराजजी ने ग्रात्मा सम्बन्धी तथा ब्रह्म सम्बन्धी स्वानुभूतियो को ग्रथ का रूप देने का निश्चय कर लिया। कई वर्ष से प्रयोगात्मक ढग से अभ्यासियों को पूज्य महाराजजी साधना करवा रहे थे श्रत सारा विज्ञान इन्हें हस्तामलक हो रहा था। इसको लिख डालना एक सहज सी बात थी। शिष्यों में केवल विश्वेश्वरनाय दत्त इस बात का विरोध कर रहे थे। उनका विश्वास था कि गुरुदेव का विज्ञान पुस्तक मे नही लिखा जा सकता। यह तो स्वय अन्त करण से ही ग्रहण किया जा सकता है। यह तो ऋपियो तथा मुनियों के पावन हृदयों में ही परम्परात्रों से पनपता ग्रा रहा है। इसकी पवित्र परम्परा इसी प्रकार से चलनी चाहिए। महाराजजी अपने किसी विष्य के नाम से इस महत्त्वपूर्ण ग्रथ को प्रकाशित करना चाहते थे किन्तु शिष्यों ने इस बात को स्वीकार नहीं किया। क्योंकि गुरुदेव प्रसिद्ध योगीराज तथा योगपारगत है, वर्षों तक हिमालय निवास करके योग सांघना की थी और साधको को योगाभ्यास करवाया था, अत इन्ही के नाम से पुस्तक का प्रकाशन ग्रभीप्ट माना गया।

गगोत्री से ब्राकर महाराजजी ने जो विज्ञान के सम्बन्ध में सक्षेप रूप ने लिखा था उसे ब्रह्मचारी जगन्नाथजी को देकर उसे ब्रन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा ब्रानन्दमय ५ कोषों के ब्राधार पर कमबद्ध करने का ब्रादेश दिया जिससे सभी सिक्षप्त सामग्री का कम के अनुसार सग्रह हो सके। पाच कोपों का समावेश स्थूल, सूक्ष्म ग्रीर कारण शरीर में करने की भी ब्राज्ञा प्रदान की। कैंप्टन जगन्नाथजी को योग निकेतन का कार्य दिल्ली जाकर करने का ग्रादेश दिया ग्रर्थात् 'साधना शिवर' लगाने की वहा व्यवस्था की जाए क्योंकि ग्रव इन्होंने ग्रपने विज्ञान को दूसरों को प्रदान करने की योग्यता प्राप्त कर ली थी। दत्तजी को भी देहरादून में जाकर योगाभ्यास करवाने का ग्रादेश दिया जिससे वहा की जनता भी लाभ उठा सके किन्तु वे महाराजजी के चरणश्री को छोडकर कही ग्रन्यत्र जाना नहीं चाहते थे। वे कोई ऐसी सेवा चाहते थे जो गुरुदेव के चरणारविन्दों में वैठकर की जा सके। ग्रत महाराजजी ने नए साधकों को ग्रभ्यास करवाने की ग्राज्ञा दी ग्रीर यह भी फरमाया कि जब ग्राप ग्रभ्यास करवाने वैठो तव मुभसे ग्रादेश लेकर जाया करो। दत्तजी ने इसी प्रकार से साधना करवानी प्रारम्भ कर दी।

## युवक अभ्यासियों पर अविश्वास

पूज्य महाराजजी युवक ब्रह्मचारियो और श्रभ्यासियो पर विश्वास नही करते थे। वहुत से युवक विद्यालय श्रथवा महाविद्यालय छोडकर भाग श्राते थे। जिनका पढाई मे मन नही लगता है, जो ग्रध्ययन मे परिश्रम नही कर सकते है, जो परीक्षा

में उनुत्तीणं हो जाते हैं, जो ग्रध्ययन का व्यय वहन नहीं कर सकते, ग्रथवा जो अपनी अभिष्टता, दुव्यंवहार, और दुराचार के कारण वदनाम हो जाते है, प्राय ये ही अपने घरो ते भाग जाते है और अन्य कही भी स्थान न मिलने से आश्रमो मे ग्रा जाया करने है। माता-पिना से नाराज होकर, ग्रथवा पत्नी का देहान्त हो जाने पर, या ग्राजीविकोपार्जन के लिए साधनाभाव के कारण, ग्रथवा किसी भी कार्य में मन के न नगने के कारण भी युवक घर छोडकर भाग जाया करते है। महाराजजी के पास जब कभी उन प्रकार के भगोड़े युवक ग्राते थे तब ये उन्हे समभा-बुभाकर वापिन उनके घरों में भेज दिया करते थे। उनमें उनके माता-पिता का सारा पता ज्ञात गरके उन्हें सूचित कर देने थे ग्रीर वे ग्राकर इन्हें नेजाया करते थे। जब इस प्रकार के गुवा प्रपन गावा-पिना तथा प्रध्यापक के प्रनुशासन मे रहना पसन्द नही करते तो श्री महाराजजी के अनुसासन में किस प्रकार रह सकते थे। ये वेलगाम घोडे के समान होते हैं। निययण में रहना नहीं चाहते। ग्राज्ञा पालन करना नहीं जानते। उच्छृह्वलता प्रिय होते हैं। उद्ग्य होते है। अनुवासन में उन्हें बधन, आज्ञापालन में मानहानि, माना-पिता नथा गुरजनो का सम्मान करने मे अपना अपमान और विन अता मे अपना पतन दिलाई देता है । ऐने युवक ब्रायमों में रहने के योग्य नहीं होते । थोडा सा भ्रम्यास परने के परनात् कही अन्यत भाग जाते है। मानसिक चचलता ग्रीर ग्रस्थिरता के राज्य वे गरी भी स्वायी हा से दिक नहीं सकते। स्वेच्छाचारिता के कारण इपर-इपर भटाने रहते हैं। किसी-फिसी को क्षणिक वैराग्य हो जाता है तो ससार को मिल्या गहने लगना है और उपयेश बनाकर फिरने लगता है। एक कठिन समस्या ग्रीर है। यदि इन भगोड़ी की ब्रायमनिवासी गुरुजन प्रेमपूर्वक अपने पास रखे, धन्य नियाण, ग्रन्य पहिनाए, कभी नाउना न करें, उनमे मेंबा कुछ न ले, तब ये गुर के भी गुर यन बैठते हैं। उन्ह यह दुरिसमान होने लग जाता है कि ये अब बहुत गँडे महत्स्याँ होगए है, उसीलिए गुरुवी से उत्नासम्मान प्राप्त होरहा है। इस ग्रभिमान क गारण उनकी विका, युद्धि तथा मूध्मदिशिना का स्रोत बन्दे हो जाता है। अपनी उद्भावना र राज्य प्राथमों ने भी भाग निकलते हैं। पूज्य महाराजजी को इन देलगाम पोटी मा श्रीर उन्हातूल युवको का कई वर्षी से बेडा कटु श्रनुभव हुश्रा था, इसीचिए ये भीत्र किसी युवक का विस्वास नहीं करते थे। इनके प्रति बडी उपेक्षा वृत्ति मी राजे वे ।

# म्यगिश्रम मे ४ माम के राधना शिविर की समान्ति पर उपदेश

१५ मानं रो माधना-विविद्य का समाध्य समारोह मनाया गया। महाराजजी व सप्र माधिन को प्रीतिभोग के उपरान्त विदाई देते हुए निम्न उपदेश दिया —

यह तो प्रत्यक्ष सिद्ध है कि ग्राप लोगों की जिज्ञासा ग्रात्म-विज्ञान ग्रीर ब्रह्म-विद्यान के विषय में है किन्तु इस मन्द्र गति ने शीघ्र पूर्ण सफलता प्राप्त न होगी। जिस प्रकार में ग्राप लोगों ने यहा रहकर ४ मास तक यम-नियम का पालन किया है, ग्रन्थासन में रहे हो, सयम ब्रत को घारण किया है, ग्रीर बड़ी लगन के साथ ग्रस्थास विया है, इसे ग्रपने-ग्रपने स्थान पर भी उसी प्रकार जारी रखो जिससे बहुत ग्रस्थास थिया है, इसे ग्रपने-ग्रपने स्थान पर भी उसी प्रकार जारी रखो जिससे बहुत भी श्रान ग्रीर बेरास्य प्राप्त होकर मानव जीवन का उद्देश्य शीघ्र ही पूर्ण हो

जाएगा। ग्राप लोग ग्रपनी यह भ्राति दूर करदे कि ग्रापको ग्रनेक जन्मो के वाद तत्त्व-ज्ञान प्राप्त होगा। यदि निश्चयात्मक बुद्धि से कटिवद्ध होकर इस अध्यात्म मार्ग पर अग्रसर हो जास्रोगे तो इसी जन्म मे स्रात्म-विज्ञान लाभ कर सकते हो। गम, दम, उपरित, तितिक्षादि साधन-चतुष्टय से सम्पन्न होकर श्रद्धा, भिवत, निष्ठा ग्रीर विश्वास पूर्वक ग्रीर ग्रालस्य तथा प्रमाद को त्याग कर श्रेय पथ के पथिक बना जाए तो इसी जन्म मे अपवर्ग प्राप्त हो सकता है। आप सवको लोकेपणा, पुत्रेपणा श्रीर वित्तेपणा इन तीनो एपणात्रो का परित्याग करके वैराग्य की भावना को दृढ करना चाहिए। म्राप म्रभ्यास तो खूव करते है किन्तु जीवन मे वैराग्य की कमी है। भ्रभ्यास भीर वैराग्य दोनो ही सफलता के मुख्य साधन है। इसलिए ग्रापको ग्रपने ज्ञान ग्रीर वैराग्य दोनों को दृढ करना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य सुख, गान्ति ग्रौर ग्रानन्द की खोज मे लगा हुआ है परन्तु इनकी प्राप्ति का एक ही मार्ग सुगम, सरल और निष्कटक है और वह है योग । योग के विना ग्रानन्द की उपलब्धि नहीं हो सकती। मनुष्य सदा चलता तो प्रेय-मार्ग पर है और इच्छा करता है ग्रानन्द प्राप्ति की । यह कैसे हो सकता है । श्रेय पथ का पथिक ही वास्तविक ग्रानन्द लाभ कर सकता है। प्रेय मार्ग का मुख म्रापात् रम्य है, क्षणिक स्थायी है। किन्तु स्थायी म्रानन्द प्राप्ति के लिए तो श्रेय मार्ग का अवलम्बन करना होगा। अत यद्यपि श्रेय पथ 'क्षुरस्य घारा' है किन्तु इसके विना कल्याण नहीं हो सकता। कल्याण चाहते हो तो इस मार्ग पर चलने के लिए ग्राज ही कटिबद्ध हो जाग्रो। मगलमय मगलरूप भगवान् तुम्हारा सदैव मगल करे।

श्री रणवीरजी को उपदेश--दैनिक मिलाप के प्रधान सपादक साधना शिविर की समाप्ति पर दर्शनार्थ ग्राए। पूज्य महाराजजी के प्रति इनकी ग्रगाय श्रद्धा ग्रीर भिक्त थी। एक दिन इन्होने योगीराजजी से प्रश्न किया कि "महाराजजी, मैंने ग्रापकी अनेक सिद्धिया देखी है। आपने कइयो को रोगमुक्त किया है, कइयो को मुकद्मे में जिताया है तथा कइयों को जीवन-दान किया है। आपने मेरे भाई युद्धवीर को, वस्वई वाले सेठ तुलसीराम को, प० ठाकुरदत्त शर्मा ग्रमृतधारावालो को, नारायणदास के पिता श्रीर भगिनी को तथा माता मनसादेवी श्रादि कइयो को जीवन-दान किया है। श्राप रोगी को देखते ही उस को कह देते हैं कि मै श्रापको निञ्चयपूर्वक रोगमुक्त श्रीर स्वस्य कर दूगा। इस वात की श्राप सबके सामने घोपणा कर देते है, जैसे कि उस रोगी का जीवन और मरण ग्रापके ही हाथ मे हो। क्या यह भगवान् के न्याय मे श्रीर कर्मफल प्रदान में हस्ताक्षेप नहीं है ?" पूज्य महाराजजी ने इनकी वात् का समाधान करते हुए कहा, "कर्मफल प्रदान करने का ग्रधिकार भगवान् को ही है क्योंकि वह त्रिकालदर्शी और सर्वज्ञ है, एकदेशी अल्पज्ञ जीव को नहीं क्यों कि अनन्त कर्मों की स्मृति जीव को नही रहती। इसलिए यह कर्मफल का विभाग नही कर सकता। किन्तु जैसे न्यायाधीश न्यायालय मे वैठकर लोकमर्यादा ग्रथवा व्यवस्था ठीक रखने के लिए अपराधी को दण्ड देता है, यह भी भगवान् के कर्मफल प्रदान करने में हस्तक्षेप ही है। इसी प्रकार योगी भी कर्मफल का विधान या कर्मफल प्रदान कर सकता है। कर्मफल भोगना तो कर्ता को पडता ही है। ग्रव किसी को स्वस्य करने के विषय मे सुनो । वास्तव मे रोगी को स्वस्थ होना ही होता है जिसे सर्वसाधारण समभ नही सकते, किन्तु योगी अपनी दिव्य दृष्टि से इस वात को जान लेता है, समभ जाता है।

उमीलिए वह निश्चित त्य में उसके स्वास्थ्य-लाभ के लिए कह देता है। कभी-कभी रोगी के भविष्य को देनकर भी उसके रोगमुक्त होने की घोषणा कर देता है श्रीर कह देता है कि तुम न्यस्थ हो जाशोगे श्रथवा में तुम्हें स्वस्थ कर दूगा। कभी-कभी योगी रोगी के रोग-भोग को कुछ हरका-सा कर देता है जिसे वह श्रासानी से भोग मके। श्रपने मनोवल ने उस भोग को कुछ श्रागे-पीछे भी कर देता है। यदि वह चाहे तो न्यय भी रोगी के भोग को वटा सकता है। उसके रोग-भोग को स्वय श्रपने ऊपर ले सकता है। भोग में महायक बन नकता है। भविष्य की श्रोर मनोवल से घक्का देगर फेंक् सकता है। श्रपना मनोवल प्रदान करके उसे रोग-भोग की सामर्थ्य भी प्रदान कर गरना है। कालान्तर में भोगने के लिए भविष्य की श्रोर भी ले जा सकता है। एक महानात्मा परोपकारी जब जाति श्रीर देश के लिए कोई श्रच्छा कर्म करता है तो जनना भी उनके श्रच्छे कर्म का उपभोग करती है, श्रीर यदि परोपकार बुद्धि से उससे कोई श्रितकर कार्य है। बहुत से जान-श्रजात कर्मों के कलो की व्यवस्था भगवान् ही करता है ग्रीर गुरु जान कर्मों के फलो की व्यवस्था भगवान् ही करता है ग्रीर गुरु जान कर्मों के फलो की व्यवस्था भगवान् ही करता है ग्रीर गुरु जान कर्मों के फलो की ह्यवस्था भगवान् ही करता है ग्रीर गुरु जान कर्मों के फलो की ह्यवस्था भगवान् ही करता है ग्रीर गुरु जान कर्मों के कलो ही होता।

## द्रह्मचारी प्रेम का योग निकेतन मे प्रवेश

सन् १६८७-८= मे ब्रह्मचारी प्रेम परमार्थ निकेतन् मे स्वामी सुखदेवानन्दजी के पान रहकर शिक्षा प्राप्त कर रहा था। गगातट पर बैठकर कुछ जाप भी करता था। उसकी प्रवस्था १७ या १८ वर्ष की थी। कभी-कभी यह सत्सम के लिए महाराजजी के पास भी घाया करना था। स्वामी सुखदेवानन्दजी को यह पसन्द नहीं था, अत वे इन्ने रहा परने वे कि "तुम उधर-उधर साधुश्रों के पास सत्सग के लिए मत जाया रही। इस में गया कमी है ? हम तुम्हें गव गुछ सिया सकते हैं।" उनके निर्णय करने .पर भी यह वोरी-नोरी महात्मात्रों के पाम सत्सम के लिए वला जाता था। वास्तव ने यर योग विक्षा प्राप्त करने के लिए घर मे ग्राया था। स्वामी सुखदेवानन्दजी री इसे इसके घर से लाए वे किन्तु इसकी योग-साधना की पूर्ति स्वामीजी के पास नती तो गरती से । गुण्यानको की प्रकृति स्वाभाविक ही चचल होती है। वे प्रतिवध भीर प्रनावस्यक प्रन्यायन को सहन नहीं कर सकते। उसकी उच्छा महाराजजी के पास जातर योगाञ्यास करने श्रीर योग कथा में बैठने की होती थी किन्तु स्वामीजी इस प्राज्ञा नहीं देने थे। प्रत्यह इस बधन से मुक्त होना चाहता था। एक दिन या दौपार को महाराजजी के पास श्राया। इस समय इनके २-३ भक्त दर्शनार्थ श्राए हुए व । इसने दो-नीन नामग्रो का समाधान पूछा । महाराजजी ने विशद व्याख्या ररंगे नय नमभाकर उमका मन्नोप कर दिया। उसके चले जाने के पश्चात् महा-राजनी है एक भान श्रीकृषणजी सम्ना ने कहा, "यह लडका पढा-लिखा श्रीर बुद्धिमान् है। श्राप इसनो श्रपने पास रसकर्योग सिसाये।" महाराजजी श्रन्तयामी है। श्रपने गाँगयूत्र में सुबारे मन पी बान को जान नेते हैं। इनसे कोई बात छिपाई नहीं जा मानी । उन्होन सन्ताजी के मुभाव का उत्तर देते हुए कहा, "योग सिसाना तो कठिन नहीं है । भे उने सब कुछ मिसा दूगा, किन्तु यह अधिक काल तक टिकेगा नहीं । नहीं है । भे उने सब कुछ मिसा दूगा, किन्तु यह अधिक काल तक टिकेगा नहीं । नंग सीस्पार चलता बनेगा । जब यह अपने पालन-पोषण करने वाले माता-पिता मांग सीस्पार चलता बनेगा । जब यह अपने पालन-पोषण करने वाले माता-पिता को छोडकर भाग ग्राया ग्रीर फिर जो भगाकर लाया उसके पास से भी भागने के उपाय कर रहा है तो यह हमारे पास भी कैसे रह सकेगा ? जैसे सैकडो को योग सिखाया है ऐसे इसे भी सिखा देंगे लेकिन इस ग्राशय से नही कि यह हमारे पास रहेगा।" परमार्थ निकेतन मे भजन, कीर्तन, सत्सगादि तो बहुत होता था किन्तु प्रेम का मन वहा से ऊब गया था। वह ग्ररण्य, गिरि-गुहाग्रो तथा गगा के तट पर निर्जन स्थानों में जाकर योग-साधना किया करता था। एक दिन इसने महाराजजी से निवेदन किया, "ग्राप मुक्ते ग्रपने पास ग्रकले में दिन्य-ज्योति के दर्शन करवाने की कृपा करे, कुछ ठीक-ठीक मार्ग-दर्शन करदें क्योंकि स्वामीजी मुक्ते ग्रापकी कक्षा में ग्राने से रोकते है। ग्रन्य साधुग्रो तथा सन्तों के सत्सग में भी नहीं जाने देते।" महाराजजी ने कहा, "यह काम एक-दो दिन का नहीं है। जब तक तुम विधिपूर्वक कक्षा में बैठकर कुछ काल तक निरन्तर ग्रभ्यास नहीं करोगे तब तक कुछ भी प्राप्ति नहीं हो सकेगी।"

गगोत्री प्रस्थान—१६ अप्रैल को महाराजजी उत्तरकाशी पथारे। कुछ दिनो के पश्चात् प्रेम भी इन्कमटैक्स किमश्नर श्री वावूलालजी के साथ गगोत्री यात्रा का निमित्त वनाकर तथा स्वामीजी की ग्राज्ञा प्राप्त करके उत्तरकाशी पहुच गया। स्वामीजी ने एक मास के लिए इसे गगोत्री यात्रा के लिए ग्राज्ञा दी थी। प्रेम वावूलालजी के साथ महाराजजी से मिला। यह उत्तरकाशी में नितान्त एकान्त तथा प्रशान्त योग निकेतन के वातावरण, दृश्य तथा गगा का सुरम्य तट देखकर मुग्ध सा होगया। टिहरी के डी० एम० वावूलालजी के मित्र थे। ये भी उत्तरकाशी तक इनके साथ ग्राए थे। इनको कीर्तन में बडी रुचि थी, ग्रत रेस्ट हाऊस में इसका ग्रायोजन किया गया और दो घण्टे तक कीर्तन होता रहा। दूसरे दिन पुन प्रेम महाराजजी के पास ग्राया ग्रीर कहा, मुझे बहुत ऋद्धिया ग्रीर सिद्धिया प्राप्त होगई हैं। महाराजजी ने इनको दिखाने के लिए कहा। उसने निवेदन किया, देखिए न, किमश्नर ग्रीर डी० एम० जैसे बडे-बडे ग्रफसर मेरे भक्त वन गए है। यह सुनकर महाराजजी वडे जोर से हसे। वावूलालजी ग्रीर यह गगोत्री चले गए ग्रीर वहा पर डाक वगले में ठहरे। वहा का योग निकेतन इसे वहुत ग्राकर्षक मालूम हुग्रा। जब यह गगोत्री से वापिस ग्राया तब महाराजजी के श्रीचरणो में रहने की इच्छा प्रकट की ग्रीर कहा, एक वार स्वर्गाश्रम जाकर शीघ्र ही वापिस लौट ग्राऊगा।

## ब्रह्मचारी श्रीकंठ का योग निकेतन में प्रवेश

इसी ग्रवसर पर श्रीकठ नामक एक ग्रासाम प्रदेश का ब्रह्मचारी उत्तरकाशी में श्री महाराजजी के पास ग्राया। इसने भी योग सीखने की जिज्ञासा प्रकट की। महाराजजी ने इसको गगोत्री के योगसाधना-शिविर में सिम्मिलित होने का ग्रावेश दिया। गगोत्री में १५ जून से १५ सितम्बर तक साधना-शिविर लगाने का ग्रायोजन किया गया था। यह जून के प्रारम्भ में वहा पहुच गया ग्रीर स्वामी प्रज्ञानाथजी के स्थान पर निवास करके योग निकेतन में साधना करता रहा। ब्रह्मचारी प्रेम भी जून मास के अन्त तक यहा पहुच गया। श्री महाराजजी के साथ बी० एन० दत्त तथा सेठ हरवसलाल मरवाह भी गगोत्री ग्रा गए थे। इन्होंने ने भी कई मास तक ग्रभ्यास किया। ब्रह्मचारी जगननाथजी को भी ग्रपने साथ ले ग्राए थे। दत्तजी ने ग्रपनी धर्मपत्नी शीलाजी के साथ ग्रीर सेठ हरबसलाल ने गत वर्ष भी गगोत्री ग्राकर योग निकेतन

मे रहकर ४ मास तक साधनाभ्यास किया था । प्रेम को गगोत्री का जलवायु अनुकूल नहीं आया ।

महाराजजी सितम्बर के ग्रन्त में गंगोंत्री से वापिस उत्तरकाणी पंधारे। यहा एक मास विराजकर ये स्वर्गाश्रम पंचार गए। १५ नवम्बर से ४ मास का योगसाधना शिविर प्रारम कर दिया गया। महाराजजी ने प्रेम तथा श्रीकण्ठ को विशेष रूप से श्रम्यान करवाना प्रारभ कर दिया। सब प्रकार के ग्रामन ग्रीर प्राणायाम इन्हें सिखाये गए। युवायन्था होने के कारण उनके गरीर कोमल ग्रीर लचकीले थे, इसलिए प्रत्येक ग्रासन को बठी ग्रामानी के साथ करने लगे। मभी कियाग्रो ग्रीर प्राणायामों को भी शीन्न गए। नारायणदास तथा एक युवक सन्त ने भी इनके साथ ही योग साधना की।

#### 'श्रात्म-विज्ञान' प्रकाशन कार्य

श्री वाबूलाल दीक्षित, श्री मुरारीलाल श्रोत्रिय तथा वैद्य विद्याभूषण तीनो अच्छे विदान् थे श्रीर महाराजजी के पास गत दो वर्ष से योगाभ्यास कर रहे थे। इनसे हस्त-लिन्ति 'श्रात्म-विज्ञान' में यत-तत्र भाषा का संशोधन करवाया गया था। इनके पञ्चात् श्रात्म्दस्यामी सरस्वतीजी तथा श्रमृतानन्दजी को 'श्रात्म-विज्ञान' की हस्तलिखित प्रति दिना दी गई थी। तत्पञ्चात् श्री रामिकशोर तथा वी० एन० दत्त को दिल्ली भेज कर उनके प्रकाशन का प्रवन्ध करवाया गया। दो मास में उस ग्रन्थ के विभिन्न चित्र तथार हए। एक चित्रकलाविशास्त्र को द क० प्रतिदिन देकर रखा गया श्रीर इसने सब चित्र बनाए। ब्रह्मचारी जगन्नायजी भी चित्र-निर्माण में इसकी सहायता करते रहे। १६४६ में उस गय का यूनिवर्मिटी प्रेम में मुद्रण हुग्रा। 'मिलाप' के प्रधान मपादक श्री रणवीरजी तथा उनके भाई श्रोमप्रकाशजी ने इस कार्य में ग्रपना महान योग-रान दिया।

#### गगोत्री प्रस्थान-- 'वहिरङ्ग योग' ग्रथ की योजना

ग्वर्गात्रम के नापना-शिविर के समाप्ति-समारोह के पञ्चात् पूज्य महाराजजी ने गगोशी के लिए प्रस्तान किया। मार्ग में डेढ मास के लिए उत्तरकाशी विराजे। उन्होंने सेठ टरवमलालजी मरवाह को गगोशी जाने के लिए श्रादेश दिया जिससे उनके सम्पान में गुठ परिवर्तन होने की मभावना देखकर श्रागे प्रगति का यत्न किया जाए। टरवमलालजी उत्तरकाशी श्रागए श्रीर यहां से महाराजजी के साथ ४ जून को गगोशी पट्टच गए। ब्रह्मचारी प्रेम श्रीर श्रीकण्ठ भी इनके साथ ही श्राए थे। पूज्य योगीराजजी ने उन तीनो को वात्स्यायन-भाष्य सहित न्यायदर्शन तथा उपस्कार-भाष्य सित वैद्यापिक दर्शन का श्रध्ययन करवाया। गत वर्ष व्यास-भाष्य सित योग दर्शन तथा विज्ञानिक्धु-भाष्य महित साय्य दर्शन पढाए थे। तीन मास तक श्रभ्यास भी करवाया गया था। ब्रह्मचारी प्रेम, श्रीकण्ठ तथा सुन्दरानन्दजी को विविध प्राणा-यामी, श्रासनो श्रीर हठयोग की क्रियाशों का विवेष रूप से श्रभ्यास करवाया गया। उन श्रह्मचारियों के शरीर नरम, कोमल श्रीर लचकदार थे। कई उपायों से इन्हें कोमल श्रीर लचकदार वनाया गया था। जिसमें ये कठिनतम श्रासन श्रीर प्राणायाम कर सले। 'श्राहम-विज्ञान' श्रथ सर्वगाधारण की समभ में नहीं श्राया था, इसलिए

पूज्य महाराजजी ने 'वहिरङ्ग योग' नामक एक अन्य ग्रथ की रचना करने की योजना वनाई। 'आत्म-विज्ञान' में घारणा, ध्यान तथा समाधि के विषय का ही विशेष रूप में विवेचन था। इसके लिए एक ऐसे ग्रथ की रचना की आवश्यकता समभी गई जिसमें योग के प्रथम पाच अङ्गों अर्थात् यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार का पूरा विवेचन हो। विविध प्रकार के आसनो और प्राणायामों को चित्रों द्वारा इस ग्रथ में समभाने की आवश्यकता थी, अत इन तीनो ब्रह्मचारियों को योग के दोनो अगों की पूर्ण शिक्षा देकर पारगत किया गया जिससे आसन और प्राणायाम करते हुए इनके विविध चित्र लिए जा सकें।

#### स्वगश्चिम गमन

श्री महाराजजी ने श्रक्तूवर १६६० के प्रथम सप्ताह में गगोत्री से प्रस्थान किया। मार्ग मे ४० दिन तक उत्तरकाशी में विराजे श्रीर फिर स्वर्गाश्रम पधारे। ४ मास का साधना-शिविर १५ नवम्वर से प्रारभ कर दिया गया।

#### योग निकेतन ट्रस्ट

महाराजश्री ने उत्तरकाशी और गगोत्री के योग निकेतनो का एक ट्रस्ट बना दिया था। इस ट्रस्ट के निम्नलिखित सदस्य बनाए गए थे .—

प्रधान-पूज्य महाराजजी

मत्री-श्री बी० एन० दत्त

सदस्य —

- १ सेठ हरबसलाल मरवाह
- २ सेठ ग्रमीरचन्द
- ३ सेठ मोहनलाल वागडी
- ४ सेठ ग्रमृतलाल रमणलाल
- ५ श्री जगदीशचन्द्र डावर
- ६ श्री नारायणदास कपूर
- ७ स्वामी दयालमुनिजी

श्री स्वामीजी के अतिरिक्त ट्रस्ट के सभी सदस्यों को वार्षिक चन्दा देना होता था।

श्री महाराजजी सन्यास धारण करने का विचार कर रहे थे, इसीलिए उपरोक्त ट्रस्ट बनाना आवश्यक समभा गया था।

दोनो स्राश्रमो का वार्षिक व्यय लगभग ३००० रु० होता था। ट्रस्टियो के चन्दे से यह व्यय किया जाता था।

ग्रव महाराजजी ने २३ घण्टे प्रतिदिन मौन रखने ग्रौर केवल एक घण्टा सायं-काल ग्रभ्यासियों से बात करने का निश्चय कर लिया था। ४० दिन तक तो यह व्रत निर्विष्न रूप से चलता रहा, किन्तु जव ग्रभ्यासियों ने वहुत ग्राग्रह किया तो इन्हें यह वत समाप्त करना पड़ा। इनमें से वहुत से ग्रभ्यासी लोग वहुत दूर-दूर से ग्राए थे ग्रीर ग्रपने कारोवार छोडकर श्री महाराजजी की शरण में ग्राए थे, ग्रत वे इनके उपदेश के वड़े इच्छुक थे ग्रीर एक घटे से उन्हें सन्तोप नहीं होता था।

#### भक्त की कारावास से मुक्ति

महाराजजी को दैनिक पत्र 'मिलाप' से विदित हुग्रा कि कराची मे युद्ध-कालीन विधान चालू हो रहा है ग्रीर इसके तहत मे जगदीशचन्द्र गिरफ्तार होगए हैं ग्रीर इन्हें जेल में भेज दिया गया है। इस समाचार से श्री महाराजजी चिन्तित होगए। जगदीशचन्द्र इनके अनन्य भक्तो मे से थे। दूर देश है, कभी वहा की पुलिस को नही देखा, जज को नही देखा, उन पर मानसिक प्रयोग करें तो कैसे करें। ग्रत महाराजजी ने डावरजी को ही अपने मानसिक प्रयोग का लक्ष्य वनाया। अपने मनोवल द्वारा जेल से वाहिर ग्रांकर्पण करने का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया। यह दिन के ११ वजे की वात है, लगभग ४ वजे महात्मा प्रभु म्राश्रितजी तथा म्राचार्य सत्यभूषणजी का जगदीशचन्द्रजी के गिरफ्तार होने के सम्बन्ध मे तार श्राया जिसमें महाराजजी से भगवान् से प्रार्थना करने तथा अपने मनोवल के प्रयोग से उन्हें जेल से छुडाने की प्रार्थना की गई थी। योगीराजजी ने उन्हें तार दिया ग्रौर पत्र द्वारा सूचित किया कि वे कल तक कारावास से मुक्त हो जाएगे। महाराजजी ने इस दिन दोपहर को भोजन नहीं किया था और कई बार बलपूर्वक मानसिक प्रयोग किया। दूसरे दिन ही आचार्य सत्यभूपण का तार श्राया जिसमें लिखा था कि जगदीशचन्द्र मुक्त होगए हैं। इनका पत्र महाराजजी के पास गिरफ्तारी के ४ दिन पश्चात् ग्रायाँ जिसमे सब समाचार लिखा था। यह भी सूचित किया था कि ग्रव उन पर मुकद्मा चलेगा। महाराजजी ने उन्हें उत्तर दिया कि ग्राप किसी प्रकार की चिन्ता न करे। न तो ग्राप दुवारा जेल जाएगे भ्रीर न भ्राप पर किसी प्रकार का जुर्माना ही किया जाएगा । मुक्हमा जुरूर चलेगा किन्तु भ्राप निर्दोष सावित होगे भ्रीर भ्रापके पक्ष मे मुकहमे का फैसला होगा। पत्र मे विस्तारपूर्वक सब समाचार पढते ही महाराजजी ने जब अपने योगवल से प्रयोग करना प्रारम्भ किया तब इनके समक्ष दो भ्राकृतिया उपस्थित हुई—एक सरकारी वकील की तथा दूसरी जज की । इन्होंने जगदीशचन्द्र को इनका रग, रूप, कद, श्रायु तथा श्राकृति लिखकर भेज दी । वे पत्र पढकर श्रावचर्यचिकत होगए । इतनी दूर बैठे हुए ग्रपनी दिव्य-दृष्टि से महाराजजी ने इन्हें कैसे देख लिया, इस वात पर वे बडा ग्रचम्भा कर रहे थे। इन्होने योगीराजजी को पत्रोत्तर मे लिखा कि ग्रापने ठीक समभा श्रीर देखा है। इनके ध्यान श्रीर प्रयोग काल मे श्राकाशमण्डल मे जो श्राकृतिया सामने ग्राई थी, वे सव ठीक निकली। जगदीशचन्द्र को ग्रादेश दिया गया कि जिस दिन श्रीर समय मुकद्मा प्रारम्भ हो इसकी सूचना तार द्वारा दी जाय जिससे उसी दिन श्रीर समय पर प्रयोग किया जा सके। इस मुकद्दमे के दौरान ३-४ जजो का स्थानान्तर होगया ग्रत महाराजजी को प्रत्येक जज पर प्रयोग करने पडे ग्रीर इसमे उनकी वडी शक्ति लगी। इस मुकद्मे के भभट से मुक्त होकर जगदीशचन्द्र महाराजजी के दर्शन करने भ्रौर भ्रागीवाँद प्राप्त करने के लिए उत्तरकाशी गए।

#### सेठ जुगलिकशोर बिरला से सम्पर्क

श्री महाराजजी ने 'ग्रात्म-विज्ञान' नामक स्वरचित ग्रथ को सेठ जुगलिक शोरजी विरला के पास प्रसाद रूप में भेजा था। इसका सेठजी के ऊपर वडा प्रभाव पडा। इन्होंने ग्राद्योपान्त इस ग्रथ को पढा ग्रीर इसकी वहुत प्रश्नसा की। इनकी श्री महाराजजी से सम्पर्क वढाने की इच्छा उत्पन्न हुई। इन्होंने महाराजजी को ३०० रुपये भेजे ग्रीर इस ग्रथ को साधु-महात्माग्रों में वितरित करने के लिए प्रार्थना की जिससे निर्धन सन्त भी इससे लाभ उठा सके। इन्होंने भारतवर्ष ग्रीर ग्रार्य-जाति के भविष्य के वारे में भी इनसे ग्रनेक प्रवन पूछे थे ग्रीर श्री महाराजजी ने इन सव प्रश्नों के समाधान लिखकर भेजे थे।

श्री पिंडत देवधरजी स्वर्गाश्रम ट्रस्ट के उपमन्त्री थे। ये महाराजजी का वडा सम्मान करते थे। इनके ग्राग्रह पर ग्रपने योगवल के प्रभाव से महाराजजी ने इन्हें स्वर्गाश्रम के दो मुकद्दमों में विजय दिलवाई।

पत्रो द्वारा सपर्क वढ जाने के कारण महाराजजी ने सेठ विरलाजी को अपनी फोटो भेजने के लिए लिखा जिसके ग्राधार पर ग्रावश्यकता पडने पर ये ग्रपनी गुभ-कामना युक्त मनोवल के द्वारा सहायता कर सके। श्री सेठजी की सन्तो-महात्मात्रो के प्रति वडी श्रद्धा थी, विशेषकर हिमालय के योगियो के प्रति । इन्होंने ग्रपना चित्र भेज दिया ग्रीर साथ ही महाराज्थी के दर्शन की जिज्ञासा भी प्रकट की। श्री महाराजजी गगोत्री पधारने वाले थे, तव सेठजी स्वर्गाश्रम महाराजजी के दर्जन करने पधारे। सेठजी के पारिवारिक जन उन्हे वडे वावूजी कह कर पुकारते है। इन्होंने अपने पधारने की सूचना पिडत देवधरजी द्वारा भिजवा दी थी। आप लगभग ४ वजे श्री महाराजजी के निवास-स्थान पर पधारे। लगभग दो घटे तक स्वदेश भ्रीर ब्रार्यजाति के भावी उत्थान ब्रौर ईव्वरभिवत के विषय मे सेठजी ने इनसे प्रवन किए श्रीर शकाए उठाई । महाराजजी ने सवका युक्तियुक्त, तर्कसगत श्रीर विद्वत्तापूर्ण समाधान किया। हिन्दू जाति के सेठ विरला वर्डे पालॅक ग्रीर पोपक है। धर्म, समाज, शिक्षा, राजनीति श्रादि कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसपर श्रापके दान की वर्षा न होती हो। जब ये योगीराजजी से धर्म के विषय मे वार्तालाप कर रहे थे तब विदित हुआ कि हिन्दू शास्त्रो का अध्ययन आपने किया है, सब सिद्धान्तो से परिचित है। भगवान् के प्रति अनन्य श्रद्धा और भिवत है, वडी ग्रास्था ग्रीर विश्वास है। विदा होते समय सेठजी ने महाराजजी से एक ही प्रार्थना की—"ग्राप सन्त-महान्मा है, हिमालय के योगी हैं। स्राप नित्यप्रति भगवान् से यह प्रार्थना करे कि इस स्रायंजाति का भविष्य उज्ज्वल हो, राम-राज्य की स्थापना हो, महात्मा गाधी के स्वप्न साकार रूप धारण करें, भ्रष्टाचार का समुन्मूलन हो, राज-पुरुष शिष्ट ग्रीर धर्मात्मा हो, राष्ट्र ग्राचार-वान् हो श्रौर श्रार्य धर्म उन्निति करे, फूले श्रौर फले।" महाराजजी ने ३ वर्ष तक नित्य प्रति शुभ-कामना ग्रौर प्रार्थना करने का वचन दिया।

श्री महाराजजी १८ ग्रप्रैल को उत्तरकाजी पहुच गए। इनके साथ ब्रह्मचारी प्रेम ग्रीर श्रीकठ भी गए। महाराजजी के परमभक्त सेठ तुलसीरामजी के वड़े पुत्र सेठ गोपालदासजी तथा उनकी पत्नी ग्रीर दिल्ली से ग्रोमप्रकाजजी तथा उनकी पत्नी शान्ता ग्रीर छोटा पुत्र नवीन सभी ग्रपनी-ग्रपनी कारो मे उत्तरकाजी पहुचे।

ग्रोमप्रकाश टेपरिकार्डर ग्रपने साथ लाए थे। ये लोग १० दिन तक उत्तरकाशी में रहे। नित्य सत्संग होता रहा। सेठ गोपालदास ने योगनिकेतन में उत्तरकाशी के सभी सन्तों ग्रौर महात्माग्रों को भोजन खिलाया ग्रौर योगनिकेतन में सत्संग-भवन के निर्माण के लिए ६००० रु० महाराजजी की भेंट किया।

सेठ जुगलिकशोर विरला की बीमारी को अपने ऊपर लेना—श्री महाराजजी के पास पंडित देवधर ने पत्र द्वारा सेठ जुगलिकशोर विरला की सख्त वीमारी की सूचना दी, और उन्हें अपने आशीर्वाद से स्वस्थ करने के लिए भी लिखा। इस पत्र को पाकर महाराजजी ने तुरन्त अपना प्रयोग और भगवान् से प्रार्थना करनी प्रारम्भ कर दी। सेठजी को लक्ष्य वनाकर प्रयोग किया। इस प्रयोग का प्रभाव महाराज के ऊपर ही उल्टा पड़ गया और इन्हें स्वयं को ही हाई व्लडप्रेशर होगया। महाराजजी को कभी आज तक यह रोग नहीं हुआ था। सेठजी ४-५ दिन में ही ठीक होगए किन्तु इनपर द-१० दिन तक इसका प्रभाव रहा। इन्होंने डाक्टर को बुलाकर व्लडप्रेशर की जांच करवाई और रुघिर की भी। थोड़े दिनों में ये ठीक होगए। महाराजजी ने पं० देवधर को पत्र द्वारा पूछा कि क्या अभी सेठजी को हाई व्लडप्रेशर है। उन्होंने लिखा कि हां, सेठजी को हाई व्लडप्रेशर ही था किन्तु अब आपके आशीर्वाद से ठीक होगया है। महाराजजी ने सेठ विरलाजी का हाई व्लडप्रेशर अपने ऊपर ले लिया था और उन्हों रोगमुक्त कर दिया था।

#### गंगोत्री-प्रस्थान

भक्तों ने महाराजजी को एक सप्ताह वीमारी के कारण गंगोत्री-प्रस्थान स्थिगित करने के लिए निवेदन किया, किन्तु इन्होंने ग्रपने कार्यक्रम में परिवर्तन नहीं किया ग्रौर प्रस्थान कर दिया। मार्ग में चलते-चलते ही हाई व्लडप्रेशर जाता रहा। महाराजजी के मनोवल के प्रयोग के उपरान्त सेठजी को कभी हाई व्लडप्रेशर नहीं हुग्रा किन्तु इन्हें तीन वार इस प्रयोग के पश्चात् हुग्रा। सेठ जुगलिकशोरजी ने महाराजजी को धन्यवादात्मक पत्र लिखा। सेठजी को किसी वड़े सन्त ने विश्वास दिलाया था कि ग्रापके जीवन को चार वर्ष तक कोई खतरा नहीं है, उन्होंने इसकी सत्यता के विपय में भी इनसे पूछा। महाराजजी ने भी इसकी पुष्टि की।

उत्तरकाशी के पं० उपापित भट्ट, डी० एम० उत्तरकाशी, से महाराजजी का विशेष परिचय होगया था। ये एक वार इनके पास ग्राए। लगभग दो घण्टे तक ग्राध्यात्मिक विषयों पर वार्तालाप होता रहा। भट्टजी धार्मिक विचारों के ग्रीर ईश्वर-भक्त हैं। धार्मिक ग्रंथों का स्वाध्याय भी किया है। इनकी योग में विशेष निष्ठा थी।

महात्मा श्री प्रभु ग्राश्रितजी भी यहां एक मास के लिए ग्राए हुए थे। ग्राश्रम में नित्य सत्संग होता रहता था। महात्माजी ग्रौर ब्रह्मचारी प्रेम भी कभी-कभी कथा किया करते थे।

श्री महाराजजी ने २ जून को उत्तरकाशी से गंगोत्री के लिए प्रस्थान किया। इनके साथ सेठ भव्वालाल, ब्रह्मचारी श्रीकण्ठ तथा ब्रह्मचारी वसन्तदासजी भी गंगोत्री गए। ब्रह्मचारी प्रेम ने उत्तरकाशी से एक मास पश्चात् ग्राने के लिए प्रार्थना की थी। ५ जून को ये सव गंगोत्री पहुंच गए। प्रातः द से साढ़े ६ वजे तक ग्रासन,

प्राणायाम ग्रभ्यासार्थियो को सिखाए जाते थे ग्रौर सायकाल एक घण्टा महाराजजी साधनाभ्यास करवाते थे।

महाराजजी ने 'वहिरङ्ग योग' के लिए कई नूतन ग्रासनो का निर्माण किया था। इनका ग्रभ्यास ब्रह्मचारियों को करवाया करते थे। इनकी विधि ग्रीर लाभ भी साथ लिखते जाते थे। गगोत्री ग्रीर उत्तरकाशी में विराज कर महाराजजी ने इस ग्रथ को लिख डाला। गगोत्री में महाराजजी व्यास-पूजा को वडी धूमधाम से मनाया करते हैं। इस ग्रवसर पर सव सन्तो ग्रीर महारमाग्रो को पक्का भण्डारा दिया जाता था। रुपया, मेवा, मिठाई तथा वस्त्रादि भी इनको वाटा जाता था। इस ग्रवसर पर प्रेम भी उत्तरकाशी से ग्रागया। सव शिष्यों ने महाराजजी की विधिपूर्वक ग्रचना, वदना तथा स्तुति की।

महाराजजी प्रेम तथा श्रीकण्ठ दोनो को दर्शनशास्त्र पढाया करते थे। इन दिनो इनको चित्त सब ग्रोर से कुछ उपराम सा होता जाता था। ग्रभ्यास करवाना, म्रध्ययन करवाना, उपदेश देना तथा म्रन्य व्यवहार करना सभी वन्धन के हेतु प्रतीत होते थे। वे यही चाहते थे कि सब व्यवहार छोडकर कही एकान्त स्थान में जाकर रह और मौन हो जाऊ। प्रेम ग्रादि ब्रह्मचारियो ने महाराजजी से ब्रह्म-विज्ञान नामक ग्रथ को लिखने के लिए कई वार पूछा तो महाराजजी ने कहा, "ग्रभ्यासियों को चिरकाल तक श्रभ्यास करवाने के पश्चात् जिस प्रकार 'ग्रात्म-विज्ञान' लिखा गया या उसी प्रकार से ब्रह्म-विज्ञान लिखा जाएगा। महाराजजी प्रेमादिक से कहा करते थे कि ब्रात्म-विज्ञान को जीवन मे घटाना चाहिए ब्रीर ब्रात्म-ज्ञानियों की नरह से रहना चाहिए। तुम्हारे सपर्क मे ग्राने वाले सभी इस वात को ग्रनुभव करे कि ग्रापको वास्तव मे श्रात्म-विज्ञान हो चुका है, श्रापका जीवन श्रीर श्राचरण ठीक रूप से श्रात्मज्ञानियों के समान है। श्रात्म-ज्ञानी का जीवन श्रीर व्यवहार क्पट, दभ तथा छल रिहत होता है। भोग और विषयो से उपरित होनी चाहिए। कर्म ग्रीर व्यवहार मे विशेष ग्रासित न हो। जतु ग्रीर मित्र मे समानभाव रहे। किसी के ग्रपकार करने पर भी प्रतिकार की भावना जागृत न हो। ग्रात्म-जानी कभी किसी भी प्राणी से राग और द्वेष नही करता। वह काम, कोघ, लोभ, मोह तथा ग्रहंकार का दमन करता है। कभी किसी की निन्दा ग्रीर चुगली नहीं करता। उसकी सभी शकाए ग्रीर जिज्ञासाए शान्त हो जाती हैं। वह सुख ग्रौर दुख दोनो को समान समभता है। वह सव प्रकार की ममता को त्याग देता है। जो उसे प्राप्त है उसी मे सन्तुप्ट रहता है। हर्ष, भय, शोक मे साम्य भाव रखता है। उसके चित्त मे क्षोभ का लेश भी नही रहता। वह सदा एकरस रहकर आत्म-चितन करता है। उसकी मन और बुद्धि स्थिर रहती है। भगवन्निष्ठ होता है। जो सकट ग्रौर विपत्ति मे क्षुट्घ नही होता। जिसने अपने स्वरूप की स्थिति को समभा है। जड और चेतन से जिसका अनुराग जाता रहा है। जिसकी आसिकत इहलोक तथा स्वर्गलोक के भोगों से जाती रही है। इन सब लक्षणों से युक्त ब्रात्मज्ञानी योगी जीवन्मुक्त हो सकता है।

यह उपदेश श्री महाराजजी ने व्यास-पूजा के ग्रवसर पर सन् १६६० में दिया था। इन दिनों में ये 'वहिरङ्ग-योग' भी लिख रहे थे ग्रौर साधकों को ग्रभ्यास भी करवाते थे। इस ग्रथ में ब्रह्मचारी प्रेम, श्रीकण्ठ तथा सुन्दरानन्द के तथा अपने चित्र देने की द्यवरथा की गई थी, अतः कठिन-कठिन आसनी और प्राणायामी का इन्हें नित्य अन्यान करवाने थे जिससे ये भली प्रकार सीख जाए और इनके ठीक- ठीक नित्र लिए जा सके।

३० नितवर तक यहा निवास करके महाराजजी अपनी सारी मडली के साथ उत्तरकाणी चरें। गए। यहा पर भी पुस्तक नेयन और ब्रह्मचारियों को आसन और प्राणायाग आदि का अभ्यान भी करवाते रहे। लगभग डेढ मास तक यही कार्य क्रमण. चलना रहा।

#### स्वर्गाश्रम में साधना शिविर

= नवस्वर को उत्तरकाशी से प्रस्थान करके स्वर्गाश्रम पहुच गए। वहा पर कानपुर वाली धर्मशाला में निवास किया। शिवानन्दाश्रम के चित्रकारों से श्रासनों और प्राणायामों के नित उत्तरवाने का प्रवन्ध किया गया। लगभग एक मास चित्र नित्रवाने में लगा। लगभग ३०० ग्रामनों के और ५० प्राणायामों के चित्र खिचवाए गए। प्रकान तथा रट्टियों का ठीक-ठीक प्रवन्ध न होने के कारण चित्रों में कई दोप रट्नाए थे।

नार्च सन् १६६० मे 'बहिरंग योग' का प्रकाशन—पहली मार्च सन् १६६० 5० तो 'बहिरग योग' गण के प्रकाशनार्थ दत्तजी को दिल्ली भेजा गया। महाराजजी दो मास तक तो कानपुर वाली धर्मशाला में विराजे और फिर 'रानी की कोठी' में निवास उन्ने तमे। यही पर सावको को अभ्यास करवाना भी प्रारंभ कर दिया। योग विकास इन्ट का कार्य भी उसी कोठी में होने लगा। इस वर्ष दो देविया अमेरिका से, एक सदान फार में, तथा एक उद्दोनेशिया से अभ्यासार्थ आए। ४ मास का साधना जिबर समान्त होने पर प्रह्मचारी श्रीकण्ठ बनारस अध्ययनार्थ चले गए, सुन्दरानन्द अयुर गण, और प्रेम ने स्वर्गाक्षम में कैलाशानन्दजी के पास रहने का निश्चय किया। एगीक हिमालय का शीनप्रधान प्रदेश उसके अनुकूल नहीं था, अन इसने हिमालय का वाल जोड दिया और फैलाशानन्द के पास स्थायी रूप से रहने लगा और फिर अपनी गृहिया का प्रलग निर्माण करवा लिया।

गगीनी गमन-शी महाराजजी ने २० अप्रैल को स्वर्गाश्रम से प्रस्थान करने हा निज्य किया था किन्तु दैनिक 'मिलाप' के प्रधान सपादक श्री रणवीरजी अपनी कार से उत्तरकाशी पहुचाने के लिए श्रागए। इनके साथ इनकी पत्नी तथा पुत्री भी श्री। धमं बहुन भी इनके साथ थी। श्री महात्मा प्रमु श्राश्रितजी अपने बहुत से शिष्यों के नाथ मराराजनी को विदा करने के लिए आए। एक दिन ऋषिकेश में कालीकमली वाले मी गमंगाता में ठहरकर प्रात काल प्रस्थान कर दिया। स्वर्गाश्रम से प॰ देवधरजी दामी और हन्यनलानजी मेठी भी उन्हें विदा करने के लिए आए थे। प्रात ६ वजे चलकर नायकार ४ वजे उत्तरकाशी पहुच गए।

रणवीरजी ने उत्तरकाशी में निवास किया श्रीर तत्पश्चात् दिल्ली चले गए।
८० दिन तक उत्तरकाशी में विराजकर महाराजजी गगोत्री पधारे। वहा ४ मास
निवास करके श्रवटूबर के प्रारम में उत्तरकाशी चले श्राए श्रीर २५ श्रवटूबर को
नवर्गावस पंधार गए।

साधना शिविर—इस बार साधना शिविर १ नवम्वर से १ मार्च तक लगाना प्रारम कर दिया क्योंकि १३ ग्रप्रैल सन् १६६२ में हरिद्वार में कुभ था। साधकों की मुविधा के लिए ऐसा किया गया था जिससे मार्च में साधना समाप्त करके कुभ के मेले में वे-सम्मिलित हो सके।

इस ग्रवसर पर थी महाराजजी ने सन्यास घारण करने का पक्का निञ्चय कर लिया। साधना गिविर के सचालन ग्रीर साधकों को ग्रभ्यास करवाने के लिए ब्रह्मचारी जगन्नाथजी तथा केंप्टन जगन्नाथजी को नियत कर दिया। महाराजजी यह भी देखना चाहते थे कि इनकी ग्रनुपस्थित में साधना गिविर का सचालन किस प्रकार से किया जाता है। 'वहिरग योग' के प्रकागन की व्यवस्था करने के कारण मौन धारण करने की इच्छा होने पर भी महाराजजी मीनव्रत न कर सके। माधना शिविर १ मार्च को समाप्त होगया। इस ग्रवसर पर ६५ नए साधकों ने साधना की। शिविर समाप्ति पर सबको प्रीतिभोज दिया गया। महाराजजी ने इस ग्रवसर पर साधकों को ग्रयने उपदेशामृत का पान करवाया। सबको सम्बोधन करके ग्रादेश दिया —

"यह योग का युग हैं। इसके लिए भारतीय हृदयों में हो नहीं ग्रिपितु विदेशी लोगों में भी जिज्ञासा उत्पन्न हो चुकी है। इसीलिए इस वर्ष ८ विदेशी सायक ग्रभ्यासार्थ ग्राए हैं ग्रीर इसीलिए ग्राप सव भी योग जिज्ञासा लेकर योग-साधनार्थ ग्राए हैं। यदि ग्रपने-ग्रपने स्थान पर भी ग्राप इसी प्रकार ग्रभ्याम करते रहे, मयम तथा अनुशासनपूर्वक रहे तो महती सफलता मिल सकती है। ग्रात्म-विज्ञान ग्रीर ब्रह्म-विज्ञान का साधन मुख्य रूप से योग ही है, ग्रत इसकी सिद्धि के लिए मपूर्ण जीवन की ग्राहुति लगा देनी चाहिए।" इसके पञ्चात् कई साधकों ने श्री महाराजजी के प्रति ग्रपनी कृतजता प्रकट करते हुए ग्रभिनन्दन-पत्र पढें। एक साधिका श्रीमती कलावतीजी ने इस विदार्ड के उपलक्ष्य में निम्नलिखिन यडी सुन्दर किवता पढी

## गुरुदेव से विदाई

हमारी ग्रापसे गुरुवर । विदाई ग्राज होती है। जो थे ग्रभ्यास के साथी, जुदाई ग्राज होती है।। कभी यह हर्प था दिल मे, चलें गुरुदेव चरणो मे। वे दिन ग्रव होगए पूरे, विदाई ग्राज होती है।। वनाया शान्त जीवन को, मिला ग्रानन्द हम सवको। रहे गुरु छत्र छाया मे, विदाई ग्राज होती है।। इसके पश्चात् सव ग्रभ्यासी भोजन करके विदा होगए।

#### सन्यास की तैयारी

पूज्य महाराजजी का कोई सन्यास गुरु नहीं है। इन्हें ग्रव गुरु की ग्राव-रयकता भी नहीं थी, क्योंकि ग्रव इनके लिए ग्रध्ययन करने, सीखने ग्रथवा जानने के लिए कुछ शेष नहीं रहा था। ग्रव कोई ग्रभिलापा, कामना, ऐपणा ग्रथवा जिज्ञासा शेष नहीं रहीं थी। यदि लोकमर्यादा के पालन के लिए कोई गुरु वनाया भी जाए तो खोजने पर भी ऐसा गुरु नहीं प्राप्त हो रहा था जिससे ये सन्यास की दीक्षा ले सकते। इसलिए इन्होंने विद्वत्-सन्यास लेने का विचार किया। विद्वत्-सन्यास में किसी प्रकार के कर्मकाण्ड ग्रथवा विजयाहोमादि की ग्रावश्यकता नहीं होती किन्तु दान ग्रीर यज्ञ की भावना से महाराजश्री ने महारद्ध यज्ञ करने का विचार किया। इसी में विजयाहोम भी ग्रा जाता है। पिडत वालकरामजी ग्रिग्निहोत्री ऋषिकेश में उच्च-कोटि के मीमासक प्रसिद्ध हैं, ग्रत इन्हीं से महाराजश्री ने यज्ञ के विषय में विचार-विमर्श किया। इन्होंने ग्रपने एक शिष्य रामगोपालजी को इस यज्ञ के ग्राचार्य वनकर सपूर्ण करने का ग्रादेश दिया क्योंकि इनकी नेत्र रोग के कारण दृष्टि मन्द होगई थी। महाराजजी ने रामगोपाल ग्राचार्य तथा रामकृष्ण शास्त्री से यज्ञ की सपूर्ण सामग्री लिखवा देने के लिए कहा जिससे उसका प्रवन्ध किया जा सके ग्रीर चैत्र मास के प्रथम नवरात्र से यज्ञ प्रारभ किया जा सके। यज्ञ का ग्रानुमानिक व्यय छ हजार ग्राका गया था, किन्तु इस यज्ञ पर लगभग ग्राठ हजार रुपया व्यय हुग्रा था।

महारुद्र यज्ञ का प्रारभ-प्रथम नवरात्र ता० ५-४-६२ को यज्ञशाला वनकर तैयार होगई। प० रामगोपालजी ग्राचार्य ने यज्ञ कराने के लिए सायकाल ४ वजे से सारी तैयारी प्रारभ कर दी। पूजा-पाठ ग्रारभ कर दिया गया ग्रौर देवता-पूजन भी। मण्डप तैयार होगया, चीक पूरा गया। कुल १६०००० स्राहुतिया देनी थी इसलिए प्रति-दिन २०००० ग्राहुतिया देने का निञ्चय किया गया । ४ घण्टे प्रात तथा ४ घण्टे साय-काल यज्ञ करने का निर्णय किया गया। श्राठ दिन तक यज्ञ होता रहा श्रीर रामनवृमी पर पूर्णाहुनि रखी गई। १०,११ तथा १२ अप्रैल को मध्यान्ह काल के अन्त मे विजया-होम करने का निञ्चय हुग्रा। नित्यप्रति विख्यात विद्वानो के व्याख्यानो की भी योजना वनाई गई थी किन्तु हवा के भ्राधिक्य के कारण शामयाना ठहर नही सका, ग्रत इस कार्य-कम को स्थगित करना पडा। ग्रव प्रतिदिन सायकाल पूज्य महाराज-जी के भाषण होते रहे। १२ स्रोर १३ तारीख को महात्मा प्रभु स्राश्रितजी तथा श्री ग्रानन्दस्वामीजी सरस्वती के भाषण सायकाल को हुए। महाराजजी के हजारो शिष्य इस ग्रवसर पर पधारे। भोजन की व्यवस्था वडी उत्तम थी। यज्ञ वडी धूमधाम से होता रहा। नित्यप्रति सैकडो दर्शक यज्ञ के दर्शन करने तथा उपदेशामृत का पान करने के लिए ग्राते थे। प्रवन्वको को महाराजजी ने कठोर ग्रादेश दें रखा था कि कोई भी व्यक्ति यहा ग्राकर विना भोजन किए न जाने पावे, ग्रत दर्शको को भी भोजन करवाया जाता था। यज्ञ के समय वेदमन्त्रो की ध्वनि से गगनमण्डल गुज उठता था। नित्यप्रति डेढ मन सामग्री ग्रीर १० सेर घी से यज्ञ किया जाता था। पूज्य महाराजजी यजमान के ग्रासन से घृत की ग्राहुतिया तथा पडित लोग सामग्री मे ग्राहुतिया दे रहे थे। जब महाराजजी किसी ग्रन्य कार्य मे लगे होते थे तब इनके शिष्य शकरलालजी शर्मा यज्ञ में इनका प्रतिनिधित्व करते थे। १३ ग्रप्रैल को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इस ग्रवसर पर सैकडो स्त्री-पुरुषो ने पूर्णाहुतिया डाली ग्रीर बडे समारोह के साथ महारुद्र यज्ञ की समाप्ति हुई ग्रीर ब्राह्मणो को दान-दक्षिणा देकर

हर की पोड़ी पर वैशाख संकान्ति १३ अप्रैल १६६२ को संन्यास ग्रहण—— पूज्य महाराजजी ने वसो, कारो ग्रादि का पूर्ण प्रवध कर लिया था। सैकडो नर-नारी इनमें बैठकर महाराजजी के साथ हरिद्वार गए। ये ग्रपने शिष्यो तथा भक्तो के साथ १० वजे हरिद्वार में हर की पौडी पर जा पहुंचे। घण्टाघर के पास पूज्य महाराजजी ने हर की पौडी पर पहुच कर स्नान किया, शिखा-सूत्र को उतार कर गगाजी में प्रवाहित कर दिया ग्रीर भगवे वस्त्र धारण करके ग्रपना नाम श्रीमुख से स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती घोषित किया। सारी जनता ने हर्प ध्विन करते हुए श्री महाराजजी का नाम लेकर उनकी जय-जयकार मनाई। इसके पञ्चात् मिण्टान्न वितरण किया गया। इस कार्य में लगभग एक घण्टा लगा। इसके पञ्चात् स्वगिश्रम पधारे। यहा पर एक वडा भारी भण्डारा किया गया जिसमें लगभग ६०० स्त्री-पुरुप ग्रीर साधु सम्मिलत हुए। सायकाल ४ वजे से ७ वजे तक तीन व्याख्यान हुए। महात्मा प्रभु ग्राश्रितजी, श्री ग्रानन्दस्वामी सरस्वतीजी ग्रीर पूज्य स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वतीजी के वडे सारगित भाषण हुए। पूज्य महाराजजी ने लोगो को ग्रपने सन्यास-ग्रहण का कारण वताया। महाराजजी का प्रवचन दो दिन तक होता रहा।

१४ अप्रैल को महाराजजी ने निम्न उपदेश दिया था। इसका विषय था 'मैंने सन्यास क्यो ग्रहण किया।' श्री महाराजजी ने अपना प्रवचन वेद-मन्त्र ने प्रारभ किया और कहा —

"मै वाल्यकाल से ही ब्रह्मचर्य ब्रत को घारण करके योग माधन करता रहा हू। जब मै मोहनाश्रम मे पढ़ा करता था उम समय मेरे दो साथी भी वहा पढ़ा करते थे। ये दोनो सन्यासी थे। एक का नाम विज्ञानिभक्ष था ग्रीर दूमरे का शिवानन्द भारती था। दोनो ही युवक सन्यासी थे। इन्होंने विद्या-प्राप्ति के पब्चात् सन्यासाश्रम का परित्याग करके गृहस्थाश्रम मे प्रवेश किया था। मैंने ऐमे वीसियो माधु देने हैं जिन्होंने सन्यास ग्रहण करके कुछ ही वर्षों के पब्चात् गृहस्थ ग्राश्रम मे प्रवेश कर लिया था, इसलिए मैंने ब्रह्मचर्याश्रम मे ही रहना उपयुक्त समक्ता, ग्रीर जब ७५ वर्ष की ग्रायु होने लगी तव सन्यासाश्रम मे प्रवेश किया।

"मेरे प्रथम गुरु स्वामी रामानन्दजी गिरि थे। इनकी विचारघारा ग्रायंसमाज की विचारघारा से मिलती-जुलती थी। मेरे दूसरे गुरु स्वामी परमानन्दजी ग्रवधूत थे। ये उदासी सन्त थे। ग्रीर मेरे तीसरे ग्रध्यात्म-गुरु पूज्य ग्रात्मानन्दजी महाराज थे। ये ग्रयोध्या के ग्रास-पास के रहने वाले थे ग्रीर वैष्णव सन्त थे। बहुन वर्षों से ये तिब्वत में ही निवास कर रहे थे। इस प्रकार से मेरे तीन ग्रध्यात्म-गुरु थे। मेरे विद्यागुरु छ थे। जिन गुरुग्रो से मैंने संस्कृताध्ययन किया उनमे प्रमुख प० हरिष्चन्द्रजी थे। इनसे कई वर्ष तक मैंने दर्शन-शास्त्र ग्रीर उपनिपदादि महत्वपूर्ण ग्रथो का ग्रध्ययन किया था।

"मैंने सर्वदा सव घर्मों के सार ग्रौर तत्त्व को ग्रहण करने का प्रयत्न किया है ग्रौर सभी का समानरूपेण सम्मान किया है। किसी घर्म या सम्प्रदाय का तिरस्कार ग्रथवा ग्रपमान मैंने कभी नहीं किया। सभी मतो ग्रौर सम्प्रदायों के व्यक्ति मेरे जिप्य हैं। मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, जैन, ग्रार्यसमाजी, सनातनधर्मी ग्रादि सभी विचारधारात्रों के व्यक्ति मेरे जिष्य हैं, ग्रौर सभी समानरूपेण मुभे ग्रपना पूज्य मानते हैं। कई विदेशी ईसाई भी मेरे पास योग सीखने के लिए ग्राया करते हैं। मैं ग्रपने सभी जिष्यों को, चाहे वे किसी भी मत या सम्प्रदाय के क्यों न हो, समान दृष्टि से देखता हूं ग्रौर सवको समान रूप से योग-जिक्षा प्रदान करना हूं। सभी सम्प्रदायों के लोगों की मुभमे निष्ठा ग्रौर भिवत है। मैं यम ग्रौर नियमों के पालन पर सदेव वडा वल

देता रहा हू। वास्तव मे यम श्रीर नियमो को ही सार्वभीम धर्म कहा जा सकता है। इन्हें प्राय सभी सम्प्रदायों के लोग मानते है। इसीलिए मैंने किसी एक सम्प्रदाय के गुरु से सन्यास न लेकर स्वय ही विद्वत्-सन्यास ग्रहण किया है।

"भैने वर्ण ग्रीर ग्राश्रम की मर्यादाग्रो को सम्मुख रखते हुए सन्यास ग्रहण किया है। यद्यपि ग्राश्रम के मर्यादा-कम से मुझे ब्रह्मचर्य से गृहस्थ में प्रवेश करना चाहिए था िक्न मेरा विश्वास है कि यदि मैं गृहरथाश्रम में प्रवेश करता तो में इतना कार्य कभी नहीं कर सकता था। ४० वर्ष तक योग शिक्षा देता रहा ग्रीर दो ग्रथ 'ग्रात्म-विज्ञान' ग्रार 'वहिर ज्ञ योग' निधे ग्रीर ग्रव 'ब्रह्म-विज्ञान' ग्रथ लिखने का विचार कर रहा हू। यह सब कार्य नहीं हो सकते थे। जिस तत्त्व-ज्ञान ग्रथीत ग्रात्म-विज्ञान को ग्रीर ग्रह्म-विज्ञान को में प्राप्त कर सका हू उससे भी उस ग्रवस्था में विचत ही रहना पडना ग्रीर ग्रनेक जन्म-जन्मान्तर से ग्रात्म-विज्ञान, प्रकृति-विज्ञान तथा ब्रह्म-विज्ञान को जो ग्रीमिनापा थी वह भी पूरी न हो पाती। लोगो को यह जानकर ग्राब्चयं होता है कि में ब्रह्मचर्य काल में भी, सन्यासी वनने से पूर्व भी, कियारूप से सन्यासियों के समान ग्राचरण करना था। लगभग ५० साल से घरवार छोडकर पूर्णरूप से ब्रह्मचर्य व्रत को घारण करने नगरों से दूर जगलों ग्रीर पर्वतों में रहकर योग के उस कठिनतम मार्ग पर चलना रहा हू जिस पर बहुत बड़े सन्त ही चल सकते हे। बहुत से सन्यासी ब्रह्मचर्याश्रम को छोटा मानकर मेरे ज्ञान से लाभ उठाने में सकोच करते थे, श्रव गन्यानी होने के नाते से वे भी लाभ उठा सकेंगे।"

इसके पञ्चात् श्री ग्रानन्दस्वामीजी ने भाषण दिया। इन्होने कहा—"मै ग्रान्म-विज्ञान में श्री महाराजजी को ग्रपना गुरु मानता हू। इन्होने ही मुक्ते योग द्वारा ग्रात्म-ज्ञान प्रदान किया है। ग्रात्म के लिहाज से में इनसे वडा हू ग्रीर १२ साल पूर्व गंन्यानी वन चुका हू। हम सबको इन्हें ब्रह्मिष स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वतीजी महाराज कहकर पुकारना चाहिए। ग्रव ग्राप बद्रीनाथ जाएगे ग्रीर ग्रज्ञात रूप से मौन यन धारण करेंगे। योग निकेतन ट्रस्ट बनाकर ग्राप सब बन्धनो से मुक्त होगए है।"

#### पूज्य महाराजजी का शिष्यो श्रीर सत्सिगयों को उपदेश

कल मेरा दिज धमं समाप्त होगया। कल से ही ब्रह्मचारी के कर्त्व्यों की भी गमाप्ति हो गर्छ। मेरे अब नव कर्त्व्य समाप्त होगए। अब में सन्यास धमं का पालन करणा। यज्ञ, दान तथा अध्यापनादि कार्यों के प्रति मेरे उत्तरदायित्व सब समाप्त होगए। अब गेप जीवन आत्म-ज्ञानियों और ब्रह्म-ज्ञानियों के समान बनाने का यत्न करूगा और वैगा ही आचरण भी करणा। में ५० वर्ष से अपने भक्तों और किष्यों को उपदेश दे रहा है, परन्तु गद है कि कोई विशेष परिवर्तन इनमें मुक्ते दृष्टिगोचर नहीं हो रहा। कई भक्त आर शिष्य प्राय कहा करने हैं, 'महाराजजी, अब आप नीचे के प्रदेशों में भी भ्रमण करके अपने शिक्षा-प्रद उपदेश देने की कृषा करे। अब आप अपना हिमालय से नीचे के प्रदेशों में न जाने का प्रण छोड़ दीजिए।' उसका उत्तर में सदा यही देता हूं कि जब इतने साल तक उपदेशों का अवण करके आपका कल्याण नहीं हुआ तो अब भी क्या आशा है। अब बहुत उपदेश मुनने की जरूरत नहीं है, अब तो मुने हुए उपदेशों पर आचरण करने की जरूरत है। आचरण करने वालों के लिए एक ही उपदेश पर्याप्त होता है, और यदि अमल न

करना हो तो फिर हजारो उपदेश निरर्थक है। इन सव वातो से ग्रव मेरा चित्त उपराम होगया है। भगवान् तुम्हारा कल्याण न कर सके, वडे-वडे ऋषि ग्रीर मुनि तुम्हारा कल्याण न कर सके तो इस योगेश्वरानन्द से भी क्या हो सकेगा । साधक सुनते बहुत है किन्तु करते बहुत कम है। अब तक तो हमारे सारे उपदेश ग्रामोफोन के रिकार्ड ही साबित हुए है। कोई विरला ही वर्णाश्रम धर्म तथा मर्यादा का पालन करने मे समर्थ होता है। जिस घर मे जन्म लिया है लोग प्राय उसी मे मरना पसन्द करते है। वृद्धा-वस्था मे भी घर मे पड़े-पड़े पुत्रो तथा पुत्रवघुत्रो से ग्रपमानित होते रहते है किन्तु वानप्रस्थ ग्रथवा सन्यास ग्रहण नहीं करते। घर मे मरना ग्रायों के लिए एक पाप कर्म माना गया है। यदि श्राश्रम-मर्यादा का यथार्थ रूप मे पालन किया जाए तो वानप्रस्थियो की वन मे ग्रीर सन्यासियो की देश-देशान्तरो मे मृत्यु होना परम-धर्म माना गया है। परिवारो मे रहकर राग और मोह का ग्रभाव नहीं हो सकता। राग, मोह तथा अविद्या का स्रभाव वनस्य स्रथवा सन्यस्त महापुरुप प्राप्त कर सकते है। श्रत हम इस हिमालय मे रहकर ही योग और समाधि द्वारा जनता का कल्याण कर सकते है। जिनको लाभ उठाना होगा, कल्याण की कामना होगी, त्रात्म-ज्ञान की सच्ची जिज्ञासा होगी, वे वही या जाएगे। देश-देशान्तरो मे घूम-फिर कर उपदेश देने की अपेक्षा एक स्थान मे रहकर कियात्मक योगसाधन द्वारा आतम-साक्षात्कार करवाना त्रधिक श्रेष्ठ कार्य है । साधक का साधना-काल मे चरित्र का निर्माण ग्रत्यन्त ग्रच्छे ढग से हो सकता है। तप, त्याग, ज्ञान तथा वैराग्य की भट्ठी मे तप कर वह स्वर्ण के समान निर्मल होकर चमत्कृत हो जाता है। लोक-व्यवहार करते हुए नप, त्याग, ज्ञान ग्रौर वैराग्य की भावना पनपने नही पाती, उन्नति की ग्रोर विशेष रूप से प्रगति नहीं होती। ग्रनेक विघ्न-वाघाए ग्राकर उपस्थित होती रहती हैं। जिस प्रकार एक दुकानदार या कारखानेदार के लिए उसका व्यवहार विक्षेप का हेतु होता है, उसी प्रकार ग्रभ्यास करवाना, ग्राश्रमो का सचालन करना तथा उपदेशादि देना भी वंघन का हेतु है, अत अव मुभ्ते भी इन सब प्रकार के वधनों से मुक्त होना होगा। जो मैं आपसे करवाना चाहता हू उसे मैं स्वय भी तो करू। मुमुक्षु को सर्व प्रकार के व्यवहार ग्रीर सपर्क का परित्यागं करना चाहिए, सर्व प्रकार की ग्रासिवत का ग्रत्यन्ताभाव करना चाहिए। मेरे जीवन का तीसरा भाग समाप्त हो रहा है ग्रौर चतुर्थ भाग प्रारभ हो रहा है, अत मुभे अब हिमालय मे रह कर जीवन-मुक्ति के सुख का उपभोग करना चाहिए। ग्रन्तर्यामी भगवान् श्रापको सुमित प्रदान करे जिससे श्राप दृढसकल्प श्रीर किटबद्ध होकर श्रेय-पथ पर चलकर परमानन्द का उपभोग करे!

श्री महाराजजी के निम्नलिखित शिष्य कई वर्षों से नियमपूर्वक शिविर पर श्रभ्यासार्थं श्रा रहे है —

- १. रायसाहब विश्वेश्वरनाथदत्त, भ्राचार्य योगनिकेतन
- २ कैप्टन जगन्नाथ, ग्राचार्य योग-निकेतन
- ३ रामिकशोर, ग्राचार्य योगनिकेतन
- ४ व्र० श्रीकण्ठ, हठयोग<sub>ु</sub>श्राचार्य योगनिकेतन
- ५ बाबू प्यारेलाल मित्तल, लखीमपुर
- ६ वासीलाल मुख्त्यार, सम्वल
- ७ मेठ हरवसलाल मरवाह, वम्बई

5	नकरलाल शर्मा, दिल्ली	२६	वैद्य मड्गूलाल, सिहारा					
3	वावूलाल दीक्षित, प्रोफेसर,	३०	हरिसिंह, सिहारा					
	ग्रतरौली	₹ ?	वानप्रस्थी वर्मदेव					
१०	मुरारीलाल थोत्रिय गास्त्री	35	राम उदासीन					
	ग्रतरीली	३३	देवीदयाल दीवान, गीताभवन					
११	सत्यभूपण वैद्य जास्त्री	38	ग्रोम्प्रकाग, रोहतक					
१२	ग्राचार्य राजेन्द्रनाथ गास्त्री, दिल्ली	३५	वानप्रस्थी ग्रमरदेव					
१३	नारायणदास कपूर, दिल्ली	३६	माईकल स्मिथ, न्यूजीलैण्ड					
१४	ग्रोमप्रकाश, मिलाप, दिल्ली	३७	स्वामी शङ्करानन्द					
१५	ञान्तिस्वरूप एम० ए०, मेरठ	३५	राजपालसिंह					
9 દ	रायसाहव फतेचन्द	38						
१७	महावीरप्रसाद, दिल्ली	४०						
१८	प्रीतमचन्द विज, दिल्ली	४१	सत्यकाम वेदवागीश, चित्तौड					
38	त्रह्मचारी सातव, योगनिकेतन	४२	• 1					
२०	किंगोरीलाल, स्वर्गाश्रम	४३						
२१	विलायतीराम, धूरी मण्डी	४४						
२२	ला० सत्यप्रकाग, लुवियाना	४५						
<b>२</b> ३	भत्वालाल, देहरादून	४६						
26	किञनलाल, दिल्ली	४७						
२५	गगासहाय, मेरठ	४५	स्वामी विज्ञानानन्द सरस्वती					
<b>र्</b> ट	2 2 2 2	38						
२्७	2 -2 0	५०						
२्	0	ሂ ર	प्रज प्रेमप्रकाग					
श्रभ्यासार्थ ग्राने वाली मुख्य-मुख्य देविया —								

ग्रभ्यासाथ ग्रान वाला मुख्य-मुर्य पात्रमा							
१ धर्मवतीदेवी, उत्तरकाणी	१० ब्रह्मशक्तिदेवी, गुरुकुल नरेला						
२ जीला दत्ता, देहरादून	दिल्ली						
३ रामप्यारी, लुधियाना	११ शान्तिदेवी, गुरुकुल नरेला						
४ कलावती, दिल्ली	१२ शान्तादेवी, मिलाप, दिल्ली						
<ul><li>भ् कीशल्या मित्तल</li></ul>	१३ रत्नदेई, ग्रागरा						
६ दुर्गादेवी, स्वर्गाश्रम	१४ लीलावती, दिल्ली						
६ दुर्गादवा, स्वराप्तरा	१५ डाक्टर विमलादेवी						
७ ईञ्चरादेवी, वरेली	१६ डाक्टर विद्यावती, जालन्धर						
<ul> <li>वीरादेवी मरवाह, वम्बर्ड</li> </ul>	१६ डाक्टर विधायता, जारानर						
६ गान्ति गोयल, हापुड	१७ प्रेमवती वलीराम तनेजा, धनवाद						

१८	लज्जावती महता, हरिद्वार	२३	श्रीमनी धर्मचन्द, दिल्ली
38	ग्रोकारेश्वरी, स्वर्गाश्रम	२४	गकुन्तला, गुरुदासपुर
२०	कमला ग्रास्वानी, सूरत	२४	यगवती, पठानकोट
२१	मिस साक इजराईल	२६	उगा पण्डित, कश्मीर
२२	रामप्यारी, व्यास ग्राश्रम	२७	डाक्टर रामप्यारी गास्त्री

श्री १०८ ब्रह्मिष स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्यतीजी महाराज का इस समय का चित्र सामने है।

> 'हिमालय का योगी' ग्रथ में 'योग प्रशिक्षण' नामक चतुर्थ ग्रध्याय समाप्न ।



ब्रह्मनिष्ठ योगीप्रवर श्री १०८ ब्रह्मर्षि म्यामी योगेण्वरानन्द सरम्वतीजी महाराज (सन्यास लेने के पण्चात)



# उत्तराई

#### पचम ग्रध्याय

#### ब्रह्द-विद्या का प्रचार

श्री पूज्य प्रहापि न्यामी योगेश्यरानन्द सरस्वतीजी महाराज ने सन्यास धारण करने ये परवान् नगभग १५-२० दिन स्वर्गाक्षम मे निवास किया । स्वामीजी महाराज के कई अवनो की यह उन्हा यी कि ये श्रव हिमालय मे नीचे उतरकर सर्वत्र भ्रमण फरें भीर अपने उपरेशामृत से जनता का कत्याण करे, किन्तु पूज्य महाराजजी को निवाल एरान और प्रशाल उत्तरायण्य में निवास करना श्रीधक प्रिय था। प्रवृत्ति-परक नगरों के लाना इन्हें पनन्द नहीं या। श्रपने भन्न पडित शकरलालजी शर्मा घीर नेवक गणनाय को साथ लेकर गई के प्रथम सप्ताह में मोटर द्वारा बद्रीनाथ के तिए रवाना होगए । ऋषिकेश से चलकर रुद्रप्रयाग पहुचे । उस पटाव पर यात्रियो की करून भीट भी। महा ने एक मार्ग केदारनाथ को जाना था ग्रीर दूसरा बद्रीनाथ मा, प्रत दोनो तीथाँ पर जाने वाले यात्री यही एकत्रित होते थे। श्रत्यधिक भीड के रास्य यहा नियास के लिए स्थान मिलना भी बटा कठिन या । जब पूज्य महाराजजी वाहार में उपर-उपर दिशने के तिए स्थान टट रहे थे तब उनके पास एक ब्राह्मण माया मोर नियंदन िया कि "प्रापक लिए रहने की व्यवस्था हो जाएगी और श्रापको किमी प्रभार का उपट नहीं होगा। जब नक में खापके लिए कमरा साफ करता हू नुच ना ग्राप जातर ग्रपना नामान उठवा नाये।" रात्रि को वहा जाकर विश्राम िया फिल्नु गटमतो के पारण निज्ञा न आ सकी। दूसरे दिन सायकाल जोशीमठ पर्ने फ्रोर यहा पर दिरला-भवन में ठहरे। यहा के प्रवन्यक को सेठ जुगलिक शोर विरास ने इनो होशीमठ ग्रीर बदीनाथ में निवास की व्यवस्था करने के लिए लिख दिया था। पूर्व स्वामीजी महाराज २५ मई तक जोजीयठ ठहरे ग्रीर इसके पश्चात् यदीनाथ के लिए प्रस्यान किया।

## 'ग्रह्म-विज्ञान' ग्रन्थ की रचना श्रौर काष्ठ मीन

यद्रीनाय पहुनकर प्रनगनन्दा के किनारे 'विरला हाऊस' मे नियास किया।
पूज्य महाराजजी ने जून गाय की पहुली तारीक ने काष्ठ मीन वृत धारण कर
लिया। गर्माजी ने भी प्राप्तार मीन का व्रत लिया। महाराजजी केवल पूणिमा
प्रीर प्रमायस्या को एक पण्टे के लिए प्राकार मीन रसते थे। घेप दिनो मे काष्ठ
मीन यरावर जलना रहा। यहा रहकर 'प्रह्म-विज्ञान' यन्य की रचना करने का महाराजजी का दृष्ट निय्चय था। कुछ कागज तो जोशीमठ से ही प्रपने साथ ले श्राए थे
प्रीर श्रेप बद्रीनान मे सरीद लिया गया। जम्बि ने धाकार मीन के साथ ५ लाख
गाय श्री गन्त के जाप गर पुरस्वरण करना प्रारम्भ कर दिया।

काष्ठ मौन काल के लिए पूज्य स्वामीजी महाराज ने ग्रपने लिए निम्नलिखित समय-विभाग वना लिया था —

प्रात ३ वजे—जागरण ४ से ७ वजे तक—ध्यान ८ से १२ वजे तक—ग्रथ लेखन

यदि व्रह्म-विज्ञान का कोई विषय कठिन, गहन ग्रथवा सूक्ष्म होता था तो उसे सम्प्रज्ञात समाधि द्वारा समाधानपूर्वक निर्णय कर लिया करते थे।

सन्यास धारण करने से पूर्व पूज्य गुरुदेवजी का विचार ब्रह्म-विज्ञान को किसी दूसरे ही रूप मे लिखने का था। उस समस्त विज्ञान को सक्षिप्त रूप से लिख भी लिया था, किन्तु उसे किसी ने चुरा लिया ग्रीर उसने यह प्रसिद्धि कर दी कि उसने श्रह्म-विज्ञान ग्रथ की रचना की है ग्रीर वह उसे शीघ्र ही प्रकाशित करवाएगा। इसलिए पूज्य महाराजजी ने उस कम को छोडकर दूसरे ही रूप मे इस विज्ञान को लिखना प्रारभ कर दिया। यह ब्रह्म-विज्ञान इनकी स्वानुभूनि थी, इसलिए ये अपनी इच्छानुरूप जिस ढग तथा कम से चाहते, लिखने मे समर्थं थे। ग्रत ३३ पदार्थों मे प्रत्येक पदार्थ की पाच ग्रवस्थात्रों को ग्रौर उनके १५७ भेदों में ब्रह्म के स्वरुप ग्रीर व्याप्य-व्यापक भाव सम्बन्ध को दर्शाते हुए ब्रह्म साक्षात्कार का वर्णन महाराजजी ने किया है। इनमें से ग्रन्तिम कुछ पदार्थों के केवल ३ या ४ ही भेद वनते हैं, उसलिए कुल मिलाकर १५७ भेद ही वनते है। ब्रह्म-विज्ञान मे प्रकृति की परिणत होनी हुई ३२ ग्रवस्थाग्रो का विस्तारेपूर्वक उल्लेख किया गया है। इस प्रकार का विज्ञान-क्रम, जहा तक हमारे पढने ग्रीर सुनने मे ग्राया है, वृहद् प्रकृति का किसी भी देश के साहित्य मे किसी महापुरुप ने नहीं किया है। इस युग में यह श्रेय भारत के महान योगी पूज्य स्वामी योगेरवरानन्द सरस्वतीजी महाराज को ही प्राप्त हुन्ना है। ब्रह्म की निर्गुण सिद्धि ब्रह्म-विज्ञान की वडी विशेषता है। ब्राधुनिक विद्वानों मे इससे वडी हलचल पैदा होगई है। प्राचीन तथा अर्वाचीन विद्वानो ने निर्गुण ब्रह्म को नगुण मान कर उसमे अनेक गुणो का वर्णन किया है। इनको महाराजजी ने ब्रह्म मे आरोपित माना है। ये सब गुण वास्तव मे प्रकृति मे ब्रह्म के सन्नियान से उत्पन्न होते हैं स्रीर उनका ग्रारोप ब्रह्म मे किया गया है। श्री महाराजजी ने भी ग्रपने ब्रह्म-विज्ञान ग्रंथ में कही-कही गुणों का कथन किया है परन्तु वे श्रारोपित गुण ही माने जाने चाहिए, व्रह्म में उत्पन्न होने वाले ग्रथवा उसके नित्य गुण नही।

हम श्री महाराजजी की दिनचर्या का वर्णन कर रहे थे। ये लगभग १२ वर्ज कुछ थोडा भोजन करते थे। सेवक चुपचाप उनके पास ग्राकर रख जाता था। काष्ठ मीन वर लेने से पूर्व ही पूज्य योगीराजजी ने ग्रपने भोजनादि के विषय मे श्री शर्मा जी तथा सेवक गणनाथ को समक्ता दिया था। इसलिए सव व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रही। ये प्रात द वजे ग्रीर रात्रि के ६ वजे दूध लेते थे। दो वजे तक विश्राम करके फिर ग्रपनी लेखनी उठाकर लिखने बैठ जाया करते थे ग्रीर सायकाल ६ वजे तक लिखते रहते थे। इन ग्राठ घटो मे केवल छ घटे तक ही लिखते होगे क्योंकि जब कोई कठिन या गहन विषय ग्रा जाता था तो उसे समाधिस्थ होकर साक्षात् करते

थे श्रीर निश्चयात्मक ज्ञान हो जाने पर उसे लिखते थे जिससे किसी प्रकार का कोई सभय न रहने पाए।

सायकाल ६-७ वजे तक भ्रमणार्थ जाते थे। जब बाहिर जाते थे तो मुख को कपडे से ढककर नीचे दृष्टि रखते थे जिसमे किसी को देख न सकें। काष्ठ मीन केवल वाणी का ही मौन न या श्रिपितु मन का भी था। मार्ग मे जाते समय यदि किसी पर दृष्टि पड गई तो मन कही उसके विषय में सकल्प-विकल्प न करने लग जाए इसीलिए मूह ढापकर चलने की विधि पूज्य स्वामीजी महाराज ने निकाली थी। ग्रलखनन्दा के पार माणा गाव की ग्रोर ग्रीर कचनगगा की ग्रोर लगभग दो-दो मील के लम्बे मैदान है। इन्हीं में भ्रमण करके लीट ग्राते थे। ७ वर्ज से ६ वर्ज तक ग्रभ्यास मे बैठकर बहा-विज्ञान के पदार्थों के विषय में ध्यान, समाधि द्वारा विशेष ग्रनुभव प्राप्त किया करते थे। उसके पञ्चात् दूध पीकर १० वजे सो जाया करते थे। इन दिनो प्राय न्नह्म-विज्ञान के विषयों का मनन, निदिध्यासन ग्रीर साक्षात्कार करने में ही सारा समय व्यनीत होता था। शकरनाल शर्माजी को दलिया बहुत ग्रच्छा लगता था, ग्रत वत के ६-७ दिन बाद से ही उन्होंने राति को दिलया खाना प्रारम कर दिया और पूज्य महाराजजी को भी देना प्रारंभ कर दिया। दलिए में दूव ग्राधा सेर से भी कम टानते थे। तीन मनुष्यो के निए दलिए मे ग्राधा सेर दूव कुछ कम सा ही था। सेवक गणनाथ युवा था ग्रीर गर्माजी भी श्री महाराजजी से ग्रायु मे २० वर्ष छोटे थे। श्राकार-प्रकार श्रच्छा था, गरीर पुष्ट था ग्रीर गनित ग्रीर वल में भी कुछ कम न थे। नित्यप्रति नृता मेवा भी अपनी इच्छानुरूप खाते थे ग्रीर भ्रमण भी खूब करते थे, किन्तु यह दिलया महाराजजी के अनुकूल सिद्ध नही हुआ। एक सप्ताह में ही इनके दोनो पुटनो में दर्द प्रारभ होगया। चलने-फिरने तथा उठने-बैठने में भी इन्हें कटट मालूम होने लगा। हिमालय प्रदेश मे जहा चारो श्रोर हिमाच्छादित पर्वतमालाए हो वहा पर दूध मे मात्रा से अधिक पानी मिलाकर बनाया हुआ दलिया अनुकूल नहीं श्रा सकता था गयोकि उमकी तामीर ठण्डी हो जाती है। शकरलाल शर्माजी श्रीर सेवक दोनों को ही देश, काल ग्रीर प्रकृति का ज्ञान नहीं था। उनका उद्देश्य स्वाद लेना श्रीर उदरपूर्ति करना गात ही था। स्वामीजी महाराज के घटनो मे दर्द होते १६ दिन होगए। श्रीपध गेवन भी कर रहे थे, किन्तु श्राराम नही श्राया। एक दिन भ्रमण में जीटने के पटचात् स्वय ही रसोई का ताला खोला। इसमे केवल एक पाव ही दूध रमा था। उन्होंने उमे स्वयं ग्राम जलाकर गरम किया ग्रीर इसके साथ श्रीषध-सेवन की। मुबह ग्रीर रात्रि के लिए दूध प्रात काल ही ले लिया जाता था क्यों कि रात्रि को दूथ यांना दूध नही देना था। महाराजजी के दूध पीने से गर्माजी ग्रीर सेवक दोनो मंमभ गए कि महोराजजी को दलिया पसन्द नहीं है, श्रत इन्होंने पूज्य योगीराजजी को दलिया देना वन्द कर दिया श्रीर दूध देना प्रारंभ कर दिया। स्वामीजी महाराज ने श्रायुर्वेद का भी श्रध्ययन किया हुग्रा था, ग्रत देश ग्रीर काल के श्रनुसार जो भोजन हिनकर होना था उमे ही वे खाते थे। यथासभव श्रपना उपचार भी स्वयमेव ही कर लेते थे। जहा पचारते ग्रीपिंघयों को ग्रपने साथ ले जाते थे ग्रीर ग्रावश्यकतानुसार उन्तेमान किया करते थे। घुटनो की पीडा से महाराजजी लगभग डेंढ मास तक पीटिन रहे किन्तु नियमपूर्वक अपना सब कार्य यथाविधि करते रहे। 'विरला हाऊस'

नितान्त एकान्त ग्रीर शान्त था। यात्री इसमे वहुत कम ग्राते थे। पूज्य गुरुदेवजी ने सम्पूर्ण ब्रह्म-विज्ञान तीन मास मे लिखा ग्रौर एक मास इसका पुनरावलोकन तथा सशोधन मे लगाया। इन्होने बडे नियम ग्रौर सयम से ४ मास का व्रत समाप्त किया। व्रत की समाप्ति दो ग्रक्तूवर को पूर्णिमा के दिन की गई थी। व्रत समाप्ति पर वद्रीनाथ के सब सन्तो तथा साधुग्रो को भोजन करवाया ग्रौर सबको पाच-पाच रुपये दक्षिणा मे दिए। इसके ग्रतिरिक्त १०० रु० कालीकमली वाले क्षेत्र को दिये, ५० रु० ब्रद्रीनाथ के मदिर मे चढाए और २५ रु० पजावी क्षेत्र को प्रदान किए। इसके पञ्चात् महाराजजी ४-५ दिन वद्रीनाथ मे ठहरे और इतस्तत घूम-फिर कर ऐतिहाहिक दृष्टि से जो स्थान प्रसिद्ध थे उन्हें देखते रहे। इनके पुराने भक्त और सेवक यहा भी इनके दर्शनार्थ आते रहे। लगभग आठ अक्तूवर को श्री वद्रीनाथ से प्रस्थान किया और जोशीमठ मे पथार कर विरला-भवन में विराजे। यहा २-३ दिन विराजकर केदारनाथ की यात्रा करने का विचार कर लिया, किन्तु यहा पर २-३ परिचित व्यक्तियो से, जो ग्रभी-ग्रभी केदारनाथ की यात्रा करके ग्राएँ थे, पता चला कि वहा पर ग्रत्यधिक हिम-पात हुआ है, सारे पर्वत हिम से ग्राच्छादित हो रहे है, जीत ग्रत्यधिक वढ़ गया है, ग्रत ग्राप वहा ने पधारे, इसलिए वहा की यात्रा का विचार स्थागित कर दिया गया और वस द्वारा उत्तरकाशी के लिए प्रस्थान कर दिया। उत्तरकाशी के योगनिकेतन मे एक सप्ताह निवास करने के पश्चात् स्वर्गाश्रम के योगनिकतन मे चले गए।

# श्री महाराज के श्रद्भुत मनोबल के प्रभाव से श्राकामको का पीछे हटना

इन दिनो भारत और चीन का लद्दाख में वड़ा संघर्ष चल रहा था। भारत भ्रौर चीन की सीमा पर इधर-उधर दोनो पक्षो के सैनिक युद्ध करते थे किन्तु युद्ध करने का ग्रादेश नहीं दिया गया था। २० ग्रक्तूवर को चीन ने भारत के साथ युद्ध की घोषणा की। तिब्बत से स्पर्श करती हुई भारत की १५०० मील लम्बी सीमा पर सब श्रोर से युद्ध के बादल मण्डलाने लगें। उधर श्रासाम की सीमा पर मेकमोहन लाईन नेफा में भी युद्ध प्रारम्भ होगया। चीन ग्रौर भारत का मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध था। यह मित्रता अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही थी। भारत से ही वौद्ध धर्म चीन में फैला था। चीन और भारत का धार्मिक सम्बन्ध बहुत पुराना है। ऐसा भी एक समय था जव चीन भारत को एक तीर्थ-स्थान समभता था ग्रीर इत्सिंग, फाह्यान, हयूनचाग ग्रादि ग्रनेक चीनी विद्वान् वौद्ध धर्म के साहित्य का ग्रध्ययन करने ग्रीर गौतम वुद्ध का जिन स्थानो से विशेष सम्पर्क था उनके दर्शन करने को भारत मे स्राते थे। जु कई चीनी विद्वानो ने यहा ग्राकर देववाणी सस्कृत का ग्रध्ययन किया ग्रौर सस्कृत के बौद्ध ग्रन्थों की प्रतिलिपिया बनाकर लेगए। ग्रभी कल की बात है, हम लोग 'हिन्दी चीनी भाई-भाई' के नारे लगाते थे। चीन ग्रीर भारत का धार्मिक ग्रीर सास्कृतिक घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। इस वात की कभी कल्पना भी नहीं हो सकती थी कि इन दोनो देशों में कभी युद्ध छिड जाएगा। चीन प्रकट रूप में तो मैत्री दर्शाता रहा किन्तु छिपे-छिपे वह वर्षों से भारत के साथ युद्ध करने की तैयारी कर रहा था, किन्तु भारत को कभी ऐसी ग्रामका नहीं हुई। उधर तिन्वत में तीन वर्ष से गडवड चल रही थी। चीन तिव्वत के दलाई लामा को कैंद करके सर्वप्रकारेण तिव्वत पर ग्रपना ग्रधिकार जमाना चाहता था। ग्रत दलाई लामा वन्दी होने के भय से ग्रथवा मृत्यु के भय से

श्रपनी राजधानी लासा को छोडकर चुपके से श्रासाम में श्रागया। इसलिए भी चीन भारत के प्रति क्षुट्ध होगया था। कश्मीर तथा श्रासाम की सीमाश्रो पर चीन श्रीर भारत में भयकर युद्ध चल रहा था। चीन वरावर श्रागे वढता जा रहा था। भारन को सर्वत्र निराशा दृष्टिगोचर हो रही थी।

चीन को आगे वहता हुआ देखकर पूज्य स्वामीजी महाराज को वडी चिन्ता हुई। उन्होंने देनिक 'मिलाप' के प्रधान सम्पादक श्री रणवीरजी के द्वारा ४०० रुपये नहायनार्थ भारत के प्रधानमन्त्री पिडत जवाहरलाल नेहम्जी के पास भेजे और रणवीरजी को चीन के राष्ट्रपित माओत्मेतोग, प्रधानमन्त्री चाऊएन-लाई तथा रूस के प्रधानमन्त्री श्री म्यु इचेव के फोटो बीझ भेजने के लिए लिखा क्योंकि इन फोटो के आधार पर ये अपने योगवल मे इन लोगो के मनो मे परिवर्तन लाना चाहते थे। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि उस कार्य मे इन्हें पूर्ण सफलता लाभ होगी।

शी रणवीरजी ने दिन्ली से तीनो के फोटो शीझ ही भेज दिए और प्रधान-मन्त्री प० जवाहरलालजी को ५०० रुपये भेट करते हुए कहा, "यह ५०० रुपये मेरे गुरदेव पूज्य रवामी योगेटवरानन्दजी महाराज ने युद्ध में लड़ने वाले सैनिको की सहायनार्थ भेज हं और मुझे उस पत्र में लिखा है कि में उनकी ग्रोर से ग्रापको विश्वास जिलाऊ कि चवराने की कोई वान नहीं है, विजय ग्रन्त में भारत की ही होगी। पूज्य महाराजजी ग्रपने मनोवल से अनुग्रों के भावों को वदलकर पीछे हटा देंगे। भने कई वार उनके योगवल को देया है।" उनकी वातों को मुनकर पिछत्वजी बड़े ग्राटक्यांन्वित हुए ग्रीर कहा, "क्या यह सम्भव हो सकता है? क्या ग्राज भी ऐसे योगी भारतवर्ष में विद्यमान है।" रणवीरजी ने कहा, "मुक्ते तो पूज्य योगीराजजी की वातों पर पूर्ण विद्यास है। ये जो चाहे कर सकते हैं। ग्रसाध्य रोगों से पीडित तथा मृत्यु गय्या पर पटे हुए रोगियों को इन्होंने ग्रपने योगवल से स्वस्थ किया है। इनमें से कई तो यहा दिल्ली में ही निवास कर रहे हैं। ग्राप कुछ दिनों में ही प्रत्यक्ष देखेंगे कि चीन स्वय पीछे हट जाएगा।"

उपरोग्न तीनो फोटो के ग्राधार पर तीनो व्यक्तियो पर ग्रपने मनोवल का प्रयोग करने का पूज्य गुन्देव ने बटा प्रयत्न किया। इन्होने ग्रन्न खाना छोड दिया। कियन फल ग्रांर दूध पर ही ग्रपना निर्वाह करने लग गए। साथ ही मीन व्रत भी धारण कर निया। साधना शिविर में ग्रभ्यासार्थ जो सावक ग्राए हुए थे उन्हें ग्रभ्यास करवाना भी बन्द कर दिया। यह कार्य केंप्टन जगननाथ ग्रीर दत्तजी को सीप दिया। ग्रपने नवन ग्रीर मेंवक श्री शकरनालजी शर्मा को ग्रपना पूजा-पाठ, ध्यानाभ्यास छोटकर उन नकट काल में भारत की रवत्रत्रता की रक्षा के लिए जो कुछ सभव हो उसे करने का ग्रादेश दिया ग्रीर कहा कि यह ऐसा समय है जब प्रत्येक भारतीय को तन, मन ग्रीर धन में देश की नेवा में जुट जाना चाहिए। भारत के स्वातत्र्य-सग्राम में शर्माजी उनमें पूर्व भी कार्य कर चुके थे ग्रीर कई बार जेल में भी जा चुके थे। भारत के बटे ऊचे दर्ज के कान्तिकारियों के साथ इन्होंने काम किया था। पूज्य गुरुदेवजी में ग्रादेश पाकर प्रथम तो शर्माजी दिल्ली गए किन्तु वहा पर किसी ठोस कार्य की योजना ये नहीं बना सके। ग्रत पजाब में चले गए ग्रीर पजाब के मुख्यमंत्री सरदार

प्रतापिसह कैरो से, जो इनके पुराने मित्रों में से थे, कहा, "मुक्ते मेरे गुरुदेवजी ने ग्रापके पास, भारत के वर्तमान सकट के निवारणार्थ ग्रापने जो योजना वनाई हे उसमें मेरे योग्य कोई काम हो तो उसे करने के लिए भेजा है। ग्राप मुक्ते जो सेवा प्रदान करेंगे उसे में अवैतनिक रूप से परिश्रमपूर्वक करूगा। मुल्यमत्री ने गर्माजी को होम गार्ड का डी॰ ग्राई॰ जी॰ वना दिया ग्रीर इन्होंने रात-दिन महान परिश्रम करके इसका सगठन किया ग्रीर हजारो नवयुवको को सैनिक प्रशिक्षण दिलवाया।

श्री महाराजजी ने इन तीनो चित्रो को सामने रखकर माग्रोत्सेतोग, चाऊ-एनलाई ग्रौर छा इचेव तीनो को लक्ष्य वनाकर इनके मनो को परिवर्तन करने का ग्रभ्यास किया। जब पूज्य योगीराजजी को किसी का दमन करना होता है ग्रथवा स्थास किया। जब पूज्य यागाराजजा का किसा का दमन करना होता है स्थित किसी के मन को बदलना या भ्रान्तियुक्त करना होता है तब इन्हें ग्रावेग में या कोव में ग्राना पड़ता है ग्रीर दमन करने के लिए प्रताइना भी करनी पड़नी है। हम नित्य प्रति के व्यवहार में देखते है कि लोग ग्रपराधी व्यक्ति पर कोव करते हैं, कठोर बचनों का प्रयोग करते हैं ग्रीर विविध प्रकार से धमकाते, डाटते ग्रीर फटकारते हैं। उसी प्रकार से पूज्य योगीराजजी को भी दूसरे के मन को दमन करने के लिए कोध की भावना लानी पड़ती है। इससे मस्तिष्क पर बड़ा जोर पड़ता है। जब नक वह व्यक्ति इनके प्रभाव मे नही ग्राता, इनके ग्रनुकूल उसका मन नही होता, इनकी ग्राजा पालन करने नहीं लगता, तव तक इन्हें वेचैनी-सी लगी रहती है। रान-दिन उसके दमन की चिन्ता लगी रहती है। उसके मन मे परिवर्तन लाने के लिए वार-वार प्रयतन करते रहते हैं। जिन दिनों इस प्रकार का प्रयोग करते है उन दिनो अपने खान-पानादि की भी सुघ नही रहती। योगवल का प्रयोग करने का जब दृढ निञ्चय हो जाता है तव वे, जब तक उस कार्य में सिद्धि लाभ नहीं हो जाती, ये उसीके तद्रूप हो जाते हैं। दिन हो अथवा रात, कई-कई वार समाहित होकर अपने मनोवल से दूसरे के मन को परिवर्तित करते रहते है। पूज्य महाराजजी को जितनी चिन्ता भारत पर चीन के श्राक्रमण की हुई थी ऐसी चिन्ता जीवन मे कभी नहीं हुई थी। इनका स्वदेश के प्रति वडा अनुराग है। देश के सकट का निवारण करना अपना कर्त्तव्य समभते हे। आर्य सभ्यता भ्रौर संस्कृति में इनकी वड़ी निष्ठा है। विधर्मियो द्वारा इसे नष्ट होना ये देख नही सकते थे। युद्ध के परिणामस्वरूप महान नर-सहार से देश की रक्षा करना चाहते थे। हजारों युवितयों को वैबव्य दुखं से बचाना चाहते थे। बालको तथा वालिकाग्रो को ग्रनाथ वनकर दर-दर का भिखारी ये देखना नहीं चाहते थे। देश, धर्म, समाज, सभ्यता ग्रौर सस्कृति के विद्यमियो हारा नप्ट होने की कल्पनामात्र से इनका दिल दहल रहा था। इसलिए ये रात-दिन चीन के ग्राकमण को रोकने के लिए ग्रहर्निश प्रयत्नशील थे। तिव्वत के लामा साधुग्रो ग्रीर वहा की जनता पर चीनियो ने जिस नृगसता के साथ ग्रत्याचार किए थे इसकी करुण-कहानी थोलिज्ञ-मठ से भागकर ग्राए हुए एक लामा ने हरिसल मे नेत्रों से ग्रश्न प्रवाहित करते हुए सुनाई थी। यह स्थान गगोत्री से १४ मील नीचे है। यहा पर बहुत से गरणार्थी तिव्वत से भागकर ग्राए थे। इन्होंने चीनियों के महान ग्रत्याचारों की दुख-गाथा सुनाई थी। इन पागविक ग्रत्याचारों को सुनकर चीनियों के प्रति महान घृणा उत्पन्न होती थी।

श्री महाराजजी नीचे श्रासन पर श्रथवा कुर्सी पर वैठकर समाहित होकर दिन में कई-कई बार चीन के शासको का मन परिवर्तन करने के लिए अपने योगवल का प्रयोग करते थे। युद्ध का समाचार, समाचारपत्रो से विदित होता रहता था। भारत की सेनाग्रो ने लहाख मे श्राक्रमणकारियो का डटकर सामना किया। चुशोल के हवाई जहाज के ग्रड्डे की रक्षा के लिए घमासान युद्ध करके गत्रु-सेना को पीछे घकेल दिया परन्तु नेफा के युद्ध में भारतीय सेनाग्रो को वहुत पीछे हॅटना पडा श्रीर चीन के सैनिकों ने भारत के नेफा क्षेत्र पर ग्रपना ग्रधिकार जमा लिया। ग्रासाम मे पैट्रोल के स्रोत से चीनी सेना केवल ५० मील ही दूर रह गई थी। श्रमेरिका श्रौर इन्ह्रलैंड ने इस युद्ध में भारत की सहायता की। इसी वीच रस ने चीन को पैट्रोल देना बन्द कर दिया। २२ नवम्बर को चीन ने युद्ध वन्द करने की घोपणा कर दी। जन महाराजजी ने इस घोषणा का समाचार सुना, तव इन्होंने त्रपना मानसिक प्रयोग करना बन्द किया। एक मास तक महाराजजी ने मानसिक प्रयोग किया। मीन रखा ग्रीर ग्रन्न नही साया। जब युद्ध-विराम होगया तब इन्होने मीन व्रत समाप्त किया ग्रीर ग्रन्त खाना प्रारम्भ किया। इन्होने चीन के गासको के मनो को वदलने, रूस का मन चीन मे फेरने ग्रीर ग्राकमणों के रोकने के लिए ग्रपने योग तथा मनोवल के प्रयोग मे जितना परिश्रम किया उतना श्रपने जीवन मे कभी नही किया था। इससे इनके मस्तिष्क पर वडा ज़ोर पडा ग्रीर ये कमज़ोरी सी ग्रनुभव करने लग गए थे।

## मनोवल से मध्यस्य तथा कर्मचारियो को श्रनुकूल बनाना

एक दिन ग्रोमप्रकाशजी तथा श्रोमती शान्तादेवी पूज्य महाराजजी से मिलने ग्राए। ये उन दिनो वडे सकट मे थे। इनके प्रेस के सब कर्मचारियो ने हडताल कर दी थी। उनकी मार्गे इतनी ग्रधिक ग्रीर भारी थी कि सारे प्रेस को वेचकर भी पूरी नहीं की जा सकती थी। यदि इस प्रकार से प्रेम वन्द करना पडता तो उनका निर्वाह होना कठिन हो जाना। गवर्नमेण्ट ने जो इस भगडे को निपटाने के लिए मध्यस्थ नियत किया था, यह भी कर्मचारियों का ही पक्ष ले रहा था। कर्मचारी वडे श्रावेश में ग्रा रहे थे ग्रीर ग्रोमप्रकाशजी की हत्या करने की धमकी दे रहे थे। ग्रोमप्रकाशजी तथा उनकी पत्नी शान्ता ने मारी व्यथा महाराजजी से निवेदन की। इनकी उनके ऊपर बड़ी कृपा थी। इन्होंने उन्हें हडताल के नेताग्रो ग्रीर मध्यस्थ की फोटो दिल्ली से भेजने का ग्रादेश देकर उन्हें वापिस भेज दिया। साथ ही मुकद्मे की तारील ग्रीर ममय से भी उससे दो दिन पूर्व सूचित करने की आज्ञा दी। श्रोमप्रकाशजी को विश्वास दिलाया कि मुकद्मा तुम्हारे अनुकूल होगा। हडताल के नेताओ और मध्यस्य को तुम्हारे अनुकूल वना दिया जाएगा। स्रोमप्रकाशजी ने दिल्ली जाकर हडताल का नेतृत्व करने वाले २-३ कर्मचारियो श्रीर मध्यस्य के फोटो भेज दिए ग्रीर मुकद्दमे की तारीख ग्रीर समय से भी सूचित कर दिया। श्री महाराजजी ने ग्रपनी दिन्य दृष्टि से उस म्यान ग्रीर दिशा को देख लिया जहा पर मुकद्मा चल रहा था ग्रीर ग्रपने मनोवल के प्रयोग मे मध्यस्य ग्रीर कर्मचारियों के मनो को प्रभावित करने का प्रयत्न किया। मध्यस्य ने दोनो दलो को परस्पर समभीता करने की सलाह दी। वास्तव मे इसी में दोनों पक्षों की भलाई थी। इसके लिए तारीख निश्चित कर दी। किन्तु इन दोनों में कोई समभीता न हो मका। कर्मचारी बड़े उत्तेजित होगए। दूसरी तारीख पर दोनो पक्षो मे खूब गर्मागर्म बहस हुई, वहुत तनातनी रही और ओमप्रकागजी का पक्ष कुछ कमजोर पड गया। ये बहुत घबराए और सारा मामला पत्र द्वारा महाराजजी से निवेदन किया। महाराजजी ने पूरा आश्वासन दिया और दो-तीन पेशियों के पश्चात् मध्यस्थ ने अपना निर्णय ओमप्रकाशजी के पक्ष मे दिया। ओमप्रकाशजी इस भगडे मे कर्मचारियों को जो कुछ स्वय प्रसन्नतापूर्वक देना चाहते थे, मध्यस्थ ने उससे भी कम देने का निर्णय दिया था। ओमप्रकाशजी तथा जान्तादेवीजी महाराजजी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदिशत करने के लिए स्वर्गाश्रम आए।

## योगवल से सेठ जुगलिकशोर विरला की पीठ-पीड़ा श्रपहरण

दिसम्बर मास मे सेठ जुगलिकशोरजी की पीठ मे अत्यधिक दर्द होने लगा। उनका उठना, बैठना, चलना-फिरना तथा करवट वदलना तक कठिन होगया। इन्होने इस वार पूज्य महाराजजी को कप्ट देना उचित नही समभा क्योंकि पहिले जब इनके हाई ब्लंडप्रेगर के रोग को महाराजजी ने अपने मनोवल से मिटा दिया था तब इनके अपने ऊपर भी कई दिन तक इसका असर रहा था और तकलीफ उठानी पड़ी थी, यद्यपि सेठजी के ऊपर उसके वाद से कभी भी इस रोग ने ग्राकमण नही किया। इस वार सेठजी ने अपने कर्म-फल-भोग को स्वय ही भोगने का निश्चय किया और महाराजजी को किसी प्रकार का कष्ट देना नहीं चाहा, किन्तु पण्डित देवधर गर्मा ने सेठजी के पीठ-दर्द का सव समाचार योगीराजजी को लिख दिया ग्रीर मानसिक प्रयोग करने के लिए निवेदन किया। महाराजजी ने ग्रपनी दिव्य द्िट सेठजी के ऊपर फैकी श्रौर श्रपने मनोवल से पीठ का दर्द मिटा दिया। ३-४ र्दिन मे पीठ-पीडा को ७० प्रतिज्ञत स्राराम स्रागया स्रीर एक सप्ताह मे इनकी पीठ मे बिलकुल दर्द न रहा, किन्तु स्वामीजी को स्वय पीठ मे दर्द होने लगा। जनवरी सन् १६६२ मे उपवासादि करने तथा पीठ मे दर्द हो जाने के कारण इस वार ग्रभ्यासियो को महाराजजी ग्रभ्यास नही करवा सके। इस कार्य को श्रीदत्तजी तथा कैप्टन जगन्नाथजी ने किया।

## पूज्य महाराजजी पर मस्तिष्क रोग का प्रकोप

२२ जनवरी १६६३ को पूज्य गुरुदेव अपने शिप्यों के साथ भ्रमण करके सायकाल ६ वर्ज नीचे कोठी के सामने चबूतरे पर कुछ काल बैठकर ऊपर चले गए। ५-७ मिनिट के बाद फिर नीचे उतर ग्राए। उस समय धमंदेवीजी भी नीचे चबूतरे पर बैठी थी ग्रीर सब अभ्यासी साधना भवन मे अभ्यास कर रहे थे। महाराजजी ने धमं बहन से कहा, "मेरी तबीयत कुछ खराव होगई है, क्या रोग है इसका कुछ पता नहीं चल रहा है। ऐसा मालूम हो रहा है जैसे मेरी स्मृति जाती रही है, मन में भी कुछ परेशानी ग्रीर बेचैनी सी हो रही है।" श्रीमती धमंवतीजी इन्हें ऊपर ले गईं, पलग विछाकर लिटा दिया ग्रीर दत्तजी को सूचना देने के लिए नीचे चली गईं। दत्तजी ने शीघ्र ही स्वर्गाश्रम के वैद्य को बुलाया। उसने महाराजजी को देख कर यह निर्णय दिया कि मेदे में गैस ने उत्पन्न होकर मस्तिष्क पर प्रभाव डाला है ग्रीर उससे विस्मृति सी होने लगी है। इस रोग का ग्रीपधोपचार किया गया ग्रीर गर्म जल में पैर रखवाए गए। दत्तजी, कैंटन जगन्नाथजी, प्रीतमचन्द ग्रीर महावीर-

प्रमाद नया श्रीमती धमंवनी श्रादि सभी नेवा कर रहे थे। सायकाल ६ वजे से रात्रि के २ बजे तक वर्गा-प्या हुम्रा, महाराजजी को विलकुल स्मरण नही रहा था। रात्रि के २ बजे इन्होने फरमाया कि दरवाजा खड़कड़ों रहा है, इसे वन्द कर दो। नव सब एक्तिन नोगों ने समभा कि अब महाराजजी की तबीयत ठीक है। ४ यजे तक ये भनी प्रकार ने सोए। उसके बाद थोड़ा सा जगकर फिर सो गए श्रीर ६ बने नक बहुत ग्रन्छी नरह से सीए। जब प्रान काल ६ बजे डाक्टर हमराज ग्राए नो उनने थी महाराजजी ने कहा कि रात्रि को मुक्ते कोई भी बात स्मरण नहीं रही । प्रान कान जिर् में कुछ घोषा ना दर्द था और मुक्ते अपना मस्तिष्क कुछ गानी सा प्रतीत हो रहा था। उाक्टर के पूछने पर महाराजजी ने बनाया कि भने तीन सास तक मुपने मन्त्रिएक की शक्ति से ग्रत्यधिक काम लिया। चीन के राज-पुरदों के मन परिवर्नन करने, एक मुनइमें को श्रमुकूल बिठाने श्रीर नेठ जुगलिकशोर जी की बीमारी को तटाने के लिए मुक्ते श्रपने मस्तिष्क की श्रमित को बहुत व्यय वरना पडा था. घाटार बहुन कम निया और चिन्ता अधिक रही, इससे मालूम होता है कि दारीन छोर मन्तिरक दोनो दुर्बन होगए हैं। मन्तिरक के ज्ञान-वाहक तन्तुन्नो, स्नामुखी छोर गाडियों पर बहुत दबाब पटा है। मुक्ते उनमें कुछ कठोरता सी मालूम होती है। दूसरों के मनो जा दमन करने और उन्हें अपने प्रभाव में लाने में मेरे बल भीर मानि रा गा तान हुए। है। नगभग एक मान नक सिर-पीड़ा होती रही। १४ वस्त्रों ने स्वास्थ्य-लाभ करने पर नाघकों को अभ्यान करवाना प्रारभ कर िया। इस सर्प जीन में मुद्ध हो जाने के कारण अभ्यासी भी कम सस्या में ही साधना ितिर में प्राए थे। ३१ मार्च को शिविर की समाप्ति हुई। सब सावकों को सदैव को भांति प्रीतिभोज दिया गया ग्रीर पूज्य महाराजजी ने विदाई के समय श्रभ्यासियो भी निम्नितिनित उपदेश दिया —

द्वित प्राप्तन, सामको ग्रीर साधिकाग्रो । ग्राज ग्रभ्यास का ग्रन्तिस दिवस है। पान स्वतं नार मान साथना शिविर में रहकर साधना की है। यम-नियमों पारन शिया है। क्रान्ये पारण करके तप, त्याग ग्रीर वैराग्य का जीवन व्यतीत रिया है। इन स्वतं ग्रापका जीवन उसी प्रकार में उज्ज्वन हो जाएगा जिस प्रकार भट्टी में तप कर गीना मुन्दन बन जाना है। प्राचीन बान में ऋषियों तथा मुनियों ने इसी प्राप्त बनों में रहकर प्रनेक प्रकार की साधनाग्रों के हारा तत्त्व-ज्ञान प्राप्त रिया था। इसी की पुण्ट उपनिपद में इस प्रकार की गई है "तप श्रद्धे ये ह्युपव-मन्द्रक्षे शान्या विद्रानों भैंडान्यों नरन्त । सूर्यहारेण ते विरजा प्रयान्ति यत्रामृत स पुर्यों हाव्ययायमा ॥" इस भ में साधना का विशेष रूप से वर्णन किया है। ग्रापने हो पुण तन्त्व-ज्ञान यहा निवास करके प्राप्त किया है इसको ग्रापने करों में, श्राथमों ज ग्रम्य किया है। ग्रापने यहा जो साधना की है ग्रीर श्राणिक तत्त्व-ज्ञान प्राप्त प्राप्त किया है। ग्रापने यहा जो साधना की है ग्रीर श्राणिक तत्त्व-ज्ञान प्राप्त प्राप्त किया है। ग्रापने यहा जो साधना की है ग्रीर श्राणिक तत्त्व-ज्ञान प्राप्त क्रिया करके प्रव्य क्यान करना है किन्तु ज्योही बाहर निकलता है श्रपनी सूड से मिट्टी कृत्य-एकंटारि उद्यक्त प्रपत्त व्योर पर डानकर पुन गया हो जाता है। यहा से कृत्य-एकंटारि उद्यक्त प्राप्त वियेक में श्रियक वृद्धि करना ग्रीर श्रपने जीवन को उन्नति ताने के बाद प्रापको प्राप्त वियेक में श्रियक वृद्धि करना ग्रीर श्रपने जीवन को उन्नति ताने के बाद प्रापको प्राप्त वियेक में श्रियक वृद्धि करना ग्रीर श्रपने जीवन को उन्नति

के पथ पर अग्रसर करना है। मानव जीवन वडा ग्रमूल्य है। तत्त्व-ज्ञान प्राप्त करना इसका उद्देश्य है। ग्रपना क्षेप जीवन इस उद्देश्य की पूर्ति में व्यय करो, तभी ग्रापका जीवन सफल समभा जाएगा। हमारे योग-निकेतन के समान ग्रन्यत्र कही भी किया-त्मक साधनों के द्वारा ग्रात्म-साक्षात्कार ग्रीर ब्रह्म-साक्षात्कार की पद्धित नहीं है। किमी भी सप्रदाय का व्यक्ति यहा ग्राकर तत्त्व-ज्ञान प्राप्त कर सकता है। हमारे यहा किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है। सबको समान भाव से योग-साधन करवाया जाना है ग्रीर सबको समान दृष्टि से देखा जाता है। हमारे योग-विद्यालय में मनुष्य मात्र को तत्त्व-ज्ञान की शिक्षा दी जाती है। यहा के ग्रभ्यास ग्रीर साधना में सब ग्रभ्यासी सन्तुष्ट होकर जाते हैं ग्रीर सभी ग्राध्यात्मिक उन्नित लाभ करते हैं। जिस प्रकार लौकिक विद्या की प्राप्ति के लिए स्कूल, पाठणाला ग्रीर कालिज जिला देते हैं, इमी प्रकार इस योग विद्यालय में ग्राध्यात्मिक जिक्षा देकर कियात्मक रूप में ग्रात्म-साक्षात्कार करवाया जाना है।

#### गगोत्री प्रस्थान

पूज्य महाराजजी हिमालय प्रदेश से नीचे कभी नहीं जाते थे। अपनी साधना के काल में प्राय सर्दी में अमृतसर श्रीर गर्मी में काश्मीर रहते थे त्रीर अब प्राय तीन स्थानों पर रहते थे। स्वर्गाश्मम में नवम्बर से अप्रैल तक, उत्तरकाशी में मई मान तक श्रीर गगोत्री में जून से सितम्बर तक, और वहां से स्वर्गाश्मम पुन जाते समय अक्तूबर मास तक उत्तरकाशी में विराजते थे। स्वर्गाश्मम के साधना शिविर के पञ्चात् गगोत्री के लिए प्रस्थान किया। रात्रि को ऋषिकेश में नैशनल बेंक ग्राफ लाहीर के मैंनेजर बलदेविमत्रजी के मकान पर निवास किया और प्रात काल ऋषिकेश से वस द्वारा ३ वजे के लगभग उत्तरकाशी पहुचकर योगनिकेतन में ४० दिन तक विराजे और १ जून १६६३ को उत्तरकाशी से गगोत्री पधार गए। अब की बार प० राजेन्द्रनाथ शास्त्री तथा दिल्लीनिवासी प्रीतमचन्दजी भी उनके साथ थे। गगोत्री में शास्त्रीजी से ब्रह्म-विज्ञान की प्रतिलिपि प्रेस में भेजने के लिए बनवाई। प० राजेन्द्रनाथ महाराजजी के योग्य शिष्य थे। स्वर्गाश्मम के साधना शिविर में दो-तीन वर्षों से अभ्यामार्थ आते रहे थे और बहुत कुछ विज्ञान प्राप्त कर चुके थे। गगोत्री जाने का भी मुख्यो-देश्य तत्त्व-ज्ञान की प्राप्ति तथा उसे दृढभूमि करना था। प्रीतमचन्दजी और पिंदली घोडे की सवारी नहीं कर सकते थे, अन ये दोनो पैदल ही गगोत्री पहुचे थे। श्री महाराजजी घोडे पर पधारे थे।

जब वस से उतर कर पैदल चलने लगे तो प्रीतमचन्दजी गगनचुम्बी विशाल पर्वतो को देखकर घवरा गए। इनको पार करना इन्हें ग्रसभव सा प्रतीत हो रहा था। केवल एक मील चलकर ही इन्होंने ग्रपनी हिम्मत हार दी ग्रीर महाराजजी से पीछे लौटने के लिए ग्राज्ञा मागी। पूज्य स्वामीजी महाराज ने इन्हें ग्रपना खद्दर का एक तौलिया कमर पर बाधने के लिए दिया ग्रौर कहा कि गायत्री का जाप करते चलो, ग्रव तुम नहीं थकोंगे। महाराजजी मार्ग में इन्हें कथा-वार्ता नुनाते गए। इससे प्रीतमचन्दजी का ध्यान दूसरी ग्रोर वट गया ग्रौर थकान ग्रनुभव नहीं हुई। जब ये सब लोग कही पर बैठ कर दम लेने लगते थे तो महाराजजी ग्रपने घोडे को

ठहरा नेते थे श्रीर उनकी प्रतीक्षा करते थे। पिडतजी श्रीर प्रीतमवन्दजी वन - शर्ने महाराजजी के साथ यात्रा में चल रहे थे। गगणानी, भाला, हरिसल में ठहरते हुए धराली पहुंचे। धराली में ठाकुर कुन्दनिसह महाराजजी के लिए दूध लाए। गगोशी के क्षेत्र के लिए सारी रनद ये ही दिया करते थे। महाराजजी पर इनकी वड़ी श्रद्धा भी। जब में उन्होंने गगोती में निवास प्रारम्भ किया था इनके पिता ठाकुर नारायण- निह बराबर रसद दिया करते थे। भैरो चट्टी पर कुछ देर तक श्राराम किया। सारे मार्ग पर महाराजजी उन दोनों का उत्साह बढ़ाते रहे। ठीक १ वजे ये सब गगोती पहुंच गए। न्वामी दयालमुनिजी ने एक घण्टे में भोजन तैयार कर दिया। भोजनो- परान्त सबने विश्राम किया।

पूज्य महाराजजी यहा पर अभ्यासियों को प्रति सायकाल डेढ घण्टा अभ्यास करवाने थे। योज ही नमय में यहां के नितान्त एकान्त ग्रीर प्रशान्त वातावरण में साधना करके अभ्यासियों ने उन्नित करना प्रारम्भ किया। ब्रह्मचारी श्रीकण्ठ तथा राजेन्द्र- गायजी ने कुछ ही दिनों में बहुत सफलता लाभ की। प्रीतमचन्दजी १०-१५ दिन तो ठीक रहे, उसके पञ्चात् अभ्वस्थ होगए ग्रीर वापस चले गए। प० राजेन्द्रनाथजी ने 'उद्याविज्ञान' की प्रतिलिपि दो-ढाई महीने में समाप्त कर दी। श्रापने ग्रानन्दमय कोंश में स्थिर होकर ग्राहम-ज्ञान लाभ किया।

ग्रापाट पूर्णिमा के ग्रवगर पर पूज्य महाराजजी गगोत्री के सब सन्तों को प्रति-पर्प प्रीतिभोजन, बरन, काये, मेबादि प्रदान किया करते थे। इनके शिष्य यथाजित, इनकों भेट दिया करते थे। प्रनेक शिष्य तो व्याग-पूजा के दिन नीचे से भी गगोत्री श्रावर उनकी पूजा करके भेट दिया करते थे। प० राजेन्द्रनाथ शास्त्री ने गुरु-पूजा के ग्रवसर पर पूज्य गुरुदेवजी को भेट दी श्रीर उनकी रतुति में देववाणी में निम्न श्रह्यना गुन्दर रचना भी ग्रिसनन्दन-पत्र के रूप में भेट की ——

गुरुपराणाः प्रह्मनिष्ठयोगिप्रवरत्रह्मिथियोगेश्वरानन्दमहाराजानाम् भूतपूर्वयोगाचार्यश्रीत्रह्मचारीव्यासदेवमहामुनीनाम् चरणारविन्दागिनन्दनम्

> यति योगेश्वरानन्द, व्यासदेव महामतिम् । गुम्देव, कली योगप्रवर्तकम् ॥१॥ प्रणमागि फणीजो वेत्ति योग वै, व्यासोऽपि भाष्यकारस्च । योगेन्वरदयानन्दी, वेत्तोऽन्यो वेत्ति वा न वा॥२॥ विञोका ज्योतिरेषा हि, पावनी योगरोगिणाम् । विदुपा शेमुपीजुपाम्, सूर्याणाञ्चापि मादृशाम् ॥३॥ वनम्याञ्च गृहॅम्थाञ्च, निर्धना विनिनस्तयो । यन्यानिनो व्रणिनव्य, मूर्यामूर्या जडाजडा ॥४॥ वृद्धा यीवनसम्पन्ना, नार्यो नरा बलाबला। लंभन्ते हि महाराजात्, विशोका मोक्षदा सदा ॥५॥ कारणस्थूलसूक्षमाणाम् । पट्चकान्त करणानाम्, विशोका योगविद्यैपाम् ॥६॥ प्रकाशिका समस्तानाम्,

त्रखण्डव्रह्मदर्शनम्, ग्रखण्डयोगधारणम् । ग्रखण्डव्रह्मचर्यञ्च, व्रह्मपित्वेऽस्तु सायकम् ॥७॥ नूतनमात्मिवज्ञानम्, स योगो वहिरङ्गो यो । गुह्मञ्च व्रह्मविज्ञानम्, मोक्षदा नस्त्रिलोकगा ॥६॥ त्र्यम्बकस्त्व शिवोऽसि न , चक्रघरो विष्णुरसि । व्रह्मासि श्रुतिश्रावक , त्वा ऋते नास्ति गतिनं ॥६॥ रत्नौधैरसि पूज्यस्त्व, तपस्विनो वय वन्या । सुमनोभिस्स्वमनोभि , स्तुम पादिश्रय नता ॥१०॥

गुरु-पूर्णिमा वैकमान्द. २०२० श्रीमच्चरणान्तेवासी ग्राचार्यो राजेन्द्रनाय शास्त्री सस्यापक श्रीदयानन्दवेदविद्यालयस्य

योगिनकेतन में सब स्थानीय सांघुग्रों ग्रीर सन्तों के लिए चार मास चाय ग्रीर डेढ मास ग्रन्न का क्षेत्र श्री महाराजजी की ग्रीर से चलाया जाता है। एक धर्मार्थ ग्रीपघालय भी है। श्री दयालमुनिजी रोगियों का उपचार करते थे। क्षेत्र चलाने की सब व्यवस्था भी ये ही किया करते थे। इस वर्ष पूज्य स्वामीजी महाराज ने सेठ जुगलिकशोर विरला से १०००० रुपये लेकर गंगोत्री के मदिर का जीणोंद्धार भी दयालमुनिजी द्वारा करवाया था। इन्हें किसी कार्य के लिए घराली भेजा गया था। एक गृहस्थी ने इन्हें भोजन के लिए ग्रामन्त्रित किया। भूल से कोई ऐसी वस्तु खाने में ग्रागई जिससे इनका पेट फूल गया ग्रीर ग्रितसार होगया, इसलिए इन्हें वहां पर तीन-चार दिन तक रुकना पडा। इसके बाद से इन्हें मन्दाग्नि रहने लग गई। ग्रनेक उपचार किए किन्तु ग्राराम नहीं हुग्रा। इस विपैली वस्तु का इनके मस्तिष्क पर भी बुरा प्रभाव पडा जिससे इन्हें जन्माद रोग होगया। ग्रमृतसर में इलाज कराने से दयालजी स्वस्थ होगए।

## स्वर्गाश्रम प्रस्थान

श्री महाराजजी, शास्त्रीजी तथा ग्रन्य ३-४ सन्तो को साथ लेकर उत्तरकाशी पधारे। यहा पर वीस दिन तक निवास करके स्वर्गाश्रम के लिए प्रस्थान किया। वहां पहुचकर 'ब्रह्म-विज्ञान' ग्रथ का प्रकाशन करवाने के लिए श्री दत्तजी ग्रीर केंप्टनजी को दिल्ली भेजा गया। इधर श्री महाराजजी ने दिल्ली से एक चित्रकला विशारद को बुलाकर 'ब्रह्म-विज्ञान' के चित्रो को वनवाया ग्रीर १५-२० दिन मे यह काम समाप्त होगया। 'ब्रह्म-विज्ञान' ग्रथ के छपवाने के लिए सेठ जुगलिक शोर विरलाजी ने ५००० रुपये का कागज दिया था। इसी ग्रवसर पर 'ग्रात्म-विज्ञान' का दूसरा सस्करण निकाला गया ग्रीर इसका ग्रग्रेजी ग्रनुवाद 'सायस ग्राफ सोल' के नाम से प्रकाशित किया गया। श्री केंप्टन जगननाथजी ने ७-६ मास तक दिल्ली रहकर प्रकाशन का सारा प्रवन्ध किया। श्री ग्रोमप्रकाशजी की सहायता से यह काम शीघ्र सम्पन्न होगया। 'सायस ग्राफ सोल' के प्रकाशन का सव व्यय वम्वर्ड निवासी श्री ग्रमीरचन्द गुप्तजी ने प्रदान किया।

स्वगिश्रम में साधना-शिविर--पूज्य गुरुदेव गत वर्ष से श्रभ्यासियों को ब्रह्म-विज्ञान का विशेष रूप से श्रभ्यास करवा रहे थे श्रीर श्रभ्यासार्थियों को इसमें सफलता लाभ हो रही थी। अभ्यास से पूर्व श्री महाराजजी ने सब अभ्यासियो को सम्बोधन करते हुए कहा-"ग्रापकी बुद्धि उतनी सूक्ष्म हो जानी चाहिए कि ग्राप प्रत्येक पदार्थ के ग्रन्तिम छोर को भी देख ग्रीर समभ सकें। ऋतम्भरा बुद्धि ही ब्रह्म-ज्ञान का श्रभ्यास करने मे तथा साक्षात्कार करने मे सहायक हो सकती है। श्राप सब सावधान होकर मन तथा इन्द्रियो को समाहित करके अपनी दिव्य दृष्टि को इस पृथ्वी मे प्रयेग करे। उसमे परिवर्तित होती हुई अवस्थाओं और पदार्थी का अवलोकन करें। जिस प्रकार अपने स्यूल शरीर मे प्रवेश करके इसके भीतर की रचना को दिव्य-दृष्टि ने ग्राप देयते हैं उसी प्रकार इस भूमि में भी प्रवेश करके इसके भीतर की गति-विधि को प्रत्यक्ष करे। यदि प्रापने ग्रपने ग्रन्दर ग्रपने ग्रात्मा का साक्षात्कार कर लिया है तो ग्रात्मा के नमान एक चेनन तत्त्व इस पृथ्वी के गर्भ मे भी ग्रन्तर्यामी रूप से इसमे ब्याप्त चेतन सत्ता की अनुभूति होगी। इसी प्रकार आकाश मण्डल मे जो लोक-नो तान्तर है ये सब ही समिष्टि पृथ्वी तत्त्व के अब है। इनमे भी आप अपनी दिव्य दृष्टि को फैककर उनका साक्षात्कार करें। इसी प्रकार स्थूल जगत् ग्रीर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में त्रह्म का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करे। उस पृथ्वी की परिणत होती हुई स्थूल, स्वरूप, सुटम, ग्रन्यय श्रीर ग्रर्थवत्त्र ग्रवस्थाग्रो, इसके उपादान कारण श्रीर निमित्त कारण पर यस्य का माधानकार करे।" उपरोक्त ग्रभ्याम साधक ग्रीर साधिकाए निरन्तर कई दिन नक करते रहे । कई श्रभ्यासियों ने श्रपनी-श्रपनी बुद्धि के श्राघार पर इस विषय में बहुन गुळ प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया । इसी प्रकार प्रत्येक समष्टि भूत के साक्षात्कार करने में कई मास तक अभ्यास करवाया गया। तत्पश्चात् सूक्ष्म समिष्ट भूतो के सादानगर करवाने के लिए भी बहुत समय तक श्रभ्याम करेवाया । यह सूक्ष्म भूतो का विषय प्राहकारिक समिटि मृष्टि के प्रन्तर्गत था। सन् १६६२, ६३, ६४ मे कार्य-कारणात्मक प्रकृति श्रीर इन सर्व मे व्याप्त ब्रह्म-ज्ञान का श्रभ्यास करवाया गया। यह सब विज्ञान तीनो शरीरो के बाहर का था। समिष्टि पदार्थों मे ब्रह्म की व्यापकता ग्रीर निष्क्रिय तथा निर्गुण ब्रह्म का यह ज्ञान था। पूज्य गुरुदेवजी से अभ्यास के पटनान् एक जिज्ञानु शिप्य ने प्रदन किया "जब ग्राप ब्रह्म की निर्मुण मानते है तब इस दृश्यमान जगत् का निर्माण किस प्रकार में हुन्ना तथा किसने किया ?" इसका उत्तर पूज्य गुरुदेव न बडे विस्तार मे ग्रपने उपदेश मे समभाया।

# पूज्य गुरुदेव का ग्रह्म के विषय मे उपदेश

सगुण त्रह्म मानने में अनेक दोप उपस्थित होते हैं। इस सिद्धान्त को मानने ये त्रता के जितने गुण माने जाएगे उतने ही इसके रूप भी मानने पड़ेंगे क्यों कि प्रत्येक गुण में अवस्थान्तर परिणाम मानना पटेगा। एक गुण के बाद दूसरे गुण का प्रादुर्भाव मानना पटेगा। नय त्रह्म अवस्थान्तर भाव को प्राप्त होता हुआ एक गुण को उत्पन्त करेगा गयों कि गुण का प्रादुर्भाव कमपूर्वक ही होगा। यदि एककालावच्छेदेन सर्व गुणों की उत्पत्ति माने तब त्रह्म विकारी सिद्ध होता है और यदि कमपूर्वक गुणों की उत्पत्ति माने तब भी यह विकारी सिद्ध होता है और यदि ब्रह्म में ये सब गुण नित्य मान ते वब यह शका होती है कि गुण और गुणी का भेद है या अभेद। यदि भेद मान ते तब यह शका होती है कि गुण और गुणी का भेद है या अभेद। यदि भेद

मानते है तो ब्रह्म से गुण पृथक मानना पड़ेगा श्रीर यदि श्रभेद स्वीकार करते हो तो ब्रह्म मे गुणो का होना, श्रवस्थान्तर श्रीर श्रनेकरूपत्व मानना पड़ेगा। दो विरुद्ध धर्मों का समावेश ब्रह्म में सिद्ध नहीं होता। वह सगुण श्रीर निर्गुण दोनो नहीं हो सकता।

इस पर जिज्ञासु ने पुन जका की—"ग्राप प्रकृति मे नित्यत्व ग्रौर ग्रनित्यत्व दो धर्म मानते है। ग्राप इसे कारण रूप से नित्य ग्रौर कार्य रूप से ग्रनित्य मानते हैं। ग्रत ग्राप ब्रह्म के नित्यत्व ग्रौर ग्रनित्यत्व मे क्यो ग्रापत्ति उठाते हैं ?" पूज्य महा-राजजी ने इस शका का निम्न प्रकार से समाधान किया —

प्रकृति सावयव ग्रीर परिणामिनी है ग्रीर ब्रह्म की ग्रपेक्षा स्यूल है। इसीलिए ब्रह्म प्रकृति को व्याप्त करके रहता है। कारण रूप प्रकृति का कभी विनाश नहीं होता और क्योंकि यह सत् होते हुए परिणामिनी है इसलिए इससे जगत् की उत्पत्ति होती है। इसके वास्तविक कारण रूप का कभी अभाव या विनाश नहीं होता। यह कारण रूप प्रकृति ग्रवस्थान्तर रूप से कार्यभाव को प्राप्त होती रहती है ग्रौर सदा अपने कार्य मे अनुस्यूत रहती है, जिस प्रकार स्वर्ण कटककुडल, मणिवधादि मे अनु-स्यूत रहता है। स्वर्ण का यहा स्वरूप से विनाश नहीं है किन्तु अवस्थान्तर परिणाम है। इसी प्रकार प्रकृति का भी स्वरूप से विनाश नहीं होता, उसका ग्रवस्थान्तर होता है, ग्रौर यही कार्य रूप परिणाम है। यदि हम ब्रह्म को भी ऐसा मान लें तब यह भी प्रकृति के समान विकारी सिद्ध होगा। कारणगुणपूर्वक ही कार्यगुण होता है। जो गुण कारण मे होते है वे कार्य मे भी अवस्य आवेंगे। ब्रह्म का जो कार्यान्तर परिणाम या अवस्थान्तर परिणाम होगा उसमे भी ब्रह्म के अनेक गुण उसके कार्य मे मानने पडेंगे। उसका कार्य आप जीवात्मा को या ईश्वर को ही कहेगे क्योंकि इनमे ही चेतनत्व है। इसलिए ब्रह्म भी प्रकृति की तरह सत् और परिणत होकर रह जाएगा। वहा जड रूप से परिणाम है श्रौर यहा चेतनत्व, श्रत प्रकृति श्रौर बहा मे किसी प्रकार का भेद या अन्तर नहीं रहेगा। इसलिए ब्रह्म को निर्गुण, निष्क्रिय, निरवयव तथा असङ्ग मानकर केवल ब्रह्म के सन्निधान मात्र से प्रकृति में जगत्-सृजन रूप किया माननी चाहिए। निर्गुणत्व, निष्कियत्व, असङ्गत्व, निरवयवत्वादि ब्रह्म के गुण नही है। ब्रह्म तो केवल चेतन स्वरूप है। इसमे कभी विकार या परिणाम नही होता, इसलिए नित्य निष्क्रिय कहा गया है। जिसमे किया है या व्यापार है वहा परिणाम-क्रम स्रवश्य मानना पडेगा। अत बहा को निर्गुण मान कर ही सिद्धान्त का प्रतिपादन युक्तियुक्त और तर्कसगत है। बहा के निर्गुण होने से इसमे कर्तृत्वादि धर्म भी सिद्ध नही होते। ब्रह्म को जगत् के प्रति निमित्त कारण अवश्य माना जा सकता है। निमित्त कारण दो प्रकार का होता है। कुलाल वर्तन बनाने मे निमित्त कारण है, परन्तु ब्रह्म सृष्टि की रचना करने मे इस प्रकार का निमित्त कारण नहीं है। वह केवल सन्निधान मात्र से निमित्त कारण सिद्ध होता है, कर्ता रूप मे नहीं। अत ब्रह्म के सन्निधान मात्र से प्रकृति गति-शील होकर समिष्ट पदार्थों को उत्पन्न करने लगती है। ये समिष्ट ३२ पदार्थ प्रकृति की परिणत होती हुई अवस्था विशेष है। परिणत होती हुई प्रकृति अन्त मे पृथ्वी महाभूत पर आ कर ठहर जाती है, इसके पश्चात् और कोई विशेष परिणामान्तर नही होता।

इस उपदेश को मुनने के अनन्तर एक साधक ने प्रश्न किया—''गुरुदेव । जब आप ईश्वर या ब्रह्म को कर्ता नहीं मानते तो श्रुति में जो कहा है कि 'तस्मात्यजुर-जायत' क्या यह गलत है ? इस विषय में आप प्रकाश डालने की कृपा करे।

पूज्य महाराजजी ने इस शका का निम्न प्रकार से समाधान किया -

वेद के प्रति उपादान कारण कौन है ? यदि वेद-ज्ञान का उपादान कारण ईश्वर को मानते है तव वह विकारवान् सिद्ध होता है। इसके वाद यह भी शका हो सकती है कि यह ज्ञान उससे भिन्न है या ग्रभिन्न । यदि भिन्न है तो उसका उपादान कारण ग्रीर कोई पदार्थ होना चाहिए ग्रीर यदि ग्रभिन्न है तो क्या इसमे कारण-कार्यात्मक ग्रभिन्नता है ? जिस प्रकार प्रकृति ग्रपने सव कार्यों मे कारण रूप से वर्तमान रहती है, क्या ईश्वर भी वेद-ज्ञान में कारणरूप से वर्तमान रहता है ? इससे ईश्वर प्रकृति के समान विकारवान सिद्ध होता है। यदि ईश्वर श्रीर वेद-ज्ञान का गुण-गुणी भाव सम्बन्ध मानते हो तो यह मानना पडेगा कि वह गुण उसी ईश्वर का ग्रवस्थान्तर परिणाम है ग्रथवा इसका ग्राथय-ग्राथयी सम्वन्ध है। ग्राथ्यय-ग्राथयी भाव सम्बन्ध भिन्न पदार्थों का होता है। अत वेद-ज्ञान को ईश्वर से अलग मानना पडेगा और उसका उपादान कारण किसी ग्रन्य को मानना होगा। यदि ग्राप निमित्त कारण केवल सन्निधान मात्र से मानते है तव वेद-ज्ञान के प्रति उपादान कारण कोई ग्रीर ही होना चाहिए। सन्निधान मात्र से कर्तृत्व धर्म ईश्वर मे वेद-ज्ञान के प्रति सिद्ध नहीं होता। यदि ग्राप केवल वेद-ज्ञान के प्रति उत्पत्ति में सन्निधान मात्र ही मानते है तब वेद-ज्ञान का कर्ता ईश्वर सिद्ध नहीं होता, क्योंकि निर्गुण होने से उसमें कर्तृत्व गुण सिद्ध नहीं होता। ग्रत वेद-ज्ञान का कर्ता न ब्रह्म ही है ग्रीर न प्रकृति ही। ग्रव यहा यह प्रश्न हो सकता है कि वेद-ज्ञान का कर्ता कीन है तथा इसकी उत्पति कहा से ग्रौर कैसे होती है। इसका उत्तर ध्यान से सुनिए। जिस ज्ञानयुक्त पदार्थ मे परिणाम-कम है उसीमें अवस्थान्तर रूप से ज्ञान का प्रादुर्भाव मानना पडेगा। सृष्टि के आदि मे जब ब्रह्म के सन्तियान मात्र से प्रकृति मे परिणाम-कम होता है तो वह प्रकृति सत्व रूप मे, अर्थात् ज्ञान रूप मे, परिणाम भाव को प्राप्त होती है। इस पर ग्राप यह शका करेंगे कि जब प्रकृति ज्ञानरूप मे परिणाम भाव को प्राप्त होती है, तो क्या पहले भी वह ज्ञान स्वरूपा ही थी ? इस शका का निवारण इस प्रकार से है। प्रकृति तीन गुणो वाली है-सत्व, रज ग्रीर तम। ये तीनो पदार्थ भी है ग्रीर गुण भी। जब तक ये विषम भाव मे रहते हैं तब तक ये अवस्थान्तर अथवा कार्यान्तर भाव को प्राप्त होते रहते है श्रीर जब ये समभाव को प्राप्त होते है तब इनकी साम्यावस्था का नाम प्रकृति होता है। ये अपने कारण प्रकृति में विलीन हो जाते है किन्तु इनका स्वरूप से विनाश नही होता, केवल कारण में स्थिति या विलीनता होती है, क्यों कि सत्कार्यवाद मे हमारा विश्वास है। हम किसी भी वस्तु का सर्वया नाश नही मानते, कार्य के कारण मे विलीन हो जाने को ग्राप भले ही विनाश समभे। सत्व का ग्रर्थ ज्ञान, रज का ग्रर्थ किया ग्रीर तम का ग्रर्थ स्थिति या वल है। ये प्रकृति के गुण भी है ग्रीर पदार्थ भी। ये परिणत होती हुई अवस्थाए भी हैं। सभव है, आप यह कहे कि प्रकृति जड है। ज्ञान इसमे चेत्न भगवान् से श्राता है। भगवान् मे श्राना-जाना रूप श्रथवा गमनागमन रूप वर्म नदी हैं। उसके चेतन होने से ग्रापने भगवान् को ज्ञान रूप भी कह दिया है। ज्ञान उसका गुण नहीं हैं जो अन्य पदार्थ में जा सके या मिल सके अथवा उससे निकलकर प्रकृति में चला जाए या मिल जाए। यदि ज्ञान को आप उपादान कारण मानोगे तब ही ज्ञान में गमनागमन और वृद्धि तथा ह्रास हो सकता है। अत ज्ञान का उपादान कारण प्रकृति ही हैं, ब्रह्म नहीं। ब्रह्म के सन्निधान से जब प्रकृति ने महत्तत्व को उत्पन्न किया तो उससे समिष्टि चित्त उत्पन्न हुआ। समिष्टि चित्त से अनन्त व्यष्टि चित्तों की उत्पत्ति हुई। ये अनन्त चित्त भी ज्ञानप्रधान ही उत्पन्न हुए। ये व्यष्टि चित्त ही वेद-ज्ञान की परम्परा को चलाते हैं अर्थात् ये ज्ञान को लेकर गमन करते हैं। इसको आप इस प्रकार से समझे —

ग्राघुनिक काल में कई योगी ग्रंथवा तत्त्वज्ञानी, वेद-ज्ञान के जाता विद्वान् लोग, जब मृत्यु को प्राप्त होगे तो ये वेद-ज्ञान के सस्कारों को ग्रंपने ग्रन्त करण ग्रंथांत् बुद्धि या चित्त में धारण करके परलोंक में गमन करेंगे ग्रीर फिर ये ही इस ज्ञान को लेकर दूसरे शरीरों में जाएंगे, वहा जांकर लोगों को वेद-ज्ञान प्रदान करेंगे। जब तक इनका मोक्ष नहीं होगा तब तक ये जन्मजन्मान्तरों तक ससार के लोगों को वेद-ज्ञान देते रहेंगे। जब मृष्टि का सहार होगा ग्रंथवा प्रलयावस्था ग्राएंगी तब ये योगी, ज्ञानी ग्रीर वेदज्ञ इस वेद-ज्ञान को साथ लेकर ग्रंथवा ग्रंपने चित्तों में घारण करते हुए प्रलय काल में उसमें प्रवेश कर जाएंगे। इन तत्त्वज्ञानियों के ग्रन्त करणों में वेद-ज्ञान प्रमुप्त सी ग्रंपने में ठहर जाएंगा। ये ग्रन्त करण उस ज्ञान को ग्रंपने गर्भ में घारण करके ग्रंपने कारण रूप समिष्ट चित्त में चले जाएंगे ग्रीर समिष्ट चित्त ग्रंपने महत् सत्व में तथा महत् सत्व ग्रंपनी प्रकृति की साम्यावस्था में विलीन हो जाएंगा।

प्रलयकाल के पञ्चात् सृष्टि के ग्रादि में उपरोक्त योगियो, तत्त्वज्ञानियों, वेदजों, जीवन्मुक्तों में, ग्रर्थात् जिनका मोक्ष नहीं हुग्रा था किन्तु मोक्ष के निकट पहुंचे हुए थे पर ग्रभी इनके कुछ जन्म ग्रवशेष थे उनमें, वेद-ज्ञान का सर्वप्रथम प्रादुर्भाव होता है। ये ही उस वेद-ज्ञान को ग्रपने ग्रन्त करण में धारण करके ग्राते हैं ग्रीर ये ही वेद-ज्ञान की परम्परा चलाते हैं। इन्हीं में में जिन्होंने सर्वप्रथम यह ज्ञान दूसरे ऋषियों तथा मुनियों को प्रदान किया उनके नाम ग्रग्नि, वायु, ग्रादित्य ग्रीर ग्रिझरा है।

इस प्रकार ज्ञान की परम्परा ऋषि-मुनियों की ऋतम्भरा प्रज्ञा द्वारा चलती रहती है। इसमें ईंग्वर की ग्रावण्यकता ही नहीं है। किसी वेद-ज्ञान ग्रथवा ग्रन्य किसी ज्ञान को भगवान उत्पन्न नहीं करता। हम इस लोक में बुद्धि द्वारा विवेक प्राप्त करते हैं ग्रथवा गुरुजनों से प्राप्त करते हैं। यह सब बुद्धि का ही विषय है। बुद्धि ही इसे घारण करती हैं, इसलिए यह सब बुद्धि के विकास ही का परिणाम है।

जव वृद्धि एक जन्म से दूसरे जन्म मे ज्ञान लेकर जाती है तो प्रलय काल में भी लेकर जाएगी ही, तव सृष्टि के ग्रादि में ऋतम्भरा वृद्धि या ज्योतिष्मती वृद्धि ग्रथवा सम्प्रज्ञात की ग्रवस्था में उत्पन्न हुई वृद्धि एवं वर्ममेघोत्पन्न वृद्धि सृष्टि के ग्रादि काल में ऋषि-मुनियों के ग्रन्त करण में वेद-ज्ञान को लिए हुए विकास भाव को प्राप्त हो जाएगी, ग्रत सृष्टि के ग्रादिकाल में भी भगवान से वेद-ज्ञान के उत्पन्न होने की वात सिद्ध नहीं होती। जव इस लोक में विज्ञान वृद्धि का धर्म है तो ग्रादि सृष्टि में भी वृद्धि का ही धर्म होना चाहिए। ग्रत वेद-ज्ञान न तो ईश्वर का धर्म या गुण हैं ग्रीर न ही वह इसका कर्ता है। इस समय जो चार वेद उपलब्ध है इन्हीं में सम्पूर्ण

ज्ञान समाप्त नहीं हो जाता। क्यों कि ज्ञान भी अनन्त है अत जीवों की अनन्त बुद्धियों में निवास करेगा। ये अनन्त जीवों की अनन्त बुद्धिया ज्ञान की परम्परा को धारण करके चलती रहेगी, वहन करती रहेगी, क्यों कि ज्ञान इनका ही परिणाम विशेष हैं। ये ही तत्त्वज्ञान की उपादान कारण बनेगी और वर्तमान काल में भी है और भूतकाल में भी थी। विज्ञान बुद्धि का परिणाम हैं। ब्रह्म भी चेतन होने से ज्ञान रूप ही हैं परन्तु उसका ज्ञान परिणाम और विकार रहित हैं। उसमें विकास, वृद्धि तथा हास नहीं होता। अत वेद-ज्ञान भी बुद्धि का ही धर्म-विशेष या परिणाम-विशेष ही हैं, ईरवर का नहीं, क्यों कि ईंग्वर निगुण हैं, निविकार है। निरवयव हैं और असङ्ग हैं। इसे सङ्ग दोप नहीं होता। हा, प्रकृति इसके सान्निच्य को प्राप्त होकर विकारवान् होती हैं और तब परिणामभाव को प्राप्त हो जाती हैं।

इस वर्ष श्री महाराजजी, रामिक शोर जी ग्रीर दत्तजी साधको को ग्रभ्यास करवा रहे थे। ५ मास की साधना समाप्त करके दो ग्रग्रैल को महाराजजी ने नीचे जाने का विचार किया। पूज्य गुरुदेवजी के संकडो भक्त कई वर्ष से नीचे बुला रहे थे। ये वहुत वर्षों से हरिद्वार मे नीचे नहीं पचारे थे। भक्त वार-वार यह ग्राग्रह कर रहे थे कि महाराजजी नीचे पचारे ग्रीर नगरों में साधना-शिविर लगाए जिससे इनसे नागरिक जनता भी मत्सग ग्रीर साधना से लाभ उठा सके।

३१ मार्च १६६४ को शिविर की समाप्ति पर एक विशाल सहभोज साधकों को दिया गया ग्रीर इसके उपरान्त कई सारगिभत उपदेश हुए। श्री महाराजजी ने ग्रपने सब शिष्यों को विदा करते समय उपदेश दिया जो निम्नलिखित है।

### योग की सार्वभौमिकता

यम-नियम—योग सार्वभौम-धर्म है जो मनुष्यमात्र के लिए परम उपयोगी है। यह र्रव्यत्वादी तथा अनीरवरवादी दोनों के लिए उपयुक्त है और मानवमात्र का करयाण करने वाला है। इस अप्टाग योग को सभी धर्म और सम्प्रदाय मानते है। योग के प्रथम और द्वितीय अग अर्थात् यम और नियम योग की आधार-जिला है। उन पर आचरण करने से प्रत्येक नर-नारी का जीवन उन्नत होता है और रारीर, उन्त्रियों तथा मन पर अधिकार प्राप्त हो जाता है। प्रत्येक प्राणि के प्रति मित्रता की भावना उत्पन्न होती है। मनुष्यमात्र के प्रति हित और उपकार भावना जागृत हो जाती है। दुग्यियों के प्रति दया का उदय होता है। आतों की आर्ति हरण की सामर्थ्य प्राप्त होती है और अमहायों की सहायता करने के लिए शरीर में जिनत का सचार होता है। तव मनुष्य पापियों में घृणा नहीं करता, उनके प्रति उदासीनता की भावना रणता है। उनके पाप से घृणा करता है, उनसे नही। पुण्यात्माओं को देखकर हिपत होता है। हिंसा का परित्याग, सत्यप्रियता, चौर्यत्याग, परस्त्रीगमन निषेध, तथा विषयोन्मुनी इन्द्रियों का निरोध मभी धर्में और सप्रदायों के नर-नारियों के लिए कत्याणकारी है, मुख और ज्ञान्ति को स्वम्म धर्में की हो। इसलिए यम और नियम का पालन प्रत्येक स्त्री और पुरुप को सयमंत्रील और जितेन्द्रिय वनाता है। इनसे मन में एकाग्रता आती है और यह एकाग्रता पूर्ण ज्ञान्ति को प्रदान करती है। सभी सप्रदायों के जितने भी वने-वड़े सन्त हुए है सबने यम-नियम को धर्म माना है, अपनाया

है, श्रीर इनके पालन करने, इन पर श्राचरण करने पर वल दिया है। इनका पालन करने से ही उनके जीवन मे महती विशेषता श्राई थी श्रीर नेतृत्वणिकत प्राप्त हुई थी, ग्रत श्राप लोगो को भी यम-नियम का पालन करना चाहिए। ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वनस्थ श्रीर सन्यासी सभी के लिए इन पर श्रनुष्ठान करना श्रनिवार्य है। जिस मकान की चुनियाद कमजोर रहती है वह चिरस्थायी नही हो सकता। उसके जीघ्र ही गिर जाने की सभावना रहती है। इसी प्रकार जो योगी यमो श्रीर नियमो का पालन नहीं करता वह पथअष्ट होकर योगअष्ट हो जाएगा।

श्रासन तथा प्राणायाम—इसी प्रकार ग्रासन ग्रीर प्राणायाम भी योग-पथ के पिथक के लिए ग्रत्यन्त ग्रावश्यक है। ग्रासनों के द्वारा शरीर पर विजय लाभ होती हैं ग्रीर प्राणायाम से प्राण तथा मन वशीभूत हो जाते हैं ग्रीर प्रकाश पर जो ग्रावरण छाया हुग्रा होता है वह दूर हो जाता है तथा ज्योतिष्मती बुद्धि उत्पन्न हो जाती है। प्राण की गित के मन्द हो जाने से मन ग्रीर इन्द्रियों में उत्तेजना उत्पन्न नहीं होती। ध्यान ग्रीर समाधि की योग्यता उत्पन्न हो जाती है। ब्रह्मरध्न में दिव्य-ज्योति का प्रादुर्भाव होता है। दीर्घकाल तक ग्रासन की स्थिरता हो जाने पर शरीर की सब चेष्टाए शान्त हो जाती है। विषय तथा विकारों से मन हट जाता है ग्रीर ध्यान तथा समाधि में सहायक होता है।

प्रत्याहार—इसी प्रकार योग का पाचवा ग्रङ्ग प्रत्याहार सब इन्द्रियो पर विश्व पैदा करता है। विश्व के सभी धर्मों तथा मत-मतान्तरो की प्रत्याहार में निष्ठा है। सभी प्रत्याहार द्वारा मन ग्रीर इन्द्रियो पर विजय प्राप्त करने पर वल देते हैं। इन पर विजय प्राप्त किए विना इस लोक तथा परलोक में किसी प्रकार भी सिद्धि लाभ नहीं हो सकती। नास्तिक तथा ग्रास्तिक सभी लोग इसमें विश्वास करते हैं। ग्रध्यात्मप्रिय लोगो के लिए इसका ग्रनुष्ठान ग्रत्यन्त ग्रावव्यक है।

धारणा, ध्यान, समाधि—ग्रष्टाङ्ग योग को ईश्वरवादी तथा ग्रनीश्वरवादी सभी मानते है। जव ग्रनीश्वरवादी समाधि मे पदार्थों का साक्षात्कार करते हैं तव इनके लिए भी समाधि से पूर्व धारणा तथा ध्यान को सिद्ध करना परमावश्यक होता है। ग्रात्मा, परमात्मा ग्रथवा प्रकृति ग्रीर इसके कार्यात्मक पदार्थ सब समाधि के द्वारा ही साक्षात्कार का विषय बनते हैं। सारा विश्व इस समाधि को ही तत्त्वज्ञान का साधन मानता है। ग्राधुनिक भौतिक विज्ञानवादी इसी का ग्राश्रय लेते है। इसलिए योग को सार्वभौम-धर्म मानना ही पड़ेगा। गीताकार ने "योग कर्ममु कौशलम्" कहा है। वुद्धिपूर्वक, युक्तियुक्त, नियम ग्रीर सयम से जो कर्म किया जाता है वह भी योग है। एकाग्र ग्रीर समाहित चित्त होकर श्रेष्ठ कर्म करना भी योग है। किसी कार्य मे किट वद्ध होकर लग जाना, जुड जाना, उसी मे दत्तचित्त हो जाना भी योग है। इस लोक ग्रीर परलोक के लिए जो सात्विक तथा श्रेष्ठ कर्म एकचित्त होकर किया जाता है वह भी योग ही है। पुराणो मे भी योग की वडी प्रशसा की गई है —

योगाग्निर्दहति क्षिप्रमशेष पापपञ्जरम् । प्रसन्न जायते ज्ञान ज्ञानान्निर्वाणमृच्छति ।। उसका भाव यह है कि योगरूपी ग्रग्नि बहुत जी द्र सपूर्ण पापो को भरम कर देती है ग्रोर तत्त्व-ज्ञान को उत्पन्न करके मोक्ष प्रदान करती है। योग ही वस्तु के यथार्थ स्वरूप का साक्षात्कार करवाने का सर्वोत्तम साधन है। ग्रन्यत्र भी कहा है—"ध्यानयोगेन सम्परयेद् गतिमस्यान्तरात्मन । सूक्ष्मता चान्वेक्षेत योगेन परमात्मन ।" ध्यान-योग के हारा ग्रात्मा के ग्रर्थात् ग्रन्त करण में स्थित ग्रात्मा के स्वरूप का साक्षात्कार करें। योग के हारा ग्रात्मा की सूक्ष्मता का ग्रनुभय करे या प्रत्यक्ष करे। योगी एकान्त तथा ज्ञान्त स्थान में रह कर निरन्तर समाधि हारा ग्रात्मा को प्रत्यक्ष करे। इसका प्रतिपादन गीना में 'योगी युञ्जीत सततमात्मान रहिस स्थित' कहकर किया गया है। योग के हारा ग्रात्म-साक्षात्कार करने वाला योगी तपस्वियों से भी वडा माना गया है, कर्म करने वालों से भी वढकर माना गया है ग्रीर ज्ञानियों से भी वह महान् है। उमिलए योग करने वाले योगी की ग्रीर योग की सर्वत्र प्रजसा की गई है।

सन् १६६४ का शिविर समाप्त होने के पश्चात् श्री महाराजजी ने २ अप्रैल को दिल्ली जाने का निश्चय किया क्योंकि सेठ जुगलिक शोरजी का आग्रह था कि पूज्य न्वामीजी महाराज हिमालय में नीचे उत्तर कर सर्वप्रथम राजधानी में ही पधारे। महाराजजी के निवास और भोजनादि की सब व्यवस्था दिल्ली में सेठ साहिब ने ही की थी। विरलाजी की दिल्ली में कई कोठिया है इसलिए इन्होंने योगीराजजी में किनी भी कोठी तथा उद्यान में निवासार्थ निवेदन किया। 'मिलाप' वाले श्रीम-प्रकाशजी और कैंप्टन जगन्नाथजी को स्थान निश्चित करने के लिए भेजा गया। इन दोनों ने पूज्य महाराजजी के लिए विरला मदिर स्थित सन्त-कुटी को पसन्द किया। मेठजी ने उम कुटिया में विजली के पखे ग्रादि लगवा कर उसे ठण्डा रखने का पूण प्रविध कर दिया था क्योंकि महाराजजी सदा से ही ग्रधिकतर हिमालय में ही विराजते थे। गर्मी में घ्यान तथा समाधि में विघ्न पडता था।

### दिल्ली प्रस्थान

पूज्य गुरुदेव को दित्नी ने जाने के लिए एक कार विरलाजी ने भेजी ग्रीर श्री जगदीशचन्द्रजी टावर भी ग्रपनी कार लेकर श्रागए। स्वर्गाश्रम से श्री महाराजजी के शिष्यों तथा भक्तों ने बढ़े सम्मान में इन्हें विदा किया। संवृंग्रथम वानप्रस्थाश्रम जवानापुर पहुंचे। वहा इनके बढ़े योग्य सन्यासी शिष्य महात्मा प्रभुग्राश्रितजी ने कई माम ने मीनग्रत थारण किया हुग्रा था। श्री महाराजजी के दर्शन करके ही इस ब्रत को गोलना चाहते थे। सैकड़ों वानप्रस्थी तथा ग्रास-पास के लोग दर्शनार्थ उपस्थित को गोलना चहते थे। सैकड़ों वानप्रस्थी तथा ग्रास-पास के लोग दर्शनार्थ उपस्थित हुए ग्रीर ग्रापका उपदेशामृत पान करवाने के लिए वार-वार प्रार्थना की। श्री महान्याजी ने महात्माजी को सम्बोधन करते हुए एकत्रित सैकड़ों नर-नारियों को ग्राध प्रण्टा तक मीनग्रत के लाभ वतलाते हुए निम्न उपदेश दिया —

"मीन सर्वार्थसाधकम्।" प्राथमो की जोभा तप, जप, सयम, ग्रभ्यास ग्रीर मीनव्रत घारण करने वाले सन्तो तथा महात्माग्रो से होती है। सन्तों ग्रीर महात्माग्रो के ग्राथम ग्रध्यात्म-ज्ञान प्राप्त करने के मुख्य केन्द्र होते हैं। श्री महात्माजी ने ग्रदृश्य मीन कई मास से किया हुग्रा था। मीन दो प्रकार का महात्माजी ने ग्रदृश्य मीन कई मास से किया हुग्रा था। मीन दो प्रकार का महात्माजी ने ग्रदृश्य मीन ग्रीर काष्ठ मीन। ग्राकार मीन का ग्रभिप्राय है कि मुह होता है—ग्राकार मीन ग्रीर काष्ठ मीन। ग्राकार मीन का ग्रभिप्राय है कि मुह से न बोलना, ग्रत्यन्तावश्यकता ग्रा पटने पर हाथ या ग्राखादि के इंगित द्वारा से न बोलना, ग्रत्यन्तावश्यकता ग्रा पटने पर हाथ या ग्राखादि के इंगित द्वारा

श्रथवा लिखकर श्रपने मतलव को समभा देना। काष्ठ मौन मे श्रपने भावो को किसी भी प्रकार से व्यक्त नहीं किया जाता। यह भी तीन प्रकार का होता है— शारीरिक, वाचिक, श्रौर वौद्धिक। बहुत काल तक एक हो श्रासन पर निश्चेष्ट होकर बैठ जाना, किसी भी श्रग मे चेष्टा न होने देना गारीरिक मौन है। वाणी द्वारा श्रपने मानसिक भावो को व्यक्त न करना वाचिक मौन है। कर्म श्रौर ज्ञान की चेष्टा का या गति का श्रथवा किया का नितान्त श्रभाव करके शून्य कर देना मन श्रौर बुद्धि का मौन कहलाता है। बुद्धि श्रपने निर्णयो का मन के द्वारा ही श्रादान प्रवान करती है। जब बुद्धि की चेष्टा, चिंतन श्रथवा विचार का श्रभाव हो जाता है तब मन का कोई भी श्रवलम्बन नहीं रहेगा, श्रत वह गान्त होकर बैठ जाएगा। यह मौन श्रत्यन्त कठिन है। इसको कोई विरला योगी ही घारण कर सकता है। यह सर्व सस्कारों का निरोध करने में वडा सहायक होता है श्रौर स्वरूप में स्थिति का हेतु होता है। किसी के सामने न होना श्रौर न जाना श्रदृश्य मौन है। इसमें भी वाणी का कोई व्यवहार नहीं होता और न कोई डगारा ही किया जाता है। केवल सेवक पर किसी श्रन्य प्रकार से इच्छा प्रकट की जा सकती है। ये मौन शरीर, मन, वचन श्रौर कर्म की तथा श्रन्त करण की श्रुद्धि करने वाले है। भिक्त, वैराग्य श्रौर जान को उत्पन्न करने वाले है। मोक्ष के पथ पर ले जाकर जन्म श्रीर मरण के वधन से मुक्त करने वाले हैं।

श्री महाराजजी ने श्रनेक प्रकार से मौन व्रत के लाभ समभाए।

सन्त-कुटी ने निवास--ज्वालापुर से प्रस्थान करके साढे वारह वजे दिल्ली की सीमा पर पहुचे । यहा पर द्वारिकानाथजीं सोधी सपरिवार ग्रपने कारखाने मे स्वागतार्थ उपस्थित थे। मुख्य द्वार पर इनका स्वागत करके ग्रपने कारखाने मे लेगए। सोघीजी ने विरला मदिर मे महाराजजी के पधारने की सूचना भिजवा दी और यह भी कह दिया कि ये १०-१५ मिनिट मे यहा से प्रस्थान करके वहा पहुच रहे हैं। कारखाने मे उपस्थित सभी लोगो को महाराजजी ने ग्राशीर्वाद दिया ग्रीर ग्रपनी ग्रुभ-कामना प्रकट की। सोधीजी ने स्वामीजी महाराज के पवारने के उपलक्ष्य में सवको प्रसाद बाटा श्रौर जलपान करवाया । लगभग डेढ वजे विरला मदिर पहुचे । यहा पर भी पण्डित देवधरजी तथा अन्य कई सज्जन स्वागत के लिए उपस्थित थे। स्वागत के पश्चात् लोग महाराजजी को मदिर मे दर्शनार्थ लेगए। दर्शन करने के बाद सन्त-कुटी मे पवारे। लगभग दो वजे सवने इकट्ठे वैठकर भोजन किया। एक घण्टा विश्राम करने के पश्चात् ग्रागन्तुक भक्तो को दर्शनार्थ ग्रीर शका समाधान के लिए समय दिया गया । सेठ विरलाजी ने महाराजजी के दिल्ली पधारने की सूचना 'हिन्दुस्तान' मे निकलवा दी थी जिससे लोग इनके दर्शन श्रीर सत्सग से लाभ उठा सके । इसी प्रकार की सूचना श्री ग्रोमप्रकाशजी ने भी ग्रपने दैनिक 'मिलाप' मे भी निकलवा दी थी। बहुत भारी तादाद मे दर्शन करने, शका समाधान करवाने तथा सत्सग से लाभ उठाने के लिए लोगो ने स्राना प्रारभ कर दिया। पडित शकरलालजी शर्मा पूज्य महाराजजी के सेकेटरी थे। दिल्ली में इनके भक्त, सेवक, श्रद्धालु सेकडो ही थे। अत दोपहर का भोजन यही होता था। दर्जनार्थ तथा शका समाधान के लिए लोगो का सारा दिन ताता सा वधा रहता था।

दिल्लो मे पूज्य गुल्देवजी के उपदेश—-प्राय प्रतिदिन महाराजजी को कई-कई घण्टे दर्शनायियों को देने पडते थे। लोग ग्रापका उपदेशामृत पान करने के लिए लालायित हो रहे थे। ग्रत सायकाल ४ वजे से ६ वजे तक इनके उपदेशों का ग्रायोजन किया गया ग्रीर प्रात ६ से ११ वजे का समय लोगों को मिलने के लिए नियत कर दिया गया। दित्ली तथा इमके ग्रास-पास की जनता ने ग्राठ दिन तक पूज्य स्वामीजी महाराज के उपदेशों में लाभ उठाया। हजारों की संख्या में लोग ग्रापके उपदेश श्रवण के लिए ग्राते थे। कई ध्विन प्रसारक यन्त्र लगाए गए जिससे दूर-दूर में भी जनता भली प्रकार से सुन सके। महाराजजी के योग तथा ग्राध्या-रिमक गूड ग्रीर गहन विषयों पर नित्य प्रवचन होते थे। ग्रनेक व्यक्तियों ने ग्रापके भाषणों को टेपरिकार्डर में भी लिया। यहा पर इनके जितने उपदेश हुए थे उनका साराश सक्षेप हुए से निम्न प्रकार है —

#### उपदेश

ब्रह्म-ज्ञान प्रदाता—गुरुब्रात्मज्ञानार्थं गुरु की आवश्यकता—जिसने स्वय आत्म-ज्ञान को प्राप्त कर निया है और जो स्वय ससार के वन्धनो से मुक्त हो चुका है, ऐसे गुरु के पास सिमत्पाणि होकर जाए। सिमत् का अर्थ है सिमधा और पाणि का अर्थ है हाथ, अर्थात् हाथ मे सिमधा नेकर जाए। ऐसा गुरु कीन हो सकता है? सन्यासी तो हो नहीं सकता। ऐसा गुरु वानप्रस्थी ही हो सकता है, क्योंकि वानप्रस्थी ही यज्ञादिक कर्म किया करते हैं। प्राचीन मर्यादा के अनुसार एक सस्कार तव होता था जब बानक गुरुकुन मे अध्ययनार्थ जाता था और दूसरा सस्कार तव होता था जब बानक गुरुकुन मे अध्ययनार्थ जाता था और दूसरा सस्कार तव होता था जब बह ब्रह्म-विज्ञान की जिज्ञासा नेकर किसी अरण्यवासी ब्रह्म-ज्ञानी के पास जाता था। ब्रह्म-ज्ञानी गुरु सर्वप्रथम उसका दूसरी वार उपनयन किया करता था। इसके पञ्चात् वह आत्म-विज्ञान और ब्रह्म-ज्ञान का उपदेश देना प्रारम्भ किया करता था। उसमे यह निद्ध होता है कि यह विधि अरण्यवासियों की ही थी क्योंकि सिमधा लेकर जाने की तो उन्हीं के पास आवश्यकता थी। वे ही यज्ञादि कर्म किया करते थे। शास्त्र का यह विधान है कि जिसका सर्व प्रकार से भोग और कर्म से निर्वेद (वैराग्य) हो चुका हो वही आत्मज्ञान और ब्रह्म-ज्ञान का अधिकारी है। यव हम आपसे पूछते है कि आपमे ने कितनों को निर्वेद हुआ है और कितने आत्म-ज्ञान के अधिकारी हो चुक है। जो भी पास आते है वे आत्म-ज्ञान और ब्रह्म-ज्ञान से नीचे की बात तो करने ही नहीं परन्तु उनकी प्राप्ति से पूर्व तो पूर्ण वैराग्य की आवश्यकता है। क्या आप बता सकते है कि आपमे से कितनों को वैराग्य हुआ है।

ज्ञान-प्राप्ति की पात्रता—गास्त्र के ग्रादेश के ग्रनुसार इस ज्ञान का ग्रधिकारी वहीं हो नकता है जिसने साधन-चतुष्टय का पालन किया है। ग्रर्थात् ब्रह्म-ज्ञान के लिए चार प्रकार के साधनों को ग्रपना कर ही ग्रधिकारत्व प्राप्त किया जा सकता है।

साधन-चतुष्टय--ग्रात्म-ज्ञान का ग्रधिकारी वही हो सकता है जो वीतराग हो ग्रीर माधन-चतुष्टय से सम्पन्न हो। साधन-चतुष्टय किसे कहते है ? शम, दम, उपरित नथा तितिक्षा, यह साधन-चतुष्टय है।

शम--शम का श्रथं है मन को शान्त करना। भोगो से जब तृष्ति होगई हो, यसार के विषयों से उपरामता प्राप्त होगई हो तथा मन विरक्त होने लग गया हो, तभी प्रथम साघन 'गम' मे स्थिति सभव है। तृतीय ग्राश्रम वानप्रस्थ मे प्रवेग पाने के इच्छुक गृहस्थी को इसकी भूमिका गृहस्थाश्रम मे ही तैयार करनी चाहिए। गृहस्थ मे ही उसकी भोग ग्रौर विलास के प्रति ग्रक्षि ग्रौर उदासीनता सी होनी प्रारम्भ हो जानी चाहिए। गृहस्थ के सुखो ग्रौर भोगो से उसका मन गान्त होने लग जाए क्यों कि 'शमवानेव राज्यते', ग्रर्थात् गमवान् ही प्रकाग ग्रर्थात् ज्ञान को प्राप्त करता है।

दम—दूसरा सावन है 'दम'। इसका अर्थ है इन्द्रियो पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करना। वेलगाम घोड़े के समान इन्द्रियो को कभी स्वेच्छाचारणी न होने देना चाहिए। जिसने अपनी इन्द्रियो पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया है, वही वास्तव मे आत्म-ज्ञान का अधिकारी वन सकता है। इन्द्रियो पर विशत्व होने के पञ्चात् ही प्रत्याहार-सिद्धि प्राप्त होती है। यह योग का पाचवा अग है। इस विशत्व की तैयारी गृहस्थाश्रम मे ही होनी चाहिए।

उपरित—बुद्धि या चित्त का ऐहिक और पारलौकिक दोनो प्रकार के विपयों से विरक्त होना या उपराम हो जाना। ऐहिक विपयों का अर्थ है पाच भौतिक विषय अर्थात् स्थूल इन्द्रियों के विषय। इनके प्रति उपरित होनी चाहिए। इतना ही नहीं किन्तु स्वर्गीय विषयों, जिनको सूक्ष्म या दिन्य भोग कहा जाता है उनके उपभोग की भी इच्छा न रहे। जो ऐसा कर सकते हैं उन्हीं प्रत्याहार सिद्धि लाभ होती है। इसीका नाम 'वनीकार सज्ञा वैराग्य' है। योगदर्जनकार महर्षि पातजिल ने इस वैराग्य का लक्षण "दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वनीकारसज्ञावैराग्यम्" किया है। स्थूल इन्द्रियों के विषय दृष्ट कहलाते हैं और दिन्य विषय स्वर्गीय विषय हैं। इन्हें सूक्ष्म गरीर के द्वारा भोग किया जाता है। इन दोनो प्रकार के विषयों से जिनकी बुद्धि उपराम होगई है वे ही आत्म-ज्ञान के अधिकारी है।

तितिक्षा—ितिक्षा का अर्थ है सर्व प्रकार के द्वन्द्रों का सहन करना। मानअपमान को समान समक्ता। हानि-लाभ को वरावर जानना। हर्ष में प्रफुल्लित
होकर नर्तन करने नहीं लगना और गोक में व्याकुल न होना। मन साम्य सदैव स्थिर
रहना चाहिए। प्रतिकार की भावना का उदय ही न होने देना। कण्टो, दु खो तथा
आपित्यों को सहन करना। कभी क्षुव्य न होना। सदैव एक रस रहने का प्रयत्न
करना। सभी प्रकार की विपमताओं को सहन करना। गीत, उष्ण, भूख, प्यास को
वर्दाश्त करना। वेदना तथा पीडा में क्षोभ को प्राप्त न होना। मन और बुद्धि में
एक गान्त भाव वनाए रखना। सर्व प्रकार के आव्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक दु खो को सहन करते हुए इनके निवारण के लिए पुरुपार्थ करना 'तितिक्षा'
कहलाती है। इन चारो प्रकार के साधनों से सम्पन्न व्यक्ति ही आत्म-ज्ञान का
अधिकारी हो सकता है।

मनःशान्ति—-सव लोग निकायत करते हैं, विजेपकर गृहस्थी, कि "महा-राजजी, हमारा मन जान्त नही होता।" हम आपसे पूछते हैं कि आपके पास जाति को प्राप्त करने के साधन कौन से हैं। जान्ति प्राप्ति के साधन तो ये जम, दम, उपरित और तितिक्षा ही है। आपके पास जो साधन उपलब्ध हैं वे तो सारे अजान्ति के ही हैं। सारा दिन इतने व्यवहार में डूवे रहते हो कि न दिन को चैन है और न रात को नीद। जब तक शम, दम, उपरित ग्रीर तितिक्षा का ग्राचरण नही करोगे तब तक शान्ति की प्राप्ति नही हो सकती।

याज का युग वटे सघर्ष का है। याप लोगो की कामनाए इतनी अधिक वढी हुई है, जिनकी पूर्ति के लिए रात-दिन सघर्ष मे लगे रहना पडता है। तब भी श्रापकी ग्रावश्यकतात्रों की पूर्ति नहीं होती। इन सवर्षों का ग्रन्त तब होगा जब ग्राप ग्रपनी श्रावश्यकतात्रों को कम करेंगे श्रीर सन्तोप धारण करेंगे। ऐहिक श्रीर स्वर्गीय विषय भोगों में चित्त को उपराम बनावेंगे। जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक शान्ति की अवस्था नही आवेगी। जब तक इन्द्रियो और मन पर पूर्ण अविकार प्राप्त नही होता तय तक ज्ञान्ति की उपलब्धि नहीं होगी। ससार के सर्व भोग्य पदार्थ पास होते हुए भी उनके भोगने की उच्छा न रहे, यह भावना दृढ होनी चाहिए। अनिमले के तो सभी त्यागी श्रीर वैरागी वन जाते हैं। सर्व प्रकार के भोग्य पदार्थ पास होते हुए भी इनका भोग न करने का नाम ही उपरति, वैराग्य श्रथवा त्याग है। भोगी श्रौर विलासी तथा विषयों में श्रासनत लोग श्राकर जिज्ञामा करते हैं कि मन ज्ञान्त नहीं होता। शान्ति प्राप्त करने के उपरोक्त साधनों को ग्रपनाग्रो, उन पर ग्राचरण करो, तभी मन शान्त होगा। जो व्यक्ति रात ग्रीर दिन विषय ग्रीर मोगो के उपार्जन में लगा रहता है, जिसके पास सन्तोप नाम की कोई चीज है ही नहीं, जिसकी तृष्णा की कोई सीमा नहीं ग्रीर न निवृत्ति की कोई ग्रविंघ ही निश्चित की है, जो जन्म से लेकर मरण पर्यन्त नोक-मग्रह में ही लगा रहता है, सारा जीवन हाय-हाय करता हुन्ना ससार से नानी हाथ चना जाता है, उसको शान्ति कैसे लाभ हो सकती है। वह मृत्यु के समय अपने साथ अनेक प्रकार की अध्री और अपूर्ण कामनाए लेकर जाता है और उन्हीं के अनुसार दूसरा जन्म धारण करता है। इसी प्रकार के जन्म और मरण के चक्र में पटकर भटकता रहता है। यह मानव देह वड़े पुण्य कर्मों से प्राप्त हुआ था। उसका सदुपयोग न करके इसका दुरुपयोग किया। इसका सदुपयोग था स्रोत्म-ज्ञान प्राप्ति द्वारा मोक्ष लाभ । वह किया नही । खरीदना तो था ब्रह्म-ज्ञान रूपी सोना श्रीर आति तथा श्रज्ञान वया वरीद वैठा पीतल । यह पीतल क्या है ? ससार के भोग ग्रीर विलास । मानव देह की प्राप्ति का उद्देश्य तो वास्तव मे मोक्षलाभ करना था पर वह नहीं किया। समार के भोग तो दूसरी योनियों में भी भोगे जा सकते हैं और मन तथा उन्द्रियों की तृष्ति भी हो सकती है। जिस प्रकार ग्राप बढिया स्वादिष्ट मिठाई तथा नाना प्रकार के व्यजन खाकर तृप्त होते है, इसी प्रकार शूकर विष्ठा याकर तृष्त हो जाता है। भ्रव भ्राप ही वताएँ कि उस शुकर भीर मनुष्य मे क्या मन्तर है ? इस मनुष्य देह का उद्देश्य तो ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त करना था, इस भ्रोर तो ध्यान नही दिया। जो कत्तंव्य था उसका पालन नही किया और व्यर्थ इघर-उघर विषयो के पीछे-पीछे भटक-भटककर जीवन वर्वाद कर दिया और ब्रह्म-ज्ञान से विचत होकर ही गगार से जाना पटा। हीरे के समान श्रमूल्य जीवन को गुजा के बदले दे बैठे। परन्तु हम समक नही आ रही है। सारा जीवन वेद-शास्त्रो की वातें सुनते होगया। बूढे होगए है, किन्तु टस मे मस नहीं होते। प्रतिवर्ष यहा पर सैकड़ों विद्वान् ग्राते हैं ग्रीर उपदेश देकर चले जाते हैं, किन्तु खेद हैं कि ग्राप एक कान से सुनते हैं ग्रीर दूसरे ने निकाल देते हैं। ग्रापके जीवन पर उसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। जैसे म्राप यहा पर बैठे सुन रहे है ऐसे ही सारा जीवन सुनते-सुनते होगया है। यहा पर हमे एक दृष्टान्त स्मृरण हो ग्राया है। एक समय की वात है कि एक महात्मा एक सभा मे ज्ञान ग्रीर वैराग्य पर उपदेश दे रहे थे। सव श्रोता सुन रहे थे। एक राज-कुमार भी वहा पर भ्रमण करता हुग्रा ग्रा निकला। वह घोडे पर सवार था, इसलिए वाहिर खडा होकर ध्यानपूर्वक महात्मा के उपदेश को सुनता रहा। राजकुमार का ग्रन्त करण ग्रत्यन्त निर्मल था इसलिए उस पर महात्मा के उपदेश का वहुत ग्रच्छा प्रभाव पडा । वह उसी समय ग्रपना घोडा छोडकर वन मे तपस्या करने चला गया ग्रौर यह प्रतिज्ञा की कि जिस प्रकार का उपदेश यहा सुना है मैं उसी प्रकार ग्रात्म-ज्ञान प्राप्त करूगा। यह सबसे वडा राजकुमार था। इसी को गद्दी प्राप्त करने का ग्रविकार था, किन्तु इसने राजसिंहासन को भी ठुकरा दिया ग्रीर ईश्वर प्राप्ति के लिए वन मे चला गया। वन मे रहकर कई वर्ष तक योग-साधन द्वारा ग्रात्म-ज्ञान प्राप्त किया। इसके पश्चात् उसके मन मे यह विचार ग्राया कि जिस महात्मा के सदुपदेश से मुक्ते तत्त्वज्ञान की प्राप्ति हुई है उस पूज्य गुरुदेव के चरणो मे धन्यवाद अर्पण करना चाहिए। वह उस महातमा के ग्राश्रम में गया। उसने वहा देखा कि गुरुदेव पूर्ववत् उपदेश दे रहे है और प्राय वे ही श्रोतागण जिन्हे उसने कई वर्ष पूर्व देखा था उनके उपदेश को सुन रहे है। राजकुमार ब्रह्मचारी था। जटाए वढी हुई थी। पूर्ण जितेन्द्रिय था। राजकुमार ने सत्सग में प्रवेश किया ग्रीर वहा बैठे जो लोग उपदेश मुन रहे थे उनमे से प्रत्येक का सिर हिलाया ग्रौर जव १०-२० व्यक्तियो का सिर हिँ ला चुका तव गुरुदेव ने पूछा, "महात्माजी । ग्राप्यह क्या कर रहे हैं ?" राजकुमार ने कहा, "महाराज, मैं यह देख रहा हू कि ये श्रोतागण मिट्टी या पत्थर की मूर्तिया है या जीते-जागते मनुष्य है। १२ वर्ष इन्को उपदेश सुनते होगए, किन्तु इनके ऊपर उपदेश का कोई प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है और न इनके जीवन में ही किसी प्रकार का परिवर्तन दिखाई दे रहा है। मैंने तो ग्रापका उपदेश केवल एक घण्टा ही सुना था, मैं तो उसी में कृतकृत्य होगया।"

राजकुमार के समान मनुष्य ही आत्म-ज्ञान का अधिकारी हो सकता है, विषया-सक्त नहीं। मुभे जिस गुरुदेव से आत्म-विज्ञान और ब्रह्म-विज्ञान प्राप्त हुआ था, धन्य है वे महात्मा । इतना तत्त्वज्ञान प्राप्त करके भी वे केवल भोजपत्र की कौपीन ही धारण किए हुए थे। लकडियो पर मिट्टी विछाकर एक छोटा-सा आसन वनाया हुआ था। वस, यही उनका विस्तर, आसन और घर था। अब उन्हें इस प्रकार के आत्य-न्तिक त्याग और तपश्चर्या की आवश्यकता नहीं थी। उनके लिए मखमली गद्दें और भोजपत्र दोनो समान थे। वे अत्यन्त ऊचे दर्जे के वीतराग और समदर्जी थे।

प्रवृत्ति का हेतु राग—राग प्रवृत्ति का हेतु होता है। जब तक राग की निवृत्ति न हो तब तक मन शान्त नहीं हो सकता। जब तक मनुष्य विपयों की ग्रग्नि से सतप्त रहता है तब तक उसे वैराग्य किस प्रकार हो सकता है। ग्रीर जब तक वैराग्य नहीं होता तबतक शान्ति भी प्राप्त नहीं हो सकती। ग्राप लोगों को उपदेश सुनते वर्षों वीत गए किन्तु बडे खेद की बात है कि ग्रापके चित्त चिकने घडे के समान है, इसलिए उनपर किसी भी उपदेश का ग्रसर नहीं होता,। जिस प्रकार चिकने घडे पर हएक बूद भी पानी की नहीं ठहरती, उसी प्रकार ग्रापके चित्तों पर उपदेशों का किचित्

मात्र भी ग्रसर नही होता। बूढे होने पर भी घर मे ही मरना पसन्द करते है। पुत्रो पर भाररूप होकर रहना ग्रधिक रुचिकर मालूम होता है। परिवार के सब सदस्य इनसे तग आ जाते हैं क्योंकि वे इनकी सेवा कर-कर के तग आ जाते हैं। सेवा करें भी कैसे, क्यों कि सेवा की भावनाए उनमें पैदा ही नहीं की जाती। श्राजकल के स्कूलों श्रीर कालिजों में धार्मिक शिक्षा दी नहीं जाती। इसीलिए श्राजकल के माता-पिता ग्रपनी सन्तानो की सेवा से वचित रहते हैं। विवाह होते ही युवक पुत्र ग्रपनी पत्नियो को लेकर पृथक हो जाते हैं ग्रीर वृद्ध माता-पिता उनकी सेवा से विचत रह जाते है। इतना कष्ट होते हुए भी ये घर में ही पड़े रहते हैं। युवक जैसी शिक्षा प्राप्त करते हैं वैसी ही भावनाए उनमे पनपती है। जब तक विद्यालयों में हमारी प्राचीन सभ्यता श्रीर सस्कृति की शिक्षा नहीं दी जाएगी तव तक युवकों के ग्रन्दर घार्मिक भावनाए ग्रीर श्राध्यात्मिक विचार उत्पन्न नहीं हो सकते। हमारी तथा विदेशी सभ्यता श्रीर सस्कृति तथा धर्म ग्रीर शिक्षा मे महान् ग्रन्तर है। हमे ग्राख वन्द करके तथा विना सोचे-समभे पश्चिमी सभ्यता का श्रनुकरण नहीं करना चाहिए। हम सभ्यता तो पश्चिमी अपना रहे हैं और मुख तथा शान्ति भारत की चाह रहे हैं। प्राचीन भारत मे केवल गृहस्थी घनोपाजंन करता था श्रोर वही ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ तथा सन्यास श्राश्रमो का पालन करता था। श्राघुनिक गृहस्थियों की योख्प की देखादेखी श्रावश्यकताए उननी यह गई है कि वे अपनी श्राय मे अपना ही जीवन सुखपूर्वक व्यतीत नहीं कर सकते। उनमे दूसरे ग्राथमो की सेवा ग्रथवा पालन-पोपण की वया ग्रांगा की जा सकती है।

जो लोग ससार के विषय-भोगो मे लिप्त हैं, जिनकी बुद्धि निश्चयात्मक नहीं हुई है, जो माधन-चतुष्टय सम्पन्न नहीं हुए है, श्रीर जिन्होंने समाधि के पूर्व की स्थिति प्राप्त नहीं की है, ऐसे मनुष्य यात्म-साक्षात्कार को प्राप्त नहीं कर सकते। श्राप्त नित्य विज्ञान नो मुनते हैं श्ररण्यवासियों का, किन्तु दिनरात ससार के भोग में श्रामक्त रहते हैं। हमें तो ऐसा प्रतीत होता है कि श्राप लोगों को ब्रह्म-विज्ञान का उपदेश देना वकरी के श्राग बीन बजाना श्रयवा श्ररण्यरोदन ही है। सारा जीवन उपदेश मुनते रहेंगे परन्तु करेंगे कुछ नहीं। जब करना ही कुछ नहीं तो भले ही श्राप हजार वर्ष नव उपदेश मुनते रहे, जन्मजन्मान्तरों तक मुनते रहे, तो भी कुछ प्राप्त नहीं होगा। यदि श्राचरण किया जाए तो एक दिन का ही उपदेश पर्याप्त होता है। राजकुमार ने एक घण्टा ही तो उपदेश मुना था। इससे उसके जीवन में महान् परिवर्तन होगया। उसने बन में जाकर कठिन तप श्रीर साधना करके श्रात्म-साक्षात्कार प्राप्त किया। हम यह नहीं कहते कि श्राप राजकुमार की तरह श्रभी वन में भाग जाश्रो, किन्तु हम उतना श्रवय्य चाहते है कि ५० वर्ष तक गृहस्थ भोगने के पश्चात् वानप्रस्थ प्राथम में प्रवेश करके श्रीर ससार के भोगों से उपराम होकर श्रात्म-ज्ञान प्राप्त करने के लिए यत्न करों। श्राप शान्ति की वातें तो करते है परन्तु उसके साधनों को जीवन में चित्तार्थ नहीं करते। शान्ति कैसे प्राप्त हो। बूढे-बूढे भी दिनरात भोगों में श्रामक्त रहते है। श्राक्षिर इन भोगों का कभी श्रन्त तो होना चाहिए। शरीर नथा उन्द्रियों के शिथिल होने पर यदि श्रन्त हुश्रा तो इसमें क्या विशेपता है। महत्व की वात तो तब है कि युवा श्रवस्था में ही श्रविकारपूर्वक त्याग किया जाए। श्रन्यथा

मरने के वाद तो ये स्वय ही छूट जाएगे। ग्रभी कुछ पूर्व ही मैंने साधन-चतुप्टय की व्याख्या की थी परन्तु इतना ग्रीर वता देते है कि तितिक्षा के द्वारा जान ग्रीर वैराग्य को दृढभूमि किया जाए। जीवन मे इतनी सहनजीलता ग्रा जाए कि ग्रापित्त ग्राई हो, मुसीवत मे फस गए हो, दुख या सकट मे ग्रस्त होगए हो, उस समय उद्यम, साहस, वल, बुद्धि, पराकम, धैर्यादि वना रहना चाहिए। इनके स्थिर रहते हुए ग्रापके उद्देश्य की पूर्ति भी हो जाएगी ग्रीर सब क्लेजभी दूर हो जाएगे तथा जान्ति लाभ होगी।

अधिकारी गुरु तथा जिष्य—सावन-चतुष्टय सम्पन्न होकर किसी ग्रान्म-जानी गुरु की जरण मे जाना चाहिए। इस सम्बन्घ मे उपनिपद् का वचन है —

परीक्ष्य लोकान् कर्मचित्तान् निर्वेद ब्राह्मणो निर्वेदमापन्नास्त्यकृत कृतेन । तिंद्वज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्सिमित्पाणिः श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्टम् ॥

इसका भावार्थ यह है कि ससार के भोग ग्रीर कर्मों को भली प्रकार सोच विचार कर परीक्षा करके इस विद्वान् को वैराग्य हुग्रा है। इस विद्वान् को ग्रात्म-ज्ञान ग्रीर व्हा की प्राप्ति के लिए सिमधा लेकर गुरु के पास जाना चाहिए। वह गुरु केसा हो, इस विषय मे उपनिपद् कहता है कि वह पूर्ण विद्वान् हो। ग्रात्म-ज्ञानी ग्रीर ब्रह्म-ज्ञानी हो। जब जिप्य श्रद्धा ग्रीर भिक्त पूर्वक ऐसे गुरु के पास जाता है तव वह इसे ग्रात्म-ज्ञान ग्रीर व्रह्म-ज्ञान प्रदान करता है। गुरु के विषय मे उपनिपद् का कथन है —

तस्मै स विद्वान्नुपसन्नाय सम्यक् प्रशान्तिच्ताय समन्विताय। येनाक्षर पुरुष वेद तत्य प्रोवाच्य त तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम्।।

श्री भगवान् कृष्णचन्द्रजी के ग्रात्म-ज्ञान के गुरु ब्रह्मिप उपमन्यु थे। जब ये ऋषि श्रपने गुरु गीतम के पास गए तव उन्होंने श्री गीतम से श्रात्म-ज्ञान की जिज्ञामा की, तव गौतम ने इन्हे ग्रादेश दिया कि हमारी गौजाला की गायो को वन मे चराने के लिए ले जाम्रो। जब इनकी सख्या एक हजार हो जाए तव लीट कर म्राना। उस समय यदि योग्य समभेंगे तव तुम्हे ग्रात्म-ज्ञान प्रदान कर दिया जाएगा । उपमन्यू गायों को चराने वन में चले गए। उस वन के समीप कोई वस्ती नहीं थी जहां से वै भिक्षा मागकर लाते, ग्रत भोजन का कोई ग्रन्य साधन न देखकर वे गायो के दूध ने उदरपूर्ति कर लेते थे। कुछ काल के पञ्चात् गौतम ने उपमन्यु को बुलाया यीर गायों का सब समाचार पूछने के उपरान्त उनके भोजन की व्यवस्था के बारे मे पूछने पर विदित हुम्रा कि उपमन्यु म्रावय्यकतानुसार वछडो के पी लेने के उपरान्त गायों का दूध पीकर निर्वाह कर लेते थे क्योंकि भिक्षाचर्या के लिए वन के आसपास कोई गाव नहीं था। महर्षि गौतम से आज्ञा प्राप्त किए विना ही ये गायों का दुग्यपान करते रहे थे, ग्रत गुरुदेव ने इन्हें गायों का दूध पीने से मना कर दिया। उन्हें यह सदेह हो गया था कि कही उपमन्यु के प्रति दया भाव रखकर वछडे स्वय दूध कम पीकर ग्रियिक दूध उसके लिए छोंड देते हो। गुरु ने शिप्य को पुन गायो को चराने के लिए वन मे जाने का ग्रादेश दिया। जब उपमन्यु को भूख लगी ग्रीर उसे कोई ग्रन्य साधन क्षुधा को ज्ञान्त करने का वन मे उपलब्ध नही हुआ तव उसे एक उपाय सूक्षा। अव उसने गायो का दूघ तो नही पीया, किन्तु दूध पीने के उपरान्त वछडो के मुह से जो दूव की भाग सी निकलकर भूमि पर गिर जाती थी उसे उठाकर खाना प्रारम्भ कर

दिया। नीचे गिरी हुई भाग किसी काम तो ग्रा नहीं सकती थी। व्यर्थ ही जाती, ग्रतः इससे ग्रननी क्षुषा शान्त की। जब उपमन्यु को वन में गए वहुत दिन होगए ग्रोर वह कहीं दिखाई नहीं दिया तब गौतम महर्षि ने ग्रनने ब्रह्मचारियों के द्वारा उसे .बुलवाया ग्रौर उसका सर्व समाचार ज्ञात किया । पूछने पर मालूम हुग्रा कि उपमन्यु म्रव दूच नहीं पीते किन्तु दूव पीते समय वछड़ों के मुंह से जो भाग नीचे जमीन पर गिर जाती है उसे बाकर निर्वाह करते रहे हैं। गुरुजी ने कहा, "वछड़े ग्राप पर दया करके वहुत भाग गिराते होंगे ग्रौर स्वयं भूखे रह जाते होंगे, ग्रतः ग्रापके लिए भाग खाना उचित नहीं है, ग्राज से झाग मत खाया करना।" वह गुरु-ग्राज्ञा पाकर पुनः गायों को चराने के लिए वन में चला गया। कई दिन तक उसने कुछ नहीं खाया। खाता भी क्या ! वहां खाने के लिए कुछ था ही नहीं। एक दिन वह ग्रत्यन्त क्षुधार्त होगया। वन में वृक्षों के पत्तों ग्रीर घासफूसादि के ग्रतिरिक्त कुछ नहीं था, ग्रतः गायों के समान इसने भी पत्ते लाना प्रारम्भे कर दिया। कुछ दिनों में पतमः ऋतु ग्रागई। वृक्षों के सब पत्ते सूख गए। पेड़ों के सब पत्ते भड़ गए। ग्रव जंगल में कुछ खाने के लिए नहीं रहा। कई दिन तक कुछ नहीं खाया। शरीर ग्रत्यन्त कुश होगया। शक्ति कम होगई। क्षुवा के मारे अत्यन्त व्याकुल होगए। इन्हीं दिनों वसन्तागम होगया। सर्वप्रथम इस ऋतु में अर्क की कोंपलें निकलनी प्रारम्भ हुई। उपमन्यु ने इन्हें ही खाकर अपनी क्षुधा निवृत्ति करना प्रारम्भ कर दिया। जब भूख लगती तो वे इन नए-नए पत्तों को भक्षण करके दिनों ही तक अपनी क्षुया ज्ञान्त करते रहे। लगातार कई दिनों तक पत्तों के खाने से उनके शरीर में अत्यन्त खुरकी होगई और उष्णता भी वहुत वढ़ गई। इतके परिणामस्वरूप इनकी नेत्रज्योति नष्ट होगई ग्रौर दीखना विल्कुल वन्द होगया। ऐसी अवस्था में एक गाय की पूंछ पकड़कर गायों को चराने के लिए जाने लगे। जिधर वह गाय जाती उधर ही वह चले जाते थे। ये गायें सब भुण्ड में ही चलती थीं और एक ही स्थान पर एकत्रित होकर बैठ जाती थीं। दैवयोंग से एक दिन वड़ी भारी यांधी याई ग्रौर वर्षा भी होने लगी। सभी गायें इवर-उधर भागने लगीं। इसी गड़वड़ में दुर्भाग्यवशात् उपमन्यु के हाथ से गाय की पूंछ छूट गई। गायों को एकत्रित करने के लिए जब वह इथर-उधर भटकता फिर रहा था तब एक कूएं में गिर पड़ा। वहां पर उसे कुछ थोड़ा सा ग्रवलम्व मिल गया, उसी के सहारे वहां टिका रहा । इसी प्रकार कई दिन व्यतीत होगए। गुरुजी ने अपने शिप्यों को उपमन्यु को ढूंढकर पास बुलाने के लिए वन में भेजा। उन्हें वह कहीं भी वन में दिखाई न दिया, अतः निराश होकर लौट आए। तव ब्रह्माप गौतम स्वयं ढुंडने के लिए गए और वन में जाकर उपमन्यु को जोर-जोर से आवाजें लगाईं। इसमें गुरुजी की आवाज को पहिचान लिया और कूएं में से ही चिल्लाकर कहा, "गुरुजी, मैं कूएं में गिरा पड़ा हूं।" गुरुजी ने तुरन्त उसे कूएं से निकाला और उसे अंवा देखकर बहुत दु: बी हुए। उसे एक श्रुति का मंत्र उच्चारण करने का ग्रादेश दिया। मन्त्रोच्चारण करते ही उसकी ग्रांखों में पूर्ववत् ज्योति ग्रागई ग्रौर इसके पश्चात् गुरुजी ने ज्योंही उसके मस्तक पर हाथ फेरा त्योंही वह समाविस्थ होगया ग्रौर ग्रात्म-साक्षात्कार लाभ हुग्रा।

श्राचार्य लोग कठिन परीक्षा लेने के उपरान्त जब शिष्य को ग्रात्म-ज्ञान का श्रिधकारी समक्ष्ते थे तभी श्रात्म-साक्षात्कार करवाते थे। एक ग्राप हैं जो घर में

आराम से बैठकर सभी प्रकार के लौकिक सुखो का उपभोग करते हुए आत्म-साक्षा-त्कार करना चाहते है। आप घर मे ही रहकर भोग और मोक्ष दोनो को प्राप्त करना चाहते हैं। ये दोनो साथ-साथ नहीं चल सकते। जहां भोग है वहां मोक्ष नहीं और जहां मोक्ष है वहां भोग नहीं। भोग का फल दुख और दुखों से छुटकारा मोक्ष है।

साधन के श्रनुरूप प्राप्ति—स्त्राप तत्त्व-ज्ञान की प्राप्ति के लिए विलदान कुछ नहीं करना चाहते और प्राप्ति का लक्ष्य बहुत ऊचा बनाए बैठे हैं। इस प्रकार के बहुत ऊचे तत्त्व-ज्ञान की प्राप्ति के लिए हमारे ऋषियों और मुनियों ने गृह परित्याग करके ऐहिक सुखों से मुह मोडकर वर्षों ही बनों में वास करके तप और साधना की थी। उनमें भी किसी विरले को ही तत्त्व-ज्ञान लाभ होता था। गीता में इसी बात का प्रतिपादन किया गया है —

## मनुष्याणा सहस्रेषु कश्चित् यतित सिद्धये।

ग्राप मेरे ही जीवन को देखें। मैं १४ वर्ष की ग्रायु से ही घर के सब प्रकार के सुख, ग्राराम तथा भोगों का परित्याग करके ग्रात्म-ज्ञान ग्रीर ब्रह्म-ज्ञान के ग्रनु-संधान में लगा हुग्रा हूं। इतने दीर्घकाल तक ग्रनेक संघर्षों का सामना किया है। तप, त्याग, शम, दम, उपरित तथा तितिक्षा को जीवन में चरितार्थ करने के लिए महान् प्रयत्न किया है। इसके परिणामस्वरूप मुभे जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति हुई है ग्रीर तत्त्व-ज्ञान लाभ करके परम सन्तोप प्राप्त हुग्रा है।

जो व्यक्ति जिस प्रकार की कामना ग्रथवा उद्देश्य को लेकर प्रयत्न करता है उसको उसकी प्राप्ति अवश्य होती है। सासारिक लोग ससार के भोग और ऐश्वर्य की उपलब्धि के लिए प्रयत्न करते हैं, उनमें से ग्रधिकाश को ये अवश्य प्राप्त होते हैं। जो मोक्ष-प्राप्ति के लिए यत्नशील होते हैं और तदनुकूल साधनों को ग्रपनाते हैं उन्हें मोक्ष प्राप्त हो जाता है।

श्रेय श्रौर प्रेय मार्ग--ससार मे दो प्रकार के मार्ग है। एक श्रेय तथा दूसरा प्रेय। ग्राप लोगों ने प्रेय-मार्ग को ग्रपनाया है श्रौर इसी मार्ग पर चल रहे है। यह मार्ग देखने में ग्रत्यन्त प्रिय मालूम होता है किन्तु इसका ग्रन्तिम परिणाम दु खदायी होता है। यह 'विषकुभ पयोमुखम्' की तरह से है। यह मार्ग इस प्रकार का घडा है जिसके भीतर विष ही विष भरा है किन्तु उसके मुह पर थोडा सा दूध है। इस थोडे से दूध के लालच में फसकर जो दूध पीना चाहता है उसे विप पान भी करना पडता है। ससार के विषय ग्रौर भोग सेमर के फल के समान है जो दूर से देखने में वडा सुन्दर प्रतीत होता है किन्तु जब उसे चखने लगते है तो कुछ भी हाथ नहीं ग्राता। उसके ग्रन्दर तो रूई होती है जो हाथ लगाते ही उड़ जाती है। इसके विपरीत दूसरा मार्ग श्रेय-पथ है। यही मार्ग ऐसा है जिस पर चलकर सच्चा सुख ग्रौर शान्ति प्राप्त हो सकती है। इसका समर्थन उपनिपद् इस प्रकार करता है —

श्रेयरच प्रेयरच मनुष्यमेन
स्तो सम्परीत्य विविनिक्त धीर ।
श्रेयो हि धीरोऽभिप्रयसो वृणीते
प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते ॥

यदि वास्तव में सच्ची जिज्ञासा ग्रीर हार्दिक इच्छा तत्त्व-ज्ञान ग्रीर मोक्ष प्राप्ति की ग्राप लोगों की है तो इस श्रेय-मार्ग पर चलकर कल्याण के भागी वनें। हमारे जीवन का ग्रनुभव तो यह है कि गुरु के विना ग्रात्म-ज्ञान या ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। जिस प्रकार विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में गुरुग्रों के पास पढ़ कर लौकिकी-विद्या प्राप्त की जाती है इसी प्रकार ग्रध्यात्म-विद्या भी ब्रह्म-ज्ञानी गुरुग्रों से प्राप्त की जाती है। ग्रभी-ग्रभी मैंने ग्रापको वताया था कि उपमन्यु ने ब्रह्मार्ष गौतम से ग्रात्म-ज्ञान प्राप्त किया था। इसी प्रकार इन्द्र ने प्रजापित से, निचकेता ने यमाचार्य से इस ब्रह्म-ज्ञान को प्राप्त किया था। इस प्रकार के सैकड़ों उदाहरण ग्रापको वैदिक साहित्य के ग्रध्ययन से मिलेंगे। ग्राप भी किसी ग्रात्म-ज्ञानी गुरु की शरण में जाकर ग्रध्यात्म-ज्ञान प्राप्त करें। तभी ग्राप मानव जीवन की सफलता लाभ करके कृतकृत्य हो सकते हैं।

### म्रात्म-ज्ञान प्राप्ति का ऋम

पिछले व्याख्यानों में मैंने, ग्रात्म-ज्ञान की प्राप्ति के ग्रधिकारी वनने के लिए किस प्रकार की योग्यता मनुष्य में होनी चाहिए इस विषय पर ग्रापको समभाया था। ग्रव ग्राप साधन-चतुष्टय सम्पन्न होकर ग्रात्म-द्वार पर पहुंच गए हैं। इसलिए ग्राज ग्रात्म-ज्ञान की प्राप्ति तथा उसकी प्राप्ति के साधनों पर प्रकाश डांला जाएगा।

. **ग्रात्मा के तीन दुर्ग**—इस ग्रात्मा के तीन दुर्ग हैं ग्रथवा तीन द्वार हैं। प्रथम दुर्ग स्थूल शरीर है। दूसरा दुर्ग सूक्ष्म शरीर तथा तीसरा कारण शरीर है। ये तीनों हुर्ग ग्रात्मा के ऊपर एक प्रकार के कोष के रूप में हैं। इन तीनों शरीरों में ग्रन्तिम जो कारण शरीर है, इसमें चित्त वर्तमान है। इसी में ग्रात्मा का निवास स्थान है। प्रथम दुर्ग स्थूल शरीर है। इसमें दो प्रवेश द्वार हैं। एक को मूलाधार कहते हैं ग्रौर दूसरे को भूमध्य या त्रिकुटि । जब अभ्यासी साधक ध्यान-योग में बैठे तब इन्द्रियों ग्रीर मन को समाहित करके नेत्रों को वन्द करे तथा मस्तिष्क को ढीला छोड़ दे। भूमध्य में एक प्रकार की शान्त, मधुर ग्रौर कोमल सी दृष्टि डाले। एक प्रकार के ग्रलौकिक दिंच्य प्रकाश की भावना पैदा करे ग्रथवा कल्पना सी करे। इस भावना के ग्राधार पर कुछ काल के ग्रभ्यास से एक दिव्य ज्योति का प्रादुर्भाव होगा। यह दिव्य ज्योति क्या है और किसकी है ? यह दिव्य ज्योति वास्तव में सूक्ष्म नेत्र या दिव्य नेत्र की ज्योति है। जब स्थूल नेत्र खुले होते हैं तब ये स्थूल नेत्र वाहिर के पदार्थी को दिखाते हैं। वास्तव में इन स्थूल नेत्रों में जो प्रकाश ग्राया है वह सूक्ष्म नेत्र का ही है। इनके बन्द होने पर सूक्ष्म नेत्र भीतर के पदार्थों को दिखाने लगता है। स्थूल नेत्रों से जब हम बाहिर के पदार्थों को देखते हैं तब वाहिर का प्रकाश—सूर्य, चन्द्र, दीपकादि सहायक होते हैं और जब स्थूल नेत्रों को वन्द कर लेते हैं तब सूक्ष्म नेत्र के देखने में ग्रन्दर के ग्रालोक सहायक होते हैं। वे भीतर के ग्रालोक कौन से हैं? स्थूल शरीर में जो अग्नि तेज के रूप में सहकारी उपादान कारण वना वह तेज हमारे शरीर के भीतर ग्रग्नि के रूप में भी विद्यमान है। दूसरा तेज रूप तन्मात्रा भी हमारे भीतर है। ये ही अन्दर के स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर के पदार्थों को दिखाने में सहायक होंगे। इस अभ्यास के अन्दर एक और 'विशोका ज्योतिष्मती'

नामक वुद्धि उत्पन्न होती है जो ग्रन्दर के ग्रतीन्द्रिय पदार्थों का यथार्थ साक्षात्कार करवाने में सहायक होती है। योगदर्शन में 'विशोका वा ज्योतिष्मती' इसका लक्षण वताया है। इसका भावार्थ यह है कि इस ग्रभ्यास से बुद्धि ग्रत्यन्त ज्ञानयुक्त ग्रीर प्रकाशयुक्त हो जाती है ग्रीर पदार्थों के स्वरूप का यथार्थ निर्णय देने मे समर्थ हो जाती है। इस प्रकार की वुद्धि या सूक्ष्म नेत्र का दिव्य प्रकाश भ्रूमध्य मे श्रनुभव होने लगता है। यदि जिज्ञासु नेत्र खोलकर भ्रमध्य मे ध्यान करता है तव भी उसे यह ज्योति दिखाई देती रहती है। ग्राख खोलकर जो ध्यान किया जाता है उसे 'उन्मुनी मुद्रा' कहते है। यदि 'उन्मुनी मुद्रा' द्वारा योगी ग्रन्दर प्रवेश नहीं करना चाहता तब वह नेत्र बन्द करने से जो ग्रन्दर विशोका नाम की ज्योतिष्मती बुद्धि उत्पन्न हुई ह उस ज्योति को लेकर सूक्ष्म नेत्र से शरीर में प्रवेश करे। यदि वह सूक्ष्म शरीर में प्रवेश नहीं करना चाहता और स्थूल शरीर के भीतर के पदार्थों को देखना चाहता है तव वह इसी ज्योति से या विशोका नाम की ज्योतिष्मती वुद्धि के प्रकाश से स्थूल शरीर के भीतर हृदय, ग्रस्थि, मज्जा, मेद, नस, नाडिया, ज्ञानवाहक सूक्ष्म तन्तुओं का साक्षात्कार कर सकता है। चक्र-विज्ञान, प्राण-विज्ञानादि को भी देख सकता है, समभ सकता है भ्रौर उनका साक्षात्कार कर सकता है। इसके अनन्तर स्थूल शरीर का भान या अध्यास समाप्त होने लगता है और योगी अपने को ऐसा समभने लगता है मानो इस दिव्य ज्योति से उसका सारा शरीर देदीप्यमान होगया है। ऐसा अनुभव होने लगता है मानो अब वह हाड-मासादि के गरीर से ऊपर उठ गया है ग्रीर उसका शरीर दिव्यज्योतिर्मय होगया है। वह ग्रत्यन्त स्वच्छ, निर्मल तथा सात्विक भावनाम्रो से भरपूर होगया है।

सूक्ष्म शरीर मे प्रवेश—स्थूल गरीर के भीतर के पदार्थों का साक्षात्कार कर चुकने के वाद इसी दिन्य ज्योति के सहारे सूक्ष्म गरीर मे प्रवेग करे। यह १७ तत्त्वों का बना हुम्रा है, म्रर्थात् ५ ज्ञानेन्द्रिया, ५ कर्मेन्द्रिया, ५ तन्मात्रा, मन म्रीर वृद्धि। कई म्राचार्यों ने पच तन्मात्राम्रों के स्थान पर पच प्राणों को लिया है परन्तु पंच प्राणों की यहां कोई उपयोगिता नहीं है क्योंकि सूक्ष्म प्राण तो सदा ही सूक्ष्म गरीर मे रहता ही है। इसलिए इन स्थूल प्राणों की म्रावश्यकता सूक्ष्म गरीर को नहीं रहती। ये तो वामु महाभूत का कार्य होने से इस स्थूल शरीर के साथ ही समाप्त हो जाते हैं। सब म्राचार्यों ने इस शरीर को पाचभौतिक माना है। इन पचभूतों में प्राण के रूप में पाचवा भूत वामु है। यह प्राण रूप से इस शरीर की रचना में सहकारी कारण रूप से प्रविष्ट हुम्रा है। हमने स्थूल प्राण को सूक्ष्म शरीर में स्थान नहीं दिया है। इनके स्थान में हमने पचतन्मात्रा को सूक्ष्म शरीर में माना है क्योंकि पचतन्मात्रा सूक्ष्म शरीर के निर्माण में उपादान कारण हैं। जिस प्रकार पचभूत स्थूल शरीर के निर्माण में उपादान कारण हैं। मत पचप्राणों का सूक्ष्म शरीर में मानना निरर्थक है। जो सूक्ष्म शरीर में पचप्राण मानते हैं उनसे पूछना चाहिए कि इस सूक्ष्म शरीर के निर्माण में उपादान कारण क्या है ने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते।

सूक्ष्म शरीर का निर्माण--ग्रव ग्रापको यह वताया जाता है कि इस सूक्ष्म गरीर का निर्माण कैसे होता है। जब ईश्वर के सान्निध्य से ब्राह्मी सृष्टि की उत्पत्ति होती है नव उसमे तीन प्रकार की माहकारिक सृष्टि उत्पन्न होती है—सात्विक, राजम ग्रीर तामम । सात्विक तथा राजस ग्रहकार दोनो मिलकर समण्टि मन को उत्पन्न करते है श्रीर सत्वप्रवान श्रहकार से समिष्ट ज्ञानेन्द्रियो की उत्पत्ति होती है स्रीर रज प्रवान ग्रहकार से कर्मेन्द्रिया उत्पन्न होती है। मुख्य रूप से तम प्रधान ग्रहकार श्रीर गीण रूप मे राजम श्रीर सात्विक ग्रहकार पचतन्मात्राग्री की उत्पत्ति करते हैं। मन, ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों में भी दूसरे ग्रहकार गौण रूप से सहकारी उपादान कारण बनते है अर्थात् मन के निर्माण में सत्व ग्रीर रज प्रवान किन्तु तम गीण रूप मे महायक उपादान कारण है, जानेन्द्रियों के निर्माण में सादिवक श्रहकार प्रयान किन्तु राजस श्रीर तामस गीण रूप से हैं, कर्मेन्द्रियों के निर्माण में रज प्रधान ग्रहकार मुस्य ग्रीर सात्विक तथा राजस ग्रहकार गीण रूप से सहकारी उपादान कारण है। इन समिष्टियों से व्यप्टि की उत्पत्ति होती है। तम प्रवान श्रहकार से उत्पन्न हुई तन्मात्राए अथवा सूक्ष्म भूत उस गरीर के निर्माण मे उपादान कारण है। इसके पैन्चात् उन पचनन्मात्रीय्रो में पच स्थूल भूत उत्पन्न होते हे श्रीर स्थूल शरीर का निर्माण करते हैं। उन पचनन्मात्रात्रों से निर्मित सूक्ष्म गरीर सकोच-विकास वाला होता है। जिस किसी गरीर में यह प्रवेश करता है उसी के आकार-प्रकार का वन जाता है। चीटी से लेकर हाथी पर्यन्त जितने भी गरीरों में यह प्रविष्ट होता है उन्हीं के बराबर छोटा ग्रयवा बटा बन जाता है। हाथी के गरीर मे प्रविष्ट होगा तो विकास भाव को प्राप्त होकर बडा हो जाएगा ग्रीर चीटी मे प्रवेश करेगा तो सूक्ष्म भाव को प्राप्त होकर छोटा हो जाएगा। नवजात वालक ज्यो-ज्यो वडा होता जाता है त्यो-त्या यह सूक्ष्म शरीर भी विकास भाव को प्राप्त होता जाता है ग्रीर उसी के श्राकार के समान बट जाता है। शरीर में जो स्यूलेन्द्रिया—हाथ, पैर, श्राख, नाकादि हैं ये वाहिर के गोलफ है, ये स्वतन्त्र हप से कार्य करने मे असमर्थ है। इस स्थूल शरीर के अन्दर जो सूक्ष्म शरीर है, उसके अन्दर जो सूक्ष्मेन्द्रिया है, वे ही इन स्थूल इन्द्रियों को गर्म और ज्ञान करवानी है। मृत्यु के समय यह सूक्ष्म शरीर ही धर्माधर्म के सस्कारों को निकर पुनर्जन्म धारण करवाने के लिए गमन करता है। सूक्ष्म शरीर तथा कारण शरीर का गरा गयोग-मम्बन्ध बना रहता है। जिस प्रकार स्थूल शरीर का सूक्ष्म शरीर के साथ सम्बन्ध बना रहता है उसी प्रकार सूक्ष्म शरीर का कारण शरीर के साथ सम्बन्ध बना रहना है। जब तक स्थूल शरीर रहेगा तब तक इसमे सूक्ष्म शरीर अवश्य रहेगा और जब नक सूक्ष्म भरीर रहेगा तब तक कारण गरीर भी इसके साथ रहेगा, नयाकि पाप और पुण्य के, धर्म और अधर्म के सस्कार चित्त में रहते है और चित्त कारण गरीर में रहता है।

योगी का सूक्ष्म दारीर में प्रवेश—जब योगी ग्रात्मा के पास पहुचना चाहता है ग्रयवा जब ग्रात्म-साक्षात्कार करना चाहता है तब उसे स्थूल जरीर का भान ग्रयवा ग्रथ्याम जाना रहता है। उसका विस्मरण हो जाता है। तभी यह सूक्ष्म शरीर में प्रवेश पाता है। उस मगय उसे ऐसी ग्रनुभूति होती है जैसे कि उसका सारा शरीर ग्रत्यन्त देवीप्यमान होगया हो। इसके देवीप्यमान सूक्ष्म अरीर के लिए योगदर्शनकार ग्रत्यन्त देवीप्यमान होगया हो। इसके देवीप्यमान सूक्ष्म अरीर के लिए योगदर्शनकार ग्रत्यन्त मुक्ष्म शरीर के दर्शन का इस प्रकार वर्णन किया है—'सूर्द्धज्योतिषि सिद्धदर्शनम्।' मूर्द्धा में वहुन काल तफ ध्यान करने से ग्राकाश में गमन करने वाले सूक्ष्मशरीरा-

भिमानी योगियों के दर्शन होते हैं। ध्यान काल में दिव्यगरीरधारी स्वर्गनिवासी भगवान् कृष्ण या शकर अथवा विष्णु भगवान् या अन्य योगी अथवा गुरुजन भले ही वे दिव्य लोक वासी हो उन सबके दर्शन होते हैं। जिस प्रकार यह स्थूल सृष्टि पच-भूतों के लोक में विद्यमान है उसी प्रकार सूक्ष्म सृष्टि पचतन्मात्रा के लोक में सूक्ष्म-शरीराभिमानियों की विद्यमान है।

पचतन्मात्राम्नो का लोक — सूक्ष्मजरीराभिमानियो की सूक्ष्म मृष्टि पचतन्मात्राम्नो के लोक मे, इस दिव्य तन्मात्रा के लोक मे सूक्ष्मजरीराभिमानी व्यक्ति
सूक्ष्म जगत् के भोगो को भोगता है क्योंकि यह भी भोगप्रधान स्थान ही है। यहा
केवल सकल्प मात्र से ही दिव्य गध, दिव्य रूप, दिव्य रसादि की उपलब्धि होती है।
किसी प्रकार के प्रयत्न विशेष की म्रावश्यकता नहीं होती। यह भी एक प्रकार से
भोगप्रधान योनि ही है। इसमें सत्व प्रधान होता है। स्यूल जगत् में भी पशु-पक्षी
म्रादि भोग-योनिया है। इनमें तम प्रधान होता है। भोग की दृष्टि से ये दोनो समान
है। केवल सत्वगुण तथा तमोगुण का ही भेद है। पचतन्मात्राम्नो के लोक में जो सूक्ष्मशरीराभिमानी योनिया है वे सत्वप्रधान है भीर स्थूल जगत् में पशु-पक्षी म्रादियों
की योनिया तम प्रधान है। ये स्वर्गवासी दिव्य म्रात्माए दिव्य तन्मात्राम्नो का उपभोग
करके म्रानेक मन्वन्तरों के पश्चात् इसी मानव देह को धारण करके परम वैराग्य प्राप्त
करते हैं जिसके कारण दिव्य भोगों से भी विरक्त होकर उस परमधाम को प्राप्त करते
हैं जहा किसी भी प्रकार का भोग नहीं है। वहा किसी जरीर का सम्बन्ध नहीं रहता
है। न सूक्ष्म शरीर से कुछ सम्बन्ध होता है ग्रीर न कारण शरीर से ही। यही वास्तव में
यथार्थ मोक्ष है जहा न भोग है, न मुख है ग्रीर न दु ख है। वहा न राग है न द्वेप हैं।
वहा म्रन्त करण का कोई धर्म नहीं। उस समय म्रात्मा की स्व-स्वर्प में स्थिति होती
है। इसी को कैवल्य भाव कहा गया है। यह कैवत्य भाव जव तक ३६ हजार बार
सृष्टि की उत्पत्ति म्रीर प्रलय नहीं हो जाती तब तक बना रहता है।

मैं श्रापको उस श्रेय-पथ पर ले जाना चाहता हू, जिसका मैंने श्रापसे सभी-श्रभी जिक्र किया था। यही वास्तविक कल्याण का मार्ग हे। यही श्रात्म-ज्ञान प्राप्ति का मार्ग है श्रीर इसी मार्ग पर चलकर ब्रह्म की प्राप्ति हो सकती है। इसी से निवृत्ति की श्रोर प्रवृत्ति होगी श्रीर इसी पथ के पथिक वनने से सर्व दु खो से विमुक्त हो सकोगे।

श्रात्म-प्राप्ति के प्रथम दुर्ग को पार करके अब हम इसके दूसरे दुर्ग सूक्ष्म शरीर में प्रवेश पा चुके है। जिस अवस्था या ध्यान काल में तुम्हारा गरीर तुम्हें तेजोमय प्रतीत होने लगे उस समय पूर्ण-रूपेण सूक्ष्मगरीर में अपनी स्थिति की भावना करें। इस समय नाना प्रकार के सूक्ष्म दृश्य सामने आने लगते हैं। अलौकिक सौन्दर्य से परिपूर्ण वन, उपवन, निदया, भरने, स्रोतादि तथा विविध प्रकार के तेजोमय दिव्य प्रकाश, दिव्य पुरुष, आकाग में गमन करते हुए जटाधारी महापुरुष अथवा दिव्य आत्माए दृष्टिगोचर होती हैं। इस सूक्ष्म शरीर में सूक्ष्म जगत् के अनेक पदार्थ ध्यान तथा समाधि में योगी को दिखाई देते है। योगी को इन दृश्यों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अपितु अपनी सूक्ष्म मेधा से अमुसंधानपूर्वक वास्तिवक विज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

जिन सूक्ष्म गरीरों ने ग्रभी जन्म धारण नहीं किया, जिनके लिए ग्रभी देश, काल, सामगी या माना-पिता ग्रादि भोक्तव्य साधन उपस्थित नही हुए, वे सूक्ष्म-गरीराभिमानी भी ग्राकाण में विचरते रहते हैं तथा स्वर्गवासी दिव्यगरीराभिमानी भी गगनमण्डल मे विचरा करते है। इनमें परस्पर क्या अन्तर है? इनका गमना-गमन ग्राकाश मण्डल मे क्यो होता है ? इसका विज्ञान प्राप्त करना भी ग्रावश्यक है। जैसे इस लोक में स्थून पदार्थों का विज्ञान प्राप्त करके उनका ठीक-ठीक उपयोग किया जाता है, इसी प्रकार सूक्ष्म जगत् के पदार्थों का तथा सूक्ष्म करीर का विज्ञान भी प्राप्त करना चाहिए श्रीर इनके उपयोग का भी ज्ञान होना चाहिए। इस सूक्ष्म शरीर मे प्रवेश पाने के बाद आत्म-विज्ञान का प्रारम्भ होना है, क्योंकि आत्मा अतीन्द्रिय पदार्थ है श्रीर नूक्ष्म शरीर के पदार्थ भी अनीन्द्रिय हैं। इन पदार्थों को देखने, समभने श्रीर नाक्षात्कार करने ने बुढि श्रत्यन्त सूक्ष्म श्रीर ऋतम्भरा वन जाती है। यही श्रात्म-साझातकार करवाने में मुल्य हेतु होती है। श्रतीन्द्रिय तथा सूक्ष्म पदार्थ मोटी बृद्धि के नाधारण पुरप के न देखने में श्राते हैं श्रीर न वह इन्हें समभ ही सकता है। मन, बुद्धि, चित्त नथा सूदमेन्द्रियादि का व्यवहार तो नित्यप्रति करते हैं किन्तु इनके विज्ञान से हम अनिभन है। उस विज्ञान को योगी सूक्ष्म गरीर मे प्रवेश पाकर ही प्राप्त कर सकता है उयोकि ये मन, बुद्धि आदि सूक्ष्म भरीर के ही अग है। इनका भीर सूक्ष्म गरीर का अगागीभाव है। जब योगी सूक्ष्म भरीर मे प्रवेश करता है तब इन गुध्म श्रीर श्रतीन्द्रिय पदार्थों को साक्षात्कार करता है।

ब्रह्मरध्न प्रवेश-उस सूक्ष्म गरीर मे योगी को सर्वप्रथम ब्रह्मरध्न मे प्रवेश करना चाहिए। यहा पर सबसे पहिले उसे ज्ञान ग्रीर कर्मेन्द्रियों के केन्द्र दृष्टि-गोचर होगे। ये छोटी-छोटी नारिकाम्रो के समान दिखाई देंगे। इनसे छोटी-छोटी मुध्म किरणे सी निकलती हुई दिलाई देती है। इस स्थान में ज्ञानेन्द्रिया तथा क्येंन्ट्रिया, मन ग्रीर बुद्धि सभी प्रकाशमय हैं। इन सबसे दिव्य ज्योतिया निकतनी रहनी है। जब योगी उनके पारस्परिक व्यवहार को होते हुए देखता है तब इनकी गनियों श्रीर व्यापारों को देखकर महान् श्राव्चर्य करता है। इन सबका व्यापार ग्रत्यन्त मीघ्र होता है। एक ही क्षण में मारा व्यापार सम्पन्न हो जाता है। इतने मुध्म नगय मे उनकी गति ग्रीर व्यापार को देखना, समभना ग्रत्यन्त कठिन हो जाता है गयोकि ये सब एककालावच्छेदेन सब अपने-अपने कर्म और व्यापार मे लगे रहते है। उन मा सब व्यापार होता तो कमपूर्वक ही है किन्तु यह सब अत्यन्त द्रुतगित से होता है श्रीर देखने वाले को ग्रालातचक के समान ऐसा मालूम होता है मानो एक ही नमय में एक ही क्षण में यह सब कुछ एक साथ ही हो रहा है। योगी को अपनी ध्याना-वस्था में किसी स्थलेन्द्रिय के ज्यापार को स्वय देखना चाहिए। ध्यानावस्था में वह जिल्ला के व्यापार को भनी प्रकार से प्रत्यक्ष कर सकता है। जिल्ला को तालू से स्पर्श करके ब्रह्मरश्च मे दिन्य दृष्टि से देखे कि वहा सूक्ष्मस्पर्शेन्द्रिय पर इसका क्या प्रभाव पड रहा है और किस प्रकार उसमे कम्पन, गिन तथा स्पन्दन हो रहा है, किस प्रकार रथुलेन्द्रिय ने विषय को ग्रहण करके सूक्ष्म स्पर्जेन्द्रिय को दिया है। फिर मन ने इस रपर्य नप विषय को नकर बुद्धि को प्रदान करके एक क्षणार्ध से भी कम समय मे बुद्धि में यह निर्णय करवाकर कि यह किस वस्तु का कैसा स्पर्श है इसको पुन सूक्ष्मेन्द्रिय ग्रीर तत्पञ्चात् स्थूलेन्द्रिय के द्वारा वाहिर फैक देता है। इस प्रकार से विषय के ज्ञान का कर्म व्यापार प्रत्यक्ष ग्रनुभव करके देखने से पदार्थों के साक्षात्कार के साथ-साथ ग्रात्म-दर्जन की योग्यता भी प्राप्त हो जाएगी।

जब योगी समाधि की अवस्था में होता है तब स्थूलेन्द्रिय पर बाहिर के विषय का जब आघात होता है तब इस विषय का प्रभाव स्थूलेन्द्रिय के ज्ञान और गितवाहक सूत्रों पर पडता है। ये उस विषय को लेकर ब्रह्मरिश्न में जाकर सूथ्मेन्द्रियों पर फेंक देते है। इन ज्ञान और गितवाहक तन्तुओं में वह विषय पिरणाम भाव को प्राप्त होकर सूक्ष्म तन्मात्रा के रूप में हो जाता है। नभी सूक्ष्मेन्द्रिया इसे बिषय को लेकर किया शील हो जाती है। इनके कम्पनों का प्रभाव मन पर पडता है और मन इनके कम्पनों के विम्व को ग्रहण करके बृद्धि के मण्डल में गितिशाल हो जाता है तथा बृद्धि उस प्रतिविम्वित मन के विषय का निर्णय क्षणार्थ में ही कर देती है। विद्युत् की चमक के समान यह सब मन और बृद्धि का व्यापार होता है। मन इस व्यापार का ज्ञानयुक्त सस्कार हदय में फेंक देता है, शेव निर्णय किए हुए विषय को पुन उसी कम से वाहर फेंक देता है जिम कम में इस विषय ने सूक्ष्म शरीर में प्रवेग किया था। बाहिर पहुंच कर यह विषय इन्द्रियों और शरीर के भीग का विषय वन जाता है और यही मुख-दु ख, धर्माधर्म का हेतु बनता है।

कर्म तथा ज्ञानेन्द्रियो, मन तथा बुद्धि के ज्ञान की ग्रावञ्यकता—कर्मेन्द्रिया कर्म को करवाती हैं ग्रीर ज्ञानेन्द्रिया ज्ञान को करवाती हैं। यह ज्ञान ग्रोर कर्म का समन्वय है। ब्रह्मरश्न में अथवा सूक्ष्म जरीर में इनके साथ मन ग्रीर बृद्धि के व्यापार का माक्षान्कार होता है। इनके विज्ञान ने ही बुद्धि ऋनम्भरा बननी है। ग्राने चल कर यही ऋतम्भरा ग्रात्म-साक्षात्कार करवाने में समर्थ होती है। ग्रात्मा ग्रन्यन्त सूक्ष्म है। इसके दर्जन ग्रीर ज्ञान को प्राप्त करने के लिए सूक्ष्म बुद्धि की ग्रावञ्यकता है। चिर्काल तक ब्रह्मरश्च में ग्रभ्यास करने से ब्रह्मरश्चगत सूक्ष्म पदार्थों के नाशात्कार से समाधि की ग्रवस्था में मेघा ग्रत्यन्त तीक्ष्ण हो जानी है ग्रीर ग्रात्म-साक्षान्कार करवाने के योग्य हो जाती है।

## सूक्ष्म शरीर का निर्माण और उसका कार्य

इस लोक मे जिस प्रकार माता-पिता के रज ग्रांर वीर्य से स्यून जरीर की उत्पत्ति होती है, इस प्रकार से मूक्ष्म जगत् मे मूक्ष्म जरीर की उत्पत्ति नहीं होती। भने ही माता-पिता के रज ग्रीर वीर्य से जरीर उत्पत्त होते हो परन्तु इम रज-वीर्य में भी तो पृथ्वी, जल, ग्रुग्नि, वायु तथा ग्राकाण के मूक्ष्म ग्रण है। इन भूतो के वने हुए ग्रज्ञादि पदार्थ हीतो रज ग्रीर वीर्य को वनाते हैं, इसिलए वास्तव मे पचभूत ही गरीरों के निर्माण मे उपादान कारण हैं। इसी प्रकार मूक्ष्म जगत् मे सूक्ष्म पंचतन्मात्रा मूक्ष्म गरीर के उपादान कारण हैं—जिस प्रकार माता-पिता स्थूल गरीर को वनाने मे हेतु हैं इस प्रकार यह नहीं समक्ष लेना चाहिए कि सूक्ष्म जगत् मे भी सूक्ष्मगरीराभिमानी ग्रात्माए सूक्ष्म गरीरों को जन्म देती होगी। वहा ऐसा नहीं होता क्योंकि वहा कोई ऐसा संसार नहीं है जहा माता-पिता हो ग्रीर पुत्र-पुत्रिया भी हो। फिर तो इम लोक ग्रीर स्वर्गलोक या सूक्ष्म जगत् मे कोई ग्रन्तर ही नहीं रहेगा। जब ईश्वर के सिन्नवान

से ब्राह्मी सृष्टि की उत्पत्ति होती है तब स्वयं ही पंचतन्मात्राएं सुक्ष्म शरीर के निर्माण में प्रवृत्त हो जाती हैं। जिस प्रकार ये ग्रन्य पदार्थों का निर्माण करती हैं इस प्रकार सूक्ष्म शरीरों का भी निर्माण करती हैं। जैसे माता-पिता इहलोक में निमित्त कारण हैं उसी प्रकार सूक्ष्म जगत में केवल सन्नियान मात्र से ग्रथवा ग्रपने सर्वव्यापक भाव से ब्रह्म निमित्त कारण होता है तथा पंचतन्मात्राएं उपादान कारण होती हैं। सुक्ष्म जगत् में माता-पिता की जरूरत नहीं है। वहां तो केवल चेतन ब्रह्म ही निमित्त कारण है। ग्राप कहेंगे कि वे देवता क्यों न इस कार्य को कर दें जो सुक्ष्म जगत् में निवास करते हैं ? नहीं, ऐसे नहीं हो सकता । वहां जो भी ग्रात्माएं रहती हैं उनका स्त्री-पूरुप, पति-पत्नी अथवा माता-पिता के समान कोई सम्बन्ध नहीं होता। वेटे-वेटियों ग्रादि के सम्वन्य तथा सारे संसार के भोग-विलासों से विरक्त होने के पश्चात् इन्होंने देवत्व लाभ किया है, फिर इसी भगड़े में क्यों फंसें ? ग्रतः वहां इस प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं होता। वहां स्त्री तथा पुरुप में कोई भेदभाव नहीं है। वहां पर भोग-विलास की कोई वात नहीं। ये सुक्ष्म शरीर हमारे ही शरीरों में से निकलकर सुक्ष्म लोक में जाते हैं। वहां और नए सूक्ष्म शरीर उत्पन्न करने की क्या ग्रावश्यकता है? मृष्टि के ग्रादि-काल में सब सूक्ष्म शरीर ब्राह्मी मृष्टि में ब्रह्म के सान्निध्य से उत्पन्न हो ही चुके थे, ग्रतः इन सूक्ष्म शरीरों को पुनः उत्पन्न करने की कोई ग्रावश्यकता ही नहीं है।

ब्रह्मरंघ्र में इन्द्रियों के स्वरूप और मन तथा वृद्धि के स्वरूपों का साक्षात्कार करके इन पर पूरा अधिकार हो जाने पर ही वज्ञीकारसंज्ञा वैराग्य उत्पन्न होता है। इस वैराग्य का वर्णन पूर्व कर चुके हैं। सूक्ष्म शरीर का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके यदि वशीकारसंज्ञा वैराग्य उत्पन्न न हो तव साधक में दिव्य भोगों के भोग की इच्छा उत्पन्न हो जाती है, इसलिए योगी के लिए यह ग्रावश्यक है कि वह इन दिव्य भोगों के प्रति भी विरक्त हो जाए। जिस प्रकार स्यूल भोगों को वंध का कारण समभकर त्याग दिया था उसी प्रकार सूक्ष्म जगत् में पहुंचकर इन सूक्ष्म दिव्य भोगों के प्रति भी वैराग्य-भावना ग्रत्यन्त ग्रावश्यक है। उपरोक्त दोनों प्रकार के भोगों के प्रति तीव वैराग्य हो जाने पर ही मोक्ष-लाभ हो सकता है, ग्रन्यथा नहीं। इन दिव्य भोगों का वर्णन श्री मुहम्मद तथा श्री ईसामसीह ने भी किया है। हमारे इतिहास, पुराण, दर्शन, उपनिपदादि ने भी इनका वड़ा विशद् वर्णन किया है। किन्तु चारवाक तथा भौतिक विज्ञानवादी इन दिव्य भोगों को नहीं मानते हैं। हम इनसे कहते हैं कि ग्रापने मन के स्वरूप को तो देखा नहीं है किन्तु ग्राप इसको व्यवहार में लाते हो। इसी प्रकार ये सूक्ष्म पदार्थ, बुद्धि, सूक्ष्म कर्म तथा ज्ञानेन्द्रियादि का व्यवहार तो ग्राप करते हैं, किन्तु प्रत्यक्ष रूप से ग्रापने इन्हें देखा नहीं है ग्रौर नाही ये किसी मशीन का विपय हैं ग्रौर न किसी प्रकार के प्रतिविम्व का । इसी प्रकार स्वर्ग ग्रौर स्वर्ग के विषय भी सूक्ष्म रूप से विद्यमान हैं। ये ग्रापकी स्थूल ग्रांखों का विषय नहीं वन सकते। इनको सूक्ष्म दिव्य नेत्रों से ही देखा जा सकता है, समझा जा सकता है। पश्चिम के भौतिक विज्ञानवादी ग्रपने विविध विज्ञानों ग्रौर इन भूतों के कार्यात्मक भोगों से बहुत परेशान होगए हैं, तंग ग्रा गए हैं। इन्हें सर्वत्र विनाश ही विनाश दिखाई दे रहा है। वे लौकिक भोगों से सन्तप्त हो उठे हैं। सुख ग्रौर शान्ति का एकमात्र मार्ग ईश्वरभक्ति ही है।

पश्चमीय विद्वान् सुख ग्रौर शान्ति के लिए भारत के योगियो की ग्रोर निर्निमेप नेत्रो से निहार रहे हैं। उनमे योग सीखने के लिए उत्कट ग्रिभलापा जागृत हो चुकी है। उनके ग्रन्दर तीव जिजासा है परन्तु वे ग्रभी तक योग के महत्व ग्रीर स्वरूप को नही समझ सके हैं। वे अभी तक केवल आसनो को ही योग समभे वैठे हैं। आसन तो म्राप्टाग योग का केवल एक भ्रग है। शेष सात अगो के ज्ञान से वे नितान्त शून्य है। भारत में भी ऐसे लोगो की कुछ कमी नहीं है। योग का वास्तविक ग्रर्थ नो चित्त-वृत्ति निरोध करके ग्रात्म-साक्षात्कार ग्रीर ब्रह्म-साक्षात्कार है। वह समय दूर नही हैं जब कि दूसरे देशों के लोगों में भी घारणा, घ्यान, समाधि के विषय में भी जिज्ञामा उत्पन्न होगी ग्रौर वे इसकी पूर्ति के लिए, ग्रपने दु खो ने मुक्ति लाभ करने के लिए ग्रौर भौतिकवाद से छुटकारा पाने के लिए भारत के योगियों की गरण मे आएगे। हम स्वर्गाश्रम मे १ नवम्बर से ३० मार्च तक ५ महीने का सावना-शिविर लगाते हैं और गगोत्री मे १५ जून से १५ सितम्बर तक सावना होती है। ग्रव तक सहस्रो भारत-वासियो तथा कितने ही विदेशियों ने इससे लाभ उठाया है, ग्राध्यात्मिक उन्नति की है भ्रौर कईयो ने म्रात्म-ज्ञान तथा ब्रह्म-ज्ञान लाभ किया है। इन शिविरो मे प्राय विदेशो से लोग ग्राते रहते है ग्रीर तत्त्व-ज्ञान प्राप्त करते हैं। इससे स्पप्ट है कि विदेशियो के म्रन्दर भी योग सीखने की जिज्ञासा है। विदेशो में हमारे ब्रह्मरश्र को प्राय उपहास हुआ करता था परन्तु जब से वे हमारे साधना-शिविरो मे प्रविष्ट हुए ग्रौर ग्रभ्यास प्रारम्भ किया ग्रीर ध्यान काल मे दिव्य ज्योति प्राप्त की तव मे इन्हें ग्रपनी भूल ग्रीर म्रज्ञानता पर पश्चात्ताप हुग्रा । भारत भ्रादि-काल से म्रध्यात्म-विज्ञान मे विश्व-गुरु रहा है श्रीर श्रव इस पतन के युग मे भी यह सारे मंसार को श्रध्यातम-सुघा पिला सकता है। ग्राज भी ग्रपने वैज्ञानिक ग्राविष्कारो के मद मे चूर किन्तु ग्राघ्यात्मिकता से कोसो दूर विदेशी भारत मे त्राते है ग्रौर सन्तुष्ट होकर जाते हैं। हमने विदेशियो में एक विशेषता देखी है, वह यह कि ये लोग जिस कार्य को करना चाहते हैं उसमें पूरी तरह से जुट जाते हैं और उसे करके ही सास लेते है। मुभे यह कहते हुए बड़ा सेंद होता है कि हमारे भारतीयों में इस गुण का सर्वत्र ग्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है।

इस उपदेश को सुनने वालो में कई ७०-८० वर्ष के हो चुके हैं ग्रौर उन्होंने सभी लौकिक भोग भोग लिए है। वे ग्रव इस वात का निञ्चय करें कि वे ग्रपना शेप जीवन ग्रात्म-ज्ञान प्राप्त करने में लगाएगे। ग्रव ग्राप लोगों का निवास घर में नहीं होना चाहिए। ग्रव ग्रापका निवास वानप्रस्थाश्रमों में होना चाहिए, जहा पर ग्राप नित्य महापुरुषों का सत्सग करे। ग्रभ्यास ग्रौर साधना करे। तप, त्याग, भिक्त तथा भजन करे। वहीं पर ग्रापको यथार्थ शान्ति ग्रौर ग्रानन्द प्राप्त होगा। उन ग्राश्रमों में ग्राप जाए जहां सदाचारपूर्वक जीवन व्यतीत किया जाता है। जितेन्द्रिय वनना सिखाया जाता है। जहां ग्राचार की शुद्धता तथा व्यवहार की पवित्रता की शिक्षा दी जाती है। जीवन में एक प्रकार की काति पैदा की जाती है। ग्रात्म-ज्ञान प्राप्ति के साधन वताए जाते है।

मैं तो वहुत वर्षों के पश्चात् हिमालय से उतर कर इघर ग्राया हू, ग्रीर ग्राया इसलिए हू कि ग्रापको ग्रध्यात्म-ज्ञान तथा योग द्वारा ग्रात्म-ज्ञान या ब्रह्म-ज्ञान का ढिढोरा पीट कर ग्रपना सन्देश सुनाऊ ग्रीर चेतावनी देकर सावधान करू कि 'ग्रयन्तु परमो धर्म यत्योगेनात्मदर्शनम्। श्राप जागो, ग्रव कुभकर्ण निद्रा का त्याग करो, चेतो, वहुत नमय बीत गया है, थोडा ही शेष रहा है। कम से कम इसे तो हाथ से मत निकलने दो। इसे भगवच्चरणारिवन्दो मे ग्रपण करो। उसके चरणो मे ग्रात्म-समर्पण करो ग्रीर शाञ्वत सुख लाभ करो।

## कारण शरीर मे प्रवेश श्रीर उसका ज्ञान

सूटम शरीर में प्रवेश करने की विधि श्रीर उसमें जो पदार्थ है उनके साक्षा-न्कार की विधि ग्रापको बताई जा चुकी है। ग्राज ग्रापको हृदयस्य कारण गरीर मे प्रवेश करने की विधि बनाने का प्रयन्न किया जाएगा। कारण शरीर मे ६ पदार्थ है — जीवात्मा, चिन्त, ग्रहकार, सूदम प्राण, सूक्ष्म प्रकृति ग्रीर बहा। बहा ने इन सब परायों को प्रान्टादिन किया हुन्ना है। जब योगी कारण शरीर में प्रवेश करता है तब उसके सामने एक महान् दिव्यालोक ग्राता है। उसे समावि की ग्रवस्था मे ग्रनु-भव होता है कि गेरा यह दिव्य कारण गरीर एक महान् प्रकाश का पुज है, देदीप्यमान है और ज्योतिस्वरूप है। सूक्ष्म प्राणों के रूप में अन्दर से निकलती हुई जीवनी शक्ति का अनुभव करता है। योटी आगे बटने पर चित्त और आत्मा के ऊपर ग्रहकार का आवरण दृष्टिगोनर होता है। तब योगी अपने ध्यान बल अथवा समाधि बल से इस स्रावरण को तृटा देता है स्रीर उसका उत्लघन करके स्रागे बढता है। तब वह स्वच्छ, पिया, स्फटिक के समान निर्मल, मत्वप्रधान चित्त मे प्रवेश करता है और बहुत काल नक ग्रम्यान द्वारा निन पर पडे ग्रनेक सस्कारों के ग्रावरण को छिन्त-भिन्न करके जब जिन बिल्कुन निर्मल हो जाना है तब वह उसमे ग्रात्मतत्त्व की खोज करता है। उस अवस्था का नाम सप्रज्ञान समाधि है। इसमे मिलन सस्कारों को हटा कर चित्त को भूद करने का प्रयत्न किया जाता है क्यों कि चित्त में दोनो प्रकार के संस्कार विद्यमान रहने है। इनसे चिन में सदा विक्षोभ वना रहता है। निरोध करने से मिलन सरकार दय जाने है, केवल शुद्ध सम्कार ही शेप रह जाते है। जब तक चित्त श्रीर श्रात्मा का सम्बन्ध होता है तब तक सस्कार तो रहते ही है श्रीर ये प्रवृत्ति का हेतु होते है । गृद सन्कार विशेष रूप से ग्रावरण का हेतु नहीं होते ग्रपितु ये चित्त मे साहियातो उत्पन्न करने और श्रात्म-ज्ञान प्राप्ति के साधन होते है। श्रात्म-साक्षात्कार होन पर इनका श्रमम्प्रज्ञान समाधि द्वारा परम वैराग्य से निरोध होगा। इस श्रवस्था में चित्त के सन्त्रप्रधान होते हुए भी उसमे श्रात्मा की खोज करने में देर लगती है। श्रात्मा की श्रपंद्या चिन श्रत्यायक विस्तृत होता है। इसमे श्रात्मा को ढूढना विशाल सरोवर में पड़ी हुई हीरे की कणी को दूढने के समान है। गोताखोर यत्र-तत्र-सर्वत्र गोन नगाने है, बहुन गहरे जाते हैं, तब कही किसी श्रज्ञात स्थान मे वह सूक्ष्म किन्तु श्रन्यन्त प्रकाशमान हीर की कणी प्राप्त होती है। उसी प्रकार इस चित्तरूपी सरोवर में ग्रात्मार भी तीरे की कणी की खोज करना कोई साधारण वात नहीं है। ग्राप चित्त को करोट परमाणग्रो का एक समुदाय समके ग्रीर इस परमाणु राशि में एक ग्रत्यन्त मूदम परमाणुरप भ्रात्मा को समभें। यह भ्रात्मा विजातीय होने से ही दर्शन का विषय वन जाएगा वयोकि उसका रग-रुप, श्राकार-प्रकार, प्रभा श्रीर प्रकाश तथा नेतनत्य नित्तर्थ करोडो परमाणुष्रो से भिन्त प्रकार का है। यदि ग्रन्य परमाणुग्रो के समान ही यह भी होता तो उसको देखना, श्रनुभव करना, इसकी प्राप्ति तथा दर्शन

दुर्लभ नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य हो जाते। चित्त की सात्विकता भी आत्मा पर एक ग्रावरण रूप ही होती है, ग्रत ग्रात्म-दर्शन मे समाधि की ग्रवस्था मे भी एक वडी कठिन समस्या उपस्थित हो जाती है। चित्त स्वय सर्वत्र एक ही समान, स्वच्छ, निर्मल, पवित्र तथा सत्वप्रधान होता है। इसमे ग्रात्मा को ढूढे तो कहा ढूढे। ऐसी स्थिति मे समाधिस्थ योगी ग्रपनी दिव्य दृष्टि से इस चित्त के उस स्थान मे देखे जहा से चित्त मे सूक्ष्म गति, किया, ज्ञान, चेण्टा तथा क्षोभ प्रारभ हो रहे हो। जिस स्यान से गित प्रार्भ हो रही हो उसे ही ग्रात्मा का निवासस्थान समभना चाहिए। ग्रत्यन्त सूक्ष्म ग्रीर गहन सम्प्रज्ञान की दिन्य दृष्टि से चित्त के केन्द्र में ग्रात्मा को देखे। यही भ्रात्मा के साक्षात्कार का मुख्य स्थान<sup>°</sup> है। यहा ही चित्त-सयुक्त या चित्त-विशिष्ट ब्रात्मा का साक्षात्कार होता है। ग्रपने स्वरूप का प्रत्यक्ष होता है। चित्त ग्रीर ग्रात्मा दोनो सूक्ष्म प्रकृति के कारणरूप कोप या गर्भ मे स्थित होते हैं। यदि इस कारण-रूप आवरण को योगी अपनी समाधि की दिव्य सूक्ष्म दृष्टि से भेदन कर दे तो अत्यन्त समीप उस ब्रह्म का भी साक्षात्कार करके ब्रह्म मे प्रविष्ट हो जाता है। यह अत्यन्त समीप ही प्रकृति मे व्याप्त होकर ठहरा हुआ है, ऐसा अनुभव होता है अयवा प्रकृति-विशिष्टब्रह्म का दर्शन होता है। इस अवस्था मे पहुचकर योगी अपने आपको कृत-कृत्य समभता है। उसके सब सगयो का विच्छेद हो जाता है। ऐसे ही परमयोगी के लिए उपनिषद् कहता है—'भिद्यते हृदयग्रथिव्छिद्यन्ते सर्वसणया '। ग्रव योगी को जो कुछ प्राप्त करेना था वह प्राप्त कर लिया । उसके उद्देश्य की पूर्ति होगई । जीवन लक्ष्य को उसने पूरा कर लिया। अव उसके लिए कुछ जातव्य शेप नहीं रहा क्यों कि 'यस्मिन् विज्ञाते सर्व विज्ञात भवति।' उस एक को जान लेने से सभी कुछ जान लिया जाता है। वही ब्रह्म ज्ञातव्य है। जब उसको जान लिया तब ग्रीर ज्ञातव्य शेप ही क्या रहा ।

इसके अनन्तर योगी असम्प्रज्ञात समाधि द्वारा उन चित्तस्य सस्कारो का अभाव करता है या निरोध करता है जो अनादि काल से रागयुक्त प्रकृति के कार्यकारणात्मक रूप से चले आ रहे हैं। इनको क्षीण करने के लिए धर्ममेघ समाधि के अभ्यास द्वारा उनका भी निरोध करने मे योगी समर्थ होता है। इनके निरुद्ध हो जाने से वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। धर्ममेघ समाधि मे इन सस्कारो का निरोध होने से जो सचित सस्कार है वे भोग देने मे असमर्थ हो जाते है और अपनी प्रकृति मे लौट जाते हैं। आत्मा अपने स्वरूप मे स्थित हो जाएगा तथा कैवल्य भाव को प्राप्त होकर मुक्त हो जाएगा। मैंने आत्म-विज्ञान और ब्रह्म-ज्ञान को आपके लिए सरल, सुगम और सुबोध बनाने का प्रयत्न किया है। इस पर आचरण करने से एक ही जन्म मे आत्म-साक्षात्कार और ब्रह्म-साक्षात्कार लाभ करके मोक्ष प्राप्त करने के आप अधि-कारी बनेंगे और आवागमन के दु खद चक्र से छूट जाएगे।

# सेठ जुगलिक शोरजी बिरला का नित्य महाराजजी के पास समागम

सेठ जुगलिक शोरजी विरला नित्यप्रति प्रात ६ वजे तथा दोपहर को १ वजे पूज्य महाराजजी के दर्जनार्थ तथा जिज्ञासासमाधानार्थ ग्राते थे। ग्रायं जाति की उन्निति ग्रीर समृद्धि तथा राजनैतिक ग्रीर ग्राध्यात्मिक विषयो पर प्राय वातचीत किया करते थे। इनका भगवान् के प्रति वडा विश्वास, श्रद्धा ग्रीर भिनत थी। वे कहा

करते थे कि जब कभी मुभमें कोई अच्छा कार्य बन पड़ता है उसे मैं भगवान के चरणों में अपण कर देता हूं और जब कभी कोई पाप कम मुक्ति हो जाता है उसे इसके फलभोग के लिए अपने पाम रख लेता हूं। जिस प्रकार भगवान प्रकृति और इसके कार्यों को प्रेरणा देता है उसी प्रकार मेरे अन्त करण को भी वह प्रेरित करता रहता है। पुण्य कम नदा भगवान की प्रेरणा से होते हैं और पाप कम मेरी अपनी मूर्खता से। में तो अपने को भगवान के हाथ में एक कठपुतली के समान समझता हूं।

एक दिन नेठजी के, मन की चञ्चलता के श्रभाव करने के उपाय पूछने पर पूज्य महाराजजी ने उन्हें बतलाया कि चञ्चलता मन का सहज स्वभाव है। जब तक श्रात्मा का उसमें नम्बन्ध रहेगा तब तक उसमें किया या चञ्चलता बनी ही रहेगी। उसे नदा किसी न किसी कर्म या ब्यापार में लगाए रखना श्रावञ्यक है। भगवान की भित्त, उनका श्यान, उसकी श्रचंना, उसकी पूजा सर्वश्रेष्ठ कर्म है। यदि भगवान के स्मरण में वह लगा रहे तो यह कर्म मुक्ति का हेतु बन जाएगा, श्रत श्राप इसकी चञ्चलता की श्रोर ध्यान न देकर उसकी भगवन्नाम स्मरण में लगाए रखें। यही नवंदु विनिवृत्ति श्रीर क्रत्याण का हेतु है। येठजी के यह पूछने पर कि श्राप भगवान को नितान्त निर्मण मानने है, पूज्य गुक्देव ने मुस्कराते हुए कहा, "गुण ही विकार का हेतु बनने है, श्रन श्राप भी निर्मण बनने का प्रयत्न करें। सगुणता वध का कारण बनेगी यीर निर्मणता नदा मुक्ति का हेतु बनेगी।"

श्री विरताजी ने जिजामा की कि कर्म श्रीर श्रजान में कौन वधन का हेतु हैं?

उनका नमाधान करने हुए पूज्य महाराजजी ने कहा कि ये दोनों ही वध का हेतु हैं।

कर्म नयोग ने उन्तरन होता है श्रीर यह सयोग वय का कारण है। कर्म पाच प्रकार

का होता है—उत्देषण, श्रवक्षेपण, श्राकुचन, प्रमारण श्रीर गमन। जिसमे ये धर्म या

गुण हो वह विकारवान् मानना पड़ेगा, श्रत श्रात्मा श्रीर परमात्मा में उपरोक्त पाच

कर्म मानना श्रजान है, उनलिए यह भी वध का हेतु है क्योंकि इनके द्वारा ही मनुष्य

श्रवने को कर्ता श्रीर भोजना मान लेता है। वास्तव में श्रात्मा में कर्तृत्व धर्म नहीं है।

जिनमें कर्तृत्व धर्म है बहा भोजनृत्व धर्म भी मानना पड़ेगा। यह मानना श्रज्ञान है,

श्रव कर्म श्रीर श्रजान दोनों ही बधन का हेतु है।

विश्वाजी ने पुन प्रथन किया कि श्राप भगवान को कर्ता वताते हुए भी सदा मुनन कहने हैं। उस पर पूज्य महाराजजी ने फरमाया, "जो श्राचार्य ईश्वर को कर्ता मानने हुए भी नदा मुनन कहने हैं उनके पूर्व-पक्ष को उठाकर हम ऐसा कभी-कभी कह दिया करने हैं कि श्रापका भगवान सृष्टि का कर्ता होते हुए भी सदा मुक्त रहता है, नय हमारा श्रात्मा भी नो कर्ता होते हुए मुक्त हो मकता है। ऐसे श्रवसर पर यह भी कह दिया करने हैं कि कर्म बध का हेतु नहीं हैं। वास्तव में कर्म श्रात्मा तथा परमात्मा में नहीं होता। श्रात्मा के गग में कर्म श्रन्त करण में होता है श्रीर इसका श्रारोप श्रात्मा में कर दिया जाना है। उसी प्रकार से परमात्मा के सग से कर्म श्रकृति में होता है श्रीर श्रारोप परमात्मा में कर दिया जाता है। इन दोनों का सग होते हुए भी श्रात्मा श्रीर परमात्मा श्रमण रहते हैं। उनमें गतिरूप धर्म नहीं हैं। गति का श्र्य है श्रिया या कर्म।" उस प्रकार का ज्ञान-विज्ञान के विषय में वार्तालाप श्री सेठ विर्याजी में दिल्ली में १२ दिन तक होता रहा। ११ श्रप्रैल सन् १६६४ को महराजजी

ने ग्रपना ग्राठ दिन का प्रवचन ग्रौर शका-समाधान समाप्त किया। पूज्य गुरुदेव एक दिन पाच-पाच सात-सात मिनट के लिए ग्रपने शिष्यो ग्रौर भक्तो को ग्राशीर्वाद देने उनके निवास-स्थानो पर गए। कई भक्तो के ग्राग्रह से एक दिन के लिए ग्रागरा ग्रौर वृन्दावन भी पधारे। प० देवधर, ग्रोमप्रकाश सूरी, शान्ता, शीला भी साथ गई थी। लुधियाना से महाराजजी के शिष्य ला० सत्यप्रकाशजी मित्तल कई दिनो से महाराजजी को लेने के लिए ग्राए हुए थे। दिल्ली मे इनके सैंकडो भक्त है। प्राय सभी ने भोजनार्थ निमित्रत किया किन्तु ये कही नहीं गए क्योंकि ग्रवकाश ही नहीं मिलता था। दिन का ग्रधिक समय शका-समाधान ग्रौर ग्रध्यात्म विपयो पर वार्तालाप करने ग्रौर लोगो को समझाने मे व्यतीत होता था। केवल सेठ जुगलिकशोरजी विरला के निमत्रण पर विरला हाऊस मे भोजन करने पधारे।

पजाब भ्रमण—दिल्ली से पजाब जाने का विचार था। सेठ विरलाजी ने ग्रपनी कार इन्हें पजाब जाने के लिए दी, किन्तु महाराजजी को पजाब में लगभग डेढ मास तक रहना था, ग्रत उनकी कार लुधियाना पहुंच कर लौटा दी। १४ ग्रप्रैल को पूज्य महाराजजी को इनके भक्तो, शिष्यो, श्रद्धालुग्रो ग्रीर प्रशसको ने बडी भिवत ग्रीर श्रद्धा के साथ तथा वडे सम्मान ग्रीर समारोह के साथ दिल्ली से विदा किया। यहा से प्रस्थान करके ये पानीपत में श्री लाला मदनमोहन महाजन की फैक्टरी में पहुंचे। इन्होंने पूज्य महाराजजी का वडा स्वागत किया। ग्रपना कारखाना ग्रीर नूतन निर्मित निवासस्थान दिखाया। पानीपत में इनके वहुत पुराने भक्त बाबू ग्रमरनाथजी की पुत्री कुलदीपा रहती थी, उसके मकान पर उसे ग्राशीर्वाद देने पथारे। पानीपत से प्रस्थान करके ग्रम्वाला पहुंचे। वहा पर श्री शकरलाल की पुत्री लक्ष्मीदेवी के घर पर उसे ग्राशीर्वाद देने के लिए पधारे।

लुधियाना गमन—एक वजे के लगभग लुधियाना पहुचे। वहा पर लाला सत्यप्रकाशजी के मकान पर एक वहुत वडी भीड महाराजजी के स्वागत और दर्गनाथं उपस्थित थी। लगभग आधा घण्टा तक एकत्रित महानुभावो को उपदेश दिया। सायकाल पाच वजे से सात वजे तक पूज्य गुरुदेव का प्रवचन हुग्रा जिससे सैकडो अध्यात्म के जिज्ञासुत्रों ने लाभ उठाया। गुरुदेव लुधियाना मे ४ दिन तक विराजे यहां के गण्यमान्य तथा प्रतिष्ठित लोग प्राय सभी इनके भक्त थे। उनकी प्रार्थना पर यहां इतने दिन तक रुकना पडा। चारो दिन महाराजजी के प्रवचन हुए जिनसे जनता मे अध्यात्म का बडा प्रचार हुग्रा। इनका अन्तिम प्रवचन प्रेम तथा सगठन के विषय मे था। इस प्रवचन का यहां के लोगो पर वहुत प्रभाव पडा। जिनमे परस्पर भगडे वर्षों से चल रहे थे उन्होंने अपने मनोमालिन्य और वैमनस्य को परस्पर भगडे वर्षों से चल रहे थे उन्होंने अपने मनोमालिन्य और वैमनस्य को परचाताप के आसुओं से घो डाला। एक वृहद् प्रीतिभोज का आयोजन किया गया जिसमे सबने एक दूसरे के गले मे हार पहिनाए और प्रीतिभोज का आयोजन किया गया जिसमे सबने एक दूसरे के गले मे हार पहिनाए और प्रीतिभोज का आयोजन किया गया जिसमे सबने एक दूसरे के गले मे हार पहिनाए और प्रीतिभोज का आयोजन किया गया जिसमे सबने एक दूसरे के गले मे हार पहिनाए और प्रीतिभाज का आयोजन किया गया जिसमे सबने एक दूसरे के गले मे हार पहिनाए और प्रीतिभोज का आयोजन किया गया विलय गले से लगा कर मिले और महाराजजी के समक्ष भविष्य मे किसी प्रकार का भगडा न करने की प्रतिज्ञाए की। दिल्ली की भाति यहा पर भी थोडी-थोडी देर के लिए अपने सब भवतो और शिष्यों को आशीर्वाद देने के लिए गए। धूरी से लाला विलायतीराम पुरुषोत्तमजी कुछ घण्टो के लिए महाराजजी को वहा ले जाने के लिए आए थे। महाराजजी ने इनके साथ धूरी जाने के लिए प्रस्थान भी कर दिया था

किन्तु मार्ग में मोटर के इंजिन में कुछ खरावी हो जाने के कारण लुधियाना ही लौट ग्राना पड़ा। इनके वहां के भक्तों ग्रीर शिष्यों को वड़ी निराशा हुई।

जालंधर-प्रस्थान: डाक्टर विद्यावती तथा डा० नारायणिसह के पास निवास— डाक्टर विद्यावतीजी और डाक्टर नारायणिसहजी महाराजजी के वहुत पुराने श्रद्धालु भक्त हैं। जब से इन्होंने सुना था कि ये पंजाब में भ्रमण करने ग्रारहे हैं तभी से दोनों पित-पत्नी जालंधर पधारने के लिए वार-वार प्रार्थना कर रहे थे। इन्होंने लुधियाना से महाराजजी को जालंधर लिवा लाने के लिए ग्रपने सुपुत्र रमेशचन्द्र को कार में भेजा। यहां से कार द्वारा जालंधर पधारे ग्रौर वहां चार दिन तक विराजे। डा० नारायण-सिंहजी की कोठी पर ठहरे। इनकी कोठी पर महाराजजी ने दो प्रवचन दिए। महा-राजजी को जालंधर में कई भक्तों ने भोजनार्थ निमंत्रित किया किन्तु इन्होंने 'हिन्दी मिलाप' के संपादक श्री यश तथा श्री वालकिशन सोंधी के निमंत्रण ही स्वीकार किए।

होशियारपुर गमन—डाक्टर विद्यावतीजी की कार में होशियारपुर प्रधारकर चौधरी ज्योतिसिंहजी के पास ठहरे। वहुत वर्ष पिहले इनके सुपुत्र वलवीरिसंह, विक्रमिसंह ग्रौर सुपुत्री सीता को महाराजजी योग का ग्रभ्यास करवाया करते थे तथा शीत-काल में कई-कई मास इनके पास ठहरा करते थे। इनके भाई डाक्टर मोतीसिंह ग्रौर इनके पुत्र रणवीरिसंह महाराजजी के ग्रनन्य भक्त थे। श्री चौधरी ज्योतिसिंहजी ने भिक्त ग्रौर प्रेम से साश्रु होकर इन्हें प्रणाम किया ग्रौर निवेदन किया कि वहुत वर्षों में ग्रापके दर्शन हुए हैं। वस, ग्रव यह ग्रन्तिम ही दर्शन समभता हूं क्योंकि वहुत वृद्ध हो गया हूं ग्रौर शारीरिक ग्रवस्था ग्रव ठीक नहीं रहती है। उनका कथन सत्य ही निकला क्योंकि कुछ मास पश्चात् ही इन्होंने तथा इनकी पत्नी किसनदेवीजी ने शरीर त्याग दिया। महाराजजी ग्रौर धर्मनिष्ठासम्पन्न डा० विद्यावतीजी ने दोपहर का भोजन होशियारपुर किया ग्रौर सायंकाल जालंधर लौट ग्राए।

भ्रमृतसर प्रस्थान--ग्रमृतसर के लाला खुशीराम महाजन वहुत वर्षों से स्वर्गाश्रम में मार्च के महीने में अभ्यासार्थ आया करते थे। इन्होंने २३ तारीख को प्रातःकाल अपनी कार जालंधर महाराजजी को लेने के लिए भेज दी। डाक्टर विद्यावतीजी तो ग्रप्ने वाल्यकाल से ही इनसे परिचित थीं ग्रीर ज्यों-ज्यों इनकी ग्रायु वढ़ती गई त्यों-त्यों इनकी श्रद्धा ग्रौर भिवत इनके प्रति ग्रधिकाधिक बढ़ती गई क्योंकि इनकी भगवान के प्रति वड़ी निष्ठा ग्रौर विश्वास है । बड़ी धार्मिका ग्रौर परोपकारपरायणा हैं । पूज्य महाराजजी के उपदेशों से सर्वाधिक लाभ इन्होंने ही उठाया है और पत्रों द्वारा भी अपनी धार्मिक और साधना सम्वन्धी जिज्ञासाओं का समाधान करवाती रहती हैं। कुमारी लज्जावतीजी, ग्राचार्या कन्या महाविद्यालय जालंधर, की भी महाराजजी के प्रति वड़ी श्रद्धा ग्रौर भिवत है। ये दोनों भी इनके साथ ग्रमृतसर गई। जालंधर निवासियों ने पूज्य गुरुदेव को वड़े सम्मान के साथ विदा किया। २३ ता० को दस वजे लाला खुशीराम की कोठी पर पहुंच गए। ग्रमृतसर में सैंकड़ों ग्रापके भक्त तथा श्रद्धालु हैं। महाराजजी के प्रारम्भिक तथा इसके पश्चात् साधना काल में ग्रमृतसर का वड़ा महत्त्व है। यहां पर कई वर्ष तक इन्होंने निवास करके साधना की थी। यहां हजारों व्यक्ति इनके दर्शनार्थ श्राए। जव तक महाराजजी यहां विराजे तव तक प्रति सायंकाल पांच वजे से साढ़े छः वजे तक विविध ग्राध्यात्मिक विषयों पर प्रवचन करके

स्रमृतसर की जनता को उपकृत करते रहे। सैकडो लोग प्रवचन मे स्राते थे श्रीर ज्ञानामृत का पान करते थे। लाला खुशीराम की कोठी पर सारा दिन दर्शनाधियो तथा जिज्ञासुश्रो की भीड लगी रहती थी। इनके परम भक्तो मे से लाला खुशीराम, लाला गुरुचरणदत्त, बाबू मुलखराज श्रीर लाला हीरालाल ग्रादि श्रनेक भक्त श्रीर शिष्य महाराजजी के साथ भ्रमण करने जाया करते थे। लाला खुशीरामजी के मुपुत्र द्वारिकानाथ, इनकी धर्मपत्ती, इनकी विहन कैलाशवती श्रीर माता दुर्गदिवी वडी ईश्वरभक्त थी श्रीर प्राय ईश्वरभक्ति सम्बन्धी जिज्ञासाग्रो का समाधान करवाती रहती थी। साठ दिन तक प्रवचन के पश्चात् महाराजजी श्रपने पुराने श्रद्धालु भक्तो को ग्राशीर्वाद देने के लिए दो दिन तक उनके निवासस्थानो पर गए। इसके पश्चात् इन्होंने कश्मीर जाने का विचार किया। इन दिनो शेख ग्रव्दुल्ला के कारावास से छूट जाने के कारण उसने तथा उसके दल ने कश्मीर मे कुछ गडवड सी मचा दी थी, इसलिए महाराजजी के भक्तो ने उन्हें वहा न पधारने के लिए प्रार्थना की, किन्तु ये तो भूत ग्रीर भविष्यत् दोनो के ज्ञाता थे। इन्होंने ग्रपने योगवल से जान लिया था कि वहा पर कुछ नही होगा ग्रौर अपने शिष्यो ग्रौर भक्तो को इसका विश्वास दिलाया। फिर लाला गुशीराम ने इन्हें १५-२० दिन तक डलहोंजी मे उनकी ग्रपनी कोठी मे निवास करने का ग्राग्रह किया ग्रौर महाराजजी ने इनकी प्रार्थना स्वीकार करके कुछ दिन तक इलहोंजी विराजकर कश्मीर जाने का निश्चय कर लिया। लाला खुशीराम, इनकी पत्नी तथा दो वच्चे भी इनके साथ गए।

डलहों जो प्रस्थान—दो मई को श्रमृतसर की जनता ने महाराजजी को वडे समारोह के साथ विदा किया। वहा से प्रस्थान करके ये पठानकोट पहुचे। यहा पर लाला महेन्द्रपाल श्रग्रवाल के पास ठहरे। श्री महेन्द्रपाल, इनकी पत्नी तथा दो वालक भी श्रपनी कार में इनके साथ डलहों जी गए। वहा पर सभी लाला खुशीरामजी की कोठी पर ठहरे।

डलहोजी महाराजजी १५ दिन तक विराजे। यहा भी सत्मग होता रहा। इसके पश्चात् पठानकोट लौट ग्राए। श्री महेन्द्रपाल ग्रपनी कार मे उन्हे जम्मू छोड ग्राए ग्रीर वहा से ये १६ मई को ११ वजे हवाईजहाज मे श्रीनगर पहुच गए।

श्रीनगर निवास—श्रीनगर मे लाला विश्वनाथ इन्द्रनाथ ग्रंपनी कार में श्री महाराजजी को ग्रंपने निवासस्थान पर लेगए। यहा पर एक जून तक निवास करने का विचार था। लाला विश्वनाथ ने १२ दिन तक उपनिपदों की कथा करने के लिए महाराजजी से निवेदन किया। सबको सूचना दें दी गई। इन्होंने महोपनिपद् की कथा प्रारम्भ कर दी। लगभग सात सौ नर-नारी कथा श्रवण करने ग्राए थे। इस उपनिषद् में जगत् के उपादान कारण का प्रेरक ग्रथवा निमित्त कारण भगवान् को नारायण के रूप में माना है, इसलिए सर्वप्रथम नारायण जव्द की व्याख्या प्रारम्भ की गई ग्रीर फरमाया कि भगवान् एक है। विभिन्न लोगों ने इसको विभिन्न नामों से पुकारा है। महापुरुपों ने उसे जिस रूप या ग्रंश में देखा वैसा ही वर्णन कर दिया। इसी हेतु से ईश्वर ग्रीर उसके ज्ञान की ग्रनन्तता सिद्ध होती है। जो यह दावा करता है कि मैंने उस ईश्वर के स्वरूप को ठीक-ठीक समभ लिया है, दूसरों ने नहीं समझा है, यह उसका दुराग्रह तथा दुरिभमान है। सभी महापुरुषों ने ग्रंपनी श्रद्धा, विश्वास,

भिक्त ग्राँर प्रतिभा के अनुसार उसे समसने का प्रयास किया है, उसका ग्रमुभव किया है ग्राँर विक्वास किया है। जिस प्रकार ५ ग्राँर ५ का जोड़ सदा १० रहेगा, जो भी इस संख्या को जोड़ेगा उसका परिणाम १० ही निकलेगा, इसी प्रकार से भगवान को भी सभी महापुरुप एक ही स्वरूप में देखेंगे। जो नाना रूप से उसे देखता है वह भ्रान्त है। वह सूक्ष्मातिसूक्ष्म उस ग्रमन्त ग्राँर चेतन के स्वरूप को पहिचानने में ग्रसमर्थ रहा है। सबसे बड़ा प्रक्न जो हमारे सामने हैं वह ह इस मृष्टि का लप्टा कान है ? जैसे यह जगत् महान् है ऐसे ही इसका लप्टा भी महान् होना चाहिए। मनुष्य तो इसकी रचना कर नहीं सकता। इसके बनाने वाला कोई ग्राँर ही होना चाहिए। उपनिपद् ने इस जिल्ल समस्या ग्राँर महती जिज्ञासा को सुलकाते ग्रौर समावान करते हुए कहा है:—

निरीच्छे संस्थिते रत्ने यथा लोकः प्रवर्तते । सत्तामात्रे परे तत्त्वे तथैवायं जगद्गणः ॥ ग्रतस्चात्मिन कर्तृत्वं भोक्तृत्वं च वै मुने । निरीच्छत्वादकर्ताऽसौ कर्ता सन्निधिमात्रतः ॥ ते द्वे ब्रह्मणी विन्देत कर्तृनाकर्तृते मुने । यत्रैवेपचमत्कारस्तमाश्रित्य स्थिरो भव ॥

ग्रपने शिष्य निदाघ को उपदेश देते हुए ऋपि ने उपरोक्त वचन कहे हैं। हे सौम्य निदाय ! जैसे किसी स्थान या खान में कोई अमुल्य हीरा रखा हो उसको प्राप्त करने के लिए सांसारिक लोग प्रवृत्त होते हैं, उसी प्रकार सत्तामात्र चेतन तत्त्व परब्रह्म को प्राप्त करने के लिए जिज्ञासुँ लोग प्रवृत्त होते हैं। इसलिए ग्रात्मा में कर्तृत्व ग्रौर ग्रकर्तृत्व समभना चाहिए। ग्रात्मा में कोई इच्छा नहीं है इसलिए इसे ग्रकर्ता कहा गया है और सन्निवान मात्र से कर्ता माना गया है, किन्तु कर्तृत्व वर्म इसमें नहीं है। सान्निच्य मात्र से उसमें कर्तापन सिद्ध नहीं किया जा सकता। ग्रात्मा के साथ चित्त का सान्तिच्य है ग्रतः ग्रात्मा भी कर्ता नहीं है । मन, वुद्धि, चित्त, ज्ञान तथा कर्मेन्द्रियां सब जड़ हैं। केवल मात्र ग्रात्मा ही चेतन है। इस चेतन तत्त्व के सान्निध्य से चित्त में गति और किया होने लगती है और सूक्ष्म प्राणों के द्वारा यह गति और किया सारे शरीर में फैल जाती है। शरीर में सारा व्यापार और कार्यजात चित्त, मन, बुद्धि आदि पदार्थ करते हैं किन्तु इनका ग्रारोप निष्क्रिय ग्रात्मा में कर दिया जाता है। ब्रह्म भी निर्गुण चेतन तत्त्व हैं। इसके सान्निच्य से प्रकृति में गति उत्पन्न होती हैं ग्रौर-सत्त्व, रज तथा तम की साम्यावस्था में विषमता ग्राने लगती है ग्रौर प्रकृति सृष्टि सृजन करने लगती है। ब्रह्म निर्गुण ग्रौर निष्किय है। केवल सन्नियान मात्र से उसे कर्ता मान लिया गया है। वास्तव में ईश्वर या ब्रह्म में कर्तृत्व धर्म सिद्ध नहीं होता। जिज्ञासुयों को समभाने के लिए ब्रह्म के भी दो स्वरूप कह दिए गए हैं-कर्ता ग्रौर ग्रकर्ता। जनत् के कारणरूप प्रकृति के साथ ब्रह्म का सन्नियान है, इसलिए उसे कर्ता कह दिया गया है। वास्तव में तो वह अकर्ता ही है। इस जगत् अथवा इसके उपादान कारण प्रकृति में जो भी कार्य हो रहे हैं उनके वास्तविक स्वरूप को न समसकर कई ब्राचार्यों ने इस जगत् के तथा इसके उपादान कारण प्रकृति के गुणों का ईश्वर और वृह्म में ग्रारोप कर दिया है। वास्तव में ग्रात्मा ग्रौर परमात्मा दोनों ग्रकर्ता हैं।

प्रन्त करण मे, प्रात्मा ग्रीर प्रकृति मे, ब्रह्म के सिन्निवान से कर्तृत्व धर्म उत्पन्न होता है क्यों कि ग्रन्त करण ग्रीर प्रकृति में ही परिणाम धर्म उत्पन्न हुग्रा है। ग्रज्ञानता या भ्राति वंग मनुष्य ग्रपने को सुखी या दु खी मानता है तथा ग्रपने को भोक्ता या कर्ता मानता है। इस ग्रज्ञानता ग्रीर भ्राति को दूर करने की ग्रावश्यकता है। वास्तव में सुख, दु ख, कर्तृत्व ग्रीर भोक्तृत्व सव ग्रन्त करण के धर्म है जिन्हें वह ग्रपने मान रहा है। इसी प्रकार कर्तृत्व धर्म प्रकृति का है किन्तु भ्रातिवंग इसे ग्रह्म में ग्रारोपित कर दिया जाता है। ब्रह्म में कर्तृत्व नहीं है। वह तो निर्मुण ग्रीर निष्क्रिय है। इसके सिन्निधान मात्र से प्रकृति में गित उत्पन्न होती है ग्रीर उससे सारी सृष्टि का सृजन होता है। इस सिन्निधान मात्र से भ्रातिवंग ब्रह्म को ही स्रष्टा मान लिया गया है, वास्तव में यह प्रकृति का कार्य है, ब्रह्म का नही। प्रकृति के धर्म का ब्रह्म में ग्रारोप ग्रज्ञानतावंश किया गया है। इस भ्राति के दूर होने पर ही ग्रात्मा ग्रीर परमात्मा का यथार्थ, निर्भान्त ग्रीर वास्तिवंक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। तभी मनुष्य की ग्रात्मा ग्रीर परमात्मा विषयक जिज्ञासा की पूर्वि होगी। पूज्य महाराजजी ने विभिन्न वृष्टान्तो ग्रीर प्रमाणों से इस सिद्धान्त की पुष्टि की। १२ दिन तक निरन्तर कथा होती रही। नित्यप्रति सब श्रोताग्रो को फल ग्रथवा मिश्री प्रसाद रूप से बाटी जाती थी। जनता ने इस उपदेशामृत का पान करके ग्रपने को धन्य समभा।

मुलमर्ग प्रस्थान—श्री महाराजजी पहिले कई वर्ष तक काश्मीर मे निवास कर चुके थे। प्राय प्रति ग्रीष्म ऋतु मे यहा ग्राया करते थे, इसलिए संकडो लोगो से परिचित थे ग्रीर संकडो ही यहा पर इनके शिष्य तथा भक्त थे। प० गम्भुनाथजी तिक्कू महाराजजी के प्रति वडी श्रद्धा ग्रीर भिक्त रखते थे। इन्होंने ४०० रुपये पर सारी गर्मी के मौसम के लिए एक कोठी गुलमर्ग में नितान्त एकान्त ग्रीर शान्त स्थान में लेकर दी थी। इसी में महाराजजी सारी ग्रीष्म ऋतु विराजे थे। श्रीनगर में कथा समाप्त करके थे हारवन, गालामार, निपात, चश्मागाही ग्रादि स्थानो का भ्रमण करते रहे। दो जून को गुलमर्ग पधारे। यह स्थान श्रीनगर से लगभग ३० मील है। इसकी ऊचाई लगभग द-१ हजार फीट होगी। पहलगाव की ग्रपेक्षा यह ग्रिधिक शान्त ग्रीर एकान्त था। महाराजजी के भक्त लाला विश्वनाथ ग्रीर इन्द्रनाथ प्रत्येक रिववार को महाराजजी के दर्शन ग्रीर सत्सग के लिए ग्राया करते थे। फल सब्जी ग्रादि तथा ग्रन्य खाद्य सामग्री भी भिजवाते रहते थे। प० द्यारिकानाथजी दरवाग ग्रीर प० राधाकुष्णजी तिक्कू महाराजजी के प्रति वडी श्रद्धा ग्रीर भिजवाते रहते थे। प० शम्भुनाथजी गुलमर्ग में ठेकेदार थे, ग्रत ये ग्रीर इनका परिवार महाराजजी की सव प्रकार से सेवा करते रहते थे। इनके कई भक्त सत्सग ग्रीर ग्रम्यास के लिए ग्राए हुए थे। दिल्ली से डाक्टर विमला तथा इनकी माताजी ग्रीर ग्रम्यास के लिए ग्राए हुए थे। दिल्ली से डाक्टर विमला तथा इनकी माताजी ग्रीर चाची सत्यवतीजी ग्राई हुई थी। ग्रमृतसर से गुरूचरणदत्त महाजन ग्रीर भाग्यवल्तीजी, दिल्ली से लाला महावीरप्रसाद, इनकी पत्नी ग्रीर पुत्री, लुधियाना से लाला सत्यप्रकाग, इनकी पत्नी ग्रीर पुत्र, पठानकोट से लाला महेन्द्रपाल, इनकी पत्नी ग्रीर दो वालक, गुरुदासपुर से लाला योगेन्द्रपाल, इनकी पत्नी ग्रीर दो वालक, गुरुदासपुर से लाला योगेन्द्रपाल, इनकी पत्नी ग्रीर दो वालक, गुरुदासपुर से लाला योगेन्द्रपाल, इनकी पत्नी ग्रीर श्रीर श्री वालक परिता ग्रीर से लाला योगेन्द्रपाल, इनकी पत्नी ग्रीर स्रार करके

बहुत लाम उठाया। ज्यास-पूजा के अवसर पर लगभग साँ शिष्य नहाराजजी के पास आए थे। इस पावन पर्व पर पूज्य गुरुदेवजी तथा आनन्दस्वामीजी सरस्वती के गुरु-पूजा के विषय में सारर्गामत भाषण हुए और एक वड़ा भण्डारा दिया गया। वड़ी धूमबाम और समारोह के साथ यह पर्व मनाया गया। श्री महाराजजी अपने शिष्यों को साथ लेकर गुलमर्ग के मैदानों में लगभग दो वण्टे तक सैर किया करते थे और आत्म-ज्ञान और ब्रह्म-ज्ञान के विषय में उन्हें समस्त्रते भी रहते थे। कभी-कभी धूमते-धूमते खिलनमर्ग तथा अलपत्यर भी चले जाया करते थे। श्री आनन्द स्वामी सरस्वती गुरु-पूजा के लिए ही पवारे थे।

पहलगांव प्रस्यान-साढ़े तीन मास तक गुलमर्ग में निवास करके श्री महा-राजजी श्रीनगर पद्यारे और यहां पर वजीरवाग्रस्य गुरुसहायमल की कोठी पर ठहरे। यहां पर एक दिन निवास कर्के पहलगांव पवारे। वहां पर लाला गुरुसहायमल तया लाला केदारनाय वहुत दिनों से इनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इन्होंने एक कोठी महाराजजी के लिए इनके वहां पवारने से पूर्व ही ले ली थी। श्री विश्वनायजी इन्हें ग्रपनी कार में पहलगांव पहुंचा गए थे। यहां पर ग्राठ दिन रहने का विचार था जिसमें चार दिन तक तो पहलगांव और तीन दिन अमरनाथ तथा एक सप्ताह कुक्कड़नाग । पहलगांव में श्री महाराज इन दोनों परिवारों को उपदेश सुनाते रहे ग्रौर ग्रम्यास भी करवाते रहे । २१ सितम्बर को महाराजजी ने ग्रमरनाय के लिए प्रस्थान किया। इनके साथ सूरतराम सेवक और अमृतसर के एक लालाजी थे। घोड़े इनके साथ थे। प्रयम दिन शैपनाग के किनारे डाक बंगले में ठहरे। प्रातःकाल चायपान करके भोजन अपने साथ लेकर तीनों अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर चल दिए। सव त्तामान यहीं छोड़ दिया था नयों कि तायं काल यहीं लौट कर ग्राना था। शेप-नाग की ऊंचाई १३-१४ हजार फीट थी, अतः घोड़े पर वैठे-वैठे भी पांव निःसंज्ञ से होरहे थे। शेपनांग की भील वड़ी सुन्दर है। एक वार यहां ग्राकर फिर वापिस जाने को दिल नहीं चाहता। ग्रास-पास के पर्वतों का दृश्य वड़ा ग्रनुपम था। ग्रत्यविक शीत के कारण कूल का पानी जम गया था। कुछ मील आगे चलने पर पंचतरणी एक वड़े मैदान में पहुंचे । इसमें पांच छोटी-छोटी निदयां वहती हैं। यहां पर विज्जू की किस्म के सैंकड़ों जानवर दिखाई दिए। इनके चमड़े के कोट, दस्ताने, जूते ग्रादि वनाए जाते हैं। शेयनाग से घोड़ों पर सवार होकर ग्रन्य यात्री भी साथ ग्राए थे। साढ़े ग्यारह वजे सव ग्रमरनाथ की गुफा में पहुंचे। यहां पर ग्राराम किया तथा गुफा के ग्रास-पास का सब दृश्य देखा। इस समय यहां कोई कबूतर दृष्टिगोचर नहीं हुया। किन्तु कोयल के समान एक काली चिड़िया गुफा में अवस्य दिखाई दी। हाथ में किशमिश रखकर इसे खाने के लिए बुलाते तो मट ग्राकर प्रेमपूर्वक किशमिश खाने लग जाती थी। इस समय गुफा में वर्फ का कोई शिवलिंग भी न था। सब प्रतिनाएं गल कर समाप्त हो गई थीं। गुका के बीच में कहीं-कहीं पानी टपकता था। ग्राज कल लोहे का एक जंगला गुका में लगा दिया गया है। इन दिनों न तो कोई यहां रहता या ग्रौर न कहीं स्वच्छता ही दिखाई देती थी। एक घण्टा तक सव गुफा में ठहरे। छंचाई पर भूख कम लगती है, ग्रतः भोजन साथ होते हुए भी किसी ने नहीं जाया वयोंकि किसी को भी भूख नहीं लगी थी। सब साथी लगभग एक घण्टे तक पूजा-पाठ करते रहे और गुफा तथा इसके ग्रास-पास के सौन्दर्य की सराहना करते रहे। एक बजे यहा से प्रस्थान करके सायकाल पाच बजे शेपनाग पहुच गए। यहा से ग्रमरनाथ लगभग वारह मील होगा। प्रांत काल यहा से चल कर चन्दनवाडी होते हुए चार वजे पहलगाव पहुच गए। लाला गुरुसहायमल ग्रौर केदारनाथजी को ग्रपनी यात्रा का समस्त वृत्त सुनाया जिसे सुनकर वे वडे प्रसन्न हुए। दूसरे दिन ये तीनो कुक्कडनाग के लिए रवाना होगए। इसके लिए सवने श्रीनगर से ग्रपनी-ग्रपनी कार मगवा ली थी। इनकी पित्या तथा वच्चे भी साथ थे। २४ सितम्वर को कुक्कडनाग पहुचे। वहा पर दो वगले किराये पर लिए गए। छ दिन तक यही सत्सग ग्रीर ग्रम्थास होता रहा। ३० सितम्बर को श्रीनगर वापस ग्रागए। श्री महाराजजी चार दिन तक केदारनाथजी की कोठी पर ठहरे। इसके पञ्चात् ६-७ दिन के लिए हारवन चले गए। केदारनाथजी इन्हें प० द्वारिकानाथजी के पास ग्रपनी कार में छोड ग्राए थे। यहा पर महाराजजी नित्य ही कथा किया करते थे। श्रीनगर से बहुत से लोग उपदेश सुनने ग्राते थे। बहुत से तो नगर से ग्राकर सत्सग के लिए गाव में ही रहने लग गए थे। प० द्वारिकानाथजी के घर पर प्राय मेला सा लगा रहता था। महाराजजी के कई मुसलमान भक्त थे। ये भी नित्य मिलने ग्राया करते थे। ये महाराजजी को ग्रपना पीर ग्रीर गुरु मानते थे। ३०-३५ वर्ष पूर्व महाराजजी यहा के लोगो में ग्रीपिया वाटा करते थे ग्रीर इन लोगो का उलाज भी किया करते थे, इसलिए इनके प्रति इनकी ग्रनन्य श्रद्धा ग्रीर भिव्त थी। इस प्रदेश के हिन्दु ग्रीर मुसलमान दोनो महाराजजी का बडा सम्मान करते थे। एक सप्ताह यहा रह कर पुन श्रीनगर चले गए ग्रीर लाला गुरुसहायमल सहगल की कोठी मे ग्राठ दिन तक कथा की ग्रीर २० अक्टूवर को यहा से ऋपिकंश के लिए प्रस्थान किया।

महात्मा लक्ष्मणजी का समागम—श्री महाराजजी इन महात्माजी से मिलने गए। ये इनके बहुत पुराने मित्रो में से थे। जब महाराजजी हारवन में रहते थे तब ये सप्ताह में एक दो बार अवश्य मिलने जाया करते थे। कभी-कभी दोनो मिलकर शिकारगाह में सेर करने भी जाया करते थे। दोपहर का भोजन महात्माजी की कोठी पर ही किया। इनके शिष्यो ने बड़े सम्मानपूर्वक भोजन करवाया। इनकी दो शिष्याए बड़ी विदुषी, सती-साध्वी और सौम्य मूर्ति थी। ये दोनो सहोदरा थी। इनमें से एक का नाम शारिकादेवी तथा दूसरी का प्रभादेवी था। ये बहुत वर्षों से महात्माजी के सपर्क में रहकर आत्म-ज्ञान और ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति के लिए कठिन साधनाए कर रही थी। महात्माजी प्रति रिववार को सत्सग लगाते थे। भजन, कीर्तन, अध्ययन तथा उपदेश कई घण्टे तक होता रहता था। महात्माजी और महाराजजी का कई घण्टे तक आध्यात्मिक विषयो पर विचार होता रहा। सायकाल ६ वजे ये वहा से लौट आए।

श्रीतगर में पुनः कथा—श्रीनगर में पुन १० से १७ ग्रक्टूबर तक महोपनिपद् की कथा की। वीच-बीच में योग सम्बन्धी ग्रीर ग्रनेक ग्राच्यात्मिक विषयों का वर्णन करते रहे। लगभग सात सौ श्रोता प्रतिदिन ग्राते थे। सेंकडो लोग नित्यप्रति मिलने ग्राते थे। चाय ग्रीर भोजन का गुरुसहायमलजी के मकान पर एक प्रकार का लगर मा नगा रहता था। इनकी पत्नी बडी उदारता मे ग्रागन्तुक महानुभावो का सत्कार करती थी।

१८ प्रवह्वर को महाराजजी रैनावारी मे अपने भक्त प० राधाकृष्ण दीनानाथ निक्कू के घर पर भोजन करने गए। रैनावारी के बहुत में भक्त दर्शनार्थ आए। १६ प्रवह्वर को प० गोपीनाथ विश्वनाथ के पुत्र अभुनाथ अमरनाथ के मकान पर भोजन करने पथारे। यहां पर भी बहुत में म्त्री-पुरुप दर्शनार्थ एकत्रित हुए थे। इन नवतो प्रेम तथा नंगठन का उपदेश दिया। परिवार के स्तर को अचा उठाने और पारिवारिक जीवन को मुजमय तथा म्वर्ग बनाने के उपाय विविध उदाहरण और दृष्टान्त देकर समन्ताये। लोगों पर उसका वटा श्रच्छा प्रभाव पडा।

जम्यू-गमन-- नाना केदारनाथजी महाराजजी को जम्यू अपनी कोठी पर ने जाना नाहते थे। अत २० अस्टबर को प्रान ६ वजे अपनी कार लेकर आगए। लाता गुरुगहायमल के परिवार, अन्य शिष्यो, भक्तो और श्रद्धालुस्रो ने बड़े सम्मान के साथ महाराजजी को विदाई दी। प्रात साहे सात बजे चलकर सायकाल जम्बू पहुच गए। यहा पर उनकी कोठी पर ठहरे। इन्होंने महाराजजी की बहुत सेवा की स्रोर योगनिकतन में एक कृटिया बनवाने की स्रतुमित प्राप्त की क्योंकि स्रव इनका चित्त बुछ उपराम सा होता जा रहा था स्रीर वे महाराजजी के पास रहकर स्रात्म-ज्ञान नाभ करना चाहते थे। २३ अवहबर को लालाजी अपनी कार मे योगीराजजी को पठानकोट पहुचा गए। यहा पर लाला महेन्द्रपाल के पास ठहरे। भोजनोपरान्त केंद्रारनायजी यापिस चले गए। महाराजजी दो दिन तक पठानकोट ठहरे। २६ अवस्थर को लाला योगेन्द्रपाल उन्हें गुरुदासपुर ले गए। यहा पर दो दिन तक महा-राजजी का योग के विषय में प्रवचन हुआ। ये अपनी पत्नी सहित कई बार स्वर्णी-श्रम मे ग्रभ्यामार्थ ग्राया करते थे। २८ ग्रवट्टवर को यहा मे योगेन्द्रपालजी ग्रमृतसर पहुना गए। यहा पर मनीशचन्द्रजी के पास ठहरे। कई भक्त दर्शनार्थ श्राए। ग्रम्नगर में राप्ति के ग्राठ बजे हरिद्वार गाडी जाती थी, उसमें सवार होकर हरिद्वार के तिए प्रस्थान किया। जानपर ग्रीर लुधियान के स्टेशनो पर महाराजजी के ग्रनेक भयन दर्णनार्थं ग्राए। ज्यालापुर के स्टेशन पर महात्मा प्रभुग्राधितजी के बहुत से शिष्य दर्शनार्थं ग्राए। उन्होंने यानप्रस्थ ग्राध्यम में पंधारने के लिए बहुत प्रार्थना की, स्रत प्रथम स्राथम मे प्यारे। यहा पर महात्माजी को स्राशीवाँद तथा उपदेश दिया। यहा दुःधपान करके टैक्सी द्वारा ऋषिकेश पहुचे। यहा पर नैशनल वेक स्राफ लाहीर के मैनेजर श्री वलदेविमत्र के पास भोजन किया। लगभग ७ मास की यात्रा के पश्चात् पूज्य गुरुदेव सायकाल स्वर्गाश्रम पहुचे ।

स्वर्गाश्रम में साधना जिविर—१ नवम्बर १९६४ को साधना शिविर प्रारभ होगया। प्रभ्यामी बहुन में प्राचक वे प्रीर कुछ प्रभी प्राने को थे। शिविर की सब व्यवस्था ठीफ-ठीफ होगई थी। श्री कैंप्टन जगन्नाथजी, रायसाहेब विक्वेश्वर-नायजी तथा ताला रामिककोरजी योग-प्रशिक्षणार्थ ग्रागए थे। इस वर्ष गगोत्री में प्रन्त-क्षेत्र की व्यवस्था करने के लिए प० जकरलालजी अर्मा को भेजा था। इनके साय ब्रह्मचारी श्रीकठ भी गए थे। ये सितम्बर मास में गगोत्री से लौट ग्राए थे किन्तु उत्तरकाशी के ८० दिन काएठ मीन ब्रा करने के कारण वहां नहीं रहे। श्री महाराजजी ने १ नवम्बर मे श्रभ्यास प्रारम्भ करवाया। प्रथम दिन श्रभ्यासियों की सख्या लगभग १५-१६ थीं। प्रात काल तो योग कक्षा महाराजजी स्वय लेते थे ग्रीर सायकाल को कैंप्टन जगन्नाथजी लेते थे। ग्रभ्यासियों की सख्या नित्यप्रति वढ रही थी। १० नवम्बर को जब गर्माजी ग्राए तब महाराजजी ने इन्हें ग्राश्रम के लिए जो जमीन खरीदी गई थी उसकी हदबन्दी करवाकर ग्राश्रम के निर्माण का ग्रादेश दिया। ये प्रात ग्रीर साय ग्रभ्याम करते ग्रीर दिन में निर्माण कार्य। ऋषिकेश या स्वर्गाश्रम में योगनिकेतन का ग्रपना निजी स्थान न होने के कारण ग्रनेक प्रकार की कठिनाइया होती थी। ग्रभी तक कोई ग्रनुकूल भूमि प्राप्त नहीं हो रही थी, यद्यपि कई वर्ष से इसके लिए प्रयत्न किया जा रहा था।

योगनिकेतन के भवन निर्माण के लिए भूमि खरीदना—सन् १६६३ में यह पता लगा कि रामेश्वरसहायजी, जो टिहरी गढ़वाल के चीफ कजरवेटर ग्राफ फोरेस्ट थे, ग्रव सेवा निवृत्त होगए है ग्रीर लखनऊ में निवास करते हैं। इनकी जमीन मुनि की रेती में स्वामी शिवानन्दजी महाराज के ग्राश्रम के पास सड़क के किनारे गगाजी के तट पर है। इनस्तत पूछने पर जान हुग्रा कि यह भूभाग विकाऊ है। श्री शकरलालजी शर्मा को इनके पास लखनऊ भेजा गया। पहल तो इन्होंने इस भूमि के दाम वीस हजार से भी ग्रिथिक मागे किन्तु जब गर्माजी ने पूज्य गुरुदेवजी के रिचत दो ग्रथ भेट करके इनका पूरा परिचय दिया ग्रीर योगनिकेतन के उद्देश्यादि वताए ग्रीर कहा कि यह स्थान योग-विद्या नथा ग्राध्यित्मक शिक्षा का केन्द्र वनेगा तव इन्होंने प्रसन्नतापूर्वक कहा कि ग्राप जो देने वही मुफे स्वीकार होगा। यह वचन लेकर शर्माजी लीट ग्राए। इस भूमि पर एक छोटी सी कोठी वनी हुई थी। इसका मूल्य वारह हजार रुपया ग्राका गया। इस सम्बन्ध में श्री रामेश्वरसहायजी को पत्र लिखा गया। इनको १२०० रु० की पेशगी भेज दी गई ग्रीर नन् १६६४ में इस भूमि की रिजस्ट्री योगनिकेतन ट्रस्ट के नाम करवा दी गई। इसी साल से भवन निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया गया।

अभ्यासियो पर मनोबल का प्रयोग—थी महाराजजी को प्रांत काल अभ्यास करवाते २४ दिन होगए थे। लुधियाने वाले सत्यप्रकाणजी तथा अन्य कई एक णिप्यो ने आकर निवेदन किया, "महाराजजी । अभ्यास में कुछ विशेष उन्नित नहीं हो रहीं हैं। आप अपने भक्तो और णिष्यो पर कुछ विशेष व्यान नहीं दें रहें हैं।" महाराजजी ने फरमाया, "मैं अपने मस्तिष्क और मनोवल से अधिक काम नहीं लेना चाहता हू। मुक्ते बहुत वर्ष साधना करवाते होगए है, अत कुछ थकावट सी मालूम होने लगती है और उपरामता भी आती जा रही है।" सत्यप्रकाणजी ने इस पर कहा, "महाराजजी । फिर हमारा कत्याण किस प्रकार होगा?" इन्होंने आदेश दिया कि "आपकी आयु ५० वर्ष से ऊपर होगई है। वानप्रस्थ धारण करके अहिनश निरन्तर अभ्यास का प्रयत्न करो, कुछ काल में ही कल्याण हो जाएगा। अपने प्रयत्न से जो विज्ञान प्राप्त करोंगे वह विशेष उन्निति और सफलता का हेतु होगा। दूसरो से उधार या दान में ली हुई वस्तु विशेष हितकारी और लाभदायक नहीं होती। स्वय अपने पुरुपार्थ से प्राप्त किया हुआ धन अथवा विज्ञान दीर्घकाल तक स्थायी

रहेगा, लाभदायक होगा।" इस पर सव उपस्थित ग्रभ्यासियो ने एक स्वर से कहा, "ग्रापने भी तो ग्रपने गुरु से विज्ञान प्राप्त किया था, फिर ग्राप हमारे विषय मे क्यो उपराम होते हैं ?" इस पर महाराजजी ने हसते हुए कहा, "हमने तो एक गुरु से एक मास मे ग्रीर दूसरे में १७ घण्टे मे ग्रात्म-ज्ञान प्राप्त किया था। हमारे पास तो कई ग्रभ्यासी ऐसे भी है जो १२ वर्ष से हमारे पास साधना कर रहे हैं। हमे जो गुरुजनो के पास से ३१ दिन मे ग्रात्म-ज्ञान प्राप्त हुग्रा था वह इन्हे १२ साल मे भी प्राप्त न हो सका। इसका ग्रमिप्राय तो यह हुआ कि या तो ग्राप लोग इस ज्ञान के ग्रधिकारी नहीं है ग्रथवा हमें ही कुछ नहीं ग्राता ग्रथवा दोनों ही ग्रनभिज्ञ है।" इस पर रामिकशोरजी ने कहा, "ग्रापने थी ग्रानन्दस्वामीजी को गगोत्री में ग्राठ दिन मे ही सम्पूर्ण ज्ञान करवा दिया था, हमे तो उतना १२ वर्ष मे भी नही करवाया।" महाराजजी ने पुन मुस्कराकर कहा, "इसमे ग्रानन्दस्वामीजी की विशेपता है या हमारी ?" ग्रभ्यासियों ने कहा, "हम तो इसमे ग्रापकी विशेषता समभते है।" वास्तव में जिसमे सच्ची जिज्ञासा न हो ग्रौर जो पूर्ण ग्रधिकारी न हो, जिसमे ब्रह्म-ज्ञान प्राप्ति की पात्रता न हो, वह किस प्रकार इस ज्ञान को प्राप्त कर सकता है। दूध ग्रमृत के समान गुणकारी, लाभदायक, स्वादु तथा मधुर है। यदि उसे दुर्गन्धियुक्त गली-मडी वस्तुत्रों से पूर्ण पात्र मे रख दिया जाए तो वह भी विपवत् हो जाएगा। इसी प्रकार तप, त्याग, गम, दम, उपरित, तितिक्षादि साधनसम्पन्न न होने से जिज्ञामु ग्रात्म-विज्ञान का ग्रविकारी नहीं हो सकता। इसी कारण ग्राप लोगों को विशेष सफलता प्राप्त नहीं हो रही है। इतना समभा देने के उपरान्त महाराजजी ने उन्हे विश्वास दिलाया कि ग्राज वे विशेष वल लगाएगे, सव लोग सावधान ग्रीर समाहित होकर बैठे ग्रीर ग्रपनी-ग्रपनी साधना करे। जिस-जिस देश या स्थान मे जिसका अभ्यास चल रहा है वह उसी-उसी देश या स्थान मे अभ्यास करे, आज उसे विशेष सफलता लाभ होगी। पूज्य गुरुदेव ने प्रात साढे चार वजे सावधान श्रीर समाहित होकर श्रपने मनोवल से सवको स्तव्ध कर दिया। जो श्रभ्यासी जहा-जहा श्रभ्यास कर रहे थे वहा-वहा उम स्थान ग्रीर पदार्थी का सवको साक्षात्कार होने लगा। सबके अन्दर एक दिव्य ज्योति प्रकट होकर अन्दर और वाहर से सब पदार्थी को दिखाने लगी। लगभग डेढ घण्टा तक अभ्यासियो की यह स्थिति आज के अभ्यास में रही। प्राय सब साधकों को विशेष सफलता, समाहितता, विज्ञान श्रीर साक्षा-त्कार हुआ । सब साधक श्रत्यन्त प्रसन्न श्रीर सन्तुष्ट हुए । महाराजजी के प्रति बहुत कृतज्ञता प्रकट करने लगे ग्रीर सवने हाथ जोड कर निवेदन किया, "महाराजजी यदि ग्राप कुछ दिन ग्रीर इसी प्रकार का ग्रभ्यास करवाए तो हम सबका वेडा पार हो जाएगा।" महाराजजी ने कहा, "हा, तुम्हारा वेडा तो जरूर पार हो जाएगा किन्तु मेरा डूव जाएगा।" साधको के यह पूछने पर कि यह कैसे हो सकता है। महाराजजी ने कहा, "ग्राज मुझे ग्रपने मस्तिष्क से बहुत वल लगाना पड़ा है। मस्तिष्क पर जोर पटने से सिर-दर्द होने लग गया है क्यों कि तुम्हारे नटखट मनो को दमन करने मे, उन्हें दमन करके समाहित करने मे ग्रीर समाहित करके उस-उस स्थान मे लगाए रखने तथा विज्ञान करवाने मे मेरे सिर पर वहुत दवाव पड़ा है। इससे मस्तिष्क प्रोर् ज्ञान-वाहक नाट्या, सूक्ष्म तन्तु ग्रीर शिराए कठोर होगई है, इस कारण सिर मे वेदना होने लग गई है।

मस्तिष्क रोग-यह सुनकर अभ्यासियो की सारी प्रसन्नता दुख मे परिणत होगई। ६-३० वजे सब अभ्यासी अपने-अपने स्थान पर चले गए। इस दिन महा-राजजी के सिर में सारा दिन वेदना रही। सायकाल ५ वजे सैर करने के लिए गए और ६ वजे अभ्यास किया। ५-३० वजे श्री सत्यप्रकाश, उनकी धर्मपत्नी तथा धर्म-वती महाराजजी को प्रणाम करने श्राए और ६ वजे चले गए। ६-३० वजे महा-राजजी सीढियो का दरवाजा वन्द करने के लिए नीचे उतरे ग्रीर नीचे के वराडे मे घूमने लगे। धर्मवती ने पूछा, "ग्राज ग्राप यहा वराडे मे क्यो घूम रहे है ?" उन्हें पता चला कि महाराजजी ग्रस्वस्थ है ग्रीर स्मृति का ग्रभाव सा ग्रनुभव कर रहे हैं। तव ये वहुत घवराई ग्रीर सत्यप्रकाशजी को बुलवा कर डाक्टर को बुलाने के लिए कहा। महाराजजी को ऊपर ले जाकर लिटा दिया गया। प्रीतमचन्द, जगन्नाथ, महावीर म्रादि कई म्रभ्यासी वहा ग्रागए ग्रौर उपचार करने लगे। डाक्टर हसराज ने ग्राकर १०-३० बजे रक्त-सचार देखकर बतलाया कि रक्त चाप बहुत वढ गया है। इस समय २४० है श्रीर स्मृति जाती रही है। बार-बार पेशाव तथा डकारे ग्राने लगी। महाराजजी कभी-कभी वहा उपस्थित भक्तो तथा ग्रभ्यासियो से पूछते थे कि मुक्ते क्या होगया है श्रीर कभी श्रपने तिकए के नीचे से घडी निकाल कर देखने लगते थे। प्रात चार वजे तक इन्हे निद्रा नही ग्राई। इसके पश्चात् ७ वजे तक कुछ नीद श्राई। द बजे तक रक्त-सचार ठीक होगया था। महाराजजी ने डाक्टर से कहा कि मेरा स्वास्थ्य ग्रव ठीक है। रात्रि के ६-३० वजे से लेकर प्रात 🛱 वजे तक क्या हुग्रा, मुभे कुछ भी स्मरण नही है। रात्रि मे डाक्टर हसराजजी के ग्राने का भी उन्हे स्मरण नहीं था। डाक्टरजी ने इन सब कष्टो का कारण मस्तिष्क से श्रधिक काम लेना बताया । ग्रभ्यास न करवाकर पूर्ण भ्राराम करने की सलाह दी । रोग का निदान हो ही गया था । डाक्टर साहव ने इन्हें कई एक दवाइयो का प्रयोग करने के लिए कहा। इसके पश्चात् लगभग डेढ मास तक महाराजजी को जिर-पीडा रही । व्याख्यान देने, ग्रिधिक बोलने तथा मस्तिष्क से ग्रिधिक काम करने से जिर-पीडा वढ जाती थी, ग्रत यह कार्य इन्होने सर्वथा छोड दिए।

एक सप्ताह के पश्चात् महाराजजी ने ग्रभ्यासियो को ग्रभ्यास करवाना प्रारभ किया। शान्त भाव से जाकर चुप होकर बैठ जाते थे। सव भक्तो की यह सम्मति थी कि महाराजजी दिल्ली ग्रथवा बम्बई जाकर ग्रपना उपचार करवाए।

## दिल्ली, बम्बई ग्रादि नगरी का पर्यटन

श्री महाराजजी ने दिल्ली, ग्रहमदावाद, वम्चई ग्रादि नगरो के भक्तो को वहा जाने का वचन दिया हुग्रा था। सर्वप्रथम दिल्ली पधारने का निश्चय हुग्रा ग्रीर वहा पर श्री जगदीशचन्द्रजी डावर की कोठी पर निवास करने का विचार किया। श्री डावरजी ग्रपनी कार लेकर २५ दिसवर को ही स्वर्गाश्रम पहुच गए। दो मास के पर्यटन का पूरा प्रोग्राम बनाया गया ग्रीर ग्राश्रम की पूरी व्यवस्था की गई। ग्रभ्यास का सपूर्ण कार्य श्री दत्तजी ग्रीर कैप्टन साहव ने सभाला। प्रात काल कैप्टन साहव ग्रीर सायकाल श्री दत्तजी ने ग्रभ्यास करवाना प्रारभ कर दिया। महाराजजी के सब शिष्यो ग्रीर शिष्याग्रो ने बडे सम्मान के साथ इन्हे विदा किया। ज्वालापुर मे वानप्रस्थ ग्राश्रम मे महात्मा प्रभुग्राश्रितजी से मिलने गए। यहा पर महात्माजी

की शकायों का समाधान किया ग्रीर कुछ उपदेश भी दिया। दुग्धपान करके यहां से दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। दोपहर के १ वजे वहां पहुचे। यहां पर श्रनेक भकत फूल-मालाए लेकर स्वागतार्थ प्रतीक्षा में खंडे थे। महाराजजी ने सबको उपदेश देकर ग्राशीर्वाद दिया। जनता को सत्मग ग्रीर दर्शन के लिए ४ वजे से ६ वजे तक का समय दिया गया। मेठ जुगलिकशोरजी विरला को महाराजजी की ग्रस्वस्थता का पता चल गया था, इमलिए इन्होंने वडे-वडे योग्य वैद्यों को उनका उपचार करने के लिए भेजना प्रारम कर दिया। रोग के निदान के वारे में प्राय सभी वैद्यों की सम्मति एक थी किन्तु डाक्टरों का इनमें मतभेद था। स्वर्गाश्रम के डाक्टर हसराजजी ग्रीर दिन्ली के प्रसिद्ध मस्तिष्क रोगों के डाक्टर वलदेविसह दोनों की सम्मति रोग के विषय में एक थी। उन्होंने दिमागी काम तथा चिन्ला न करने की सम्मति दी।

जिज्ञासु भवतो का ज्ञका-समाधान—पूज्य महाराजजी ने सत्सगी भवतो को ४ में ६ बजे तक का समय देना प्रारम्भ कर दिया। जिस विषय में जो जका जिज्ञासु लोग करते ये उसी विषय के समाधानरूप में ज्यान्यान प्रारम कर दिया जाता था। दो घटे में केवल दो-तीन ज्ञां का ही समाधान हो पाता था। ये ज्याख्यान किसी विद्येप विषय या कथा के रूप में नहीं होते थे, केवल जका समाधान के रूप में ही होते थे। उस प्रकार एक मध्ताह तक नाना विषयों पर प्रवचन होते रहे। इस जकासमा-धान में ४-५ सी स्त्री-पुरुष एकि वित होने थे।

श्री जगदीशचन्द्र डावर ने शका उठाते हुए श्री महाराजजी से पूछा, "ग्राप भगवान् को निर्गुण मानते हैं, फिर प्राणिमात्र के कर्मफल की व्यवस्था कौन करता है? मनुष्य को तो समरण भी नहीं रहता कि मैने कीन-कीन से कर्म किए हैं श्रीर किस कर्म का क्या फता हो मकता है। न्यायाधीश भी लोक में सब के कर्मफल की व्यवस्था नहीं कर सकता जवतक कोई व्यक्ति किसी ग्रपराधी के विषय में न्यायालय में जाकर दावा दायर न करें। मनुष्य पाप करके स्वयं भी उसका दु ख रूप फल भोगना पमन्द नहीं करता, ग्रन ग्राप इमका स्पष्टीकरण करने की कृपा करें।"

प्राणिमात्र के कर्मफल की व्यवस्था--पूज्य महाराजजी ने कर्मफल के विषय में निम्न प्रकार से इस शका के समाधानरूप में अपना प्रवचन प्रारम किया —

यदि हम उच्चर को कर्मफलदाता मानते है तब कर्मफल प्रदान करना भी उसका गुण विशेष मानना पटेगा, यत इसी प्रकार ग्रीर भी यनेक गुण उसमें मानने पटेंगे ग्रीर जिसमें अनेक गुण होगे उसमें गुणों का कमपूर्वक उत्पन्न होना भी मानना पटेगा। प्रत्येक गुण का व्यापार भी कमभेद से मानना होगा। जहां कमपूर्वक गुणों की उत्पत्ति ग्रीर कमपूर्वक व्यापार होगा उसको विकारवान् मानना पटेगा ग्रीर विकारवान् पदार्थ परिणामी होता है। ईच्चर निर्गुण है, यत वह सर्व विकारों ग्रीर सर्व गुणों में रहित ग्रीर श्रपरिणामी है। इमिलए ईच्चर कर्मफल की व्यवस्था नहीं कर सकता। जब हम उसे मृष्टिकर्ता नहीं मानते तब इसे कर्मफलदाता मानने की क्या प्रावश्यकना है ने जीवातमा भी उस कार्य को नहीं कर सकता। जब इसे अपने ही कर्म स्मरण नहीं रहते तब दूसरों के कर्म को कैसे स्मरण रखकर उनका फल प्रदान करेगा निर्मा एकदेशी है। वह सारे जगत् के प्राणियों के कर्मफल प्रदान करने में कैसे समर्थ हो सकता। ग्रनेक

ग्रात्माए मिल कर भी कर्मफल प्रदान नहीं कर सकती क्यों कि उनमें भी एकदेशिता है। सब देशों के प्राणियों के कर्मफल का विभाग किस प्रकार करेंगे ?

िकर्म का फल कर्म मे निहित—इसका समाधान इस प्रकार है। कर्म का फल सूक्ष्मरूप से उसमे ही निहित रहता है। एक विद्यार्थी विद्याध्ययन करता है, उसका फल विद्याप्राप्ति होता है। पाचक भोजन वनाता है, उसका फल क्षुधा निवृत्ति होता है। कृपक खेती करता है, उसका फल ग्रन्नोत्पत्ति होता है। एक गृहस्थी विवाह करके पत्नी सहवास करता है, तो इसका फल सन्तानोत्पत्ति होता है। ग्राम या सेव का वीज वोया जाता है, ये अकुरित होकर वृद्धि को प्राप्त होते है और समय आने पर फल देते है। फल आने से प्रथम ही इन वीजों में अकुर, तना, जाखा, पत्ते, फूल, फलादि निहित थे अर्थात् सूक्ष्म रूप से कारण रूप मे उसमें विद्यमान थे। देश, काल, निमित्त, ग्रीर सामग्री उपस्थित होने पर स्वय ही फल देने लगते हैं। ग्रत प्रत्येक कर्म ग्रपने फल को साथ लिए ही होता है। जब उसे देश, काल, निमित्त, सामग्री ग्रादि साधन जुट जाएगे तव ही वह कर्म अपने फल को प्रदान करेगा। कर्मफल प्रदान करने मे ईंग्वर की ग्रावग्यकता नही है। जव गन्ने का फल गन्ना ग्रीर ग्राम का फल ग्राम ही होता है तब इसमें ईंग्वर की ग्रावन्यकना भी क्या है ग्रीर वह करेगा भी क्या ? यदि गन्ने में ग्राम ग्रीर ग्राम में गन्ने लगाने होते, ग्रथवा घोड़े से गाय बनाना होता या वैल को हाथी या गैडा वनाना होता, तव गायद् डिंग्वर की जरूरत पडती। इस विप-रीत फल के लिए भगवान् की ग्रावन्यकता हो जाती। जव मनुष्य से मनुष्य ही उत्पन्न होता है, हाथी से हाथी ग्रीर ग्राम के पेड के फल ग्राम ही होते है, तव भगवान् की क्या ग्रावश्यकता है ? जब पाप-कर्म का फल दुख ग्रीर पुण्य-कर्म का फल मुखे ही होता है तव फल प्रदान के लिए ईव्वर की क्या आवव्यकता है ? पाप और पुण्य, अधम और धर्म जब देश, काल, निमित्त और सामग्री प्राप्त कर लेंगे तब ही दुख ग्रीर सुख के रूप मे ग्रपना फल देने मे स्वय ही समर्थ हो जाएगे। इनके लिए ईज्वर की आवश्यकता नहीं है। यदि आप कहे कि कर्म जड पदार्थ है, अत स्वय फल देने मे समर्थ नही हो सकता, तव इस कर्म-फल की व्यवस्था करने वाला कोई अन्य चेतन होना चाहिए। यदि रुढिवाद से ग्रापकी वात को ही मान ले तव भी चेतन को देश, काल और निमित्त तथा सामग्री की अपेक्षा होगी। फिर उस चेतन तत्त्व ईव्वर का महत्व ही क्या रहा हमारे सिद्धान्त के अनुसार कर्म उचित देश, काल, निमित्त और सामग्री पाकर स्वय ही फल प्रदान करने में समर्थ होता है, ईव्वर की ग्रपेक्षा नही करता। ग्रापका ईव्वर फल प्रदान करने मे इन चारो की ग्रपेक्षा करता है।

देश—देग का ग्रथं है भूमि, जिस भूमि मे उपजाने की सामर्थ्य हो। ग्रथवा देग का ग्रथं है प्राणियों के शरीर, जिनमें कर्मकल का उपभोग होगा ग्रथीत् जिनमें कर्मकल भोगने की सामर्थ्य हो। जहा पर ऐसे साधन या उपभोग बहुत मात्रा मे या न्यून मात्रा में उपलब्ध होते हो ग्रथवा पुरुषार्थ या कर्मवग या प्रारब्धवश जहा पहुचकर भोग ग्रथवा फल भोगने हो ग्रथवा किसी भू-भाग विशेष में पहुचकर दुख, सुख रूप कर्मकल भोगना हो, उसे देग कहते हैं।

काल--काल का ग्रर्थ है समय । जैसे वर्षा ऋतु मे विशेष रूप से वनस्पतिया-ग्रीपिथया उत्पन्न होती हैं या वसन्त ऋतु मे नवपल्लव, पुष्पादि किनलते हैं ग्रथवा वर्षा त्रतु में ही विशेष रूप में वर्षा होती है। ग्रपने नियत समय पर ही वनस्पति, फूल, फल, फ्रन्नादि पककर तैयार होते हैं। नियत समय पर ही दश मास में वानक न्यस्थ और भनी प्रकार से उत्पन्न होता है। काल कर्मफल का माप तोल करके उसे प्रदान करता रहना है। कर्मफल के लिए उचित काल की प्रतीक्षा करनी होनी है।

निमित्त—निमित्त वह है जो देश, काल श्रीर सामग्री को सयुक्त कर देता है अथवा नयोग का कारण बन जाता है। निमित्त कारण को भी कहते है, जैसे घरोर में झान्मा नान्तिच्य मात्र में निमित्त कारण बना हुग्रा है अथवा जिस प्रकार क्रिता प्रकृति के नान्तिच्य मात्र में निमित्त कारण बना हुग्रा है। इन दोनो न्यितियों में निमित्त का प्रयं नयोग है अथवा निमित्त का ग्र्यं चेतन भी हो सकता है ज्योकि घरोर श्रीर प्रकृति दोनों में चेतन निमित्त को हुए है। इनके सम्बन्ध से घरोर श्रीर प्रकृति में कतंत्व धर्म उत्पन्त हो रहे हैं। ये दोनों कूटस्थ, अचल, निविकार, निष्क्रित, नगदाप ने रित्त होकर निथत है। निमित्त का श्र्यं यहा जड पदार्थं भी समभा जाता है. जैने श्राधी बहुत वेग ने चली श्रीर एक या इससे श्रिवक वट या पीपल के बीज को भूमि ने उठाकर गगन मण्डल में में नेजाकर दूर देश में फेक दिया—किसी दीवार वे गुराय में या किसी पर्वत पर। वहा मिट्टी, जलादि के सयोग से वह वीज उपजरर एक युहत्काय पेट के त्य में बन गया। इसमें वाश्रु मुस्य रूप से निमित्त बन जाता है। कार्यक भोग की श्राप्ति में कभी-कभी स्त्री-पुरुष, परिवार, ग्राम तथा देश के निवासी भी निमित्त बन जाया करते हैं। उनके मिलन या सयोग से प्रारब्ध प्रथम वर्णमान रान में किए हुए कर्म के फल की उपलब्धि हो जाया करती है। यत निमित्त भी ग्रांक श्रुर्थों में कर्मफन प्रदान करने में देश तथा कान के समान सहयोगी होता है।

मामग्री—पामग्री का नात्पर्य है उस प्रकार के पदार्थ युक्त साधन जो कर्म-फल प्रदान करने में नहायफ होने है। देश, काल, निमित्त के अनुकूल होने पर भी कभी-गर्भी गाम नहीं बनता। मान लीजिए, कहीं बड़ा ग्रारोग्यप्रद स्थान है। यहां बहुत यदा ग्राराना है। टाक्टर बटा योग्य श्रीर कर्त्तं व्य-परायण है। परन्तु रोगी के रोग की निवृत्ति के लिए नामग्री रूप ग्रीपथ का ग्रामाव है। ऐसी स्थिति में ग्रारोग्यता रूप फल प्राप्त नहीं हो सकता। ग्रात कर्मफल प्रदान में श्रीपथिरूप सामग्री की ग्रायव्यक्ता है। ट्रेमें दूसरे प्रकार में भी समभ्तो। फसल बोनी है। हलादि चलाकर भृति नैयार कर दी गई है। फसल बोने का समय भी ग्रा गया है, ग्रात समय भी ग्रानुकूल है। निमित्त रूप ने कृपक जो बीज बोएगा वह भी है। परन्तु कृपक का हल, बैल, पावटादि जो बीज बोने के लिए महायक मामग्री थी उसे चोर चुराकर लेगए। सामग्री के ग्रमाव में कृपक को जो विशेषरूप में फसल का लाभ होना था वह नहीं हो नका। ग्रात कर्मफल-भोग में सामग्री होना ग्रत्यन्त उपयोगी ग्रीर सहायक है। इससे यह निद्ध होना है कि देश, काल, निमित्त ग्रीर सामग्री कर्मफल प्रदान करने में समथे है। उसके लिए रेटवर की ग्रावव्यकता नहीं। भले ही कर्म जड है, परन्तु हम तो इनका फल भी जट रूप में ही मानते हैं ग्रथित् जट रूप कर्म से जड रूप फल की उत्पत्ति हो रही है ग्रीर उस फल प्रदान करने में ये चारो ही कारण बने हुए है। ग्रात्मा ग्रीर

परमात्मा का चित्त और प्रकृति के साथ सर्वत्र श्रीर सर्वदा सान्निध्य तो हम मानते ही है। सान्निध्य होने से कर्तापन या फलप्रदान कर्तापन सिद्ध नही होता।

चेतन के आश्रय से कर्म स्वय फलप्रदाता—चित्त और प्रकृति में कर्म चेतन के आश्रय से होता है, अत चेतन के आश्रय से ही कर्म स्वय ही अपना फल प्रदान करने में देश, काल, निमित्त तथा सामग्री के सम्बन्ध से समर्थ हो जाएगा। इस कर्मफल की व्यवस्था करने में किसी की कर्तृत्वरूप में या न्यायाधीश के रूप में आव- रयकता नहीं है। जब कर्म चित्त का ही एक गुण या धर्म विशेष या कियाविशेष या व्यवहारविशेष ही है तो फल भी तो चित्त का ही गुण या धर्म विशेष मानना पड़ेगा। जिस फल को यह चित्त दु ख या मुख के रूप में मान रहा है, ये दु व और नुख फल के रूप में इसी चित्त के ही धर्मविशेष हैं। इसलिए इस चित्त के कर्मफल प्रदान करने में किसी चेतन की आवश्यकता नहीं है। यदि हम चेतन में कर्म का होना मान ले और उसका फल प्रदान करने वाला किसी अन्य चेतन विशेष को मान तब दोनो ही परिणामवाले सिद्ध हो जाएगे क्योंकि दोनों में कर्म उत्पन्न हो रहा है। एक में इच्छापूर्वक कर्म उत्पन्न हो रहा है, दूसरे में फलप्रदान रूप कर्म उत्पन्न हो रहा है। वैशेषकदर्शन में कर्म के ५ लक्षण किए है—'उत्क्षेपणमवृद्धेपणमाकुञ्चन प्रमारण गमनमिति कर्माण।'

श्रात्मा श्रौर ईश्वर में कर्म का ग्रभाव--श्री कणाद ने ग्रात्मा ग्रौर ईश्वर को द्रव्य मान कर इनमे ५ प्रकार के कर्म का ग्रभाव माना है। हमारे सिद्धान्त मे भी म्रात्मा भौर परमात्मा दोनो चेतन है, ग्रत इनमे कर्म का स्रभाव है, वयोकि उत्क्षेपण म्रर्थात् ऊपर उठना, म्रवक्षेपण म्रर्थात् नीचे पडना, गिरना स्प कर्म ईव्वर मे नही होता अथवा आकाग और पाताल में कर्म करना रूप वर्म भी नहीं वनता। आकुचन श्रयति सुकडना तथा प्रसारण व फैलना रूप कर्म श्रात्मा और परमात्मा दोनो मे ही नही होता। यदि ये दोनो कर्म इनमे मानेगे तो सकोच श्रीर विकास रूप होने से विकार-वान् वन जाएगे। गमनरूप धर्म भी ईश्वर मे पैदा नही होता और न यह धर्म स्वाभा-विक रूप से इसमे है क्योंकि गमन एकदेशी में होता है या जिसमे अवकाशहप धर्म हो उसमे होता है। गति या गमन वही सभव है। ग्रात्मा ग्रीर परमात्मा मे ग्रवकाश रूप धर्म नहीं है। ये दोनों कूटस्थ, निरवयव है। जो सावयव होगा उसी मे अवकाश रूप धर्म पैदा हो सकता है। चित्त ग्रौर प्रकृति मे ही ऐसा हो सकता है। ग्रात्मा ग्रौर परमात्मा दोनो निष्त्रिय हैं, इसलिए इन्मे कर्तृत्व धर्म या फलदातृत्व धर्म नहीं है। सभव हो सकता है कि ग्राप जीवात्मा के एकदेशी होने पर यह शका करे कि इसम गमनागमन रूप धर्म है। इस सूक्ष्म ग्रात्मा को कोई ग्रणु मानते है तथा कई ग्राचार्य परमाणुवत् मानते हैं। कोई इसे वाल के ग्रग्नभाग का दशसहस्रवा भाग मानते है, किन्तु हम इसको इतना सूक्ष्म मानते है जिसमे किसी प्रकार का कोई ग्रवकाश न हो तथा जिसका कोई विभाग न हो सके। यह ग्रात्मा भी इसलिए ईब्वर के समान निरवयव है। इसमे स्वय गमन्रूप धर्म नही है। एकदेशी होने से स्थूल, सूक्ष्म कारण-शरीर द्वारा इसका गमन हो जाता है। गरीरो द्वारा उठा कर ले जाया जा सकता है। गमनागमन रूप धर्म शरीरो का है, आत्मा का नही । आत्मा गमनरूप कर्म से रहित है। इससे सिद्ध होता है कि ये पाच प्रकार के कर्म चित्त ग्रीर सर्व जगत् के उपादान

कारण रूप प्रकृति में ही होते हैं, श्रात्मा श्रीर परमात्मा में नहीं, क्योंकि ये दोनों कूटस्य श्रीर निरवयव है।

श्री जगदीशचन्द्र टावर ने दूसरे दिन यह शका की कि ईश्वर मे म्रनेक गुण नित्य मानने में क्या दोप है ?

## भगवान् मे नित्य गुणो का श्रभाव

श्री महाराजजी ने उनकी शका का समावान करने के निए निम्नलिखित प्रवचन किया —

मवंप्रयम यह समभने की ग्रावश्यकता है कि ईश्वर मे ये गुण समवाय सम्बन्ध से रहने है या न्यस्प सम्बन्ध ने ग्रथवा तादानम्य भाव सम्बन्ध से ग्रथवा सयोग सम्बन्ध में रहते हैं।

समयाय सम्बन्ध—समवाय सम्बन्ध का श्रीभिप्राय यह है कि जहा पर इस सम्बन्ध के होने ने कार्य हो श्रीर न होने से न हो, जैसे सूत्र श्रीर वस्त्र का परस्पर समयाय सम्बन्ध है। सूत्र वस्त्र के प्रति समवायी कारण है श्रीर वस्त्र इसका कार्य है। सूत्र का समवायी सम्बन्ध है। सूत्र श्रीन कार्य में वनमान है श्रीर विकार भाव को प्राप्त होकर कार्यहप में विद्यमान है। क्या ईच्यर गुणों के प्रति समवायी कारण है श्रीर गुण उसके कार्य है यदि ऐसा मानोंगे नो कार्य-कारण-भाव होने ने ईच्यर परिणामी श्रीर परिवर्तनशील हो जाएगा।

स्वरप सम्बन्ध न्यान्य मम्बन्ध का तात्पर्य है गुण श्रीर गुणी का श्रभेद सम्बन्ध । इसी श्रभेद का नाम न्यस्य सम्बन्ध है । पचनन्मात्राश्रों के सघात से जब पृथ्वी महाभून उत्पन्न होता है नव इसमें कम्पूर्वक निम्न धमं उत्पन्न होते हैं — श्राकार, स्थिरता, गुक्ता, किठनता, श्राच्छाइन, विदारण, स्थ्रतादि । यहा पृथ्वी श्रीर इन गुणों का परस्पर म्यस्प सम्बन्ध है । पृथ्वी गुणी है, गुक्ता, किठनतादि गुण हैं । ये गुण परिणन होती हुई पृथ्वी की श्रवस्था यिषेष है । गुक्त्व परिणत होती हुई श्रवस्थाओं में गुण के स्प म रहना है । गुण श्रीर गुणी पृथक् नहीं रहते । गुण श्रीर गुणी में सदा श्रभेद रहता हूं । इस श्रभेद को ही रवस्प सम्बन्ध कहा गया है । क्या ये गुण उत्वर में कारण स्प में नित्य रहते हूं ? क्या इव्वर परिणाम भाव को प्राप्त होतर इन गुणों को श्रभेद सानते है नो श्रभेद नभी सिद्ध होगा जब गुणी गुणों में पहुच कर ठहर जाए । जैसे पृथ्वी गुणी है श्रीर गुग्तव इसका गुण है । पृथ्वी गुफ्तव भाव को प्राप्त होकर गुफ्तव गुण में स्थित है, उमीलिए उसका गुण से श्रभेद सिद्ध होता है । गुणी गुणान्तरों के स्प म परिणत हो गया । क्या श्रापका उच्चर उस प्रकार के श्रभेद रप में गुणों में रहता है ? यदि एसा मानोंगे तब उच्चर भी पृथ्वी के समान विकारवान वन जाएगा ।

तादातम्य-भाव सम्बन्ध—यदि तादातम्य-भाव सम्बन्ध का ग्रर्थ हम यह करते हैं कि उटवर ग्रीर गुणो की तदूपता है अर्थात् दोनो का श्रभेंद है, एकरूपता है, ईश्वर ग्रीर उसके गुणो में एकर्पता है, तब उपरोक्त समवाय सम्बन्ध ग्रीर स्वरूप सम्बन्ध के समान ही या नो कार्यान्तर ग्रर्थात् कारण-कार्य-भाव मानना पडेगा ग्रथवा द्रव्य की परिणत होती हुई श्रवरथा का परिणामान्तर मानना पडेगा। इसको योग की

परिभापा में स्वरूप सम्बन्ध कहते हैं ग्रीर वैशेपिक की परिभापा में समवाय सम्बन्ध कहते हैं, वेदान्त की परिभापा में तादातम्य-भाव सम्बन्ध कहते हैं। जब ग्राप ईश्वर ग्रीर इसके गुणों का तथा ग्रात्मा ग्रीर इसके गुणों का परस्पर तादातम्य सम्बन्ध मानते हैं तो एक प्रकार से समवाय सम्बन्ध ग्रीर स्वरूप सम्बन्ध का यह तादातम्य सम्बन्ध भी पर्यायवाचक शब्द हैं ग्रीर उपरोक्त दोनों के ग्रथं का द्योतक हैं। या तो ईश्वर का ग्रवस्थान्तर रूप परिणाम गुणों को मानो ग्रथवा कार्यान्तर मानो। तादातम्य-भाव सम्बन्ध भी ईश्वर में विकार भाव को ही सिद्ध करता है।

सयोग सम्बन्ध—इसका ग्रिभिप्राय है दो पृथक्-पृथक् पदार्थों का सम्बन्ध । ईश्वर ग्रीर गुण दो पृथक्-पृथक् द्रव्य या पदार्थ है । द्रव्य ग्रीर पदार्थ में हमारे ग्रथों में भेद नहीं माना गया ग्रथित् सवको पदार्थ रूप से ही वर्णन किया गया है । न्याय तथा वैशेषिक की परिभाषा में पृथ्वी, जलादि को द्रव्य माना है परन्तु हमने इन सव को पदार्थ ही माना है । यदि गुणों को ग्रलग मानते हो तो इन दोनो ग्रर्थात् ईश्वर ग्रीर गुणों का नित्य सयोग होगा ।

ईश्वर में नित्य गुणों के स्रभाव की सिद्धि—स्राप पुन शका करेंगे कि इन गुणों का उपादान कारण कीन है ? यदि स्राप कहोंगे प्रकृति है, तब ये गुण प्रकृति के हुए, ईश्वर के नित्य गुण नहीं हुए, स्रत ईश्वर के नित्य गुण सिद्ध नहीं होते । स्राप कहोंगे कि जैसे दाह स्रीर प्रकाश स्रिंग के स्वाभाविक गुण है, ऐमें ही ईश्वर में भी उसके गुण स्वाभाविक है । किन्तु स्रापकों यह समक्षना चाहिए कि स्रिंग उत्पन्न हुस है, स्रत उसके गुण भी उत्पन्न हुए हैं स्रीर उसके साथ ही उत्पन्न हुए है, किन्तु ईश्वर तो उत्पन्न नहीं हुसा । जिसमें विकार धर्म नहीं है उसमें गुणान्तर की उत्पत्ति भी नहीं हो सकती । स्रिंग का दृष्टान्त इसलिए दृष्टान्ताभास ही है, यथार्थ दृष्टान्त नहीं । स्रिंग सर्वेव दो पदार्थों का होता है, चाहे वे नित्य हो या स्रिंग्य, इसलिए ईश्वर स्रीर गुण दो सिद्ध होते हैं । स्रयोग सम्बन्ध मानने से ईश्वर में भी ममेद की भावना हो जाएगी और वह भी मनुष्य के समान बद्ध हो जाएगा । ईश्वर के विकारवान् हुए विना गुण उसमें सिद्ध नहीं होते स्रीर यदि होंगे भी तो स्रिनत्य होंगे, नित्य नहीं । गुणों में स्रिनेक्तव है तो क्या ईश्वर भी स्रोनक प्रकार से विकारी वना रहेगा ? जहा स्रोनकत्व होगा वहा भेद होगा और नानात्व होगा । क्या ईश्वर में नित्य गुणों के कारण नानात्व मानोंगे ? जहा स्रीर जिसमें नानात्व है वहा विकारभाव स्रवश्य मानना पडेगा ।

विकार रहित होने से किया का श्रभाव—ग्राप उपनिपद् वाक्य का प्रमाण देंगे—"तस्य स्वाभाविकी ज्ञानवलिकया।" यदि ईश्वर मे ज्ञान, वल, किया स्वाभाविक मानते हो तो किया पाच प्रकार के कर्मों के अन्तर्गत ग्रा जाती है। जहा गित है, कर्म है तथा व्यापार है, वहा परिवर्तन, परिणाम, गमनादि विकार मानने पड़ेगे। नित्य किया ईश्वर मे रहने से वह भी प्रकृति के समान परिणत होता रहेगा। तब प्रकृति ग्रीर ईश्वर मे क्या अन्तर रहा वह जड होकर परिणत हो रही है, यह चेतन होकर परिणत हो रहा है। ग्रत नित्य निष्त्रिय ईश्वर मे कोई भी नित्य या अनित्य गुण सिद्ध नहीं होता। इस उपनिपद् वाक्य मे जो ये गुण ईश्वर मे स्वाभाविक कह दिए हैं उसके विपय मे यह समझो कि प्रकृति भी नित्य है ग्रीर ईश्वर

भी नित्य है। गदा दोनों का व्याप्यव्यापक भाव सम्बन्ध रहता है। तीनो गुण प्रकृति में ही उत्पन्न होने हैं, अत उनको उच्चर में आरोप कर दिया गया है, ईर्वर पर थोप दिया गया है, गयोकि इन दोनों का सदा सम्बन्ध रहता है। इस वाक्य में इनकों ज्ञान, बल, प्रिया कहा है और साग्य में सत्व, तम और रज कहा गया है और ये प्रकृति के ही गुणविभेष या कार्यविभेष अथवा अवस्थाविभेष ही माने गए है। इमिलिए ये नीनों गुण उच्चर के न मानकर प्रकृति के मानने चाहिए। ऐसा मानने से हो मंसार को उत्पत्ति हो नकती है। ईम्बर को कर्ना मानने की आवश्यकता नहीं है। केवल माप्त ईम्बर को या बहा की निविकार, कूटम्थ हप में स्थिति रहनी चाहिए। उनके गानिन व्य में मसार के सब कार्य होते रहेगे। हम चेतन ब्रह्म या ईम्बर का अभाव तो नहीं मानते, हम नो केवल माप्त उसको निर्मुण, निष्क्रिय तथा निरवयव सिद्ध करना नाहते है।

सब श्रोतागण पूज्य महाराजजी के पाटित्यपूर्ण, तर्कसगत स्त्रीर युक्तियुक्त नमाधान को मुनगर नन्तुष्ट होगए।

## वंदिक भिवत-साधना-श्राश्रम रोहतक को प्रस्थान

उनी प्रगर खनेक नका-समाधानपूर्वक पूज्य महाराजजी के द दिन तक सारगिन न्यान्यान् होने रहे और दिन्नी नियासियों ने उनसे खाशातीत लाभ उठाया। दो नारीन को एक बजे के नगभग महाराजजी के सैकड़ों भक्त दर्शनार्थ खाए। उनमें पूज्य न्यापाजी महाराज ने नगभग एक वण्टा तक खपने उपदेशामृत का पान करवाया। खड़ाई वज नक्ने श्रद्धापूर्वक सम्मान से रोहनक के लिए विदा किया। नोहार ने महान्मा प्रभुष्टाश्चिनजी तथा उनके शिल्यों ने वार-वार वहा पधारने के तिए प्रायंना की थी, अन वहा जाना खावव्यक था। श्री जगदीशचन्द्र डावर अपनी कार में पूज्य गुरदेव को रोहनक ने गए थे। स्वामी विज्ञानानन्दजी, खोम्प्रकाणजी स्वा शान्ता खीर कई भक्त, शिष्य खौर शिल्याए गई। वैदिक भिवत-साधना-खाश्चम में महान्या की का बड़ा भारी स्वामत किया गया। पूज्य गुरुदेव का ईश्वरभिन खीर खान्य-ज्ञान प्राप्ति के नावनो पर उपदेश हुद्या। वैदिक भिन्त-साधना-खाश्चम भी खोर में खापको निम्नित्यित एक खीननन्दनपत्र भेट किया गया —

## श्रभिनन्दन-पत्रम्

श्रीष्ठम् म न' पिनेव सूनवे ग्रग्ने सूपायनो भव सचस्व न स्वस्तये। श्रीविशावितरस्य योगिराजस्य श्रीरवामिनो योगेय्वरानन्दमहाराजस्य सेवायाम् —

ग्रय नववर्षारम्भग्य घुने दिवमे वय सर्व रोहतकनिवासिन परमसीभाग्य-गानिन यदिमन् गुभावसरेऽधिनविद्यमाननीयग्य योगिसम्राजो ब्रह्मर्षे श्रीस्वामिनो योगेञ्चरानन्दमहाराजग्य गुभदर्शनानि प्राप्य कृतार्थता नभामहे ।

भवदीयदर्शन सम्प्रति न मानसाना दुर्भावना हरति श्रत शुभस्य हेतु, पुराग्रताना शुभवर्मणा च परिणाम यत् भवदीयदर्शन श्ररमाक त्रैकालिकी सौभाग्य-समृद्धि प्रदर्शयति । वयमेताद्धारय महापुरुषस्य शुभदर्शन प्राप्तुवन्त स्म य अष्टादश-वर्षपर्यन्त समोवीपवैते निवास कृतवान्, येन चाष्टादशवर्षपर्यन्त कदाचिदपि पर्वतादध पद न रक्षितम्, यो वाल्यादेव ब्रह्मचर्यं पालयन् योगसाधनेन विविधा योगसिद्धय प्राप्तवानस्ति, यश्चेश्वरजीवप्रकृतीना साक्षात्कार प्राप्तवान्, येन चामर- ग्रन्था ग्रात्म-विज्ञानम्, वहिरङ्गयोग , ब्रह्मविज्ञानञ्चेति नामानो विरचिता जगतञ्च महानुपकार कृत ।

ग्रान्म-विज्ञान हि हिन्दीभाषायामाङ्गलभाषाया च ५०० पृष्ठेषु लिखितमस्ति । बहिरङ्गयोगे २५० ग्रासनानि योगसम्बन्धीनि सन्ति । एव ब्रह्मविज्ञाने चातिगुह्मज्ञान विगदीकृतम् यदद्यपर्यन्त केनापि एतावत्या सरनतया न स्पष्टीकृतम् ।

यस्य चोत्तरकाश्या स्वर्गाश्रमे च योगनिकेतनौ स्त यश्च प्रतिवर्ण देशे विभिन्न-स्थानेषु योगशिवराणि सस्थाप्य योग प्रचारयित । एतादृश महान्त पुरुप योगिसम्राज वय रोहतकनिवासिनो हार्दिकस्वागतेन समानयाम श्रिभनन्दयामश्च, नदीयपवित्र-चरणारिवन्दयो साष्टाङ्ग दण्डवत्प्रणाम कुर्म । सविनय प्रार्थयामश्च यन्महोदया भवन्त एतादृशमुपदेशामृत पाययन्तु येनास्माक सर्वेषा परमकत्याण भवेत् ।

वैदिक भक्ति-साधना-श्राश्रम, रोहतक ११६५ निवेदका भवता कृपाभिनापिण रोहतकनिवासिनो जना

सायकाल चायपान करके अपने कई भक्तों के निवासम्थानो पर आशीर्वाद देने गए और तत्पश्चात् दिल्ली लीट गए।

#### अहमदाबाद गमन

यहा से पूज्य महाराजजी को ग्रहमदावाद पद्यारना था। विदा होने से पूर्व एकत्रित सब भक्तो ग्रीर शिष्यो को उपदेश दिया। हवाईजहाज मे ग्रहमदावाद के लिए स्थान नियत करवा दिया गया था। एरोड्रोम पर श्री जगदीशचन्द्रजी, उनकी धर्मपत्नी, श्री ग्रोमप्रकाशजी, शान्ताजी, द्वारिकानाथजी, सुदर्शनजी, शकरलालजी, लक्ष्मीदेवीजी ग्रादि बहुत से भक्त ग्रीर शिष्य महाराजजी को सम्मान-पूर्वक विदा करने गए। तीन वजे हवाईजहाज रवाना हुग्रा ग्रीर छ वजे ग्रहमदावाद पहुच गया। वहा पर सेठ रमणलाल लल्लूमाई, सेठ भोगीलाल वालाभाई, सेठ मोहनलाल फूलचन्द शाहादि ग्रनेक सज्जन स्वागतार्थ ग्राए। सेठ रमणलालजी ने ग्रचलेश्वर महादेव के एकान्त स्थान मे पूज्य महाराजजी को ठहराया तथा भोजन ग्रादि की बडी उत्तम व्यवस्था की। ये १२ वर्ष पूर्व यात्रार्थ गगोत्री ग्राए थे ग्रीर महाराजजी के पास योगनिकेतन मे ३-४ दिन तक ग्रपने मित्रो के साथ रहे थे। तब से ये योगनिकेतन की सहायता करते रहते है। महाराजजी के प्रति वहुत श्रद्धा ग्रीर भिवत रखते हैं। इन्होने पूज्य स्वामीजी महाराजजी से ग्रहमदावाद मे कई भाषण देने के लिए प्रार्थना की जिससे हिमालय के योगी के विशेष ग्रात्म-ज्ञान सम्बन्धी ग्रमुभवो से ग्रहमदावाद की जनता भी लाभ उठा सके। श्री महाराजजी के कई दिनो से सिर मे पीडा रहती थी इसलिए केवल एक व्याख्यान 'योग द्वारा ग्रात्म-साक्षात्कार' विषय पर रखा गया। सेठ रमणलाल यहा के सन्यासाश्रम के ट्रस्टी थे। इस ग्राश्म मे नित्य प्रति सत्सग ग्रीर व्याख्यान होते थे। स्वामी कृष्णानन्द मण्डलेक्चर यहा के ग्रध्यक्ष थे। ये सत्सिगयो को शास्त्र भी पढाते थे ग्रीर कथा भी करते थे। महाराजजी के

व्यारयान की सर्वेत्र मोपणा करवा दी थी और विज्ञापन भी वटवा दिए गए थे। व्यारयान सायकाल ६ वर्जे में ७ वर्जे नक सन्यासाश्रम में हुन्ना।

### योग द्वारा श्रात्म-साक्षात्कार

लगभग छ हजार की सरया में लोग महाराजजी के भाषण में उपस्थित हुए। इन्होंने 'श्रयन्तु परमो धर्म यत्योगनात्मदर्जनम्' से श्रपना प्रवचन प्रारभ किया।

प्रत्याहार—जिज्ञामु को नाहिए कि सर्वप्रथम प्रत्याहार के द्वारा श्रपनी विषयों में गमन करती हुई टिन्द्रयों को रोके।

धारणा-भूमध्य मे धारणा पवकी करनी चाहिए। कुछ काल तक धारणा के पनकी हो जाने के प्रनन्तर उसी स्थान पर ध्यान को दृढ करे। इसके दो साधन हैं। एक नो ने से को गुन रसकर, दूसरा नेत्रों को बन्द करके। दोनी साधनी से ध्यान की दृष्टि को अन्दर की ओर मोटे। कुछ दिनों के पञ्चात् एक प्रकाश या ज्योति नी दीयने लगनी है। यदि नेत्र योलकर साधक ग्रभ्यास करता है तब यह ज्योनि स्थिर ग्रीर निर्श्नान नी प्रतीत होती है। यह ज्योति वास्तव मे ग्रन्दर के सूक्ष्म नेप्र की होती है। यदि साधक नेप्र बन्द करके ध्यान हारा इसकी देखता है त्रेय यह ज्योति बाहर को निकलना चाहती है। नेत्रपटल बन्द होने से यह पटलो के गाय टबकर या-माकर गुव्वारे भी या फूलफटिया सी वनकर रग-विरगे रग-रप तथा घाकार जी दिगार्ट देने लगनी है। नेप्रपटल के साथ टकरा-टकरा कर यह कभी मुदं के प्रकाश के समान, कभी चन्द्र के प्रकाश के रामान, कभी जुगनु के प्रकाश के समान ग्रोर कभी-कभी छोटे सूर्य ग्रीर कभी छोटे से चन्द्र के समान दिखाई देने लगती है। वास्तव में यह मूक्ष्म नेत्र का प्रकाश सूक्ष्म प्रकाश वाहिनी नाडियों के द्वारा स्थूल नेत्र में बाहर निकलकर कुछ देखना चाहता है किन्तु नेत्र बद होने से यह वही टकरा कर भिन्त-भिन्न प्रकार के प्रकाश उत्पन्न करने लगता है। यह कभी-कभी साधक को भारत ना भी बना देता है और मनोरजन का एक सोधन सो भी बन जाता है। इस भ्राति को दूर करने के लिए अभ्यासी को नेत्र खोलकर अभ्यास करना चाहिए। इमें उन्मुनी मुद्रों कहते हैं। उसे प्रकार नेत्र योलकर अन्दर भूमध्य और बहारध में ध्यान करने ने यह ज्योति यथार्थ रूप में प्रत्यक्ष होने लगती है। उससे जो पदार्थ या दृष्य भीतर देगना चाहता है उसे दिखाने में वह समर्थ हो जाती है। श्रपने मनो-यल में उसको शरीर में जिस श्रोर को या शरीर के जिस किसी प्रदेश में ध्यानस्थ साधक पुमा देता है उमी स्थान पर वह उस पदार्थ का ज्ञान करवा देती है। जिस प्रकार बाहर के स्यूल नेत्र बाहर की श्रोर सब पदार्थी को दिखाते हैं इसी प्रकार श्रन्दर का गूधम नेव श्रन्दर के मूधम श्रीर स्थूल पदार्थी को दिखाने में समर्थ हो जाता है। देने हुए पदार्थ का बुद्धि निर्णय करेगी कि उस पदार्थ का रग-रूप, आकार-प्रकार किस प्रकार का है, अन अभ्यासी अपने सूक्ष्म नेत्र से, जिसे दिव्य चक्षु या तृतीय नेत्र भी कहते है, काम ले। इसके साथ मन की दूरवीन लगाकर उससे मूलाधार मे देखे। मृलाधार में सायक के ध्यान बल से दो शिक्तया पैदा होगी -एक प्रकाशात्मक पुण्डिनिनी शिवन श्रीर दूसरी रपर्शात्मक प्राण शिक्त ।

कुण्डलिनी शक्ति—कुण्डलिनी गक्ति यहा की सव नाडियो को प्रकाशित कर देगी ग्रर्थात् स्थूल शरीर की सव रचना दिखा देगी।

प्राणोत्थान शक्ति--प्राण शक्ति या प्राणोत्थान शक्ति उत्पन्न होगी, वह स्पर्श करती हुई उर्ध्व गमन करेगी तथा श्रानन्ददायक स्पर्श करती हुई, रीढ की हुड़ी के साथ होती हुई कठ के ऊपर लघु मस्तिष्क से ऊपर को उठकर ब्रह्मरध्न में जाकर वहा पर मधुर ग्रौर ग्रानन्ददायक स्पर्श का ग्रनुभव कराती रहेगी। वहुत काल तक स्थिरता ग्रौर ग्रानन्द स्पर्श दायक समाधि जैसी स्थित वनाए रखेगी। जब प्राण-शक्त मूलाधार से उठकर चलती है तव यह स्थूल गरीर की नस-नाडियो स्रोर इडा, विगला सुपुम्णादि का स्पर्श करती हुई रोमाचित करती हुई सी चलती है स्रोर इन सबका स्पर्श के द्वारा ज्ञान करवाती चलती है। ब्रह्मरध्र में पहुचकर ग्रानेक ग्रानन्द-दायक स्पर्श करवाती रहती है और सब प्रकार के दिन्य स्पर्श की अनुभूति करवाती रहती है। जब यह मूलाघार से गमन करती है तब सब चक्रो के केन्द्रो का स्पर्शानु-भूति द्वारा साक्षात्कार कराती हुई चलती है ग्रीर सहस्र-दल-कमल मे पहुचकर योगी को दिव्य स्पर्श द्वारा म्राह्लांद भीर म्रानन्द का हेतु बहुत काल तक बनकर विशेष ब्रह्मरध्न के पदार्थों का अनुभव करवाती है। एक चक्षुहीन पुरुष अपने हाथ के स्पर्श द्वारा जिस प्रकार वडे से वडे भवन को स्पर्श के द्वारा जानने मे समर्थ होता है उसी प्रकार प्राणोत्थान शक्ति सारे शरीरगत पदार्थों का स्पर्श के द्वारा अनुभव करवाती है। योगी इस प्राणोत्थान शक्ति द्वारा ग्रर्थात् इसके स्पर्श द्वारा सर्व विज्ञान प्राप्त कर सकता है। यद्यपि यह स्पर्शानुभूति रूप को नही दिखाती पर स्पर्श से सारे विज्ञान को प्राप्त करवाने मे समर्थ है। इस प्रकार से यह स्पर्श द्वारा पदार्थों के प्रत्यक्ष विज्ञान का हेतु बनती है। कुण्डलिनी शक्ति से भी यह अधिक सूक्ष्म शक्ति है श्रीर यह शरीर में वायु महाभूत का कारण स्पर्श तन्मात्रा की दिव्य स्पर्शानुभूति करवाती है। मूलाधार में प्राणोत्थान होकर दिव्य स्पर्श को पैदा कर देता है। मृत यह स्थूल ग्रीर सूक्ष्म दोनो प्रकार के स्पर्शों का हेतु वन जाता है। स्थूल शरीर मे यह नस-नाडियो म्रादि की स्पर्श से मनुभूति करवाता है मीर सूक्ष्म दिव्य स्पर्श से सूक्ष्म शरीर के पदार्थों को प्रत्यक्ष कर देता है। जिन योगियो ने इस प्राण विज्ञान से काम लिया है, इसके स्पर्श द्वारा स्थूल और सूक्ष्म शरीरों के पदार्थों के प्रत्यक्ष करने का अभ्यास किया है, उनको कुण्डलिनी शक्ति द्वारा या दिव्य चक्षु द्वारा दोनो शरीरो को देखने की म्रावश्यकता नही रहती। उन योगियो को इस दिव्य स्पर्शानुभूति द्वारा सब पदार्थों का साक्षात्कार हो जाता है। जिस प्रकार नेत्रहीन ग्राकारवान् पदार्थों को अपने हाथ के स्पर्श द्वारा देख लेता है, समभ लेता है, उसके ग्राकार-प्रकार को कथन करके बता सकता है, समभा सकता है, उसी प्रकार योगी दिव्य स्पर्श द्वारा पदार्थी को प्रत्यक्ष कर सकता है, समभ सकता है। यत कुण्डलिनी शक्ति जिस प्रकार पदार्थी का प्रत्यक्ष करवाती है इसी प्रकार प्राणोत्थान शक्ति भी स्पर्श के द्वारा पदार्थी का साक्षात्कार करवाती है। प्राण की गति स्पर्श करती हुई चलती है। यदि योगी को इस विद्या का विज्ञान समभ मे आजाए तो इसके द्वारा ही वह सव कुछ प्रत्यक्ष कर सकता है। जैसे नेत्र द्वारा प्रत्यक्ष करता है ऐसे ही स्पर्शेन्द्रिय द्वारा भी पदार्थों का प्रत्यक्ष कर सकता है। इस प्राण विद्या के विज्ञान का ग्रभाव हो जाने से कुण्डलिनी

शक्ति पर अर्थाचीन गोगियों ने विशेष वल दिया है। यह भी अग्नि महाभूत के उपा-दान कारण हमनन्माता का ही कार्यविशेष है जिसे कुण्डलिनी शक्ति के नाम से कहा जाता है। उसको अग्नि महाभूत का कार्य या दिव्य तज ही कह सकते है। यह स्थूल शरीर की रचना में महकारी हुआ है। यह भी प्राण के समान है। अग्नि महाभूत का कार्य तेज स्थूल धरीर की रचना को विखाता है और हपतन्मात्रा का कार्य सूक्ष्म की रचना को दिगाता है। यह विज्ञान प्राणात्थान विज्ञान की अपेक्षा स्थूल है। जिन गोगियों को दिव्य चक्षु हारा अन्दर के पदार्थों को देखने में कठिनाई होती है या इन विद्या का विज्ञान समभ में नही आता है उनको दिव्य स्पर्शेन्द्रिय द्वारा अन्दर के पदार्थों का अनुभव या प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। स्पर्शेन्द्रिय सारे स्थूल दारीर के चाहिर और भीतर व्याप्त भी है, उसी प्रकार सूक्ष्म शरीर में भी स्पर्शेन्द्रिय व्याप्त होनर स्थित है। शरीर के बाहिर तो रपर्श हारा ज्ञान होता ही है परन्तु प्रस्वर भी रपर्श की अनुभूति होती है। उस प्राणोत्थान गित हारा दश प्रकार के प्राणो का भी प्रत्यक्ष विया जा नकता है।

मुण्डितनी द्यावित का जागरण या उत्यान—ध्यान की दिव्य दृष्टि से जब सोगी मूनाधार में प्रयेश करना है नव यह दिव्य ज्योति प्रकट होती है। यह ज्योति हमारे दारीर में जो रवल महाभूत अग्नि के रूप में बरीर के निर्माण में सहयोगी कारण है और एसी पा उपादान कारण जो रपनन्मात्रा है उसीका यह एक कार्यरूप मे विमेष दिव्य प्रताम होता है जो स्थल गरीर ग्रीर सूक्ष्म गरीर दोनों के पदार्थों को दिसाने में या प्रत्यक रखाने में सहायक होता है। जब योगी मूलाधार स्थित ग्रीन का मयन त्यान की दिव्य दृष्टि ने करता है तब वह इसी का सूक्ष्म रूप बनकर पंचतन्मात्रा के तुर्व में प्रकट होकर उच्चें गमन करती है अथवा यही स्थिर रहकर इस न्यान को प्रकाशिक कर देवी है। यदि यह रूपतन्मात्रा का कार्य न होती तो यह मूध्म चन्नों को कैने प्रकाशित कर नकती थी ? ये चक प्रकाश के रूप में ही दिखाई देने हैं। ये रपूल अपन का कार्य तो नहीं होते, यद्यपि प्रकट तो नस-नाडियों के गुच्छो पर ही होते हैं। जैसे ब्रह्मरत्र में सूदमेन्द्रियों क कम्पन या जिया का प्रभाव सूक्ष्म शान-बाहक नाडियो पर पडना है उसी प्रकार दिव्य रूपतन्मात्रा का प्रभाव चको पर पाता है, तभी तो वे नाष्टियों के गुच्छे भिन्त-भिन्त रंग के आकारो श्रीर प्रकारों के रत में गासमान होने लगते हैं। ग्रंत यह कुण्डलिनी गक्ति भी रूपतन्मात्रा का ही कार्य होती है। उसका सम्बन्ध मुख्य रूप में सूक्ष्म ग्रीर ग्रीर गीण रूप में स्थूल शरीर के नम, नारी, श्रान्य श्रादि में है। श्राप पूछेंगे कि यह श्रानिभूत का कार्य है या नपत्नमात्रा का विद्वावित श्रानिभूत का ही कार्य होती तो सूक्ष्म शरीर के श्रा-प्रत्यग को दियाने में समर्थ न होती, केवल स्थूल भरीर को ही ग्रन्दर से दिखाती। परन्तु यह नो मूध्म शरीर के निवास-स्थान ब्रह्मरिश्र और हदय प्रदेश को भी दिखाती है। मूहन रपतन्मात्रा मूहम श्रीर र्यूल दोनो शरीरो को दिखाने में समर्थ होती है, किन्तु रयून प्राप्ति नहीं। प्रत इसमें सिद्ध होता है कि यह दिन्य एपतन्माता का ही म्य होनी चाहिए। श्रव यह यान हो सकती है कि दोनो शक्तिया प्राणोत्यान श्रीर कुण्टिनिनी-उत्यान यहा मूलाबार में ही नयों प्रकट या उत्पन्न होती है ? वास्तव में मूलाबार उनके प्रकट होने का मध्य प्रदेश है। नाभि से लेकर पाद तल तक इन दोनो का प्रदेश है। ये दोनो यहा तम प्रधान रूप मे वर्तमान रहती हैं। यहा के प्रदेश मे प्राण ग्रीर ग्रग्नि दोनो ही तम प्रधान रूप मे वास करती है।

कुण्डितनी स्थूल ग्रौर सूक्ष्म शरीरों को प्रकाशित करती है—ध्यान वल से उठी हुई यह कुण्डिति की शिवत स्थूल शरीर के भीतर ग्रौर सूक्ष्म शरीर के भीतर प्रकाश करती है। योगी को इसे लेकर स्थूल शरीर की रचना का ग्रौर सूक्ष्म शरीर की रचना का साक्षात्कार करना चाहिए। मनुष्य की ग्राख देखने में समर्थ है क्यों कि यह प्रकाशयुक्त है ग्रौर इसमें देखने की शिवत है परन्तु इसकों भी इतर प्रकाश की ग्रपेक्षा है ग्रथात् सूर्य, चन्द्र, दीपकादि की रोशनी की। यदि ये न हो तो यह देखते हुए भी नहीं देखती। इसी प्रकार से ग्रन्दर का दिव्य-चक्षु भी इतर प्रकाश की ग्रपेक्षा रखता है। यहा इतर प्रकाश का ग्रीभप्राय है रूपतन्मात्रा के ग्रनेक रूपवान पदार्थ। इतर प्रकाश में कुण्डितनी शिक्त का भी रूप है जो सूक्ष्म दिव्य-नेत्र को दिखाने में सहयोगी होता है। योगी इस मूलाधार में स्थित तम प्रधान ग्रीन-स्पतन्मात्रा का सवर्षण करके प्रदीप्त करता है, तब ये दोनो ज्योतिया इतर पदार्थों के दर्शन में सहायक हो जाती है। ये दोनो शिक्तया ब्रह्मरध्न ग्रौर हृदय में भी विद्यमान है। सार्त्विक, राजस भेद से प्राण ग्रौर ग्रिन के रूप में।

इस ज्योति से प्रथम स्थूल शरीर का विज्ञान प्राप्त करो—योगी को इस ज्योति को लेकर सर्वप्रथम स्थूल शरीर का विज्ञान प्राप्त करना चाहिए। ग्रात्मा के ऊपर सबसे प्रथम ग्रावरण स्थूल शरीर का है। इसको भेदन करके प्राणमय कोश में प्रवेश करे क्योंकि इस स्थूल शरीर के जीवन का ग्राधार यह प्राणमय कोश ही है। तत्परचात् ब्रह्मरध्र में मनोमय कोश का प्रत्यक्ष करे। इसमें पाच तन्मात्राग्नों के स्वरूप ग्रीर दश कमें ग्रीर ज्ञान इन्द्रियों के स्वरूप का साक्षात्कार करे। तदनन्तर मन का प्रत्यक्ष करे। इस प्रकार इस मनोमय कोश में १६ पदार्थ है। यह ब्रह्मरध्र का दिव्य चक्षु इन सबको दिखाने में समर्थ होता है। इसके पश्चात् योगी इस मनोमय कोश के तीसरे ग्रावरण को उल्लंघन करके ग्रांग विज्ञानमय कोश में प्रवेश करे। १६ पदार्थ मनोमय कोश के ग्रीर एक बुद्धि मिलकर विज्ञानमय कोश वनता है। यह ब्रह्मरध्र में है। इसमें बुद्धि की ही विशेषता है। इसके सम्बन्ध से यह विज्ञानमय कोश सर्व पदार्थों का साक्षात्कार करवा देता है।

ऋतम्भरा बुद्धि—इन पदार्थों के विज्ञान-काल में ऋतम्भरा बुद्धि उत्पन्न हों जाती है जो आत्म-साक्षात्कार का हेतु वनती है। इस मनोमय तथा विज्ञानमय कोश में ही स्थूल भूतो और सूक्ष्म भूतों का साक्षात्कार योगी कर लेता है। यहा पर ही योगी सम्प्रज्ञात समाधि द्वारा आहकारिक सृष्टि का साक्षात्कार करके परम वैराग्य को दृढ करता है। इन सब पदार्थों को वैराग्य द्वारा हेय समभने लगता है। इनके बधन से मुक्त होने की भावना को दृढ करता है। बहुत काल के अभ्यास से यह दृढ़-भूमि होता है। इस सूक्ष्म शरीर ने अपने गर्भ में कारण-शरीर को धारण किया हुआ है। कोश के लिहाज से आत्मा के ऊपर यह चौथा आवरण है और शरीर के लिहाज से दूसरा आवरण है। सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर के ही आकार-प्रकार का है।

श्रानन्दमय कोश-इसके पश्चात् योगी को श्रीर ग्रागे वढकर पचम श्रावरण का भेदन करना चाहिए श्रर्थात् हृदय प्रदेश में कारण-शरीर को भेदन करे। पचम कोश मे प्रवेश करे। सर्वप्रथम यहा तीन ज्योतिया दिखाई देगी। प्रथम सूक्ष्म प्राण का मण्डल, दूसरा ग्रहकार का मण्डल, तीसरा चित्त का मण्डल। सूक्ष्म प्राण-मण्डल हलके से गुलाबी रग का होता है ग्रीर ग्रहकार का मण्डल हलके से नील वर्ण का तया चित्त मण्डल व्वेत वर्ण का होता है। चित्त के स्फटिक के समान शुभ्र मण्डल के मध्य मे मूक्ष्मानिमूक्ष्म परमाणुवत् चेतन तत्त्व के दर्शन होगे। यह दिव्य ज्योतिर्मय है, निष्क्रिय है, ग्राटोल ग्रीर कूटस्य है। इस ग्रत्यन्त सूक्ष्म चेतन तत्त्व का पता लगना कठिन है। साधक को चित्त मे अत्यन्त जहा कुछ गति सी हो रही हो, कुछ विया-नो की धनुभूति हो, उसी स्थान पर चेनन तत्त्व की खोज करनी चाहिए। नयोगि चित्त को ज्ञान और शिया इस चेतन तत्त्व से ही प्राप्त होती हैं। इमिन् नित्त के जिस भाग में त्रिया या स्पन्दन सा मालूम हो वही पर चेतन तत्त्व के दर्गन करें। यह स्थान चित्त के मध्य मे है। इस चित्त-रूपी दर्गण पर अहकार-रूपी वृत्ति के द्वारा या भावना के द्वारा जब योगी को अहमस्मि का बोध होता है तब उने श्रनोकिक श्रानन्द की श्रनुभूति होती है। इस श्रानन्द के विषय में उपनिषद् में वर्णन किया है—"न शक्यते वर्णयितु गिरा तदा स्वयं तदन्त करणेन गृह्मते।" रसका भाव यह है कि जो आत्मा स्वय अन्त करण के द्वारा साक्षात्कार किया जाता है उसको वाणी वर्णन नहीं कर सकती। इन चारो तत्त्वों के ऊपर इनको स्रायरण करके एक स्रीर कोश के रूप में प्रकृति का स्रावरण है। यह जीवात्मा मीर परमात्मा का परम्पर भेद सिद्ध करता है। यह प्रकृति का श्रावरण श्रहकार य निन के गर्भ में ग्रात्मा को श्रट के समान गर्भ में घारण करके रखता है। यदि प्रगृति का प्रायरण ग्रात्मा के ऊपर न हो तब ग्रात्म-तत्त्व ग्रीर बहा-तत्त्व भेद करना, पृथक् जानना या श्रनुभव करना कठिन हो जाए क्योंकि दोनो चेतन तत्त्व समान में ही है। केवल सूर्मता श्रीर महानता का ही अन्तर है। योगी श्रात्म-माझारकार के अनन्तर इसे कारण हुए प्रकृति के श्रावरण को भेदन करके या उत्तंघन करके या इसको पृथक् रूप से साक्षात्कार करके ब्रह्म-तत्त्व का साक्षात्कार फरता है। उसके स्वरूप की देखकर चेतन ग्रात्मा का ग्रनुभव करता है कि जैसा चनन तत्त्व मैने श्रातमा को देगा था तहत् या वैसा ही यह बहा भी है। योग द्वारा श्रान्म-माक्षात्कार करने का मार्ग छोटा श्रौर मुगम है। इसके द्वारा श्रोप बहुत शीघ्र प्रपने वास्त्रविक रवम्प का श्रीर ब्रह्म के स्वरूप का साक्षात्कार कर सकेंगे। इसकी भ्रतिका एक और साधन या मार्ग जो बहुत गहन भ्रीर दुस्तर है, भ्रत्यन्त सूक्ष्म भ्रीर दुक्तिय है, उनका वर्णन विस्तारपूर्वक मैंने 'श्रात्म-विज्ञान' भ्रीर 'ब्रह्म-विज्ञान' भ्रन्थो में किया है।

पूज्य गुरुदेव के इम उपदेश को ग्रहमदाबाद की जनता ने वडी शान्ति से मुना। उनका वडा प्रभाव पडा श्रीर हजारी श्रीताश्रो ने इससे लाभ उठाया।

श्री महाराजजी को रमणलाल लल्लुभाई नित्यप्रति ग्रढाई वजे से साढे पाच यज नक ग्रहमदाबाद के मुख्य-मुख्य श्राथमो, मिदरो श्रीर ऐतिहासिक स्थानो की दिगाने के लिए ले जाया करते थे। वहा के मण्डलेश्वरो से भी परिचय करवाया। नगर के प्रतिष्ठित मेठ नरिसहलाल लल्लुभाई, श्रमृतलाल हरगोविन्ददास, मोहनलाल मृतन्द शह, भोगीलाल बालाभाई शाह श्रादि कई सेठो से परिचय करवाया श्रीर इनके निवासस्थानो पर ग्रागीर्वाद दिलवाने के लिए भी नेगए। यहा पर महाराजजी ५ दिन तक विराजे।

#### पेटलाद गमन

त्रव डन्हे पेटलाद पघारना था। वहा ने रमणलाल केशवलाल राजिमित्र दातार के पुत्र थी अमृतलाल प्रपनी कार लेकर पूज्य म्वामीजी महाराज को लेने के लिए आगए। अहमदावाद के सभी भक्तो, शिष्यो, मेठो और जनता ने बड़े सम्मान के साथ महाराजजी को विदा किया। प्रात मात बजे अहमदावाद ने चलकर लगभग ग्यारह बजे पेटलाद पहुच गए। यहा पर नीन दिन निवाम करना था। यहा पर मेठ अमृतलाल के पास ठहरे। इनके पिताजी नेठ रमणलालजी के साथ महाराजजी का बड़ा स्नेह भाव था। इन्होंने चार वार गगोत्री आकर योगिनकेनन मे वाम किया था। अब ये तीन-चार साल से कही आते-जाते नहीं थे। बरीर कमजोर और शिथिल होगया था। वड़े जान भाव से बीनराग होकर जीवन्मुक्तों के नमान रहते थे। दो सेवक इनकी सेवा मे रहते थे। इनको किसी से अब मोह तथा ममता नहीं रही थी। न इन्हें कोई हर्ष था न जोक। इन्हों के साथ मिलना-जुलता जीवन अहमदाबाद में नरिसहलाल लल्लुभाई का था। महात्माओं के दर्शन और मत्सग की कचि थी। स्वाध्याय से प्रेम था और दान मे प्रवृत्ति थी। अन्य किसी भी नामारिक कार्य में इनको कचि नहीं थी। थी अमृतलाल अपना सारा कारोबार छोडकर निरन्तर पूज्य गुरुदेव की सेवा मे रहे क्योंकि यह योगिनकेतन ट्रस्ट के मैम्बर थे। उन्होंने अपने दोनो कारखाने दिखाए, डाकोरजी के मदिर के दर्शन करवाने लेगए तथा अन्य अनेक दर्शनीय स्थान दिखाए, डाकोरजी के मदिर के दर्शन करवाने लेगए तथा अन्य अनेक दर्शनीय स्थान दिखाए। पेटलाद मे पूज्य महाराजजी के दो व्यान्यान हुए। इनके विषय थे 'ईश्वर भितत तथा मुखी गृहस्थ के नाघन'।

#### सूरत प्रस्थान

तीसरे दिन सूरत के सेठ चैतन्यदेव ग्रीर मगलमेन चोपडा ग्रपनी कार लेकर सायकाल प्यारे। इन्होंने रात्रि को यही विश्राम किया ग्रीर प्रात काल मेठ ग्रमृतलाल रमणलाल ने वड़े सम्मान के साथ विदा किया। मूरन मे महाराजजी ७ दिन तव विराजे। इन्ही दिनो सेठजी ने श्री ग्रानन्दस्वामी नरस्वती को भी ग्रामित किया हुग्रा था। श्री ग्रानन्दस्वामीजी १२ वजे ग्रीर महाराजजी भी १२ वजे मूरन पहुचे। दोनो के निवास का प्रवन्व एक ही स्थान पर किया गया।

सन् १६५२ मे तपोवन मे दोनो गुरु श्रीर शिष्य इकट्ठे रहे थे। उसके पश्चात् सूरत मे १६६५ मे समागम हुग्रा। लगभग एक सप्ताह तक दोनो यहा रहे। नेठजी की धर्मपत्नी श्रीमती कमला, 'जो दिल्ली गई हुई थी, इस अवसर पर दोनो महात्माग्रो की सेवा श्रीर सत्सग के लिए वहा आगई थी। दिन भर दर्शनायियो की भीड लगी रहती थी। दोनो महात्माग्रो के १० से १६ तारीख तक एक मदिर मे छ वजे से श्राठ वजे तक प्रवचन होते थे। पूज्य महाराजजी का प्रवचन छ वजे मे सात वजे तक आत्म-विज्ञान के विषय मे होता था। श्री स्नानन्दस्वामी सरस्वतीजी का प्रवचन सात वजे से ग्राठ वजे तक होता था। इनका विषय 'ईश्वर-भित्त श्रीर उसकी प्राप्त के उपाय' था। लगभग दो तीन हजार स्त्री-पुरुष प्रवचन सुनने के लिए श्राते थे। गुरु श्रीर शिष्य

दोनो ने त्रात्मा त्रीर परमात्मा के सम्बन्ध मे वडे-वडे सूक्ष्म रहस्यो को समभाया। नाना प्रकार के उपाख्यानो ग्रीर प्रमाणों में भ्रपने प्रवचनों को ग्रत्यधिक रोचक वनाया। दोनो के प्रवचनो का सूरत की जनना पर वडा प्रभाव पडा। १६ जनवरी को साय-काल साढे श्राठ वजे श्रोताश्रो ने वडे हुए श्रीर सम्मान के साथ दोनो महात्माश्रो को श्रद्धाजिल भेंट की ग्रीर वन्यवाद ग्रर्पण किया। महाराजजी ग्रीर श्री ग्रानन्द स्वामीजी बीच मे एक दिन के लिए नवसारी भी पथारे। थी ग्रानन्दस्वामीजी सूरत में ही ठहर गए, नयोकि यहा वार्षिकोत्सव होने वाला था ग्रीर नवसारी में उन्हें कया भी करनी थी। महाराजजी ने १७ तारीख को प्रात काल साढे पाच वजे बम्बई के लिए प्रस्थान किया।

### वम्वई प्रस्थान

१७ ता० को सूरत से वम्वई के लिए प्रस्थान किया ग्रीर साढे दस वजे वम्बर्ड पहुचे । वहा पर इनके भवत ग्रौर शिष्य तथा वहा के गण्यमान्य ग्रीर प्रति-िठत सज्जन महाराजजी के स्वागनार्थ स्टेशन पर पद्यारे। इनमे से प्रमुख ये थे — मेठ हरवसताल मरवाह, मेठ ग्रमीरचन्द, सेठ मोहनलाल वागडी, सेठ भागचन्द, ग्रोमप्रकाश ग्रग्रवाल । स्वागतार्थ ग्राए हुए सभी महानुभावो को महाराजजी ने ग्राशी-र्वाद दिया । ये सेठ हरवसलाल मरवाहा के पास ठहरे । स्वामीजी महाराज ने सेठ मरवाहाजी मे व्यात्यान ग्राटि यहा रखने के लिए निपेच कर दिया क्योंकि बहुत थके हुए थे। उनसे मिलने का समय ३ वजे से ६ वजे तक नियत कर दिया गया। सेठ मरवाहाजी का परिवार बहुत वटा है. ६-७ भाई ग्रीर २ वहिनें हैं। कई भाई बम्बई में ही निवास करते हैं। इन सबकी महाराजजी में वड़ी भक्ति है। इनकी श्रद्धा ग्रीर भिषत बहुत ऊचे दर्जे की है। किसी ज्योतिपी ने सेठ हरवसलाल मरवाहाजी को वताया था कि मणिपुर (श्रामाम) मे श्री स्वामी योगेव्वरानन्द सरस्वती पूर्वजन्म में स्रापके गुरु थे। उसलिए उनकी श्रद्धा इनके प्रति स्रीर भी स्रधिक है। तन, मन तथा धन में मदैव इनकी मेवा के लिए तत्पर रहते है। ग्रापकी धर्मपतनी वीरादेवी सदैव इनकी सेवा मे रहती थी। ये अत्यन्त मुशीला, साध्वी और सीम्य मूर्ति है। कई सेवक होते हुए भी ये महाराजजी का सव काम स्वय अपने हाथों से करती थी। इनके पुत्र श्री गोर्धनदामजी याना मे निवास करते थे। ये नित्य सपरिवार महा-राजजी के सत्यग मे ग्राते थे। मरवाहाजी के पीत्र प्रवीण इनसे नित्यप्रति ग्रासन ग्रीर प्राणायाम सीखा करते थे, ग्रीर नवीन भी इनके साथ ग्राया करते थे। मरवाहाजी नित्य ग्राव्यात्मिक विषयो पर महाराजजी से वार्तालाप करते थे ग्रीर श्रनेक शंकाश्रो का समाधान करवाते थे।

सेठ तुलसीरामजी के पुत्रों में प्रेम सम्बन्ध की स्थापना--महाराजजी के शिष्य सठ तुलसीरामजी (जिन्हें एक वार इन्होने जीवनदान दिया था) के पुत्रों में कई वर्षों से आपस में सम्पत्ति के बटवारे के विषय में भगड़ा सा रहता था। इन सभी भाडयों की पूज्य गुरुदेव के प्रति वडी श्रद्धा, भिवत ग्रीर प्रेम था। वडे लडके का नाम सेठ गोपालदास, दूसरे का नाम हरिकिशनदास, तीसरे का नाम श्रमीरचन्द श्रीर चीथे का श्रोमप्रकाश है। चारो भाइयो को युलाकर इन्होंने बहुत उपदेश दिया श्रीर विविध प्रकार हे यमभाया। इनके पिताजी का महाराजजी से गत ३५-४० साल का

सम्बन्ध था। सभी भाइयो ने महाराजजी से निवेदन किया कि "श्राप सारा मामला भली प्रकार से समक्त ले ग्रीर हम सबकी बात पृथक्-पृथक् तथा सम्मिलित रूप से सुन लें, इसके पश्चात् जो कुछ भी ग्रापका ग्रादेश होगा उसे हम पालन करेंगे। कभी ग्रापकी ग्राज्ञा को उल्लंघन नहीं करेंगे। ग्रापके समक्ष हम सब कोरे कागज पर हस्ताक्षर कर देंगे ग्रीर उस पर जो निर्णय ग्राप दे देंगे वही हम सवको स्वीकृत होगा।" महाराजजी ने सेठ हरवसलाल को इस कार्य के लिए ग्रपना प्रतिनिधि वना दिया, क्योकि ये इनकी अपेक्षा अधिक व्यवहारकुशल और व्यापारादि और सम्पत्ति के भगड़ो के विषय मे ग्रधिक समभते थे। चारों भाइयो ने इसे स्वीकार किया। सव भाइयो श्रीर उनकी पत्नियो के समक्ष सवकी सम्मति लेकर निर्णय किया गया, समभौता होगया। वकील भी बुला लिए गए थे। फैसले पर सवने ग्रपने-ग्रपने हस्ताक्षर कर दिए। सेठ मरवाहा ने अपनी कोठी पर एक सहभोज रखा। सबने मिलकर प्रीतिपूर्वक भोजन किया। छोटे भाइयो ने तथा उनकी परिनयो ने वडे भाइयो ग्रीर भोजाइयों के पाव स्पर्श किए ग्रीर उन्होंने वडे प्रेमभाव से उनका ग्रालिंगन किया। ग्रव सव प्रीतिपूर्वक रहने लगे। सेठ ग्रमीरचन्द की लडकी के विवाह मे सभी भाई सम्मिलित हुए। इस सारे परिवार की महाराजजी के प्रति भ्रनन्य भेक्ति है। सब प्रकार से ये इनकी सेवा करते है। योगनिकेतन की भी ग्रायिक सहायता वड़ी उदारता से करते रहते हैं।

योगनिकेतन ट्रस्ट की सभा--सेठ ग्रमीरचन्द, सेठ हरवसलाल मरवाहा, तथा सेठ मोहनलाल बागडी योगनिकेतन ट्रस्ट के सदस्य है। पूज्य महाराजजी ने ट्रस्ट के प्रधान की हैसियत से उपरोक्त तीनो महानुभावो की एक सभा वुलाई ग्रौर उसमे यह प्रस्ताव रखा कि ऋषिकेश या स्वर्गाश्रम में योगनिकेतन का कोई अपना स्थान न होने के कारण वडी कठिनाई का सामना करना पडता है । गत १८ वर्ष से साधना-शिविर यहा लग रहे है। सैकडो साधक इनमे लाभ उठा चुके है। योगनिकेतन के लिए भूमि ली जा चुकी है, अत आप इस पर भवन निर्माण की योजना बनावे। महाराजजी ने भवन निर्माण की योजना योगनिकेतन की ग्रावश्यकताग्रो को दृष्टि मे रखकर सभा के सामने उपस्थित की -५०×४० फीट का एक सत्सग भवन, इसके श्रास पास दो-दो कमरो के मकान जिनमे सभी प्रकार की श्राधुनिक सुविधाए प्राप्त हो। इस प्रकार के १२ या १५ मकान हो। इस दृष्टि से एक नक्जा तैयार करवाकर निर्माण-कार्य प्रारम्भ किया जाए। सेठ हरवसलालजी के छोटे भाई ने नक्शा तैयार करके उसका ग्रानुमानिक व्यय भी वता दिया। सेठ मरवाहा ने महा-राजजी के निम्न धनाढ्य भक्तों को बुलाकर कार्य के लिए तैयार किया — सेठ गोपाल-दास, सेठ श्रमीरचन्द, सेठ श्रोमप्रकांग, श्री मनोहरलाल मरवाहा, सेठ भागचन्द मिलक, सेठ मोहनलाल बागडी, श्री हरवसलाल, सेठ गिरधारीलाल, सेठ ताराचन्द, श्री गोर्धनदास मरवाहादि । कई भक्तो ने एक-एक कुटिया का खर्चा देने का वायदा किया। भवन निर्माण का सारा कार्यभार सेठ मरवाहाजी के सुपुर्द किया गया।

इन्ही दिनो आनन्दस्वामी सरस्वतीजी भी सेठ हरवसलाल मरवाहा की कोठी पर १० दिन के लिए पधारे। यहा पुन गुरु और शिष्य का समागम होगया। नित्यप्रति घण्टो तक आध्यात्मिक गूढ विषयो पर विचार होता रहता था। दोनो

महात्मात्रों के शिष्यों और भवतों की भीड सी दर्शनार्थ लगी रहती थी। सेठ मरवाहां की धमंपत्नी वहीं त्रातिथ्यप्रिया थी। जो भी दर्शनार्थ ग्राते थे उनका वडी उदारता से ग्रातिथ्य करती थी। दो यतियों का सगम सेठ मरवाहा की कोठी पर हुग्रा था, ग्रात जिज्ञामु ग्रीर भवत लोग ज्ञान, ध्यान, सत्सग की गगा में नित्य ही स्नान किया करते थे। भारत के दो महान् योगियों के समागम से लाभ उठाकर सभी भवत नाना प्रकार की ग्रध्यात्म-सम्बन्धी नकाए लेकर ग्राते थे ग्रीर उनके समाधान से ग्रात्मतुष्टि ग्रनुभव करते थे। ३१ जनवरी तक यहा पर मेला सा लगा रहा।

श्री महाराजजी नित्य ही एक दो घण्टे के लिए श्रपने भक्तो श्रीर शिष्यो को श्रामीर्वाद देने जाया करते थे। यहा पर इनके मैकटो भक्त श्रीर शिष्य थे। प्रात काल ७ यजे मे = बजे नक पूज्य गुरुदेव श्रीर मेठ मरवाहा दोनो समुद्र के तट पर भ्रमणार्थ जाया गरते थे।

मेठ ग्रमीरचन्द की मुपुत्री के विवाह पर वर-वधू को ग्राशीर्वाद देने के लिए पधारे। उनके ग्रीर उनके भाउयों के कारगाने देखने भी गए। वहा पर सब कर्म-चारियों को उपदेश दिया। लाला शिवसहायमल की सुपुत्री गौरादेवी के मकान पर दो बार भोजन करने के लिए पधारे। श्रीमती कैलाश मिलक महाराजजी की वडी भवन थी। उनके मकान पर भी भोजनार्थ गए। यह देवी योगनिकेतन की धन से सहायना करनी रहनी थी।

श्रीमप्रकाशजों की रोग मुक्ति—श्रोमप्रकाशजों सेठ तुलसीरामजों के किनण्ठ पुत्र है। उनका यशोपवीत सम्कार महाराजजी ने प्रयाग में किया था। श्रोमप्रकाश की इनके प्रति अनन्य भिन्त थी। जब महाराजजी अभी वस्वई में हो थे तब ये और उनकी पत्नी दित्नी किसी विवाह में गए। ये वहा पर होटल में भोजन कर रहे थे, वहीं पर उन्हें दिन का दौरा पड़ गया। तुरन्त उपचार किया गया किन्तु तबीयत ठीक नहीं हुई। इनकी पत्नी विमला देवी ने महाराजजी को तार दिया और प्रार्थना की कि आप अपने शिष्य को श्राकर सभालें, तबीयत अत्यन्त खराब है। महाराजजी ने तार द्वारा मूचिन किया, ठीक हो जाएगे, घवराओं मत, मेरे आने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने उसी नमय अपने योगवल का प्रयोग किया और श्रोमप्रकाशजी विस्तान स्वस्थ होगए और कुछ दिनों में बम्बई आगए।

श्री ग्रानन्दस्वामी मरस्वती तो मद्रास पधार गए ग्रीर महाराजजी ३० जनवरी को कलकत्ता जाने का विचार करने लगे।

शंका समाधान—३० ता० की रात को महाराजजी श्रीर मरवाहाजी वैठे हुए थे। इनमें प्राय नित्य ही श्राध्यात्मिक वार्तालाप होता रहता था। यू तो सेठ मग्वाहा महाराजजी के मिद्धान्तों से पूर्ण परिचित थे किन्तु उन्होंने शका की कि "ग्रापन ग्रात्म-विज्ञान ग्रथ में प्राणमय कोश पर ही क्यो विशेष वल दिया है, जब फि श्रन्य भूत भी इम शरीर के उपादान कारण हैं?" पूज्य गुरुदेव ने इस शका का ममाधान करने के लिए निम्न प्रवचन किया —

वैसे तो उपनिपदों में तथा अन्य आचार्यों ने भी प्राणमय कोश का कोशों में वर्णन किया है। आग्नेय कोश की अपेक्षा प्राणमय कोश का महत्त्व इसलिए अधिक

है कि यह ग्रात्मा ग्रौर चित्त के सान्निच्य से जो सूक्ष्म-प्राण की गिन या किया प्रारम्भ होती है उस सूक्ष्म-प्राण या जीवनी शक्ति को गहण करके स्थूल शरीर मे यही नर्व-प्रथम जीवन का सचार या प्रसार करता है। इस जीवन का मचार करने में ग्राग्नि तत्त्व या जल तत्त्व इतने उपयोगी नहीं है जितना कि यह स्यूल प्राण है। शरीर के जिस-जिस भाग में प्राण का सचार वन्द हो जाना है वहां रुचिर का सचार होना भी वन्द हो जाता है यद्यपि वहां पर तेज ग्रीर जल तत्त्व होते है। वायु तत्त्व ही अग्नि, जल ग्रीर पृथ्वी का वहन करता है। इनकी ग्रपेक्षा यह सूक्ष्म है। इस प्राण की गित ही श्रीर में इतस्तत तेज ग्रीर रुत्रिर की पहुचाती है। इसी कारण से गरीर में सर्वत्र उष्णता और रुचिर का मचार होता है। रुधिर जल का अञ तथा परिणाम है। इसी प्रकार पसीना भी जल का ही विकार होता है जो रोम-कूपो से सपूर्ण गरीर से निकलना है। जब गरीर का निर्माण हुआ था, तव सर्वप्रथम प्राण ही ने इसमे प्रवेश किया था। यह वायु का ही कार्य है। जब माता के गर्भ मे वीर्य ग्रीर रज का ग्रावान होता है उस समय इस रज-वीर्य में सूक्ष्मगरीराभिमानी जीवात्मा का प्रवेश होता है। इसमें पूर्व सूक्ष्मशरीर की गति का हेतु सूक्ष्मप्राण होता है। जब रज ग्रीर वीर्य गर्भाग्य में स्थिर होता है, उस समय का हतु सूक्ष्मशाण हाता है। जब रण बार नाय निवास करता है। इसमे रज-वीर्य और स्थूल-शरीर में गित प्रारम्भ हो जाती है। यहा स्थूल प्राणवायु महाभूत का ही कार्यविशेष होता है जो प्राण के रूप में शरीर में प्रविष्ट होता है। तभी वह रज-वीर्य कलल भाव को प्राप्त होकर बढ़ने लगता है। जब गरीर की रचना हो रही थी तब वायु महाभून प्राण भाव को प्राप्त हो कर जीवन का ग्राधार बना ग्रौर सहकारी उपादान कारण भी। प्राण हो शरीर को धारण किए हुए है। इसके विना शरीर नहीं रह सकता। यद्यपि इसमें पृथ्वी का तथा जल का अग तो रहता ही है किन्तु प्राण के विना गरीर शव तथा मिट्टी के समान गिना जाता है। यह शरीर भूमि का कार्य है ग्रीर जल ने इसे नंगठिन किया हुआ है। इन दोनों का धर्म गुरुत्व हैं, अत ये तो गरीर के रूप मे मरने पर पड़े रहते हैं, परन्तु ग्रग्नि ग्रीर वायु मे गुरुत्व धर्म नही है इसलिए ये गगनमण्डल मे गमन कर जाते है। इसलिए गरीर मे प्राण की ही विशेषता है। ग्रन इसे विशेष महत्व दिया गया है। वास्तव मे प्राणमय कोप के समान तेज भी गरीर मे एक कोष के ही समान है। जिस प्रकार गुरुत्व होने से पृथ्वी ग्रीर जल का परम्पर मम्बन्ध है इसी प्रकार लघुत्व होने से तेज ग्रार प्राण का भी परस्पर सम्बन्ध है। मृत्यु के समय तेज ग्रीर प्राण दोनो ही साथ गमन करते हैं ग्रीर पृथ्वी तथा जल के भाग शरीर के दाह के समय भस्म हो जाते है।

## कलकत्ता प्रस्थान

३१ जनवरी को महाराजजी के अनेक शिष्य और भक्त दर्शनार्थ आए क्यों कि १ फरवरी को प्रात इन्हें हवाईजहाज से कलकत्ता पधारना था। कई भक्त ऐरो- ड्रोम पर भी पहुंचे थे। सेठ मरवाहा तथा उनका परिवार ५-३० वर्जे महाराजजी को साथ लेकर सान्ताक्रुज के हवाई अड्डे पर पहुंच गए। जहाज के उडान लेने से पूर्व ही पूज्य गुरुदेवजी ने सवको आशीर्वाद दिया। हवाईजहाज २३००० फीट की ऊचाई पर उडा। मार्ग में विभिन्न प्रकार के दृश्यों को देखते हुए ६ वर्जे महाराजजी

कलकत्ता पहुच गए। वहा पर सेठ जुगलिक शोर विरला के निजी सचिव अन्य कई महानुभावों के साथ रवागतार्थ ग्राए हुएँ थे। सेठजी ने श्री महाराजजी के भोजन ग्रादि की मव व्यवस्था ग्रंपने निवास स्थान पर ही की थी। एक कार इनके इतस्तत भ्रमण करने के लिए नियन कर दी थी। यहां ६ दिन ठहरने का प्रोग्राम बनाया था। सेठजी के छोटे भाई श्रीर उनके श्रन्य सभी पारिवारिक जन नित्य दर्शनार्थ श्रीर सन्यग के लिए ग्राने रहते थे। महाराजजी के यहा पर ग्रन्य कई भक्त, शिष्य ग्रीर परिचित थे जिनमें से प्रमुख ये थे—सेठ केवलचन्दे मिमाणी, सेठ राजकुमार वागडी, मेठ रामकुमार, नेठ वालमुकन्द, श्रीमती मीनादेवी, वरकतराम जीहरादि। सेठ विरताजी के ग्रादिमियों ने तारापुर, कम्पनी वाग, वेलोर मठ, चिडियाघर, श्रजायव-घर उत्यादि सभी दर्शनीय स्थान दियालाए। एक दिन के लिए नवदीप भी गए। मेठ केवलचन्दर्जी मिगाणी भी माथ गए। वहां पर वडे-वडे मदिरों के दर्शन किए। वहा के भजनाश्रम देले। एक भजनाश्रम मे दोपहर का भोजन किया। दो वजे गगा के किनारे मन्त्रों और माधुओं के दर्शनार्थ गए। यहा पर महाराजजी के बहुत पुराने परिचित एक योगी मिले। उनके साथ एक घण्टा तक योग के विषय में वातचीत की। ये वहीं योगी थे जो कई-कई घण्टे की समाधि लगाया करते थे। ग्राजकल ये मीनी वाबा के नाम ने प्रसिद्ध है। महाराजजी ने मिलकर इनको बढी प्रसन्नता हुई ग्रीर गगीयी उनके पास ग्राने की उच्छा प्रकट की। इस पर महाराजजी ने इन्हे भ्राने पान ठहरने के लिए भ्रामिति किया। अब ये कई-कई दिन की संसाधि नहीं लगाने थे वयोगि युवावस्था में इसकी अविक आवश्यकता रहती है, वृद्धावस्था में उननी नहीं रहनी। यव ये सब प्रकार से मन्तुष्ट थे। जो बात समभने श्रीर जानने के योग्य थी उसे समक्त निया था। ग्रव कुछ ग्रीर जानने की डच्छा नहीं रही थी। जीवन की नाथ पूरी हो चुकी थी। ग्रव कोई ग्रमिलापा शेप नहीं रही थी। इनकी ग्रायु ए० वर्ष में ऊपर थीं। उन्हें ग्रपने जीवन की कोई चिन्ता नहीं थीं। यदि श्राज चला जाए तो चित्ता नहीं थी और १० माल में जाए तो भी कोई फिक नहीं था। जब महाराजजी ने उनके नियहि के लिए श्रायिक सहायता करनी चाही तो इन्होंने कहा, "इसकी ग्रावय्यनता नहीं है। इस घरीर के लिए सभी व्यवस्था ठीक है।" इसके पटनान् योगीराजजी सायकान ४ वजे चलकर ७ वजे कलकत्ता पहुच गए। इससे ग्रगन दिन विरलाजी की मोटर फैनटरी में एक मदिर का उद्घाटन करने बगाल के प्रधानमयी पथारने थे, श्रत विरलाजी के पारिवारिक सदस्य मेहाराजजी को भी साथ ने गए। इस मदिर का उद्घाटन बड़े समारोह के साथ हुआ। कई हजार नर-नारी उपस्थित हुए। सबको मिष्ठान्न वितरण किया गया।

#### ष्रासनसोल प्रस्थान

७ फरवरी को महाराजजी ने ग्रासनसोल के लिए प्रस्थान किया। डीसरगढ गे त्रिलोकचन्द श्रानन्द, कमलादेवी तथा उसके पति लेने के लिए कलकत्ता ग्राए हुए थे। यहा पर महाराजजी तीन दिन तक विराजे। यहा पर कई कोयले की खाने देखी। एक दिन दामोदर घाटी के वाध को देयने के लिए गए। यहा पर नदी के जल को रोककर भील बनाई गई है श्रीर जल से विजली निकाली गई है। यहा का दृश्य वटा मनोहर था। श्रानन्द माहब के परिवार ने तीन दिन तक सत्सग से लाभ उठाया । ग्रानन्द दम्पती के विचार उत्तम हैं ग्रीर ये वडे सज्जन हैं । महाराजजी मे इनकी बडी भक्ति है ।

#### धनवाद गमन

श्रीमती प्रेमदेवी तनेजा ग्रपनी कार लेकर महाराजजी को स्वय लेने श्रागई थी। ६ फरवरी सायकाल घनवाद पथारे। इन्होने अपनी ही कोठी पर पूज्य गुरुदेव को ठहराया। इनके सुपुत्र विजयप्रताप तथा नन्दिकशोर दोनो इनके अनन्य भक्त की ठहराया। इनके सुपुत्र विजयप्रताप तथा नन्दाकशार दाना इनके अनन्य मक्त हैं। नन्दिकशोर कलकत्ता कालिज में विद्याध्ययन कर रहे थे। वडे सीम्य ग्रीर जान्त प्रकृति के नवयुवक हैं। विजयप्रताप २४ वर्पीय नवयुवक हैं। वडे भावुक ग्रीर श्रेष्ठ व्यक्ति हैं ग्रीर साथ ही वहुत योग्य है। ग्रपने पिता के स्वर्गवास हो जाने के पञ्चात् सारा कारोबार इन्होंने वडी योग्यतापूर्वक सभाला हुग्रा है। इनके पास ५ कोयले की खाने हैं ग्रीर विशाल फैक्टरी का निर्माण उस समय कर रहे थे। ये श्री महाराजजी को सब परिचितों को ग्राशीर्वाद दिलाने के लिए लेगए थे। श्री प्रेमदेवीजी ने इनके दो स्थानो पर भाषण करवाए। ये महाराजजी की ग्रनन्य भक्त थी श्रीर इनको वर्षो से ग्रपना गुरु मानती थी। स्वर्गाश्रम में कई वार साधना शिविर में ग्रभ्यासार्थ ग्राती रही है।। प्रथम दिन वडी श्रद्धा श्रोर भितत के साथ पूज्य गुरुदेव के सामने भोली फैला कर प्रार्थना की "मेरी कोई लौकिक कामना नहीं है और न कोई लौकिक पदार्थ ही श्रापसे मागती हू। श्रनेक जन्मो से श्रात्म-ज्ञान की पिपासा है। श्रव वृद्धा होगई हू। मृत्यु के समीप पहुच गई हू। क्या श्राप इस पिपासा को बुभाने की कृपा नहीं करोगे वया इस जीवन श्रीर इस ससार से मैं निराश ही चली जाऊगी श्री श्रापने श्रानन्दस्वामी, प्रभुग्राश्रितजी जैसे श्रनेको को भवसागर से तरने की योग्यता प्रदान की है। क्या मुक्ते डूबती हुई देखकर ग्रापको दया नहीं ग्रावेगी े में कई वर्षों से ग्राचा लगाए बैठी हूं कि योगीराजजी मुक्तें भी भव-पाश से मुक्त करेगे। मेरी कुटिया में ग्राज ग्राप भगवान् के रूप में पधारे हैं। मेरी कोली में ग्रात्म-विज्ञान रूपी ग्राप्ता प्रसाद डालना ही पडेगा।" इन शब्दों के साथ उसके नेत्रों से ग्रश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। महाराजजी का हृदय भी द्रवित् सा होगया। इन्होने कहा, "वेटी, व्याकुल मत हो, रोना वन्द करो । कल प्रांत ५ वजे ग्रापकी ग्रात्म-ज्ञान की पिपासा शान्त कर दी जाएगी ।" इन्होने कृपापूर्वक प्रांत ५ वजे से ७ वजे तक दो-दो घण्टे ग्रभ्यास में विठाकर ग्रात्म-साक्षात्कार करवा दिया। प्रेमदेवी को वडा सन्तोश लाभ हुया और वह अपने को धन्य तथा कृतकृत्य समभने लगी।

ब्रह्मचारी श्रिष्विलानन्द का समागम— ब्रह्मचारी श्रिष्विलानन्द उत्तरकाशी तथा स्वर्गाश्रम में कई वार महाराजजी के दर्शन कर चुके थे। इनकी महाराजजी के प्रति बड़ी श्रद्धा श्रीर स्नेह है। इन चार दिनों में भी यह कई वार दर्शन करने श्राए। वड़े विद्वान् हैं श्रीर बहुत वर्षों से घनबाद में ही निवास करते हैं। यहा की तथा श्रासपास की जनता का श्रापने वडा उपकार किया है। वडे वीतराग श्रीर नि स्पृह व्यक्ति हैं। यह प्राय महाराजजी के साथ श्रमणार्थ जाते थे। मार्ग में दोनों में वडा रोचक वार्तालाप होता था। वार्तालाप का विषय सदैव श्राध्यात्मिक होता था। धनबाद में महाराजजी के कई सज्जन प्रेमी भक्त वन गए थे। महेन्द्रप्रताप तथा शाहजी इन्हें श्रपने घर पर भी ले गए थे।

श्रीमती प्रेमदेवी की श्रद्धा—धनवाद से प्रधान के लिए प्रस्थान करने से पूर्व श्रीमती प्रेमदेवी ने हाथ जोउत्तर पूज्य गुरुदेवजी से गुरुदक्षिणा रवीकार करने के लिए प्रायंना की। उन्होंने मुरुत्तराते हुए कहा, "वया ब्रात्म-ज्ञान प्रदान करने के लिए रिज्वत दे रही हो '" यह मुन्कर जितने भी दर्शनार्थ भवन तथा शिष्य वहा उपस्थित थे सब कहत्ता लगातर हमने लगे श्रीर कहा—'जिप्या की भेट तो रवीकार करनी पडेगी।' सभी उपस्थित महानुभावों ने उस भट को स्वीकार करने के लिए इनसे श्राग्रह किया, उस पर महाराजजी ने स्वीकृति दे दी। प्रेमदेवी ने निर्माणोनमुख योगनिकेतन के सबीन श्रायम में एक कुटिया बनाने का मारा व्यय देने श्रीर 'हिमालय का योगी' नामक जिस नए अन का प्रकाशन होने वाला था, उसके प्रकाशन का कुल व्यय देने का बचन दिया श्रीर श्रेप जीवन हिमालय में ही व्यतीन करने का निश्चय किया। उसके श्रतिस्तिन प्रेम ननेजा ने कहा था कि श्री महाराजजी की सेवा में १०० ६० मानिक जीवन प्रंस्त भेंट के रूप में पहुचना रहेगा।

प्रेगदेवी के दामाद श्री महेन्द्रप्रनाप नारग ने भी एक कुटिया बनवाने का चनन दिया, खोकि उनने वानप्रस्थ का समय समीप आ रहा था और यह अपना देग जीवन पूज्य गहाराजजी के चरणों में ही द्यतीन करना चाहते थे।

#### प्रयाग के लिए प्रस्थान

पराग में कुम्भ का मेना था, उसनिए महाराजजी १५ ता० को साढे श्राठ यजे यहा पहुच जाना नाहने थे, श्रत रात्रि के बारह बजे धनवाद से प्रस्थान किया। जिन्ही जाने थी द्वारिकानाथजी गोधी भी प्रयाग श्राए हुए थे। उन्होंने स्वामीजी महाराज के निवास का प्रवय अपने एक मित्र के मकान पर पूर्व से ही कर दिया था।

सगम स्नान—सगम पर वटी भीट थी। लागो नर-नारी स्नानार्थ आए हुए ये। महाराजजी ११ वजे के लगभग सगम पर किन्ती हारा रनान के लिए पधारे। श्री प्रारिकाताय, योगीराजजी तथा उनके नेवक सूरतराम ने वटे आनन्दपूर्वक स्नान रिया और बाह्यणों को दान-दक्षिणा भी दी। प्रयाग में सरदार पी०पी० सिंह और सरदारनी की की गन्तो और महात्माओं के प्रति वटी श्रद्धा थी। इन्होंने महाराजजी री वटी गया की। सरदारजी हारिकातायजी सोधी के मित्र थे और ये उन्हीं के पास ठहरें, थे। उन्होंने रवामीजी को भी वहीं ठहराया।

## दित्ली लीटना

महाराजिश को भ्रमण करने नगभग दो माम होने को थे। भव कुछ श्रान्त से होगए थे, अन बनारम, कानपुर, नयनऊ, भ्रागरा, मशुरा, वृन्दावनादि जाना भव स्थिति कर दिया और द्वारिकानाथ गांधी के साथ हवाई जहाज से वापिस दिस्ती नौट गए। यहा पर गांधीजी की कोठी पर ही निवास किया। दिल्ली में भ्रापके गीटो अन और जिल्य है। दर्जनाथियों का बड़ा ताता सा बधा रहता था। बड़ी भीट गारा दिन बनी रहनी थी, अन सत्सिगयों और जिज्ञासुओं के निए ३ से ६ बजे का समय नियन कर दिया गया था। नित्यप्रनि सत्सग और अका-समाधान होता का समय नियन कर दिया गया था। नित्यप्रनि सत्सग और अका-समाधान होता का समय नियन कर दिया गया था। वित्यप्रनि सत्सग भीर अका-समाधान होता का समय कि एका करने के नाना प्रकार के साधन पूज्य योगीराजजी साधको, जिज्ञासुओं और सत्सिगयों को बताते रहते थे। ५ दिन के पश्चात् द्वारिकानाथजी सोधी ने ५०० म्रादिमयो को भोजनार्थ तथा महाराजजी का वचनामृत पान करने के लिए निमित्रत किया था।

श्री महाराजजी का दिल्ली मे उपदेश—पूज्य गुरुदेव ने अपना प्रवचन इस वेद मत्र से प्रारभ किया —

वेदाहमेत पुरुप महान्तमादित्यवर्ण तमस पुरस्तात्। तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्य पन्या विद्यतेऽयनाय।। (यजु० ३१।१८)

श्रयीत् श्रात्मा श्रीर परमात्मा का साक्षात्कार किए विना मृत्यु पर विजय नहीं पाई जा सकती, सर्व दुखों से निवृत्ति नहीं हो सकती। मैं वहुत वर्षों के पश्चात् हिमालय से नीचे उतरा हू श्रीर मास से भारत के मुख्य-मुख्य नगरों में श्रनेक श्राध्यात्मिक विषयों पर व्याख्यान दिए हैं। वडे-वडे नगरों में साथना शिविर लगाकर योगाभ्यास करवाने श्रीर सत्सग लगाने के उद्देश्य से मैं हिमालय से नीचे उतरा था जिसमें हमारे देश की जनता को विशेष लाभ पहुंच सके। किन्तु मेरा यह विचार निर्थंक ही रहा। प्रथम तो वडे-वडे नगरों में कोई एकान्त स्थान ही प्राप्त नहीं होना। यदि कही पर किसी कोठी ग्रथवा धार्मिक संस्था में मिल भी जाए तो लोग प्रात ४-५ वजे जीनकाल में उठकर ग्रा नहीं सकते। धर्म तथा ईश्वर के प्रति लोगों में श्रद्धा ग्रीर भिन्त की भावना ही नहीं है। डेढ मास हुआ जब मैं यहा से वम्वर्ड गया था, जगदीशचन्द्र डावर की कोठी पर लोगो के वहुत ग्राग्रह पर प्रात ५ वजे मैने साधना की कक्षा लगानी प्रारम्भ की थी। उसमे केवल १२ स्त्री-पुरुप ग्राते थे। मुक्ते उस समय दिल्ली की जनता पर वडा तरस स्राया था। जिस ब्राह्ममुहर्त मे उठकर उन्हें जाप, पूजा, पाठ और साधना करनी चाहिए थी उस समय को ये ग्रालस्य, प्रमाद, तन्द्रा ग्रीर निद्रा मे खो रहे थे। इससे तो हमारा योगाश्रम ही श्रेष्ठ है जहा पर कम से कम ४०-५० स्त्री ग्रीर पुरुष ग्रभ्यास करने ग्राते है। वहा पर सच्चे जिज्ञामु तत्वज्ञान की ग्रभिलापा लेकर ग्राते है। वहा पर निश्चिन्त होकर साधना करते है ग्रीर ये वडी सफलता लाभ करते है। हमारा योग साधना शिविर प्रति वर्ष १ नवम्बर से ३१ मार्च तक ५ मास के लिए लगता है। नित्यप्रति तीन वार अभ्यास करवाया जाता है। इसी प्रकार योग निकेतन गगोत्री मे भी १५ जून से १५ सितम्बर तक ग्रर्थात् तीन मास तक साधना शिविर लगाया जाता है। वहा लोगो को विशेष शान्ति ग्रीर नत्व-ज्ञान की प्राप्ति होती है। सब लोग यम तथा नियमो का पालन करते है ग्रौर निञ्चिन्त भाव से ग्रभ्यास करते हैं तथा मानव जीवन की पूर्ण सफलता लाभ करते है।

भोग श्रीर विलास का त्याग—यहा नगरों में मनुष्य सारा दिन किसी न किसी कारोबार में लगा रहता है। सारा दिन लौकिक व्यापार करते-करते श्रान्त होकर घर लौटता है। जहा गरीर श्रीर मिस्तिष्क दोनो ग्रत्यन्त थके हुए हो, भला उनसे ध्यान तथा समाधि की सभावना कैसे की जा सकती है। यह विज्ञान तो साधन-चतुष्टय-सम्पन्न ग्रर्थात् गम, दम, उपरित, तितिक्षा गुक्त साधक ही प्राप्त कर सकता है। इस श्राठ मास के प्रचार कार्य के समय बडे-बडे सम्पन्न गृहस्थों के पास रहने का ग्रवकाश मिला। प्राय सभी, सत्तर श्रीर श्रस्सी साल के गृहस्थ भी, भोग श्रीर विलास का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। ५० वर्ष के पश्चात् ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए। इससे विषयासिक्त कम हो जाती है तथा मोह ग्रीर ममता का ग्रभाव होने लगता है। सदाचार का जीवन वन जाता है। ग्रादर्शयुक्त जीवन का दूसरो के ऊपर भी ग्रच्छा प्रभाव पड़ता है। "यद् यदाचरित श्रेष्ठस्तद् तदेवेतरे जना " की मर्यादा साक्षात् रूप घारण कर लेती है। वल, पराक्रम ग्रीर बुद्धि मे वृद्धि होती है। श्रेय-मार्ग के पिथक वन जाते है ग्रीर ज्ञान तथा वराग्य को प्राप्त करते हैं। गास्त्र-मर्यादा का पालन भी ठीक रूप से होने लगता है। ५०-५५ वर्ष की ग्रायु के पश्चात् वानप्रस्थियों के समान जीवन व्यतीत करना चाहिए ग्रीर ७५ वर्ष की ग्रायु तक ग्रर्थात् २५ वर्ष तक किसी ग्रात्म-ज्ञानी गुरु के पास ग्रथवा किसी ग्रच्छे वानप्रस्थाश्रम मे निवास करके पूर्ण ब्रह्मचर्य वत घारण पूर्वक यम-नियम का पालन करते हुए योग साधना करनी चाहिए ग्रीर घारणा, ध्यान तथा समाधि द्वारा ग्रात्म-साक्षात्कार करना चाहिए। यदि इस मानव जीवन को सफल वनाना है ग्रीर यदि ग्रावागमन के चक्र मे मुक्तिलाभ करने की इच्छा है तो भोग ग्रीर विलास के जीवन का परित्याग करके श्रेय-मार्ग को ग्रपनाग्रो, जिसे ग्रपनाकर बुद्धिमानो, विद्वानो, सन्तो ग्रीर महापुरुषो ने मुख, ग्रान्ति ग्रीर ग्राञ्चत ग्रानन्द प्राप्त किया है। जिस मनुष्य ने निचकेता के इस वाक्य को पढ़ा ग्रीर मुना है —

व्वो भावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत् सर्वेन्द्रियाणा जरयन्ति तेज । ग्रिपि सर्वे जीवितमल्पमेव तर्वेव वाहास्तव नृत्यगीते ॥

उसकी भोग-विलास के प्रति कभी हिंच नहीं हो सकती। ये भोग ग्रौर विलास कभी स्थायी रहने वाले नहीं हैं। ये इन्द्रियों के तेज को नष्ट करते हैं। बुद्धिमान् व्यक्ति कभी उनकी कामना नहीं करते। जिन्होंने इस रहस्य को समफ लिया है वे भोगों से उपराम हो जाते हैं ग्रीर ग्रात्म-साक्षात्कार करने में ही ग्रपने जीवन की सफलता समफते हैं। वेद वार-वार हमें हमारे कर्त्तव्य का स्मरण दिलाता है 'यस्त न वेद कि तस्य ऋचा करिष्यति' ग्रथांत् इस मानव देह को प्राप्त करके जिसने ग्रात्म-साक्षात्कार नहीं किया उसको वेद, शास्त्र तथा ग्रन्य ग्रथ पढ़ने से क्या लाभ हैं। यह जीवन तो वास्तव में ग्रपने यथार्थ रूप को जानने ग्रीर सर्व दु ख निवृत्ति के लिए प्राप्त हुग्रा है, परन्तु यह मूढ मनुष्य हीरे के वदले काच की मणि खरीदता फिरता है। ग्रात्म-ज्ञान प्राप्त के लिए कही दूर जाने की ग्रावश्यकता नहीं। वह तो ग्रापके ग्रत्यन्त समीप है। ग्रापके भीतर ही है, ग्रापके भीतर ही ग्रापको इसकी उपलव्धि होगी, किन्तु इसके लिए तपस्या, त्याग, साधना ग्रीर वैराग्य की ग्रावश्यकता है। ग्राख के ग्रजन को ग्राख स्वय नहीं देख सकती यद्यपि वह उसके ग्रत्यन्त समीप है। इसको देखने के लिए दर्पण की ग्रावश्यकता होती है। इसी प्रकार ग्रापका ग्रात्मा ग्रीर परमात्मा ग्रापके हृदय प्रदेश में चित्त रूपी मण्डल में विद्यमान है, किन्तु इसका साक्षात्कार ज्योतिष्मती बुद्धि ग्रीर ऋतम्भरा बुद्धि रूपी दर्पण के विना होना ग्रसभव है। इस वृद्धि की प्राप्त का साधन ध्यान ग्रीर समाधि है। इन्हीं के द्वारा यह बुद्धि प्राप्त हो बुद्धि की प्राप्त का साधन ध्यान ग्रीर समाधि है। इन्हीं के द्वारा यह बुद्धि प्राप्त हो सकती है, ग्रन्यथा नहीं। ग्रत ग्रापको किसी विद्वान् योगी से ऋतम्भरा बुद्धि को प्राप्त हो

करने के साधन सीखने की ग्रावञ्यकता है। इसके प्राप्त होने पर ही ग्रात्म-साक्षात्कार लाभ होगा, स्वरूप की उपलब्धि होगी ग्रीर मानव जीवन कृतकृत्य हो जाएगा।

ऋतम्भरा बुद्धि की प्राप्ति के साधन—ऋतम्भरा बुद्धि को उत्पन्न करने के लिए सर्वप्रथम ध्यान को भूमध्य में लगाना चाहिए। कुछ काल के अभ्याम से यहा एक दिव्य ज्योति उत्पन्न होने लगती है। इस प्रकाश को लेकर ऊपर ब्रह्मरश्र में प्रवेश करे। इस स्थान में दीर्घ काल तक अभ्यास करने में और मन के समाहित होने ने इस ज्योति द्वारा शने -शने ब्रह्मरश्र के स्वरूप और पदार्थों को देखने का प्रयत्न करे। यह प्रयत्न अथवा अभ्यास ऋतम्भरा बुद्धि को उत्पन्न कर देता है। सर्वप्रथम भूमध्य में जो ज्योति उत्पन्न हुई थी यह पदार्थों को अर्थात् अन्दर के सूक्ष्म पदार्थों को विखलाने में काम देगी और ऋतम्भरा बुद्धि इन पदार्थों का निर्णय करेगी और यथार्थ निश्चयात्मक साक्षात्कार करवाएगी और यह नितान्त निर्भान्त होगा। ब्रह्मरश्र में मूक्ष्म शरीर के पदार्थ जिनका व्यवहार यही पर होता है, अर्थात् दम इन्द्रिया और मन ओर उनके विषयों का पूर्णरूपेण साक्षात्कार करवा देनी है। इसके पञ्चात् माधन-चतुण्टय-मम्पन्न योगी इम ज्योति और अनुनम्भरा बुद्धि को लेकर हृदय-प्रदेश में प्रवेश करे।

श्रात्मा के तीन श्रावरण—यहा श्रापको श्रात्मा के ऊपर तीन श्रावरण दृष्टि-गोचर होगे—मूक्ष्म प्राण, ग्रहकार श्रीर चित्त । प्रथम श्राप ऋतम्भरा बुद्धि द्वारा सूक्ष्म प्राण का प्रत्यक्ष करे श्रीर इसके पण्चात् श्रहकार के स्वरूप को देखे जिसके द्वारा 'श्रहमस्मि' श्रथित् ग्रह-विशिष्ट श्रात्मा के स्वरूप का बोध होता है । उस ग्रहकार के मण्डल को भेदन करके या उसके स्वरूप को जानकर ऋतम्भरा द्वारा चित्त के मण्डल मे प्रवेश करें ॥

चित्त मे आत्मा का अन्वेषण—यहा अत्यन्त ममाहित होकर सूथम वृद्धि द्वारा अर्थात् इस ऋतम्भरा ज्ञान् द्वारा चित्त मे अपने आत्मा का अन्वेषण करे। यह देखे कि चित्त के किस प्रदेश मे परमाणु से भी सूक्ष्म यह ग्रात्मा निष्क्रिय ग्रीर ग्रचल होकर निवास कर रहा है क्योंकि यह चित्त कभी-कभी विकास भाव को प्राप्त होकर बहुत वडा दिखाई देने लगता है। यदि उस चित्त का विभाग किया जाए तो उसके श्ररबो हिस्सो के एक खण्ड रो भी श्रात्मा सूक्ष्म है। चित्त की यह श्रवस्था उस समय होती है जब यह विकास रूप होकर कियाशील होता है। तब यह एक समुद्र के समान विञाल मालूम होने लगता है। उस समय इसमें परमाणु ने भी सूक्ष्म इस ग्रात्मतत्त्व को ढूढना उतना ही कष्टसाध्य होता है जितना कि विजाल समुद्र में मोनी को ढूढ कर निकाल लाना कष्टसाध्य होता है। परन्तु जव यह चित्त सकीच भाव की प्राप्त होता है तब यह भी वहुत छोटा सा और ग्रत्यन्त सूथ्म ग्रात्मा की ग्रपेक्षा कुछ ही वंडा होता है, तव ग्रात्म-साक्षात्कार करना मुगम होता है। चित्त की यह सकोचावस्था श्रत्यन्त सात्विक होती है श्रौर विकास की श्रवस्था रज प्रधान होती है। इसलिए योगी को सात्विक अवस्था मे चित्त और आत्मा का पृथक् पृथक् स्वरूप देखने मे सुविधा होती है श्रीर ठीक-ठीक श्रनुभूति होती है। इस श्रवस्था में ग्रपने स्वरूप का जो ग्राभास प्रत्यक्ष होता है, उस समय जो ग्रानन्द की ग्रनुभूति होती है, उसे लेखनी से लिखा नहीं जा सकता और वाणी से उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इन चारो पदार्थों की ग्रर्थात् सूक्ष्म प्राण, ग्रहकार, चित्त ग्रीर ग्रात्मा की प्रकृति के ग्रण्डाकार मे

अग्ण्डमात्र पुरुष के रूप में अनुभूति होती है। यही आनन्दमय कोष या कारणशरीर हैं। उसने आगे यदि आत्मजानी योगी ब्रह्म-साक्षात्कार प्राप्त करना चाहे तो यहा धर्ममेघ नमाबि की अवस्था में उस कोष रूप प्रकृति के आवरण को उल्लंबन करके या उसका गाधात करके ब्रह्म के मण्डल या स्वरूप में उपस्थित होता है। वहा पहुच कर आनन्दमय कोष अथवा कारणगरीर का उपादान कारण अर्थात् साम्यावस्था रूप प्रकृति में ब्रह्म के ब्याप्य-व्यापक भाव सम्बन्ध का प्रत्यक्षीकरण करे। प्रकृति और ब्रह्म के स्वरूप को पृथक्-पृथक् अनुभव करे। उसके मध्य में उपस्थित होकर उसे आत्म-विस्मृति हो जाती है, वह खोया ना जाता है। वह अपने स्वरूप में स्थित हो जाता है। यह है आत्मा की मोक्षावस्था। इसको चाहे आप अपने स्वरूप में प्रतिष्ठा समभे अथवा प्रकृति के रूप में प्रतिष्ठा समभे या ब्रह्म के रूप में स्थित समभे।

विज्ञान जनसमुदाय जो पूज्य महाराजजी के उपदेशामृत का पान कर रहा था उसकी भी तमाधि सी लग गई थी। उपदेश समाप्त होगया था किन्तु सब स्तब्ध होकर बैठे थे। किनी का न उठने को दिल चाहता था, न बोलने को, श्रीर नाही दिलने को। जब महाराजजी उस उपदेश को दे रहे थे तब उनके नेत्र बन्द थे। ऐसा मानूम हो रहा था कि वे अपने भीनर सब गुछ देखकर उपदेश दे रहे थे। ये धारा-प्रवाह ने बोल रहे थे श्रीर जनता एकाग्र भाव से मुन रही थी। श्रीतागण सभी बिहान् थे। विद्या निमाण देकर सबको बुताया गया था जिससे बुत्मिन् श्रीर बिहान् लोग ही आए जो उपदेश का तत्त्व समक्त सके। पर तो भी महाराजजी का नाम गुनकर सैकडो लोग बिना निमत्रण के भी उपस्थित होगए थे। सैकडो ही खोतागण ने उस बात को अनुभव किया कि उम प्रकार का हदयग्राही, सारगभित तथा ग्राध्यात्मिक उपदेश उन्होंने कभी नहीं गुना था।

#### स्वर्गाथम लोटना

्या उपदेशामृत का दिल्ली की जनता को पान करवाने के पञ्चात् पूज्य ग्यामीजी महाराज केवल दो दिन वहा श्रीर ठहरे श्रीर इसके पञ्चात् २४-२-६५ को न्यांश्यम के निए प्रस्थान किया। प्रात ७ वर्षे द्वारिकानायजी के परिवार तथा अन्य भन्तों श्रीर शिल्यों ने यहे सम्मानपूर्वक महाराजजी को विदा किया। श्री सोबी श्रीर श्री नलवाड कार में उन्हें न्यांश्यम पहुचाने श्राए। महात्मा प्रभुश्राश्यतजी ने पूज्य गुक्देव को वानप्रस्थ श्राथम ज्यानापुर में भोजनार्थ निमन्नित किया था। वहा पहुचकर १२ वजे भोजन करके महात्माजी से कुछ काल वार्तानाप किया। तदुपरान्त २ वजे यहा ने प्रस्थान करके २ वजे स्वर्गाश्यम पहुच गए।

पूज्य योगीराजजी ने २५ फरवरी को स्वर्गाश्रम पहुचकर २६ ता० से साधना-भ्यान करवाना प्रारम कर विया। गृन हो मास से उनके भनता तथा शिष्य इनकी प्रनीक्षा कर रहे थे। उम नम्यं प्रभ्यानियों की सर्या ४०-४५ तके त्थी। एक मास नक अभ्यास करवाने के बाद ३१ गार्च १६६५ को साधना शिविर की समाप्ति पर उन्सव मनाया गया। एक बहुत बडा भण्डारा दिया गया और महाराजजी ने अभ्यासियों को बडा सारग्रिन और शिक्षाप्रद निग्न उपदेज दिया।

## पूज्य महाराजजी का उपदेश

उपस्थित ७०-७५ अभ्यासियों को सम्बोधित करते हुए महाराजजी ने कहा — मुक्ते स्वर्गाश्रम में अभ्यास करवाते हुए १८ वर्ष होगए हैं। इसके पूर्व मोहन ग्राश्रम में साधना जिविर लगाया करता था। भारत के विभाजन के समय स्वर्गाश्रम में निवास प्रारम्भ कर दिया। तब से यही स्थान योग विद्यालय वन गया। ५ वर्ष पूर्व तो ४ मास का शिविर लगाया जाता था और अब ५ महीने तक अभ्यास करवाया जाता है। इस सस्था से सैकडो ही नहीं किन्तु सहस्रो अभ्यासियों ने लाभ उठाया है। अनेकों योगी यहा से तैयार होकर निकले हैं।

शारीरिक, मानसिक तथा ग्राध्यात्मिक उन्नति—यहा की सावना के द्वारा साधक गारीरिक, मानसिक ग्रीर ग्रात्मिक उन्नति प्राप्त करते हैं। ग्रासन, प्राणायाम ग्रीर योग की कियाग्रो से गरीरिक उन्नति, यम-नियम ग्रीर प्रत्याहार के द्वारा मानसिकोन्नति तथा धारणा, ध्यान ग्रीर समाधि के द्वारा ग्रात्मिकोन्नित लाभ करते हैं। इन साधना गिविरो से जनता का वडा उपकार हुग्रा है। इन गिविरो से लोक ग्रीर परलोक दोनो का मुधार होता है। ग्रात्म-ज्ञान ग्रीर ब्रह्म-ज्ञान को प्राप्त करके मनुष्य मोक्ष का ग्राधिकारी वनता है। जितने काल तक यहा साधक ग्रीर साधिकाए निवास करती हैं तव तक पूर्णरूपेण ब्रह्मचर्य का पालन होता है, चरित्र का निर्माण होता है ग्रीर तप, त्याग ग्रीर वैराग्य की भावना दृढ होती है।

नि शुल्क शिक्षा—इस योग विद्यालय की यह विशेषता है कि यहा पर किसी भी सावक या साधिका से योग प्रशिक्षण शुल्क नहीं लिया जाता, ग्रिपितु निर्धनों, ब्रह्म-चारियो, वानप्रस्थियो ग्रौर सन्यासियों की ग्राधिक सहायता की जाती है। इस योग विज्ञान की परपरा चलाने के लिए 'वहिरङ्गयोग', 'ग्रात्म-विज्ञान' ग्रौर 'ब्रह्म-विज्ञान' नामक ग्रथों की रचना करके मनुष्यमात्र का कल्याण-साधन किया है। ग्रनेक प्रकार के सुगम ग्रौर सरल साधन वताकर सर्व साधकों को ग्रध्यात्म ज्ञान करवाया जाता है।

देश तथा विदेश मे योग प्रचार—योगिनकेतन योग विद्यालय ने कई योगाचार्य तैयार किए है जो देश-देशान्तरों में जाकर योग का प्रचार करते हैं।

सव मतो श्रोर संप्रदायों में समानता—इस योग विद्यालय में सव सप्रदायों के जिज्ञासु योग-साधना करने श्राते हैं। सबको समान रूप से योग शिक्षा दी जाती हैं। किसी भी प्रकार का भेद-भाव कही भी दृष्टिगोचर नहीं होता। जैन, बौद्ध, सिख, पारसी, सनातनधर्मी, श्रायंसमाजी, राधास्वामी, इतना ही नहीं, मुसलमान श्रोर ईसाई श्रादि सभी योग सीखने के लिए श्राते हैं श्रीर सभी यहा से लाभ उठाकर जाते हैं।

योग की सार्वभौमिकता—योग ही एक सार्वभौम धर्म है जिसको वसुधातल पर रहने वाले सभी नर-नारी ग्रपनाते है। योग मनुष्यमात्र के लिए उपयोगी, हित-कारी ग्रीर कल्याणदायक है।

ग्राज ग्राप सब ५ मास की साधना के उपरान्त यहा से विदा हो रहे है। यहा मे जाकर भी ग्रापको इसी प्रकार ग्रभ्यास करते रहना चाहिए। यदि इससे ग्रागे उन्तित सभव न हो तो कम से कम ५ महीने मे यहा जो कुछ सीखा है उसे तो कभी नहीं भुलाना चाहिए। इसे दृढभूमि करते रहे। मेरा ग्रागीवींद तथा ग्रुभकामनाए सर्देव श्रापके माथ रहेगी। में ग्रागा करता हूं कि ग्राप सब उन्नति के पथ पर ग्रग्र-सर होगे ग्रीर कल्याण के भागी बनेगे।

भवन की ग्राधार-शिला—3१ मार्च को सभी ग्रभ्यासी योगनिकेतन से विदा हो जाते हैं, इमिलए योगनिकेतन का भवन मुनीकीरेती पर गगा के किनारे निर्माण की जो एक वटी योजना बनाई गई थी उसका प्रारम प्रथम मार्च को ही कर दिया या। इस पावन दिवस पर ग्राश्रम की ग्राधारिशना रखी गई ग्रीर श्री वी० एन० दत्तजी, कैंप्टन जगन्नाथजी तथा शकरनालजी शर्मा ने निर्माण कार्य प्रारभ कर दिया।

उत्तरकाशी गमन—योग विद्यालय वन्द होने के पञ्चात् पूज्य गुरुदेव ने एक माम तक स्वर्गाश्रम मे निवास किया ग्रीर ३० ग्रप्रैल को वहा से चलकर पहली मई को गाटे तीन बजे उत्तरकाणी योगनिकेतन मे पहुच गए। महात्मा प्रभुग्राश्रितजी मी कुछ दिनों के लिए यहां ग्रागए। यहां रहकर कई प्रकार की ग्रपनी गकाग्रो का नमाधान करवाते रहे ग्रीर ज्ञान नथा विज्ञान में वृद्धि करते रहे। श्री महात्माजी जब योगनिकेतन पहुचे तब घाट में उत्तरकर गंगाजी में हाथ-मुह प्रक्षालनार्थ गए किन्तु देववणात् पर फिनल जाने में गिर गए ग्रीर गले की हड्डी (कालर बोन) टूट गर्छ। विविवत् उनका उपचार करवाया गया ग्रीर प्रभु-कृपा से इन्हें ग्राराम ग्रागया। महात्माजी ग्रपने एक विष्य श्री उन्द्रमेनजी को ग्रपने माथ लाए थे। एक दिन इन्होंने महाराजजी में निवेदन किया कि "महात्माजी को बंदी भिवत ग्रीर श्रद्धा से ग्रापके दर्शन ग्रीर तत्मग करने ग्राए थे। यह चोट किस कर्म का फल है ?" महाराजजी ने हगने हुए उत्तर दिया, "ग्रपना नियम भग करके ग्राए हैं। गुरु की ग्राज्ञा लेकर ग्राना नाहिए था। उगीकी यह मजा है। ग्रीर दर्शन तथा मत्मग की भावना पूरी हो ही रही है।" महाराजजी कुछ दिवस उत्तरकाजी निवास करने के पञ्चात् रोहतक पथार गए।

गंगोत्री में तीन साधकों को योगाभ्यास की शिक्षा—इस वर्ष गंगोत्री के योगगावना-शिविर में दो साधिकाए डाक्टर कुमारी रामप्यारी श्रीर श्रीमती शान्ति देवी
तथा एक गावक श्री शकरनान शर्मा सम्मिनत हुए। डा० रामप्यारी की सेविका
पिनत बाई भी कुछ दिवस नक श्रभ्यास में बैठी किन्तु श्रासन की श्रस्थिरता के कारण
कुछ दिवस नक श्रभ्यास करके साधना में श्राना तो छोड़ दिया किन्तु श्रपनी कुटिया
में श्रभ्यास करनी रही। ३० मई को सब तैयारी करके ३१ मई को प्रात ६ वर्ष
उत्तरकाशी में श्रभ्यान करके भटवाडी पहुंचे। इसमें श्रागे गंगोत्री तक सारी यात्रा
पैदन की। भटवाडी में चनकर सायकाल गगणानी पहुंच गए, दूसरे दिन हरसिल
श्रीर नीसरे दिन गंगोत्री पहुंच गए। ३-४ दिन के पञ्चात् डाक्टर कुमारी रामप्यारी
शास्त्री तथा श्री शकरनान शर्मा में पूज्य महाराजजी ने कहा, "श्राप दोनों को बड़ी
तत्यन्ता के साथ साधना श्रीर श्रभ्यास में लग जाना चाहिए। श्रीर शीघ्र ही श्रात्सविज्ञान श्राप्त करने का श्रयत्न करे क्योंकि श्राप दोनों को भविष्य में योगनिकेतन
के श्राचार्य वनकर योग श्रविक्षण करना होगा। हम बहुत शीघ्र ही श्राप दोनों को
तन्य-ज्ञान करवा देगे, श्रव श्रभी से तत्त्व-ज्ञानियों के समान श्राचरण करना प्रारम्भ
कर देना चाहिए।" श्रभी साधना शिविर के श्रारम्भ होने में ६ दिन शेप थे परन्तु
पूज्य महाराजजी ने ७ जून से ही श्रभ्यास करवाना प्रारम्भ कर दिया।

श्री शकरलालजी शर्मा--श्री गर्माजी महाराजजी के पास १६६१ के फरवरी मास मे ग्राए थे। ग्राप रावलिपडी निवासी थे किन्तु ग्रव कई वर्षों मे दिल्ली मे रहते थे ग्रीर एलेम्विक कैमिकल कम्पनी मे कार्य करते थे। एक हजार रुपया उन्हे वेनन मिलता था। इसके साथ कम्पनी ने इन्हे श्रीर भी श्रनेक मुविधाए दे रखी थी। एक कन्या को जन्म देकर युवावस्था मे ही डनकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास होगया था। इनकी माता सीतेली थीं। श्री शर्माजी यद्यपि युवक थे किन्तु इन्होने द्वितीय विवाह करना उचित नही समझा । ग्रपनी पुत्री को भली प्रकार में मुशिक्षित करके उसका योग्य वर के साथ विवाह कर दिया। यह एक ही इनका उत्तरदायित्व या। इसे पूर्ण करके इनका चित्त कुछ उपराम सा रहने लगा। ग्रव्यात्म ज्ञान की रुचि जागृत होगई, ग्रत ग्रध्यात्म ज्ञान के प्रदाता किसी महापुरुप की खोज करने मे व्यस्त होगए। मवं-प्रथम विनोवा भावे के पास गए ग्रीर कुछ काल तक उनके पान निवास भी किया किन्तु किचिन्मात्र भी ग्राध्यात्मिक उन्निति नही हुई, ग्रत वहा से लीट ग्राए। इनकी पुत्री के इवसुर कई वर्षों से ऋषिकेश मे रहते थे। श्री शकरलाल जी ने ग्रध्यात्म-पथ में मार्गदर्शन करने के योग्य किसी महात्मा का नाम वताने के लिए कहा। पडित शिवदत्तजी का पूज्य महाराजजी से बहुत पुराना परिचय था। इनकी वड़ी रयाति इन्होने सुन रखी थी। अत वे श्री शर्माजी को स्वर्गाश्रम मे योगनिकेतन में ले आए ग्रीर इन्हें महाराजजी के ग्रर्पण कर दिया। तब से पटिन शकरलालजी शर्मा इनके ही वनकर इनके पास निवास कर रहे है।

डाक्टर कुमारी रामप्यारीजी शास्त्री— डाक्टर कुमारी रामप्यारी देवीजी शास्त्री लुधियाना के पास पायल निवासिनी है। जब इनकी ग्रायु केवल १६-१७ साल की थी तभी से इन्होने ग्राजनम ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने की प्रतिज्ञा की थी। इसके लिए इन्हे ग्रपने माता-पिता तथा परिवार का वड़ा कोप-भाजन वनना पडा ग्रीर विविध कठिनाइयो को सहन किया, किन्तु ये अपने व्रत पर हिमालय पर्वन के समान अटल रही। आपने १० वर्ष तक कन्या महाविद्यालय जालधर मे शिक्षा प्राप्त की। इसके पश्चात् हिन्दु विश्वविद्यालय वनारस मे पाच साल तक निवास करके बी०ए०, वी०टी० ग्रीर गास्त्री परीक्षाए पास की ग्रीर इतिहास मे एम० ए० प्राईवेट पास किया ग्रीर राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से पी-एच०डी० की उपाधि ग्रहण की । प्रथम रियासत कोटा के तथा इसके वाद राजस्थान के शिक्षा विभाग मे राजसेवा करती रही है। वर्षो तक चीफ इन्स्पैक्ट्रेस, ग्रसिस्टैट डायरेक्ट्रेस ग्रीर डिगी कालेजो के प्रिन्सिपल के पदो पर कार्य कर चुकी है। राजस्थान विञ्वविद्यालय की एकेडेमिक कौसिल, सिनेट तथा सिडीकेट की वर्षों तक सदस्या रही है। ग्राप हिन्दी की ग्रच्छी लेखिका हैं ग्रीर कई ग्रथो की रचना की है। शिक्षा, समाज, धर्म तथा राजनैतिक क्षेत्रों में ग्रापने बहुत काम किया है। राजसेवा से निवृत्त होने के पश्चात् कन्या महा-विद्यालय जालधर मे एक वर्ष तक ग्राचार्या के पद पर ग्रवैतनिक सेवा की।

पूज्य महाराजजी २८ अन्दूबर १६६४ को काश्मीर से लीट रहे थे। जालधर के स्टेशन पर श्रीमती डाक्टर विद्यावतीजी, जालधर कन्या महाविद्यलय की प्रवध-कर्त्री सभा की उपप्रवाना कुमारी लज्जावनीजी और डाक्टर कुमारी रामप्यारीदेवीजी इनके दर्जन करने ग्राई। स्टेशन पर ग्राने से पूर्व डाक्टर विद्यावतीजी ने डाक्टर

ष्टुमारी रामप्यारीदेवीजी से एक उच्च कोटि के महात्मा के दर्शनार्थ स्टेशन पर चलने के लिए कहा। अवटर कुमारी रामप्यारीदेवी ने उपेक्षा दशति हुए कहा, "पा लाभ होगा े भने बहुतेरे सन्तो के पहिले ही दर्जन कर रखे है।" इस पर टाम्टर विद्यावनीयो को कुछ निरामा सी हुई किन्तु उन्होने पुन कहा, "स्रापने इस प्रकार के महान् सन्त नहीं देने होंगे। ये हिमालय के योगी है। दर्शन मात्र से तुम्हारा करयाण हो जाएगा। बहुन बगों से श्रापकी जो योग मीखने की श्रमिलापा है वह पूर्ण हो जाएगी। स्नापका सन्त करण निर्मल हो जाएगा स्रीर मुक्ति लाभ करोगी।" में बान सुनकर ठा० रामप्यारीदेवी भी नाथ चलने के लिए तैयार होगई । स्टेशन पर रेयल १० मिनट ही दर्शन किए ये। दर्शन करते ही उनका मन ग्रानन्द से प्रफुल्लित हो उटा । योग सीमने ती ग्रभितापा प्रवल हो उठी । विद्यालय के कार्य को परित्याग करने 📺 एकरम निय्नय किया और याजीवन श्रात्म-विज्ञान श्रीर ब्रह्म-विज्ञान प्राप्त करने रा घटत निर्पय कर निया। अवटर विद्यावनीजी तथा कुमारी लज्जावतीजी पार ही बड़ी गर्नाप ब्लॉ भी, डाक्टर कुमारी रामप्यारीजी से कहने लगी कि महात्माजी र कारती उनेन उरमने में हमने बजी भूल की बयोकि अब आप योग सीखने के जिए नदी प्रायोगी प्रीर हम प्रापने विचित ही रह जाएगी। स्रापने तो एकदम ही गपन भित्य का जायणम बना लिया। कुमारी लज्जावतीजी ने विद्यालय मे रहने के लिए बरद प्रायर जिया जिन्तु उन्होंने उनकी बात नही मानी। विद्यालय के मानायों के पर ने त्यागाय देने का निब्नय कर निया। अपना शेप जीवन हिमालय ने रहरर योग गरा नन्य-ज्ञान प्राप्त गरने हा दृट निश्वय कर तिया। पूज्य स्वामी सेतिस्वरातनः सरस्वतीती महाराज के दर्जनो का उनके ऊपर बडा प्रभाव पडा। विकास से प्रथम १५ दिन का अवकाश लेकर स्वर्गाश्रम के साधना शिविर मे समिनित तीने हा निस्त्य किया। पूज्य योगीराजजी ने प्रवेश के लिए स्नाना मागी त म १४ जिन के जिए पीन-साधना-जिवित में सम्मिलित होगई। इन्होंने थोडे ही िनों में बता उन्नी कि ली। भूमध्य में दिव्य ज्योति का प्रादुर्भाव होगया श्रीर प्रकार प्राप्त वा उनके परायों का नावान्तार होने लगा। उसमें इन्हें बडी प्रसन्नता हुई छोर जीयन की सफतना के चिन्ह दिसाई देने लगे।

श्री मराराजजी के प्रति जन्यन्त श्रिजा, भवित ग्रीर विश्वास उत्पन्त होगया।

गर दिन उन्होन महाराजजी ने नम्न निवेदन किया कि मैं योगनिकेतन में स्थायी रूप

ने ररार यात्मतिकान प्राप्त करना चाहती है। मुक्ते पेन्यन मिलती है। सेवा के लिए

नेनक ना नेविता ग्राने पास रस्नी, ग्रापके ऊपर मेरा कोई भार नहीं होगा। ग्राप

मुक्ते, अपनी पुत्री समभातर तन्य-ज्ञान का उपदेश करे तथा ग्रात्म-ज्ञान के साक्षात्कार

गा सावन नताये। मेरी ग्रासु उस समय ६० वर्ष की है। जीवन का कुछ भरोसा

नहीं, ग्रन ग्राप मुन्त पर दयादृष्टि करे।

श्री मट्टाराजजी ने कहा, बेटी । एक वर्त पर हम आपको आत्म-ज्ञान का स्तरंश देश और उन्ना गालात्कार भी बीह्र ही करवा देशे तथा आपको योग की अत्वार्थ बना देशे। बहु हाने यह है कि आप उस विज्ञान को प्राप्त करके योगनिकेत्न अत्वार्थ नप से रहाल दिवियों को योग की शिक्षा दे। भूनी भटकी देवियों को योग में रहाल दिवियों को योग मार्ग पर न्या कर हिस्सा हात, प्रदान करों। उाक्टर गुमारी रामण्यारीदेवी नें।

पूज्य महाराजजी के समक्ष प्रतिज्ञा की कि मैं ग्राजीवन ग्रापकी ग्राज्ञा का पालन करती रहगी।

योगनिकेतन में बहुत वर्षों से स्त्री ग्रीर पुरुप इकट्ठे ही योग-सावना कर रहे हैं। पुरुप योगाचार्य तो कई तैयार होगए हैं, किन्तु देवी ग्राज तक कोई तैयार नहीं हो पाई थी जो देवियों को साधना करवा सके। इसलिए महाराजजी ने डाक्टर कुमारी रामप्यारीदेवीजी को ग्राजन्मब्रह्मचारिणी, विदुषी, सासारिक भण्भटों से निवृत्त, ग्रायु तथा धनवृद्ध, ग्रनेक गुणों से सम्पन्न, उच्चादर्श प्रिय तथा उदात्तभावना युक्त ग्रीर योग प्रशिक्षण के लिए योग्य जानकर इस कार्य के लिए प्रतिज्ञा ली।

डाक्टर कुमारी रामप्यारीदेवीजी ने स्वर्गाश्रम, उत्तरकाशी तथा गगोत्री के योगनिकेतनो मे साधना करने का नियम वना लिया था। इसीलिए गगोत्री भी ग्रभ्यासार्थ ग्राई थी। महाराजजी सायकाल सव साधको को इकट्ठे ही साधना करवाते थे परन्तु डाक्टर रामप्यारीदेवीजी को दिन के १० वजे मे ११ वजे तक विशेष समय देते थे क्योंकि इन्हें शीघ्र योगाचार्या बनाने का ये निश्चय कर चुके थे। यह देवी शीघ्र उन्नति करने लगी। ब्रह्मरध्र ग्रीर हृदय के विज्ञान में ग्रच्छी प्रगति होने लगी। विशोका ज्योतिष्मती बुद्धि उत्पन्न होकर ऋतभरा के रूप मे परिणत होने लगी। नाना प्रकार के पदार्थों का साक्षात्कार करने लगी। ग्रव पूज्य गुरुदेव ने विज्ञान के सूक्ष्म रहस्यों को समक्षाना प्रारभ किया। साधना करवाने के उपाय, दूसरों के मनो पर प्रभाव जमाने के उपाय, ग्रपने ग्रनुकूल दूसरों की बुद्धि को करने के उपाय, ग्रन्त करणों के गुणों में परिवर्तन करने की विधि ग्रादि समक्षाने लगे।

डाक्टर कुमारी रामप्यारीदेवीजी ने एक वार पूज्य गुरुदेवजी से प्रवन किया कि मुक्ते किसी-किसी समय घ्यान काल मे या समाधि की अवस्था मे विशेष आनन्द की अनुभूति होती है। यह आनन्द ईश्वर का है या अत्मा का अथवा चित्त का ही धर्मविशेष या गुणविशेष है ?

# ग्रानन्द धर्म किसका है ? 🤄

पूज्य महाराजजी ने शका-समाधान करते हुए उपदेश दिया --

स्थूल शरीर मे ग्रानन्दाभाव—जब योगी वृद्धि की वृत्तियो को समाहित करके सप्रज्ञात समाधि द्वारा स्थूल शरीर मे प्रवेश करता है तो उसको इसके भीतर रस, रुधिर, मास, मेद, मज्जा, नस, नाडिया, ग्रस्थि ग्रादि ही ग्रपनी दिव्य दृष्टि से दिखाई देते हैं। ग्रानन्द का ग्राभास ग्रथवा ग्रनुभूति इस ग्रन्नमय कोप मे नही मिलती।

प्राणमय कोष मे भी स्रभाव—इसके ग्रागे जव योगी प्राणमय कोष मे प्रवेश करता है तब इसको १० प्रकार के प्राण, इनके स्थान या कार्य ग्रथवा रूप, रग तथा ग्राकार दिखाई देते हैं, परन्तु इस कोप मे भी ग्रानन्द नही प्राप्त होता है।

मनोमय कोष मे भी ग्रानन्द नहीं—यहा से निराश होकर योगी ग्रानन्द की खोज करता हुग्रा मनोमय कोष मे प्रवेश करता है, परन्तु इसमे भी स्थूल ग्रीर सूक्ष्म भूत, ज्ञान तथा कर्म इन्द्रियो का ही प्रत्यक्ष होकर रह जाता है, ग्रानन्द के स्रोत का कही पना नहीं चलता। यहा पर भी उसकी जिज्ञासा की पूर्ति नहीं हुई।

विज्ञानमय कोप मे भी भ्रभाव—ग्रव योगी यहा से भी ग्रागे वढता है ग्रीर विज्ञानमय कोप मे प्रवेश करके भी केवल भूतो, इन्द्रियो, मन तथा वृद्धि के ही स्वरूपों का साक्षारकार करता है, किन्तु ग्रानन्द उसे यहा भी प्राप्त नहीं होता। इसकी प्राप्ति की उत्कण्ठा पूर्ववन् वनी रहती है।

श्रानन्दमय कोप मे श्रानन्द प्राप्ति—श्रव योगी सप्रज्ञात समाधि द्वारा श्रीर श्रागे वहता है श्रीर श्रानन्दमय कोप मे प्रविष्ट होता है। जब वह इसमे जाता है तो उसे श्रानन्द की भलक सी तो श्राती है परन्तु उसे यह निर्णय नहीं हो पाता कि इसका वास्तविक स्रोत है कहा। श्रत वह कुछ श्रान्त सा हो जाता है। उसके मन मे उहापोह, तर्क-वितर्कादि होने लगते हैं। वह श्रानन्द के श्रन्वेपण के लिए प्रयत्न-शील रहता है। श्रानन्दमय कोप मे मिले-जुले कई पदार्थ है।

सूक्ष्म प्राण में ग्रानन्द नहीं—सर्वप्रथम योगी सूक्ष्म प्राण को ही ग्रपनी समाधि का विषय बनाना है, क्यों कि इसी के द्वारा जीवन का सचार होता है। जीवनी शक्ति यहां से ही निकल कर ऊपर के कोपों में सचारित होती है। क्या इसी जीवनी शक्ति या सूक्ष्म प्राण को ही ग्रानन्द का स्रोत समक्ष ले विषय जीवनी शक्ति ग्री ग्रानन्द में ग्रन्तर नहीं श्रानन्द या स्वय्य मानना पड़ेगा क्यों कि जीवन का स्रोत तो को ग्रीर ही है, ग्रत ग्रानन्द का स्रोत भी कही ग्रीर ही होना चाहिए।

श्रहकार में भी नहीं—जब श्रहकार में प्रवेश करके देखता है तो योगी की यहा भी श्रानन्द का स्रोत दृष्टिगोचर नहीं होता। जिसके द्वारा ममेदम् की भावना होती हो उसमें श्रानन्द रह ही कैंगे सकता है। श्रव इसके श्रागे चार पदार्थ रह जाते हैं जिनमें योगी को श्रानन्द के स्रोत का श्रन्वेपण करना है। श्रानन्द श्रनित्य है, शाश्वन नहीं। यदि यह नित्य होता तो इसकी उपलब्धि सदा बनी रहती। इसलिए श्रानन्द को उत्पन्न होने वाला मानना पड़ेगा। श्रव जो चार पदार्थ श्रवशेप है वे ये हैं —चित्त, श्रातमा, प्रकृति, श्रीर ब्रह्म।

 कार्यरुप दोनो ही परिणाम को सिद्ध करते हैं। यदि कहों, ब्रह्म चेतन रूप है ग्रीर चेतन ही ग्रानन्द रूप हो सकता है, तो चित्त जड़ है इसमें ग्रानन्द नहीं हो सकता। यदि ग्राप चेतन ब्रह्म को ही ग्रानन्द रूप मानते हैं तो चित्त का सम्बन्ध तो सदा ही ब्रह्म से बना रहता है। सदा ही चित्त में ग्रानन्द की ग्रनुभूति होनी चाहिए पर यह सदा होती नहीं। ग्रत ग्रानन्द को ग्रानित्य ही मानना पड़ेगा। जहां ग्रीर जिस बस्तु में प्राप्ति की वात बनती है वहां उस प्राप्ति को भी ग्रानित्य ही मानना पड़ेगा। क्योंकि ग्रानन्द प्राप्त होता है, ग्रत उसको ग्रानित्य ग्रीर सावधि मानना पड़ेगा। इसिलए ब्रह्म से ग्रानन्द की प्राप्ति सिद्ध नहीं होती। यदि ब्रह्म ग्रानन्द रूप है तो ग्रानन्द चित्त में होता है या ब्रह्म में समाधिस्थ योगी समाधि से ब्युत्थान होने पर कहता है कि ग्राज मुझे बड़ा ग्रानन्द लाभ हुग्या। ग्रानन्द का ग्राना जाना ब्रह्म में है या चित्त में व्रह्म तो ग्रानन्द रूप ही है। ब्रह्म यह नहीं कहना कि मुफे प्रानन्द ग्राया या प्राप्त हुग्या, यह कहने वाला तो चित्ताभिमानी ग्रात्मा है न कि ब्रह्म। इस पर यह शका होती है कि ब्रह्म में ग्रीर ग्रात्मा में कोई ग्रन्तर है या नहीं विन प्राप्त ग्रान्व क्या सहान है। ग्रात्मा ग्रणु तथा ब्रह्म महान ग्रन्तर है। एक ग्रणु है ग्रीर दूसरा महान है। ग्रात्मा ग्रणु तथा ब्रह्म महान है। ग्रत ब्रह्म भी ग्रानन्द का स्रोन सिद्ध नहीं होता। उसमें ग्रानन्द निकल कर या वहकर नहीं जाता है। उसे ग्रानन्द रूप स्रोत का उपादान कारण नहीं कह सकते हैं।

स्रानन्द जीवात्मा का भी धर्म नही—तो क्या जीवात्मा को स्रानन्द का स्रोत माने ? इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए योगी पुन सम्प्रज्ञात मुमाधि द्वारा जीवात्मा मे ग्रानन्द की खोज करने लगता है। ग्रयने चित्त को ग्रात्मा के साथ जोडना है। मे ग्रानन्द की खोज करने लगता है। ग्रयने चित्त को ग्राह्मा के साथ जाड़ना ह। समाधि की इस ग्रवस्था मे ग्रानन्द का प्रादुर्भाव तो ग्रवश्य होना है परन्तु यह निञ्चय नहीं हो पाता कि इन दोनों में से ग्रानन्द किसमें है। यदि ग्राह्मा का ग्रानन्द मानते हैं तो इसकों भी चित्त के समान विकारवान मानना पड़ेगा। बहुन से विद्वान ग्राह्मा को सत् ग्रीर चित् ही मानते हैं, ग्रानन्द का नहीं मानते। उनमे पूछना चाहिए कि ग्राप ब्रह्म को ही क्यो ग्रानन्द क्य मानते हें श्रामन्द क्य भी है। हम भी जीवाहमा को सन्, चित् ग्रीर ग्रानन्द मानते हैं। जब चेतन होने से ग्रीर सत् होने से ग्रापका ब्रह्म ग्रानन्द क्य हो सकता है। जब चेतन होने से ग्रीर सत् होने से ग्रानन्द स्प हो सकता है। जिन हेतुग्रों से ग्राप ब्रह्म को ग्रानन्द क्य मानते हैं। उन्हों हेतुग्रों में हम भी ग्राह्मा को ग्रानन्द क्य मानते हैं। यदि ग्राप कहें कि तब ब्रह्म ग्रोर ग्राह्मा में ग्राह्मा को ग्रानन्द क्य मानते हैं। यदि ग्राप कहें कि तब ब्रह्म ग्राह्मा में ग्राह्मा को ग्रानन्द क्य मानते हैं। यदि ग्राप कहें कि तब ब्रह्म ग्राह्मा में ग्राह्मा को ग्रानन्द क्य मानते हैं। यदि ग्राप कहें कि तब ब्रह्म ग्राह्मा में ग्राह्मा को ग्रानन्द क्य मानते हैं। यदि ग्राप कहें कि तब ब्रह्म ग्राह्मा में ग्राह्मा होनो एक समान ग्रीर एक रूप बन गए. तब हमारा कथन मे अन्तर ही क्या हुआ, दोनो एक समान और एक रूप वन गए, तव हमारा कथन है कि समानता दो पदार्थों मे होती है परन्तु एक रूपता नही होती। एक रूपता कार्य की कारण मे या कारण की कार्य में हो सकती है। आत्मा और परमात्मा का कार्य कारण-भाव सम्बन्ध भी नही है जिससे एंक रूपता मानी, जाए। चित्त की भी आत्मा कारण-मान सम्बन्ध मा गहा ह । जसस एकल्पता कामाळुगाए। । पराचा पा आरंग के साथ एकरूपता नहीं बनती क्योंकि दोनो विजातीय है। तब समान जाति वालों की एक क्ष्मता मान ली जाए क्योंकि ग्रात्मा ग्रीर परमात्मा दोनो चेतन है, ग्रत समान जाति वाले होने से एकरूपता हो जाएगी। लेकिन क्या जीवात्मा ब्रह्म से उत्पन्न हुग्रा था जो उसकी ब्रह्म के साथ एकरूपता सिद्ध हो सके र यदि ऐसा मान भी लिया जाए

तो कार्य-कारणात्मक भाव सिद्ध हो जाएगा ग्रीर दोनो विकारवान् वन जाएगे। चेतनत्वेन नि सदेह ग्रह्म ग्रीर जीवात्मा की समानता है किन्तु व्यक्तिरूप से दोनो भिन्न है। जैसे दो पुरुष है, दोनों की जाति तो चेतनत्वेन एक है, किन्तु व्यक्ति तो दोनों भिन्न है। ग्रन नहां ग्रीर जीव की जाति नो भले ही एक है परन्तु व्यक्तित्व भिन्न-भिन्न है। जीवात्मा अणु शीर ब्रह्म महान है। यहा पर महानता और अणुता का भेद है, जानि का भेद नहीं। अब प्रवन यह उठना है कि जाति एकत्व मे रहेगी या ग्रने करवे में ? जाति को तो ग्रनेकरव में ही मानना पड़ेगा, जैसे मनुष्य जाति, पशु जानि ग्रादि । नो यया जीवात्मा ग्रीर परमात्मा की पृथक्-पृथक् जाति मान ले ? जीवात्मा अने रु है, अन् उनकी जानि सिद्ध हो जाएगी । परेन्तु परमात्मा तो अनेक नहीं है, उनकी जाति कैंगे सिद्ध होगी ? अन परमात्मा को भी चेतनत्वेन जीवात्मा की जाति में ही मानना परेगा। यका — ब्रह्म महान है ब्रीर प्रकृति भी महान है, इत उन दोनों को एक जानि वाना मानने में क्या आपत्ति है <sup>?</sup> इसका समाधान यह 🗦 -- इनमें एक जद है फ्रीर दूसरा चेतन है, खत ये दोनो समान जाति वाले नहीं हो सकते। हमने तो तीय श्रीर प्रह्मा में यणु श्रीर महानता का भेद माना है। श्रणु श्रीर महानना कोई गुण नहीं है, उनके स्वमप ही है, उसलिए प्रण्त्व और महानेता से जाति भेर तही हो सकता । पुरुषत्व रूप से एक जाति होने पर भी एक पुरुष वामन होता है श्रीर एक पूर्व लग्दा और ऊने कद का होता है, किन्तु पुरुष वे दोनो कहलाएंगे। तपना और महानना गरीर के धमंह न कि यातमा के। हम तो चेतनत्वेन जाति मानते हैं न कि नरीनों के छोटे बटे धर्मों में । ग्रत जीवारमा का भी ग्रानन्द धर्म नहीं बनता । यदि उनका धर्म मानीन तो उसे विकारवान् मानना पडेगा । इससे श्रनित्य श्रानन्द की उत्पन्ति माननी होगी। जो दोप ब्रह्म में श्रानन्द मानने मे श्राते थे वे ग्रानन्द को प्रात्मा का पर्म मानने में भी उपस्थित हो जाएंगे। इसलिए कोई ऐसा पदार्थ होना चाहिए चिमने स्रानन्द की उत्पत्ति हो सके स्रोर वह विकारवान् हो महि।

प्रकृति में भी प्रानन्द की प्राप्ति नहीं होती है—तब क्या ग्रानन्द प्रकृति का ही गणविशेष है ? उस शरा को नेकर योगी सप्रज्ञान समाबि हारा ग्रीर ग्रागे बढ़ता है। प्रकृति ग्रान्य ग्रीर परमात्मा पर एक प्रकार का ग्रावरण है। प्रकृति का मुख्य । पर ने नम्बन्य ग्रिक्ष के गांव है। यदि उस सम्बन्ध से ग्रानन्त की उत्पत्ति माने तो क्राह्मी मृत्ति में उस ग्रानन्त का उपभोक्ता किसको माना जाए, क्योंकि उस समय तक जीवा के रथून शरीरों की उत्पत्ति ही नहीं हुई होती। यदि उस प्रकृति से उत्पत्त हुए ग्रानन्त का गोना ईव्वर को मानने है तब वह भी जीवात्मा के समान बढ़ हो जाएगा ग्रीर उसमें तथा जीव में कोई विशेषता न रहेगी। जैसे जीवात्मा ग्रीर चित्त का स्थाग से प्रानन्द की उत्पत्ति हो गकती है। परन्तु उस ग्रानन्द का उपभोग करने वाला भी ग्रानन्द की उत्पत्ति हो गकती है। परन्तु उस ग्रानन्द का उपभोग करने वाला भी ग्रानन्द की उत्पत्ति हो गकती है। परन्तु उस ग्रानन्द को उत्पत्ति निर्थंक ही शारण नही किया है। उसनिए उस समय प्रकृति में ग्रानन्द की उत्पत्ति निर्थंक ही शारण नही किया है। उसनिए उस समय प्रकृति में ग्रानन्द की उत्पत्ति निर्थंक ही शारणी। मूल कारण हप प्रकृति ही ग्रानन्द का उपादान कारण हो सकती है। हो जाएगी। मूल कारण हप प्रकृति ही ग्रानन्द का उपादान कारण हो सकती है। यदि इसमें यह गुण न हो तो उसके कार्यों में भी यह नहीं हो सकता वयोंकि जो गुण यदि इसमें यह गुण न हो तो उसके कार्यों में भी यह नहीं हो सकता वयोंकि जो गुण

कारण मे होते है वे कार्य मे अवश्य होते है। यह आनन्द सूक्ष्म रूप से कारण मे पडा रहता है। इसकी ग्रभिव्यक्ति चित्त रूप कार्यों मे जाकर होती है।

**भ्रानन्द चित्त का धर्म है**—चित्त मे जैसे ग्रौर श्रनेक गुणो की उत्पत्ति होती है, यथा-सुख, राग, स्नेह, चिन्तन, स्मृति, जाति, ग्रादि, इसी प्रकार इसमे ग्रानन्द की उत्पत्ति भी होती है। जब चित्त का सम्बन्ध इन्द्रियों के विपयों के साथ होता है तव सुख की उत्पत्ति होती है। जव इसका सम्वन्ध ग्रात्मा या ब्रह्म के साथ समाधि की ग्रवस्था मे करते हैं तब इसमे ग्रानन्द की ग्रिभिव्यक्ति होती है। जब सस्कारो या वृत्ति का निरोध करते है तव भी इससे ग्रानन्द की उत्पत्ति होती है। जैसे मुख-शान्ति की ग्रवस्था चित्त की एक स्थिति है या ग्रवस्था है, इसी प्रकार ग्रानन्द भी चित्त की एक ग्रवस्था विशेष या इसका यह धर्म ग्रथवा गुण विशेष है। योगी जव सकल्प ग्रीर विकल्प का ग्रभाव करके शून्यता में स्थित होता है तव ग्रन्थकार ग्रीर शून्यता उत्पन्न होती है। इसके पञ्चात् एक दूसरी अवस्था आती है, वह है शून्यता श्रीर मन्द-मन्द श्रालोक या प्रकाश । इसके पश्चात् एक तीसरी ग्रवस्था श्रीर श्राती हैं जो सत्व प्रधान होती है, वह है शून्यता ग्रौर ग्रानन्द की ग्रभिव्यक्ति । ये सब चित्त की ही भ्रवस्थाए हैं क्योकि इसमे ही भ्रवस्थान्तर परिणाम होता है। यह भ्रानन्दरूपा-वस्था इसकी सात्विक ग्रीर ग्रन्तिमावस्था है। इसकी सत्व प्रधान ग्रवस्था मे ही म्रात्मा के सान्तिध्य से म्रानन्द की म्रिभिन्यक्ति ग्रीर म्रात्म-दर्शन होता है, म्रत चित्त का ही यह धर्मविशेप मानना पडेगा। यह चित्त की सत्व प्रधान ग्रवस्था होती है। यही इसकी म्रानन्द रूप म्रवस्था मानी जाती है। जब इसमे रज प्रधान होता है तब कियागील अवस्था वनी रहती है। जब यह तम प्रधान होता है तब जडता रूप स्थिति या भ्रवस्था होती है। शरीर के रहते हुए इसमे किया का भ्रभाव नहीं हो सकता। वैसे किया धर्म रजोगुण का है परन्तु उस वक्त रजोगुण दवा हुआ सा मन्द किया का हेतु बना रहता है। ज्ञान रूप या ग्रानन्द रूप ग्रवस्था सत्व की प्रधानता मे ही होती है। इस प्रकार की ग्रानन्द रूप स्थित को बहुत से योगी ग्रात्मा का ही श्रानन्द समभ लेते हैं परन्तु वास्तव मे वह श्रानन्द चित्त मे ही होता है श्रीर यह म्रानन्द चित्त की ही एक अवस्था विशेष है। म्रात्मा निविकार, निरवयव, कूटस्थ, निष्किय है, अत इसमें ग्रानन्द की ग्रिभिव्यक्ति नहीं होती। यह ग्रानन्द चित्त की ही श्रवस्था है। एकाग्रावस्था या निरोधावस्था मे इस ग्रानन्द की ग्रभिव्यक्ति या उत्पत्ति होती है। यह स्रानन्द चित्त का धर्म होने से किसी डन्द्रिय का विषय नही होता। न यह रसना का विषय बनता है, न रूप का ही ग्रीर न स्पर्श ग्रीर शब्द का ही। इसका कोई रग, रूप, स्राकार, प्रकार नहीं होता, इसलिए यह चित्त का ही एक परिणाम विशेप है। जब चित्त मे इस ग्रानन्द की ग्रिभव्यक्ति होती है तब ऐसा मालूम होता है मानो स्नानन्द का स्रोत बहकर तीनो शरीरो, पाचो कोपो मे प्रवाहित हो रहा है। सूक्ष्म प्राण इसको लेकर चल रहा है ग्रौर इसके साथ जीवन का सचार कर रहा है। यह ग्रानन्द जब ब्रह्मरध्र मे पहुचता है तब इन्द्रियो ग्रौर विषयो के साथ मिलता है ग्रौर तब इसकी सुख सज्ञा हो जाती है। जब यह केवल चित्त मे रहता है ग्रीर उस समय ग्रात्मा या परमात्मा के साथ चित्त का सपर्क बना रहता है उस समय इसकी मुख्य रूप से भ्रानन्दरूपावस्था कहलाती है। किन्तु बहुत से भ्राचार्यों ने इस भ्रानन्द को

स्रात्मा या परमात्मा का ही गुण विशेष माना है स्रथवा स्रात्मा स्रीर परमात्मा मे स्रारोप किया है। किन्तु हम स्रात्मा स्रीर परमात्मा को निर्गुण, निर्विकार, निष्क्रिय, निरवयव, कूटस्य, स्रविचल मानते हैं, प्रकृति स्रीर चित्त के सग रहते हुए भी उनका विकारवान् होना नहीं मानते। स्रत स्रानन्द चित्त की ही एक स्रवस्था विशेष है स्रीर चित्त का ही वर्म विशेष है।

### पच कोषो का पचकोषात्मक स्यूल-शरीर

पूज्य रवामी योगेश्वरानन्द सरस्वतीजी महाराज ने एक दिन अपने जिप्य सकरताल अमी को गगोत्री में उपदेश देते हुए बनाया कि हमने 'आत्म-विज्ञान' में स्थल अरीर के दो ही कोपों का निरूपण किया है, अन्नमय कोप और प्राणमय कोप का। अन्य आचार्यों ने भी इन्हीं दो का वर्णन किया है। परन्तु आज हम आपके सामने उस पचकोपात्मक स्थल-अरीर का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हैं। आप अच्छी तरह में ध्यान देकर श्रवण करे।

वास्तव में उस दृश्यमान स्थूल शरीर में पाच कोप है—पायिव कोप, जलीय कोप, श्राग्नेय कोप, वायवीय कोप, श्रीर श्राकाशीय कोप। श्रन्तमय कोप के स्थान में पायिव कोप श्रीर प्राणमय कोप के स्थान में वायवीय कोप का भिन्न प्रकार में कथन करेंगे। पृथ्वी का कार्य होने में इस शरीर को पार्थिव कोप कहा जाएगा। उस शरीर में मुग्य भाग पृथ्वी का ही है। श्रन्तस्प श्राहार इस शरीर के जीवन का श्राघार है। श्रन्त में ही यह पुण्ट श्रीर शिवनशाली होकर बहुत काल तक जीवन थारण करता है। श्रन्त में ही उसमें वीर्य उत्पन्त होना है जो सन्तानीत्पत्ति का मुग्य हेतु होना है। उसीलिए इसे श्रन्तमय कोप कह दिया है परन्तु श्रन्त भी तो पृथ्वी से उत्पन्त हुत्रा है श्रीर पृथ्वी का ही विकार या कार्य है। श्रत यह शरीर पार्थिव ही सिद्ध होता है। उसमें श्रस्थि श्रादि जो पदार्थ है वे भी पृथ्वी के ही कार्य है। उनिलए उसे पार्थिव कोप कहना ही उचित होगा। इसके दस भेद है।

### दश प्रकार का पायिव कोप

ग्रिंग्य दान्त, नत्य केश दाही मूछ रोम, मासपेशिए, नाडी ग्राते फुप्फुस, ज्ञान ग्रीर गित वाहक सूत्र, त्वचा श्राणेन्द्रिय, रस क्षिर के सूक्ष्म भाग, मेद मज्जा, रज बीर्य में सूक्ष्म भाग, मलादि । उन दश भागों से युक्त पायिव कोप कहलाता है। उन पटार्थों की रक्षल शरीर में प्रधानता है।

- १ श्रस्थि श्रीर दान्त—मानव शरीर में कठोरतम भाग ग्रस्थियों का है। इनकी सरया २०६ है। ग्रिन्थियों में मिल कर यह शरीर बना है। यदि उनको मासादि से पृथक् कर दिया जाए तब ककाल या ग्रस्थिपजर कहलाता है। मुह में कुल ३२ दान्त है। किसी-किसी व्यक्ति के कम भी होते हैं। महात्मा बुद्ध के मुह में केवल २८ दान्त ही थे। सब उन्द्रियों का सम्बन्ध मृत्यु पर्यन्त बना रहता है परन्तु दान्त पीछे उत्पन्न होने हैं ग्रीर प्रथम निकल जाते हैं।
- २. नख, केश, डाढी, मूछ, रोम—मनुष्य देह मे २० नख है। इनमे अगुलियों की रक्षा होती है और चीरने, फाटने, कुरेदने आदि के काम आते है। केश, डाढी, मूछ गिर और मुह की रक्षा करने है और शोभा बढाते है। गर्मी और शीत से

वचाते हैं। सिर की प्रहार से रक्षा करते है। रोम कूप से गरीर की गुद्धि होती हे जिससे ग्रनेक रोगो का निवारण होता है।

3. मांसपेशियां—गरीर का सब अस्थिपजर मासपेशियों से हका हुम्रा है। सारे गरीर में गतिया या कियाए—हाथ पर गर्दनादि का हिलना चलनादि कार्य इनके द्वारा ही होते हैं। भोजन का परिपाक, आतो में याहार का गमन, मल-भूत वहन, हृदय की धडकनादि सभी इन्हीं के द्वारा होता है। मास के छोटे-छोटे टुकडों को पेशिया कहते हैं। ब्रह्मरश्च से नाडियो द्वारा मासपेशियों को गति प्राप्त होती है।

४ नाडी, यातें यादि—नाडियों का सारे गरीर में जाल-सा फैला हुया है। इनका सब इन्द्रियों के साथ सम्बन्ध है। सहस्रों की सस्या में नाडिया गरीर में विभिन्न कार्य करती है। रक्त परिभ्रमण तथा रक्त को एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में लें जाना इन्हीं का कार्य है। सुपुम्ना, इडा, पिंगलादि ज्ञान का सचार करती है। भिन्न-भिन्न यंगों की अलग-अलग नाडिया हे ग्रीर भिन्न-भिन्न इन्द्रियों की नाडिया भी पृथक्-पृथक् हैं। इन सबका 'शात्म-विज्ञान' में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। गरीर में इन नाडियों के रग, रूप, ब्राकार प्रकार तथा कार्य भिन्न-भिन्न होते हैं। ये सारे गरीर में ब्याप्त हो रही हैं। नाडियों के भीतर पोल होता है किन्तु ज्ञान ग्रीर गित वाहक सूत्र ठोस होते हैं। उनमें पोल नहीं होना। खाद्य तथा पेय पदार्थ ग्रीर श्वास-प्रश्वास का कार्य भी ये नाडिया ही करती है। वास्तव में पक्वाग्य तथा ग्रामागय भी एक प्रकार की मोटी नाडिया ही है। ये ग्रवादि के पाकादि का कार्य करती है। इन्हें ग्रिय भी कहते हैं। पतली तथा वारीक नाडिया रक्त सचार और ज्ञान किया का सचार करती है। इनमें ग्रीन्थिया नहीं होती। ये सारे गरीर को जोड कर वाध कर रखती हैं। गरीर की सारी ग्रस्थिया इनसे वधी हुई है। मास-पेशिया ग्रस्थियों को वाध कर रखती हैं। फुप्कुस भी इनके ग्रन्तर्गन ग्रा जाते हैं क्योंकि ये भी कोष्ठ के रूप में होते हैं ग्रीर ये कोप्ठ लाखों की सख्या में है।

४. ज्ञान और गित वाहक तन्तु—ज्ञान और किया गितमूत्रो या ज्ञानतन्तुओं का सम्बन्ध मित्तिष्क और सुपुम्ना में होता है। ये मूत्र विद्युत तार के समान समस्त शरीर में ज्ञान और किया का सचार करते हैं। इन्हीं के द्वारा सारे गरीर में जीवन का सचार होता है। ये अन्दर से टेलीफोन के नार के समान ठोस होते हैं। ब्रह्मरश्र से सवेदन सुपुम्ना द्वारा सारे गरीर में पहुचते हैं और सारे गरीर के सवेदन सुपुम्ना द्वारा ब्रह्मरध्र में पहुचते हैं। ज्ञानप्रधान ब्रह्मरध्र और भावप्रधान हृदय प्रदेश इन दोनों के सवेदन परस्पर आदान-प्रदान करते रहते हैं। सारा गरीर इन मूत्रों से व्याप्त रहता है। इनके द्वारा सारे गरीर में ज्ञान और किया का वहन हो रहा है। ये ज्ञान और गित मूत्र नाडियो, प्रथियो तथा मासपेशियों के सहारे सारे गरीर में पहुंचे हुए हैं।

ये ज्ञान ग्रीर गित वाहक तन्तु घ्राणेन्द्रिय के ग्रन्टर वाल से भी सूक्ष्म निकले हुए गन्ध का ज्ञान करवाने में समर्थ होते हैं, क्यों कि गन्ध पृथ्वी का गुण है ग्रीर इसका वास नासिका में है। नासिका ही गन्ध को ग्रहण करती है किन्तु सूक्ष्म गन्ध का वहन घ्राणेन्द्रिय में लगे हुए ये सूत्र ही करते हैं। नासिका के नथनों के ग्रन्टर ब्रह्मरध्न की या मस्तिष्क की ग्रीर को लगभग डेढ इच वर्गफल घ्राणेन्द्रिय के साथ बना हुआ होता

है। नाम्बेदनिक नूत रशूनेन्द्रिय ग्रीर सूक्ष्मेन्द्रिय के साथ सम्बन्ध बनाए रखकर गन्ध ज्ञान का श्रादान-प्रदान करते-कराते रहते है। इसी प्रकार ये सूत्र सर्वेन्द्रियों के ज्ञान योर कमें व्यापार या सबेदनात्मक ज्ञान ग्रीर कियात्मक गित का कार्य इतस्तत प्रादान-प्रदान करते रहते है। ज्ञान बाहक सूत्रों का सम्बन्ध ज्ञानेन्द्रियों से, गित बाहक सूत्रों का कमेंन्द्रियों से होता है। ये दो रग के होते हैं, श्वेत ग्रीर धूसर। श्वेत तन्तु कुछ माटे होते हैं। श्रिया ग्रीर गित इनका कार्य है। धूसर रग के सूत्र इनसे कुछ पतने होते हैं। ये ज्ञान-बाहक है। ये बहुत स्वच्छ होते हैं, इसीलिए ये सबेदना, चेनना या ज्ञान के बाहक होते हैं। ये ज्ञानात्मक बुद्धि ग्रीर ज्ञानेन्द्रियों के कार्य करते हैं। श्वेत मन ग्रीर कर्मेन्द्रियों के कार्य करते हैं।

६. त्वचा श्रीर घाण—त्वचा, श्रस्थ, मास, नाडी श्रादि सपूर्ण शरीर का श्राच्छादन करने श्रीर रथा के लिए होती है। यह सात प्रकार की है। यह स्पर्शेन्द्रिय का भी जाम देती है। नय, रोम, स्वेद श्रन्थिया त्वचा मे ही होती है। इनके द्वारा घरीर के श्रनेक प्रकार के विष स्वेद मे मिलकर निकलते रहते है। त्वचा ने सपूर्ण घरीर वो व्याप्त किया हुशा है। शरीर के भिन्न-भिन्न स्थानों में पतली, मोटी तथा कोमलादि कई प्रकार की होती है। इसके नीचे वसा या चर्ची जमी रहती है जो सदा उन चिक्रनी बनाए रपती है। त्वचा ऊपर में पीत, गौर, कृष्ण तथा गुलाबी श्रादि कई वर्ण की होती है। उसने मानव मौन्दर्य में वृद्धि होती है। यदि त्वचा किसी प्रकार विग्न होजाए तो यह घरीर को विग्न बना देती है। कण्डू, ब्वेत कुष्ठ, गलित कुष्ठ, बाद, चम्बन श्रादि श्रनेक प्रकार के फोडे-फिन्मी श्रादि रोग इसमें होकर विकार कर देने है। उनमें प्राय कुम्पता हो जाया करती है। त्वचा सारे गरीर की रक्षा भी करती है।

नासिका-झाणेन्द्रिय--पृथ्वी गन्धवती है, यह ज्ञान झाणेन्द्रिय के द्वारा ही होता है। झाण पृथ्वी का कार्य या श्रग है। पृथ्वी मुरय रूप से झाण के अन्दर स्थित है। वैसे तो सपूर्ण शरीर में जो कुछ हम यहा वर्णन कर रहे हैं सब पृथ्वी के ही कार्यरूप है। उसलिए दस प्रकार के भेदों में झाणेन्द्रिय भी एक है। इसी में गंध की उपलब्धि होती है।

७ रस श्रीर रुधिर में सूक्ष्म पाणिव भाग—इन दोनों में कुछ-कुछ पाणिव ग्रश रहता ही है। यदि रक्त को सुराया जाए तो इसमें से जल का भाग सूखकर शेप इवेत, पीन ग्रीर लाल द्रव्य पृथ्वी का ही ग्रश है।

मेद, मज्जा—मेद को वमा कहते है। यह त्वचा के नीचे पीले से रग की चिक्रनाहट होती है। उसे चर्ची भी कहते है। यह स्त्रियों के शरीर में अधिक होती है। हथेली, तलवे और वृक में तो उसकी गिंह्या सी जमी रहती हैं। यह गर्मी और शीत में शरीर की रक्षा करती है। जो व्यायाम तो करते नहीं किन्तु गाते वहुत है, उनके पेट, टोडी के नीचे, कपोलों और नितम्बों में चर्ची भरने लगती है। हदय में वसा या चर्ची अधिक हो जाने से रक्त का प्रभाव या गति वन्द हो जाती है और यह मृत्यु का हेतु वन जाती है।

मज्जा-यह ग्रस्थियों के पोले भागों में पीतवर्ण तरल सी होती है ग्रीर कमेंक्काग्रो, घुटने के ऊपर की ग्रस्थियों, कलाई की ग्रस्थियों, वक्षस्थल की ग्रस्थियों भौर पसलियों के सिरो पर गुलाबी से रग की होती है। इससे शरीर में लचक भौर शक्ति बनी रहती है। जब यह उचित मात्रा से बढ जाती है तब शरीर में दर्द उत्पन्न कर देती है।

- ह. बीर्य ग्रौर रज—इन दोनो मे भी पार्थिव ग्रश होता है। भुक्त-पीत का पाक होकर ४० दिन मे वीर्य बनता है तथा रज का भाग ३० दिन मे बन जाता है। यदि इन दोनो को सुखाया जाए तो जल का भाग सूखकर जो शेप रहता है वह पार्थिव ग्रश होता है। रज ग्रौर वीर्य मे पार्थिव ग्रश है ग्रौर यह शरीर के निर्माण मे सहकारी है।
- १०. मल—यह भी पृथ्वी का विकार है। इसके विना भी गरीर नहीं रह सकता। विषूचिका रोग में मल के निकल जाने से मृत्यु हो जाती है। गरीर के निर्माण में यह भी ग्रत्यन्त ग्रावश्यक है। शरीर में पृथ्वी का यह ग्रन्तिम परिणाम या विकार है।

इस प्रकार से पार्थिव कोष के १० भेद हुए। इसे अन्नमय कोप भी कहते हैं। पृथ्वी शरीर के निर्माण मे मुख्य रूप से उपादान कारण है। इन दस रूपों मे परिणत होकर पार्थिव कोष वना है। यह मनुष्य के भोग और अपवर्ग का हेतु है।

पृथ्वी के ११ गुण—इस कोष मे परिणत हुई पृथ्वी के ११ गुणो का भी अध्यातम रूप मे समावेश हो जाता है।

- १. म्राकार—जब माता-पिता के सयोग से गर्भागय मे रज म्रौर वीर्य का म्राधान होता है तब वह बहुत थोडा सा मिलकर सघात को प्राप्त होकर कलल रूप मे वृद्धि को प्राप्त होता है म्रौर म्राकार भाव को प्राप्त कर लेता है।
- २. स्थिरता—इसके पश्चात् इसमे स्थिरता रूप धर्म ग्राता है। ग्रपने स्वरूप मे स्थिर रहते हुए वृद्धि को प्राप्त होता है।
  - ३. गुरुत्व-तदनन्तर इसमे गुरुत्व म्राने लगता है।
- ४. काठिन्य—तदुपरान्त ग्रस्थि ग्रादिक का निर्माण प्रारभ होता है ग्रीर शरीर मे काठिन्य ग्राने लगता है।
- ५ श्राच्छादन—इसके पश्चात् इसमे श्राच्छादन रूप धर्म पैदा हो जाता है। इसमे श्रग-प्रत्यगादि पैदा होने लगते हैं। सूक्ष्म तथा कारण शरीर को श्रपने भीतर श्राच्छादन करने की सामर्थ्य उत्पन्न होने लगती है।
- ६. विदारण—तदनन्तर शक्ति, बल और पराक्रम का प्रवेश होता है और हाथ-पैरो मे तोडने फोडने की सामर्थ्य आती है। इस अवस्था को विदारण रूप धर्म कहा जाता है। इस समय शरीर का परिणाम रूप धर्म चल रहा है, अत यह भी एक प्रकार का विदारण ही है।
  - ७. रूक्षता--शरीर मे खुश्की हो जाना स्वाभाविक ही है।
- दः कृशता—शरीर का सूखकर पतला होना। रूक्षता तथा कृशता ये दोनो धर्म साथ मे लेकर उत्पन्न होता है।

- श्राधार—यह स्थूल शरीर मनोमय, विज्ञानमय ग्रीर ग्रानन्दमय कोपों
   का ग्रावार है। ये सव इसमें ही ग्रोत-प्रोत होकर रहते हैं।
- १०. क्षमा—इसके ग्रनन्तर इसमें क्षमा रूप घर्म की उत्पत्ति होती है। शीत, उष्ण, भूख, प्यासादि के सहन करने की योग्यता ग्रा जाती है।
- ११. सर्वभोग्यता—यह ग्रन्तिम गुण या योग्यता है जो इसमें ग्राती है। जान या ग्रजान पूर्वक यह शरीर सव पदार्थों के उपभोग करने के योग्य ग्रयवा सव इन्द्रियों के विषयों का उपभोग करने योग्य ग्रथवा दूसरों से भोगे जाने के योग्य हो जाता है। भोग ग्रीर ग्रपवर्ग को प्रदान करता है।

उपरोक्त ११ वर्म शरीर में पृथ्वी से ग्राते हैं, क्योंकि कारण के वर्मों का कार्य में ग्राना ग्रवश्यम्भावी है। इस स्थूल शरीर में ग्रन्य भूतों की ग्रपेक्षा पृथ्वी ही प्रवान है। शेप भूत सहकारी कारण हैं। इस प्रकार ११ धर्म तथा दस भेद युक्त पायिव कोप वनता है। इसकी विपद व्याख्या दूसरे ढंग से ग्रन्नमय कोप के रूप में 'ग्रात्म-विज्ञान' में की गई है।

पार्थिव कोप ग्रन्य कोषों ग्रर्थात् जलीय कोप, ग्राग्नेय कोप, वायवीय कोप, ग्राकाशीय कोप का ग्रावार है। यह कोप सर्वाविक स्थूल है, ग्रतः शेप चारों इसमें ही ग्रोतशीत हैं।

#### दश प्रकार का जलीय कोष

शरीर की रचना में जब प्राण और ग्रन्न को ग्रावश्यक मान कर प्राणमय तथा ग्रन्नमय कोप माने गए हैं तो जलीय कोप भी पृथक् क्यों न माना जाए ? जल भी तो शरीर के निर्माण में वैसा ही सहायक है जैसे प्राण और ग्रन्न । जल पायिव विकारों या तत्त्वों को मिलाता है, संयुक्त करता है । इसके द्वारा पायिव तत्त्व संघात को प्राप्त होकर शरीर का रूप वनाते हैं । जल ही विखरे हुए पायिव सूक्ष्म ग्रंशों को संघटित करके धारण करता है । इनमें व्याप्त होकर पिण्डाकार वनता है । यह जल ग्रपने दश भेदों ग्रौर गुणों से इस शरीर में जलीय कोप के रूप में विद्यमान है । इसके दश भेदों का वर्णन नीचे किया जाता है :—

- १. ग्रमृत—यह व्रह्मरंध्र में रहकर मन, इन्द्रिय तथा बुद्धि का तर्पण करता है। खेचरी मुद्रा की ग्रवस्था में एक विलक्षण प्रकार का मधुर तथा ग्रानन्ददायक रस झरता या टपकता हुग्रा ग्रनुभव हुग्रा करता हैं। इस रस की ग्रनुभूति योगी को तब हुग्रा करती है जब वह समाधि ग्रवस्था में खेचरी मुद्रा करता है।
- २. प्रभा—जल इन्द्रियों, शरीर तथा त्वचा में चमक पैदा करता है। शरीर, मुख ग्रौर इन्द्रियों पर कान्ति वनाए रखता है। नेत्र ग्रौर कपोलों पर विशेष रूप से इसकी प्रभा होती है।
- ३. रसना—इसमें से लाला-रस निस्सरण होता रहता है। यह रस ग्रास के साथ मिलकर पाचन-कार्य करता है ग्रौर जिह्वा, मुख तथा कंठ को तरल रखता है। इस रस को श्वेतसार रस भी कहते हैं। यह जिह्वा की ग्रंथियों से निकल कर ग्रास को तरल वनाता है। यद्यपि जिह्वा पार्थिव तत्त्व से वनी है परन्तु रसनेन्द्रिय होने से इसकी उत्पत्ति जल से ही होती है क्योंकि यही सब रसों का ज्ञान करवाती है।

- ४. मधुर—यह रस यकृत् मे निवास करता है। इस मधुर रस मे ग्रन्य कई क्षार मिले रहते है। यह पाचन-कार्य के लिए वडा उपयुक्त होता है। यह पक्वाश्य तथा ग्रामाशय मे पहुच कर पाचन करता है।
- प्र. क्षार—ग्रामाशय ग्रीर पक्वाशय मे रह कर पाचन-कार्य करता है। ग्रन्न को पीसने या गलाने मे सहयोग देकर उसे द्रवीभूत करता है। इसमे ग्रनेक लवण, ग्रम्ल ग्रादि भी मिश्रित रहते है। पक्वाशय मे यह भुक्त-पीत को पतला वना कर रस निकालने मे सहायक होता है। यह कुछ भूरे या पीत वर्ण का होना है। इसीने रक्त बनता है।
- ६. कफ—यह भी जल का ही परिणाम विशेष है। यू तो यह मपूर्ण गरीर में ही रहता है परन्तु मुख्य रूप में इसका वास वक्षस्थल में है। जब पाचक रस शरीर में कम होता है अथवा जब मदाग्नि हो जाती है अथवा जीत लग जाना है तब इसकी वृद्धि छाती में विशेष रूप से हो जाती है। आयुर्वेद में वात, कफ ग्रौर पित्त के आधार पर ही रोग का निदान किया जाता है। यदि कफ अधिक वढ जाए तो इससे २० प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते है। यह गरीर के निर्माण में सहायक है।
- ७ रक्त-यह भी जल का ही परिणाम विशेप है। द्रव पदार्थ होने से जल का भाग है। रग इसमे अग्न के पाक से आया है। गरीर की नाडियों में वह कर चलता है, इससे भी सिद्ध होता है कि यह जल का ही परिणाम विशेप है। इसके निर्माण में जिगर, मेदा, तिल्ली, हृदय तथा आन्ते सहायक होती हैं। यह सारे गरीर के जीवन और पोषण का आधार है। हृदय को तो इसीसे पोपण प्राप्त होना है। हृदय से निलकाओं में बहकर सारे गरीर में जीवन का सचार करना है। हृदय रक्त को शुद्ध करता है।
- दः स्नेह—यह भी जल का ही परिणाम होकर रूपान्तर से स्नेह के रूप में परिणत हो जाता है। इससे जरीर में स्निग्ध, मृदुता, लावण्य ग्रीर चमक पैदा होती है। इसी के कारण से शरीर में चमक, चिकनापन, लचक ग्राती है। मेद, मज्जा, वीर्य में इसकी चिकनाहट हैं। वास्तव में मेद, मज्जा ग्रीर वीर्य का यही ग्रपने इस गुण के कारण निर्माण करता है ग्रथवा निर्माण में सहायक होता है। इसकी स्निग्धता वात तथा पित्त को शान्त बनाए रखती है। यही जरीर में बल, जिनत, पराक्रम, उत्साह, कर्मण्यतादि बनाए रखता है।
- ६. स्वेद—यह भी जल का ही कार्य रूप से विकार है। यह शरीर के अनेक दोषों को रोमकूपों से वाहिर निकालता है। शरीर की शुद्धि करता है। अधिक ताप, परिश्रम अथवा भय से यह रोमकूपों से वह निकलता है। त्वचा के सूक्ष्म छिद्रों से भी निकलता रहता है। मस्तिष्क, ग्रीवा, छाती, वगलों और घुटनों के नीचे से अधिक निकला करता है।
- १०. मूत्र—यह भी जल का ही विकृत रूप या परिणाम है। इसमे सव प्रकार के क्षार और रस मिले होते है। जरीर के अनेक रोगो तथा दोपो को बाहर निकालता है। इसके निर्माण और निवास का स्थान गुर्दे हैं। यह जल का अन्तिम विकृत परिणाम है।

जलीय कोष के १० गुण—इस जलीय कोप में जल के परिणत होते हुए १० गुण या धर्म भी आगए हैं। इसके गुण निम्न हैं:—

- १. स्नेह--यह वसा, मज्जा ग्रौर वीर्य में विशेप रूप से है।
- २. सूक्ष्म--यह शरीर ग्रौर भूमि में शीघ्र प्रवेश कर जाता है।
- ३. गुक्ल--जल व्वेत ही देखने में ग्राता है। स्वेद ग्रौर मूत्र के रूप में भी व्वेत ही होता है।
- ४. मृदु--शरीर अन्दर और वाहर से मृदु है, कोमल है। वच्चों और स्त्रियों के शरीर प्रायः कोमल होते हैं। यह कोमलता मृदु गुण के कारण से ही आई है।
  - ५. गुरुत्व-- शरीर में भारीपन जल श्रौर पृथ्वी से ही श्राया है।
- ६. शीतत्व—शरीर में ग्रग्नि के संयोग से ही उष्णता है। मृत्यु के समय मनुष्य की उष्णता निकल जाती है। उसमें जल का भाग रहता है, इसीलिए वह ठण्डा हो जाता है। जल में शीतता रूप धर्म स्वाभाविक है।
- ७. रक्षा--शरीर की पुष्टि करता है। इसके विना जीवन नहीं रह सकता। तृपा को शान्त करता है।
- द. प्रभा--शरीर में सर्वत्र इसी की चमक ग्रौर कान्ति है। स्नानादि करने से इसमें कान्ति ग्राती है।
  - एवित्रता—शरीर में इससे ही पवित्रता वनी रहती है।
- १०. सन्धान—जब तक पाथिव ग्रंशों के साथ जल का मेल न होगा तब तक ये पिण्डाकार नहीं बन सकते, ग्रतः शरीर में सर्वत्र इसका पाथिव पदार्थों से मेल ह। इसी कारण से जल शरीर-रचना में सहकारी उपादान कारण बना। यह दश भेद तथा १० गुण युक्त जलीय कोष, पाथिव कोष में स्थित है। ग्रन्नमय तथा प्राणमय कोषों के समान यह भी ग्रपना कार्य कर रहा है।

### दश प्रकार का आग्नेय कोष

हमारे स्थूल शरीर में ग्रन्य कोपों के समान एक ग्राग्नेय कोप भी है। पूर्वाचार्यों ने प्राणमय कोप के समान इस ग्राग्नेय कोप पर ध्यान नहीं दिया। यदि दिया होता तो प्राणमय कोष के समान इसका भी ग्राध्यात्मिक ग्रंथों में वर्णन होता। पूज्य स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वतीजी महाराज ने ग्रपने निजी ग्रनुभव के ग्राधार पर पंच भूत निमित इस शरीर में कोपों का विशेष रूप से ग्रनुसंधान किया है। इसके दश भेद नीचे दिए जाते हैं:

१. ग्रोजस—यह तेज ब्रह्मरंघ्र में विद्यमान है। यहां पर यह बुद्धि ग्रौर जानेन्द्रियों को तर्पण करता है। इनमें वल, शक्ति ग्रौर पराक्रम वनाए रखता है। मानव को वुद्धिमान ग्रौर ग्रोजस्वी वनने में सहायक होता है। ब्राह्मण प्रायः ग्रोजस्वी होते हैं, ग्रतः उनमें वुद्धिवल ग्रधिक होता है। इसी गुण के द्वारा वेदशास्त्र, उपनिपद्, दर्शनादि के प्रकाण्ड पण्डित होते हैं। यह ग्रोज मनुष्य के तेजस्वी वनने में सहायक होता है। बुद्धि इससे पुष्टि प्राप्त करती है, सूक्ष्मता लाभ करती है तथा ज्योतिष्मती

बनती है। बुद्धि ग्रौर इन्द्रियो मे दूरदिशता उत्पन्न होती है। इसी कारण व्राह्मणों को मुख या मस्तिष्क के समान दर्जा दिया गया है। शारीरिक ग्रीर वीद्विक शक्ति इस गुण के कारण प्राप्त होती है।

- २ भास्वर—यह तेज या ग्रग्नि ब्रह्मरध्र स्थित वृद्धि, मन, पाच ज्ञान तथा पाच कर्म इन्द्रियो को दीप्तिमान बनाता है। एक प्रकार की विलक्षण सी चमक पैदा करता है। मुख, मस्तिष्क, कपोलो पर इसीका तेज ग्रौर चमक होती है। गरीर की त्वचा मे भी इसकी चमक होती है। इसका मुख्य स्थान ब्रह्मरध्र मे ही है।
- ३. चाक्षुष—स्थूल ग्राख के गोलक मे जो देखने की शक्ति हैं वह ग्रिग्न का कार्य है। गोलक पायिव है। इसमे देखने की शक्ति ग्रर्थात् रूपवान् पदार्थों को दिखाने की शक्ति ग्रिग्न के तेज से प्राप्त हुई हैं, ग्रत नेत्रेन्द्रिय की उत्पत्ति ग्रिग्न से ही जाननी चाहिए। ग्रिग्न इसमे मुख्य रूप से विद्यमान है। ग्रिग्न ही नेत्रों में स्थित होकर रूपवान पदार्थों को दिखाने का कार्य करती है। यह स्थूल नेत्र में कार्य रूप में स्थित है ग्रीर कारण रूप से रूपतन्मात्रा के रूप में मूक्ष्म या दिव्य नेत्र में स्थित है। एक वार स्वर्गाश्रमस्थ योगनिकेतन में ग्रमेरिका के दो डाक्टर ग्राए। ये ग्रमेरिका से एक मशीन लाए थे ग्रीर भारत के योगियों की समाधि-ग्रवस्था में उनके मस्तिष्क की गितयों को देखने के लिए उस मशीन से काम लेते थे। श्री महाराजजी ने उनसे कहा कि "हमारे एक शिष्य इस समय हमारे पास ग्रभ्यासार्थ ग्राए हुए है। ग्राप इस मशीन को इनके लगाकर देखें।" उन्होंने इन्कार कर दिया क्योंकि उस समय वे मशीन ग्रपने साथ नहीं लाए थे। इसके बाद न वे दुवारा ग्राए ग्रीर न मशीन लगवाई।

हम ब्रह्मरध्न के तेजों का वर्णन कर रहे थे। चाक्षुप तेज नेत्र को रूप दिखाने का काम जीवनपर्यन्त नेत्र में करता रहेगा। इस तेज का सम्बन्ध सूक्ष्म नेत्र से लेकर स्थूल नेत्र तक ब्रह्मरध्न में रहता है। यह रूप-वाहक ज्ञान-तन्तुग्रों में भी गमन करता है। जिस प्रकार बाह्म विद्युत तार में गमन करती है इसी प्रकार यह चाक्षुप तेज ज्ञान-वाहक तन्तुग्रों में गमनागमन करता है। यद्यपि ये स्थूल नेत्र पार्थिव है परन्तु इनमें ग्रग्नि रूप के रूप में निवास करता है। इसी लिए इसे चाक्षुप कहा है।

४. जठर—यह तेज या ग्रग्नि यकृत मे निवास करता है। यह यकृत मे माधुर्ययुक्त रस के पाक करने मे सहायक बना रहता है। यह तेज भुक्त-पीत से बनी शर्करा को ग्रामाशय ग्रीर पक्वाशय मे भेजकर पाचन-कार्य के लिए उपयुक्त होता है। जब यह विकृत हो जाता है तब यह यकृत मे तथा ग्रन्यत्र ग्रनेक रोग उत्पन्न कर देता है। यकृत मे पित्त युक्त शर्करा रस बनता है। यह पीतिमा लिए हुए कुछ हिरत से रग का द्रव होता है। इसमे लवण भी मिश्रित रहते हैं। यकृत के दाए-बाए भागो मे पित्त वाहक नालिकाए यकृत मे मिल कर पित्त प्रणाली बनाती है। इनके द्वारा पित्त ग्रामाशय ग्रीर पक्वाशय की किया को प्रवल कर देता है ग्रीर स्निग्ध पदार्थों को पचाने मे सहायक होता है। ग्रातो मे पहुचे हुए ग्रम्लयुक्त ग्राहार को क्षारयुक्त बनाता है। यदि किन्ही कारणो से पित्त की कमी या ग्रभाव हो जाएगा तो पक्वाशय ग्रीर ग्रातो के ग्रन्न-जलादि मे दुर्गव ग्राने लगेगी ग्रीर मल मे भी दुर्गध ग्राने लगती है।

- ४. पाचक—पाचक तेज या ग्रग्नि ग्रामाशय में रहकर भुक्त-पीत को पकाती है। ग्रन्न ग्रामाशय में लगभग ४-५ घण्टे तक रहकर पिसता रहता है। ग्रामाशय की ग्रग्नि ग्राहार को पतला बनाने में सहायक होती है। ग्राहार इसमें रस निकालने के योग्य पतला बन जाता है। यह पाचक ग्रग्नि ग्रन्न को पीसकर रस निकालने में सहायक होती है। यह रस रुविर बनने में काम ग्राता है।
- ६. रंजक—यह ग्रग्नि या तेज रस से रुधिर वनाने में, रस को पकाकर रक्त-वर्ण करने में सहायक होती है। भुक्त-पीत लेह्य-चोष्यादि से जो रस वनता है इसमें कई प्रकार के लवण, शर्करा, वसा तथा जल मिश्रित रहते हैं। इन सवका परिणत हुग्रा सा ही रुधिर होता है। रंजक रस के परिवर्तन की किया को करती है। यह किया पक्वाशय ग्रौर ग्रांतों में होती है। इस रक्त की शुद्धि हृदय में जाकर होती है, ग्रतः रंजक का निवास हृदय तक है।
- ७. तैजस—यह ग्रग्नि या तेज मज्जा, मेद ग्रौर वीर्य के पाक या निर्माण में सहायक होती है। ये तीनों शरीर की पुष्टि में मुख्य हेतु होते हैं। जिस शरीर में ये तीनों ठीक-ठीक मात्रा में सुरक्षित रहते हैं उसमें ग्राभा, कान्ति, लावण्य, सौन्दर्य प्रचुर मात्रा में होते हैं।
- द. विभाजक—यह ग्रान्तों में पहुंचे हुए ग्रवशेप को मल ग्रौर मूत्र के रूप में विभक्त करने में ग्रौर इनके ठीक निर्माण ग्रौर पाक में सहायक होती है। गुर्दो तथा छोटी ग्रौर वड़ी ग्रान्तों में यही काम करती है।
- ह. पोषक—यह अग्नि या तेज शिश्न, योनि और गर्भाशय में कामोत्पत्ति, वीर्य और रज के निर्माण में सहायक होती है। यह गर्भ का पोपण करती है। वीर्य, रज और गर्भ के पाक में भी यह सहायता करती है।
- १०. विसर्जक--यह ग्रग्नि या तेज रज, वीर्य, मूत्र ग्रौर मल के त्याग में सहायक होती है। मूलाधार से पाद तल तक इसका निवास है।

यह आग्नेय कोप प्राणमय कोष के समान ही शरीर की रक्षा करता है, इसका पोपक है और जीवन का ग्राधार है तथा शरीर के निर्माण में सहकारी उपादान कारण है।

श्राग्नेय कोष के द गुण--दस प्रकार के भेद से युक्त यह श्राग्नेय कोप द प्रकार के गुणों से युक्त भी सिद्ध होता है। वे निम्न हैं:-

- १. उर्ध्व गमन—इस गुण के कारण शरीर में उछलकूद की शक्ति रहती है। जब पित्त प्रधान होता है तो सिर दर्द, वमन, ग्रांखों में पीलापन, मुख में कड़वाहट, मस्तिष्क का तपना ग्रादि होने लगता है।
- २. पावक--शरीर को पवित्र रखता है तथा ग्रनेक प्रकार के दोपों को दूर करके शुद्ध वना देता है।
  - ३. दग्ध-भुक्त-पीतादि को तथा विविध दोपों को दग्ध करता है।

.....

. ...

४. पाचक--ग्रामाशय, पक्वाशय, ग्रांतों के ग्रन्न-जलादि का पाक करता है।

- प्र. लघु-- गरीर को हल्का रखता है। स्थूल नही होने देता। स्फूर्ति वनाए रखता है।
  - ६. भास्वर--शरीर तथा इन्द्रियो मे ग्राभा लाता है।
- ७. प्रध्वस—कफ ग्रीर वात की वृद्धि का नाश करता है ग्रीर शरीर के दोषों को भस्मसात् करता है। तोड-फोड की शक्ति इसी गुण से ग्राती है।
- दः श्रोज—शारीरिक वल, इन्द्रिय वल तथा वृद्धि वल उत्पन्न करता है। सम्पूर्ण गरीर मे इससे ही वल वना रहता है।

इस प्रकार ग्राग्नेय कोष के दश प्रकार के भेद है ग्रीर इसके ग्राठ गुण है। यह ग्राग्नेय कोप पार्थिव ग्रीर जलीय कोपो को व्याप्त करके स्थित है।

#### वायवीय कोष

इस कोप के दश भेद है। इस कोप का वर्णन 'ग्रात्म-विज्ञान' मे प्राणमय कोष के रूप मे किया जा चुका है। जब सपूर्ण वायु गरीर मे प्राण के रूप मे सहकारी उपादान कारण बना तब इसका ग्रावास शरीर के इन दश स्थानों में हुग्रा। इन्हीं से यह वायवीय कोप बनता है।

- १. त्वचास्थ प्राण—यद्यपि त्वचा की रचना मे पृथिवी तत्व ही प्रधान है परन्तु इसमे भीतर वाहर सर्वत्र जो स्पर्श की जित्त है वह वायु महाभूत परिणाम को प्राप्त होकर अपने मुख्य स्पर्श रूप गुण के द्वारा इस त्वचा मे वर्तमान हुआ है। व्यान प्राण जो कि वायु महाभूत का ही कार्य या परिणाम विशेप है वह त्वचा मे सर्वत्र स्पर्श का सचार करता है। ब्रह्मरध्न मे जो सूक्ष्म स्पर्शेन्द्रिय है वहा ने चलते हुए ज्ञान वाहक तन्तु इस त्वचा मे सर्वत्र फैले हुए हैं जो त्वचा मे स्पर्शरूप ज्ञान का सवेदन करते है। इसमे धनजय नामक उपप्राण भी कार्य करता है। अन्य प्राणो का सम्बन्ध भी इसके साथ है। परन्तु इनमे व्यान और धनजय मुख्य है।
- २. मिस्तिष्कस्थ प्राण—व्यान श्रौर धनजय सपूर्ण शरीर मे व्यापक हैं। वास्तव मे ये मिस्तिष्क या ब्रह्मरध्न से प्रारभ होकर पाद तल तक श्रपना कार्य करते हैं। व्यान ही ब्रह्मरध्न से ज्ञानवाहक तन्तुश्रो द्वारा सारे शरीर मे ज्ञान पहुचाता है। यही सूक्ष्म ज्ञानवाहक तन्तुश्रो तथा सूक्ष्म नाडियो मे ज्ञान श्रौर रक्त का सचार करता है। मिस्तिष्क के पास ही नेत्र है, इनमे कूर्म नामक उपप्राण कार्य करता है। श्राखो को खोलना, बन्द करना, निमेषोन्मेपादि कार्य यह ही करता है। उदान भी मिस्तिष्क तक कार्य करता है।
- ३. कण्ठस्थ प्राण—कण्ठ के साथ मुख तथा नासिका का विशेष सम्वन्ध है, यत यहा नाग, कृकल श्रीर देवदत्त उपप्राण ग्रपना कार्य करते हैं। नाग मुख-स्थानीय है। इसका काम डकार लाना है। कठस्थानीय कृकल जभाई लाता है श्रीर नासिकास्थानीय देवदत्त छीक लाता है। इसी कण्ठ प्रदेश मे उदान प्राण भी निवास करता है। इसका कार्य ग्रामाशय पर्यन्त होता है। वमन के समय यही भुक्त-पीत को बलपूर्वक खीचकर वाहिर फेक देता है। कुजर किया मे यही जल के निकालने मे सहायक होता है। उदान ही मुख मे जो खाद्य या पेय पदार्थ होता है उसे ग्रन्दर

धकेलता है। यही शरीर को उठाए रखता है, गिरने नहीं देता। जब योगी उदान प्राण पर विजय प्राप्त कर लेता है तब वह जल पर पैरों से चल सकता है श्रौर श्राकाश गमन भी कर सकता है।

- ४. ह्दयस्थ प्राण—हृदय में प्राण वायु रहती है। हृदय प्रदेश में जो कारण शरीर है इसमें जीवात्मा के संयोग से चित्त में से जो सूक्ष्म प्राण रूप किया प्रारम्भ होती हैं इस जीवनी शक्ति रूप किया को लेकर यह प्राण ही सर्वप्रथम इसका प्रसार करता है। श्वास, प्रश्वास के द्वारा इसे अन्दर-वाहिर, ऊपर-नीचे पहुंचाने में सहायक होता है। इसका स्थान हृदय से मुख तक है। हृदय में लुपडुप की किया ग्रौर रक्तपरिश्रमण में यह मुख्य रूप से कार्य करता है। श्वास-प्रश्वास के द्वारा जीवन वनाए रखता है। भूख तथा प्यास यही लगाता है। इसीके द्वारा सब प्राणयाम किए जाते हैं। यही रुचिर को रक्तवर्ण वनाता है। शरीर में वल के द्वारा जितने भी कार्य होते हैं वे इसे रोककर किए जाते हैं। सब प्राणों की अपेक्षा इसमें वल ग्रौर शक्ति ग्रियक है।
- ४. नाभिस्थ प्राण—हृदय से लेकर नाभि तक समान का कार्य है। किन्तु यकृत, ग्रामाशय, पक्वाशय ग्रौर ग्रान्तों को नियंत्रण में रखकर कार्य करता है। इसकी सहायता से सव वड़ी ग्रंथियां ग्रपने-ग्रपने कार्य ठीक रूप से करती हैं। शरीर की मध्य-स्थानीय नाभि है, ग्रतः यह ऊपर तथा नीचे के शरीर को नियंत्रण में रखती है। गर्भस्थ वालक इसीके द्वारा रस ग्रौर प्राण वायु को ग्रहण करके पुष्ट होता है ग्रौर जीवन धारण करता है। इसीलिए नाभि में स्थित प्राण को विशेष महत्त्व दिया गया है।
- ६. विस्तस्थ प्राण—वस्ती का स्थान गुदा द्वार से ऊपर है। यह गुर्दे में मूत्र धारण करने का स्थान है। इसमें जो ग्रपान रूप वायु रहती है यह मूत्र का ग्रवरोध या विसर्जन करती है। मूत्र के वेग को धारण करके रखती है ग्रथवा प्रक्षेपण करती है। इसके विकृत हो जाने पर मूत्र को रोकने की शक्ति कम हो जाती है।
- ७ गुदास्थ वायु—-नाभि से लेकर पादतल तक ग्रपान प्राण का स्थान है परन्तु मुख्य रूप में मूलाधार के पास गुदा में ही ग्रपान प्राण का वास है। गुदा-स्थानीय ग्रपान प्राण यहां के सव कार्य करता है।
- दः मांसस्थ प्राणवायु—मांस में प्राण ग्रौर व्यान कार्य करते हैं, तभी इसकी पुष्टि होती है। रस ग्रौर रुधिर इसको पुष्ट करते हैं। इसके कम हो जाने ग्रथवा सूख जाने से वल, शिवत, तेज, पराक्रमादि सब क्षीण हो जाते हैं। यदि इसमें प्राण शिवत कार्य करती है तो इसका क्षय नहीं होता। इसकी पुष्टि से वड़े-वड़े वलयुक्त कार्य होते हैं। पहलवानों में जो ग्रधिक मांसल होता है उसी में ग्रधिक वल होता है। मांस के शिवतशाली होने से या पुष्ट होने से प्राणशिक्त ठीक कार्य करती है।
- **६. रुधिरस्थ प्राण वायु**—रुधिर में प्राण प्रवेश करके इससे गमन करवाता है। प्राण शक्ति के विना रुधिर का प्रसार नहीं हो सकता। व्यान, धनंजय ग्रौर प्राण इसके साथ मिल कर गमन करते हैं ग्रौर संपूर्ण शरीर का पालन, पोपण ग्रौर तर्पण करते हैं। इससे सिद्ध है कि रक्त में भी प्राण निवास करता है। ग्रहनिश

प्राण रुधिर मे रहकर श्रपना कार्य सम्पन्न करता है। जिस व्यक्ति का भार डेढ मन हो उसमे तीन सेर रुधिर रहता है। इसके श्रभाव मे मनुष्य मृतवत् हो जाता है।

१०. शुक्रस्य प्राण—शुक्र मे अपान श्रीर व्यान दोनो मिल कर कार्य करते हैं। जिस प्रकार रक्त मानव जीवन का आधार हैं इसी प्रकार वीर्य भी जीवन का मुख्य ग्राधार हैं। सप्त धातुश्रो मे यह सर्वप्रधान धातु हैं। इसके साथ जीवनी शिक्त मिलकर सपूर्ण शरीर श्रीर पाचो कोषो का पोषण करती हैं। यह सन्तानोत्पत्ति का कारण हैं। इस शुक्र के श्रधिक क्षीण होजाने से प्राण में भी क्षीणता श्रा जाती हैं। शरीर निस्तेज हो जाता हैं। शरीर में इसका वहीं स्थान हैं जो दीपक में तेल का हैं। शुक्र से ब्रह्मरध्न की पुष्टि होती हैं। वल, शक्ति, पराक्रम, तेज तथा बुद्धि की वृद्धि होती हैं। प्राण इसकी गित का हेतु हैं। शुक्र की रक्षा करना परम धर्म हैं। इसकी रक्षा से प्राण भी वलवान होता हैं श्रीर मनुष्य दीर्घजीवी वनता हैं। शुक्र का श्रन्तिम परिणाम श्रोज या वल होता हैं। श्रोज को व्यान प्राण लेकर शरीर में सर्वत्र विचरता हैं। श्रोज दो प्रकार का होता हैं—ज्ञानात्मक श्रीर कियात्मक । ज्ञानात्मक श्रोज चित्त, बुद्धि, ज्ञानेन्द्रियों को वल प्रदान करता हैं श्रीर कियात्मक श्रोज श्रहकार, मन, कर्मेन्द्रियों ग्रीर शरीर को शिक्तमान श्रीर वलवान वनाता हैं। इस श्रोज को प्राण ही धारण करता हैं। इसका प्रथम पोपक श्रीर प्रेरक व्यान हैं, तत्पश्चात् इसका प्रसार दूसरे प्राण तथा उपप्राण करते हैं।

यह प्राण इस प्रकार दश स्थानों में विभिन्न नामों से रहता है। इसका विस्तृत उल्लेख 'म्रात्म-विज्ञान' में भी किया गया है।

वायवीय कोष के द गुण—जब वायु महाभूत शरीर की रचना में सहकारी उपादान कारण के रूप में परिणाम भाव को प्राप्त हुआ और प्राण के रूप में शरीर में प्रवेश कर रहा था उस समय यह अपने अष्ट गुणों को लेकर ही परिणत हुआ था। ये अष्ठ गुण उत्पत्ति काल में ही इसे प्राप्त हुए थे। उन आठ गुणों का इस वायवीय कोप में भी समावेश हुआ जो निम्न प्रकार हैं —

- १. कम्पन—जब गर्भाशय में शुक्त और शोणित का ग्राधान होता है उसी काल में जीवात्मा का प्रवेश सूक्ष्म शरीर के साथ होता है तथा प्राणरूप वायु भी प्रविष्ट होता है। यह प्राण वायु शुक्त ग्रीर शोणित को गितशील या कम्पायमान कर देता है। जब तक शुक्र ग्रीर शोणित में कम्पन रूप धर्म उत्पन्न नहीं होगा तब तक उसमें वृद्धि नहीं होगी। प्राण ही कम्पन को उत्पन्न करता है। प्राण का विस्तार शरीर की वृद्धि के साथ होता रहता है। ज्यो-ज्यों ग्रग-प्रत्यंग वनते जाएंगे त्यो-त्यों प्राण भी बढता चला जाएंगा ग्रीर ग्रपने दश स्थानों में शनैं -शनैं पहुंच जाएंगा।
- २. तिर्यक् गमन—शरीर के हस्त-पाद-मुखादि स्थानो मे प्राण का गमन टेढा या तिरछा होता है। जिस प्रकार सर्प वल खाता हुग्रा टेढा चलता है तथा ग्राकाश मे वायु टेढी चला करती है, उसी प्रकार से यह चलता है।
- ३. चचलता--प्रतिक्षण इसमे गित ग्रौर चचलता वनी रहती है। किसी समय भी शान्त नही रहता। प्राणायाम काल मे भी कुछ समय के लिए ही श्वास-प्रश्वास का निरोध होता है, दूसरे प्राण-ग्रपानादि तो ग्रपना कार्य करते ही रहते हैं।

जव तक जीवन है तव तक प्राण की चंचलता का ग्रभाव नहीं होता। जाग्रत, स्वप्न, सुपुप्ति, समाधि में भी प्राण में कुछ न कुछ गित वनी ही रहती है।

- ४. रूक्षता—वायु में रूक्षता धर्म होने के कारण प्राण में भी रूक्षता धर्म ग्रिनवार्य है क्यों कि कारण के गुण कार्य में ग्रवश्यम्भावी हैं। परिश्रमपूर्वक कार्य करने से प्यास ग्रिधिक लगती है। प्राण की गित तेज होने पर यह शरीर में जल का शोपण ग्रिधिक करता है। इसी खुश्की के कारण शुष्कता पैदा होती है ग्रौर प्यास ग्रिधिक लगती है। यह रूक्षता धर्म ग्रिग्न ग्रौर पृथ्वी में भी वायु से ही गया है। भिरत्नकादि प्राणायाम ग्रिधिक करने से शरीर में रूक्षता ग्राती है।
- ४. पिवत्रता—प्राण में पिवत्रता रूप धर्म का प्रत्यक्ष प्राणायाम करने में होता है। प्राणायाम शरीर के मलों की शुद्धि करता है। वढ़े हुए कफ ग्रौर वायु को वाहिर निकाल देता है तथा ग्रन्य शारीरिक दोपों को भी दूर करता है। जिस मकान में वहुत दरवाजे, खिड़िकयां, रोशनदानादि हों उस मकान का वायु शुद्ध रहता है। ग्रौर जो विलकुल वन्द रहता है उसका वायु ग्रशुद्ध रहता है। प्राण की गित ठीक रहने से शरीर स्वस्थ रहता है।
  - ६. ग्राच्छादनाभाव—जिस प्रकार वायु किसी पदार्थ को ढकती नहीं, सव पदार्थों के ग्रन्दर से होकर निकल जाती है, सूक्ष्मता के कारण सव पदार्थों में प्रवेश कर लेती है ग्रौर निकल भी जाती है, इसी प्रकार प्राण भी पार्थिव, जलीय तथा ग्राग्नेयादि कोपों में ग्राता जाता रहता है, इसलिए प्राण में ग्राच्छादन का ग्रभाव है। प्रत्येक नस नाड़ी ग्रादि में प्राण कार्य करता है। इसके लिए कहीं भी रुकावट नहीं है।
  - ७. बल—शरीर में प्रधानतया प्राण का ही वल है। जब मनुष्य कोई ऐसा कार्य करता है जिसमें शिक्त की ग्रावश्यकता हो तब वह उस कार्य को प्राणों को कुछ रोककर ही करता है। राममूर्ति जब मोटर रोका करते थे तब पूरक करके ग्राभ्यन्तर कुंभक किया करते थे। मृत्यु के समय जब प्राण की गित मन्द हो जाती है तो वल का सर्वथा ग्रभाव हो जाता है। पूज्य गुरुदेव भी ग्रपनी युवावस्था में ग्रमृतसर में जब नहर के किनारे सन्त बुद्धिप्रकाश के बगीचे में रहते थे तो प्राणायाम करके छाती में श्वास भर कर बड़े-बड़े बलवान् लोगों से छाती पर मुक्के लगवाया करते थे ग्रौर कभी-कभी प्राणवायु को हाथ में भरकर ग्रपनी कोहनी या हाथ को मोड़ने के लिए कहा करते थे पर कोई भी उनको मोड़ नहीं सकता था। कुंभक करके, दोनों हाथों में रिस्सयां बंधवाकर, दोनों ग्रोर से बड़े शिक्तिशाली बलवानों से खिचवाया करते थे। हृदय की गित तथा नाड़ी की गित का ग्रवरोधादि सब प्राणायाम के वल पर ही किया करते थे। प्राण में वास्तव में बड़ा वल है।
  - द. ग्राक्षेप—ग्राक्षेप का ग्रथं है घक्का देना। हृदय में जव रक्त ग्रुद्धि होती है तव लुपड्उप के रूप में प्राण का ही घक्का लगा करता है। प्राण, तथा ग्रपान की गित को रोकना भी ग्राक्षेप है। श्वास-प्रश्वास की गित का प्राण, ग्रपान, ग्रौर समान से टक्कर खाकर वापस ग्राना भी प्राण का ग्राक्षेप है। पूरक, रेचक तथा ग्रन्य प्रकार के प्राणायामों के करने में भी ग्राक्षेप होता है। ग्राक्षेप घर्म प्राण में वायु महाभूत से ग्राया है।

ग्रन्य कोषों के समान इस प्रकार इसके भी दस भेद तथा ग्राठ गुण हैं।

#### श्राकाशीय कोष

ग्राकाश उत्पत्ति धर्म वाला तथा सावयव है, ग्रत इसकी भी कोप सज्ञा होती है, क्योंकि इस स्थूल गरीर के निर्माण में यह भी सहकारी उपादान कारण है। ग्रन्य कोषों के समान इसके भी दस भेद हैं जिनका वर्णन निम्न प्रकार से हैं —

- १ ब्रह्मरध्रस्थाकाश—इस स्थान मे इसके ग्रवकाश मे बुद्धि, मन ग्रीर इन्द्रिया ग्रपने सब कर्मो का सपादन करती हैं। इनकी गतिविधि, व्यापारादि ब्रह्मरध्र के श्राकाश मे होते हैं।
- २. कर्णेन्द्रियस्थाकाश—यद्यपि यह कर्ण-गुष्कली पृथिवी से ही उत्पन्न हुई है, यह पाथिव तत्व ही है, परन्तु इसमे जो शब्द सुनने की शक्ति है इसके प्रति उपादान कारण ग्राकाश है, ग्रत इस कर्ण-गुष्कली के ग्रवकाश में शब्द का ग्रायात होने से जो शब्द की प्रतीति होती है यही इस ग्राकाश की विशेषता है। विधर व्यक्तियों की यह इन्द्रिय काम नहीं देती, ग्रत शब्द ज्ञान भी नहीं होता। शब्द की उत्पत्ति ग्राकाश में ही होती है ग्रीर इसका ज्ञान कर्णेन्द्रिय में होता है, इसीलिए कर्णेन्द्रियस्थाकाश को इतना महत्व दिया गया है।
- ३. कण्ठ, मुख, श्राहार, श्वास प्रणाली, नासिकास्थ प्रणाली—कण्ठ में श्राकाण होने से वाणी द्वारा गव्दों का उच्चारण होता है। श्राहार को चवाकर कठ द्वारा ही नीचे उतारा जाता है। इसके लिए अवकाण रूप श्राकाण की जरूरत है। मुख श्रीर नासिका दोनों में ही पोल है। इन दोनों के कार्य भी भिन्न-भिन्न हैं। श्राहार प्रणाली श्रीर श्वास-प्रश्वास प्रणाली का सम्वन्ध भी कठ से हैं। इनमें भी पोल होने से श्राकाण इनमें वर्तमान हैं। इस श्राकाण के कार्य भिन्न-भिन्न हैं। वाणी में भी मुख्य रूप से श्राकाण वर्तमान है, इसीलिए गव्दों का उच्चारण ठीक रूप से होता है। वाणी के प्रादुर्भाव के लिए श्राकाण की जरूरत है, इसलिए इसका उपादान कारण भी श्राकाण ही है।
- ४ फुप्फुस्थाकाश--फुप्फुस मे अनेक कोष्ठक होते हैं। दो फेफडे हैं। ये शाखाओं तथा प्रशाखाओं के रूप में भाडियों के समान दिखाई देते हैं। इनमें सहस्रों कोष्ठक है जिनमें से प्राण छन कर ग्राता है। जब वाहर से प्राण ग्राता है तब ये कोष्ठक भर जाते हैं ग्रीर जब भीतर से वाहर निकलता है तब ये खाली हो जाते हैं। इन सब में पोल हैं, अत इनमें भी ग्राकाश वर्तमान है। इन कोष्ठों में ग्रवकाश हैं। भले ही इन कोष्ठों में प्राण भरता है परन्तु ग्रवकाश होने से यहा ग्राकाश रहता है। यही यहा के ग्राकाश की विशेषता है।
- ५. हृदयस्थाकाश—इसके सम्वन्घ मे उपनिपद मे कहा है—''हृदि ह्ये प ग्राकाग ।'' ग्रर्थात् इस हृदय के ग्राकाग मे कारण गरीर का ग्रावास है, जिसमे ग्रात्मा का निवास है। इसीलिए यहा के ग्राकाग को विशेष महत्व दिया जाता है।
- ६. यकृतस्थाकाश—यकृत एक वहुत बडी ग्रथि है। इसका वजन लगभग दो सेर का है। इसके ग्रन्दर भी पोल है, इसमे ग्रांकाग विद्यमान है। इसी ग्रथि को जिगर कहते है। इसमे मधुर रेस रहता है। ग्रावञ्यकतानुसार यकृत सारे गरीर मे

इसे भेजता रहता है। रक्तादि के शरीर में परिश्रमण करते हुए अनेक प्रकार के दोष जब इसमें से होकर निकलते हैं तो यह ग्रंथि उन्हें शुद्ध करती है।

- ७. श्रामाशयस्थाकाश—यह ग्रंथि भी वहुत वड़ी है। इसमें कई सेर तक खाद्य तथा पेय पदार्थ समा जाते हैं। यदि इसमें कुछ दिन तक भोजन श्रथवा पेय पदार्थ न डाला जाए तो इसमें काफी वड़ा पोल रहता है। इसमें श्राकाश वर्तमान रहता है। यह श्रवकाश भोजन के पीसने श्रौर पकाने में सहायक होता है।
- द. पववाशयस्थाकाश—-ग्रामाशय से भोजन पिसकर पक्वाशय में जाता है। इस ग्रंथि का ग्राकार पिस्तील के समान है। यह भी वहुत वड़ी ग्रंथि है। इसमें कई प्रकार के क्षारादि के मेल से पाचन कार्य होता है ग्रौर रस वनकर रुधिर के रूप में परिणत हो जाता है। इसमें भी वड़ा पोल है। यदि इसमें पोल न होता तो ग्राहार इसमें नहीं ग्रा सकता था। इस पोल में ग्राकाश है ही। ग्राकाश ही इसका सहकारी उपादान कारण है।
- ह. बड़ी व छोटी ग्रान्तों तथा शरीर की नाड़ियों में स्थित ग्राकाश—इन सबके ग्रन्दर पोल होने से खाद्य तथा पेय पदार्थों का गमनागमन, पाक तथा रक्त संचार ग्रीर मल तथा मूत्रादि का निस्सरणादि कार्य होते हैं। ये सब पोल-युक्त होती हैं ग्रीर इनके पोल में ग्राकाश तत्त्व रहकर इनके कार्यों में सहायक होता है।
- १०. नाभिस्थाकाश—वड़ी व छोटी आंतों और गुर्दे के अतिरिक्त यहां पोल रहता है और इस पोल में आकाश रहने से यहां आकाश वर्तमान है और यह पाद तल तक अपना कार्य करता रहता है। नाभिचक, स्वाधिष्ठान चक, मूलाधार चक इसी आकाश में स्थित हैं। गुदा, शिश्न तथा योनि के पोलों में यही आकाश इनके कार्यों में सहायक होता है।

#### श्राकाशीय कोष के ३ गुण, जो निम्न प्रकार से हैं :-

- १. सर्वत्र गति—जव शब्द तन्मात्रा से ग्राकाश की उत्पत्ति होने लगती है तव इसमें पहिला परिणामात्मक धर्म सर्वत्र गित रूप में उत्पन्न होता है। इसका ग्रभिप्राय यह है कि इस ग्राकाश में जो भी ग्रन्य पदार्थ उत्पन्न होंगे, चाहे वे किसी भी देश में उत्पन्न हों, उनमें यह ग्रपने सर्वत्र गित रूप धर्म से पहिले ही वर्तमान रहेगा। इसी गुण के कारण यह इस स्थूल शरीर में ग्राकाशीय कोष के दस भेदों में सर्वत्र वर्तमान है। इस शरीर में कोई भी ऐसा स्थान नहीं जहां ग्राकाश न हो।
- २. भ्रव्यूह—इस गुण के कारण यह शरीर के प्रत्येक ग्रङ्ग को भेद करने वाला है ग्रर्थात् इसी गुण से इस ग्राकाशीय कोष के दस भेद हो जाते हैं ग्रथवा इस गुण से इस शरीर में पांच कोपों के ५ भेद हो जाते है क्योंकि यह गुण प्रत्येक कोप को एक दूसरे से पृथक् करने में समर्थ होता है। पार्थिव कोप को जलीय कोप से ग्रीर जलीय कोष से ग्राग्नेय कोप को ग्रीर प्राणमय कोष से ग्राग्नेय कोष को ग्रीर प्राणमय कोष से ग्राग्नेय कोष को विभक्त करता है।
- ३. अवकाशप्रदानता—तीसरा गुण परिणामात्मक है। इसमें अवकाशप्रदान उत्पन्न होता है। इसी गुण के आधार पर आकाश सव पदार्थों को अपने अन्दर अवकाश देता है और आगे होने वाले संसार के सव पदार्थों को भी अवकाश देगा।

इसी गुण से इस शरीर में चारों कोषों को अपने अन्दर धारण किया हुआ है। इस पर शका हो सकती है कि आकाशीय कोप कही पढ़ा और सुना नहीं है। जब आकाश उत्पन्न होने वाला पदार्थ है तब इसका कोप भी होना अनिवार्य है। यह शका तो तब हो सकती थी जब यह नित्य पदार्थ होता और परिणाम रहित होता। जब यह अनित्य और परिणामी है तब इसका कोप होना ही चाहिए। इसी कारण से हमने इसे दस भेद युक्त तथा तीन गुणों से युक्त आकाशीय कोप माना है। इस प्रकार से स्थूल शरीर के पाच कोप है जिनमें से प्रत्येक के दस भेद होकर कुल ५० भेद हो जाते है और ये सब मनुष्य के बध और मोक्ष का हेतु हैं।

श्री शकरलाल शर्मा पूज्य महाराज के वड़े योग्य शिष्यो में से हैं। ग्रध्यातम में इनकी रुचि है ग्रीर प्राय इस विषय के ग्रन्थों का ग्रध्ययन करते रहते हैं। ज्ञान ग्रीर कर्म के विषय में ग्राचार्यों के विभिन्न मतो को पढ़कर एक वार ये वड़ी उलक्षन सी में पड़ गए ग्रीर इनसे कर्म ग्रीर ज्ञान के विषय में जिज्ञासापूर्वक निवेदन किया, "पूज्य गुरुदेव । इन दोनो विषयो पर विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत पढ़कर मेरी वृद्धि में कुछ ग्रनिश्चयात्मकता सी वढ़ रही है। किस ग्राचार्य का मत ग्राह्य है ग्रीर किसका ग्रग्राह्य, इसका में कुछ निश्चय नहीं कर पा रहा हू। ग्राप ग्रपने विचारों के द्वारा मुझे इस उलझन से निकालने की कृपा करें।" इनकी शका का समाधान करते हुए पूज्य महाराजजी ने दो उपदेश दिए—एक कर्म पर तथा दूसरा ज्ञान पर।

### पूज्य महाराजजी का कर्म के विषय मे उपदेश

बहा और प्रकृति के साथ कर्म का सम्बन्ध-- कर्म के सम्बन्ध मे सर्वप्रथम शका होती है कि कर्म नित्य है या ग्रनित्य। जब कर्म की उत्पत्ति सयोग से मानी जाती है तव तो इसे भ्रनित्य ही मानना पडेगा। जव इसे उत्पत्तिमान मान लिया जाता है तव इसका कोई उपादान कारण मानना भी स्रावव्यक है। जब हम ब्रह्म स्रौर प्रकृति के सयोग से कर्म की उत्पत्ति मानते है तव यह प्रश्न उपस्थित होता है कि ब्रह्म श्रीर प्रकृति मे से किसको कर्म का उपादान कारण मानना चाहिए। ब्रह्म तो कर्म का उपादान कारण कभी हो नही सकता क्योकि वह निर्विकार ग्रीर निरवयव है, श्रत प्रकृति ही इसका उपादान कारण माननी पडेगी। प्रकृति को उपादान कारण मानने से प्रकृति तो कारण रूप से नित्य ग्रौर कार्य रूप से ग्रनित्य माननी पडती है क्यों कि इसे हम प्रत्यक्ष रूप से विकारवान् देखते है। विकारवान् होते हुए भी इसका ब्रह्म के साथ नित्य सम्बन्ध् है और ब्रह्म के साथ नित्य सम्बन्ध होने से इसमे कर्म को भी नित्य ही मानना पडेगा। प्रलय काल मे जब प्रकृति की साम्यावस्था होती है तव भी इसमे सूक्ष्मरूप से कर्म वर्तमान रहता है क्योकि चेतन ब्रह्म का प्रकृति के साथ नित्य सम्बन्ध है। ब्रह्म की चेतना ही जड प्रकृति में कर्म का हेतु बनी है। इसलिए यह मानना पडेगा कि प्रकृति मे ही कर्म उत्पन्न होता है। कर्म वास्तव में प्रकृति का ही गुण विशेष है अथवा इसका श्रवस्थान्तर रूप है। अब इसमे एक शका उपस्थित होती है कि जब प्रकृति की साम्यावस्था मे भी कर्म वर्तमान था ग्रीर कार्यरूप ग्रथवा विषमता मे भी कर्म विद्यमान है तब तो कर्म नित्य ही सिद्ध होता है। वास्तव मे प्रकृति की साम्यावस्था मे कर्म सूक्ष्मरूप मे था ग्रौर प्रकृति की कार्य-रूपावस्था मे प्रकृति की विषमता अथवा स्थूलतों के साथ कर्म मे भी विषमता अथवा

न्यूलता ग्रा जाती है। कर्म जट है ग्रीर प्रकृति का गुण विशेष या कार्य विशेष ग्रथवा ग्रवस्थान्तर विशेष है।

कमं कारण रूप से नित्य तथा कार्य रूप से अनित्य है—उपरोक्त कथन से यह स्पण्टनया सिद्व होता है कि कर्म कारण रूप से नित्य तथा कार्य रूप से ग्रनित्य है। यह सदा प्रकृति मे ही वर्तमान रहता है। ज्यो-ज्यो प्रकृति ग्रवस्थान्तर को प्राप्त होनी हुई चलती जाएगी, कर्म भी इसके साथ चलना जाएगा। यह कर्म ही इसकी विकृति का हेतु अथवा अवस्थान्तर का हेतु वनता चला जाएगा। कर्म सदा चेतन ब्रह्म के नयोग ने ही उत्पन्न होता रहेगा परन्तु यह होगा प्रकृति मे ही। ब्रह्म के अभाव में प्रकृति में कभी भी उसकी उत्पत्ति नहीं हो सकती, ग्रत कमें के प्रति ब्रह्म निमित्त कारण है और प्रकृति उपादान कारण है। जब सूक्ष्म कारण रूप प्रकृति सृष्टि का मुजन प्रारभ करती है तब वह विषम भाव को प्राप्त होकर ग्रवस्थान्तर रूप मे परिणत होती हुई अन्त में पृथ्वी के रूप में स्थिर हुई। कर्म भी इसके साथ ही परिणत होना गया । यही प्रकृति सर्व जगत् श्रीर लोक-लोकान्तरो का उपादान कारण है। पृथ्यी के रूप में स्थिर हो जाने के पश्चात् उसका ग्रन्य कोई परिणाम नही हुग्रा। यही प्रकृति का स्रन्तिम परिणाम है। उसके बाद कोई परिणामान्तर प्रकृति का नही हुया । कर्म भी उसके साथ ही इसके अन्दर आनकर ठहर गया । आकाल मण्डल मे द्रयमान ये नव लोग-लोकान्तर सव पृथ्वी के अब है। इन सव मे कर्म हो रहा है श्रीर मभी मदा गति करते रहते है। इन मव में कर्म वर्तमान है श्रीर यह सदा वना रहेगा। शकराचार्यादि स्राचार्यों ने उसी कर्म को अविद्या माना है। जब प्रकृति ही अविद्या तप है तय उसके कार्य और गुण भी तो अविद्या रूप ही होगे। प्रकृति के साथ प्रह्म का मान्यन गान्निध्य होने से कर्म भी सदा नित्य बना रहता है।

जीवात्मा के सम्बन्ध से कमं का निरूपण—इस दृश्यमान स्थूल शरीर के भीतर सूक्ष्म श्रीर कारण शरीर है। इन तीनों में कमं विद्यमान है। श्रव यहां पर एक विनार उपस्थित होता है कि शरीर में प्रत्यक्षरपण गमनागमन रूप जो धर्म या किया देनने में श्रा रही है यह शरीर का धर्म है श्रथवा श्रात्मा का। यदि इसे शरीर का कर्म माने तब तो मृत्यु को प्राप्त हुए शरीर में भी गमनागमन कर्म होना चाहिए, परन्तु होता नहीं है। श्रत यह गमनागमन रूप कर्म स्थूल शरीर का नहीं है। यदि गमनागमन रूप कर्म श्रात्मा का धर्म माना जाए तब यह विकारवान् हो जाएगा। वैशेषिक दर्शन में कर्म के १ लक्षण वतलाए है—उत्क्षेपण (अपर उठना), श्रवक्षेपण (नीचे श्राना), श्राक्चन (निकुउना), श्रमारण (विकसित होना, या फैलना), गमन (जाना), श्रागमन (श्राना)। यदि कर्म श्रात्मा का धर्म माना जाएगा तो उसे सकोच श्रीर विकास धर्म युवत मानना पटेगा श्रीर विकारवान् भी। युद्धि श्रीर मन के समान रने भी उत्यक्तिमान श्रीर विनाशवान् मानना पडेगा। श्रत उपरोक्त १ प्रकार के कर्म का जीवात्मा में श्रभाव है।

कर्म चित्त का धर्म है—जब चित्त का श्रात्मा के साथ सम्बन्ध होता है तब कर्म की उत्पत्ति होती है बयोकि सयोग ही कर्म का जनक है। श्रात्मा में कर्म की उत्पत्ति नहीं होती, उसे पूर्व सिद्ध किया जा चुका है। चित्त में ही सकीच श्रीर विकास मप कर्म होता है, उसिनए चित्त ही कर्म का उपादान कारण बनेगा। कर्म की उत्पत्ति

मे ग्रात्मा निमित्त कारण है, उपादान कारण नही। जब ग्रात्मा का सम्बन्ध चित्त से होता है तभी कर्म उत्पन्न हाता है। जब तक सूक्ष्म शरीर श्रीर कारण शरीर का सम्बन्ध जीवात्मा के साथ रहेगा तव तक चित्त मे या इन दोनो गरीरो मे कर्म वना रहेगा। यदि ग्राप यह गका उठाए कि जब प्रयलकाल या मोक्ष की ग्रवस्था मे सम्बन्ध विच्छेद होता है तब क्या चित्त मे कर्म उत्पन्न होता है, इसका समाधान यह है कि चित्त का उपादान कारण समिष्ट चित्त है ग्रीर समिष्ट चित्त का उपादान कारण महत् सत्व है और महत् सत्व का उपादान कारण प्रकृति है और इसके साथ चेतन ब्रह्म का व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध है। चेतन ब्रह्म के व्यापक रूप सम्बन्ध से प्रकृति मे जो कर्म उत्पन्न हो रहा है वह कर्म इसकी परिणत होती हुई ग्रवस्थाग्रो मे समिष्ट चित्त मे भी पहुचा है। ग्रत जव व्यिष्ट चित्त ग्रपने उपादान कारण मे विलीन हो जाता है तब ब्रह्म के सान्निध्य से उस समिष्ट चित्त मे जो कर्म हो रहा होता हैं वही इस व्यप्टि चित्त का भी कर्म हो जाता है ग्रौर ग्रात्मा प्रलय काल या मोक्ष काल की अवस्था मे स्थित हो जाता है। आतमा के सयोग के अभाव के कारण चित्त मे भी कर्म का ग्रभाव हो जाता है। केवल ब्रह्म की व्यापकता का ही समप्टि चित्त मे सामान्य कर्म रह जाता है जो समिष्ट चित्त के परिणाम का हेतु होता है जिससे समिष्ट चित्त ग्रपने उपादान कारण मे प्रवेश कर सके।

कर्म मनुष्य के बध और मोक्ष का हेनु — ब्रह्म या ईव्वर के सान्निध्य से प्रकृति मे तथा जीवात्मा के सम्बन्ध मे चित्त मे जो कर्म होते हैं वे प्राणियों के वध और मोक्ष का हेतु होते है। कर्म दो प्रकार के होते हैं — पुण्य कर्म ग्रीर पाप कर्म। पुण्य कर्म मोक्ष का हेतु होते हैं ग्रीर पाप कर्म वध का। ये पाप ग्रीर पुण्य रूप कर्म चित्त मे उत्पन्न होते है, इसलिए ये चित्त के ही धर्म या गुण विशेष हैं। इन दोनो प्रकार के कर्मी का ग्रभाव या सम्बन्ध विच्छेद ही मोक्ष है। चित्त का धर्म होने के कारण ये ५ प्रकार की अविद्या के अन्तर्गत आ जाते हैं। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेप तथा स्रभिनिवेश को योगदर्शन मे क्लेश कहा गया है। ये सव वुद्धि स्रीर चित्त के ही धर्म विशेष है। चित्त में जो भी कर्म उत्पन्न होता है वह वध का ही कारण है। जब तक चित्त और आत्मा का सम्बन्ध बना रहता है तब तक इसमें कर्म उत्पन्न होता ही रहेगा। परम वैराग्य ही इस कर्म रूप ग्रविद्या से मुक्त करने मे हेतु बनेगा। राग ही वध को उत्पन्न करता है ग्रीर कर्म का जनक भी है। सयोग से राग भी उत्पन्न होता है ग्रौर कर्म भी। ज्ञान ग्रौर वैराग्य ही इन दोनो का ग्रभाव करने के साधन है। अत सर्व दु खो और कर्म की निवृत्ति के लिए ज्ञान और वैराग्य आवश्यक हैं। ज्ञान ग्रौर परम वैराग्य के विना पाप ग्रौर पुण्य युक्त कर्म का ग्रभाव नहीं हो सकता, इसलिए मोक्ष के इच्छुक योगी को ज्ञान ग्रौर परम वैराग्य की प्राप्ति के लिए अहर्निश यत्नशील और सावधान रहना चाहिए। इन दोनो के द्वारा सयोगाभाव होगा, सयोग के अभाव से कर्म का अभाव होगा और इसके अभाव से आत्मा को मोक्ष प्राप्त होगा।

#### तपः पूत ब्रह्मनिष्ठ महाराजजी का ज्ञान पर उपदेश

ज्ञान के विषय में भी भ्रनेक प्रकार के प्रश्न उपस्थित होते है। इसका उपादान कारण कौन है  $^{7}$  स्रात्मा, परमात्मा या प्रकृति  $^{7}$  चित्त के साथ इसका क्या सम्बन्ध

है ? यह नित्य हं या ग्रनित्य ? ईंग्वर ग्रीर जीवात्मा का यह गुण विशेष है या इनसे इसका सयोग-सम्बन्ध है ? क्या यह स्वतन्त्र रूप से कोई पदार्थ है ग्रथवा किसी के साथ उसका ग्राश्यय-ग्राश्ययी नम्बन्ध है ? यह जड है या चेतन ?

इन सब बकायों का समावान करते हुए पूज्य महाराजजी ने फरमाया --

हम तीन पदार्थ नित्य मानते है—परमात्मा, श्रात्मा श्रीर प्रकृति । इन तीनों के श्रतिरिक्त कोई भी पदार्थ नित्य नहीं है। इन तीनों में से ज्ञान किसका कार्य हे यही यहा पर विचारणीय विषय है।

ब्रह्म श्रीर प्रकृति के साथ ज्ञान का सम्बन्ध—सर्वप्रथम जब मृष्टि की उत्पत्ति होने लगी तब उस दृश्यमान जगत् का उपादान कारण विलकुल शान्त श्रीर स्थिर था तथा सब प्रशार की विषमताश्रों में रहित था। इस श्रवस्था को न्याय श्रीर वैशेपिक ने परमाणुष्पावस्था माना है। ग्रहैनवादियो ने इस ग्रवस्था को माया ग्रथवा ग्रविद्या कहा है। युन्यवादी इसे युन्य मानते हैं। विज्ञानवादी इसे विज्ञान कहते है और योग त्या नार्य मे उने प्रकृति की माम्यावस्था कहा गया है। हम प्रकृति की उस साम्या-वर्या में भी मुक्तम कर्म का विद्यमान होना मानते हैं। प्रलय काल की अवस्था मे चेतन हहा हा सम्बन्ध प्रकृति के साथ विद्यमान था। इन दोनों का सम्बन्ध ज्ञान ग्रीर कर्म का जनक बना। जिस प्रकार सयोग से कर्म की उत्पत्ति होती है इसी प्रकार मयोग ने ही ज्ञान का भी प्रादुर्भाव होना है। विद्यार्थी गुरु के पास रहकर विद्याध्ययन करने है। यहां गुरु और शिष्य का सयोग विद्यार्थी के ज्ञान की वृद्धि का हेतु होता है। ग्रन्यापक के विना ज्ञान की उत्पत्ति या वृद्धि नहीं हो सकती । यदि एक नव-लात बालक को आप बन मे छोड़ दें या किसी ऐसे मकान में रख दें जहा किसी मनुष्य या पणु श्रादि का सम्बन्ध उसके साथ न हो सके, ऐसे स्थान में वह पचासो ही वर्ष नक भने ही क्यों न रहे किन्तु उसे कभी किसी प्रकार का ज्ञान नहीं हो सकेगा। लान पीन त्रादि का मामान्य ज्ञान भले ही हो जाए, क्योंकि यह सभी प्राणियों मे नमान रप ने होता है। उसमे यह सिद्ध होता है कि ज्ञान की उत्पत्ति सयोग से ही होती है। स्रादि-मृष्टि मे ब्रह्म स्रीर प्रकृति के सयोग से ज्ञान की उत्पत्ति हुई स्रीर यहा और प्रमृति ही उसके उपादान कारण हो सकते हैं, किन्तु यदि दोनो को ज्ञान का उपादान कारण मानते है तब ये दोनो ही विकारवान् हो जाते है। जड प्रकृति भी विकारवान् ग्रीर नेतन उँव्वर भी विकारवान् । ऐसी स्थिति मे इन दोनो मे कोई भ्रन्तर नहीं रहना। उपादान कारण तो एक ही मुख्य होता है, भेप सभी सहकारी उपादान कारण हुया करते हैं। तय क्या जड श्रीर चेतन दोनों को उपादान कारण मान ले ? यदि ऐसा मार्नेगे तो ज्ञान के दो रूप हो जाएगे। ऐसी स्थिति मे ज्ञान जर भी होगा ग्रीर चेतन भी। दो विरुद्ध धर्म एक पदार्थ मे नही रह सकते। दो परस्पर विरोधी धर्म ज्ञान मे नहीं रह सकते। इसमे एक ही धर्म मानना पडेगा। यदि जड मानते हो तब इसका उपादान कारण प्रकृति को मानना होगा और यदि चेतन माना जाए तय उदवर उपादान कारण होगा। ईश्वर के विकारवान होने से यह निर्गुण नहीं रह सकता। प्रकृति के समान यह भी परिणामी हो जाएगा। यदि प्रहा में उसका ग्रागमन मानते है तब यह प्रवन पैदा होता है कि यह ज्ञान उसका कार्य है या गुण प्रथवा उसका श्रश विशेष है। ऐसा मानने से ब्रह्म सावयव हो

जाएगा ग्रीर ग्रवस्थान्तररूप से परिणामी हो जाएगा। विकारी होने से प्रकृति के समान हो जायगा। प्रकृति जडत्वेन परिणामी है ग्रौर ब्रह्म चेतनत्वेन परिणामी हो जाएगा, ग्रत यह मानना पडेगा कि ज्ञान न तो ईश्वर का कार्य है, न उसका ग्रश है ग्रीर न ही उसका गुण है। जब प्रकृति साम्यावस्था से विषम भाव या कार्यभाव को प्राप्त होने लगी तब इसमे सूक्ष्म रूप से ज्ञान भी विद्यमान था। जिस प्रकार उस ग्रवस्था मे कर्म सूक्ष्म रूप से विद्यमान था उसी प्रकार सूक्ष्म रूप से जान भी विद्यमान था। जो गुण या घर्म कारण मे होगे वे उसके कार्ये मे ग्रवश्य ग्राते है। ज्ञानपूर्वक ही सृजन होता है और ज्ञानपूर्वक ही कर्म होता है, यत सर्वप्रथम ज्ञान ही होना चाहिए। इससे यह सिद्ध होता है कि सर्वप्रथम ज्ञान ग्रीर किया ही प्रकृति मे प्रकट हुए। ब्रह्म के सर्वव्यापक रूप प्रकृति के सान्निच्य मे रहने से प्रकृति मे विशेप रूप से परिणाम धर्म पैदा होने से आकाश, काल तथा दिशा के अनन्तर ज्ञान महत् सत्व के रूप मे प्रादुर्भूत हुग्रा। इसी द्वारा ग्रागे चलकर सर्व प्रकार के ज्ञान की व्यवस्था चलेगी। यह ब्राह्मी सृष्टि इस महत् सत्व के ग्राधार पर ज्ञान-पूर्वक चलेगी । ईरवर तो केवल सिन्निघान मात्र से निमित्त कारण वना रहेगा ग्रौर इसके सन्निधान मे रहकर प्रकृति जगत् का सृजन करती रहेगी। यहा पर यह जका हो सकती है कि दया ब्रह्म में ज्ञान को अभाव है जो प्रकृति अपने से उत्पन्न हुए ज्ञान के द्वारा संसार का सृजन ग्रौर व्यवस्था करनी है ? इस विपय मे यह विचार-णीय है कि यदि रूढिवाद से हम ईश्वर को सृष्टि का सप्टा मानते है तब उसमे सृजन रूप धर्म ग्रथवा गुण मानना पडेगा। इस दशा मे वह निर्गुण सिद्ध नहीं हो सकता। यदि यह कहा जाए कि भगवान् भले ही निर्गुण न रहे परन्तु सृजन रूप व्यवस्था उसीके द्वारा होती है, ऐसी स्थिति मे उसका कोई करण भी मानना पडेगा। यदि स्राप कहे कि एकदेशी को करण की स्रावश्यकता होती है, सर्वदेशी को नही। हम भी तो ईश्वर को सर्वदेशी ग्रीर सर्वव्यापक मानते है। इसीलिए प्रकृति से सर्वत्र ही उसका सान्निध्य रहता है। ऐसी स्थिति मे ब्रह्म के सन्निधान मात्र से प्रकृति मे सर्वत्र किया या कर्म होता रहेगा। इसलिए वह्य को कर्ता अर्थात् सृष्टि का स्रप्टा मानने की कोई ग्रावश्यकता नही। केवल निमित्त रूप से उसका सान्निध्य वना रहेगा, ग्रत ब्रह्म को किसी प्रकार की व्यवस्था करने की ग्रावश्यकता नहीं होगी। व्यवस्थापक भी एक-देशी ही होता है। ब्रह्म को व्यवस्थापक मानने से वह एकदेशी हो जाएगा, फिर उसमे सर्वव्यापकता न रहेगी। ब्रह्म का सर्वत्र सान्निध्य है इसलिए उसके कर्ता या व्यवस्थापक वनने की आवर्यकता नहीं। ज्ञान, गुण, या धर्म ईश्वर में नहीं अपितु यह प्रकृति का ही गुण या धर्म विशेष है क्योंकि यह परिणामात्मक है, इसमे वृद्धि ग्रौर ह्रांस होता है तथा उत्पत्तिमान हैं। साम्यावस्था मे ज्ञान ग्रौर कर्म सूक्ष्म रूप से विद्यमान थे, इसी सूक्ष्म रूप से ज्ञान ग्रीर कर्म का प्रकृति की विषमावस्था मे इनका विस्तार हुग्रा।

अव तो आपको ब्रह्म के सान्निघ्य से प्रकृति मे ज्ञान और किया का प्रादुर्भाव और प्रकृति के द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति समभ मे आगई होगी।

## म्रात्म-तत्त्व के सान्निध्य से चित्त मे ज्ञान ग्रौर कर्म का प्रादुर्भाव

ज्ञान शरीर का धर्म नहीं—यह विषय भी पूर्ववत् गहन है। इसे ध्यानपूर्वक समभने का प्रयत्न करो। ज्ञान शरीर का धर्म नहीं है। यदि स्थूल शरीर मे ज्ञान होता तो फिर उसके गव मे इसका श्रभाव क्यो होता ? गव मे भी ज्ञान रहना चाहिए था। इसमे यह प्रत्यक्ष सिद्ध है कि गरीर मे ज्ञान नही होता।

त्रान जीवात्मा का धर्म नहीं है—ज्ञान जीवात्मा का भी धर्म नही है क्यों कि ज्ञान में उत्पत्ति ग्रीर विनाश धर्म है। ज्ञान उत्पन्न होता है ग्रीर उसका विनाश भी होता है। यदि ज्ञान को ग्रात्मा का धर्म माना जाएगा तो ग्रात्मा को परिणामी मानना पड़ेगा ग्रीर उसमे परिवर्तनों का होना भी स्वीकार करना होगा। पहिले ग्रात्मा में ज्ञान नहीं था, ग्रव पैदा हो गया। वालक जन्म के साथ ही ज्ञानवान पैदा नहीं होता। वह ग्रनभिज्ञ होता है। ज्यो-ज्यो उसकी ग्रायु में वृद्धि होती है त्यो-त्यो उसमें ज्ञान का विकास होता जाना है। शर्न -शर्न पढ-लिखकर विद्वान हो जाता है ग्रीर ज्ञान-वृद्धों में उसकी गणना होने लगती है। यदि यह उत्पत्ति, विकास ग्रीर वृद्धि ग्रात्मा में मानी जाए तब इसमें भी सकोच, विकास, उत्पत्ति ग्रीर विनाश मानना पड़ेगा। इस ग्रवस्था में वृद्धि ग्रीर ग्रात्मा में कोई ग्रन्तर नहीं रहेगा। चेतन होने से ग्रात्मा ज्ञान स्वरूप है परन्तु उसके ज्ञान में उत्पत्ति, विनाश, सकोच, विकास, वृद्धि तथा ह्ञास नहीं होते। इनके ज्ञान में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। इसका ज्ञान सदा एकरस, एकरप ग्रीर एक समान रहता है। वह उससे निकलकर कही ग्रन्यत्र ग्राता जाता नहीं, ग्रीर किसी के साथ मिलता नहीं। उसमें से ज्ञान का ग्राना जाना मानने से ग्रात्मा को सावयव ग्रीर विकारी मानना पड़ेगा। इसलिए ज्ञान ग्रात्मा का भी गुण या धर्म नहीं है।

क्षान बुद्धि या चित्त का धर्म है—जान बुद्धि या चित्त का धर्म हो सकता है, क्यों कि इनमें ज्ञान, वृद्धि ग्रीर ह्रास वृष्टिगोचर होते हैं। जब ग्रात्मा के साथ चित्त का स्योग होता है तब चित्त में ज्ञान रूप धर्म की उत्पत्ति होती है। ग्रात्मा के स्योग से चित्त में ज्ञान ग्रीर किया उत्पत्न होते हैं। चित्तोत्पत्न ज्ञान ग्रीर किया के द्वारा स्थूल, सूक्ष्म ग्रीर कारण गरीर के सर्व कार्यजात सिद्ध होते हैं। ज्ञान के होने पर कमं उत्पत्न होता है ग्रीर कर्म के होने पर ज्ञान उत्पत्न होता है। जब मानव किसी कमं को करना चाहता है तब सर्वप्रथम बुद्धि द्वारा उसके विषय में विचार करता है। पहिले ज्ञानपूर्वक विचार करता है तब कर्म करने में प्रवृत्त होता है। जब तक बुद्धि में किसी कर्म करने का विचार नहीं ग्राएगा तब तक मनुष्य कर्म करने में प्रवृत्त नहीं होता। चित्त ग्रीर बुद्धि को हम ज्ञान-प्रधान मानते है। इनके ज्ञान-प्रधान होने से ही तो इनमें ज्ञान की वृद्धि ग्रीर विकास होता है। जो कारण में धर्म होता है वह कार्य में भी ग्रावेगा। ग्राम से ग्राम की ही उत्पत्ति होगी। चित्त का परिणाम ज्ञान रूप में ही होगा। जब श्रात्मा का सयोग चित्त से हुग्रा तो चित्त में ज्ञान की ही तो उत्पत्ति होगी। ज्ञान चित्त का धर्म है, श्रात्मा का नही। चित्त परिणामी है, ग्रत ज्ञान रूप चित्त ज्ञान को ही उत्पत्न करेगा। जिस प्रकार चित्त में सुल, ग्रानन्द, भय, चिन्तनादि ग्रानेक गुण उत्पन्न होते है इसी प्रकार चित्त में ज्ञान भी उत्पन्त होता है। इसलिए ज्ञान प्रनित्य है। ज्ञान ही प्रकृति, ग्रात्मा ग्रीर परमात्मा के साक्षात्कार का हेतु होता है। इसीसे मोक्ष-लाभ होता है। ग्रानित्य ज्ञान से नित्य मोक्ष की प्राप्ति नही हो सकती ग्रीर इस ग्रानित्य ज्ञान से मुक्त भी ग्रानित्य ही ग्राप्त होगी। यह ज्ञान भी ग्रान्त में ग्रीर इस ग्रानित्य ज्ञान से मुक्त भी ग्रानित्य ही ग्राप्त होगी। यह ज्ञान भी ग्रान्त में ग्रीर इस ग्रानित्य ज्ञान से मुक्त भी ग्रानित्य ही ग्राप्त होगी। यह ज्ञान भी ग्रान्त में ग्रानित्य ही ग्राप्त होगी। यह ज्ञान भी ग्रान्त मे

ग्रज्ञान रूप ही है क्यों विस्त का धर्म है। चित्त भी तो प्रकृति ग्रथवा ग्रविद्या का ही कार्य है। कार्यात्मक होने से यह भी ग्रविद्यात्मक ही है। चित्त ग्रात्मा के वध का हेतु बना है। ग्रविद्या से ही बध को प्राप्त होता है, ग्रत ग्रात्मा के प्रति ज्ञान ग्रीर कर्म चित्त के धर्म होने से बध का हेतु बने हैं। जब तक चित्त के साथ ग्रात्मा के सम्बन्ध का विच्छेद नही होगा तब तक ग्रात्मा मुक्त नही होगा। इस सम्बन्ध विच्छेद मे परम वैराग्य ही मुख्य हेतु बनेगा। प्रथम सामान्य ज्ञान से कर्म में प्रवृत्ति होगी, कर्म करने से तत्त्व-ज्ञान लाभ होगा ग्रीर इसके ग्रनन्तर परम वैराग्य द्वारा मोक्ष प्राप्ति होगी। इससे सिद्ध है कि कर्म ग्रीर ज्ञान वध ग्रीर मोक्ष के हेतु होते हैं।

'हिमालय का योगी' ग्रन्थ में 'ब्रह्म-विद्या का प्रचार' नामक पञ्चम ग्रध्याय समाप्त ॥

## े उपसंहार

'हिमालय का योगी' ग्रथ मे पाच ग्रध्याय हैं।

प्रथम ग्रध्याय मे ब्रह्मिय श्री १०८ स्वामी योगेव्वरानन्द सरस्वतीजी महाराज के वाल्यकाल की घटनाए, प्रथम पूज्यचरण गुरुदेव श्री स्वामी रामानन्दजी का सत्सग, वैराग्य का उदय, गृहत्याग, हरिद्वार जाकर मोहनाश्रम मे संस्कृताध्ययन, योग-साधना, सत्यव्रतजी से कजली वन मे योग-शिक्षा प्राप्ति, उत्तराखण्ड मे निवास, कठिन तपस्या, स्थानीय तीर्थाटन, दिल्ली मे ४ वर्ष तक संस्कृताध्ययन, काठमोर मे विद्वान् योगी गुरु की योज तथा गुरु प्राप्ति, पूज्य गुरुदेव ग्रवधूत परमानन्दजी के दर्शनादि का उल्लेख किया गया है।

दितीय श्रध्याय मे पूज्य गुरुदेव श्रवधूत परमानन्दजी द्वारा काश्मीर में श्रण्टाङ्ग योग की प्राप्ति, प्राथमिक योग-साधना, श्रमृतसर निवास, यहा पर पड् दर्शन उप-निपदादि ग्रथो का प० हरिञ्चन्द्रजी से श्रध्ययन, सवा करोड गायत्री का पुरुवचरण, काष्ठमीन, कई-कई दिनो की समाधि, भारत के तीर्थस्थानो का कई वार पर्यटनादि का वर्णन किया गया है।

तृतीय श्रध्याय में पूर्णात्मज्ञानी गुरु की खोज श्रीर पूज्यचरण ब्रह्मनिष्ठ तथा तप पून महान योगी श्रात्मानन्दजी की प्राप्ति, उनके श्रीचरणो में १७ घण्टे की सम्प्रज्ञात समाधि द्वारा श्रात्मा, प्रकृति श्रीर ब्रह्म का साक्षात्कार, कई वर्ष तक इस विज्ञान को दृढभूमि करना श्रादि विषयो का विश्वद् वर्णन है।

चतुर्य श्रव्याय मे मोहनाश्रम मे ग्रष्टाङ्ग योग का प्रशिक्षण, गगोत्री, उत्तरकाशी तथा स्वर्गाश्रम में योगनिकेतनाश्रम की स्थापना, 'ग्रात्म-विज्ञान' तथा 'वहिरङ्ग-योग' ग्रथो की रचना, ग्रनेक प्रकार की सिद्धियो तथा ब्रह्मचर्य से सन्यासाश्रम मे प्रवेशादि का उल्लेख है।

पचम ग्रध्याय में हरिद्वार में सन् १६६२ की १३ ग्रप्रैल को सन्यास घारण करना, बद्रीनाय प्रस्थान, ४ मास का काष्ठमीन ब्रत, 'ब्रह्म-ज्ञान' ग्रथ की रचना, इसके प्रकाशन का प्रवध, उसके विज्ञान का प्रशिक्षण, सन् १६६४ में भारत के मुख्य-मुख्य तीयों तथा नगरों का द मास तक भ्रमण, इन स्थानों पर व्याख्यानों द्वारा योग का प्रचार ग्रीर माधना करवाना, पुन हिमालय में निवास, शिष्यों को ग्रात्मज्ञान प्राप्ति की साधना करवाना ग्रीर ग्राध्यात्मिक सूक्ष्मतम गूढ रहस्यों के उपदेशादि का वर्णन है।

हमारी हार्दिक कामना है कि पूज्यचरण श्री गुरुदेव चिरायु हो । इस ग्रथ के श्रागामी सस्करणों में हम उनके भावी नवीनतम श्रनेक प्रकार के गहनतम श्राध्यात्मिक सूक्ष्म विज्ञानों का समावेश करते रहेगे ।

### योग निकेतन

स्वर्गाश्रम: मुनिकीरेती ऋषिकेश: उत्तरकाशी: गंगोत्री

—सस्थापक—

श्री १०८ ब्रह्मिप स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वतीजी महाराज (भूतपूर्व राजयोगाचार्य श्री ब्रह्मचारी व्यासदेवजी महाराज)

## योग ही सार्वभीम धर्म है

### योगाभ्यास मे श्राने वाले साधको के लिए सक्षिप्त सूचना

- १ योगिनकेतन मे अष्टाग योग के यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि के साधनो का विशेष रूप से कियात्मक अभ्यास कराया जाता है, इसलिए योग के जिज्ञासु प्रत्येक साधक को यहा आकर लाभ उठाना होता है।
- २ कम से कम एक घण्टे तक किसी एक ग्रासन से निञ्चल वैठने का ग्रभ्यास करके यहा ग्राना चाहिए।
- प्रत्येक मुमुक्षु साधक से यह ग्राजा की जाती है कि वह योग मे सर्वथा वर्जित धूम्रपान बीडी ग्रादि, ग्रभक्ष्य मास, मिदरा, प्याज, लहसुन ग्रादि का सेवी ग्रौर दुर्व्यसनी न हो। वह यहा ब्रह्मचर्य व्रत पालन, तप ग्रौर योगानुष्ठान के उद्देश्य से ग्राये। प्रत्येक सम्प्रदाय के स्त्री-पुरुप ग्रा सकते हैं।
- ४ योगविद्यालय की साधना मे बैठने का समय:--

प्रात ४ से ६॥ बजे तक घारणा, ध्यान, समाधि द्वारा ब्रह्मज्ञान का ग्रभ्यास । प्रात द से ६ बजे तक ग्रासन, प्राणायाम, हठयोग की कियाये।

- साय ६ से द वजे तक आत्म-विज्ञान सम्वन्धी अभ्यास । अन्नमय कोप में कुण्डली-उत्त्थान, प्राणोत्थान, चक्र-विज्ञान, प्राणमय कोष का विज्ञान । मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष, आनन्दमय कोष के पदार्थो अर्थात् सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर मे आत्म-साक्षात्कार का विज्ञान ।
- प्र. स्वर्गाश्रम या मुनिकीरेती मे १ नवम्वर से ३१ मार्च तक ग्रभ्यास के शिविर का समय है। मई ग्रौर ग्रक्तूबर मे उत्तरकाशी मे तथा १५ जून से १५ सितम्बर तक गगोत्री मे ग्रभ्यास होता है।

- प्रत्येक सायक को यहा पर पूरे ५ मास तक रहना चाहिए। मास दो मास ही रहने દ वाले साधक स्थायी ग्रीर विशेष लाभ नही उठा सकते।
- योगनिकेतन के सब नियम पालन करते हुए प्रत्येक सावक के रहने के लिए एक છ कुटिया, दोपहर-मध्याह्न मे १२ वर्जे सात्त्विक सादे भोजन, प्रात व रात्रि को पीने के लिए एक सेर दूध की व्यवस्था है। एक समय के भोजन ग्रीर दो समय के दूध का दैनिक व्यय लगभग दो रुपया स्वर्गाश्रम में ग्राता है, उत्तरकाशी मे ग्रहाई रुपये ग्रीर गगोत्री में तीन रुपये। इसके ग्रतिरिक्त ग्रन्य व्यय साधक ग्रपनी शक्ति के ग्रनुसार कर सकता है।
- १५ दिन से कम समय के लिए अभ्यामी को प्रविष्ट नहीं किया जाता है, क्योंकि 5 इसमे विशेष लाभ नहीं होता।
- माधक को जीत के पूरे वस्त्र, छाता, लोटा, विस्तरा, लैम्प, टार्च, रुई की गद्दी 3 का ग्रासन, लगोटा, जाघिया माथ लाना ग्रावय्यक है।
- उनके शिष्य कराने हैं। प्रत्येक महानुभाव को स्वीकृति लेकर ही ग्राना चाहिए , स्वीकृति-पत्र माथ मे

योगाभ्याम श्री १० = त्रह्मपि स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वतीजी महाराज श्रीर

विशेष पूछनाछ इस पते पर करे-

20

लायें।

योगनिकेतन, स्वर्गाश्रम

डाकघर--स्वर्गाश्रम, रेलवे स्टेशन--ऋपिकेश,

व्यवस्थापक ---

जिला देहरादून।

योगनिकेतन, मुनिकीरेती डाकघर--ऋपिकेश, जिला टिहरी गढवाल।

योगनिकेतन, उत्तरकाशी

जिला उत्तरकाशी।

योगनिकेतन, गंगोत्री

जिला उत्तरकाशी।

(उत्तराखण्ड, हिमालय।)

गगोत्री के महान् सन्त ब्रह्मज्ञानी योगाचार्य्य श्री १०८ ब्रह्मीप स्वामी योगेव्वरानन्द सरस्वतीजी महाराज (भूतपूर्व वालब्रह्मचारी श्री व्यासदेवजी)

के रचित ग्रन्थ

# ग्रात्म-विज्ञान

ग्रात्मा का साक्षात्कार करने की कियात्मक व्यवस्था

जिसमे ग्रार्ट पेपर पर २६ पवरगे चित्र सूक्ष्म ग्रीर कारण गरीरो तथा उनके ग्रवयवो की वास्तविक ग्रवस्थाग्रो के दर्गन हैं। कपडे की सुन्दर जिल्द, छपाई तथा मज्जा उत्तम।

हिन्दी वढिया सस्करण	मूल्य	१५) रुपए
हिन्दी साधारण सस्करण	मूल्य	१०) रुपए
भ्रग्नेजी संस्करण	मूल्य	१२) रुपए

# वहिरंग योग (हिन्दी)

पूर्विजकुन्योगिजास्त्र के यम, नियम, ग्रासन, प्राणायाम ग्रीर प्रत्याहार ग्रगो की विशद ग्रीर श्रपूर्व व्याख्या। ग्रीसनो ग्रादि के ३२५ चित्र ग्रार्ट पेपर पर। ३०० से ऊपर बड़े ग्राकार के पुष्ठ, सन्दर कपडे की जिल्द। ० मूल्य १०) रुपए

# व्रह्म-विज्ञान (हिन्दी)

यह पूज्यपाद स्वामीजी महाराज की नवीन कृति है, ब्रह्मदर्शन की प्रित्रया और जीवन को कृतकृत्य करने का साधन है। मम्पूर्ण मृष्टि का विज्ञान भी इसी मे वर्णन किया है। १ वहु गे चित्र ग्रार्ट पेपर पर, सुन्दर कपडे की जिल्द, पृष्ठ ५०० से ऊपर। मूल्य १४) रुपए

प्रत्येक पुस्तक पर डाक व्यय पृथक् । चारो ('बहिरङ्ग योग', 'ग्रात्मिवज्ञान', 'ग्रह्मविज्ञान' ग्रीर 'हिमालय का योगी') पुस्तकें एक साथ मगवाने पर डाक व्यय पृथक् नहीं होगा ।

योगनिकेतन ट्रस्ट डाकघर—स्वर्गाश्रम रेलवे स्टेशन ऋषिकेश, जि॰ देहरादून (भारत)

